

- १४ प्रथम उद्देशे ताहि, जबूद्वीप नी वारता। जबूद्वीपादि मांहि, जोतिषि नी कहियै हिवै।।
- १५ \*राजगृह नगर मे जावत प्रश्न गोयम भला, सुगणा । जबूद्वीप नामा द्वीप विषे प्रभु । केतला ? सुगणा । चद्र प्रभास कियो करै नै करिस्यै सही, सुगणा । इम जिम जीवाभिगम में वक्तव्यता कही सुगणा !
- १६. जाव नव सै पचास तारा गण कोडाकोड़ ही, शोभ प्रतै शोभ्या शोभै शोभस्यै जोड ही। जीवाभिगम' रै मांहि प्रश्न चंद्रादिक तणो, वीर प्रभु दियो जाव सक्षेप कहू सुणो।।
- १७ बे चद्र प्रभास कियो रु करें करस्ये सही,
  सूर्य दोय तप्या रु तपै तपस्ये वही।
  छप्पन नक्षत्र चद्र सघात वखाणियै,
  जोग जोडचा जोडै जोडस्यै तेह पिछाणियै।।
- १८ ग्रह एक सौ नै छिहतर जेह आकाश मे, चार प्रति चरचा काल अतीत हुलास मे। वर्त्तमान फुन चार प्रति चरै छै तिके, काल अनागत मांहि चार चरस्यै जिके।।
- १६. एक लाख कोडाकोडी तारा जाणिय, विल तेतीस हजार कोड़ाकोडि आणिय। नवसै कोडाकोडि पंचास कोडाकोडि जे, शोभ प्रति शोभ्या शोभ शोभस्य जोडि जे।
- २० हे प्रभु । लवणसमुद्र विषे चद्र केतला ? इम जिम जीवाभिगम जाव तारा जेतला। ते इहविध कहिवाय च्यार चद जाणियै, सूर्य च्यार उदार के कात बखाणियै।।
- २१ नक्षत्र एक सौ द्वादश पवर सुहामणां, तीन सौ वावन मोटा ग्रह रिलयामणा । तारा वे लख कोड़ाकोड नी जोड़ है, सतसठ सहस्र कोडाकोड़ि नवसै कोड़ाकोड़ है।।
- २२ धातकीखंड कालोद पुक्खरवरद्वीप ही, अभ्यतर - पुक्खरार्द्ध मनुष्यक्षेत्रे वही। एह सर्व विषे जीवाभिगम जाव जोड़ जे, एक शशि परिवार तारा कोडाकोड जे॥
- एक शोश पीरवार तारा काडाकाड जी।
  २३ वारै चद वारै सूर धातकीखड मे,
  रिव शिश बिहु चोबीस हरष घमड मे।

\*लय: इण सरवरिया री पाल

१ (सु० ७०३)

२. (सू० ७२२)।

- १४. अनन्तरोद्देशके जम्बूद्वीपवक्तन्यतोक्ता द्वितीये तु जम्बू-द्वीपादिषु ज्योतिष्कवक्तन्यताऽभिधीयते । (वृ० प० ४२६)
- १५. रायगिहे जाव एव वयासी जबुद्दीवे ण भते । दीवे केवइया चंदा पभासिसु वा ? पभासित वा ? पभासि-स्सित वा ? एव जहा जीवाभिगमे
- १६. जाव .... नव य सया पन्नासा, तारागण कोडीकोडीण ।। सोभिसु, सोभिति सोभिस्सति ॥ (जी० सू० ७०३)
- १७. गोयमा । जबुद्दीवे दीवे दो चदा पभासिसु वा३ दो सूरिया तिवसु वा३ छप्पन्नं नक्खत्ता जोग जोइंसु वा३ (वृ प० ४२७)
- १८. छावत्तर गहसय चार चरिसु वा ३ (वृ० प० ४२७)
- १६. एगं च सयसहस्स तेत्तीस, खलु भवे सहस्साइ। नव य सया पन्नासा, तारागण कोडिकोडीणं।। सोभिसु, सोभिति, सोभिस्सति। (श० ६।३)
- २०. लवणे ण भंते । समुद्दे केवितया चंदा पर्भासिसु वा ? प्रभासिस्ति वा ? प्रभासिस्तित वा ? एव जहा जीवाभिगमे जाव ताराओ (....श० ६।४) गोयमा । लवणे ण समुद्दे चत्तारि चंदा प्रभासिसु वा ३ । चत्तारि सूरिया तिवसु वा ३ (वृ०, प० ४२७)
- २१ बारसोत्तर नक्खत्तसय जोग जोइंसु, वा ३ तिन्नि वावन्ना महम्गहसया चार चरिसु वा ३ दोन्नि सयस-हस्सा सत्तिष्ट्टं च सहस्सा नवसया तारागणकोडिको-डीण, सोह सोहिसु वा ३। (वृ० प० ४२७)
- २२ घायइसडे, कालोदे, पुक्खरवरे, ऑब्भृतरपुक्खरद्धे, मणु-स्सक्षेत्रे — एएसु सब्वेसु जहा जीवाभिगमे (सू० ८०६, ८१०, ८३०, ८३४) जाव—एगससीपरिवारो, तारा-गणकोडिकोडीण ॥ (श० ६।४)
- २३ बारस चदा पभासिसु वा३ बारस सूरिया तर्विसु वा३ एव—"चउवीसं सिसरिवणो नक्खत्तसया य तिन्नि छत्तीसा।

- अतिहि छत्तीस सोहता, सी नक्षत्र त्रिण ने छप्पन ग्रह मन मोहता।। एक हजार लाख कोडाकोट है, संख्या अठ २४. तारा नी अधिक सुजोड़ तीन सहस्र कोडाकोड कोड़ाकोड़ वलि ऊपर सात सी कह्या, द्वीपे रह्या ॥ घातकीखंड तारका एतला वयालिस २५. कालोद वयांल दिनकरा, चद सी छिहंतरा। हजार एक एक नक्षत्र छिन्नू ने छसी तीन हजार ते सुरवर मन हरे।। मोटा ग्रह एतला
- लाख तणी कोडाकोड़ है, अठावीस २६. तारा कोडाकोड़ि जोड है। द्वादश सहस्र ऊपर अधिक वखाणिया, कोडाकोड नवसी कोडाकोडि कालोदधि आणिया ॥ पचास एक सी चोमाल है, चद्र २७ द्वीप पूक्खरवर एक सी चोमालीस चार विणाल है। चरै कह्यो ते रिव णिण सहु चर नही, अभ्यतर-पुक्खराई वोहितर भर्म सही ॥
- २८ नक्षत्र च्यार हजार नें बत्तीस ऊपर, महाग्रह द्वादण सहस्र छह सी रु बोहितर। तारा छिन्नू लक्ष कोड़ाकोड़ नी जोड है, चोमालीस सहस्र च्यार सी कोड़ाकोड़ है।।
- २६. अभ्यतर-पुक्खरार्द्ध द्वीप नैं विषे सही, चंद्र वोहिंतर सूर वोहिंतर गगन ही। मोटा ग्रह पट सहस्र तीनसी छत्तीस है, नक्षत्र दोय हजार नै सोल जगीस है।।
- कोडाकोडि पिछाणज्यो, ३०. अडतालीस लक्ष कोडाकोड़ि ऊपर आणज्यो, वावीस सहस्र सी कोड़ाकोड तारा दोय शोभावता, पुक्खराई विषे सुख पावता ॥ अभ्यंतर
- ३१ मनुष्य क्षेत्र में एक सी बत्तीस चद्रमा। सूर्य एक सी बत्तीस अधिक आनंद मां। महाग्रह ग्यारै हजार छह सी सोलै वली, नक्षत्र तीन हजार छह सी छिन्नु रली।।
- ३२ तारा अठ्यासी लक्ष कोड़ाकोडि जोड है, ऊपर चालीस ,सहस्र कोडाकोड है। सात सौ कोडाकोड़ ए पूरा ऊणा नही, यावत एक शिश परिवार हिवै कहूं सही।।

- एगं च गहमहस्मं, छप्पन्न घायईगरे । (वृ० प० ४२७)
- २४. अट्ठेव सयमहम्मा तिम्नि महम्माङ मत्त य सयाङ । धायङमङ्घेदीवे नारागणकोडिकोडीण । (वृ० प० ४२७)
- २४. वायालीमं चदा वायालीम च दिणयरा दिता।

  कालोदिहिम एए चरेति मबद्धलेगागा।

  नायत्तमहम्म एग एग छावत्तरं च मयमत्रं।

  छच्च सया छन्नज्या महागहा निन्नि य महस्मा॥

  (यु० प० ४२७)
- २६. अट्टापीम कालोबहिमि बारम य तह महस्माइं।

  णय य मया पन्नामा तारागणकोजिकोडीणं।।

  (वृ० प० ४२७)
- २७ चोयानं चदमय नोयान चेव मूरियाण मय।
  पुनयरवरिम दीवे भमति एए पयामिता।
  उह च यद्भ्रमणगुनत न तत्मवीव्चन्द्रादित्यानपेध्य,
  कि तिह ? पुष्करद्वीपाभ्यन्तराह्वंवितिनी हिमप्निनेभेवेति। (वृ० प० ४२७)
- २८. चतारि गहस्माइं बत्तीमं चेव होति नरपना ।

  छन्च गया बावत्तरि गहागहा बारगमहस्मा ॥

  छन्नज्ड सयमहस्ता चोयानीत भवे सहस्माइं ।

  चतारि गया पुरस्तरि तारागणकोडिकोडीण ॥

  (वृ०प० ४२७)
- २६ वावर्त्तार च चवा वावत्तरिमेव दिणयरा दित्ता ।
  पुनसरवरदीवड्ढे चरित एए पभामिता ॥
  तिन्न नया छत्तीसा छच्च महम्मा महग्गहाण तु ।
  नवस्ताण तु भवे मोलाङ दुवे महस्साई ॥
  (वृ प० ४२७)
- ३०. अडयाल सयमहस्मा बाबीस रालु भवे सहस्माइ। दो य गय पुगलरखें तारागणकोडिकोडीण।। (वृ० प० ४२७)
- ३१. वत्तीस चदमय वत्तीस चेव सूरियाण सय ।
  सयल मणुस्तलोय चरित एए पयासिता ।
  एक्कारस य सहस्सा छिप्प य मोला महागहाण तु ।
  छच्च सया छण्णउया णक्खत्ता तिन्ति य सहस्सा ॥
  (वृ०प०४२७,२८)
- ३२. अडसीइ सयसहस्सा चालीस सहस्स मणुयलोगिन । सत्त य मया अणूणा तारागणकोडिकोडीणं।। (वृ० प० ४२८)

३३ एक शशि परिवार अठ्यासी ग्रह कह्या, नक्षत्र अठावीस चद्र साथै रह्या। छ्यासठ सहस्र कोडाकोडि नवसौ कोड़ाकोडि है। पिचोत्तर कोडाकोडि तारा नी जोडि है।। ३४ हिवै पुक्खरोद समुद्र विषे प्रभु! केतला, चद्र प्रभास कियो करै करस्यै सुखनिला? इम सहु द्वीप समुद्र विषे जोतिषि तणी, जावत स्वयभूरमण जाव शोभा घणी।।

वा० - पुनखरोदे णं मते । समुद्दे केवितया चदा इत्यादि प्रश्ने ए उत्तर-संखेज्जा चदा पर्भासिसु वा । इम आगलै सगलै द्वीप समुद्र ने विषे पूर्वे कह्य ुितिम अनुक्रमे संख्याता असंख्याता चद्रादिक जाणिवा ।

द्वीप समुद्र ना नाम कहै छै—पुक्खरवर समुद्र तिवार पछी वरुण द्वीप, वरुणवर समुद्र । क्षीरवर द्वीप, क्षीरवर समुद्र । घृतवर द्वीप, घृतवर समुद्र । इक्षुवर द्वीप, इक्षुवर समुद्र । नदीश्वर द्वीप, नदीश्वर समुद्र, । अरुण द्वीप, अरुण समुद्र । अरुणवर द्वीप, अरुणवरावभास द्वीप, अरुणवरावभास समुद्र । कुडल द्वीप, कुडलोद समुद्र । कुडलवर द्वीप, कुडलवर समुद्र । कुडलवरावभास द्वीप, कुडलवरावभासोद समुद्र । रुचक द्वीप, रुचकोद समुद्र । रुचकवर द्वीप, रुचकवरावभासोद समुद्र । रुचकवरावभास द्वीप, रुचकवरावभासोद समुद्र । रुचकवरावभास द्वीप, रुचकवरावभासोद समुद्र ।

हार द्वीप, हारोद समुद्र । हारवरद्वीप, हारावरोद समुद्र । हारवरावभास द्वीप, हारवरावभासोद समुद्र ।

रुचकद्वीप पछी असल्याती योजन नी कोडाकोडि ना द्वीप समुद्र असल्याता छै। इम यावत अर्द्ध राजू मठेरा में सर्व समुद्र द्वीप छं। अर्द्ध राजू जाभेरा में एक स्वयभूरमण समुद्र छै त्रिण लाख जोजन अधिक अर्द्ध राजू मा छै। ते स्वयभूरमण समुद्र पछै आगल अलोक छै। इम इत्यादिक नै विषे सल्याता जोतिपि चद्रादिक तथा असल्यात नक्षत्रादिक चार चरता हुआ गतकाले, चरै छै वर्त्तमान काले, चरस्यै आगामि कालें।

जीवाभिगम' मे कहा भी है---

एसी तारापिडो, सन्त्रममासेण मणुयलोगिम । विह्या पुण ताराओ, जिणेहिं भणिया अस खेज्जा ।। अतो मणुस्सखेत्ते हवित चारोवगा य उववण्णा । पचिवहा जोइसिया चदा सूरा गह गणा य ।। तेण पर जे सेसा चदाइच्चगहतारनक्खत्ता । णित्य गई णिव चारो, अविद्विया ते मुणेयव्वा ॥ इत्यादि घणो छै ते पडिते जाणिवो ।

#### सोरठा

३५ 'जबूद्दीप रै माहि, वे चदा वे सूर छै। लवणे दुगुणा ताहि, चिउ चदा दिनकर चिहुं।।

३३. बहुासीइ च गहा अहुाबीस च होइ नवखत्ता।
एंगससीपरिवारो एत्तो ताराण वोच्छामि ॥१॥
छावट्टि सहस्साइ नव चेव सयाइ पच सयराङ ति।
(वृ० प० ४२८)

३४. पुक्खरोदे ण भते । समुद्दे केवितया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सिति वा ? एव सन्वेसु दीवसमुद्देसु जोतिसियाण भाणियव्व जाव सयभूरमणे जाव सोभिसु वा, सोभिति वा, सोभिस्सिति वा। (श० ६।५)

वा०—'पुक्खरोदे ूण भते ! समुद्दे केवइया चदा' इत्यादौ प्रश्ने इदमुत्तर दृश्य—'सक्षेज्जा चंदा पभासिसु वा ३ इत्यादि, 'एव सन्वेसु दीवसमुद्देसु' ति पूर्वोक्तेन प्रश्नेन यथासम्भव सख्याता असख्याताश्च चन्द्रादय इत्यादिना चोत्तरेणेत्यर्थ ।

द्वीपसमुद्रनामानि चैव — पुष्करोदसमुद्रादनन्तरो वरुण-वरो द्वीपस्ततो वरुणोद समुद्र , एव क्षीरवरक्षीरोदी घृतवरघृतोदी क्षोदवरक्षोदोदी नदीश्वरवरनदीश्वरोदी अरुणारुणौदी अरुणवरारुणवरोदो अरुणवरावभासारुण-वरावभासोदी कुण्डलकुण्डलोदी कुण्डलवरकुण्डलवरोदी कुण्डलवरावभासकुण्डलवरावभासोदी रुचकरुचकोदी रुचकवररुचकवरोदी रुचकवरावभासरुचकवरावभा-सोदी इत्यादीन्यसङ्यातानि, यतोऽसङ्याता द्वीपसमुद्रा इति ॥ (वृ० प० ४२८)

"" 'हारे दीवे हारे समुद्दे, हारवरे दीवे हारवरे समुद्दे, हारवरोभासे दीवे हारवरोभासे समुद्दे, ताओ क्वेव वत्तव्वताओ "" (जीवा० ३।६३५)

३५. जबुद्दीवे जबुद्दीवे ण दीवे दो चदा पभासिसु... (जीवा० ३।७०३) लवणे ....लवणे ण समुद्दे चत्तारि चदा पभासिसु.... (जीवा० ३।७२२)

१ यह समग्र वर्णन देखें --जीवा० ३। ८४८-६४६

२. जी० ३। ५३ ५। १,२१,२२

३६. धातकीखड मझार, वार चंद्र द्वादण रिव । आगल त्रिगुणा सार, पूरवला पिण भेलिये ॥
३७. बार धातकीखंड, तेहने त्रिगुणा की जिये ।
ह्वं छत्तीस सुमड, पूरवला पट मेलिये ॥
३८ जबूद्वीप ना दोय, लवणोदधि ना च्यार विल ।
ए पट भेल्या होय, वयालीस कालोदिध ॥
३६. इहविध सगलै ठाम, त्रिगुणा करिने पूर्वला ।
भेलीजै अभिराम, आगल द्वीप समुद्र में ॥
४० अर्थ विषे ए गाह, तिण अनुसारे महे कह्यो ।
मिलतो न्याय सुराह, सख्या द्वीप समुद्र नी' ॥

मिलतो न्याय सुराह, सख्या द्वीप समुद्र नी'।।
४१ 'सेव भते । अर्थ जे अंक वाणुं तणो,
एकसी नें गुणंतरमी ढाले सुजम घणो।
स्वाम भिक्खु भारीमाल राय ने प्रसाद है,
'जय-जम' हरप आनन्द गण अहलाद है।।
नवमशते द्वितीयोहे शकार्यः ॥६।२॥

३६. घायडमटे · ·वारम चदा पर्भामिमु · · · (जीवा० ३।८०६)

३८ कालोए कालोए ण ममुद्दे वायालीय चदा पभामिमु : (जीवा० ३।८२०)

४१ मेव भते ! सेव भते ! ति॥

ढाल: १७०

### सोरठा

१ द्वितीय उदेशा माहि, द्वीप तणी कहि वारता। अन्य प्रकारे ताहि, तेहिज तृतीय उद्देश हिव।।

#### दूहा

- २ नगर राजगृह जाव इम, बोल्या गोतम स्वाम । हे भगवत । किहा अछै, दक्षिण दिशि नो ताम ।। ३ एगोरुक जे मनुष्य नो द्वीप एगोरुक नाम । अतरद्वीप किहा कह्यो ? तब भाखै जिन स्वाम ।। ४ उत्तर दिशि मे पिण अछै, अतरद्वीप प्रसीध । इण कारण दक्षिण तणो, गोयम प्रश्न सुकीध ।। †अन्तरद्वीप वर्णन सुणो जी। (ध्रुपदं)
- ५ जबूद्वीप नामा द्वीप मे जी, मदरगिरि ने पिछाण। दक्षिण दिशा ने विषे अछै जी, इम चूलहिमवत गिरि जाण॥
- ६ ते चूलहिमवत वर्षधर गिरि, तेहने कूण ईशाण । तेह तणा चरिमात थी, छेहडा थकी पहिछाण ।।
- ७ जवूद्वीप नी जगती थकी, ऊपर थइ कहिवाय। लवणसमुद्र प्रतै तिहा, ईशाणकूण रै माय।।

(ज० स०)

७ लवणसमुद्द् उत्तरपुरित्यमे ण।

- १ द्वितीयोद्देशके द्वीपवरवक्तव्यतोक्ता, तृतीयेशप प्रकारान्तरेण सैवोच्यते । (वृ०प०४२=)
- २,३. रायगिहे जाव एव वयामी— कहि ण भते । दाहिणित्लाण एगूरुयमणुस्साण एगूरुयदीवे नाम दीवे पण्णते ?
- ४. 'दाहिणिरलाण' ति उत्तरान्तरद्वीपव्यवच्छेदार्थम् । (वृ० प० ४२८)
- ४,६ गोयमा । जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स ताहिणे ण चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स पुरित्यमिल्लाओ चिरमताओ ।

\*लय: इण सरवरिया री पाल

†लय: बीर वखाणी राणी चेलणा जी

- द. जोजन त्रिण सय उलिघये, दक्षिण दिशि तणो ताम । एगोरुक मनुष्य तणो इहा, द्वीप एकोरुक नाम।।
- ह. लांव विक्खभपणे कह्या, तीनसौ जोजन जेह ।जोजन नवसौ गुणचास नी परिधि किचित उणेह ।।
- १०.ते इक पद्मवरवेदिका, एक वन-खड करि तेह । द्वीप ते सर्व थी बीटियो, इत्यादि पाठ कहेह ॥
- ११. वेदिका ने वनखंड नु, वर्णन अधिक विशाल । इम एणे अनुक्रमे करी, जिम जीवाभिगम विषे न्हाल ।।
- १२ जाव शुद्धदत द्वीपा लगै, जाव देवलोर्क मे जाण । जावणहार ते मनुष्य छै, हे श्रमण आयुष्यमन । माण ।।
- १३ जाव शब्द मांहे आखियो, तेह सक्षेप कहेह । विल वर्णन कल्पवृक्ष नो, मनुष्य नो वर्णन जेह।।
- १४ ते सगलो कहिवू इहा, ते द्वीप नां मनुष्य अवधार । चर्तुर्थ भक्त आहारी अछै, पृथ्वी-रस पुष्प फल आहार ॥
- १५ ते द्वीप ना पृथ्वी नो रस अछै, खांड प्रमुख तणे तुल्य । गृहादिक अपर तिहा नथी, घर कल्पवृक्ष अमूल्य ।।
- १६ ते नर नों आयु पत्य तणो असख्यातमो भाग सुविशेख। छह मास आउ रहै थाकतो, जद जोडलो जनमै जी एक।।
- १७ इक्यासी दिन जोड़ला तणी, करै प्रतिपालना ताय । छीक वगासी करी मरी, ते सुरलोक मे जाय।।

वा०—वाचनातरे इम दीसै छे—एव जहा जीवाभिगमे उत्तरकुरुवत्तव्वयाए णेयव्वो, णाणत्त अट्ट धणुसया उस्सेहो चउसट्ठी पिट्टकरडया अणुसज्जणा नित्य ति ।

तिहा ए अर्थ — उत्तरकुरु ना मनुष्य नो त्रिण गाऊ नो शरीर मान कह्यो। इहा छप्पन अतरद्वीपा मनुष्य नो आठसै धनुष्य नो देहमान। विल उत्तरकुरु ना मनुष्या रै दो सौ छप्पन पृष्ठकरडक छै अनै छप्पन अतरद्वीप ना नर ने चौसठ पृष्ठकरडक छै।

तथा उत्तरकुराए ण भते । कुराए कितविधा मणुया अणुसज्जिति ? गोयमा । छिव्वहा मणुया अणुसज्जिति, त जहा — पज्मगधा, मियगधा अममा, तेतली सहा सिणचरा य । छ प्रकार ना मनुष्य कह्या । ते जाति ना अतरद्वीप ने विषे मनुष्य नथी । अतरद्वीप ने इहा तीन नानात्व स्थान कह्या । विल अनेरा पिण स्थित्यादिक मे नानात्व छ , किन्तु अभियुक्त करिक जाणवा । एकोक्क द्वीप नो उद्देशो ।

# नवमशते तृतीयोद्देशकार्थः ॥६।३॥

ए वाचनातरे कहा। —हिव प्रकृत वाचना आश्रयी ने किहये छै। कठा ताइ, ए जीवाभिगम सूत्र इहा किह्यू ते कहै छै —जाव इत्यादिक ज्या लगे शुद्धदत द्वीप छै शुद्धदत नाम अठावीसमो अतरद्वीप नी वक्तव्यवादका लगे, तिका पिण कठा ताइ

१ जी० ३।६३१

- द तिण्णि जोयणसयाइ ओगाहित्ता एत्य ण दाहिणि-ल्लाण एगूरुयमणुस्साण एगूरुयदीवे नाम दीवे पण्णत्ते।
- तिण्णि जोयणसयाइ आयाम-विक्ख भेण, नव एगूण-वन्ने जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण ।
- १० से ण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसडेण सन्वओ समता सपरिविखत्ते ।
- ११ दोण्ह वि पमाण वण्णओ य । एव एएण कमेणं एव जहा जीवाभिगमे [३।२१७]।
- १२ जाव सुद्धदत्तदीवे जाव देवलोगपिरग्गहा ण ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ।
- १३ इह च वेदिकावनखण्डकल्पवृक्षमनुष्यमनुष्यीवर्णकोऽ-भिषीयते । (वृ० प० ४२८)
- १४. तथा तन्ममुष्याणा चतुर्थभक्तादाहारार्थ उत्पद्यते, ते च पृथिवीरसपुष्पफलाहारा । (वृ० प० ४२६)
- १५. तत्पृथिवी च रसत खण्डादितुल्या, ते च मनुष्या वृक्षगेहा, तत्र च गेहाद्यभाव (वृ० प० ४२६)
- १६ तन्मनुष्याणा च स्थिति पल्योपमासख्येयभागप्रमाणा, पण्मासावशेषायुषश्च ते मिथुनकानि प्रसुवते । (वृ०प०४२६)
- १७. एकाशीर्त च दिनानि तेऽपत्यिमथुनकानि पालयन्ति, उच्छ्वसितादिना च ते मृत्वा देवेषूत्पद्यन्ते।

(वृ० प० ४२६)

वा०-वाचनान्तरे त्विद दृश्यते-एव जहा जीवाभिगमे ""

तत्रायमर्थं उत्तरकुरुषु मनुष्याणा त्रीणि गन्यूतान्युत्-सेध उक्त इह त्वष्टौ धनु शतानि, तथा तेपु मनु-ष्याणा हे शते पट्पञ्चाशदिधके पृष्ठकरण्डकानामुक्ते इह तु चतु षष्टिरिति ।

तथा 'उत्तरकुराए ण भते । इत्येव मनुष्याणामनु-पञ्जना तत्रोक्ता इह तु सा नास्ति, तथाविधमनुष्याणा तत्राभावात्, एव चेह त्रीणि नानात्वस्थानान्युक्तानि, सन्ति पुनरन्यान्यपि स्थित्यादीनि, किन्तु तान्यभियुक्तेन भावनीयानीति, अय चेहैको रुकद्वीपोद्देशकस्तृतीय । (वृ० प० ४२६)

अथ प्रकृतवाचनामनुसृत्योच्यते—िकमन्तिमद जीवा-भिगमसूत्रमिह वाच्यम् ? इत्याह—'जावे' त्यादि 'यावत् शुद्धदन्तद्वीप शुद्धदन्ताभिधानाष्टाविंशतित-

११

कहिनी ते कहै छै —'देवलोगपरिग्गहेत्यादि देवलोक नै विषे परिग्रह ते गमन छै जेहनो, ते देवलोकपरिग्रह देवगितगामी इत्यर्थ। अने उहा एक-एक अंतरद्वीप नै विषे एक-एक उद्देशक विल तिहा एको एक द्वीप नो उद्देशो कह्या पाछ चोथो आभा- सिक द्वीप नो उद्देशो, तिहा सूत्र पाठ—

किं ण मते । दाहिणिल्लाण आभासियमणुस्साण आभासियदीवे णाम दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण चुल्लिहमवतस्स वासघरपव्वयस्स पुरित्यमिल्लाओ चिरमताओ दाहिणपुरित्यमिल्लेण लवणसमुद्द तिण्णि जोयणसयाः ओगाहित्ता एत्य ण दाहिणिल्लाण आभासियमणुस्माणं आभामियदीवे णाम दीवेपण्णत्ते ।

बीजू एको हक द्वीप नी परै जाणवो।

# नवमशते चतुर्थोद्देशकार्थः ॥६।४॥

इम वैपाणिक द्वीप नो पचमो उद्देशो पिण। णवर दक्षिण पश्चिम ना चरिमात थकी - एतलै नैहत कूण थी।

# नवमशते पंचमोद्देशकार्थः ॥६।५॥

इम लागूलिक द्वीप नों उद्देशो छठो पिण। णवर उत्तर अनै पश्चिम ने चरिमात थकी — एतलै वायन्य कूण थी।

# नवमशते षष्ठोद्देशकार्थः ॥६।६॥

इम हयकर्ण द्वीप नो उद्देशो पिण। णवर एकोरुक ना उत्तर पूर्व चरिमात थकी --- एतर्ल ईशाणकूण थकी लवणसमुद्र च्यारमी योजन अवगाहीजें, तिवार च्यारसी योजन नो लाम्बो-पहुलो हयकर्ण द्वीप छै।

## नवमशते सप्तमोद्देशकार्थ ।।६।७॥

इम गजकर्ण द्वीप नो उदेशक पिण। णवर ए आभामिक द्वीप ना दक्षिण पूर्व ना चरिमात यकी -एतलै अग्निकूण थी च्यारसौ योजन लवणसमुद्र अवगाहीजै तिवारै च्यारसौ योजन नो लाबो-पहुलो गजकर्ण द्वीप छै।

# नवमशते अध्टमोद्देशकार्थः ॥६।८॥

इम गोकर्णद्वीप नो उद्देशो पिण। णवर वैपाणिक द्वीप ने दक्षिण पश्चिम ना चरिमात थकी लवणसमुद्रे च्यारसौ योजन अवगाहियै। निहा गोकर्ण द्वीप। शेप हय-कर्ण द्वीप सरीखो जाणवो।

# नवमशते नवमोद्देशकार्थः ॥६।६॥

इम शष्कुलिकणं द्वीप नो उद्देशो पिण । णवर लागूलिक द्वीप ना उत्तर अपर चरिमात थी —एतलै वायव्य कूण थी । शेप हयकणं सरीखो ।

# नवमशते दशमोद्देशकार्थः ॥६।१०॥

इम आदर्शमुख द्वीप, मेढमुख द्वीप, अयोमुख द्वीप, गोमुख द्वीप ए च्यार, ते हयकर्णादिक च्यार द्वीप छै, तेहने अनुक्रमे ईशाण, अग्नि, नैरुत, वायव्य कूण ना चरिमात यकी पाचमी योजन लवणसमुद्र अवगाही ने पाचसी जोजन लावा-चोडा, ते प्रतिपादक च्यार उद्देशा हुवै इति ।

नवमशते एकादशादारभ्याचतुर्दशोद्देशकार्थः ॥६।११-१४॥

मान्तरहीपवक्तन्यना यावत्, साऽपि कियद्दूर याव-हान्या? उत्याह—'देवलोकपरिग्गहे' त्यादि, देव-लोक. परिग्रहो येपा ते देवलोकपरिग्रहा. देवगित-गामिन: उत्यर्थ, उह चैकैकिस्मिन्तन्तरहीपे एकैक उद्देशक. तत्र चैकोककहीपोहेणकानन्तरमाभागिकहीपो-देशक तत्र चैव सूत्र। (वृ० प० ४२६)

मेस जहा एगूरुयाण । (जी० ३।२१६)

एव वैपाणिकद्वीपोद्देणकोऽपि नवर दक्षिणापराच्चर-मान्तादिति पञ्चम'। (वृ० प० ४२६)

एव लागूलिकद्वीपोद्देशकोऽपि नवरमुत्तरापराच्चर-मान्तादिति पष्ठ.। (वृ० प० ४२६)

एव हयकर्णद्वीपोद्देशको नवरमेकोरुकस्योनरपौरस्त्या-च्चरमान्ताल्लवणसमुद्र चत्वारि योजनशतान्यवगाद्य चतुर्योजनशतायामविष्कम्भो हयकर्णद्वीपो भवतीति सप्तमः। (वृ०प०४२६)

एव गजकणंढीपोद्देशकोऽपि, नवर गजकणंढीप आभा-सिकढीपस्य दक्षिणपौरस्त्याच्चरमान्ताल्लवणममुद्र-मवगाद्य चत्वारि योजनशतानि हयकणंढीपममो भवतीत्यष्टम । (वृ० प० ४२६)

एव गोकर्णद्वीपोद्देशकोऽपि, नवरमसौ वैपाणिकद्वीपस्य दक्षिणापराच्चरमान्तादिति नवम ।

(वृ० प० ४२६)

एव शब्कुलीकर्णद्वीपोद्देशकोऽपि, नवरमसौ लागूलिक-द्वीपस्योत्तरापराच्चरमान्तादिति दशम ।

(वृ० प० ४२६)

एवमादर्शमुखद्वीपमेण्ड्रमुखद्वीपायोमुखद्वीपगोमुखद्वीपा हयकर्णादीना चतुर्णा क्रमेण पूर्वोत्तरपूर्वदक्षिणदक्षिणा-परापरोत्तरेम्यश्चरमान्तेम्य पञ्च योजनशतानि लवणोदिघमवगाह्य पञ्चयोजनशतायामविष्कम्भा भवन्ति, तत्प्रतिपादकाश्चान्ये चत्वार उद्देशका भवन्तीति। (वृ० प० ४२६) एहिज आदर्शमुखाटिक ने ईशाण, अग्नि, नैरुत वायव्य कूण ना चरिमात थकी छ सौ जोजन लवणसमुद्र अवगाही ने छ सौ योजन लावा-चोडा अनुक्रम करिकै अश्वमुख द्वीप, हस्तिमुख द्वीप, सिंहमुख द्वीप, व्याघ्रमुख द्वीप हुनै, ते प्रतिपादक अनेरा च्यार उद्देशा हुनै इति ।

# नवमशते पंचदशोद्देशकादारभ्याष्टादशोद्देशकार्थः ॥६।१५-१८॥

एहिज अश्वमुखादिक ने तिमहिज अनुक्रमे ईशाणादिक च्यार विदिशि ना चिरमात थकी सात सौ योजन लवणसमुद्र अवगाही ने सातसौ जोजन लावा चोडा अश्वकर्ण द्वीप, हस्तिकर्ण द्वीप, अकर्ण द्वीप, कर्णत्रावरण द्वीप हुवै, ते प्रतिपादक विल अनेरा च्यारहीज उद्देशा इति।

# नवमशते एकोनिवशितितमोद्देशकादारभ्याद्वाविशितितमोद्देशकार्थः

ાાહા ૧૯-૨૨ાા

एहिज अश्वक्षणीदिक ने तिमहिज अनुक्रमे ईशाणादिक च्यार विदिशि ना चिरमात थकी आठ सौ योजन लवणसमुद्रे अवगाही ने आठ सौ योजन लावा-चोडा उल्कामुख द्वीप, मेघमुख द्वीप, विद्युन्मुख द्वीप, विद्युह्त द्वीप हुवै, ते प्रतिपादक विल अनेरा च्यार हिज उद्देशा इति ॥

# नमवशते त्रयोविशतितमोद्देशकादारभ्याषड्विशतितमोद्देशकार्थः

ાાદારરૂ-રદ્દાા

एहिज उल्कामुख द्वीपादिक नै तिमहिज अनुक्रमे ईशाणादिक च्यार विदिशि ना चिरमात थकी नो सौ योजन लवणसमुद्र अवगाही नै नो सौ योजन लावा-चोडा घनदत द्वीप, लष्टदत द्वीप, गूढदत द्वीप, शुद्धदत द्वीप हुवै, ते प्रतिपादक वली अनेरा च्यारहीज उद्देशा। इहा तीसमो शुद्धदत उद्देशक इति।।

तथा पन्तवणा रा अर्थ में एहवूं कहा — छप्पन अतरदीप हुवै अनै इहा अहावीस कहा, ते किम ? जे चुल्लहिमवत वर्षधर पर्वत ने विषे पूर्व पश्चिम ने दिशि जेहवा जे प्रमाणे जेतल अतर जे नाम अठावीस अतरदीप छै, तेहवा ते प्रमाणे तेतल अतर ते नामें अठावीस अतरदीप छै, तेहवा ते प्रमाणे तेतल अतर ते नामें जिल्ला हाल रीपर्वत ने पूर्व पश्चिम पिण अट्ठावीस अतरदीप छै, वे मिली छप्पन थावै। ते भणी सदृशपणा माटै इहा अठावीसज कहाा। हिवै ए द्वीप न विवरण काइक लिखिये छै—

इहा जबूद्दीप ने विषे भरतक्षेत्र ने सीमाकारी एक सत योजन ऊचो, पच-वीस योजन ऊडो, एक हजार ने वावन योजन अने वार कला-एतलो पहुलो, पूर्वापर लवणसमुद्र पर्यंत लावो सुवर्णमय चुल्लिहमवत नामा वर्षधर पर्वत छै। तिण पर्वत ने वे छेहडै पूर्व पिच्चमे लवणसमुद्र माहे गजदताकारे वे दाढा नीकली छै। वे पूर्वे वे पिच्चमे-एव च्यार दाढा छै। तिहा पूर्व दिशि ईशाणकूणे नीकली जे दाढा तेहने विषे चुल्लिहमवत ना छेहडा थी तिण सौ जोजने एकोरुक नामा द्वीप छै त्रिण सौ योजन लावु-पहुलो, वृत्ताकारे नवसौ गुणपचास योजन कायक ऊणी

विल हिमवत ना छेहडा थी पूर्व दिशे अग्निकूणे जे दाढा छै तेहने विषे त्रिण सौ योजने आभासिक नामा द्वीप छै एकोरुक प्रमाण ।

वली पिच्चिम दिशि नैरुत कूणे जे दाढा छै, तेहने विपे हिमवत नां छेहडा धी त्रिण सौ योजने वैषाणिक नामा द्वीप छै एकोरुक प्रमाण।

विल पश्चिम दिशि वायन्य कूणे जे दाढा छै, तेहनै विषे हिमवत ना छेहडा थी त्रिण सी योजने नगोलिक नामा द्वीप छै एको एक प्रमाण ।

एतेपामेवादर्शं मुखादीना पूर्वोत्तरादिम्यश्चरमान्तेम्य पड् योजनशतानि लवणसमुद्रमवगाह्य पड्योजनशता-यामविष्कम्भा क्रमेणाश्वमुखद्वीपहस्तिमुखद्वीपसिंह-मुखद्वीपव्याद्रमुखद्वीपा भवन्ति, तत्त्रतिपादकाश्चान्ये चत्वार उद्देशका भवन्तीति । (वृ० प० ४२६)

एतेपामेवाण्वमुखादीना तथैव सप्त योजनशतानि लवणसमुद्रमवगाह्य सप्तयोजनशतायामविष्कम्भा अश्वकर्णद्वीपहस्तिकर्णद्वीपकर्णप्रावरणद्वीपा प्रावरण-द्वीपा भवन्ति, तत्प्रतिपादकाश्चापरे चत्वार एवोद्देशका इति'। (वृ० प० ४२६)

एतेपामेवाश्वकर्णादीना तथैवाष्टयोजनशतानि लवण-ममुद्रमवगाह्याष्ट्रयोजनशतायामविष्कम्भा उल्कामुख-द्वीपमेघमुखद्वीपविद्युन्मुखद्वीपविद्युद्दन्तद्वीपा भवन्ति, तत्प्रतिपादकाश्चान्ये चत्वार एवोद्देशका इति । [(वृ० प० ४२६, ४३०)

एतेपामेनोल्मामुखद्वीपादीना तथैन नव योजनशतानि लवणसमुद्रमवगाद्य नवयोजनशतायामनिष्कम्भा घनदन्तद्वीपलष्टदन्तद्वीपगूढदन्तद्वीपशुद्धदन्तद्वीपा भवन्ति, तत्त्रतिपादकाश्चान्ये चत्वार एनोद्देशका इति, एनमादितोऽत्र त्रिशत्तम शुद्धदन्तोद्देशक ॥ (वृ० प० ४३०)

१३

१ यह समग्र वर्णन जीवाभिगम की तीसरी प्रतिपत्ति में प्राप्त होता है। वहा अन्तर द्वीपों के वर्णन में १७वा द्वीप अश्वकर्ण है और १०वा द्वीप सिंहकर्ण है। पन्नवणा (१।०६) में भी यही कम है। भगवती की वृत्ति में मिह कर्ण द्वीप के स्थान पर हस्तिकर्ण द्वीप है। यह कम ठाण (४।३२५) से मिलता है। इससे आगे वृत्ति में कर्णप्रावरण द्वीप और प्रावरण द्वीप का उल्लेख है। इसका मेल न तो जीवाभिगम, पन्नवणा और ठाण के साथ है और न ही जयाचार्य द्वारा लिखित वात्तिक के साथ है। सम्भव है भगवती की वृत्ति के मुद्रणकाल में यह प्रमाद हुआ हो। जयावार्य ने किसी हस्तलिखित प्रति के आधार पर अथवा ठाण के आधार पर यह वार्तिक लिखा हो, ऐसा भी हो सकता है।

इस ए च्यार द्वीप हिमवत ने च्यार कोणे च्यार दाढा ने विषे गरीने प्रमाणे हैं। ए च्यार द्वीप केंडे च्यार सौ योजने अने जबूद्वीप नी जगती थकी पिण च्यार सौ-च्यार मौ योजने हयकणं, गयकणं, गोकणं, झच्कुलिकणं ए च्यार द्वीप छैं। च्यार सौ योजन लावा-पहुला, वृत्ताकारे वार मौ पैमठ योजन परिचि., यथा एकोकक केंद्रे ह्यकरण, आभामिक केंडे गजकणं, वैपाणिक केंद्रे गोकणं, नागोलिक केंडे भष्कुलिकणं—इणी पर मवंत्र जाणवू।

ए हयकणींदि च्यार द्वीप केंद्र पाच सौ योजन अने जगती थकी पिण पाच सौ-पाचमी योजन आदर्गमुखद्वीप, मिढमुख द्वीप, अयोमुख द्वीप, गोमुख द्वीप —ए च्यार द्वीप छै। पाचसौ-पाचमौ योजन लावा-पहुला वृत्ताकारे, पनरे सौ एउयामी योजन परिचि। विल ए आदर्शमुखदि च्यार द्वीप केंद्र छह मौ-छह मौ योजने अने जगती थी पिण छह सौ-छह मौ योजने अश्वमुख, हस्तिमुख, मिहमुख, व्याध्रमुख— ए च्यार द्वीप छै। छहमौ-छहसौ योजन लावा-पहुला वृत्ताकारे, अठारे मौ मलाणु योजन परिचि।

विल ए अश्वमुखादि च्यार द्वीप केर्ड सातमी-मातमी योजन, जगती यकी पिण सातमी-मातसी योजने अश्वकणं, सिंहकणं, अक्रणं, कर्णप्रावरण -ए च्यार द्वीप छै। मातसी-मानमी योजन लावा-पहुला वृत्ताकारे, वावीम मी तेरै योजन परिधि।

विल ए अञ्चकणींदि च्यार द्वीप केड आठमी-आठमी योजने जगती थकी पिण आठसी आठमी योजने उल्कामुख, मेघमुख, विद्युत्मुख, विद्युद्तं —ए च्यार द्वीप छै। आठसी योजन लावा-पहुला वृत्ताकारे, पचवीमसी गुणत्रीम योजन परिचि।

विल ए उल्कामुख मेघमुखादि च्यार द्वीप केंडे नवमी-नवमी योजने जबूद्वीप नी जगती थकी पिण नवसी-नवमी योजने घनदत, लट्टदत, गूददत शुद्धदंत—ए च्यार द्वीप छै। नवमी योजन लावा-पहुला वृत्ताकारे, अट्टावीममी पैतालीस योजन परिधि। एतलै चूलहेमवत पर्वत नी च्यार दाढा एह अट्टावीस द्वीप छै। उम शिखरी पर्वत ने विषे पिण अठावीम द्वीप छै। एवं छप्पन अंतरद्वीप जाणवा।

एह सर्व द्वीप प्रत्येके-प्रत्येके पद्मवरवेदिकाए अनं वनखडे परिवेद्दित महा-रमणीक छै। एहनो वर्णन जीवाभिगम' सूत्र थी विशेष जाणवो। ते द्वीप ने विषे युगिलया मनुष्य छै। ते मनुष्य ना अत्यत महामुदर रूप छै। पिण द्वीप ना नाम जेहवा आकारे नथी। जे भणी श्री जीवाभिगम सूत्र ने विषे एहना रूप मवल देवता थी अधिक वखाण्यो छै अने अत्यत मुखी छै। ते मनुष्य ने आठमी धनुष्य ऊंचपणै शरीर अने पत्थोपम नो असन्यातमो भाग आजसो हुवै। यत —

> अंतरदीवेमु नरा घणुसय अद्धिमया मया मुझ्या । पार्तिति मिहुणघम्म पल्लस्म असलभागाओ ॥१॥ चउसिंहु पिटुक्तरटगाणि मणुआण वच्चपालणया । अअुणामीड तु टिणा चउत्यभत्तेण आहारो त्ति ॥२॥

#### सोरठा

- १८ वृत्ति विषे ए वात, गिरि पर अतरद्वीप छे। वर्मसीह आख्यात, लवणोदिध अतर अछै।।
- १६ \*इम अठवीसज आखिया, अतरद्वीप ना ताय। लावपणे ने विक्खभपणे, पोता-पोता ना कहिवाय।।

१६. एव अट्ठावीम वि अतरदीवा मएण सएण आयाम-विक्संभेण भाणियव्या।

<sup>\* :</sup> वीर वखाणी राणी चेलना जी

१. जी० ३।२१६-२२७

२. अभियान राजेन्द्र कोश भाग० १ पृ ६७

<sup>-</sup>१४ भगवती-जोह

२०. णवरं जे इतलो विशेष छै, इक-इक द्वीप नो जोय।
सह अठवीस उद्देसगा, सेवं भते । अवलोय।।
२१. नवम शत उद्देशो तीसमो, इकसौ सित्तरमीं ए ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' हरष विशाल।।

नवमशते सप्तविंशतितमोद्देशकाबारभ्यात्रिंशत्तमोद्देशकार्थः ॥६।२७-३०॥

२० नवर दीवे दीवे उद्देसओ, एव सब्वे वि अट्ठावीस उद्देसगा ॥ सेव भते । सेव भते । ति (श० ६।७,८)

ढाल: १७१

## सोरठा

१ कह्या अर्थ ए सार, ते तो श्री जिन धर्म थी। जाणे अधिक उदार, अणसुणियो पिण को लहै।। २ इत्यादिक जे अर्थ प्रतिपादन रै कारणे। कहियै हिवै तदर्थ, उद्देशक इकतीसमो।।

### दूहा

- ३ नगर राजगृह जाव इम, बोल्या गोयम स्वाम। धर्मफलादिक वचन प्रभु! अणसांभलिया ताम।।
- ४ केवलज्ञानी जिण तणे पासै सुणियो नाय । धर्म केवली-भाखियो, श्रवणपणे करि पाय ॥

## सोरठा

५.श्रवणपणे करि ख्यात, भाव धर्म सुणवा तणां। एहवू अर्थ जणात, वदै केवली तेह सत्य।। ६.श्रवण रूप कहिवाय, वंछा रूप लहै जिको। वंछै धर्म सुहाय, ते पिण जाणे केवली।।

## दूहा

- ७ तथा केवली नैं जिणे, स्वयमेव प्रश्न पूछेह। पुनः केवली पै सुण्यो, केवली श्रावक तेह।
- इमज केवली नी जिका, तत श्राविका ताम।
   ए बिहु पै अणसाभल्यां, धर्म लहै अभिराम।।
   १. सेव केवली नी करै, अन्य भणी कथ्यमान।
   सुण धारै ते जिण तणो, कह्यो उपासग जान।।

- १ उक्तरूपाश्चार्था केवलिधर्माद् ज्ञायन्ते त चाऽश्रुत्वाऽिप कोऽिप लभते। (वृ०प० ४३०)
- २ इत्याद्यर्थप्रतिपादनपरमेकत्रिशत्तममुद्देशकमप्याह— (वृ० प० ४२६)
- ३ रायगिहे जाव एव वयासी—असोच्चा ण भते । अश्रुत्वा—धर्मंफलादिप्रतिपादकवचनमनाकर्ण्यं (वृ० प० ४३२)
- ४ केवलिस्स वा। 'केवलिन' जिनस्य। (वृ० प० ४३२)

- ७ केवलिसावगस्स वा ।
   'केवलिसावगस्स व' त्ति केवली येन स्वयमेव पृष्टः
  श्रुत वा येन तद्वचनमसौ केवलिश्रावकस्तस्य ।
   (वृ० प० ४३२)
- केविलसावियाए वा ।
- केवलिजवासगस्स वा ।
   केवलिजवासगस्स व' त्ति केवलिन जपासना विद्धा नेन केवलिनैवान्यस्य कथ्यमानं श्रुत येनासी कंवल्यु पासक ।
   (वृ० प० ४३२)

- १०. इमज केवली नी जिका, उपासगा गुणग्वान। ए विहुं पै अणसाभल्या, धर्म लहै सुध मान।।
- ११. अथवा केवली-पाक्षिक, स्वयंवुद्ध कहिवाय। ते पासे सुणियां विना, लहै धर्म मुखदाय॥
- १२ तथा स्वयवुद्ध नो जिको. श्रावक गुण नी राण। स्वयंबुद्ध नी श्राविका, अणसुणिय विहु पास।।
- १३. उपासग स्वयंबुद्ध नो, उपासगा विल ताय। ए विहुं पे सुणियां विना, धर्म पामवु श्राय।।
- १४ ए दण पे सुणिया विना, केवली भाख्यो धर्म। श्रुत ने चारित्र रूप लहे, श्रवण रूप करि पर्म॥
- १५. जिन भार्षे यां दश कने, सुणिया विण जिन धर्म। सुणवो कोइक पामियै, कोइक न लहै मर्म॥
- १६. किण अर्थे प्रभु ! इम कह्यो, विण सुणियं दश पास । कोडक धर्म सुणवो लहै, कोडक न लहै तास ?
- १७. <sup>१</sup>जिन भाखे सुण गोयमा! ज्ञानावरणी कर्म काइ क्षयोपशम जिण की थो, हो लाल। ते दशु पास सुण्या विना, धर्म केवली भाख्यो कांड सुणवो पामै सी थो, हो लाल।।

- १८. इहा बहु वच सवादि, नाणावरणिज्जा कह्यो। मति ज्ञानावरणादि, बहु भेदे करि जाणवु॥
- १६. फुन अवग्रह पिछाण, मित आवरणादिक तणा। भेद करीने जाण, ते वहु भावपणां थकी॥
- २० क्षयोपणम वहु भेद, तेह तणा आवरण थी। वहुवच करि सवेद, ज्ञानावरणी ने कहा।।
- २१. \*ज्ञानावरणी क्षयोपशम निंह कियो, ते दश पै विण सुणियै काइ जिन घर्म सुणवो न पावै। तिण अर्थे कह्यो विण सुण्यो, धर्म सुणवो कोइ पावै कोडक रै श्रवण न आवै।।

#### सोरठा

२२. गिरि-सरिता पापाण, तेह घोलणा न्याय करि। कोइक नै पहिछाण, पामै धर्मज इहविधे ॥ २३. क्षयोपणमईज जेह, अतरंग कारण तस् । जिनोक्त धर्म लहेह, श्रवणरूप भावे करी ॥

"लय: पातक छानो नवि रहै

- १०. केवनिडवागियाम् या ।
- ११. न प्पनिष्यस्म वा । 'तप्पनिष्यस्म' त्ति केवनिन पाक्षितस्य स्वयंबुद्धस्य । (यृ० प० ४३२)
- १२ तप्पनिगयमावगस्म वा, तप्पनिगयमावियाए वा ।
- १३ तप्पतिसयडवासगस्य वा, तप्पतिसयजवासियाए वा ।
- १४. केविनपण्णत्त धम्म तभेजज सवणयाए ?
  'धम्म' ति श्रुतचारित्रमपं 'नभेजज' ति प्राप्तुयात्
  'सवणयाए' ति श्रवणतया श्रवणमपतया श्रोतुमित्यर्थं.। (वृ० प० ४३२)
- १४. गोयमा । अमोच्चा ण केविनम्म वा जाय तप्प-निषयज्वामियाए वा अत्थेगितए केविनिपण्णत्तं धम्म नभेज्ज मवणयाए, अत्थेगितए केविनिपण्णत्तं धम्म नो तभेज्ज सवणयाए। (शा॰ ६।६)
- १६ में केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चउ-अमोच्चा णं जाव नो लभेजज मवणवाए ?
- १७. गोयमा । जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माण पञ्जोवसमे कडे भवड मे णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पविषयखवासियाण वा केवलिपण्णत धम्म नभेजज मवणयाए।
- १८-२०. 'नाणायरणिज्जाण' ति बहुवचन ज्ञानावरणीयस्य मितज्ञानावरणादिभेदेनावग्रहमत्यावरणादिभेदेन च बहुत्वात् । (वृ० प० ४३२)
- २१ जस्स ण नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से ण अमोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पविखयउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवयणाए। से तेणट्ठेणं गोयमा! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव नो लभेज्ज सवणयाए। (श० ६।१०)
- २२. ज्ञानावरणीयस्य क्षयोपगमश्च गिरिसरिदुपलघोलना-न्यायेनापि कस्यचित्स्यात् । (वृ० प० ४३२)
- २३. तत्सद्भावे चाश्रुत्वाऽपि धर्मं लभते श्रोतु, क्षयो-पश्रमस्यैव तल्लाभेऽन्तरङ्गकारणत्वादिति।

(वृ० प० ४३२)

२४. हे प्रभु! दश पे सुणियां विना, केवल शुद्ध सुजाणी कांइ वोध सम्यक्त्व सुपावै ? नी प्रत्येकवृद्धादिक जिन कहै कोइक पावै कोइक रै वोध न आवै।। २५ किण अर्थे ? तव जिन कहै, दर्शणावरणी कर्मज कांइ क्षयोपशम जिण कीघो। सुणिया विना, सम्यक्दर्शण शुद्धज अनुभवै लहै ते सीघो।।

२६ दर्शणावरणी क्षयोपशम नहिं कियो, ते दश पे विण सुणियां सम्यक्त्व न पावै कोई। तिण अर्थे कह्यो विण सुण्यो, कोइक बोधज पाव कोइक नै बोध न होई।।

#### सोरठा

सम्यक्तव

तास

आवरणी कर्म

1

सोय, २७ दर्शन जोय, पिण दर्शणावरणी नही ॥ मोहनी दर्शण तेहनो क्षयोपशम, थया । २८ दर्शणावरणी कमं, छै ॥ वोधि सम्यक्त लहै सम्यक्तव सुमर्म, तेहनै। २६ सम्यक्दर्शणहीज, बोधि कहीजै माटैज कहीज, वोधि पर्याय नो ॥ सम्यक्तव ३० के प्रभु! दश पै सुण्या विना, अणगारपणो ते पावै। सपूर्ण केवल शुद्ध जिन कहै दश पै सुण्या बिना, कोइक साधु थावै कोइक मुनिपणो न भावै।।

तव जिन कहै, ३१. किण अर्थे ? धर्म अतराय कर्म काइ क्षयोपशम जिण की घो। सुणिया विना, केवल गुँछ सपूर्ण मुंड थई मुनि ह्वं सीघो।।

#### सोरठा

जिको। चारित्र प्रतिपत्ति, तास विघ्नकारक दै ॥ सर्वविरति कथत्ति, आवा चारित्र-मोह

\*लय: पातक छानो नवि रहै

२४,२५. असोच्चा णं भते । केवलिस्स वा जाव तप्प-क्खियउवासियाए वा केवल बोहि वुज्मेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए केवल वोहि वुज्केज्जा अत्थे-गतिए केवल वोहिं नो वुज्भेज्जा। (श० ६।११) मे केणट्ठेण भते 1. गोयमा । जस्स ण दरिसणा-वरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पिक्खयउवासियाए वा केवल वोहि बुज्भेज्जा। 'केवलं वोहिं' ति शुद्ध सम्यग्दर्शन 'वुज्भेज्ज' त्ति

२६. जस्स ण दरिसणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्प-विखयउवासियाए वा केवल वोहि नो वुज्भेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा । एव वुच्चड-- असोच्चा ण जाव केवल वोहि नो वुजमेज्जा। (হা০ ১। १२)

बुद्ध्येतानुभवेदित्यर्थं यथा प्रत्येकबुद्धादि ।

२७,२८ 'दरिसणावरणिज्जाण' ति इह दर्शनावरणीय दर्शनमोहनीयमभिगृह्यते, बोधे सम्यग्दर्शनपर्यायत्वात् तल्लाभस्य च तत्क्षयोपशमजन्यत्वादिति ।

(वृ० प० ४३२)

(बृ० प० ४३२)

३० असोच्चा ण भते । केवलिस्स वा जाव तप्पविखय-उवासियाए वा केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अण-गारिय पव्वएज्जा? गोयमा । असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पिक्खय-उवासियाए वा अत्येगतिए केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा अत्थेगतिए केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय नो पव्वएज्जा। (श॰ ६।१३) 'केवला' शुद्धा सम्पूर्णा वाऽनगारितामिति योगः।

३१ से केणट्ठेण भते। .... गोयमा । जस्स ण धम्मतराइयाण कम्माण खओ-वसमे कडे भवति से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पिक्खयउवासियाए वा केवल मुडे भवित्ता अगा-राओ अणगारिय पव्वएज्जा ।

३२,३३. 'धम्मतराइयाण' ति अन्तरायो—विघ्न सोऽस्ति येषु तान्यन्तरायिकाणि घम्मंस्य चारित्रप्रतिपत्ति-लक्षणस्यान्तरायिकाणि धम्मन्तिरायिकाणि

३३ तास क्षयोपशम थाय, मुड थई लहै मुनिपणो।
एहवू न्याय जणाय, वीर्य अतराय वृत्ति मे।।
३४ भ्धमं अतराय कमं जिणे,
क्षयोपशम नहि कीधो अणगारपणो तसु नावै।
तिण अर्थे कह्यो विण सुण्यो,
कोडक तो मुनि थावै कोडक मुनिपणो न भावै।

३५. हे प्रभु । दश पै सुण्या विना,
केवल शुद्ध सपूर्ण कांइ व्रह्मचर्य ए पालै ?
जिन कहै कोइक पालै सही,
कोड एक नहीं पालै काइ मिथुन प्रति नहीं टालैं।।
३६. किण अर्थें ? तव जिन कहै,
चिरत्तावरणी कर्मज काइ क्षयोपशम जिण कींधो।
ते दश पे सुणिया विना,
ब्रह्मचर्य शुद्ध पालै काड मिथुन-विरित गुण लींधो।।

#### सोरठा

३७ चरित्तावरणी जाण, लक्षण पु - वेदादि छै। मिथुन-विरति पहिछाण, विशेष थी ग्रहिवू इहा।।

३८ \*चिरत्तावरणी कर्म जिण,
क्षयोपशम निह कीधो ते ब्रह्मचर्य निह पालै।
तिण अर्थे इम आखियो,
विण सुण्या ब्रह्म कोइ पालै काइ कोइ मिथुन निह टालै।।
३६. हे प्रभु! दश पै सुण्यां विना,
संजम शुद्धज पालै काइ अतिचार टालेवा।
जतना विशेष तिणे करी,
जिन कहै कोइक पामै कोइक निह पामेवा।।

४०. किण अर्थे । तव जिन कहै,
जयणावरणी कर्मज कांड क्षयोपशम जिण कींधो।
ते दश पास सुण्यां विना,
जाव केवल चारित्र नै अति जतना पामै सींधो।।

४१ जयणावरणी क्षयोपशम नींह कियो, ते दश पे विण सुणिया नींह पामै जतना नार्में। तिण अर्थे कह्यो विण सुण्यां, कोडक सजम पामै कोडक संजम न पामै।। वीर्यान्तरायचारित्रमोहनीयभेदानामित्यर्थः।

(वृ० प० ४३२,४३३)

३४ जस्स ण धम्मतराइयाणं कम्माण प्रकोवसमे नो कडे भवित से ण • • • केवल मुडे भिवत्ता विश्वाराओं अणगारिय नो पव्यएज्जा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चड — असोच्चा ण जाव केवल मुडे भिवत्ता विगाराओं अणगारिय नो पव्यएज्जा । (श० ६।१४)

३५ असोच्चा ण भते । केविलस्स वा जाव तप्पिक्खय-उवािमयाए वा केवल वभचेरवास आवसेज्जा?गोयमा। अत्थेगितिए केवल वभचेरवास आवसेज्जा, अत्थेगितिए केवल वभचेरवास नो आवसेज्जा। (श० ६।१५)

३६ से केणट्ठेण भंते । ...... गोयमा । जस्स ण चरित्तावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवड से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पविखयजवासियाए वा केवल यभचेरवास आवसेज्जा।

३७ 'चरित्तावरणिज्जाण' ति इह वेदलक्षणानि चारित्रा-वरणीयानि विशेपतो ग्राह्याणि, मैथुनविरतिलक्षणस्य ब्रह्मचर्यवासस्य विशेपतस्तेपामेवावारकत्वात्।

(वृ० प० ४३३)

२८ जस्स ण चिरतावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कढे भवड से ण वभचेरवास नो आवसेज्जा से तेणट्ठेण गोयमा । एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल वभचेरवास नो आवसेज्जा। (श० ६।१६)

३६ असोच्चा ण भते । केवलिस्स वा जाव तप्पविश्वय-उवासियाए वा केवलेण सजमेण सजमेज्जा ? गोयमा । ... अत्थेगतिए केवलेण सजमेण सजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा।

(য়০ ६।१७)

इह सयम प्रतिपन्नचरित्रस्य तदितचारपरिहाराय यतनाविशेष । (वृ० प० ४३३)

४० मे केणट्टेण भते । एव वुच्चइ : ..... गोयमा । जस्स ण जयणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पविखयखवासियाए वा केवलेण सजमेण सजमेज्जा।

४१ जस्म ण जयणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्प-क्खियउवासियाए वा केवलेण सजमेण नो मंजभेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा । एव वुच्चइ— असोच्चा ण जाव केवलेण मजमेण नो सजमेज्जा। (श० ६।१८)

<sup>&</sup>lt;sup>३</sup>लय: पातक छानो नवि रहै

४२. हे प्रभु ! दश पे सुण्या विना,
केवल शुद्ध सपूर्ण संवर करि आतम भावे।
संवर शब्दे शुभ अध्यवसाय छै,
जिन कहै कोडक भावे कोइक सवर न पावे।।

४३. किण अर्थे ? तव जिन कहै,
अध्यवसायावरणी कर्म क्षयोपश्यम थाये।
इहां भाव चारित्रावरणी कह्यो,
ते विण सुण्या प्रवर्त्ते संवर शुभ अध्यवसाये॥

#### सोरठा

शुभ ्अध्यवसाय, चारित्ररूपपणें करि । ४४. आख्या ताय, चारित्रावरणी आवरणी वृत्ति तसु रूधण रा सार, ४५. 'कर्म अध्यवसाय जोगा थो न्यार, बुद्धिवंत न्याय विचारज्यो ॥ त्रिहुं कहाय, चंचल जेहनो । स्वभाव ४६. जोग व्यापार सुखदाय, स्थिर स्वभाव है तेहनों ॥ संवर ठाणे' समवाअंग पेख, फुन ४७. पचम अजोग संवर लेख, पिण सवर शुभ जोग नहिं'।। (ज० स०)

४८. \*अध्यवसायावरणी कर्म नो, क्षयोपशम नहि कीधो तसु शुद्ध सवर नहि होई। तिण अर्थे कह्यो विण सुण्या, कोइक सवर लहियै नहि पामै सवर कोई।।

४६. हे प्रभु ! दश पे सुण्यां विना,
केवल आभिनिवोधिक ए प्रवर ज्ञान उपजावे ?
जिन कहै दश पे सुण्या विना,
आभिनिवोधिक ज्ञानज कोइ पावे को निहं पावे ॥

५०. किण अर्थे ? तब जिन कहै,

आभिनिवोधिक ज्ञानावरणी क्षयोपशम कीघो।
ते दसु पे सुणियां विना,
केवल शद्ध संपूर्ण आभिनिवोधिक लहै सीघो॥

४२. बसोच्चा णं भंते ! केवितस्स वा जाव तप्पिव्यय-उवासियाए वा केविलणं संवरेणं संवरेज्जा ? गोयमा ! "" "अत्येगितिए केविलणं नवरेणं संवरेज्जा, बत्येगितिए केविलणं सवरेणं नो सवरेज्जा। (श० ६।१६)

सवरगव्देन शुभाव्यवसायवृत्तेविवक्षितत्वात् । (वृ० प० ४३३)

४३. से केणट्ठेणं भंते ! ......
गोयमा । जस्स ण अज्भवमाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवड से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पिक्खियजवासियाए वा केवलेणं सवरेणं संव-रेज्जा।
तस्याश्च भावचारित्ररूपत्वेन तदावरणक्षयोपशम-लम्पत्वात्। (वृ० प० ४३३)

४४. अध्यवसानावरणीयशब्देनेह भावचारित्रावरणीयान्यु-क्तानीति । (वृ० प० ४३३)

४८. जस्स ण अज्भवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओ-वसमे नो कडे भवइ से णं "केवलेण संवरेणं नो संवरेज्जा से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ— असोच्चा ण जाव केवलेण सवरेण नो संवरेज्जा। (श० ६।२०)

४६. असोच्चा ण मते ! केवलिस्स वा जाव तप्पित्यय-उवासियाए वा केवलं आभिणिवोहियनाणं उप्पा-डेज्जा ? गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स या जाव तप्पित्यय-उवासियाए वा अत्येगितिए केवलं आभिणिवोहिय-नाणं उप्पाडेज्जा, अत्येगितिए केवलं आभिणिवोहि-यनाण नो उप्पाडेज्जा। (म० ६।२१)

५०. से केणट्ठेण मते । .... ...
गोयमा ! जस्स णं आभिणिवोहियनाणावरणिज्जाण
कम्माण सञीवसमे कडे भवट से णं अमीच्चा
केविलस्स वा जाव तप्पविस्मयज्वामियाए वा केवलं
आभिणिवोहियनाण उप्पाडेज्जा।

<sup>&</sup>lt;sup>भ</sup>लय: पातक छानो निव रहै

१. ठाण ४।११० ।

- ५१ आभिनिवोधिक ज्ञानावरणी कर्म नों, क्षयोपशम निह्कीधो ते दश पासै विन सुणियो। ते मितज्ञान पामै नही, तिण अर्थे कोड पामै कोड निह् पामै उम थुणियो।।
- ५२. हे प्रभु ! दण पे मुण्या विना,
  केवल णुद्ध संपूरण काट श्रुतज्ञान ते लहिये ?
  जिम मित तिम श्रुत ज्ञान छै,
  णवर तसु श्रुतज्ञानावरणी क्षयोपणम कहिये।।
- ५३ णुद्ध अयधिज्ञान उमहीज छै,
  णवर अयधिज्ञानावरणी क्षयोपणम घरणी।
  इम णुद्ध मनपज्जय नहै,
  णवर क्षयोपणम जे मनपज्जयज्ञानावरणी।।
- ५४ हे प्रभु । दश पे सुणिया विना,

  केवलज्ञान उपाव ? इमहिज णवर थाव ।

  केवल जानावरणी नो क्षय कह्यं,

  शोप तिमज निण अर्थे जावत केवल नहि पाव ॥

- आख्या अर्थ, विन समुदाय करी महु। ५५. पूर्वे छै हिय आगर्ने।। इग्यार तदर्थ, कहियै प्द \*हे प्रभू! दण पे मुण्या विना, धर्म केवली भाख्यो मुणवो भाव पहिलू। सम्यक्तव केवल केवल मुड थर्ड ने अणगारपणु लहै वहिलू॥ व्रह्मचर्यवामो वसं, ५७ णुद्ध केवल संजम पामै केवल संवर मवरिय। आभिनियोधिक णुद्ध लहे,
- जाव शुद्ध मनपञ्जव विल केवलज्ञान उचरिये।। ५८. जिन कहै दण प सुण्यां विना,

धर्म सुणवो कोड पावै निह्न पावै छै विल कोई। कोडक णुद्ध सम्यक्त्व लहै,

कोइएक नहि पार्व केवल शुद्ध सम्यक्त सोई॥

५६ कोडक केवल मुढ थई, गृहस्थावास थकी जे अणगारपणों अभिलाखै। कोडक णुद्धज मुड थई, गृहस्थावास तजी नैं अणगारपणो नहिं चाखै।। ५१. जम्म ण आमिणियोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं गळीवममे नो कहे भवह मे ण अमोच्या केवलिस्स वा जाव नव्यक्तियस्य स्वामियाए वा केवल आमिणि-बोहियनाण नो उप्यारेज्जा। में तेणट्ठेण गोयमा । एव वुनाह—अमोन्या ण जाव केवल आभिणि-बोहियनाणं नो उप्यारेज्जा। (दा० ६।२२)

- ५२. अगोच्या णं मते । ग्यांतिम्म या जाव सप्पतिषय-उवानियाण् वा केयल मुयनाणं उपाटेज्या ? एव जहा आभिणियोदियनाणम्म वनस्यमा भिणया तहा मुयनाणम्म वि भाणियव्या, नवर — मुयनाणा-यरणिज्ञाण नम्माण मधीयमंभ भाणियये ।
- ५३. एवं चेय नेवल जीहिनाण भाणियव्य, नयरं— ओहिनाणावरणिज्ञाण सम्माण ग्रजीवसमे भाणि-यत्वे । एव नेवल मणपज्जवनाणं स्व्याद्वेवता, नवर —मणपज्जवनाणावरणिज्जाण मम्माणं राजीवसमे भाणियव्ये । (सं० पा०) (१० ६।२३-२५)
- ५८ अमीन्या ण भने । केयनिरम या जाव नामियय-ड्यामियाए या रेयलनाण डप्पाहेण्या ? एव चेन, नवर--केयलनाणावरणिज्ञाण कम्माणं नए भाणियह्ये, मेर्ग न चेवा (संव पाव) में नेपाह्वेण गाँगमा । .... अन्नाय केयननाण नो डप्पा-हेज्जा। (संव ६।२६,३०)
- ५५. पूर्वोक्तानेवार्थान् पुन ममुदायेनाह—

(यु० प० ४३३)

- ५६. अमीच्चा ण नते । केवितस्य वा जाव तप्पतियय-डवामियाए वा — केवितिषण्यत्तं धम्मं लभेज्ज मवण-याए केवलं बीहि बुज्मेज्जा, केवल मुद्दे भवित्ता अगाराओं अणगारिय पव्यएज्जा ।
- ५७. केवल बंभचेरवाम आवसेज्जा केवलेण सजमेण मंजमेज्जा, केवलेण संवरेण सवरेज्जा, केवल आभिणि-बीहियनाणं उप्पाटेज्जा, जाव (स० पा०) केवल मणपञ्जवनाण उप्पाटेज्जा, केवलनाण उप्पाटेज्जा?
- प्रद. गोयमा ! अमोच्चा णं केविलस्म वा जाय तप्प-विस्मयज्ञवानियाए वा अत्येगितिए केविलपण्णत्त धम्म नभेज्ज मवणयाए, अत्येगितिए केविलपण्णत्त धम्म नो नभेज्ज मवणयाए, अत्येगितिए केवल बोहि बुज्मेज्जा, अत्येगितिए केवल बोहि नो बुज्मेज्जा।
- ५६. अत्येगतिए केवल मुडे भिवत्ता अगाराओ अणगारिय पव्यएज्जा, अत्येगतिए केवल मुढे भिवत्ता अगाराओ अणगारियं नो पट्यएज्जा।

<sup>&</sup>lt;sup>4</sup>लय: पातक छानो नवि रहे

२० भगवती-जोड्

- व्रह्मचर्य वसै, ६०. कोडक शृद्ध शुद्ध सपूर्ण ब्रह्मचर्य नहिं पालै। संजम कोइक कोइक संजम न लहै अतिचार प्रतै निह टालै।। ६१. इम मंवर कोइक संवर न लहै दण पास सुण्या विण जाणी। लहै, को कोडक आभिनिवोधिक निह पामै पवर पिछाणी।। ६२. इम मनपज्जवे, केवल पावै कोडक नै केवल नावै। कोइ
  - त्र इम यापता नगपणपुर कोइ केवल पावै कोडक ने केवल नावै । किण अर्थे ? प्रभृ ! विण सुण्या, तिमहिज जावत कोइक वर केवल नाहि उपावै ।।
- ६३. श्री जिन भाखै जेहनै, ज्ञानावरणी कर्मज क्षय-उपशम न कियो सोई। दर्शणावरणी क्षयोपशम जिण निंह कियो, धर्म अतराय कर्मज ते क्षयोपशम निंह होई।।

६४. इम चरित्रावरणी क्षयोपशम निहं कियो, जयणावरणी कर्मज काइ क्षय उपशम निहं ज्याही। अध्यवसायावरणी क्षयोपशम नही,

आभिनिवोधिक ज्ञानावरणी क्षयोपशम नाही।।

६५. जावत विल मनप ग्जवे ज्ञानावरणीज, काइ क्षयोपशम नहि थायो। केवल ज्ञानावरणी जसु जावत क्षय नहि,

कीधो हो तसु आगल फल कहिवायो।।

६६. ते दश पास सुण्या विना, धर्म केवली भाख्यो काइ सुणवो ते निह भावै। केवल बोधि न अनुभवै,

जाव केवल निह पानै ए कर्म उदय फल थानै ॥ ६७ जिन ज्ञानावरणी क्षयोपशम कियो,

दर्शणावरणी कर्मज काइ क्षयोपशम जिण कीधो। धर्मातराय क्षयोपशम जसु. जावत केवल ज्ञानावरणी जिण क्षय कर दीधो।।

६८ ते दश पास सुण्या विना,
धर्म केवली भाख्यो सुण लाघै सुखकारी।
केवल बोधज अनुभवै,
जाव केवल उपजावै ए गुण एकादश भारी।।

६६ नवमे शत इकतीसम देश ए,
एक सौ इकोतरमी ए ढाल अनोपम भाखी।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी,
'जय-जश' हरप आनदा कांड गण वृद्धि सपित राखी।।

- ६०. अत्येगतिए केवल वंभचेरवास आवसेज्जा अत्येगतिए केवलं वंभचेरवासं नो आवसेज्जा। अत्येगतिए केवलेणं संजमेण सजमेज्जा, अत्येगतिए केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा।
- ६१. अत्थेगतिए केवलेणं सवरेण सवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेण सवरेण नो सवरेज्जा, अत्थेगतिए केवल आभिणिवोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं आभिणीवोहियनाण नो उप्पाडेज्जा।
- ६२. एवं जाव मणपज्जवनाणं (सं० पा०) अत्येगितए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्येगितिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। (श० ६।३१) से केणट्ठेण मते । एवं वुच्चइ—असोच्चा ण तं चेव जाव अत्येगितिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्ये-गतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ?
- ६३. गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ जस्स ण दरिसणावरणि-ज्जाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ जस्स ण धम्मतराइयाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवड ।
- ६४ एव चरित्तावरणिज्जाण जयणावरणिज्जाण अज्भ-वसाणावरणिज्जाणं आभिणिवोहियनाणावरणिज्जाण ।
- ६४. जाव (स० पा०) मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण लंभोवसमे नो कडे भवइ जस्म ण केवल-नाणावरणिज्जाण कम्माण खए नो कडे भवइ।
- ६६. से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पिखयउवा-सियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्म नो लभेज्ज सवणयाए, केवल बोहि नो बुज्भेज्जा जाव केवलनाण नो उप्पाडेज्जा।
- ६७. जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माण सओवसमे कटें भवइ, जस्स ण दरिमणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडें भवड, जस्म णं धम्मतराज्ञ्याण कम्माण सओवसमे कडें भवइ, एव जाव जस्म ण केवलनाणावरणिज्जाण कम्माणं सए कटें भवइ।
- ६८. से ण असोच्चा केवितस्स वा जाव तप्पविद्ययंज्ञा-मियाए वा केवितपण्णत्त धम्मं नभेज्ज मवणवाए, केवल बोहि बुज्मेज्जा जाव केवलनाणं उपाडेज्जा। (श० ६।३२)

### दूहा

- तसु प्रभु<sup>1</sup> उपजै केवलज्ञान। १. ते विण सुणियां ऊपजै ? भाखै तव भगवान।। केहनै तपस्वी ताय। २ वहुलपणे छठ-छट्टवत, वाल हिवै तेहनी, वारता आय ॥ विभग \*जिनवर कहै रे, इम होवै असोच्चा केवली रे ॥ (ध्रुपद) ३ अंतर-रिहत छठ-छठ करै रे, ऊची वाहु विहुं स्थापो रे। विषे रे, सूर्य स्हामी आतापोरे॥ आतापनभूमिका
- सरलपणे, स्वभावे उपशमवतो। ४ स्वभावे भद्र कोध मान माया लोभ ते, स्वभावे पतला अत्यतो॥ कोमल अछै, मार्दव निरहंकारो । कहिता सहितपणे करी, आलीनपणै अन्य दिवस ते किवारै। विनीतपणे करी, अध्यवसाये करी, शुभ परिणाम तिवारै। ७ लेस्या विशुद्धमाने करी, तदावरणी क्षयोपशम जन्नो। ईहा पोह मग्गण नी गवेषणा करता विभग अनाण उप्पन्नो ।।

## सोरठा

- पहिछाण, विभग अनाणावरणी ए। तदावरणो अवधिज्ञानावरणी तणो।। भेद सुजाण, ए ६ अवधिज्ञान अवलोय, वलि विभग अज्ञान दर्गण अवधिज एक है।। वेहू नो जोय, १० मति श्रुत ज्ञानावरण, तेहनु क्षयोपशम घरण, मित श्रुत ज्ञान अज्ञान वे।। गुण ए ११. तिम अवधि ज्ञानावरणी जान, क्षयोपशम तेहनु थया। अवधि पामै विभग अनाण लहै वलि।। सुज्ञान, १२. तदावरणी विभग अनाणावरणी ते जान, क्षयोपशम गुणठाण पिछाण, तेहनों थयो।। कहिता प्रति जाणवा। १३. ईहा पेख, छता अर्थ विशेख, तणै चेप्टा तास तेह सन्मुख थयो॥ १४ अपोह धर्म निर्णय करै। पक्ष रहीत, ध्यान एहवो अर्थ पुनीत, टवा मे आखियो॥ वडा १५. मगगण धर्म, तेह तणी आलोचना । अन्वय धर्म गवेपणा ए मर्म, व्यतिरेक आलोचना ॥ १६. करता एह तपसी भणी। विचार, तेह वाल विभंग अनाण तिवार, उपनो शुद्ध परिणाम थी॥
  - \*लय: राज पामियो रे करकंड् कंचनपुर तणो

- अथाश्रुत्वैव केवल्यादिवचन यथा किएचत् केवलज्ञान-मुत्पादयेत्तथा दर्शयितुमाह— (वृ० प० ४३३)
- २. तत्प्रायः पष्ठतपश्चरणवतो वालतपस्विनो विभङ्गः— ज्ञानविशेष उत्पद्यत इति ज्ञापनार्थंमिति ।

(वृ० प० ४३३)

- ३. तस्स णं छट्ठछट्ठेण अणिविखत्तेणं तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ पगिज्भिय पगिज्भिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स ।
- ४. पगइभद्याए पगइजनसत्तयाए पगइपयणुकोह-माण-माया-लोभयाए
- ५. मिउमद्वसपन्नयाए, अल्लीणयाए
- ६. विणीययाए अण्णया कयावि सुभेण अज्भवसाणेण सुभेण परिणामेणं
- ७ लेस्साहि विसुज्भमाणीहि-विसुज्भमाणीहि तयावर-णिज्जाणं कम्माणं खओवसमेण ईहापोहमग्गणगवेसण करेमाणस्स विव्मगे नामं अण्णाणे समुप्पज्जइ।
- दः 'तयावरणिज्जाण' ति विभङ्गज्ञानावरणीयानाम् । (वृ० प० ४३३)

- १३. इहेहा-सदर्थाभिमुखा ज्ञानचेप्टा । (वृ० प० ४३३)
- १४. अपोहस्तु-- विपक्षनिरासः । (वृ० प० ४३३)
- १५. मार्गण च---अन्वयधम्मिलीचन ग्वेषण तु-व्यतिरेकधमीलोचनिमिति । (वृ० प० ४३३)

- १७. 'इहां कही विणुद्ध लेस, तेजू पद्मज गुक्ल ए। ते भावे सुविणेष, द्रव्य प्रयोजन इहां नही।। १८. आख्या गुभ अध्यवसाय, गुभ परिणाम पिण भाव ए। ते माटै कहिवाय, विणुद्ध लेक्या पिण भाव छ।। १९. गुक्ल लेक्या नां पेख, लक्षण उत्तराध्येन मे। चउतीसमें' सुदेख, आख्या छै एहवा तिहा।। २०. वर्जे आर्त्त रुद्र, धर्म गुक्ल ध्यावै तिको। लेक्या गुक्ल अक्षुद्र, तेहनां ए लक्षण कह्या।।
- २१. विणिष्ट णुद्ध विशुद्ध, तेह शुक्ल ध्यावै तदा । वर्ज्या आत्ते रु रुद्दे, धर्म शुक्ल आख्या जदा॥ २२. शुक्ल लेक्या में जाण, गुणस्थानक तेरै अछै। ऊपरले गुणस्थान, शुक्ल ध्यान वर लीजियै॥ २३. प्रथम आदि गुणस्थान, शक्ल लेश वर्त्ते यदा। धर्म ध्यान पहिछान, निमल न्याय अवलोकियै।। २४. तिण कारण कहिवाय, तेह वाल तपसी तणां। विशुद्ध लेश रै मांय, धर्म-ध्यान ए अर्थ शुद्ध ।। २५ ते गुणठाणे अवलोय, ज्ञानावरणी कर्म नों। थयो क्षयोपशम सोय, तिण सू विभंग समुप्पनो ॥ २६. सुख विपाक अविरुद्ध, सुमुख सुदत्त प्रतिलाभिया। त्रिविध जोग तसु शुद्ध, त्रिकरण शुद्ध कह्या विल।। २७. ए पिण छै धर्म ध्यान, तेहथी परित ससार करि। मनुष्यायु वध जान, तिण सू धुर गुणठाण ए।। २८. गज भव मेघकुंवार, सुसला री अनुकप करि। कियो परित्त ससार, ए पिण धर्म ध्याने करि।।
- २६ तामली सोमल आदि, अनित्य-चितवणा तसु कही । अनित्य चितवणा साधि, धर्म ध्यान नो भेद है।। ३०. तिम इहा पिण शुद्ध लेश, अध्यवसाय परिणाम शुभ । धर्म ध्यान सुविशेष, तेहथी विभग समुप्पनो'।। [ज० स०]
- ३१ <sup>1</sup>विभग अनाण ऊपने छते, जवन्य यो आगुल नो विशेखै। असंख्यातमा भाग ने, जाणें ने विल देखे।।
- ३२. ते उत्कृष्ट थकी विल, जोजन असख हजारो। जाणे नै देखै अछै, क्षय-उपशम गुण सारो॥
- ३३. ते विभग अनाण ऊपजवे करी, जाण्या जीव अजीवो। पाखंड निज वृत में रह्या, सारभ सपरिग्रह अतीवो।।
- ३४. महासिक्वयमान जाणियो, अल्पसिक्लिशमान तेहो । महा नी अपेक्षा विशुद्धमान ते, तेह प्रते जाणेहो ॥

२०. अट्टहहाणि विज्जित्ता धम्ममुक्काणि भायए । पसन्नचित्ते दन्तप्पा मिगए गुत्ते य गुत्तिहि ॥ (उत्तरा० ३४॥३१)

२६,२७. तए णं तस्त सुमुहस्म गाहावद्दम तेण दथ्य-सुद्धेण .........तिविहेण तिकरणसुद्धेण सुदत्ते अणगारे पिंडलाभिए समाणे ससारे परित्तीकए। (विपा० २।१।२३)

२८ तए णं तुम मेहा ! ताए पाणाणुकपयाए .........संमारे परित्तीकए, माणुस्माउए निवदे ।

(ज्ञाता १।१।१८२)

- २६. तए ण तस्स तामिलस्स अणिञ्चजागिर्यं जागरमाणस्स "। (भ० श० ३।३६) धम्मस्स णं भाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ ""। (भ० श० २५।६० म)
- ३१,३२. से णं तेण विटमंगनाणेण समुप्पन्नेणं जहणीणं अंगुलस्स असखेज्जतिभाग उनकोमेण अमसेज्जाइ जोयणसहस्साइं जाणइ-पासइ।
- ३३. मे ण तेण विव्मंगनाणेणं समुप्पन्नेण जीवे वि जाण इ, अजीवे वि जाण इ, पासहत्वे सारंभे मपरिग्गहे 'पासहत्ये' ति व्रतस्यान् । (यृ० प० ४३३)
- ३४ सिकलिस्समाणे वि जाणदः, विसुज्क्षमाणे वि जाणदः।
  'सिकिनिस्ममाणे वि जाणदः' ति गहस्या निक्तरयमानतया निक्तरयमानानिए जानाित 'विसुज्क्षमाणे वि
  जाणदः' ति अल्पीयस्यार्शप विशुद्धधमानतया विद्युद्धधमानािष जानाित ।
  (यु० प० ४३३)

<sup>\*</sup>लयः राज पामियो रे करकंडू कंचनपुर तगो १. उ० २४।३१

- ३५. तेह प्रथम चारित्र थकी, पामै सम्यक्त्व सारो । एह पूर्वल गुणै करि, पाम्या बोधि उदारो ।।
- ३६. 'छठ-छठ तप पहिलां कियो, सूर्य स्हामी आतापो । प्रकृति भद्र उपणातता, पतली चौकडी व्यापो॥
- ३७ मृदु मार्दव आलीनता, भद्र विनीतपणे ताह्यो । जीव उज्जल थयां एकदा, आया गुभ अध्यवसायो ॥
- ३८. णुभ परिणाम लेज्या भलो, ए उत्तम गुण कर सीधो । विभंग ज्ञानावरणी कर्म नो, क्षयोपशम जिण कीघो ॥
- ३६. ईहापोह मार्गणा गवेपतो, पाम्यो विभग अज्ञानो । जीव अजीव नै जाण्या तेहथी, पायो सम्यक्त्व प्रधानो ॥
- ४० तिण कारण ए गुण सहु, श्री जिन आज्ञा माह्यो । निजर रो करणी भली, तेहथी सम्यक्तव पायो ॥
- ४१ सम्यक्त्व पडिविजयां पछै, समण धर्म प्रति रज्जै । समण धर्म ने रोचवी, चारित्र ने पडिवज्जै'।। (ज० स०)
- ४२. भाव चारित्र ने अंगीकरी, पडिवज्जै मुनिर्लिग—वेपो । इम उत्तम गुण करि लह्यं, सम्यक्त्व चरण विशेषो ॥
- ४३. चरित्त आयां पहिलां तिको, सम्यक्त्व आवण टाणे । मिथ्यान पजवा होणा पड्या, सम्यक्त्व ना बहुमाणे ॥
- ४४. सम्यक्तव पायो तिण समय, विभंग अनाण नो ताह्यो । शोघ्र ही अवधि हुवै सही, भाव चारित्र पछै पायो ॥

- ४५ अवधि विभंग नो होय, सम्यक्तव प्रतिपत्ति काल तसु । लेज्यादिक करि सोय, पूछै गोयम गणहरू॥
- ४६. <sup>1</sup>ते प्रभु । किन लेश्या विषे ? तव भाखे जिनराया । नीन विणुद्ध लेश्या विषे, तेजू आदि कहायो ।।

# सोरठा

- ४७ भावे प्रणम्त लेश, तास विपेज हुवै अछै। सम्यक्त्व चरण विशेष, पडिवर्ज्ज तिण अवसरे॥
- ४ = \*प्रमु । कित ज्ञान विषे हुवै ? जिन कहै त्रिण अवलोई । आभिनिबोधिक श्रुत विषे, अवधिज्ञान विषे होई ॥
- ४६ ते प्रमु ! स्यु मजोगी हुवै, अथवा अजोगी होई ? जिन कहै नजोगी हुवै, अजोगी नहीं कोई ॥

#### सोरठा

५० अवधि वयो ते काल, चारित्र ग्रहण समय विल । मजोगी मुविणाल, अजोगी कहियै नहीं ॥ ३५. से णं पुन्वामेव सम्मत्तं पडिवज्जइ ।

'पुन्वामेव' त्ति चारित्रप्रतिपत्ते पूर्वमेव ।

(वृ० प० ४३३)

- ४१ सम्मत्त पडिविज्जित्ता समणधम्म रोएति, समणधम्म रोएता चरित्त पडिवज्जइ ।
- ४२. चरित्त पडिविजित्ता लिगं पडिवज्जइ।
- ४२,४४ तस्स ण तेहि मिच्छत्तपज्जवेहि परिहायमाणेहिपरिहायमाणेहि सम्मदसणपज्जवेहि परिवड्ढमाणेहिपरिवड्ढमाणेहि से विन्मगे अण्णाणे सम्मत्तपरिगाहिए
  खिप्पामेव ओही परावत्तड। (श० ६।३३)
  चारित्रप्रतिपत्तेः पूर्वं सम्यक्त्वप्रतिपत्तिकाल एव
  विभंगज्ञानस्याविभावो द्रष्टन्यः, सम्यक्त्वचारित्रगावे
  विभंगज्ञानस्याभावादिति। (वृ० प० ४३४)
- ४५. अर्थंनमेव लेश्यादिभिनिरूपयन्नाह— (वृ० प० ४३४)
- ४६. सं णं मते । कित्सु लेस्सासु होज्जा ? गोयमा । तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, त जहा— तेउनेस्साए, पम्हलेस्साए, मुक्कलेस्साए ।
- ४७. यतो भावलेश्यासु प्रशस्तास्वेव सम्यक्त्वादि प्रतिपद्यते नाविशुद्धास्विति । (वृ० प० ४३५)
- ४८ से ण भंते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ? गोयमा ! तिसु—आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा । (घ० १।३५)
- ४६. से ण भते ! कि सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ? गोयमा । मजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा ।
- ५०. अवधिज्ञानकालेऽप्रोगित्वस्याभावात् । (वृ० प० ४३५)

<sup>\*</sup>नय: राज पानियों रे फरकंटू कंचनपुर तणी

- ५१. "जो प्रमु । मजोगी हुवै, स्यू मनजोगी तेहो। अथवा वचनजोगी हुवै, के कायजोगी कहेहो? ५२. जिन कहै मनजोगी हुवै, अथवा ह्वं वचजोगी।
  - .२. जिन कहे मनजोगी हुवें, अथवा ह्वं वचजागा । अथवा कायजोगी हुवें, तसु इम न्याय प्रयोगो ।।

- ५३ ते वेला इक जोग, प्रधानपणा नी अपेक्षया। जिन वच प्रवर प्रयोग, न्याय विचारी लीजियै॥
- ५४ \*हे भगवंत ! हुवै तिको, सागारोवउत्ते वर्त्ततो । अणागारोवउत्ते हुवै ? भाखै हिव भगवतो ॥
- ५५. सागारोवउत्त विषे हुवै, अथवा वर्त्ते अणागारो । एक पक्षे ए विहुं विषे, लहै सम्यक्त्व अवधि उदारो ॥

## सोरठा

- ५६. वृत्ति मझे इम वाय, सागारोवउत्ता नै विषे । मर्व लव्धि उपजाय, किणहिक ठामें इम कह्यो ॥
- ५७. अणागारवउत्तेह, सम्यक्त अवधि लहै इसो। आप्यो छै वच एह, तेह विरोध इम प्रश्न कृत।।
- ५८. पिण इम नींह छै एह, प्रवर्द्धमान परिणाम जसु । एहवा जीव विपेह, सागारवउत्ता मेज हुवै।।
- ५६. अवस्थित परिणाम, तेह तणी अपेक्षया। अनाकारे पिण ताम, लाभ लब्धि नो सभवै॥
- ६०. प्रभु । किसा सघयण तिको ? तव भाखै जिनचदो । वज्रऋपभ नाराच नै, होवै ते गुणवृदो।।

# सोरठा

- ६१. पामै केवलज्ञान, प्रथम सघयण विपेज जे। ते माटै पहिछान, अपर सघयण विषे नथी।।
- ६२. \*प्रभु । किसा सठाण विषे हुवै ? जिन कहे पट सठाणो । तेहमे एक सठाण मे, होवै ते गुणखाणो ॥
- ६३ प्रभु । कितलो ऊचपणै तनु? जिन भाखै शुभ सची । जघन्य थकी कर सात नो, उत्कृष्ट धनु सय पचो ॥
- ६४. प्रभु । किता आउखा विषे हुवै, श्रो जिन भार्ख जोडो । जघन्य जाझो अठ वर्ष नो, उत्कृष्ट पूरव कोटो ॥
- ६४. ते प्रभु । रपू सवेदी हुने, अथवा अवेदी होयो ? जिन भाखे सवेदी हुनं, अवेदी नहि कोयो॥

- ११. जड मजोगी होज्जा, कि मणजोगी होज्जा ? बटजोगी होज्जा ? कायजोगी होज्जा ?
- ५२. गोयमा । मणजोगी वा होज्जा, वडजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा। (घ० ६।३६)
- ५३ 'मणजोगी' त्यादि चैकतरयोगप्राघान्यापेक्षयाज्य-गन्तव्य। (वृ०प०४३५)
- ५४. मे ण भंते ! कि सागारोयउत्ते होज्जा ? अणागारो-वउत्ते होज्जा ?
- ५५ गोयमा । सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोयउत्ते वा होज्जा । (ण० ६।३७) तस्य हि विभङ्गज्ञानान्निवर्त्तमानस्योपयोगद्वयेऽपि वर्त्तमानस्य मम्यक्तवावधिज्ञानप्रतिपत्तिरस्तोति ।

(वृ० प० ४३५)

- ५६,५७. ननु 'सव्वालो लढीओ गागारोवओगोवउत्तस्म भवती' त्यागमादनाकारोपयोगे सम्यक्तवावधिलिह्य-विरोध ? (वृ० प० ४३५)
- ४८. नैव प्रवर्द्धमानपरिणामजीवविषयत्वात् तस्यागमस्य । (वृ० प० ४३४)
- ५६. अवस्थितपरिणामापेक्षया चानाकारोपयोगेऽपि निब्य-लाभस्य सम्भवादिति । (यृ० प० ४३५)
- ६०. से ण मते ! कयरिम्म सघयणे होज्जा ? गोयमा ! वइरोसभनारायसघयणे होज्जा । (श० ६।३८)
- ६१. प्राप्तव्यकेवलज्ञानत्वात्तस्य, केवलज्ञानप्राप्तिश्च प्रथम-सहनन एव भवतीति । (वृ० प० ४३५)
- ६२. से ण भते ! कयरिम्म सठाणे होज्जा ? गोयमा ! छण्ह सठाणाण अण्णयरे मंठाणे होज्जा । (भ० ६।३६)
- ६३ से णं मते । क्यरिम्म उच्चते होज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उनकोमेण पचमणु-सतिए होज्जा । (म॰ १।४०)
- ६४ से णं भते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
  गोयमा ! जहण्णेण मातिरेगद्वयामाउए उनकोनेण
  पुट्यकोटिआउए होज्जा । (म० ६।८१)
- ६४. ते ण भंते ! कि मवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ? गोयमा ! मवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ।

<sup>\*</sup> लय: राज पामियो रे फरकंटू कंचनपुर तणो

## सीरठा

- ६६. अविधि विभंग नों थाय, तेह काल समया विथे। वेद नणों क्षय नांय, तिण सुं सवेदीज है।। ६७ को प्रमु! सवेदी हुवै, स्यू स्त्री-वेदे होयो। पुरिस तथा नपुंसके, कै पुरिस-नपुसक जोयो?
- ६८. जिन कहै स्त्री-वेदे नहीं, पुरिस-वेद ह्वं एहो। वेद नपुंसक पिण नहीं, पुरिस-नपुंसक तेहो।।

### सोरठा

- ६६. इहिनय व्यतिकर जाण, स्वभाव थकीज स्त्री तणै। तास अभाव पिछाण, जन्म नपुसक पिण नही।।
- ७०. पुरिस विषे ह्वं एह, पुरिस-नपुस विषे विल । कृत्रिम नपुसक जेह, तेह विषे पिण हुवै अछै।।
- ७१ \*ते प्रमु! सकपाई हुवै, कै ह्वै छै अकपाई ? जिन कहै सकपाई हुवै, अकषाई निह थाई।।

## सोरठा

- ७२. विमंग तणो संभाल, अवधि हुवे ते काल मे। सक्पाईज निहाल, उपशम क्षपक अभाव थी।।
- ७३. \*जो सकपाइ विषे हुवै, किती कपाय मे थाइ ? जिन भाखै सजल तणां, कोधादिक चिउ माहि॥

# सोरठा

- ७४. अवधि विभंग नों न्हाल, चारित्र प्रतिपन्न समय विल । सजलनीज संभाल, कोधादिक नों उदय ह्वै।।
- ७५. \*हे प्रमु ! तेहना किता कह्या, अध्यवसाय सुहाया ? श्री जिन भाखे तेहना, असख्याता अध्यवसाया ॥
- ७६. हे प्रभु । तेहना प्रणस्त छै, कै अप्रणस्त अध्यवसायो ? जिन भाग्नै प्रणस्त छै, अप्रणस्त नहि थायो ॥

#### सोरठा

- ७७ अत्रधि विभग नों थाय, चारित्र प्रतिपन्न समय फुन । प्रगस्त अध्यवसाय, स्थानक प्रशस्त नाज ह्वे ॥ ७८. १नवम शत देश इकतोस नो, इकसी बोहितरमी ढालो ।
- ७८. 'नवम यत देश इक्तास ना, इक्सा बाहितरमा ढाला । भिन्नु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जण' हरप विशालो ॥

- ६६. 'सवेयए होज्ज' त्ति विभङ्गस्याविधभावकाले न वेदक्षयोऽस्तीत्यसौ सवेद एव। (वृ० प० ४३४)
- ६७. जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिस-वेदए होज्जा ? पुरिसनपुसकवेदए होज्जा ? नपुसग-वेदए होज्जा ! ?
- ६८ गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, नो नपुसगवेदए होज्जा, पुरिस-नपुसगवेदए वा होज्जा। (श० १।४२)
- ६१. 'नो इत्थिवेयए होज्ज' त्ति स्त्रिया एविविधस्य व्यतिकरस्य स्वभावत एवाभावात् । (वृ० प० ४३५)
- ७०. 'पुरिसनपुसगवेयए' त्ति विद्धितकत्वादित्वे नपुसकः पुरुषनपुसकः। (वृ०प०४३४)
- ७१. से ण भते । कि सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ? गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा।
- ७२ 'सकसाई होज्ज' त्ति विभङ्गाविधकाले कपायक्षयस्या-भावात्। (वृ० प० ४३४)
- ७३. जइ सकसाई होज्जा से ण भते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
  गोयमा ! चजसु सजलणकोह-माण-माया-लोभेसु

होज्जा। (म॰ ६।४३) ७४. स ह्यवधिज्ञानतापरिणतविभङ्गज्ञानम्बरण प्रतिपन्न

- उक्त, तस्य च तत्काले चरणयुक्तत्वात्सञ्ज्वलना एव कोधादयो भवन्तीति । (वृ० प० ४३५)
- ७५. तस्स ण भते ! केवइया अज्भवसाणा पण्णता ? गोयमा ! अससेज्जा अज्भवसाणा पण्णत्ता । (श० ६।४४)
- ७६. ते ण भते । कि पसत्या ? अप्पसत्या ? गोयमा ! पसत्या, नो अप्पसत्या । (श० ६।४५)
- ७७. 'पसत्य' त्ति विभञ्जस्याविधभावो हि नाप्रशस्ताच्यवसा-नस्य भवतीत्यत जनत—प्रशस्तान्यव्यवसायस्याना-नीति । (वृ० प० ४३५)

<sup>\*</sup>तय: राज पानियी रे करकंटु कंबनपुर तणी ।

२६ भगवनी-जोट

जोड मे पहले नपुंसक वेद और अन्त मे पुरुवनपुगक वेद है। सभव है जयाचार्य को प्राप्त प्रति मे पाठ का यही कम रहा हो।

दूहा

- १ हे भदत ! तेहनां कह्या, प्रशस्त अध्यवसाय ।
  तेहथी जे फल नीपजै, वीर वतावै न्याय ॥
  अणसुणियां इम केवल उपजे, श्री जिन वाण वदता रे।
  धुर गुणठाण मंडाण कियो, तेहथी अनुक्रम भव अता रे॥ (ध्रुपदं)
- २ प्रशस्त अध्यवसाय वर्धमान, नारक भव जे अनता रे। काल अनागत भावी थकी, आत्मा नै दूर करता रे॥
- ३ तिर्यच भव जे अनत अनागत काल करै तिण सेती । आत्मा नै विसंजोडै करैं दूर, निर्मल निष्पन्न खेती।।
- ४ मनुष्य तणा भव अनत थकी, आत्मा नै दूर करतो। सुर भव अनंत थकी आतम प्रति, अलग करे गुणवतो।।
- प् जे नाम कर्म तसु मूल प्रकृति नी, उत्तर प्रकृति एहो । नरक तिर्यच मनुष्य सुर गति चिहु, नाम नी उत्तर तेहो ॥
- ६. ए चिहु नै विल अन्य प्रतै, उपष्टभ तणो देणहारो । अनंतानुबंध क्रोधादिक चिउं नै, तेह खपावै तिवारो।।
- अप्रत्याख्यान कोध मान माया लोभ, ए पिण ताम खपावै।
   पच्चक्खाणावरण कोधादिक चिहुं नै, क्षय करि आतम भावै।।
- द. सजलण क्रोध मान माया लोभ, तास करै क्षय जाणी। पचिवधे ज्ञानावरणी कर्म नै, क्षय करै उत्तम प्राणी।।
- ह नविध दर्शणावरणी नै करै क्षय, विल पंचिवध अतरायो।
  िक कृत्वा स्यू करी एह खपावै, साभलज्यो चित ल्यायो।
- १०. ताल मत्थाकड मोह कर्म करि, ताल तरू शिर छेद्यो । जिम छिन्त-मस्तक ताल क्षीण हुवै, इहविध मोहणी भेद्यो ॥
  - वा० -ए मोहनीय नी नोकषाय प्रकृति शेष भेद नी अपेक्षा जाणवी।
- ११. अथवा अनतानुबध्यादि प्रकृति, तेह खप्ये छते जाणी । ज्ञानावरणादिक तीन कर्म नै, निश्चै खपावै नाणी॥
- १२. ताल मस्तक जिम कीधी किया जसु, इहिनध मोहणी छेदै। इति कृत्वा इम मोह खप्ये छते, ज्ञानावरण्यादिक भेदै॥

- 'अणतेहिं' ति 'अनन्तैः' अनन्तानागतकालभाविभिः 'विसंजोएइ' त्ति विसयोजयित, तत्प्राप्तियोग्यताया अपनोदादिति । (वृ० प० ४३५)
- ३. अणतेहि तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहितो अप्पाणं विसंजोएइ ।
- ४. अणतेहि मणुस्सभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहितो अप्पाण विसंजोएइ।
- ५. जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगितनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ। 'उत्तरपयडीओ' ति नामकर्माभिघानाया मूलप्रकृते-इत्तरभेदभूताः (वृ० प ४३५)
- ६. तासि च ण ओवग्गहिए अणताणुवधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ । 'उवग्गहिए' ति औपग्रहिकान्—उपष्टम्भप्रयोजनान् (वृ० प० ४३४)
- ७. खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ।
- द. खवेत्ता सजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पचविह नाणावरणिज्जं,
- ह. नविवहं दिसमावरिणज्ज, पचिवह अतराइय ।िक कृत्वा ? इत्यत आह— (वृ० प० ४३६)
- १०. तालमत्थाकड च ण मोहणिज्जं कट्टु।
  यथा हि छिन्नमस्तकस्ताल क्षीणो भवति एव मोहनीय
  च क्षीण कृत्वेति भावः। (वृ० प० ४३६)
  वा०—इद चोक्तमोहनीयभेदशेपापेक्षया द्रष्टव्यमिति। (वृ० प० ४३६)
- ११. अथवाऽथ कस्मादनन्तानुबन्ध्यादिस्वभावे तत्र क्षपिते सित ज्ञानावरणीयादि क्षपयत्येव ? (वृ० प० ४३६)
- १२. तालमस्तकस्येव कृत्व—िकया यस्य तत्तालमस्तक-कृत्व तदेवविध च मोहनीय 'कट्टु' ति इतिशव्द-स्येह गम्यमानत्वादितिकृत्वा-—इतिहेतोस्तत्र क्षिपते ज्ञानावरणीयादि क्षपयत्येवेति । (वृ०प०४३६)

१,२. से ण भते ! तेहि पसत्थेहि अज्भवसाणेहि वड्ढमाणेहि अणंतेहि नेरइयभवग्गहणेहितो अप्पाणं विसजोएइ।

<sup>\*</sup>लय: प्रभवो चोर चोरां नै समझावै

- १३. ताल मस्तक अरु कर्म मोहनी, ए विहुं छेदन किरिया । साधर्म्य तेह सरीखपणो हिज, हिव तसु प्रगट उचरिया ।।
- १४. जिम ताल णिर ने विनाश करण री, किया कियां छतां तासो । अवश्यभाव निश्चै किय होस्यै, ताल वृक्ष नो विनाशो ।।
- १५ इहविध मोहनीकर्म विनाशन, क्रिया कियै सुविमासो । अवश्यभावि निश्चै करि होस्यै, शेप कर्म नों विणासो ॥ वा॰ —िजम ताल ने मस्तके सुई चाप्या मस्तक हणाणे छते ताल वृक्ष नो नाश थावै । तिम मोहणी कर्म हणाणे छते शेप कर्म नो नाश थावै ।
  - १६ कर्म रूप रज खेरणहारो, एहवो अपूर्वकरणो। जे अध्यवसाय कदे निंह आया, तेहमे पेठो अघहरणो॥
  - १७ विषय अनंत थकीज अनतिह, सर्वोत्तम इम न्यायो । केवलज्ञान ने कह्यो अनुत्तर परम ज्ञान सुखदायो ॥
  - १८ भीत प्रमुख करिने अणहणवै, कहियै निर्व्याघातो । सर्वथा आवरण क्षय करिवा थी, निरावरण आख्यातो ॥
  - १६ सकल अर्थ ना ग्राहकपणा थी, कसिण तास इम उक्तो । प्रतिपूर्ण ते सकल स्व अशज, तिण करिने ए युक्तो ॥
  - २० केवल नाम ते शुद्ध संपूरण, समस्त ज्ञान रै मांह्यो । प्रवर प्रधान ते अन्य अपेक्षया, ज्ञान दर्शन ते पायो ॥
  - २१. ज्ञानावरणी दर्णणावरणी, अतराय क्षय कीधा। केवल ज्ञान नै दर्शन ऊपना, सकल मनोरथ सीधा।।
  - २२ ते प्रभु । अन्यलिंगी वर्त्तमान जे, केवली भाख्यो घरमो । आववेज्जा णिष्य ने अर्थ ग्रहावै, धर्म वतावै परमो ॥
  - २३ पण्णवेज्ज भार्कै भेद जूजुआ, अथवा बोधि उपानै। परूवेज्ज वा कहिता परूपै, युक्ति कहिण थी भावै?
  - २४. जिन कहै अर्थ समर्थ ए नाही, एक ज्ञात दृष्टतो । अथवा एक व्याकरण उत्तर इक, न कहै तिण उपरतो ॥

- २५ उदाहरण इक देह, अथवा इक उत्तर दियै। अन्य अर्थं न कहेह, तथाविध तसु कल्प थी।।
  - २६. \*हे प्रभु ! ते अन्य लिंगे वर्त्ततो, प्रव्रज्या द्रव्य-लिंगो । अन्य भणी दे रजोहरणादिक, मुडन लुचन चंगो ?

लय: प्रभवो चोर चोरां न समझावै

- १३. तालमस्तकमोहनीययोश्च कियासाधम्येमेव । (वृ० प० ४३६)
- १४. यथा हि तालमस्तकविनागिकयाऽवश्यम्भाविताल-विनागा। (वृ० प० ४३६)
- १५. एवं मोहनीयकर्मविनाशिक्षयाऽप्यवायमभाविदोपकर्मं-विनाशिति । (वृ० प० ४३६) वा०—मस्तकसूचिविनाशे तालस्य यथा ध्रुवो भवति

नाश ।

तद्वत्कर्मंविनाशोऽपि मोहनीयक्षये नित्यम् ॥ (वृ० प० ४३६)

- १६. कम्मरयविकिरणकर अपुव्यकरण अणुप्पविद्वस्म अपूर्वकरणम् — असदृणाव्यवसायिकोपमनुप्रविष्टस्य । (वृ० प० ४३६)
- १७ अणंते अणुत्तरे अनन्त विषयानन्त्यात् अनुत्तर मर्वोत्तमत्वात् । (वृ० प० ४३६)
- १८ निव्वाघाए निरावरणे

  निर्व्याघात कटकुट्यादिभिरप्रतिहननात् निरावरणं

  सर्वथा स्वावरणक्षयात् । (वृ० प० ४३६)
- १६ कसिणे पडिपुण्णे
  कृत्स्न सकलार्थंग्राहकत्वात् प्रतिपूर्णं मकलस्वागयुक्ततयोत्पन्नत्वात् । (वृ० प० ४३६)
- २०. केवलवरनाणदंसणे ममुपज्जित । (श० ६।४६) केवलवरज्ञानदर्गन—केवलमभिघानतो वरं शानान्त-रापेक्षया । ज्ञान च दर्शन च ज्ञानदर्गनम् । (वृ० प० ४३६)
- २२. से ण भते ! केवलिपण्णत्त धम्म आघवेज्ज वा ? 'आघवेज्ज' ति आग्राहयेच्छिप्यान् । (वृ० प० ४३६)
- २३. पण्णवेज्ज वा ? परुवेज्ज वा ?

  'पन्नवेज्ज' त्ति प्रज्ञापयेद्भेदभणनतो वोधयेद्वा 'परुवेज्ज' त्ति उपपत्तिकथनत । (वृ० प० ४३६)
- २४ नो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्य एगनाएण वा, एगवाग-रणेण वा। (श० ६।४७)
- २५. 'नन्नत्य एगनाएण व' त्ति न इति योऽयं निपेध सोऽन्यत्रैकज्ञाताद्, एकमुदाहरण वर्जेयित्वेत्यर्यं, तथा-विधकल्पत्वादस्येति । (वृ० प० ४३६)
- २६. से ण मते । पन्वावेज्ज वा ? मुडावेज्ज वा ? 'पन्वावेज्ज व' ति प्रवाजयेद्रजोहरणादिद्रन्यिलङ्ग-दानत 'मुडावेज्ज व' ति मुण्डयेन्छिरोलुञ्चनत.। (वृ० प० ४३६)

- २७. जिन कहै अर्थ समर्थ ए नाही, न दै कोइ नै दीक्षा। पिण उपदेश करै अमुका पै, लै संजम वर शिक्षा।।
- २८ ते प्रभु ! सीज्झै जाव सर्व दुख—कर्म तणो करै अतो ? जिन कहै हंता सीज्झै यावत सहु दुख अंत करतो।।
- २६ ते प्रभु । स्यू उर्द्ध लोक विषे ह्वं , के हुवं छै अधो लोयो। के हुवं तिरछा लोक विषे ए ? हिव जिन उत्तर जोयो।। ३० ऊचा लोक विषे हुवं अथवा, नीचा लोक मे होयो। अथवा तिरछा लोक विषे हुवं, हिव विवरो अवलोयो।। ३१ उर्द्ध लोक विषे हुंतो थको, ए शब्दापाती जाणी। वियडावइ गंधावइ मालवत, वृत्त वैताढ्य पिछाणी।।

३२ यथाक्रमे ए जाण, जबूदीवपण्णत्ती जे। अभिप्राय पिछाण, हेमवतादिक क्षेत्र मे।। ३३ क्षेत्र हेमवत माहि, शब्दापाती' जाणज्यो । हरिवर्ष में ताहि, वियडावइ<sup>3</sup> वैताढच ३४. रम्यक क्षेत्र मझार, गंधावति वैताढ्य वृत्त। विचार, मालवत ३५. 'क्षेत्र-समासे तेथ हेमवत ऐरणवते । हरिवर्ष रम्यक खेत, ए च्यारू क्षेत्रा वियडावइ ३६. शब्दापाती सार, गधावइ। मालवंत ए च्यार, अनुक्रम मेलै तो विरुद्ध॥ एक हजार, ऊचपणै ३७. योजन आख्या सुविचार, योजन अढ़ीसै ऊडपणै कह्या ॥ जाण, लावो-पहुलो सारिखो । ३८ हेठे ऊपर पाला नै सठाण, ते पाला धान भरवा तणा॥ ३६ सर्व रत्न रै मांहि, एक पद्मवरवेदिका । इक वनखडे ताहि, वीटचा छै वैताढच ४० गगनगामिनी लद्धि, तास प्रभावे गया। केवलज्ञान समिद्धि, उपजै तिहा रह्या छता॥

४१. \*सुर साहरण करी लेइ मूक्या, तेह पड्च्च सुजोयो। मदरगिरि वन तृतीय सोमनसे, तुर्य पडगे होयो।।

- २७. णो तिणट्ठे समट्ठे, उवदेस पुण करेज्जा ।
  (श० ६।४८)
  'उवएस पुण करेज्ज' ति अमुष्य पार्श्वे प्रव्रजेत्यादिकमुपदेश कुर्यात् ।
  (वृ० प० ४३६)
- २८ से णं भते । सिज्भति जाव सव्वदुक्खाणं अत करेति ? हता सिज्भति जाव सव्वदुक्खाणं अत करेति ।

(श० ६।४६) २६ से ण भते <sup>।</sup> कि उड्ढ होज्जा <sup>२</sup> अहे होज्जा ? तिरिय होज्जा <sup>२</sup>

- ३०. गोयमा <sup>।</sup> उड्ढ वा होज्जा, अहे वा होज्जा, तिरिय वा होज्जा।
- ३१ उड्ढ होमाणे सद्दावइ-वियडावइ-गधावइ-मालवत-परियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा ।
- ३२-३४ शब्दापातिप्रभृतयो यथाक्रम जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यभि-प्रायेण हैमवतहरिवर्षरम्यकैरण्यवतेषु । (वृ० प० ४३६)
- ३५ क्षेत्रसमासाभिप्रायेण तु हैमवतैरण्यवतहरिवर्षरम्य-केषु भवन्ति । (वृ० प० ४३६)

४० तेषु च तस्य भाव आकाशगमनलिव्धसम्पन्नस्य तत्र गतस्य केवलज्ञानोत्पादसद्भावे सति ।

(वृ० प० ४३६)

४१ साहरण पडुच्च सोमणसवणे वा पडगवणे वा होज्जा
'साहरण पडुच्च' त्ति देवेन नयन प्रतीत्य 'सोमण-सवणे' त्ति सौमनसवन मेरी तृतीय 'पडगवणे' त्ति मेरी चतुर्थं। (वृ० प० ४३६)

१ जं० व० ४।५७

२. जं० व० ४। ८४

३. ज० व० ४।२६६

४. ज० व० ४।२७२

५. गा० ११०

<sup>\*</sup>लय : प्रभवो चोर चोरां नै समझावै

चा०—नंदण वन ने विषे पिण संहरण हुवे छै। पिण ए नंदण वन तिरछा लोक मे छै, ते भणी इहा ऊंचा लोक ना कथन मार्ट सोमनस, पडग वनहीज कह्या। नदण वन न कह्यो।

४२. अधोलोक विषे हुतो थको जे, जोजन एक हजारो । अडी विजय तिहां ग्रामादिक छै, तेह विषे सुविचारो । ४३. अधोग्रामादिक भूमिभाग जे, गर्ता खाट विशेषे । अथवा दिये वा कहिता तेहिज, अति नीचे सुप्रदेशे ।।

४४. देव संहरण ले जाइ मूकं, तो वलयमुखादि सुवरणो। महापातालकलस विपे लहियं, अथवा भवणपति भवणो॥

४५. तिरछे लोक हुंतो थको पनर जे कर्मभूमि विषे जाणी। पच भरत ने पंच एरावत, पंच विदेह पिछाणी॥

४६. देव साहरण पडुच्च अढाई द्वीप विषे अवलोयो । दोय समुद्र विषे तेहनां डक देशभाग में होयो ।। ४७. ते प्रभु ! एक समय कितला ह्वं <sup>१</sup>तव भाखे जिनरायो । जघन्य एक तथा दोय तथा त्रिण, उत्कृष्ट दश कहिवायो ।।

४८ तिण अर्थे गोयम! इम भाख्यो, दण पासे विण सुणिये। कोइक धर्म लहै सुणवो, कोइ न लहै इहविध थुणिये।

४६ यावत कोइक केवलज्ञान उपाव ते वर लहिय। कोई केवलज्ञान न पाव, अणसुणिय इम कहिय।। ५०. नवम शतक डगतीसम देश ए, इकसी तिहतरमी ढालो। भिक्खु भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, 'जय-जग्ग' हरप विशालो।।

४२. बहे होमाणे ।

४३. गहाए वा दरीए वा होज्जा । 'गहाए व' ति गर्ते—निम्ने भूभागेऽघोलोकग्रामादौ 'दरीए व' ति तर्येव निम्नतरप्रदेशे ।

(बृत पत ४३६)

४४. माहरणं पदुच्च पायाने वा भवणे वा होन्जा ।

'पायाने व' त्ति महापातालकनरे वनयामुखादी
'भवणे व' ति भवनवासिदेवनिवासे ।

(वृ० प० ४३६)

४५. तिरिय होमाणे पण्णरसमु कम्मभूमीमु होज्जा ।

'पन्नरमसु कम्मभूमीसु' ति पञ्च भरतानि पञ्च
ऐरवतानि पञ्च महाविदेहा इत्येव नक्षणामु ।

(वृ० प० ४३६)

४६. माहरणं पहुच्च 'अह्हाउज्जवीवममुदृतदेवकदेमभाए होज्जा । (श० ६१५०)

४७. ते ण भते ! एगममए णं कवितया होज्जा ? गोयमा! जहण्णेणं एनको या दो या तिष्णि वा, जनकोसेण दस ।

४८. से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्च६—अमोच्चा ण केविनस्म वा जाय तप्पित्ययख्यामियाए वा अत्ये-गतिए केविनिपण्णत्त घम्म नभेज्ज मवणयाए, अत्ये-गतिए असोच्चा णं केविनस्स वा जाव तप्पित्ययख-वामियाए वा केनिपण्णत्त घम्मं नो नभेजज मवणयाए ।

४६ जाव अत्येगितए केवलनाण उप्पाडेंच्जा, अत्येगितए केवलनाणं नो उप्पाडेंच्जा। (म० ६।५१)

१. अणसुणियां जे थाय, ते तो पूर्वे आखियो। हिव सुणिया गुण पाय, ते विस्तार कहै अछै॥

#### दूहा

- २. हे प्रभु । दश पासै सुणी, केविल भाख्यो धर्म। सुणवो लाभै छै तिको, श्रमण रूप करि पर्म ?
- ३. जिन भाखै दश पे सुण्यो, कोइक सुणवो पाय। जेम असोच्चा-वत्तव्वया, तिम सोच्चा कहिवाय।।
- ४. णवर इतो विशेष छै, सोच्चा नै अभिलाव। शेष थाकतो तिमज ते, समस्तपणै कहाव।।
- ५ यावंत जेणे मनपज्जव-ज्ञानावरणी जाण । क्षयउपशम कीधो हुवै, दशमो बोल पिछाण ॥
- ६. केवलज्ञानावरणी जिण, क्षय कीधो अवलोय। ए छै वोल इग्यारमो, हिव तेहनो फल जोय।।
- ७. ते दश ५ सुणियां छतां, धर्म सुणेवो पाय । विल शुद्ध सम्यक्त्व अनुभवी, जाव केवल उपजाय ॥
- द. जे सुण केवलज्ञान लहै, ते कोइक नै जाण। बोध चरित्र लिंग सहित नै, अट्टम-अट्टम माण।। \*जी हो जिनराज कहै दश पै सुण्यांजी काइ उपजै केवलनाण।। (ध्रुपद)
- स्वहुम-अहुम जेहनैजी काइ, अतर-रहित पिछाण।
   तप कर आतम भावतो जी काइ, प्रकृति भद्रक सुविहाण।।
- १०. †अठम-अठम प्रमुख आख्यू बहुलपणे ते जाणियै। विशिष्ट तप करि सहित मुनि नै, अवधिज्ञान वखाणियै।।
- ११. तेह जणावा अर्थ यावत, तिमज शुभ परिणाम छै। अध्यवसाय शुभ विशुद्ध लेश्या, एकदा अभिराम छै॥

#### सोरठा

१२. तदावरण ते जाण, अवधि-ज्ञानावरणी तिका । कर्म प्रकृति पहिछाण, तेहनु क्षयउपणम थया ।।

\*लय: वीरमती तरु अंब नै जी कांइ † लय: पूज मोटा भांजे तोटा

- १. अनन्तर केवल्यादिवचनाश्रवणे यत्स्यात्तदुक्तमथ तच्छ्रवणे यत्स्यात्तदाह— (वृ० प० ४३७)
- २. सोच्चा ण भते । केवलिस्स वा जाव (स० पा०) तप्पक्षियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त घम्मं लभेज्ज सवणयाए ?
- ३. गोयमा । सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त घम्म । (श० ६।५२,५३) एव जा चेव असोच्चाए वत्तव्वया सा चेव सोच्चाए वि भाणियव्वा ।
- ४ नवर -अभिलावो सोच्चे त्ति, सेस त चेव निरवसेस
- ५. जाव जस्स ण मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण े संभोवसमे कडे भवइ।
- इ. जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाण कम्माण खए कडे भवइ।
- ७ से ण सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पिक्खयजवासियाए वा केवलिपण्णत्त घम्म लभेज्ज सवणयाए, केवलं वोहिं वुज्मेज्जा जाव केवलनाण उप्पाडेज्जा ।

(श० ६।५४)

न तस्स ण अट्ठमअट्ठमेण 'तस्स' ति य श्रुत्वा केवलज्ञानमुत्पादयेत्तस्य कस्या-प्यर्थात् प्रतिपन्नसम्यग्दर्शनचारित्रलिंगस्य ।

(वृ० प० ४३८)

- ह. अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स पगइ-भद्याए ।
- १० 'अटुमअटुमेण' मित्यादि च यदुनतं तत्प्रायो विकृष्ट-तपश्चरणवतः साधोरविधज्ञानमृत्पद्यत ।

(वृ० प० ४३८)

- ११. इति ज्ञापनार्थमिति । (वृ० प० ४३८) अण्णया कयावि सुभेण अज्भवसाणेण, सुभेण परिणा-मेण, लेस्साहि विसुज्भमाणीहि-विसुज्भमाणीहि ।
- १२ तयावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमेण।

- १३. 'ईहा अर्थ छनाज सन्मुख, ज्ञान चेप्टा जसु सही। अपोह ते तसु धर्म ध्यानज, पक्ष वीजो तसु नही॥
- १४. मग्गण वर्म आलोचना, ए जाव णव्द मे जाणियै। गवेपणा ते अधिक धर्म आलोचना पहिछाणियै॥
- १५. †करता एम आलोचना जी कांड, अविध्ञान उपजत । आगुल नो भाग असख्यातमो जी काड, जघन्य जाणै देखंत ।।
- १६. उत्कृष्टपणे अलोक में जी कांइ लोक प्रमाण विचार । खंड असख्याता तिको जी काइ, जाणे देखै तिवार ॥ १७. कित लेग्या विपे ते हुवै जी प्रभु । जिन भाखै पट लेस । कृष्ण जाव शक्ल विपे जी कांइ, हिव ज्ञानद्वार कहेस ॥

वा० - इहा वृत्तिकार कह्यु — यद्यपि भाव लेक्या त्रिण प्रशस्त ने विषे हीज अविविज्ञान लहै, तो पिण द्रव्य लेक्या आश्रयी छहु लेक्या विषे पिण लाभै, सम्यक्त्व श्रुत नी परै, यदाह — 'समत्तसुय सव्वासु लव्भइ' इति । विल ते सम्यक्त्व अने श्रुत ते ज्ञान ए पाम्ये छते छहु लेक्या ने विषे हुवै इम कहियै इति वृत्तौ ।

'इहा ए भाव सम्यक्तव अने ज्ञान पाम ते वेला तीन भली लेण्याहीज हुवै अने सम्यक्तव ज्ञान पाया पछै छहु लेण्या हुवै। तिम अवधिज्ञान ऊपजै ते वेला तीन भली लेण्या हीज हुवै। ते माटै इहा छ लेश्या कही ते द्रव्य लेश्या आश्रयी सभवै इति।

ज अविद्यान पाया पर्छ अप्रशस्त अध्यवसाये वर्ते तेहमे तो अप्रशस्त लेश्या पिण हुवै जे पन्नवणा पद १७ में च्यार ज्ञानी में छ लेश्या कही। तिहा वृत्तिकार मद अध्यवसाय रूप छूटण लेश्या मनपर्यायज्ञानी नै कही। ते भणी माठा अध्यवसाय हुवै ते वेला अशुभ भाव लेश्या कहियै। अनै ए तो केवल सन्मुख छै ते भणी छंचो चढै। अविध पाया पर्छ तत्काल चढते परिणामे करि केवल पावै, ते भणी असोच्चा नी परै भना अध्यवसाय कह्या अनै माठा वर्ज्या। तेणे करी माठी भाव लेश्या पिण न हुवै, ते माठै द्रव्य छ लेश्या नै विप अविध ऊपजै छैं। (ज० स०)

- १८ केतला ज्ञान विषे हुवै जी प्रभु ! जिन भाखै त्रिण ज्ञान । अथवा चिउ ज्ञाने हुवै जी काइ, हिव तसु विवरो आन ।।
- . १६. त्रिहु ज्ञाने हुतो थको जी काड, आभिनिवोधिक ज्ञान । श्रुत ज्ञान ने विषे हुवै जी काइ, अवधि विषे पहिछान ॥

चार - अविधिज्ञान नै आद्य वे ज्ञान मिति, श्रुत नो अविधिज्ञानी हुनै तिवारै अविधि ज्ञानी तीन कै विषे हुनै ।

२०. चिउं ज्ञाने हुनो छतो जी काड, आभिनिवोधिक नाण । श्रुत अवधि ज्ञाने हुवै जी कांड, मनपज्जव गुणखाण॥

या॰—मति, श्रुत, मनपर्यव ज्ञानी नै अवधि ज्ञान उत्पत्ति थयां छता ज्ञान च्यार ना भाव थी च्यार ज्ञान कै विषे ए अवधिज्ञानी हुवै।

- १५. करेमाणस्स ओहिनाणे समुप्पज्जइ । से ण तेण ओहि-नाणेणं समुप्पन्नेणं जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जति-भागं ।
- १६ उक्कोसेणं असखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खडाइ जाणइ-पासइ। (११० ६।५५)
- १७ से ण भते । कित्सु लेस्सासु होज्जा ?
  गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए । (श० ६।४६)
  वा०—यद्यिप भावलेश्यासु प्रशस्तास्वेव तिसृष्विप
  ज्ञानं लभते तथाऽपि द्रव्यलेश्या. प्रतीत्य पट्स्विप
  लेश्यासु लभते सम्यक्तवश्चतवत्, यदाह—'सम्मत्तसुयं
  सच्वासु लव्भइ' ति तल्लाभे चासी पट्स्विप भवतीत्युच्यत इति । (वृ० प० ४३८)

- १८ मे ण मते ! कितसु नाणेसु होज्जा ? गोयमा ! तिसु वा, चउसु वा होज्जा ।
- १६ तिसु होमाणे वाभिणिवोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा।
  - वा०-अवधिज्ञानस्याद्यज्ञानद्वयाविनाभूतत्वादिधकृता-विधिज्ञानी त्रिपु ज्ञानेपु भवैदिति । (वृ० प० ४३८)
- २० चरमु होमाणे आभिणिवोहियनाण सुयनाण-ओहिनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा । (श० ६।५७) वा०—मितथुतमन.पर्यायज्ञानिनोऽविध - ज्ञानोत्पत्तौ ज्ञानचतुष्टयभावाच्चतुर्प् ज्ञानेष्विकृताविधज्ञानी भवेदिति । (वृ० प० ४३६)

<sup>&</sup>lt;sup>‡</sup>तयः पूज मोटा भांजै तोटा

<sup>†</sup>तयः वीरमती तर अब नै जी काड

१३,१४. ईहापोहमग्गणगवेसण ।

- २१. ते प्रभु ! स्यू सजोगी हुवै जो काइ, अथवा अजोगी जाण । एवं जोग उपयोग नै जी कांइ, विल सघयण संठाण ॥
- २२. ऊचपणो नै आउखो जी, ए सगलाई वोल। जेम असोच्चा नै कह्या जी काइ, तिमहिज कहिवा तोल।।
- २३ ते प्रभु । स्यूं सवेदे हुवै जी काइ, अथवा अवेदे होय ? जिन भाखै सवेदे हुवै जी काइ, अथवा अवेदे जोय।।

- २४. अक्षीण-वेद नै जाण, अवधिज्ञान उपज्ये थके । सवेदी छतो पिछाण, तेह अवधिज्ञानी हुनै ॥
- २५. क्षीण-वेदी रै जाण, अवधिज्ञान उपज्ये थके। अवेदी छतो पिछाण, तेह अवधिज्ञानी कह्यो॥
- २६. \*जो प्रभु! ते अवेदी हुवै जी कांइ, तो स्यू उपशात-वेद। अथवा क्षीण-वेदे हुवै जी कांइ? हिव जिन भाखै भेद।।
- २७. उपशातवेदे ते नहिं जी काइ, क्षीण-वेद मे थाय। केवल लहिवू एहनै जी कांइ, तिण सू उपशात नांय।।
- २८ जो प्रभु ! ते सवेदी हुवै जी काइ, तो स्यू इत्थीवेद ? पूछा पूरवली परें जी काइ, जिन कहै सुण तज खेद ।।
- २६ इत्थिवेदे ते हुवै जी कांइ, तथा पुवेदे जोय। जन्म नपुंस विषे नहि जी काइ, पुरुष-नपुसक होय।।
- ३० स्यू सकपाई ते हुवै जी काइ, के अकपाई कहाय? जिन कहै सकषाइ हुवै जी काइ, विल अकषाई थाय।।
- ३१ †जे कषाय नै क्षय कियै विण, अवधिज्ञान लहीजियै। तेह सकषाई छतो वर, अवधिज्ञान कहीजियै।।
- ३२. जे कषाय ने क्षय कियै तसु, अवधिज्ञान लहीजियै। तेह अकषाई छतो वर, अवधिज्ञान कहीजियै।।
- ३३. †जो प्रभु ! अकषाई हुवै जी काइ, स्यू उपशात-कपाय। कै क्षीण-कषाई नै विषे जी प्रभु ! अविधज्ञान उपजाय।।
- ३४. जिन कहै निह उपशात मे जी काइ, क्षीण-कपाई थाय। केवल पामवायोग्य छै जी काइ, तिण सू निह उपशांत कपाय।।
- ३५. जो प्रभु ! सकपाई हुवै जी काइ, कितली कपाय मे थाय ? जिन कहै चिहु त्रिहु वे इके जी काइ, अविधज्ञान उपजाय ॥
- ३६. चिहु कपाय हुते छते जी कांइ, तो सजलण कषाय। क्रीध मान माया विपे जी काइ, लोभ विपे ए थाय।।
- \* लय: वीरमती तरु अंव नी जी कांइ
- † लय : पूज मोटा भांजे तोटा

- २१,२२ से ण भते । कि सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ? एव जोगो, उवओगो, सघयण, सठाण, उच्चत्तं, आउय च— एयाणि सन्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियन्वाणि । (स० पा०) (श० १।५८-६३)
- २३. से णं भते <sup>1</sup> कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ? गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा।
- २४. अक्षीणवेदस्यावधिज्ञानोत्पत्तौ सवेदक सन्नवधिज्ञानी भवेत्। (वृ० प० ४३८)
- २५ क्षीणवेदस्य चावधिज्ञानोत्पत्ताववेदक. सन्नय स्यात् । (वृ० प० ४३८)
- २६. जइ अवेदए होज्जा कि उवसतवेदए होज्जा ? खीण-वेदए होज्जा ?
- २७ गोयमा । नो जवसतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा। जपशान्तवेदोऽयमविधज्ञानी न भवति, प्राप्तव्यकेवल- ज्ञानस्यास्य विविधातस्वादिति। (वृ० प० ४३८)
- २८. जइ सवेदए होज्जा कि इत्यीवेदए होज्जा ? पुरिस-वेदए होज्जा ? पुरिसनपुसगवेदए होज्जा ?
- २६. गोयमा ! इत्यीवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिसनपुसगवेदए वा होज्जा। (श० ६।६४)
- ३० से ण मते । कि सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
  - गोयमा ! सकसाई वा होज्जा, अकसाई वा होज्जा।
- ३१. य. कषायाक्षये सत्यवधि लभते स सकषायी सन्नवधि-ज्ञानी भवेत्। (वृ० प० ४३८)
- ३२. यस्तु कपायक्षयेऽसावकषायीति । (वृ० प० ४३८)
- ३३ जद्द अकसाई होज्जा कि उवसतकसाई होज्जा ? खीणकसाई होज्जा ?
- ३४. गोयमा । नो उवसंतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा।
- ३५. जइ सकसाई होज्जा से ण भते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एक्कम्मि वा होज्जा।
- ३६. चउसु होमाणे चउसु—सजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा ।

- ३७. त्रिहुं विषे हुंते छते जी काइ, संजलण माने जाण। माया लोभ विषे हुवै जी कांइ, इम नवमे गुणठाण।।
- ३८ दोय विषे हुते छते जी कांड, संजलण माया लोह। एक विषे हुते छते जी काड, सजलण लोभे रोह।।
- ३६. अध्यवसाय तसु केनला जी कांइ ? जिन कहै असंख कहाय । जेम असोच्चा तिह विधै जी कांड, जाव केवल उपजाय ।।
- ४०. धर्म केवली भाखियो जी काड, आघवेज्ज पन्नवेज्ज। तेह परूपै छै विल जी काड? जिन कहै हंत कहेज्ज॥
- ४१. प्रवरणा लिंग ते दिये जी काइ, अन्य प्रते मुडेह? जिन कहै हंता लिंग दिये जी काइ, अन्य णिर लुच करेह।
- ४२ तास सीस प्रवरणा दिये जी काड, शिष्य अन्य मुंड करेह? जिन कहै हता लिंग दिये जी काड, विल अन्य मुडावेह।।
- ४३ हे प्रभु! ते सीझै अछै जी, कांड जाव करैं दुख अंत। जिन कहे हता सीझैं अछै जी कांड, जावत अंत करंत।।
- ४४. तास सीस सीझै अछै जी कांड, जाव करै दुख अंत। जिन कहै हा सीझै अछै जी काइ, यावत अंत करंत।।
- ४५ विल प्रशिष्य पिण तेहनां जी कांइ, सीझै यावत अत। जिन कहै हां सीझै अछै जी काइ, यावत अंत करंत।।
- ४६ ऊर्द्ध अधो तिरि लोक मे जी कांड, जेम असोच्चा तेम। जाव अढी द्वीप वे दिध जी काइ, तसु इक देशे एम।।
- ४७. एक समय कितला हुवै जी प्रभु । जिन भाखै वच श्रेटट । जघन्य एक वे त्रिण हुवै जी काड, उत्कृष्टा इक सौ अष्ट ॥
- ४८ तिण अर्थे इम आखियो जी काइ, साभल नै दश पास। केवलज्ञान कोइक लहै जी काइ, कोयक न लहै तास।।
- ४६ सेवं भते ! नवम इकतीसमें जी काड, इकसी चिमतरमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी जी काड, 'जय-जश' हरप विशाल।।

नवमशते एकत्रिशत्तमोद्देशकार्थः ।।६।३१॥

- ३७. तिसु होमाणे तिसु---गंजनण-माण-माया-तोभेनृ होज्जा ।
- ३८. दोमु होमाणे दोमु- मंजलणमाया-लोभेमु होज्जा, एगम्मि होमाणे एगम्मि - मजलणसीभे होज्जा। (म० ६।६५)
- ३८. तस्म ण मंते ! केवतिया अज्ञात्रमाणा पण्यत्ता ?
  गोयमा ! अमंगिज्जा । (ण० १।६६-६८)
  एवं जहा असोच्चाए तहेव जाव (म० पा०) केवतवरनाण-दमणे ममुष्यज्ञ । (ण० १।६६-६८)
- ४०. में ण मते ! केविनपण्णत्त धम्मं आपयेज्ज वा ? पण्णयेज्ज वा ? परम्येज्ज वा ? हता आपयेज्ज वा, पण्णयेज्ज वा, परुयेज्ज वा ।
- ४१. मे ण मंते । पव्यावेष्ण या ? मुटावेष्ण वा ? हंता पव्यावेष्ण या, मुटावेष्ण या । (म० ६।७०)
- ४२. तस्म ण भते । मिस्मा वि पव्यावेजन वा मुंडावेजन वा ? हांता पव्यावेजन वा मुहावेजन वा ।

(म॰ ६ पृ॰ ४१२, टि॰ २)

(श० हाइह)

- ४३. मे णं भते ! सिज्मिति चुज्मिति जाव मध्यदुनखाण अत करेइ ? हता मिज्मिति जाव मध्यदुन्याण अतं करेति । (भ० ६।७१)
- ४४. तस्म णं मंते ! मिल्मा वि मिज्मंति जाव सव्व-दुरसाण वर्त करेंति ? हंता सिज्मंति जाव मध्यदुक्खाण वर्त करेंति । (श० ६१७२)
- ४४. तस्म ण मते ! पिमस्मा वि मिज्मति जाव मव्व-दुनसाण अत करेंति ? हता सिज्मति जाव सव्वदुनसाणं अत करेंति ।
- (श० ६।७३) ४६ से ण भने ! कि उड्ड होज्जा ? जहेव असोच्चाए जाव अड्डाइज्जदीवसमुहतदेवकदेसभाए होज्जा ।
- ४७. ते ण मते । एगसमए णं केवतिया होज्जा ? गोयमा । जहण्णेण एकको वा दो वा तिण्णि वा, जक्कोसेण अद्रसयं।
- ४८. से तेणट्ठेण गोयमा । एवं चुच्चइ—मोच्चा ण केविलस्स वा जाव तप्पविलयउवासियाए वा अत्थे-गतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाण नो उप्पाडेज्जा। (म० ६।७५)
- ४६. सेव मते ! सेव मते ! त्ति । (श० ६।७६)

- १. इकतीसम उद्देश, केवलि प्रमुख ना वचन। सांभल नें सुविशेष, केवल नी उत्पत्ति कही।।
- २. हिवै केवली वाण, सांभल ने जेहनै थयो। पूर्ण ज्ञान प्रधान, ते विस्तार कहै अछै।।

### दूहा

- ३. तिण काले ने तिण समय, वाणिय ग्राम उदार। एहवै नामै नगर थो, वर्णन तास श्रीकार।।
- ४. दूतिपलासक चैत्य त्या, समवसरचा वर्द्धमान। परषद आवी धर्म सुण, पहुंती निज निज स्थान।। सुखकारी गंगेय नी वारता।।[ध्रुपद]
- ५. \*तिण काले तिण समय में, पार्क्वसंतानियो ताय हो । गुणधारी । गंगेय नामै अणगार ते, आयो वीर पे चलाय हो । गुणधारी ।।

## सोरठा

- ६. ए गंगेय अणगार, कृत्रिम नपुस कहीजियै। पनर भेद सिद्ध सार, पन्नवण धुर पद अर्थ मे।।
- ७. \*वीर प्रभु पै आवी करी, रह्यो नही अति दूर नजीक। वंदण नमण किया विना, इम वोलै तहतीक।।
- द. हे प्रभु ! अतर-सिहत ते, नरकपणे उपजत। अथवा अंतर-रिहत ते, नारक उत्पत्ति हुंत?
- ६. श्री जिन भाखै गगेया! नेरइया नरक मझार।अंतर-सहित पिण ऊपजै, ए विरह उत्पत्ति जिवार।।
- १०. अंतर-रहित पिण अपजै, नेरइयापणै विचार।
- ते उत्पत्ति विरह पड़ै नही, तिण वेला अवधार।।
  ११ हे प्रभु । अंतर-सहित ते, उपजै असुरकुमार।
  कै असुर निरंतर ऊपजै ? हिव भाखै जगतार।।
- १२ अतर-सहित पिण ऊपजै, असुरकुमार विचार। अतर-रहित पिण ऊपजै, इम जाव थणियकुमार॥
- १३. अतर-सहित प्रभु ! ऊपजै, पृथिवीकाइया जीव। अथवा निरतर ऊपजै ? हिव जिन उत्तर कहीव।।
- १४. अतर-सिहत निह ऊपजै, समय-समय असख्यात। ऊपजै छै पुढवी मझे, तिण सू अतर-रिहत उपपात।।

- अनन्तरोहेशके केवल्यादिवचनं श्रुत्वा केवलज्ञानमुत्पा-दयेदित्युक्तम् (वृ०प०४३६)
- २. इह तु येन केवलिवचनं श्रुत्वा तदुत्पादितं स दर्श्यते (वृ०प०४३६)
- ३. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नामं नयरे होत्या—वण्णको ।
- ४. दूतिपलासए चेइए। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। धम्मो कहिंथो। परिसा पडिगया। (श॰ ६।७७)
- तेण कालेण तेण समएणं पासाविच्चिक्जे गगेए नामं अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,
- ७. उवागिक्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामते ठिच्चा समणं भगवं महावीर एव वदासी— (श० ६।७८)
- मंतर भते ! नेरइया जनवज्जंति ? निरतरं नेरइया जनवज्जिति ?
- ६. गगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति,
- १०. निरतरं पि नेरइया उववज्जंति। (श० ६।७६)
- ११. सतर भते ! असुरकुमारा उववज्जिति ? निरंतर असुरकुमारा उववज्जिति ?
- १२. गगेया ! संतरं पि असुरकुमारा जववज्जति, निर-तर पि असुरकुमारा जववज्जति । एव जाव थणिय-कुमारा । (श० ६।८०)
- १३. सतर भते ! पुढविक्काइया जववर्ण्जाति ? निरंतर पुढविक्काइया जववर्ण्जाति ?
- १४ गगेया ! नो सतरं पुडविक्काइया उववज्जति, निरतर पुढविक्काइया उववज्जति।

व्या : गुणधारी सुखकारी हरि सुत वंदिये

- १५. एवं जावत वणस्सई, वनस्पति रै मांय। समय-समय अनंता ऊपजै, तिण सू अंतर-रहित उपजाय।। १६. वेद्यद्रि जाव वेमाणिया, कहिवा नारक जेम। अंतर-महित पिण ऊपजै, अंतर-रहित पिण तेम।।
  - सोरठा
- १७. जे ऊपना छै तास, नीकलवो वलि हुवै अछै। नीकलवा नों प्रक्त हिव ॥ माटै स्विमास, नीकलै नारक जीव। अंतर-सहित ते, १८. हे प्रभा अथवा निरतर नीकलैं? हिव जिन उत्तर कहीव।। १६ अतर-सहित पिण नीकलै, नीकलवा नो विरह जद थाय। अतर-रहित पिण नीकलै, जद नीकलवा नो विरह नाय।। २० इम जाव थणियकुमार छै, हिवै पृथिवी नी पूछा वदीत। प्रभु ! पृथिवीकाडेया नीकलै, अंतर-सहित के अंतर-रहीत ? २१ जिन कहै अतर-सहित नही, समय-समय असख्यात। नीकलै छै तिण कारणे, निरतर नीकलवू आख्यात। में २२. इम जाव वणस्सडकाइया, वनस्पति समय-समय अनंता ही मरै, तिण सुं अंतर-रहित निकलेह ।। प्रभु ! अंतर-सहित ते, वेइंदिया निकलंत। अतर-रहित वेइंदिया, नीकलव् तसु २४. जिन कहै अंतर-सहित पिण, वेइदिया निकलत। अतर-रहित पिण नीकलै, इम जाव व्यतर उव्बट्टत।। २५. अतर-सहित प्रभु ! जोतिपि, चवै तिहा थी सोय। अथवा निरतर ते चवै? हिव जिन उत्तर जोय।। २६ अतर-सहित पिण जोतिपि, चवै अर्छे तहतीक। अतर-रहित पिण चवै अछै, एव वैमानीक ॥ २७ नवम वत्तीस नु देश ए, इक सी पींचतरमी ढाल। भिक्ष भारीमाल ऋपिराय थी, 'जय-जश' हरप विशाल।।

- १५. एवं जाव वणस्मद्दकाड्या ।
- १६. वेइदिया जाव वैमाणिया एते जहा नेरझ्या । (१० ६। ६१)
- १७. उत्पन्नानां च मतामुद्वर्तना भवतीत्यतस्ता निरुपय-माह--- (वृ०प० ४३६)
- १८ सतरं भंते ! नेरइया उच्चट्टंति ? निरंतरं नेरइया उच्चट्टति ?
- १६. गगेया ! संतर पि नेरहया उच्चट्टित, निरतरं पि नेरहया उच्चट्टित ।
- २०. एव जाव थणियकुमारा। (श० ६। ५२) सतर मते । पुढवियकाइया उच्चट्टति ? —पुच्छा।
- २१. गगेया ! नो सतरं पुढिविक्ताइया चन्त्रहेति, निरंतर पुढिविक्काइया चन्त्रहेति ।
- २२. एवं जाव वणस्सइकाइया—नो संतरं, निरंतर उन्बट्टित । (ग० ६।८३)
- २३. मंतरं मंते । बेइंदिया उब्बट्टित ? निरंतरं बेइंदिया उब्बट्टित ?
- २४. गगेया ! मतरं पि वेडंदिया उन्बट्टंति, निरंतरं पि वेइदिया उन्बट्टति । एवं जाव वाणमंतरा । (श०६। ८४)
- २५. सतरं भंते । जोइनिया चयति ? पुच्छा ।
- २६. गगेया । संतरं पि जोइसिया चयति, निरंतरं पि जोइसिया चयति । एवं वेमाणिया वि । (११० ६। ८४)

ढाल: १७६

वूहा

- १ पूर्वे नीकलवू कहां, नीकलिया नै ताय। अछै प्रवेशण अन्य गति, हिवै प्रवेशण आय॥ २ प्रभु! प्रवेशण कतिविधे ? अन्य गति थकीज जेह। नीकल अन्य गति नै विषे, जाय प्रवेशण तेह॥
- १ उद्वृत्ताना च केपांचिद्गरयन्तरे प्रवेशनं भवतीत्यत-स्तन्निरूपणायाह— (वृ०प० ४३६)
- २. कितविहे णं मंते । पवेसणए पण्णत्ते ?

  'पवेसणए' ति गत्यन्तरादुद्वृत्तस्य विजातीयगतौ

  जीवस्य प्रवेशनं (वृ०प० ४४२)

<sup>\*</sup>लय: गुणधारी सुखकारा हरि सुत वंदियै

३६ भगवती-जोड़

- ३. जिन कहै तेह प्रवेशणं, भाख्यो च्यार प्रकार। नारक गति में पेसवो, नरक-प्रवेशण धार॥
- ४. तियँच गति मे पेसवो, तिरि-प्रवेशण तेह। माणुस्स गति मे पेसवो, मनुष्य-प्रवेशण जेह।।
- प्र. सुर गति मांहे पेसवो, देव-प्रवेशण ताम। ऊपजवो छै जेहनों, कह्यो प्रवेशण नाम।।
- ६ नरक-प्रवेशण हे प्रभु । आख्यो कितै प्रकार? जिन भाखै सूण गंगेया। सप्त प्रकार विचार॥
- ७. पुढवी रत्नप्रभा प्रथम, नरक-प्रवेशण न्हाल। यावत पुढवी सातमी, उपजै तेह विचाल।। \*होजी प्रभु । गंगेय प्रश्न सुरंग, करै उमंगपणै रे लोय। होजी प्रभु । देव दयाल कृपालज भंग तरंग भणै रे लोय।। (ध्रुपद)
- द. होजी प्रभु ! एक नेरइयो ताम, नरक-प्रवेशण करै रे लोय । होजी प्रभु ! करतो छतो स्यूं, रत्नप्रभा मे संचरै रे लोय ।
- ह होजी प्रभु । सक्करप्रभा में तेह, प्रवेशण करै हुवै। होजी प्रभु । जाव सातमी माहि, तिको दुख अनुभवै।।
- १०. गगेया । रत्नप्रभा मे हुवै, तथा सक्कर मझै। गगेया । अथवा वालु तथा, पंक मांहै सझै॥
- ११. गगेया । तथा धूमप्रभ माहि, तथा दुख तम घनां। गगेया ! तथा तमतमा भग, सप्त इक जीव ना।।
- १२. होजी प्रभु । दोय नेरइया, नरक विषे प्रवेशन करै। होजी प्रभु । रत्नप्रभा स्यू जाव, सातमी सचरै॥ हिवै दोय जीव ना अट्टाईस भगा, तिण में इकसंजोगिया सात भगा प्रथम कहै छै—
- १३. गगेया ! बिहुं रत्न मे जाय, तथा विहु सक्कर मे । गगेया ! बिहुं वालु में, तथा बिहुं पके भमे ॥
- १४ गगेया । विंहु घूम में तथा, विंहु ते तम मही। गंगेया ! तथा तमतमा विंहुं, सप्त इक योग ही।। हिवै दोय जीवा रा द्विकसजोगिया इक्कीस भागा, तिण में प्रथम छह भागा रत्नप्रभा थी हुवै ते कहै छै—
- १५. गंगेया । अथवा ते इक जीव रत्नप्रभा वरै। गगेया । एक जीव अवलोय, सक्कर मे सचरै॥
- १६ गंगेया! तथा जीव इक रत्न, एक वालु हुवै। गगेया। तथा जीव इक रत्न, पंक इक अनुभवै।।
- १७ गंगेया । तथा जीव इक रत्न, जीव इक धूम ही।
- गगेया । तथा जीव इक रत्न, जीव इक तम लही ॥ १८. गगेया ! तथा जीव इक रत्न, जीव इक तमतमा । गगेया । रत्नप्रभा थी आख्या, ए षट भंग मां॥ हिवै पाच भांगा सक्करप्रभा थी कहै छै—
- \*लय : अंबाजी सझ सोलै सिणगार के दर्शण दीजिये रे लोय

- ३. गंगेया । चउन्विहे पवेसणए पण्णत्ते, त जहा—नेरइय-पवेसणए ।
- ४. तिरिक्खजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए
- ४. देवपवेसणए । (श॰ ६।८६) उत्पाद इत्यर्थः (वृ०प०४४२)
- ६. नेरइयपवेसणए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गगेया ! सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा---
- ७. रयणप्पभापुढिविनेरइयपवेसणए जाव अहेसत्तमापुढ-विनेरइयपवेसणए। (श० ६।८७)
- द. एगे मते । नेरइए नेरइयपवेसणएण पविसमाणे किं रयणप्यभाए होज्जा,
- ६. सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
- १०,११. गगेया । रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्त-माए वा होज्जा। (श० ६।८८)
- १२. दो भते! नेरइया नेरइयपवेसणएण पितसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
- १३,१४. गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव ब्रहेसत्त-माए वा होज्जा।
- १५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा
- १६-१८ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तभाए होज्जा।

- १६. गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, एक वालुय लहै।
  गगेया ! तथा जीव इक सक्कर, इक पके रहै।।
  २०. गंगेया ! तथा जीव एक सक्कर, इक धूमे वही।
  गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, इक तमा मही।।
  २१. गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, इक तमतमा भणी।
  गंगेया ! सक्करप्रभा थी गिणती, ए पंच भग तणी।।
  हिवै च्यार भांगा वालुयप्रभा थी कहै छै—
- २२. गगेया ! तथा जीव इक वालुक, इक पके कही ।
  गंगेया ! तथा जीव इक वालुक, इक जीव धूम ही ।।
  २३. गगेया ! तथा जीव इक वालुक, इक तमा विषे ।
  गंगेया ! अथवा वालुक एक, एक तमतमा धके ।।
  हिवै पंकप्रभा थी तीन भागा कहै छै—
- २४. गंगेया ! तथा जीव इक पक, एक धूमा वहै।
  गंगेया ! तथा एक जीव पक, एक तमा लहै।।
  २५. गंगेया ! तथा जीव इक पंक, एक तमतमा मझै।
  गंगेया ! ए त्रिण भंगा पेख, पंकप्रभा थी सझै।।
  हिवै दोय भागा धूमप्रभा थी कहै छै—
- २६ गंगेया! तथा जीव इक धूम, एक तमा मघा। गंगेया! तथा जीव इक धूम, एक तमतमा अघा।। हिवै एक भांगो तमा थी कहै छै—
- २७. गंगेया ! तथा जीव इक तमा, एक तमतमा भण्यो । गंगेया ! इक ए भगो नरक छठी थी इम गुण्यो ॥ २८. गंगेया ! षट पंच चउ त्रिण वे इक, द्विकसंजोगिया । गंगेया ! रत्न प्रमुख थी अनुक्रम इकवीसू किया ॥ २६ गंगेया ! इकयोगिक सत्त, द्विकयोगिक इकवीस ही । गंगेया ! भग सर्व अठवीस, दोय जीव लही ॥

- ३०. तीन जीव ना ताम, प्रश्न गगेय करै हिवै। उत्तर तसु अभिराम, वीर जिनेश्वर वागरै॥
- ३१. \*होजी प्रभु ! नरक विषे त्रिण जीव, प्रवेश करै तरै। होजी प्रभु ! ते स्यू रत्नप्रभा मे जाय, जाव तमतमा वरै॥

हिवै भगवन् उत्तर कहै छै—तीन जीव नरक जाय तेहना इक-सयोगिक भागा सात, द्विकसयोगिक वयालींस, त्रिकसंयोगिक पैतीस— एव चीरासी भागा हुवै। ते मध्ये प्रथम इकसयोगिक सप्त भांगा कहै छै—

३२ गंगेया । रत्नप्रभा त्रिहुं होय, तथा त्रिहुं सक्करै । गगेया ! तथा त्रिहु वालुका, तथा त्रिहुं पक वरै ॥ १८-२१. अहवा एगे सनकरणभाए एगे वालुयणभाए होज्जा जाव अहवा एगे सनकरणभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

२२.,२३. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

२४-२७. एव एक्केका पुढवी छड्डेयव्या जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा। (श० ६।=६)

२६. तत्रैकैकपृथिच्या नारकद्वयोत्पत्तिलक्षणैकत्वे मप्त विकल्पा , पृथिबीद्वये नारकद्वयोत्पत्तिलक्षणिद्वकयोगे त्वेकिविशतिरित्येवमण्टाविशतिः । (वृ०प० ४४२)

३१. तिण्ण भते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?

३२,३३. गगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

<sup>\*</sup> लय: अंवाजी सझ सोलै सिणगार के दर्शण दीजियै रे लोय

३३. गंगेया ! अथवा तीनूं धूम, तथा त्रिहुं तम विषे । गंगेया ! तथा त्रिह तमतमा, सप्त इणविध अखे ॥

हिनै द्विकसंयोगिक भागा नी आमना कहै छै—रत्न थी भागा केता ? इम एक नरक रो नाम लेइ पूछ्या लारै छह नरक रही ते माटै छह भागा। शक्कर थी पांच भागा, लारै पांच रही ते माटै पांच। वालु थी च्यार भागा, लारै च्यार रही ते माटै। पंक थी तीन भांगा, लारै तीन रही ते माटै। घूम थी दोय भागा, लारै दोय रही ते माटै, तम थी एक भागो, लारै एक रही ते माटै।

हिवै तीन जीवां रा द्विकसंयोगिक बंयालीस भागा कहै छै, तेहना विकल्प-

तथा जीव इक, रत्नप्रभा में

३४. गंगेया

गंगेया ! जीव संपेख, सक्करप्रभा वरै॥ दोय ३५. गंगेया ! तथा जीव इक रत्न, दोय वालुक मही। तथा जीव इक रत्न, दोय पके वही।। ३६ गंगेया । तथा जीव इक रत्न, दोय धूमे तथा जीव इक रत्न, दोय तमा लही।। ३७ गंगेया । तथा जीव इक रत्न, दोय तमतमा रह्या। रत्न थकी षट भंग, प्रथम विकल्प कह्या।। तथा जीव वे रत्न, एक सक्कर विषे। ३८. गंगेया । गंगेया! तथा जीव वे रत्न, एक वालू धके।। ३६. गगेया! तथा जीव वे रत्न, जीव एक पक ही। गंगेया। तथा जीव बे रत्न, जीव इक धूम ही।। ४०. गंगेया । तथा जीव वे रत्न, एक तमा मघा। गगेया! तथा जीव वे रत्न, एक तमतमा अघा॥ ४१. गंगेया । ए षट भगा दूजा, विकल्प ना कह्या। गंगेया! बिहुं विकल्प नां द्वादश, रत्न थकी लह्या।। ४२ गगेया । तथा जीव इक सक्कर, वे वालूय मही। गगेया! तथा जीव इक सक्कर, वे पके सही॥ ४३. गंगेया! तथा जीव इक सक्कर, वे धूमा वसै। गगेया तथा जीव इक सक्कर, बे तमा ४४. गगेया ! तथा जीव इक सक्कर, वे तमतमा लह्या। गंगेया! धुर विकल्प नां सक्कर थी, पच भग कह्या।।

सक्कर,

४७. गगेया ! तथा जीव वे सक्कर, इक तमतमा मझै। गगेया ! दूजै विकल्प सक्कर थी, पंच भग सझै।

४६. गगेया! तथा जीव इक वालुक, वे तमा वलो ।

गगेया! तथा जीव इक वालुक, वे तमतमा मिली।।

इक वालु मही।

इक पके सही॥

इक धूमा विषे।

इक तमा धके।।

इक वालुक, वे पके कह्या।

इक वालुक, वे धूमे रह्या।।

४५. गगेया! तथा जीव वे

४८. गगेया! तथा जीव

गगेया! तथा जीव

गगेया। तथा जीव वे सक्कर,

गगेया! तथा जीव वे सक्कर,

४६. गगेया । तथा जीव बे सक्कर,

३४-३७. अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

३५-४० अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा। जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

४२-४४. अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

४५-४७. अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

४८-६३. एव जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, तहा सव्वपुढवीण भाणियध्व जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

५०. गंगेया ! ए धुर विकल्प चिउं भंग, वालुक थी कह्या । गंगेया ! विकल्प द्वितीय तणा हिव, आगल इम लह्या ।। ५१. गंगेया ! तथा जीव वे वालुय, इक पके सही। गंगेया! तथा जीव वे वालुक, इक धूमा मही।। ५२. गंगेया! तथा जीव वे वालुक, एक तमा मघा। गंगेया ! तथा जीव वे वालुक, इक तमतमा अघा ।। (५३ गंगेया ! विकल्प द्वितीय भंग चिउं वालू थी कह्या। गंगेया ! विहुं विकल्प नां भंग, अठ वालुक थी लह्या ॥ ५४. गंगेया ! तथा जीव इक पंक, दोय धूमा मही। गंगेया! तथा जीव इक पंक, दोय तमा लही।। पूप्र, गंगेया ! तथा जीव इक पंक, तमतमा वे कह्या। गंगेया ! ए धुर विकल्प पंक थकी त्रिहुं भंग लह्या ॥ १५६. गंगेया! तथा जीव वे पंक, इक घूमा विषे। गंगेया ! तथा जीव वे पंक, एक तमा धके।। ५७. गंगेया ! तथा जीव वे पंक, तमतमा इक रहै। गंगेया ! विकल्प द्वितीय पक थी, त्रिहुं भंग इम लहै।। ५८. गंगेया ! तथा धूम एक दोय, तमा दुख अनुभवै। गंगेया ! तथा धूम इक दोय, तमतमा नै हुवै।। ५६. गंगेया ! ए धुर विकल्प, धूम थकी वे भंग लहै। गंगेया! दूजो विकल्प हिनै, तास वे भंग कहै।। ६०. गंगेया ! तथा धूम वे जीव, एक तमा विषे। गगेया। तथा धूम वे जीव, एक तमतमा धके।। ६१. गंगेया! दूजै विकल्प घूम थकी, वे भग कह्या। गगेया ! विहुं विकल्प चिहुं भग, धूम थी इम लह्या ॥ ६२. गंगेया । तथा जीव इक तमा, दोय तमतमा कही। गगेया! तमा थकी एधुर विकल्प, इक भंग सही।। ६३. गंगेया । तथा जीव वे तमा, एक तमतमा वली। गंगेया ! दूजे विकल्प इक भंग, तमा थी मिली।। ६४. गंगेया ! रत्नप्रभा थी द्वादण, विहुं विकल्प करी। सक्कर थी दश, अठ वालुका धरी।।

६५ गंगेया ! पंक थकी पट, धूम थकी चिहुं जाणियै। गंगेया ! तमा थकी वे विहु विकल्प करि आणियै।। ६६. गंगेया ! विहुं विकल्प नां भंग, वयाली भाखिया। गंगेया ! इकवीस-इकवीस इक-इक, विकल्प दाखिया।। ६७ गंगेया ! तीन जीव ना द्विकसयोगिक कीजियै। गंगेया ! तसु वे विकल्प भग वयाली लीजियै।। ६४. द्विकसयोगे तु तासामेको द्वाविश्यनेन नारकोत्पाद-विकल्पेन रत्नप्रभया सह शेपाभिः क्रमेण चारिताभि-लंग्धाः पड्, द्वावेक इत्यनेनापि नारकोत्पादविकल्पेन पडेन, तदेते द्वादश, एवं शर्कराप्रभया पञ्च पञ्चेति दश एवं वालुकाप्रभयाऽप्टी (वृ० प० ४४२) ६४. पङ्कप्रभया पट् धूमप्रभया चत्वारः तम.प्रभया द्वाविति। (वृ० प० ४४२)

६७. द्विकयोगे द्विचत्वारिशत् । (वृष्प०४४२)

		तीन	जीवां व	रा इकसं	जोगिय	ा सात		
	₹	स	वा	ч	घू	त	तम	
१	₹.	0	٥	0	0	0	0	
२	0	R	0	0	0	0	0	
<b>≅</b> '	0	0	37	o	0	0	0	
8	0	0	0	ą	0	0	0	
×	0	0	0	0	₹	٥	0	
Ę	0	0	0	0	0	ą	0	
9	0	0	٥	0	٥	0	ą	
	हिबै ती	न जीवां	रा हि	कसंजोि	गया वि	कल्प दो	, भांगा	४२
		र	स	वा	प	घू	त	तम
8	1	१	२	0	0	۰	•	0
7	२	१	0	२	0	0	0	0
m	7	8	0	0	२	0	0	0
*	8	1	0	0	•	२	0	0
¥	પ્ર	8	0	0	۰	0	२	0
Ę	Ę	१	٥	0	•	•	٥	7
	<del>_</del>	हिवै	दूजें वि	कल्प क	रि रत्न	थी छह		
9	8	२	8	0	0	•	0	0
ج 	े २	2	0	8	•	0	0	0
3	3	२		0	8	0	0	0
<b>१</b> 0	1 8	२	0	0	0	8	0	0
<b>१</b> १	<u>                                     </u>	2	0	0	0	0	8	0
१२	Ę	२	0	0	0	0	0	१

	हिर्व	सक्कर	थी पांच	मांगा,	, प्रथम	विकल्प	कहै छै	
		र	珥	वा	र्ष	वू	त	तम
१३	?	o	१	ર્	G	0	0	o
5.8	۶.	0	8	o	2,	0	0	0
ई व	ą	٥	3	o	o	ə,	0	0
ર્દ	¥	0	3	o	0	0	9.	o
१७	¥.	0	2	o	٥	0	0	Ę
	हिंब	सक्कर	श्री पांच	मांगा,	, दूजै वि	वकल्प	वह छै	
		र	म	वा	q	बू	त	नम
१८	?	0	ą	?	0	0	0	0
3€	ą	0	٦,	o	ş	0	0	0
२०	\$	0	ર	o	o	2	0	0
२१	8		ર	o	0	0	\$	0
२२	ų,	0	ą	0	0	0	0	1
	हिब	प्रयम 1	। विकल्पः	बानु यी	: च्यार	, 'मांगा ।	कहैं छै	<del>'</del>
78	1 3	0	0	1	२	0	0	0
२४	2	0	0	2		1 2	0	1 0
२५	3	0	0	2	0	0	1 2	0
२६	8	0	0	1 8	0	0	1 0	1 7
	<u> </u>	वि दुर्ज	}	)	1			<u>'</u>
२७	,	1		1.3.	?	0	1	
२६	1	1	1 0	5	:	1	0	0
₹5 ₹€	1	1	1	1	1	?	0	1 0
	<del> </del>	<del> </del>	1 0	2	0	0	1 3	0
30	1 6	0	0	२	0	0	0	?

हिवै	हिबै प्रथम विकल्प पंक थी तीन भांगा कहै छै											
8	0	٥	0	१	٦	o	ō					
२	0	٥	0	१		२	0					
34	0	0	o	१	0	a	२					
1	हिबै दूर्ज	विकल	प पंकश	री तीन	भांगा							
	र स वा प घू त तम											
१	0	0	0	२	१	0	0					
.   २	0	0	0	२	0	१	0					
3	0	0	٥	२	0	0	१					
हिवं	प्रथमं	विकल्प	घूम थी	दो भां	गा							
8	0	0	0	0	१	२	ю					
: २	c	0	٥	0	१	D	7					
	हिवै	दूजै वि	कल्प धूर	न थी दे	ो भांगा							
. 8	Ö	0	o	٥	२	१	0					
२	٥	0	0	0	२	0	8					
हिवै प्रथ	रम विव	ल्प तम	थी एव	भांगो	कहै छै							
}   १	0	0	0	•	o	8	२					
हि	वे दूजे	विकल्प	तम थी	एक भ	ागो कहै	<b>છ</b>						
२ १	0	•	0	0	0	२	१					

ए तीन जीवा रा द्विकसंजोगिया दोय विकल्प करि रत्न थी १२, सक्कर थी , वालुका थी ८, पक थी ६, घूम थी ४, तम थी २ एव ४२ भागा कहा। हिवै न जीवा रा त्रिकसजोगिया—

हिवै तीन जीवां रा त्रिकसजोगिया ३५ भांगा कहै छै ६८ हो जी प्रभु ! तीन जीव ना त्रिक-सजोगिक हिव कहै। होजी प्रभु ! विकल्प तेहनों एक, भग पैतीस लहै।।

६८ त्रिकयोगे तु तासां पञ्चित्रशिद्धकल्पाः। (वृ० प० ४४२) हिवै रत्न प्रभा थी १४, सक्कर प्रभा थी १०, वालु थी ६, पंक थी ३, धूम थी २ एवं ३४ । तिणमें रत्न सक्कर थी पाच भांगा कहै छै

- ६६. गंगेया! तथा रत्न में एक, एक सक्कर लह्यंु। गंगेया! एक वालुका पेख, प्रथम भगो कह्यु॥
- ७० गगेया! तथा रत्न मे एक, एक सक्कर मही। गगेया! एक पंक मे देख, भग दूजो सही।।
- ७१. गगेया! तथा रत्न मे एक, एक सक्कर विषे। गगेया! एक धूम सपेख, भग तीजो अखे॥
- ७२ गगेया! तथा रत्न में एक, एक सक्कर मझै। गंगेया! एक तमा सुविशेख, भंग चज्यो सझै।।
- ७३. गगेया! तथा रत्न मे एक, एक सक्कर लहै। गगेया! एक तमतमा देख, भंग पचम कहै।।

# हिवै रत्न वालुय थी च्यार भांगा कहै छै

- ७४ गगेया । तथा रत्न में एक, एक वालुय मिली। गंगेया । एक पक मे पेख, भंग छट्टो वली।।
- ७५. गगेया । तथा रत्न मे एक, एक वालुय लह्यो।
  - गगेया एक धूम मे देख, भग सप्तम कह्यो।।
- ७६. गगेया! तथा रत्न मे एक, एक वालुय रसै। गगेया। एक तमा संपेख, भंग अष्टम लसै।।
- ७७ गंगेया! तथा रत्न मे एक, एक वालुय भयो। गंगेया! एक तमतमा पेख, भंग नवमो कह्यो॥

## हिवै रत्न पक थी तीन भांगा कहै छै

- ७८ गगेया । तथा रत्न में एक, एक पके गयो। गगेया! एक धूम सुविशेख, भग दशमो कह्यो॥
- [७६. गगेया । तथा रतन में एक, एक पके बही। गगेया! एक तमा सुविशेख, भग ग्यारम सही॥
- द० गगेया! तथा रत्न मे एक, एक पके मिली। गगेया! एक तमतमा देख, भंग वारम वली॥

### हिनै रत्न धूम थी दोय भांगा कहै छै

- ६१. गगेया । तथा रत्न मे एक, एक धूमा मही। गगेया । एक तमा सपेख, भग तेरम सही।।
- =२ गगेया! तथा रत्न मे एक, एक धूमा विषे। गगेया! एक तमतमा देख, भंग चवदम पक्षे॥

## हिवै रत्न तम थी एक भांगो कहै छै

द गंगेया! तथा रत्न मे एक, एक तमा गिण्यू। गंगेया। एक तमतमा पेख, भंग पनरम भण्यू।।

हिनै सक्कर सूं दण भांगा तिण मे प्रथम सक्कर वालुय थी च्यार भांगा कहै छैं—ं

- ६६ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालु-यप्पभाए होज्जा।
- ७०. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे मक्करप्पभाए एगे पंक-प्पभाए होज्जा।
- ७१-७३ जाव अहवा एगे रयणप्यभाग एगे मक्करप्यभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

- ७४. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पक-प्पभाए होज्जा
- ७५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूम-प्पभाए होजा
- ७६-७७ एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्प-भाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा।
- ७८ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्प- भाए होज्जा।
- ७६-८०. जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।
- ५१. बहवा एने रयणप्यभाए एने घूमप्यभाए एने तमाए होज्जा\_
- प्रे वहवा एगे रयणप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे अहेसत्त-माए होज्जा
- इ. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

४४ भगवती-जोड़

गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वालुय मही।
गंगेया ! एक पंक में पेख, भग सोलम सही।।
गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वालुय विषे।
गंगेया ! एक धूम में देख, भंग सतरम अखे।।
गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वालुय रसे।
गंगेया ! एक तमा सुविशेख, भंग अष्टादशे।।
गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वालुय भमें।
गंगेया ! एक तमतमा देख, भंग उगणीस मे।।
हिवै सक्कर पंक थी तीन भागा कहै छै

गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक पंके रहां।
गंगेया ! एक धूम सुविशेख, भंग वीसम कहां।।
गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक विल पंक में।
गंगेया ! एक तमा संपेख, भंग इकवीसमे।।
गंगेया ! तथा सक्कर मे एक, एक विल पंक में।
गंगेया ! एक तमतमा पेख, भंग बावीस मे।।
हिवै सक्कर धूम थी दो भांगा कहै छै

. गंगेया । तथा सक्कर में एक, एक विल धूम में। गंगेया ! एक तमा सुविशेख, भग तेवीस में॥ . गंगेया ! तथा सक्कर मे एक, एक विल धूम मे। गंगेया ! एक तमतमा पेख, भंग चउवीस मे॥ हिवै सक्कर तम थी एक भांगो कहै छै

. गंगेया । तथा सक्कर में एक, एक तमा भमे । गंगेया । एक तमतमा पेख, भंग पणवीस में ॥

उ. गगेया ! तथा वालु में एक, एक विल पक में ।
 गगेया ! एक धूम मे पेख, भग छवीसमे ।।

४. गगेया । तथा वालुय मे एक, एक विल पंक मे । गंगेया । एक तमा सुविशेख, सतावीस अंक में ॥

इ. गगेया । तथा वालुका एक, एक विल पक मे । गगेया ! एक तमतमा देख, अठावीस अंक में ॥ हिवै वालुय धूम थी दो भांगा कहै छै—

७. गंगेया । तथा वालुका एक, एक विल धूम मे। गंगेया । एक तमा दुख देख, भंग गुणतीस मे।।

द. गगेया । तथा वालुका एक, एक विल धूम में। गगेया ! एक तमतमा पेख, भग ए तीसमें।। हिवै वालु तम थी एक भांगो कहै छै—

. १. गगेया । तथा वालुका एक, एक तमा भमें । गंगेया । एक तमतमा पेख, भंग इकतीसमें ॥ हिवै पंक थी तीन भांगा तिणमें प्रथम पंक थी दो भांगा दथ. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंक-प्पभाए होज्जा।

प्रमुख्या एगे सक्तरप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगेधूमप्पभाए होज्जा ।

द६,८७. जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

दद. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्प-भाए होज्जा।

द१,६०. जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

१२. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे घूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा

६२. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहे-सत्तमाए होज्जा

६३. बहवा एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

हर. अहवा एगे विालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूम-प्पभाए होज्जा

६५. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए होज्जा

६६. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पकष्पभाए एगे अहेसत्त-माए होज्जा

६७. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा

६८. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्त-माए होज्जा

 अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

- १००. गगेया ! तथा पक में एक, एक विल धूम मे।
  गंगेया ! एक तमा सुविशेख, भंग वतीसमें।।
  १०१. गगेया ! तथा पंक मे एक, एक विल धूम मे।
  गगेया ! एक तमतमा देख, भंग तैतीसमे।।
  हिवै पंक तमा थी एक भागो कहै छै—
- १०२. गंगेया ! तथा पक मे एक, एक छट्टी तमा। गगेया ! एक तमतमा पेख, भंग चउतीसमा॥ हिवै धूम थी एक भांगो कहै छै—
- १०३. गगेया। एक धूम में पेख, एक तमा भमे। गगेया! एक तमतमा देख, भंग पैतीसमे॥
- १०४. गगेया ! तीन जीव ना त्रिक-संजोगिक ए कह्या । गंगेया । विकल्प तेहनों एक, भंग पेत्रिस लह्या ।।

३५ भांगा कहै छै। तिणमें रत्नप्रभा थी १५, सक्कर थी १०, वालुका थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—एवं ३५।

नायुक्त का की कि का का की क्षा का के पूर्व कर र											
	हिवै रत्न सक्कर थी ५ भांगा कहै छै										
		र	स	वा	पं	वू	त	तम			
१	१	१	8	१	0	o	o	0			
२	ર	१	१	0	१	o	0				
m-	m <sup>,</sup>	१	१	0	p	१	0	0			
४	¥	१	१	0	0	0	१	0			
ų	ų	१	१	0	0	0	0	१			
		रत	ा वालु	थी ४ म	ांगा क	हे छै					
Ę	१	१	٥	१	१	0	0	0			
U	२	१		8		8	0	0			
<u>ب</u>	3	१	0	१	0	٥	१	0			
3	8	१	0	१	o	0	0	8			
		हिबै र	रत्न पंक	यी ती	न भांगा	कहें छै					
१०	१	8	0	0	१	१	o	0			
<b>११</b>	२	१	0	o	१	o	१	0			
१२	3	8	0	0	१	0	0	१			

- १००. अहवा एगे पंकप्पभाए एगे वूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा
- १०१ अहवा एगे पंकप्पभाए एगे घूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा
- १०२ अहवा एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा
- १०३. अहवा एगे घूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। (श० १।६०)

	हिवै रत्न घूम थी दोय भांगा कहै छै											
3	१	१	ō	o	o	8	१	۰				
8	٦	8	0	0	0	8	0	१				
	हिने रत्न तम थी एक भांगो कहै छै											
X	7 8 8 0 0 0 0 8 8											
		ए रत	र प्रभा	थी पन	र्र भांगा	कह्या ।						
	f	हवै सक्व	त् <b>र वा</b> लु	थी च्य	ार भांग	गा कहै	छं					
	,र स वा प धू त तम											
દ્	१	0	१	8	१	0	0	0				
9	२	0	१	8	0	१	0	0				
ធ	3	o	१	१	0	0	१	0				
3	४	0	१	१	0	0	0	१				
		हिवै सन	क्तर पंव	तथी ३	भागा	कहैं छैं						
<b>}</b> ∘	8	0	१	0	१	१	0	0				
र१	२	0	१	0	१	0	१	0				
१२	R	٥	१	0	१	•	o	8				
-		हिवं स	क्कर घृ	म थी	२ भांग	ा कहै छै	í					
२३	8	0	8	0	0	8	8	0				
२४	२	0	8	0	0	8	0	8				
-	-	हिवै स	ाक्कर त	मिथी	१ भांगो	कहै छै		<del></del>				
२५	8	0	१	0	0	0	8	१				
		ए	सक्कर	थी १०	भांगा	कह्या ।						

		हिबं बा	ालु पंक	थी ३	भागा व	न्हें छें						
		₹	म	वा	q	घू	त	तम				
२६	8	0	0	१	१	१	a	0				
२७	٦	0	0	१	१	0	٤	0				
२६	3	o	٥	१	१	0	0	१				
		हिबै व	ालु घूम	थी २	भांगा	कहै छै						
36 8 0 0 8 0 8 8 0												
३०	30 2 0 0 2 0 2											
		हिबै व	रालु तर	न यो १	भागो	कहै छै						
38	38 8 0 0 8 0 0 8 8											
		एवं	६ भाग	ा वालु	हायी व	क्ह्या ।						
		हिवै	पंक घूम	त यी २	भांगा	कहै छै						
३२	१	0	0	0.	1	8	8	0				
३३	े २	0	0	0	8	1 8	o	8				
		हिबै	पंक त	म थी १	भांगो	कहें छै						
३४	38 5 0 0 0 8 0 8 8											
	एवं पंक थी तीन भांगा कह्या ।											
	हिवै घूम तम थी १ मांगी कही छै											
_	37 8 0 0 0 0 8 8 8											
ए ४	तर्ल तीन २ भांगा	। जीव न , त्रिका	ता इक वंजोगिय	संजोगि रा ३५	या ७ भांगा –	भागा, -एवं सव	द्विकसंज इं ८४ :	ोगिया मांगा ।				

१०५. गंगेया ! नवमें जत वत्तोसम देजज, अर्थ ही। गंगेया ! इकसी छिहतरमी ढाल, विजेप ही ॥ १०६. गंणपति ! भिक्खु भारीमाल, नृपतिइंदु सिरै। गंणपति ! 'जय-जज' हरप आनंद, सुगुण संपति वरै॥ वा०—हिवै त्रिकसयोगिक मे एक नरक रो नाम लेइ पूछै तेहनी आमना कहै छै—लार नरक रहै तिणमे एक छेहलो आक घटायने वाकी रहै ते आक मांडी मिलाय लेणां। जेतला आंक हुवै तेतला भांगा कैहणा। तेहनो उदाहरण कोइ पूछै —रत्न थी त्रिकसंयोगिया भागा केता? तेहनो उत्तर—रत्न थी पूछ्यो, लार छह नरक रही। तेहमे एक छेहलो छह को आक घटायां लार पाच रह्या। ते एका सू अनुक्रमे पाच ताइ मांडणा १।२।३।४।५। हिवै एहने गिणणा—एक ने दोय—तीन, तीन ने तीन—छह, छह अने च्यार—दश अने पाच—पनरे, इम रत्न थी पनरे भागा हुवै। सक्कर थी दश हुवै, ते किम? लारे रही पांच, ते मांहिलो पांचो घटावणो १।२। ३।४। एहने गिण्यां दश हुवै ते माटै सक्कर थी दश हुवै। वालु थी छह ते किम? लारे नरक रही च्यार, ते चोको घटावणो १।२।३। एहनै गिण्या छह हुवै। पक थी तीन ते किम? लारे नरक रही तीन, ते तीयो घटावणो १।२। एक ने दोय—तीन, ते माटै तीन हुवै। घूम थी एक भागो, लारे दोय रही, ते बीयो घटाया लारे एको रहै, ते माटै एक भांगो। एव रत्न थी १४, सक्कर थी १०, वालु थी ६, पंक थी ३, घूम थी १—एवं त्रिकसयोगिका भागा हुवै।

त्रिकसंयोगिया में दोय नरक रो नाम लेइ पूछ्या, लार नरक रहै जितरा भागा कैहणा। तेहनो उदाहरण — रत्न सक्कर थी त्रिकसंयोगिक किता भागा? उत्तर—५ भागा, लार पाच नरक रही ते माट। रत्न वालु थी त्रिकसंयोगिक किता भांगा? उत्तर—४ भागा, लार च्यार नरक रही ते माट। रत्न पंक थी त्रिकसंयोगिक किता भांगा? उत्तर—४ भागा, लार च्यार नरक रही ते माट। रत्न पूम थी दोय, लार बे रही ते माट। रत्न पूम थी दोय, लार बे रही ते माट। रत्न तम थी १ भागो, लार १ रही ते माट।

एव रत्न थी १५। इम सक्कर थी दश। सक्कर वालु थी ४, लार ४ नरक रही ते माट । सक्कर पक थी ३, लार तीन रही ते माट । सक्कर घूम थी २, लार दोय रही ते माट । सक्कर तम थी १, लार एक रही ते माट — इम सक्कर थी १०।

इम वालु थी ६। वालु पंक थी ३, लारै तीन रही ते माटै। वालु घूम थी २, लारै दोय रही ते माटै। वालु तम थी १, लारै १ रही ते माटै, इम वालु थी ६ भांगा।

पंक थी भांगा ३। पंक घूम थी २, लार वे रही ते माटै। पंक तम थी १, लार १ रही ते माटे। इम त्रिकसंयोगिक मे दोय नरक रो नाम लेई पूछी तेहनी आमना कही।

### ढाल: १७७

#### दूहा

- च्यार नेरइया हे प्रभु! नरकप्रवेशन न्हाल।
   रत्नप्रभा मे स्यूं हुवै, जाव तमतमा भाल?
- २. जिन भाखै सुण गंगेया! चिउं रत्न मे जाय। अथवा च्यारूं सक्कर मे, तथा वालु चिउं पाय।।
- ३. अथवा. च्यारू पंक में, तथा धूम चिउ धार। तथा तमा चिउं ऊपजै, तथा तमतमा च्यार॥
- ४ च्यार जीव ना भंग इम, इक संजोगिक सात। विकल्प तेहनो एक है, कह्यो पूर्व अवदात॥

- चत्तारि मते ! नेरइया नेरइयपवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्यभाए होज्जा ?— पुच्छा ।
- २,३. गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।
  - ४. प्रथिवीनामेकत्वे सप्त विकल्पाः (वृ०प० ४४२)

	च्यार जीव नां इकसंजोगिया मांगा ७ कह्या ।											
	र	म	वा	पं	धू	त	तम					
१	४	0	٥	o	o	o	o					
ર	0	8	0	o	0	0	٥					
ą	0	0	Y	0	0	0	o					
४	٥	0	0	٧	0	0	٥					
Ϋ́	٥	0	0	0	8	o	0					
ų,	0	0	0	0	0	8	0					
હ	0	0	0	0	0	0	8					

५ च्यार जीव नां हिव कहूं, द्विकसंजोगिक न्हाल। त्रिहुं विकल्प करिने तसु, भंगा त्रेसठ भाल।।

हिवै च्यार जीव नां द्विकसंजोगिक नां विकल्प तीन, भागा ६३ कहै छ— रत्न थी १८, मक्कर थी १५, बालु थी १२, पंक थी ६, बूम थी ६, तम थी ३ भांगा, त्रिहुं विकल्प करि इम ६३ भागा हुवै।

प्रयम रत्नप्रभा यी एक विकल्प ना पट भागा हुवै । ते तीन विकल्प करि १८ भागा कहै छै—

> \*मुगुण मुखदाई रे, मुगुण सुखदाई रे, गंगेय तणां ए प्रव्न प्रवर वरदाई रे । [छ्रुपदं]

- ६. तथा जीव इक रत्न प्रभा में, त्रिण सक्कर रै मांही रे। अथवा एक रत्न में उपजै, तीन वालुका पाई रे।
- ७. वयवा एकज रत्नप्रभा में, तीन पंक रै मांही। तथा जीव डक रत्नप्रभा में, तीन धूम दुखदाई।।
- द. अथवा एकज रत्मप्रभा में, तीन तमा कहिवाई। तथा जीव इक रत्नप्रभा में, तीन तमतमा मांही॥
- ६. धुर विकल्प करि रत्नप्रभा थी, ए पट भंगा किंद्ये। दूजा विकल्प करि पट भंगा, हिव आगल डम लिह्ये।।
- १०. तथा जीव वे रत्नप्रभा में, दोय सक्कर रै मांही। अथवा दोय रत्न रै मांहे, दोय वालुका पाई॥
- ११. व्यथवा दोय रत्न रै माहे, दोय पंक दुखदाई। तथा जीव वे रत्नप्रभा में, दोय धूम कहिवाई॥
- १२. अथवा दोय रत्न रै माहे, दोय तमा रै मांही। अथवा दोय रत्न रै मांहे, दोय तमतमा पाई॥

\*तय: गुणी गुण गावी रे

हिकसंयोगे तु तासामेकस्त्रय इत्यनेन नारकोत्पादिवकल्पेन रत्नप्रभया सह शेषाभिः क्रमेण चारिताभिर्कंद्याः
पट्, द्वौ द्वावित्यनेनापि पट्, त्रय एक इत्यनेनापि पढेव,
तदेवमेतेऽप्टादश, शकराप्रभया तु तथैव त्रिपु पूर्वोत्तनारकोत्पादिवकल्पेषु पञ्च पञ्चिति पञ्चदश,
एवं वालुकाप्रभया चत्वारश्चत्वार इति द्वादश, पंकप्रभया त्रयश्त्रय इति नव, धूमप्रभया द्वौ द्वाविति पट्,
तम.प्रभयैकैक इति त्रयः, तदेवमेते द्विकसंयोगे
त्रिपिट.। (वृ०प० ४४२)

६. बहवा एगे रयणप्यभाए तिष्णि सक्करप्यभाए होज्जा। बहवा एगे रयणप्यभाए तिष्णि वालुयप्यभाए होज्जा

७,८ एवं जाव अहवा एगे रयणप्यभाए तिष्णि अहेसत्तमाए होज्जा ।

१०-१२. अहत्रा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

१३. अथवा तीन रत्न रै मांहे, एक सक्कर में थाई। तथा जीव त्रिण रत्नप्रभा मे, एक वालुका मांही।। १४. अथवा तीन रत्न रै मांहे, एक पंक कहिवाई। तथा जीव त्रिण रत्नप्रभा मे, एक धूम दुखदाई।। १५. अथवा तीन रत्न रै मांहे, एक तमां पिण पाई। तथा जीव त्रिण रत्नप्रभा मे, एक तमतमा माही।। १६. रत्नप्रभा थी त्रिहु विकल्प करि, भंग अठारै थाई। सकर पंच भंग त्रिहु विकल्प करि, भग पनर कहिवाई।। १७. अथवा एक सक्कर रै माहे, तीन वालुका माही। तथा जीव इक सक्कर माहे, तीन पक कहिवाई।। १८ इम जिम रत्न सघात ऊपरली पृथ्वी जे कहिवाई। सक्कर थकी पिण तिम ऊपरली पृथ्वी साथे थाई।। १६ सक्कर थी पच त्रिहु विकल्प करि, पनरै भागा पाई। वालुय थी चिहु त्रिहु विकल्प करि, द्वादश भांगा थाई। २०. तीन पक थी त्रिहु विकल्प करि, नव भागा उचराई। धूम थकी वे त्रिहु विकल्प करि, पट भांगा जिन न्याई।। २१. एक तमा थी त्रिहु विकल्प करि, भागा तीन दिखाई। इम ए द्विकसजोगिक तेसठ, भणवा वृद्धि वरदाई॥ २२ जावत अथवा तीन तमा मे, एक सातमी पाई। ए तेसठमों भांगो श्री जिन कह्यो पाठ रै माही।।

	च्यार जीव नां द्विकसंजोगिया ६३ मांगा कहै छै										
		र	स	वा	प	घू	त	तम			
१	१	१	n	o	0	0	o	0			
२	२	१	0	ą	0	0	0	٥			
ą	R	१	0	0	R	0	0	0			
8	8	१	٥	0	0	33′	0	В			
ય	ሂ	१	0	٥	0	0	m	0			
Ę	Ę	8	0	0	0	a	٥	#			
	ए र	रत्न थी	६ भांग	ा प्रथम	विकल्प	ा करि <b>ः</b>	ह्या ।				

१३-१५. अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

१७-२२ अहवा एगे सर्वकरप्पभाए तिष्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जहेव रयणप्पभाए उविरमाहि समं चारिय तहा सक्करप्पभाए वि उविरमाहि सम चारेयव्व, एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वं जाव अहवा तिष्णि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

हिवै दूजै विकल्प करि ६ भांगा कहै छै—											
७	१	२	२	0	o	0	o	0			
់	२	२	0	२	0	0	0	0			
3	nr	२	0	0	२	o	0	0			
१०	४	२	0	0	0	२	۰	0			
११	ሂ	२	0	0	0	•	२	0			
१२	Ę	२	0	0	0	0	0	२			
	हिवै	तीजे वि	वकल्पे	रत्न थी	६ भांग	ग कहै	छे —				
8 8 8 0 0 0 0											
१४	7	₹	0	١	0	0	0				
१५	3	3	0	٥	8	0	0	0			
<b>१</b> ६	8	3	٥	•	0	8	0	0			
<b>१</b> ७	ય	3	0	0	•	0	१	0			
१८	દ્	3		0	0	0	0	8			
	एव	रं रत्न य	ी तीन	विकल्पे	१८ भ	ांगा कह	ग्रा ।				
प्रथ	गाँगा म हल्पे	२. ३. ४.	१ सक्क १ सक्क १ सक्क	र ३ वा र ३ पंव र ३ घूग र ३ तम र ३ तम	ह म ा						
<ul> <li>५ १ सक्कर ३ तमतमा</li> <li>१ २ सक्कर २ वालु</li> <li>५ भागा</li> <li>२ २ सक्कर २ पक</li> <li>द्वितीय</li> <li>३ २ सक्कर २ धूम</li> <li>विकल्पे</li> <li>४ २ सक्कर २ तम</li> <li>५ २ सक्कर २ तमतमा</li> <li>१ ३ सक्कर १ वालु</li> <li>५ भागा</li> <li>२ ३ सक्कर १ पक</li> </ul>											
तृर्त विव	यि हल्पे	४. ५.	२ सक्क २ सक्क	र १ धूम र १ तम र १ तम थी ३ वि	ा तमा ।	१५ भांग	ा कह्या				

The Personal Property lies, where	
४ भागा प्रथम विकल्पे	<ol> <li>१ वालु ३ पक</li> <li>१ वालु ३ घूम</li> <li>१ वालु ३ तम</li> <li>१ वालु ३ तमतमा</li> </ol>
४ भागा दूजै विकल्पे	१. २ वालु २ पक २. २ वालु २ घूम ३. २ वालु २ तम ४ २ वालु २ तमतमा
४ भागा तीजैः विकल्पे	१. ३ वालु १ पक २ ३ वालु १ धूम ३. ३ वालु १ तम ४. ३ वालु १ तमतमा
	एवं वालु थी ३ विकल्पे १२ मांगा कह्या।
३ भागा प्रथम विकल्पे	१. १ पक ३ घूम २. १ पक ३ तम ३ १ पक ३ तमतमा
३ भागा दूजै विकल्पे	१२ पक २ धूम २२ पंक २ तम ३.२ पक २ तमतमा।
३ भागा तीजै विकल्पे	१ २ पक १ धूम २ ३ पक १ तम ३ ३ पक १ तमतमा।
	एवं पंक थी ३ विकल्पे ६ मांगा कह्या।
२ भागा प्रथम विकल्पे	१ १ घूम ३ तम २ १ घूम ३ तमतमा।
२ भागा द्वितीय विकल्पे	१२ घूम २ तम २२ घूम २ तमतमा।
२ भागा तीजै विकल्पे	१ ३ घूम १ तम २ ३ घूम १ तमतमा।
	एवं घूम थी ३ विकल्पे ६ मांगा कह्या।

१ भागो प्रथम विकल्पे	१. १ तम ३ तमतमा
१ भागो दूजें विकल्पे	१. २ तम २ तमतमा
१ भागो तीर्ज विकल्पे	१ ३ तम १ तमतमा
	एवं तम थी ३ विकल्पे ३ भांगा।
`	एवं ४ जीव नां द्विकसंजोगिया विकल्प ३, मांगा त्रेसठ ।

बा० — हिवै च्यार जीवा रा तीनसंजोगिया भागा कहै छै — तेहनां विकल्प तीन। तीनसंजोगिया मूल भागा ३५ तीन विकल्प माटै, त्रिगुणा कीघा १०५ भागा हुवै। एक विकल्प करि रत्नप्रभा थी १५ हुवै, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघा ४५ हुवै। रत्नप्रभा थी १५ इम करवा। रत्न सक्कर थी ५, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघा १५ हुवै, रत्न वालु थी ४, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघा १२ भागा हुवै, रत्न पंक थी ३, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघा ६ हुवै। रत्न घूम थी २, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघा ६ भागा हुवै, रत्न तम थी १ भागो, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघा तीन भागा हुवै। एव रत्न थी १ भागो, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघा तीन भागा हुवै। एव रत्न थी सर्व भागा ४५ हुवै, तिणमे प्रथम रत्न सक्कर थी पाच भागा, तेहना तीन विकल्प करि १५ भागा हुवै ते कहै छै—

- २३ अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय वालुका मांही। अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय पंक तिण पाई।।
- २४ अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय धूम कहिवाई। अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय तमा रै मांही॥
- २५ अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय तमतमा थाई। रत्न सक्कर थी धुर विकल्प करि, ए पंच भग कहाई।। हिवै रत्न सक्कर थी पाच भागा दुजै विकल्पे कहै छै—
- २६. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक वालुका मांही। अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक पंक तिण पाई।।
- २७. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक धूम किह्वाई। अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक तमा रै माही।।
- २८. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक तमतमा मांही। रत्न सक्कर थी ए पच भगा, द्वितीय विकल्पे थाई॥ हिव रत्न सक्कर थी पाच भागा तृतीय विकल्पे कहै छै—
- २६ अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक वालुका मांही। अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक पक तिण पाई॥

वा०—तथा पृथिवीनां त्रिकयोगे एक एको हो चेत्येव नारकोत्पादिवकल्पे रत्नप्रभाशक्कराप्रभाभ्या सहान्याभि क्रमेण चारिताभिलंब्घाः पञ्च, एको द्वावेकश्चेत्येव नारकोत्पादिवकल्पान्तरेऽपि पञ्च, द्वावेक एकश्चेत्येव वमपि नारकोत्पादिवकल्पान्तरे पञ्चेवेति पञ्च-दश, एवं रत्नप्रभावालुकाप्रभाभ्या सहोत्तराभिः क्रमेण चारिताभिलंब्घा द्वावश, एवं रत्नप्रभापंकप्र-भाभ्यां नव, रत्नप्रभाधूमप्रभाभ्यां पट्, रत्नप्रभा-तमःप्रभाभ्या त्रयः। (वृ०प० ४४२)

२३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुय-प्पभाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्कर-प्पभाए दो पकप्पभाए होज्जा।

२४,२५ एवं जाव एगे रयणप्पभाए एगे सवकरप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

२६-२८ अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्प-भाए दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

२६-३१. अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए

- ३०. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक धूम कहिवाई।
  अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक तमा दुखदाई।।
  ३१. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक तमतमा माही।
  रत्न सक्कर थी तृतीय विकल्प, ए पंच भंगा थाई।।
  हिवै रत्न वालुका थी च्यार भांगा हुवै, ते तीन विकल्प करिकै १२ भागा
  हुवै। ते प्रथम विकल्प करि च्यार भांगा कहै छैं.—
- ३२. अथवा एक रत्न इक वालुय, दोय पंक तिण पाई। अथवा एक रत्न इक वालुय, दोय धूम रें मांही।। ३३. अथवा एक रत्न इक वालुय, दोय तमा दुखटाई। अथवा एक रत्न इक वालुय, दोय तमतमा मांही।। हिन्नै रत्न वालुका थी दुनै विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—
- ३४. अथवा एक रत्न दो वालुय, एक पंक तिण पाई।
  अथवा एक रत्न दो वालुय, एक धूम रै मांही।।
  ३५. अथवा एक रत्न दो वालुय, एक तमा दुखदाई।
  अथवा एक रत्न दो वालुय, एक तमतमा मांहो।।
  हिवै रत्न वालुय थी तीजै विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—
- ३६. अथवा दोय रत्न इक वालुय, एक पंक तिण पाई। अथवा दोय रत्न इक वालुय, एक धूम रै मांही।। ३७. अथवा दोय रत्न इक वालुय, एक तमा दुखदाई। अथवा दोय रत्न इक वालुय, एक तमतमा मांही।।

हिवै रत्न पंक थी तीन भांगा हुवै, ते तीन विकल्प करि ६ भागा कहै छै--

- इद. अथवा एक रत्न इक पंके, दोय धूम दुखदाई। अथवा एक रत्न इक पंके, दोय तमा उपजाई।। इट. अथवा एक रत्न इक पके, दोय तमतमा मांही। रत्न पंक थी धुर विकल्प करि, ए त्रिण भंगा थाई।। ४०. अथवा एक रत्न दो पके, एक धूमका माही। अथवा एक रत्न दो पके, एक तमा उपजाई।।
- ४१. अथवा एक रत्न दो पंके, एक तमतमा मांही। रत्न पंक थी द्वितीय विकल्प, ए त्रिण भंगा थाई।।
- ४२. अथवा दोय रत्न इक पंके, एक धूमका मांही। अथवा दोय रत्न इक पंके, एक तमा उपजाई।
- ४३. अथवा दोय रत्न इक पंके, एक तमतमा मांही। रत्न पक थी तृतीय विकल्प, ए त्रिण भंगा थाई।। हिवै रत्न वूम थी वे मांगा हुवै, ते तीन विकल्प करिकै ६ मांगा कहै छै। तिहां रत्न वूम थी प्रथम विकल्प करिकै वे मागा हुवै ते प्रथम कहै छै—
- ४४. अथवा एक रत्न इक धूमा, दोय तमा उपजाई। अथवा एक रत्न इक धूमा, दोय तमतमा मांही।। हिवै रत्न यूम थी दूजा विकल्प करि २ भांगा कहै छै—
- ४५. अथवा एक रत्न वे घूमा, एक तमा तिण पाई। अथवा एक रत्न वे घूमा, एक तमतमा माही ॥
- ५४ भगवती-जोड्

- ३२,३३. अहवा एगे रयणप्यभाए एगे वालुयप्यभाए दो पंकप्यभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्यभाए एगे वालुयप्यभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।
- ३४-५६. एव एएणं गमएण जहा तिण्ह तियासजोगो तहा भाणियव्वो जाव अहवा दो घूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा।

हिवै रत्न धूम थी तीजे विकल्प करि वे भागा कहै छै-

- ४६. अथवा दोय रत्न इक धूमा, एक तमा तिण पाई।
  अथवा दोय रत्न इक धूमा, एक तमतमा माही।।
  हिवै रत्न तमा थी एक भांगो हुवै ते तीन विकल्प करि तीन भागा कहै
- ४७. अथवा एक रत्न इक तमा, दोय तमतमा मांही। रत्न तमा थी धुर विकल्प करि, इम इक भगो थाई॥
- ४८ अथवा एक रत्न दो तमा, एक तमतमा मांही। रत्न तमा थी इम इक भंगो, द्वितीय विकल्प थाई।
- ४६. अथवा दोय रत्न इक तमा, एक तमतमा मांही। रत्न तमा थी इम इक भंगो, तृतीय विकल्प थाई।।
- ५०. रत्न सक्कर थी पंच कह्या भंग, रत्न वालु थी च्यारो। रत्न पक थी त्रिण भग आख्या, वारू करि विस्तारो॥
- ५१. रत्न धूम थी वे भग आख्या, रत्न तमा थी एको। रत्न थकी इक-इक विकल्प ना, पनर-पनर भग पेखो।।
- ५२. च्यार जीव नां त्रिकसंयोगिक, विकल्प तेहनां तीनो। त्रिगुणा कीधे भंग रत्न थी, पैतालीस प्रवीनो।। इम सक्कर थी इक-इक विकल्प नां दश-दश भागा हुवै, तेहनी आमना कहै छै—
- ५३. इम सक्कर थी दश भांगा ह्वं, सक्कर वालु थी च्यारो। सक्कर पंक थी तीन हुवै भग, सक्कर धूम वे सारो॥
- ५४. सक्कर तमा थी इक भांगो ह्वै, सक्कर थकी दश एहो। इक-इक विकल्प ना ए करिवा, दश-दश भागा तेहो।।
- ५५. च्यार जीव नां त्रिक संजोगिक, त्रिण विकल्प रै न्यायो। त्रिगुणा कीधां सक्कर थी ए भांगा तीस कहायो॥ हिवै वालुका थी इक-इक विकल्प ना पट-पट भागा हुवै, तेहनी आमना कहै कै—
- ५६. हिवै वालुका थी पट भगा, वालु पक थी तीनो। वालु धूम थकी वे भगा, वालु तमा इक चीनो॥
- ५७. इक-इक विकल्प ना ए षट-पट, वालू थकी विचारो। त्रिण विकल्प करि त्रिगुणा कीधां, भागा हुवै अठारो। हिवै पंक थी इक-इक विकल्प करि तीन-तीन भागा हुवै, तेहनी आमना कहै छै—
- ५८. पक धूम थी वे भागा ह्वै, पक तमा थी एको। इक-इक विकल्पे त्रिण-त्रिण भागा, पक थकी नव पेखो।। हिवै धूम थी एक-एक विकल्प करि एक-एक भागी हुवै तेहनी आमना कहै छै---
- ५६. धूम तमा तमतमा भंग इक, त्रिण विकल्प करि चंगा। इक-इक भांगो एहनो ह्वं छै, धूम थकी त्रिण भंगा।।

६०. रत्नप्रभा थी भंग पैंताली, सक्करप्रभा थी तीसो। वालु अठारे पंक थकी त्रिण, धूम थकी इक दीसो।। ६१. च्यार जीव नां त्रिकसंजीगिक, त्रिहुं विकल्प करि तेहो। हुवै एक सो नैं पंच भंगा, विधि सेती गिण लेहो।।

1	च्यार जीव रा त्रिक संजीगिया नां विकल्प तीन, भांगा १०५। रत्न थी ४५। ते रत्न सक्कर थी १५ मांगा ते प्रथम विकल्प करि रत्न सक्कर थी ५ भागा कहै छ —										
		र	म	वा	पं	घू	त	तम			
१	8	8	8	7	0	0	0	0			
२	ર	१	१	ō	२	0	o	0			
ą	<b>3</b> -	8	?	o	0	२	0	0			
8	8	2	१	٥	0	0	7	0			
ų	ų	3	१	0	o	0	0	7			
	हिये दू	जै विक	पे रत्न	सक्कर	थी ५	भांगा प	है छै-	-			
ę,	8	१	२	8	0	0	0	0			
હ	२	?	२	o	3	D	0	0			
<u>د</u>	३	?	२	0	0	\$	o	0			
3	8	8	२	٥	0	0	१	o			
१०	પ્ર	१	२	a	0	0	0	२			
हिस	वे तीजे	विकरप	करि र	त्न सक्ब	र थी !	५ भांगा	कहै छै				
११	3	7	8	1	0	0	0	0			
१२	२	२	1	0	1	0	0	0			
१३	ş	7	?	0	0	1	0	0			
१४	8	२	1	0	0	0	1	0			
१५	પ્	२	3	0	0	0	0	8			

६०,६१. चितुष्प्रवेश त्रिकयोगे—
४५ रत्नप्रभा
२० शकराप्रभा
(१८ वालुकाप्रभा
६ पंकप्रभा
३ धूमप्रभा' (वृ० प० ४४२)

१,२. जोड की गाथा ६० में पंकप्रमा में तीन मंगों का उरलेख है और धूमप्रमा से एक मंग का। इस गणना से चार जीवों के त्रिक संयोगिक १०५ मंगों की संगति नहीं बैठती। पर इमसे आगे ६१वी गाथा में 'त्रिहुं विकल्प करि तेहों' लिखा गया है। यह संकेत उक्त दोनो—पकप्रमा और घूमप्रमा के लिए दिया गया है। इसके अनुमार पंकप्रमा से एक-एक विकल्प के तीन-तीन भग करने से तीन विकल्प से नौ भग हो जाते हैं। इसी प्रकार घूमप्रमा से एक विकल्प का एक भंग करने से तीन विकल्प के तीन भंग हो जाते हैं।

र ती	र तीन विकल्प करि रत्न सक्कर थी १५ भांगा कह्या। हिवै											
रत्न	वालु र्थ	<b>ो ४ भां</b>	गा प्रथ	म विक	ल्पे कहैं	छं —						
		₹	स	वा	ų	घू	त	तम				
	१	8	0	8	۶	0	0	0				
,	٦	१	0	8	٥	2	٥	0				
:	R	१	0	8	0	0	२	0				
2	8	8	0	. 8	0	0	0	२				
fi	हवै रत्न	वालु थ	शी ४ इ	गंगा दूर	ते विकल	प करि	कहै छै	-				
0	8	8	0	२	8	0	0	0				
8	२	१	0	२	0	१	0	0				
2	Ð	१	0	२	•	0	१	ø				
R	४	१	0	२	0	0	0	१				
	हिवै र	त्न वालु	था ती	जि विक	ल्पे ४भ	ांगा कहै	छै ~					
		र	स	वा	प	घू	त	तम				
8	१	२	0	१	१	0	0	0				
্ধ	२	२	0	१	0	१	0					
~ ~				!	}	1	1	1				
१६	2	२	0	1 8	0	0	١	0				
्ह् ्र	* AT	<b>٦</b>	0	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	0	0	8	9				
-	8	२ ए रत्न	° वालु	१ थी १२	   ० भागा व	े ह्या ।	0	1				
-	8	२ ए रत्न	° वालु	१ थी १२		े ह्या ।	0	1				
-	8	२ ए रत्न	° वालु	१ थी १२	   ० भागा व	े ह्या ।	0	1				
<i>\\</i> 9	४ हिवै र	२ ए रत्न त्न पंक	० वालु थी ३	१ थी १२ भांगा ऽ	े भागा व ाथम वि	० ह्या। कल्पेक	है छ -	<b>१</b>				
\$5 \$6 \$0	हित्ते र १ २	र ए रत्न त्न पंक १ १	० वालु थी ३	१ श्री १२ भांगा 5	भागा व भागा व । १   १	े कह्या। कल्पे क	े छैं-	0 2				
\$5 \$6 \$0	हित्ते र १ २	र ए रत्न त्न पंक १ १	० वालु थी ३	१ श्री १२ भांगा 5	भागा व स्थम वि	े कह्या। कल्पे क	े छैं-	0 2				
\$5 \$6 \$0	हित्ते र १ २	र ए रत्न त्न पंक १ १	० वालु थी ३	१ श्री १२ भांगा 5	भागा व भागा व । १   १	े कह्या। कल्पे क	े छैं-	0 2				

३३	₹	१	o	0	२	0	0	१
हि	वै रत्न	पंक थी	३ भांग	ग तीजे	विकल्प	करि व	हहै छै-	
		र	स	वा	Ч	धू	त	तम
38	१	२	0	0	१	8	0	٥
३५	ર	२	0	0	१	0	१	0
३६	m	२	0	0	१	0	o	8
		ए र	त्न पंक	थी ६	भांगा	कह्या		.,
हि	वै रत्न	घूम थी	२ भां	गा प्रथम	। विकल	प करि	कहै छै	
३७	१	१	0	0	0	१	२	0
त्र् <sub>ष</sub>	२	<b>१</b>	0	0	0	१	0	२
1	हिवै रत	न घूम १	थी २ भ	ांगा दूर्ज	विकल	प करि	कहै छैं-	_
		र	स	वा	प	घू	तम	त
38	8	8	0	0	0	२	8	0
४०	२	१	0	0	0	२	٥	१
	हिवै रत	न घूम	थी २ म	गगा ती	जै विक	ल्प करि	कहैं है	<del>-</del>
४१	8	२	0	0	0	१	१	О
४२	२	२	0	٥	٥	१	0	१
		ए रत	न घूम	थी ६ १	भागा क	ह्या ।		
ि	हुवै रतन	तम थी	एक भ	ांगी प्रध	सम विक	ल्प करि	कहै छै	i —
४३	8	8	0	0	o	0	8	२
f	हवे रत्न	तम थी	एक भ	तमो दूर	विकल	प करि	कहै छै	-
ጸጳ	8	१	0	0	0	0	२	१
हि	वै रत्न	तम थी	एक भ	ांगो ती	ने विकल	य करि	कहै छै	
४४	-8	7	- 0	-0	-0	0 -	१	१
		ए₋रत	न तमः	थी तीन	- भागा	कह्या		

164 /1.			4- 111			8				
सदक	सक्तर वालु थी १२ ते प्रथम विकल्प फरि सक्कर वालु थी ४ भांगा कहैं छैं—									
		₹	स	वा	ď	घू	त	तम		
४६	१	0	8	8	2	0	0	0		
४७	२	0	8	8	0	२	0	0		
8=	ą	0	8	१	0	0	२	0		
38	8	9	8	۶	0	0	0	7		
हि	वै स <i>दव</i>	र वालु	थी ४	भांगा दू	जै विक	ल्प करि	फहें छै	_		
५०	8	0	१	२	१	0	0	0		
५१	२	0	8	२	ō	१	0	0		
५२	37	0	१	7	0	0	1	0		
५३	۲	0	१	२	0	0	0	8		
fi	हुवै सक	कर वार्	तुयी ४	भागा र	तीजे वि	कत्प क	रि कहै	छ —		
X,R	8	0	7	8	8	0	D	0		
ЯX	२	0	2	१	•	१	0	0		
પ્રદ્	3	0	२	8	•	0	8	0		
<b>५७</b>	8		२	1 8	0	o	0	१		
			तरि सक थी३ व					<b>.</b>		
પ્રવ	:   8		?	0	1	2	o	0		
<b>4</b> 8		2 6	,   8		8	0	र	0		
Ę	,	3	१	D	8	0	0	غ		
	हिबै स	क्कर प	कियी व	भांगा	दूत्रे विव	कल्प का	रे कहैं ह	в —		
8	8	8	8	0	1 2	8	o	0		
Ę	२	ş	0 8	0	२	0	8	0		
~ ج	3	ą	0 8	0	२	0	0	8		

हिवै	सवकर	पंक यं	ो ३ भा	गा ताः	ने विकट	प करि	कहै	છે.—
		₹	स	वा	ď	घू	त	तम
६४	१	o	á	o	१	१	0	0
६५	ર	0	ລ	o	१	٥	१	0
દધ્	en-	0	ર	0	3	o	0	१
		ए सब	कर पंग	तयी ६	. भांगा	कह्या ।		
हिर्व	संबक्तर	धूम थं	ो दो म	ांगा प्रव	म विव	ल्प का	रे कहैं	<del>ė</del> –
દ્દછ	१	0	\$	0	o	१	२	۰
६्द	२	o	ş	0	0	?	٥	२
हि	्वै सक	<b>र घूम</b>	थी दो	भांगा :	हुजं विव	त्त्प क	रे कहै	छं —
६६	ę	0	१	o	0	ર	2	0
७०	२	o	2	0	0	Ω×	0	१
हि	र्वं सक्क	र धूम	थी दो	भांगा त	ीजै विव	हल्प का	रे फहैं	<b>₺</b> —
৩१	१	0	२	0	0	१	8	٥
७२	२	0	ą	0	o	१	0	१
		ए सः	कर घू	न यो छ	ह भाग	कह्या	١	
हिं	र सक्क	र तम १	री एक	भांगी १	नथम वि	कल्प ध	ति कहें	छै−
€ 9	1	0	8	0	0	0	8	२
हिंद	संबक्त	र तम थ	ी एक	मांगी (	इजै विद	ल्प क	र कहै	<u> </u>
98	8	0	8	0	0	o	२	\$
हिर	वै सपक	र तम २	यी एक	भागो तं	ोजे विक	न्त्य करि	कहै	<b>छ</b> −
৬ৼ	8	0	२	0	0	0	8	8

-	१८ भांगा तीनूं विकल्प नां हुवै ते कहै छै												
वा	वालु पंक थी तीन भांगा, ते प्रथम विकल्प करि कहै छै-												
		र	स	वा	प	घू	त	तम					
Ī	१	0	٥	१	१	२	0	0					
	२	o	0	१	१	0	२	0					
	R	٥	0	१	۶	0	٥	2					
हि	वै वा	नुदंकः	थी तीन	भांगा	दूजै वि	कल्प क	रे कहै।	<b>3</b> —					
	१	0	0	१	२	8	0	0					
	२	0	а	१	₹.	0	१	0					
	₹	0	0	१	२	0	0	१					
1	हिवै व	ालु पंक	थी ३	भांगा	तीजै वि	कल्पे क	है छं -						
	१	0	0	२	१	१	0	0					
	२	0	0	२	१	0	१	0					
$\overline{}$	Ŗ	0	0	२	१	•	0	१					
हव	वालु	घूम थी	२ भांग	ाते प्रश	यम विव	कल्प का	रे कहैं।	<b>å</b> —					
	१	•	0	१	0	8	२	0					
•	२	0	0	१	0	8	•	२					
हव	वालु	घूम थी	दोय भ	ागा ते	दूजै विक	कल्प क	रि कहै	छे— —					
9	१	0	0	8	0	२	8	0					
5	२	0	0	8	۰	२	0	8					
हिव	वालु	घूम थी	दोय १	मागा ती	जे वि	कल्प क	रि कहै :	छै					
3	₹.	0	0	२	0	8	8	0					
0	२	0	0	२	0	1	0	2					
हिव	वालु	तम र्थ	एक प	गगो प्रश	यम विव	क्ल्प करि न	र कहै	छे -					
۶.	8	0	0	१	0	0	8	२					

हि	वे वालु	तम र्थ	ो एक प	गंगो दू	नै विकल	प करि	कहैं छै						
		र	स	वा	पं	घू	त	तम					
६२	Ŕ	0	0	१	0	0	3	१					
हि	वै वालु	तम र्थ	ो एक १	मांगो र्त	ोजै विक	ल्प करि	कहै छै						
६३	ह <b>३ १ ० ० २ ० ० १</b> १												
घूम	ए वालु तम थी ३ मांगा कह्या। एवं वालु पंक थी ६, वालु घूम थी ६, वालु तम थी ३, एवं सर्व वालु थी १८ मांगा कह्या। हिवे पंकप्रमा थी ६ मांगा तीनूं विकल्प नां हुवें ते कहै छैं —												
हिवै	पंक घू	म थी व	ोय मां	गाते प्र	यम वि	कल्प क	रि कहै।	<b>\$</b> —					
88	१	0	0	0	१	१	२	0					
ध्य	२	o	0	o	१	१	0	२					
हि	वै पंक	घूम थी	दोय भ	ांगा दू	ने विकल	प करि	कहै छै	_					
१६	8	0	0	0	१	२	१	0					
શ3	२	0	0	0	१	२	o	१					
हि	वै पंक ध	यूम थी	दोय भ	ागा ती	जे विक	त्प करि	कहै छै						
23	१	o	0	0	२	१	१	0					
33	२	0	0	0	२	१	0	१					
हि	वै पंक	तमा थी	एक भ	ांगो प्रथ	म विक	ल्प करि	कहै छै						
१००	१	0	o	0	१	0	8	२					
हि	वे पंक	तमा थी	एक भ	ांगो दूर	विकल	प करि	कहै छै	-					
१०१	१	0	0	0	१	0	२	१					
हि	वं पंक	तमा र्थ	१ भा	गो तीजे	विकल्प	न करि	कहै छै						
१०२	१	0	٥	0	२	0	१	?					
	ए पंक तमा थी ३ भांगा कह्या। एवं पंक घूम थी ६, पंक तम थी ३, एवं सर्व पंक थकी ६ भांगा कह्या। हिवें घूमप्रभा थी एक भांगो हुवें, ते त्रिण विकल्प करि तीन भांगा कहै छै—												

हि	वे घूम	तम थी	एक भा	गो प्रथ	म विक	ल्प करि	कहै छै	<b>.</b> —
		<b>र</b>	स .	वा	<b>q</b>	घू	त	तम
१०३	१	0	0	0	0	१	१	२
हि	वे घूम	तम थी	एक १	मांगो दूः	ने विका	ल्प करि	कहै छै	-
१०४	१	0	0	o	o	१	२	१
हि	वै घूम	तम थी	एक भां	गो तीर्ज	विकल	प करि	कहै छै	_
१०५	१	, 0	0	О	0	२	१	१
रत्न	थी ४५	थी त्रिष ८, सक्क सर्व १०	र थी ३	०, वालु	ुथी १	द, पंक	थी ह,	घम

वा०—हिंव च्यार जीव नां चजनकसजीगिया तेहनो विकल्प एक, भागा ३५ - हुवै, ते कहे छै—रत्न थकी २०, सक्कर थकी १०, वालु थकी ४, पक थकी १० एवं ३५ भागा । हिंवै रत्न थकी २० भागा हुवै, तिणरो विवरो—रत्न सक्कर थकी १०, रत्न वालु थकी ६, रत्न पक थकी ३, रत्न घूम थकी १—एवं रत्न थकी २० भागा । तिण मे रत्न सक्कर थकी १० हुवै, तिणरो विवरो—रत्न सक्कर वालु थकी ४, रत्न सक्कर पक थकी ३, रत्न सक्कर घूम थकी २, रत्न सक्कर तम थकी १—एवं १० रत्न सक्कर थकी हुवै । अनै रत्न वालु थकी ६ भागा हुवै, तिणरो विवरो—रत्न वालु पंक थकी ३, रत्न वालु, घूम थकी २, रत्न वालु तम थकी १—एवं रत्न वालु थकी ६ भागा हुवै । हिंवै रत्न पक थकी ३ भागा हुवै, तिणरो विवरो—रत्न घूम थकी २, रत्न तम थकी १—एवं रत्न वालु थकी ६ भागा हुवै । हिंवै रत्न पक थकी ३ भागा हुवै । हिंवै रत्न पक थकी ३ भागा हुवै । हिंवै रत्न यूम थकी १० हुवै, तिणरो विवरो कहै छै—रत्न सक्कर थकी १० भागा ते किसा ? रत्न सक्कर वालु थकी च्यार भागा हुवै, ते गाथा करी प्रथम कहै छै—

वदै जिनवानी रे, [वदै जिनवानी रे, गंगेय तणां ए प्रश्न परम पृहिछानी रे। वदै जिनवानी रे, जिन् उत्तर आपै सरस सुधारस जानी रे॥]

- ६२ अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका जानी। इक जीव पकप्रभा मे उपजै, भागो प्रथम पिछानी।
- ें ६३. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका ठानी। इक जीव धूमप्रभा में उपजै, 'द्वितीय भग इम आनी।।
  - ६४ अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका मानी। एक तमा रै मांही उपजै, त्रुतीय भग विधानी।।
  - ६५. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका कानी। एक तमतमा मांही उपजै, तूर्य भंग आख्यानी॥ हिवै रत्न सक्कर पक थी-तीन-भांगा कहै छै—

वा०--चतुष्कसंयोगे तु पञ्चित्रशिद्ति । (वृ०प्० ४४२)

- ६२. बहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालु-यप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा,
- ६३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालु-यप्पभाए एगे घूमप्पभाए होज्जा,
- ६४. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालु-यप्पभाए एगे तमाए होज्जा।
- ६५ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालु-यप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

६०: भग्रवती-जोड्,- ः

- ६६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक पंक पहिछानी। इक जीव धूमप्रभा में उपजै, पंचम भंग प्रमानी॥
- ६७. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक पंक प्राप्तानी। एक तमारे मांही उपजे, षष्टम भग वखानी।।
- ६ द्र. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक पक अघखानी । एक तमतमा मांही उपजै, भंग सप्तमो जानी ॥ हिवै रत्न सक्कर धूम थी दो भांगा कहै छै—
- ६६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक जीव धूमप्रभा नी। एक तमा रै माही उपजै, अष्टम भग आख्यानी।।
- ७०. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक धूम कहिवानी।
  एक तमतमा मांही उपजै, नवमों भंग विद्यानी।।
  हिवै रत्न सक्कर तम थी १ भांगो कहै छै —
- ७१. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक जीव तमा मघानी।
  एक तमतमा मांही उपजै, दशम भग दाख्यानी।।
  ए रत्न सक्कर थी १० भागा कह्या।
  हिवै रत्न वालु थी छह भागा, ते रत्न वालु पक थी तीन भागा प्रथम कहै
  छै —
- ७२. अथवा एक रत्न इक वालु, एक पक में जानी। इक जीव धूमप्रभा मे उपजै, ग्यारम भग पिछानी।।
- ७३. अथवा एक रत्न इक वालु, एक पक दुखदानी।
  एक तमा छट्टी में उपजै, द्वादशमों भंग ठानी।।
- ७४. अथवा एक रत्न इक वालु, एक पक मे जानी।
  एक जीव तमतमा उपजै, भग तेरमों ठानी।।
  हिवं रत्न वालु धूम थी दोय भागा कहै छं—
- ७५. अथवा एक रत्न इक वालु, इक जीव धूमप्रभा नी। एक तमा छट्टी में उपजै, भग चवदमों जानी।।
- ७६. अथवा एक रत्न इक वालु, एक धूम मे जानी। एक तमतमा माही उपजै, भग पनरमो आनी।। हिवै रत्न वालु तमा थकी एक भागो कहै छै—
- ७७. अथवा एक रत्न इक वालु, एक तमा दुखखानी।
  एक तमतमा माही उपजै, भंग सोलमो जानी।।
  हिवै रत्न पक थी तीन भागा, ते पहिला रत्न पक धूम थी दोय भागा कहै
  छै—
- ७८ अथवा एक रत्न इक पके, एक धूम अघखानी। एक तमा रै माही उपजै, भग सतरमो जानी।।
- ७१. अथवा एक रत्न इक पके, एक धूम अघखानी।
  एक तमतमा मांही उपजै, भंग अठारम आनी।।
  हिवै रत्न पंक तम थी एक भागो कहै छै—
- द०. अथवा एक रत्न इक पंके, एक तमा उपजानी। एक तमतमा मांही उपजै, भंग गुनीसम जानी।।

- ६६. अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंक-प्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा,
- ६७. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंक-प्पभाए एगे तमाए होज्जा,
- ६८. अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्प-भाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
- ६६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे घूम-प्पभाए एगे तमाए होज्जा,
- ७०. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूम-प्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
- ७१. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
- ७२. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्प-भाए एगे धूमप्पभाए होज्जा,
- ७३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंक्ष्प-भाए एगे तमाए होज्जा,
- ७४. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंक-प्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
- ७५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूम-प्पभाए एगे तमाए होज्जा,
- ७६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूम-प्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
- ७७. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
- ७८. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्प-भाए एगे तमाए होज्जा,
- ७१. अहवा एगे रयणंप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्प-भाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
- न०. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

हिंव रतन वूम थी एक भागो कहै छै-

द१. अथवा एक रत्न इक धूमा, एक तमा अघखानी।एक सातमी मांही उपजे, भंग वीस्मो जानी।

एवं रत्न यी २० भागा कह्या। हिनै सक्कर थी १० भागा, तिणरो विवरो—सक्कर वालु थकी ६, सक्कर पंक थकी ३, सक्कर वूम थकी १,—एवं १० भागा सक्कर थी हुनै। तिणमें सक्कर वालु थकी ६ तिणरो विवरो—मक्कर वालु पंक थकी ३, सक्कर वालु घूम थकी २, सक्कर वालु तम थकी १—एव ६ भागा सक्कर वालु थकी हुनै। अनै सक्कर पंक थकी ३ भागा हुनै, तिणरो विवरो—सक्कर पंक वृम थकी २, सक्कर पंक तम थकी १—एव सक्कर पंक थकी ३ भागा हुनै। अनै सक्कर वृम थकी १ भागो हुनै। इम मक्कर थकी १० भागा थाय। तिहा सक्कर वालु थकी ६ भागा, ते किसा ? सक्कर वालु पक थकी ३ भागा ते प्रथम गाथा करी कहै छै—

- द२. अथवा इक सक्कर इक वालु, एक पंक में जानी।
   इक जीव धूमप्रभा में उपजै, इकवीर्सम भंग आनी।।
- द३. अथवा एक सक्कर इक वालु, एक पंक में जानी।एक तमा रै मांहि ऊपजै, वावीसम भग आनी।।
- द४. अथवा एक सक्कर इक वालु, एक पंक में जानी।
  एक तमतमा मांहि ऊपजै, तेवीसम भंग ठानी।।
  हिवै सक्कर वालु यूम थकी दोय मांगा कहै छै—
- ५५ अथवा एक सक्कर इक वालु, एक धूम दुखखानी। एक तमा रै मांहि ऊपजै, चडवीसम भंग जानी॥
- द६. अथवा एक सक्कर इक वालु, एक धूम अघखानी। एक तमतमा मांहि ऊपजै, पणवीसम भंग जानी।। हिवै सक्कर वालु तम थी एक भांगी कहै छै—
- ५७. अथवा एक सक्कर इक वालु, एक तमा अघखानी। एक तमतमा मांहि ऊपजै, छव्वीसम भंग जानी।। हिवै सक्कर पक वी तीन भांगा, तिणमें सक्कर पंक वूम थी दोय भागा कहै छै —
- ददः अथवा एक सक्कर इक पंके, एक धूम मे जानी। एक तमा रै माहि छपजै, सप्तवीसमों ठानी।।
- ८. अथवा एक सक्कर इक पंके, एक धूम में जानी। एक तमतमा मांहि ऊपजै, अष्टवीसमों ठानी।। हिवै मक्कर पक तम थकी एक भांगो कहै छै—
- ६०. अथवा एक सक्कर इक पंके, एक तमा में जानी। एक तमतमा माहि ऊपजै, गुणतीसम भंग ठानी।। हिवै सक्कर वूम थी एक भांगो कहै छै—

६२ भगवती-जोड्

६१. व्ययवा एक सक्कर इक घूमा, एक तमा में जानी।
एक तमतमा मांहि ऊपजै, भंग तीसमो ठानी।।
ए सक्कर थी १० भागा कह्या। हिनै वालु थी ४ भांगा कहै छै, तिणरो
विवरो – वालु पंक थी ३, वालु धूम थी १ — एवं वालु थी ४। वालु पंक थी ३

दश. बहुवा एगे रयणप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे तमाए एगे बहुमत्तमाए होज्जा

- द२. बहुवा एगे सक्करप्यभाए एगे वालुयप्यभाए एगे पंक-प्यभाए एगे व्यमप्यभाए होज्जा ।
- ५३-६१. एव जहा रयणप्यभाए उवित्मायो पुढवीयो चारि-यायो तहा सक्करप्यभाए वि उवित्मायो चारिय-व्वायो जाव अहवा एगे सक्करप्यभाए एगे वूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

ते किसा ? वालु पंक वूम थी २, वालु पक तम थी १ एवं वालु पंक थी ३ । तिणमें वालु पक वूम थी २ भागा प्रथम कहै छै---

- ६२. अथवा एक वालु इक पके, एक धूमका जानी। एक तमा रै माहि ऊपजै, इकतीसम भग ठानी।।
- ६३. अथवा एक वालु इक पंके, एक धूमका जानी। एक तमतमा माहि ऊपजै, वत्तीसम भंग ठानी।। हिवै वालु पक तम थी एक भांगो कहै छै—
- ६४. अथवा एक वालु इक पंके, एक तमा में जानी। एक तमतमा माहि ऊपजै, तेतीसम भग ठानी।। हिवै वालु पूम तम थी एक भागो कहै छै—
- ६५. अथवा इक वालु इक धूमा, एक तमा मे जानी। एक तमतमा मांहि ऊपजै, चउतीसम भग ठानी।। हिवै पंक थी एक भागो कहै छै—
- ६६. अथवा इक पके इक धूमा, एक तमा मे जानी। एक तमतमा माहि ऊपजै, पणतीसम भंग ठानी॥

एव च्यार जीवां रा चउक्कसजीगिया तेहनी विकल्प १, भागा ३५। रत्न थी २०। ते वीस भागा मे रत्न न छूटै, प्रथम रत्न आवै। सक्कर थी १०। ते दण भागा मे सक्कर न छूटै, प्रथम सक्कर आवै। वालु थी ४। ते च्यार भागा मे वालु न छूटै, प्रथम वालु आवै। अनै पक थी एक—एवं ३५ भांगा जाणवा।

	च्यार जीवा रा चउक्कसंजीगिया भागा ३५ । तेहनो प्रथम विकल्प रत्न यी २०, ते किसा ? हिवै प्रथम रत्न सक्कर वालु यकी ४ भांगा कहै छै—										
र स वा पं धू त तम											
<b>?</b>	१	१	१	१	१	0	0	0			
२	२	१	٤	१	0	8	0	o			
an-	ą	१	8	१	0	0	१	0			
٧	٧	१	१	१	o	0	0	१			
	हिन			_	थी ४ । ३ भांग	कह्या। गक्हे इं	ŝ				
ሂ	१	१	१	0	१	१	0	0			
Ę	२	१	१	0	۶	0	8	0			
b	Ą	ξ	१	0	٤	0	0	१			

- ६२. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे घूमप्प-भाए एगे तमाए होज्जा
- ६३. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्प-भाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा
- ६४. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमा ए एगे अहेसत्तमाए होज्जा
- ६५. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।
- ६६. अहवा एगे पकप्पभाए एगे घूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। (श०६।६१)

or_c .	हिवे	रत्न स	वकर घृ	्म थी	२ भांग	ा फहै छै					
		र	स	वा	प	घू	त	तम			
5	१	٤	8	0	o	8	8	0			
3	2	8	8	٥	0	8	0	8			
	हिने रत्न सक्कर तम थी १ भांगी कहे छै—										
१०	8	8	8	0	c	0	8	१			
हिंद	ए रत्न सक्कर थी १० भांगा कह्या। हिचे रत्न वालु थी ६ भांगा ते रत्न वालु पंक थी ३ भांगा प्रथम कहै छै										
११	१	१	0	१	१	१	0	o			
१२	7	१	0	१	8	0	१	0			
१३	ą	१	٥	१	8	0	o	ę			
	fê	वै रतन	वालु घ	्म थी	२ भांग	कहै ह	ĝ				
१४	8	8	•	१	0	8	१	0			
१५	2	१	0	8	0	8	0	१			
	हिव	रत्न व	ालु तम	' थकी 	एक भार	गे कहे	छ- <b>—</b>				
१६	8	१	0	8	e	0	१	8			
	हिवे रत		री ३ भ		पहिला	कह्या । रत्न पंक	घूम थ	ी २			
१७	8	8	0	0	१	8	8	•			
१ः	ः   २	१		0	१	8	0	१			
		हिवै रत	न पंक	तम थी	१ भांग	ो कहै ई	š				
<b>9</b> 8	2	१	55		, 8	0	8	8			
_		हिवै र	त्न धूम	थीए	क भागो	कहै छ	_				
२	0   1	} {	2 0		0 0	, 8	8	8			

हि	एवं रत्न थी २० भांगा कह्या । हिवै सक्कर थकी १० भांगा थाय, तिहां सक्कर वालु पंक थकी ३ भांगा, ते प्रथम कहें छैं—										
		र	स	वा	q	घू	त	तम			
२१	8	0	१	१	8	ę	0	0			
२२	२	0	१	१	१	o	2	0			
२३	Ą	0	१	१	१	0	٥	१			
	हिवै	सक्कर	वालु घृ	(म थी	२ भांग	ा कहै ।	ġ —				
२४	१	0	१	१	0	१	8	٥			
२४	२	۰	१	१	0	१	٥	१			
	हिं	रं सक्क	र वालु	तम थी	१ भांग	ो कहै ह	<b>3</b> →				
२६	१	•	8	8	0	0	१	१			
	हिंदै सब				, तिणमे कहै छैं-	स <b>क्</b> कर —	पंक धू	म			
२७	8	0	१	0	8	8	१	0			
२८	२	0	2	0	१	8	0	8			
	हिब	संक्र	पंकत	म थी	एक भांग	ो कहै	<b>છે</b> —				
२६	१	0	1	0	8	0	\$	8			
		हिवे स	कर घू	म थी १	भांगो	कहै छैं					
३०	8	0	8	0	0	8	१	٤			
हि	ए सक्तर थी १० भागा कह्या। हिंचै वालु थी ४ भागा कहै छै। तिणमें वालु पंक धूम थी २ भांगा प्रथम कहै छै—										
38	8	0	0	8	8	8	१	0			
३२	२	o	0	2	8	१	0	8			
		ए वात्	त्रु पंका ह	पूम थी	२ भाग	ा कह्या	1				

हिबं वालु पंक तम थी एक भांगी कहै छैं—										
33 8 0 0 8 8 0 8 8										
ए वालु पंक तम थी १ मांगो कह्यो । एवं वालु पंक थी ३ भांगा थया। हिवे वालु घूम तम थी एक भांगो कहै छै—										
38 8 0 0 8 0 8 8										
ए वालु घूम तम यी एक भागो कह्यो । एवं वालु थी ४ भांगा यया । हिवे पंक थी १ भागो कहै छै —										
इप्र १ ० ० ० १ १ १										
ए पंक थी एक भागो कहारे। एवं ४ जीवां रा चउक्कसंजीगिया— रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पंक थी १, एवं सर्व ३५। एतले च्यार जीव रा इकसंजीगिया ७, द्विक- संजीगिया ६३, त्रिकसंजीगिया १०५, चउक्कसंजीगिया ३५ सर्व २१० भागा जाणवा। विल विशेष चउक्कसंजीगिया नीं										

आमना कहे छै---

#### गीतक-छंद

१७. वीस रत्न थी सक्कर थी दश, च्यार वालू थी सही। पक थी इक चउनकयोगिक, भंग ए पणतीस ही।। ६८. वीस रत्न थी तेह इहविघ, सक्कर थी दश जाणियै। धूम थी इक आणियै।। वालु थी षट पक थी त्रिण, ६६. रत्न सक्कर थकी दश इम, वे सहित वालू थी चिहु। रत्न सक्कर पंक थी त्रिण, भंग भणवा इह विधउ।। १००. रत्न सक्कर धूम थी वे, रत्न सक्कर तम थकी। एक भागो हुवै इम दश, रत्न सक्कर् थी नकी।। १०१. रत्न वालू थकी षट इम, रत्न वालू पक थी। तीन भांगा कीजिय सुध, अक्ष न्याय अवंक थी।। १०२. रत्न वालू धूम थी वे, रत्न वालू तम हुती। एक भांगो हुवै इम षट, रत्न वालू नरक थी।। १०३. रत्न पंक थी तीन भग इम, रत्न पंक नै धूम थी। दोय भांगा हुवै ने इक, रत्न पंक नै तम हुती।। १०४ रत्न पंक थी तीन आख्या, हिवै रत्न नै घूम थी। एक भांगो हुवै इम ए, वीस भांगा रत्न थी।। १०५ सक्कर थी दश हुवै इहिवध, षट सक्कर वालू हुती। पंक थी त्रिण धूम थी वे, एक तमा नरक थी।। १०६ वालु थी भंग च्यार ते इम, वालू पक थकी त्रिहु। एक वालू धूम थी ए, भंग वालू थी चिहुं।।

१०७. वालु पंक थी तीन ते इम, वालु पंक ने धूम थी। दोय भांगा हुनै ने इक, वालु पंक नें तम हुंती।। १०८. ए तीन भागा वालु पंक थी, एक वालू धूम थी। ए च्यार भांगा वालु थी ह्वं, न्याय अक्ष संचरण थी।। १०६. पंक थी इक भग होवै, पवर ए पणतीस ही। चउक्कसंजोगिया भांगा, कीजिये बुद्धि प्रवर थी।। ११०. तीन नरक नो नाम लेई, भंग जो पूछी जियै। एहथी भंग केतला तसु ? जाव इहविघ दीजिये।। १११. नरक वाकी रहै जेती, तेता भंग कहीजियै। एह थी भंग एतला ह्वै, एम उत्तर दीजियै।। ११२. रत्न सक्कर वालु स्यू मिल, त्रिहुं थी भंग केतला? एम पूछ्यां तास उत्तर, दीजियं इहविध भला।। ११३. पक धूम तम सातमीं ए, नरक चिहुं वाकी रही। ते भणी जे रत्न सक्कर, वालु थी चिहुं ह्वं सही ॥ ११४. रत्न सक्कर पंक थी भंग, केतला होवे सही? तीन भागा एहथी ह्वं, नरक वाकी त्रिण रही।। ११५ रत्न सक्कर धूम थी भंग, केतला होवै सही? दोय भांगा एहथी ह्वी, नरक बाकी वे रही।। ११६. रत्न वालू तम थकी भंग, केतला होवें सही? एक भांगो एहथी ह्वं, नरक वाकी इक रही।। ११७. सक्कर वालू पंक सेती, तीन भांगा ह्वं सही। सक्कर वालू धूम थी वे, नरक वाकी वे रही।। ११८ वालु पक ने धूम सेती, भंग केता ह्वं सही? दोय भांगा एहथी ह्वै, नरक वाकी वे रही।। ११६. वालु पक नैं तमा सेती, भंग केता ह्वं सही? एक भांगो एहथी ह्वं, नरक वाकी इक रही।। १२०. वालु धूम ने तमा सेती, भंग केता ह्वं सही? एक भांगो एहथी ह्वं, नरक वाकी इक रही।। १२१ पक धूम ने तमा सेती, एक भांगी ह्वं सही। नरक वाकी इक रही छै, पणतीसमों ए भग ही।। १२२. इम नरक त्रिण तणो नाम ले, पूछियां भग जेहथी। नरक वाकी रहै जितरी, भंग तेता तेह थी।।

कोई पूछै—रत्न, सक्कर, वालू सैमिल थी कितरा भागा हुवै ? तेह्नो उत्तर—पक, धूम, तम, तमतमा —ए ४ नरक वाकी रही, ते भणी रत्न सक्कर वालु सैमिल थी ४ भागा हुवै । कोई पूछै सक्कर वालु पक थी किता भागा हुवै ? उत्तर—एहथी तीन हुवै, धूम, तम, सातमी—ए ३ वाकी रही ते माटै । कोई पूछै –वालू पक धूम थी किता हुवै ? उत्तर—दो भांगा हुवै, तमा अने सातमी—ए वे वाकी रही ते माटै । कोई पूछै वालु पक नै तम थी किता भांगा हुवै ? उत्तर—एक भागो हुवै, एक सातमी रही ते माटै । कोई पूछै —वालु धूम तम थी किता भागा हुवै ? उत्तर—एक भागो हुवै, एक सातमी वाकी रही ते माटै । इम तीन नरक भेली कर पूछ्या ए आमना जाणवी ।

हिव दोय नरक भेली कर ने पूछ ते कहै छै- इम चउनकर्सजोगिया में तो तीन नरक रो नाम लेई पूछ्यां लार नरक रहै जिता भागा कैहणा।

१२३. दोय नरक नों नाम लेई, भंग जो पूछीजियै। एहथी भंग केतला ह्वं ? जाव तस् इम दीजिये।। १२४. नरक वाकी रहे जेती, छठी नरक लगे सही। जेह नरक थी भंग जितरा, हुवै ते गिणवा वही।। १२५. तेह भंगा एकठा करि, गिणी संख्या कीजियै। वे नरक थी तेतला भंग, एम उत्तर दीजियै।। १२६. रत्न सक्कर वेहुं मेल्यां, भग होवै केतला? एम पूछ्यां तास उत्तर, दीजिये इहविघ भला॥ १२७. वालु थी चिउं पक थी त्रिण, घूम वे इक तम थकी। हुवै ए दश भंग तिणसं, रत्न सक्कर थी दश नकी ।। १२८. रत्न वालू वेहुं मिलियां, भग कितरा एह्यी? सातमी विण नरक तीनज, रही वाकी तेहथी॥ १२६. पंक थी त्रिण घूम थी वे, एक तम थी आणिये।। ते भणी ए रत्ने वाल् थकी पट भंग जाणियै।। १३०. सक्कर ने पंक वेहुं मिलिया, भंग कितरा एहथी ? सातमी विण नरक दोयज, रही वाकी तेहथी।। १३१. धूम थी वे एक तम थी, तीन भग ह्वै तेहथी। ते भणी ए सह सक्कर पंक थकीज त्रिण भग एहथी। १३२. वालु पंक थी भंग कितरा ? तीन भांगा ह्वं सही। धूम थी वे तम थकी इक, एम तीन लहै सही।। १३३. वालु घूम थी भंग कितरा ? एक तम वाकी रहै। तेहनों भंग एक तिणसूं, वालु धूम थी इक लहै।। १३४. इम नरक वे मेल पूछचां, सप्तमी विण जे रहै। तेहनां भंग गिणी जेता, बिहुं नरक थकी लहै।। १३५. चउसंजोगिक भंग पैंतीस, आमना ए तेह तणी। इहा आखी चतुर साखी, निपुण बुद्धिवत नर भणी।।

कोई पूछे ४ संजोगिया भागा मे रत्न सक्कर थी किता भागा हुवै ? तेहनों उत्तर—१० हुवै । तेहनो न्याय कहै छै—रत्न सक्कर वालु थी ४, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर घूम थी २, रत्न सक्कर तम थी १—एव दश भागा इम ह्वै छै, ते माटै रत्न सक्कर थी १० हुवै । इहां एक मातमी नरक थी भागा न हुवै ते माटै छेहली सातमी नरक न लेखवणी।

कोई पूछ रत्न वालु घी किता भागा हुवै ? उत्तर —रत्न वालु सिहत पंक घी ३, पूम थी २, तम घी १—एव ६ भागा रत्न वालु थी हुवै। इहा पिण सातमी न गिणी।

कोई पूछ रत्न पंक घी किता भागा हुवै ? उत्तर—रत्न पक सहित घूम थी२, तम घी १ —एव तीन भांगा हुवै !

कोई पूछ-यानु पंक घी किता भागा हुवै ? उत्तर—रत्न वानु सहित घूम घी वे भागा हुवै छै, अने तम घी १ भागो हुवै छै, ते माटै वानु पंक घी ३ भागा हुवै।

कोई पूछै वालु घूम थी किता भागा हुवै ? उत्तर-वालु घूम सहित तम थी १ भागो हुवै छै, ते माटै वालु तम थी १ भागो हुवै ।

चउनकसजोगिया एक नरक रो नाम लेई पूछचा तेहनी आमना कहै छै—रतन थी भागा किता? उत्तर—लार नरक रही ६। तिणमे प्रथम एक आंक वर्जी शेष पाच आक माडना—२।३।४।४।६। एहनै अनुक्रम गिणणा दोय ने तीन -पाच, पाच नै च्यार नव, नव ने पाच चवदै, चवदै नै छह - वीस, इम रत्न थी चउनक-संयोगिक वीस भागा हुवै।

सक्कर थी भागा किता ? उत्तर— लार नरक रही । तिणमे छेहलो एक आक वर्जी ने केप च्यार आंक मांडणा १।२।३।४। एहने अनुक्रम गिणणा—एक नै दोय—तीन, तीन ने तीन=छः, छ ने च्यार =दश इम मक्कर थकी चउक्क-संजोगिया १० भागा हुवै।

वालु थी भागा किता ? उत्तर — लार नरक रही जेतला भागा। एतल च्यार नरक रही ते माट च्यार भागा। अने पक थी एक भागो, एव च उवन संयोगिया ३५ भागा।

च उक्कसयोगिक भागा दोय नरक रो नाम लेई पूछ्या जेतली नरक वाकी रहै तिणमे एक छेहलो आक घटाय वाकी माडी गिणणा, जेतली सच्या हुवै तेतला भागा गिणणा। एहनो उदाहरण— रत्न सक्कर थी केतला भागा? उत्तर - लारै नरक रही पाच तिणमे एक छेहलो आक पाचो घटाय देणो। वाकी च्यार आक अनुक्रम माडणा १।२।३।४ हिवै एहनी सख्या गिणणी — एक नै दोय – तीन, तीन नै तीन – छ, छ नै च्यार — दण, इम रत्न सक्कर थी दश भागा।

रत्न वालु थी केतला भागा ? उत्तर — लारे नरक रही च्यार । तिणमे एक छेहलो आक चोको घटाय देणो । वाकी तीन आक अनुक्रम माटी गिणणा — १।२।३। हिवै एहनी सख्या गिणणी —एक ने दोय — तीन, तीन ने तीन — छह, इम रत्न वालु थी छह भागा ।

रत्न पंक थी केतला भागा हुवै ? उत्तर—लारै नरक रही तीन। तिणमे एक छेहलो आक तीयो घटाय देणो। वाकी दोय आक अनुक्रम माटी गिणणा— १।२। हिवै तेहनी सख्या गिणणी एक नै दोय तीन। इम रत्न पक थी तीन भागा।

इम रत्न घूम थी एक भागो हुवै।

सक्तर वालु थी केतला भागा हुवै ? उत्तर — लारै नरक रही ४ । तिणमे एक छेहलो आक चोको घटाय देणो । वाकी तीन आक अनुक्रम माडी गिणणा — १।२।३ । हिवै एहनी सख्या गिणणी एक नै दोय — तीन, तीन नै तीन छह, इम मक्कर वालु थी ६ भागा ।

सक्कर पक थी केता भागा हुवै ? उत्तर—लारै नरक रही तीन, तिणमे एक तीयो घटाय देणो । वाकी दोय आक अनुक्रम मांडी गिणणा—१।२। हिवै एहनी सख्या गिणणी एक नै दोय = तीन, इम सक्कर पक थी ३ भागा ।

इम सक्कर घूम थी भागो एक हुवै।

वालु थी भांगा ४। ते वालु पक थी तीन पूर्ववत गिणवा, वालु घूम थी एक एव ३४, पक घूम थी एक, एव ३५।

तीन नरक रो नाम लेइ पूछचा लारे जेतली नरक रहे तेतला भागा कहिवा। १३६. \*नव बत्तीस देश ढाल ए, इकसी सिततरमी।

भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, 'जय-जश' सुख गण घरमी ॥

<sup>\*</sup> लय: गुणी गुण गावी रे

६८ भगवती-जोड़

#### दूहा

- १ पंच नेरइया हे प्रभु । नरक-प्रवेशन काल । रत्नप्रभा में स्यू हुवै जाव सप्तमी न्हाल ? २ जिन भाखै सुण गंगेया । रत्नप्रभा उत्पात ।
- ्राजन माख पुज गगवा । स्याप्तमा अस्यार । जावत अथवा सप्तमी, इक-संयोगिक सात ।।

	पांच जीवां रा इकसंजोगिया भांगा सात—											
	₹	स	वा	पं	घू	त	तम					
१	યૂ	o	0	0	0	0	0					
२	0	ų	۵	0	0	0	0					
Ħ	0	0	ય	0	0	0	0					
४	0	0	0	ų	0	۰	0					
પ્ર	0	0	0	0	ų	0	0					
, u	0	0	0	0	0	ય	0					
७	0	0	0	0	0	0	ধ					

हिवै पाच जीव ना द्विकसजोगिया, तेहना विकल्प ४, भागा चउरासी। तिणमे प्रथम रत्न थी ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कहै छै---

- ३ तथा एक ह्वं रत्न मे, सनकरप्रभा में च्यार। जाव तथा इक रत्न मे, चिहु तमतमा मझार।।
- ४. तथा दोय ह्वं रत्न मे, तीन सक्कर रै माहि। इम जावत वे रत्न मे, तीन सप्तमी ताहि॥
- प्र तथा तीन ह्वं रत्न में, दोय सक्कर उपजता। इम जावत त्रिण रत्न में, तीन तमतमा हुत।। ६ तथा रत्न में जीव चिहु, सक्करप्रभा मे एक। जाव तथा चिहु रत्न मे, एक सप्तमी पेख।। हिवं सक्कर थी प्रभागा ४ विकल्प करि २० भागा कहै छै
- ७ अथवा इक सक्कर मझे, वालुप्रभा मे च्यार। जाव तथा इक सक्कर मे, चिहुं तमतमा मझार॥
- दं अथवा वे सक्कर मझे, वालुप्रभा मे तीन। जाव तथा वे सक्करे, तीन तमतमा लीन।।

- १. पच भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ? पुच्छा ।
- २. गगेया ! रयणप्यभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

- शहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा।
- ४ अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा।
- ५ अहवा तिण्णि रयणप्पभाए दोण्णि सम्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहेसत्तमाए होज्जा।
- ६ अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा एव जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।
- ७-१० अहवा एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा। एवं जहा रयणप्पभाए सम उवरिमपुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि सम चारेयव्वाओ

हिवै सक्कर थी ५भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —										
		₹	स	वा	प	घू	न	तम		
३४	१	0	ą	7	o	0	٥	o		
३६	२	0	भ	o	ર	0	0	0		
₹७	Ð,	0	à	0	,	२	o	•		
३८	8	0	η¥	0	0	o	२	0		
38	ሂ	0	3	0	0	0	0	२		
f	हिबै सक्कर थी ५ मांगा चर्चर्य विकल्प करि कहै छै-									
Y0	१	0	४	१	0	0	0	0		
४१	ર	٥	٧	0	१	0	0	0		
४२	134	0	४	0	0	१	o	0		
४३	४	0	٧	0	•	0	१	0		
88	ሂ	0	٧	٥	0	0	0	१		
						भांगा	_			
	हिच वा	लुथा र	ऽ भरग	। प्रथम	1	ाकरिय 	न्ह छ <u>–</u>			
४५	१	0	0	8	8	0	0	0		
४६	२	٥	٥	8	0	8	0	٥		
४७	ą		0	१		0	8	0		
४८	8	0	0	१	0	0	0	٧		
हिबै वालु थी ४ मांगा दूजी विकल्प करि कहै छै —										
38	१	0	0	२	TH.	0	0	0		
২০	२	0		2	•	ą	0	0		
प्रश	३	0	0	2	0	0	ą	0		
प्र२	8	0	0	7	0	o	0	n <sub>e</sub>		

हिवै वानु थी ४ भांगा तीजै विकत्प करि कहै छै—									
		र	म	वा	q	घू	त	तम	
५३	१	o	0	ą	२	0	0	0	
ሂሄ	ર	0	0	n/	0	२	0	0	
уу	ja-	0	o	ŝ	0	0	२	0	
४६	४	0	٥	æ	0	0	•	7	
हिवै वालु थी ४ मांगा चउथै विकल्प करि कहै 🕏 —									
ধূত	१	0	0	٧	१	٥	0	0	
५८	२	0	0	8	o	8	٥	0	
ય્રદ	a,	0	0	8	0	0	१	0	
६०	४	0	0	४	0	0	0	0	
ए वालु थी ४ विकल्प करि १६ भांगा कह्या । हिवै पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहे छै –									
६१	१	0	0	o	Ş	४	o	0,	
६२	२	0	0	0	१	0	٧	0	
६३	₹	o	0	o	8	0	o	8	
	हिबै प	क थी	३ भांग	ादूजै वि	वेकल्प	करि कह	छ -		
६४	8	0	0	0	२	737	0	٥,	
६५	२	0	0	0	२	0	ą	0	
દ્દ	3	0	٥	٥	२	0	0	m	
हिवै पंक थी ३ मांगा तीजै विकल्प करि कहे छै									
६७	१	0	٥	0	3	२	0	0	
६८	२	0	0	0	3	0	२	o ~	
६९	ą	0		0	3			7	

हिवै पंक थी ३ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै—										
		₹	स	वा	पं	घू	त	तम		
90	१	0	0	0	8	१	0	0		
68	२	0	0	0	४	0	8 )	0		
७२	R	D	0	0	४	0	0	8		
ए पंक थी ४ विकल्प करि १२ भांगा कह्या । हिवै घूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छैं —										
७३	१	0	0	0	0	१	8	ø		
७४ ઼	२	, •	0 ,	0	0	१	0	٧		
हिवे घूम थी २ मांगा दूजे विकल्प करि कहै छै —										
৬ৼ	8	0	0	0	0	२	₹	0		
७६	२	•	0	0		२	0	m		
,	हिवै घ	(म थी	२ भांगा	तीजै	विकल्प	करि क	है छैं			
৩৩	8			. 0	70	1 3	٦ ۲	0		
৬দ	२	0	٥	°	0	ą	٥	२		
	हिवै	यूम थी ।	२ भांग	ा चीथे	विकल्प	करि व	है छैं—	_		
30	1 8	, 0	•	0,	, 0	8	8	0		
50	18	0	٥	0,	0	Å	٥	8		
ए धूम थी ४ विकल्प करि म भांगा कह्या। हिवै तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—										
58	१	0	0	0	0	0	8	8		
हिर्द तम थी १ भांगी दूर्ज विकल्प करि कहै छै										
<u> </u>	8	D	0	0	0	0	२	ą		
	1	तम थी	१ भां	गो तीज	विकल्प	करि व	है छै—			
<b>5</b> ३	8	0	0	a	0	0	₹	२		

	हिवै तम	थी १	भागो	चउथे '	विकल्प	करिक	है छं –	
58	8	0	0	o	0	0	४	१

ए तम थी ४ विकल्प करि ४ भांगा कहा।
एवं पांच जीव नां द्विकसजीगिया रत्न थी २४, सक्कर थी
२० वालु थी १६, पंक थी १२, घूम थी ५, तम थी ४, एवं
सर्व ५४ भांगा थया।

२६ पंच जीव नां हिव कहूं, त्रिकसंयोगिक तेह। षट विकल्प करि भंग तसुं, वे सी दश गिण लेह।।

पच जीव ना त्रिकसंजोगिया ६ विकल्प करि २१० भांगा कहै छै-

\*२७ पनर भांगा रत्न सेती, सक्कर थी दश जिणये। वालु थी षट, पंक थी त्रिण, धूम थी इक आणिये।। २८. एह जे पेतीस भागा, षट विकल्प करि पटगुणां। दोयसी दश भंग होवे, पंच जे जीवां तणा।।

वा०—रत्न थी पनरें, तिके रत्न सक्कर थी ४, रत्न वालु थी ४, रत्न पंक थी ३, रत्न घूम थी २, रत्न तम थी १, एवं १५ भांगा ६ विकल्प करि जूजुआ कहे छै—प्रथम रत्न सक्कर थी ५ भांगा ६ विकल्प करि ३० भांगा कहै छै—

प्रथम विकल्प करि ५ भागा---

## १श्री जिन भाखै सुण गंगेया! (ध्रुपदं)

- २ ह. अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन वालु में होय जी। अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन पंक अवलोय जी।।
- ३०. अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन धूम रै माय। अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन तमा में जाय।।
- ३१ अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन सप्तमी होय। धुर विकल्प करि रत्न सक्कर सू, पच भागा ए जोय।। दुर्ज विकल्प करि ५ भागा—
- ३२. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय वालु रै माय। अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय पंक दुख पाय।।
- ३३ अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय धूमका जाय। अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय तमा रै माय।।
- ३४. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय तमतमा मांय। दितीय विकल्प रत्न सक्कर थी, पंच भागा इम थाय।। तीजै विकल्प करि ५ भागा—
- ३५. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय वालुका हुत। अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय पक उपजत।।
- ३६. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय धूम दुखदाय। अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय तमा र माय।।
- ३७. अथवा दीय रत्न इक सक्कर, दीय सप्तमी होय। तृतीय विकल्प रत्न सक्कर थी, पच भंगा इम होय॥ चउथ विकल्प करि ५ भागा —
- ३८. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक वालुका जाण। अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक पक पहिछाण।।
- ३१. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक धूमका माय। अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक तमा दुख पाय।।

\*लय : पूज मोटा भांजी तोटा †लयः श्री पूज्य भीखणजी रो समरण कीजी २७,२ विकयोगे तु सप्तानां पदाना पञ्चित्रणद्विकल्पाः, पञ्चाना च त्रित्वेन स्थापने पड् विकल्पास्तद्यथा.... तदेवं पञ्चित्रणत. पट्भिगुणने दणोत्तरं भञ्जकणतद्वय भवति । (वृ०प० ४४४)

२६-३१. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्य-भाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा।

३२-३४. अहवा एगे रयणप्पभाए दो सनकरप्पभाए दो वालु-यप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सनकरप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

३५-३७. अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्प-भाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

३८-४० अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रय-णप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

- ४०. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक तमतमा देख। चोथो विकल्प रत्न सक्कर सूं, पंच भंगा इम लेख।। पांचवे विकल्प करि ५ भागा —
- ४१. अथवा दोय रत्न दो सक्कर, एक वालुका जंत। अथवा दोय रत्न वे सक्कर, एक पंक में हुंत।।
- ४२. अथवा दोय रत्न दो सक्कर, एक धूम अवलोय। अथवा दोय रत्न बे सक्कर, जीव एक तम जोय।।
- ४३ अथवा दोय रत्न दो सक्कर, एक तमतमा आय। पंचम विकल्प रत्न सक्कर थी, भग पंच इम थाय।। छठ विकल्प करि ५ भांगा—
- ४४ अथवा तीन रत्न इक सक्कर, एक वालु आख्यात । अथवा तीन रत्न एक सक्कर, एक पक दुख पात ॥
- ४५. अथवा तीन रत्न एक सक्कर, एक धूम में जान। अथवा तीन रत्न एक सक्कर, एक तमा अघखान।।
- ४६. अथवा तीन रत्न एक सक्कर, एक तमत्मा गेह। छठै विकल्प रत्न सक्कर थी, भग पंच इम लेह।।

हिनै रत्न वालु थकी च्यार भांगा हुनै, ते छह विकल्प करि २४ भांगा

हुवै ।

प्रथम विकल्प करि ४ भागा-

- ४७. अथवा एक रत्न एक वालुक, तीन पक पहिछाण। जाव तथा एक रत्न वालु इक, तीन तमतमा जान।। दुर्ज विकल्प करि ४ भागा—
- ४८. अथवा एक रत्न वे वालुक, दोय पंक मे देख। जाव तथा एक रत्न वालु वे, दोय तमतमा पेख।। तीजै विकल्प करि भांगा—
- ४६. अथवा दोय रत्न इक वालु, दोय पंक दुख पाय। जाव तथा वे रत्न वालु इक, दोय तमतमा मांय।। चित्र विकल्प करि ४ भागा —
- ५०. अथवा एक रत्न त्रिण वालुक, एक पंक रै माय। जाव तथा इक रत्न वालु त्रिण, एक सप्तमी पाय।। पाचवे विकल्प करि ४ भागा—
- प्र. अथवा दोय रत्न दोय वालुक, एक पक अवलोय ।। जाव तथा वे रत्न वालु वे, एक सप्तमी होय ॥ छठै विकल्प करि ४ भांगा—
- पूर. अथवा तीन रत्न एक वालुक, एक पक दुखखान । जाव तथा त्रिण रत्न वालु इक, एक तमतमा जान ।। हिवै रत्न पक थी त्रिण भागा हुवै, ते छह विकल्प करि १८ भांगा कहैं छै।

४१-४३. बहना दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे बालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहेसत्तमाए।

४४-४६. अहवा तिष्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा तिष्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

४७-११५. सहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए तिण्णि पंकप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा चडण्हं तियासंजोगो भणितो तहा पंचण्ह वि तियासं-जोगो भाणियव्वो, नवरं—तथा एगो संचारिज्जइ, इह दोण्णि, सेसं तं चेव जाव अहवा तिण्णि धृमप्प-भाए एगे तमाए एगे अईसत्तमाए होज्जा।

- ५३. अथवा एक रत्न इक पंके, तीन धूमका हुंत। जाव तथा इक रत्न पंक इक, तीन तमतमा जंत।। दूजै विकल्प करि ३ भागा—
- प्रथ. अथवा एक रत्न वे पके, दोय धूमका देख। जाव तथा इक रत्न पंक वे, दोय सप्तमी लेख।। तीजै विकल्प करि ३ भांगा—
- ५५. अथवा दोय रत्न इक पंके, दोय धूमका स्थान। जाव तथा वे रत्न पंक इक, दोय सप्तमी जान।। चौबै विकल्प करि ३ भागा—
- ५६. अथवा एक रत्न त्रिण पंके, एक धूमका हुंत। जाव तथा इक रत्न पंक त्रिण, एक सप्तमी जंत।। पाचवे विकल्प करि ३ मांगा—
- ५७. अथवा दोय रत्न दोय पंके, एक धूमका मांय। जाव तथा वे रत्न पंक वे, एक तमतमा जाय।। छ वै विकल्प करि ३ भागा—
- एड अथवा तीन रत्न इक पंके, एक धूमका होय। जाव तथा त्रिण रत्न पंक इक, एक सप्तमी मोय।। हिवै रत्न धूम थी दोय मांगा ६ विकल्प करि १२ भागा कहै छै— प्रथम विकल्प करि २ भांगा—
- ५६. अथवा एक रत्न इक धूमा, तीन तमा उपजंत। अथवा एक रत्न इक धूमा, तीन तमतमा हुंत।। दुनै विकल्प करि २ भांगा—
- ६०. अथवा एक रत्न वे धूमा, दोय तमा रै मांय। अथवा एक रत्न वे धूमा, दोय तमतमा जाय।। तीजै विकल्प करि २ भांगा—
- ६१ अथवा दोय रत्न इक घूमा, दोय तमा दुख पाय। अथवा दोय रत्न एक घूमा, दोय तमतमा मांय॥ चडपै विकल्प करि २ भांगा—
- ६२. अथवा एक रत्न त्रिण धूमा, एक तमा दुखखान। अथवा एक रत्न त्रिण धूमा, एक तमतमा जान।। पांचवें विकल्प करि ३ मांगा—
- ६३. अथवा दोय रत्न दोय घूमा, एक तमा आख्यात। अथवा दोय रत्न दोय धूमा, एक तमतमा जात।। छठै विकल्प करि २ मांगा—
- ६४. अथवा तीन रत्न इक धूमा, एक तमा अघस्थान। अथवा तीन रत्न इक धूमा, एक सप्तमी जान।।
- ७६ भगवती-जोड 🚎 🏸

हिनै रत्न तमा थी एक भांगी ६ विकल्प करि ६ भांगा कहै छ-

- ६५. अथवा एक रत्न इक तमा, तीन सप्तमी जंत। अथवा एक रत्न दो तमा, दोय तमतमा हुंत।।
- ६६. अथवा दोय रत्न इक तमा, दोय तमतमा जाय। अथवा एक रत्न त्रिण तमा, एक सप्तमी मांय।।
- ६७. अथवा दोय रत्न दोय तमा, एक सप्तमी होय। अथवा तीन रतन इक तमा, एक तमतमा जोय।।

एवं रत्न थी १५ भांगा, ते ६ विकल्प करि ६० भागा कह्या।

हिवै सक्कर थी १० भांगा हुवै। ते सक्कर वालु थी ४, सक्कर पंक थी ३, सक्कर घूम थी २, सक्कर तम थी १--एवं १० भागा ६ विकल्प करि ६० भागा हुवै ।

> ते प्रथम सक्कर वालु थी ४ भागा ६ विकल्प करि २४ भांगा कहै छै-प्रयम विकल्प करि ४ भागा-

- ६८. अथवा एक सक्कर इक वालुक, तीन पंक दुखराश। जाव तथा इक सक्कर वालु इक, तीन तमतमा तास ॥ दूजै विकल्प करि ४ भागा---
- ६६. अथवा एक सक्कर वे वालुक, दोय पक दुखधाम। जाव तथा इक सक्कर वालु बे, दोय तमतमा पाम ॥ तीजै विकल्प करि ४ भागा-
- ७०. अथवा दोय सक्कर इक वालुक, दोय पक रै मांय। जाव तथा वे सक्कर वालु इक, दोय तमतमा जाय ।। चडथै विकल्प करि ४ भागा---
- ७१. अथवा एक सक्कर त्रिण वालुक, एक पंक अवलोय। जाव तथा इक सक्कर वालु त्रिण, एक पंक में होय।। पाचवे विकल्प करि ४ भांगा---
- ७२. अथवा वे सक्कर वे वालुक, एक पंक पहिछाण। जाव तथा वे सक्कर वालु बे, एक सप्तमी स्थान ।। छठै विकल्प करि ४ भांगा---
- ७३. अथवा तीन सक्कर इक वालुक, इक पंक उपजत। जाव तथा त्रिण सक्कर वालु एक, एक तमतमा हुंत।। हिवै सक्कर पक थी तीन भांगा ६ विकल्प करि १८ भागा। प्रथम विकल्प करि ३ भांगा-
- ७४. अथवा एक सक्कर एक पंके, तीन धूम रै मांय। जाव तथा इक सक्कर पंक इक, तीन सप्तमी जाय।। दूजै विकल्प करि ३ भांगा---
- ७५. अथवा एक सक्कर दो पके, दोय घुम मे देख। जाव तथा इक सक्कर पंक वे, दोय तमतमा लेख ।।

- तीजै विकल्प करि ३ भांगा--
- ७६. अथवा दो सक्कर इक पके, दोय धूम उपजंत। जाव तथा दो सक्कर पंक इक, दोय सप्तमी हुंत।। चउथै विकल्प करि ३ भांगा—
- ७७ अथवा एक सक्कर त्रिण पंके, एक घूम अवलोय। जाव तथा इक सक्कर पंक त्रिण, एक सप्तमी होय।। पाचवे विकल्प करि ३ भागा—
- ७८. अथवा वे सक्कर दो पके, एक धूम अघस्थान। जाव तथा वे सक्कर पंक वे, एक तमतमा जान।। छठै विकल्प करि ३ भागा—
- ७१. अथवा त्रिण सक्कर इक पंके, एक घूम अवदात । जाव तथा त्रिण सक्कर पंक इक, एक सप्तमी धात ॥ हिवै सक्कर घूम थी २ भागा छह विकल्प करि १२ भागा कहा। प्रथम विकल्प करि २ भागा—
- अथवा एक सक्कर एक घूमा, त्रिण तमा रै मांय ।
   अथवा एक सक्कर इक घूमा, तीन सप्तमी जाय ।।
   दूजै विकल्प करि २ भागा—
- दश्. अथवा इक सक्कर वे धूमा, दोय तमा दुखराश । अथवा इक सक्कर दोय धूमा, दोय सप्तमी तास । तीजै विकल्प करि २ भांगा—
- ५२. अथवा दो सक्कर इक धूमा, दोय तमा दुखदाय।। अथवा वे सक्कर इक धूमा, दोय सप्तमी जाय।। चत्रथै विकल्प करि २ भागा—
- प्रथवा इक सक्कर त्रिण धूमा एक तमा अघपूर । अथवा एक सक्कर त्रिण धूमा, एक तमतमा भूर ।। पाचवे विकल्प करि २ भागा—
- प्त अथवा वे सक्कर दो धूमा, एक तमा उपजंत। अथवा दोय सक्कर दो धूमा, एक तमतमा हुंत।। छठं विकल्प करि २ भागा—
- प्प अथवा त्रिण सक्कर इक धूमा, एक तमा में होय। अथवा त्रिण सक्कर इक धूमा, एक तमतमा जोय।। हिवै सक्कर तम थी १ भागो ६ विकल्प करि कहै छै-
- ६६ अथवा एक सक्कर इक तमा, तीन तमतमा मांय। अथवा इक सक्कर दोय तमा, दोय तमतमा जाय।।
- ५७. अथवा वे सक्कर इक तमा, दोय तमतमा जत। अथवा इक सक्कर त्रिण तमा, एक तमतमा हुंत।।
- दद. अथवा वे सक्कर दोय तमा, एक सप्तमी होय। अथवा तीन सक्कर इक तमा, एक तमतमा जोय।।
- ७८ भगवती-जोइ

एव सक्तर थी १० भागा, ते ६ विकल्प करि ६० भागा कहा। हिन वालु थी ६ भागा हुन ते वालु पंक थी ३, वालु वूम थी २, वालु तम थी १ -- ते ६ विकल्प करि ३६ भागा, तेहमे प्रथम वालू पक थी ३ भागा ६ विकल्प करि कहै छै---

प्रथम विकल्प करि ३ भागा--

- दश्. अथवा एक वालु इक पंके, तीन धूम रै माय। जाव तथा इक वालु पंक इक, तीन सप्तमी जाय।। दुर्ज विकल्प करि ३ भागा—
- ६०. अथवा एक वालु वे पंके, दोय धूम उपजत ।। जाव तथा इक वालु पक वे, दोय तमतमा हुत ।। तीजै विकल्प करि ३ भागा—
- ६१. अथवा वे वालुक इक पके, दोय धूम मे होय। जाव तथा वे वालु पक इक, दोय सप्तमी जोय।। चज्यै विकल्प करि ३ भागा—
- ६२. अथवा इक वालु त्रिण पके, एक धूमका स्थान । जाव तथा इक वालु पक त्रिण, एक तमतमा जान ॥ पाचवै विकल्प करि ३ भागा—
- ६३. अथवा वे वालू वे पके, एक धूम मे देख। जाव तथा वे वालु पक वे, एक सप्तमी लेख।। छठै विकल्प करि ३ भागा—
- १४ अथवा त्रिण वालू इक पंके, एक धूम आख्यात । जाव तथा त्रिण वालु पंक इक, एक तमतमा पात ।। हिवै वालू धूम थी २ भागा, ते ६ विकल्प कर १२ भागा कहै छै — प्रथम विकल्प करि २ भागा—
- ६५. अथवा इक वालू इक धूमा, तीन तमा रैमाय। अथवा इक वालु इक धूमा, तीन सप्तमी जाय।। दूजै विकल्प करि २ भागा—
- ६६. अथवा इक वालु वे धूमा, दोय तमा दुखदाय। अथवा इक वालु वे धूमा, दोय तमतमा पाय। तीर्ज विकल्प करि २ भागा—
- ६७ अथवा वे वालु इक धूमा, दोय तमा दुखगेह। अथवा वे वालु इक धूमा, दोय तमतमा लेह।। चज्यै विकल्प करि २ भागा—
- ६८. अथवा इक वालु त्रिण धूमा, एक तमा अवलोय। अथवा इक वालु त्रिण धूमा, एक तमतमा जोय।। पांचवै विकरप करि २ भागा—
- ६६. अथवा वे वालु वे धूमा, एक तमा अघपूर। अथवा वे वालु वे धूमा, एक तमतमा भूर॥

- १००. अथवा त्रिण वालु इक घूमा, एक तमा अघरास । अथवा त्रिण वालु इक धूमा, एक तमतमा वास । हिनै वालु तम थी १ भांगो ते ५ विकल्प करि कहै छै—
- १०१. अथवा इक वालु इक तमा, तीन तमतमा पाय। अथवा इक वालु बे तमा, दोय तमतमा जाय।
- १०२. अथवा वे वालु इक तमा, दोय तमतमा होय। अथवा इक वालु त्रिण तमा, एक तमतमा जोय। एवं वालु थी ६ भांगा, ते ६ विकल्प करि ३६ भांगा कहा।।
- १०३. अथवा वे वालु बे तमा, एक सप्तमी मांय। अथवा त्रिण वालु इक तमा, एक तमतमा जाय।।

हिवै पक थी तीन भागा। ते पंक घूम थी २, अनै पक तम थी १ — एवं तीन। पंक थी ६ विकल्प करि अठारै भागा हुवै। प्रथम पंक घूम थी २ भागा, ते ६ विकल्प करि कहै छै —

प्रथम विकल्प करि २ भागा—

- १०४. अथवा एक पंक एक धूमा, तीन तमा कहिवाय। अथवा एक पंक इक धूमा, तीन तमतमा मांय।। दूजी विकल्प करि २ भागा—
- १०५. अथवा एक पंक वे धूमा, दोय तमा दुखस्थान। अथवा एक पंक वे धूमा, दोय तमतमा जान।। तीर्ज विकल्प करि २ भांगा—
- १०६. अथवा दोय पंक इक धूमा, दोय तमा अघराण। अथवा दोय पक इक धूमा, दोय तमतमा वास। चडथै विकल्प करि २ भांगा—
- १०७. अथवा एक पंक त्रिण धूमा, एक तमा अवलोय। अथवा एक पंक त्रिण धूमा, एक तमतमा होय।। पांचवे विकल्प करि २ भागा—
- १०८. अथवा दोय पक वे धूमा, एक तमा दुखराश। अथवा दोय पक वे धूमा, एक तमतमा तास।। छठै विकल्प करि २ भागा—
- १०६ अथवा त्रिण पके इक धूमा, एक तमा में जंत। अथवा त्रिण पके इक धूमा, एक तमतमा हुंत।। हिवें पंक तम थी एक भागो ६ विकल्प करि कहै छै—
- ११० अथवा एक पक एक तमा, त्रिण तमतमा मांय। अथवा एक पक दोय तमा, दोय तमतमा पाय।।
- १११ अथवा दोय पक इक तमा, दोय तमतमा होय। अथवा एक पंक त्रिण तमा, एक तमतमा जोय।।
- ११२. अथवा दोय पक दोय तमा, एक तमतमा जंत।
  अथवा त्रिण पके इक तमा, एक तमतमा हुंत।।
  एवं पक थी ३ भागा, ते ६ विकल्प करि १८ भागा कहा।
  हिवे घूम थी एक भागो हुवै, ते ६ विकल्प करि कहै छै—

११३ अथवा एक धूम एक तमा, तीन तमतमा तेह।
अथवा एक धूम दोय तमा, दोय तमतमा लेह।।
११४. अथवा दोय धूम एक तमा, दोय तमतमा देख।
अथवा एक धूम त्रिण तमा, एक तमतमा लेख।।
११५ अथवा दोय धूम दोय तमा, एक तमतमा मांय।
अथवा त्रिण धूम एक तमा, एक तमतमा पाय।।

एवं पच जीव रा त्रिकसजोगिया रत्न थी ६०, सक्कर थी ६० वालुका थी ३६, पंक थी १८, घूम थी ६, एव सर्व २१० भागा कह्या।

११६. पनर रत्न थी सक्कर थी दश, षट वालु थी जगीस।
पंक थकी त्रिण धूम थकी इक, एवं भग पणतीस।।
११७. पंच जीव नां त्रिकसजोगिक, षट विकल्प करि एह।
दोयसौ नै दश भांगा दाख्या, निपुण विचारी लेह।।
हिवै पाच जीव नां त्रिकसयोगिया विकल्प

#### छप्यय

११८ एक एक नै तीन, प्रथम विकल्प पहिचानो।
एक दोय नै दोय, द्वितीय विकल्प दिल आनो।
दोय एक नै दोय, तृतीय विकल्प तहतीको।
एक तीन नै एक, तुर्य विकल्प ए नीको।
फुन दोय दोय नै एक, इम पचम एह प्रयोगिका।
त्रिण एक एक षष्टम कह्यूं, पंच जीव त्रिकयोगिका।

## पांच जीव रा त्रिकसंजोगिया तेहनां विकल्प छह भांगा दोय सौ दश।

रत्न थी १५, सक्कर थी १०, वालु थी ६, पंक थी ३, घूम थी १, एवं ३५ ते छह विकल्प कर दोय सौ दस भांगा हुवै।

एक-एक विकल्प नां रत्न थी १५ ते किसा ? रत्न सक्कर थी ५, रत्न वालु थी ४, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी २ रत्न तम थी १ एवं १५, छह विकल्प कर ६०। हिवं रत्न सक्कर थी पांच भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

		र	स	वा	प	घू	त	तम
१	१	8	१	Ą	0	0	0	0
२	२	ę	१	o	ñ?	٥	0	0
ą	fi <sup>2</sup>	१	8	o	0	₹	0	0
४	४	8	१	0	0	0	n <del>a</del>	0
ų	ų	१	१	٥	o	0	0	TQ.

११८ पञ्चाना च त्रित्वेन स्थापने पड् विकल्पास्तद्यर्था — एक एकस्त्रयश्च, एको हो हो च, हावेको हो च, एकस्त्रय एकश्चेत । (वृ० प० ४४४)

हिंद	हिचै रत्न सक्कर थी ५ भागा दूजै विकल्प करि कहै छै—							
		₹	स	वा	पं	घू	त	तम
Ę	१	8	२	२	0	0	0	0
૭	२	१	ર	0	ર	o	0	0
5	æ.	१	२	0	0	२	0	0
3	४	१	२	0	o	0	२	0
१०	ų	१	२	۰	0	o	0	२
हि	वै रतन	सक्कर	थो ५ व	मांगा तं	ोर्ज विव	क्लप कि	र कहें है	<u>;</u> —
११	१	२	१	२	•	0	o	o
१२	२	२	१	0	२	0	0	0
१३	34	२	१	0	0	२	0	o
१४	8	२	१	0	0	0	२	o
१५	Į ų	२	8	0	0	0	0	२
हिं	रत्न स	सक्तर ।	यी पांच	भांगा	चउघे ।	विकल्प	करि क	है छैं –
		र	स	वा	पं	घू	त	तम
१६	8	१	3	१	0	•		
१७	२	१	n.	•	1	•	0	0
<b>१</b> 5	३	8	N <sup>2</sup>	0	0	8	0	0
38	8	1 8	ş	0	0	0	1 8	0
२०	×	1	3,	0	0	0	0	१

हिवै	रत्न स	यकर यी	ነሂ ን	ागा पंर	वमे विव	त्य कि	र कहै।	<b>ż</b> —
		र	स	वा	पं	घू	त	तम
२१	१	₹	२	१	0	o	o	0
२२	२	٦	7	o	\$	o	0	0
२३	ą	२	२	0	0	\$	0	0
२४	8	२	२	0	0	0	१	0
२५	X	२	२	o	0	0	0	१
हिर्व	रत्न म	ावकर र्थ	रिश्म	ागा छ	ठै विक	ल्य करि	कहै छै	-,
२६	१	3).	१	१	٥	•	0	o
२७	7	Ð,	8	٥	१	0	٥	0
२६	ą	97	8	0	0	8	0	0
२६	8	ą	१	0	0	o	१	0
30	ય	2	१	0	0	0	o	१
1		कर थी त्रु थी						
₹ १	१	१ रतन	, १ व	ालुक, ३	पक			
३२	२	१ रत्न	, १ व	ालु ह, ३	घूम			
33	ą	१ दस्त	ा, १ व	ालुक,	तम			
३४	8	१ रत	ा, १ व	ालुक,	तमतम	ıT		
हिं	रत्न व	ालु थी	४ भांग	। दूजै वि	वेकरप	करिक	है छै—	
इंद	१	१ रतन	, २ व	ालुक, र	≀पंक			وخديسينيس
રફ	7	१ रतन	, २ व	ालुक, २	चूम			
३७	7	१रत	ा, २ व	ालुक, र	१ तम			
३८	٧	१ रहन	, २ व	ालुक, २	१ तमतग	ग		

हिवै	रत्न वा	लुथी ४ भागातीर्जविकल्प करिकहै छै —
38	१	२ रत्न, १ वालुक, २ पंक
४०	٦	२ रत्न, १ वालुक, २ घूम
४४	74	२ रत्न, १ वालुक, २ तम
४२	8	२ रत्न. १ वालुक, २ तमतमा
हिर्व	रत्न व	।लु थी ४ भांगा चौथे विकल्प करि कहै र्छ —
४३	१	१ रत्न, ३ वालुक, १ पंक
88	२	१ रत्न, ३ वालुक, १ धूम
४५	Ą	१ रत्न, ३ वालुक, १ तम
४६	४	१ रत्न, ३ वालुक १ तमतमा
हिवै	रत्न व	लु थी ४ भांगा पचमे विकल्प कर कहै छै
४७	१	२ रत्न, २ वालुक, १ पंक
४५	२	२ रत्न, २ वालुक, १ धूम
38	₹	२ रत्न, २ वालुक, १ तम
५०	४	२ रत्न, २ वालुक १ तमतमा
हिं	वे रत्न व	ालु थी ४ भागा छठे विकल्प करि कहै छी—
प्रश	8	३ रत्त, १ वालुक, १ पक
५२	२	३ रत्न, १ वालुक, १ धूम
Хś	₹	३ रत्न, १ वालुक, १ तम
५४	8	३ रत्न, १ वालुक, १ तमतमा
हि	वै रत्न	लुथी ४ भांगा ६ विकल्प केरि २४ भांगा कह्या। पक थी तीन भागा, ते छ विकल्प करि १८ भागा। रत्त पक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —
ধ্য	8	१ रत्न, १ पंक, ३ धूम
४६	२	१ रतन, १ पंक, ३ तम
५७	₹	१ रतन, १ पक, ३ तमतमा

हिवै	रत्न प	क थी ३ भागा दूजै विकल्प करि कहे छै —
ሂട	१	१ रत्न, २ पंक २ घूम
યુદ	२	१ रत्न. २ पंक, २ तम
६०	Ą	१ रत्न, २ पक, २ तमतमा
हिवै	रत्न प	किथी ३ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै —
६१	१	२ रत्न, १ पक, २ धूम
६२	२	२ रत्न, १ प क, २ तम
६३	æ	२ रत्न, १ पक, २ तमतमा
हिवै	रहन प	कं थी ३ भागा चउथे विकल्प करि कहै छै —
६४	ş	१ रत्न, ३ पक, १ घूम
६५	२	१ रत्न, ३ पक, १ तन
eg eg	H	१ रत्न, ३ पक, १तमतमा
हिवै	रत्न प	कथी ३ भागा पचमे विगल्प करि कहै छै—
६७	१	२ रत्न, २ पंक, १ धूम
६६	- २	२ रत्न, २ पक, १ तम
६९	¥	२ रत्न, २ पक, १ तमतमा
हिवं	रत्न प	किथी ३ भागा छठे विकल्प कर कहे छैं -
00	१	३ रत्न, १ पक, १ घूम
७१	२	३ रत्न, १ पक, १ तम
७२	Ą	३ रत्न, १ पक, १ तमतमा
ए र	रत्न पक	थी ३ भागा ६ विकल्प करि १८ भागा कह्या।
		म थी २ भागा ते छह विकल्प करि १२ भागा रत्न घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —
७३	१	१ रत्न, १ घूम, ३ तम
७४	२	१ रत्न, १ घूम, ३ त्मतमा

हिवै घूम रत्न थी २ भांगा दूजै विवल्प करि कहै छै	_
७५ १ १ रत्न, २ चूम, २ तम	
७६ २ १ रत्न, २ धूम, २ तमतमा	
हिवै रत्न घूम थी २ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै -	
७७ १ २ रहन, १ घूम, २ तम	
७८ २ २ रत्न, १ धून, २ तमतमा	and the second s
हिवै रत्न घूम थी २ भागा चज्ये विकल्प करि कहै छै -	
७६ १ १ रतन, ३ घूम, १ तम	
८० २ १ रत्न, ३ धूम, १ तमतमा	
हिर्द रत्न बूम थी २ भागा पचमे विकल्प करि कहै छै -	-
६१ १ २ रत्न, २ घूम, १ तम	
५२ २ २ रत्न, २ धूम १ तमतमा	
हिवै रत्न बूम थी २ भांगा छठै विकल्प करि कहै छै -	
८३ १ ३ रत्न, १ घूम, १ तम	
द४ २ ३ रत्न, १ बूम, १ तमतमा	
ए रत्न घूम थी २ भागा ६ विकल्प कर १२ भागा कह्या	
हिनै रत्न तम थी १ भागो ते ६ विकल्प करि ६ भागा तिहा रत्न तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे—	हुवै
६५ १ १ रत्न, १ तम, ३ तमतमा	
हिव रत्न तम थी १ भागो दूजे विकरप करि कहै छै	
६६ १ १ रतन, २ तम, २ तमतमा	
हिवै रत्न तम थी १ भागो तीजै विकल्प करि कहै छै -	
८७ १ २ रन्न, १ तम, २ तमतमा	
हिर्व रत्न तम थी १ भागो चउथे विकल्प करि कहै छै -	-
८८ १ १ रत्न, ३ तम, १ तमतमा	

हिर्व	रत्न	तम थी १ भागो पंचमे विकल्प करि कहै छै —					
<i>د</i> و	८६ १ २ रत्न, २ तम, १ तमतमा						
हिवै	रत्न	तम थी १ भागो छठै विकल्प करि कहै छै					
03	१	३ रत्न, १ तम, १ तमतमा					
		ी १५ भागा, एक-एक विकत्प नां हुर्व ते मार्ट ६ रे रत्न थी ६० भागा थया ।					
वालु थी	, थी ४ १, एव	थी एक-एक विकल्प ना १०-१० भागा ते सक्कर , सक्कर पंक थी ३, सक्कर घूम थी २, सक्कर तम । १० ते छ विकरप करि ६० भागा हुवै। तिहा पुथी ४ भागा प्रथम विकरप करकै कहै छै—					
83	1	१ सकर, १ वालुक, ३ पंक					
٤٦	२	१ सक्कर, १ बालुक, ३ घूम					
<i>§</i> 3	æ	१ सक्तर, १ वालुक, ३ तम					
83	8	१ सकर, १ वालुक, ३ तमतमा					
हिबै स	विकरः	वःलु थी ४ भागा दूजै विकल्प करि कहै छै —					
£%	१	१ सक्कर, २ वालुक, २ पंक					
६६	<b>ર</b>	१ सक्कर, २ वालुक, २ धूम					
७३	3	१ सकर, २ वालुक, २ तम					
23	४	१ मकर, २ यालुक, २ तनतना					
हिवै स	वकर व	ालु थी ४ मागा तीजे निकत्य करि कहै छै —					
33	8	२ सक्कर, १ वालुक, २ पक					
00	٦	२ सक्तर, १ वालुक, २ घूम					
१०१	3	२ सक्कर, १ वालुक, २ तम					
१०२	8	२ सक्कर, १ वालुक, २ तमतमा					

हिवै स	ाक्कर वा	लु थी च्यार भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै—
१०३	8	१ सक्कर, ३ वालुक, १ पक
१०४	١ ٦	१ सक्तर, ३ वालुक, १ घूम
१०५	3	१ सक्कर, ३ वालुक, १ तम
१०६	8	१ सक्कर, ३ वालुक, १ तमतमा
हिवै	सक्कर	वालु थी ४ भांगा पचमैं विकल्प करि कहै छै
१०७	1	२ सक्तर, २ वालुक, १ पक
१०५	٦	२ सक्कर, २ वालुक, १ धूम
308	३	२ सक्कर, २ वालुक, १ तम
११०	8	२ सक्कर, २ वालुक, १ तमतमा
हि	वै सक्कर	वालु थी ४ भागा छठै विकल्प करि कहै छै
<b>१</b> ११	१	३ सक्कर, १ वालुक, १ पक
११२	२	३ सक्कर, १ वालुक, १ घूम
११३	n n	३ सक्कर, १ वालुक, १ तम
११४	8	३ सक्कर, १ वालुक, १ तमतमा
ए	सक्कर	वालु थी ४ भागा ६ विकल्प करि २४ भागा कह्या।
		र पक थी ३ भागाते ६ विकल्प करि १८ भागा सक्कर पक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
११५	६   १	१ सक्कर, १ पक, ३ धूम
22	६ २	१ सक्कर, १ पक, ३ तम
११	७   ३	१ सक्कर, १ पक, ३ तमतमा
	हिवै स	कर'पक थी ३ भागा दूजै विकल्प करि कहै छै —
११	<b>দ</b>	१ सक्कर, २ पंक, २ घूम
११	8 3	१ सक्कर, २ पक, २ तम
१२	0	१ सक्कर, २ पक, २ तमतमा

हिवं	सक्कर	पंक थी ३ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै—
१२१	१	२ सक्कर, १ पक, २ घूम
१२२	२	२ सक्कर, १ पक, २ तम
१२३	ą	२ सक्कर, १ पंक, २ तमतमा
हिवं	सनक	र पंक थी ३ भागा चोथे विकल्प करि कहैं 🕏 —
१२४	2	१ सक्कर, ३ पंक, १ धूम
१२५	२	१ सक्कर, ३ पक, १ तम
१२६	Ą	१ सक्कर, ३ पंक, १ तमतमा
हिवै	सक्कर	पंक थी ३ भागा पचमे विकल्प करि कहै छै
१२७	ę	२ सक्कर, २ पंक, १ धूम
<b>१</b> २८	२	२ सक्कर, २ पक, १ तम
१२६	R	२ सक्कर, २ पक, १ तमतमा
हिर	ने सनक	र पंक थी ३ भागा छठे विकल्प करि कहै छै —
१३०	१	३ सक्कर, १ पक, १ धूम
१३१	२	३ सक्कर, १ पक, १ तम
१३२	ą	३ सक्कर, १ पक, १ तमतमा
हिव	सक्क	नक थी ३ भागा ६ विकल्प करि १८ भागा कह्या। र धूम थी २ भागा,ते छह विकल्प कर १२ भागा सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
१३३	१	१ सक्कर, १ घूम, ३ तम
१३४	7	१ सक्कर, १ धूम, ३ तमतमा
हि	वै सवक	र घूम थी २ भागा दुर्ज विकल्प करि कहै छै —
१३५	8	१ सक्कर, २ धूम, २ तम
१३६	२	१ सक्कर, २ घूम, २ तमतमा

***************************************		
हिंद	ी सबक	र धूम थी २ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —
१३७	8	२ मक्कर, १ घूम, २ तम
१३८	٦	२ मक्कर, १ धूम, २ तमतमा
हिर्द	रे सक्क	र घूम थी २ भागाचोथे वितरप करि कहै छै —
१३६	१	१ सक्कर, ३ धूम, १ तम
१४०	२	१ सवकर, ३ धून, १ तमतना
हिबै	सक्कर	घूम थी २ भागा पंचमे विकल्प करि कहै छै —
१४१	१	२ सक्कर, १ धूम १ तम
१४२	१	२ माकर, २ थूम, १ तमतमा
हिं	वैसका	र धूम थी २ भागा छठे विकल्प करि वहै छै
१४३	१	३ सक्कर, १ धूम, १ तम
१४४	٥,	३ सक्कर, १ धूम, १ तमतमा
ए स	क्कर ध	मुम थी २ भागा ६ विकत्प कर १२ भागा कहा।।
		र तम थी १ भागो ६ विकल्प करि ६ भागा हुवै रतम थी १ भागो प्रयम विकल्प करि कहै छैं –
१४५	१	१ सक्कर, १ तम, ३ तमतमा
हि	वै मक्क	र तम थी १ भागो दुजै विकरप करि कहे छै –
१४६	१	१ मनकर, २ तम, २ तमतया
हि	वै मक्त	र तम थी १ भागो तीजै विकल्प करि वहै छै –
१४७	१	२ सकर, १ तम, २ तमतमा
हि	वै मक्त	र तम थी १ मांगो चोथे विकरप करि कहै छै –
१४८	8	१ सक्कर, ३ तम, १ तमतमा
हिर्व	सिक्क	रतम थी १ भांगो पचमे विकल्प करिक है छै —
१४६	१	२ सक्कर, २ तम, १ तमतमा

f	हेर्बै मव	कर तम थी १ भागो छठै विकल्प करि कहै छै –					
१५०	8	३ सक्तर, १ तम, १ तमतमा					
हिबै पंक ते छ	ए सकर थी १० भांगा एक-एक विकल्प नां हुनै, ते माटै ६ विकल्प करि सक्कर थी ६० भागा थया। हिनै वालु थी इक-इक विकल्प ना छह-छह भागा हुनै ते वालु पंक थी ३, वालु घूम थी २, वालु तम थी १, एवं वालु थी ६ ते छ विकल्प करि ३६ भागा हुनै। तिहां वालु पंक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —						
१५१	१	१ वालुक, १ पक, ३ घूम					
१प्र२	२	१ वालुक, १ पक, ३ तम					
१५३	na-	१ वालुक, १ पक, ३ तमतमा					
हिवै	वानु	पक थी ३ भागा दूजे थिकल्प करि कहै छै					
१५४	8	१ वालुक, २ पंक, २ धूम					
१५५	२	१ वालुक २ पक, २ तम					
१५६	37.	१ वानु ह, २ पं क, २ तमतमा					
हिवै	वालु प	रक यी ३ भागा तीजै विकल्प करि कहै र्छ—					
१५७	8	२ वालुक, १ पक, २ घूम					
१४८	2	२ वालुक, १ पक, २ तम					
348	ą	२ वालुक, १ पक, २ तमतमा					
हिबै	वालु १	कियी ३ भागा चीये विकल्प करि कहै छै-					
१६०	8	१ वालुक, ३ पक, १ घूम					
१६१	2	१ वालुक, ३ पंक, १ तम					
१६२	3	१ वालुक, ३ पक, १ तमतमा					
हिवै	हिवै वालु पक थी ३ भागा पचमे विकल्प करि कहै छै -						
१६३	8	२ वालुक, २ पक, १ घूम					
१६४	२	२ वालु ह, २ पक, १ तम					
१६५	ą	२ वालुक, २ पंक, १ तमतमा					

हिवै	वालु प	कथी ३ भांगा छठै विकल्प करि कहै छै—
१६६	१	३ वालुक, १ पक, १ घूम
१६७	२	३ वालुक, १ पंक, १ तम
१६८	en-	३ वालुक, १ पंक, १ तमतमा
ए व	गलु पंव	वी तीन भागा ६ विकल्प करि १८ भांगा कह्या।
		यूम थी २ भागा, ते ६ विकल्प करि १२ भांगा हुवै । घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
१६६	१	१ वालुक, १ घूम, ३ तम
१७०	२	१ वालुक, १ घूम, ३ तमतमा
हिर्व	वालु	बूम थी २ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —
१७१	8	१ वालुक, २ घूम, २ तम
१७२	२	१ वालुक, २ घूम, २ तमतमा
हिं	वै वालु	घूम थी २ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —
१७३	१	२ वालुक, १ घूम, २ तम
१७४	२	२ वालुक, १ धूम, २ तमतमा
हि	वै वालु	धूम थी २ भांगा चौथे विकल्प करि कहै छै —
१७५	8	१ वालुक, ३ घूम, १ तम
१७६	२	१ वालुक, ३ घूम, १ तमतमा
हि	वै वाल्	धूम थी २ भांगा पचर्मे विकल्प करि कहै छै —
१७७	8	२ वालुक, २ धूम, १ तम
१७८	२	२ वालुक, २ धूम, १ तमतमा
fē	ह्वै वाल्	घूम थी २ भागा छठै विकल्प करि कहै छै—
१७६	. \ \ 8	३ वालुक, १ घूम, १ तम
१५०	7	३ वालुक, १ घूम, १ तमतमा
	(वालु	वूम थी २ भागा ६ विकल्प करि १२ भागा कह्या।

हिबै वालु तम थी १ भागो, ते,६ विकल्प करि ६ भांगा हुवै । तिहां प्रथम विकल्प करि कहै छै			
१८१	<b>?</b> -	१ वालुक, १ तम, ३ तमतमा	
हिवै	वालु व	तम थी १ भागो दूजै विकल्प करि कहै छै	
१=२	8	१ वालुक, २ तम, २ तमतमा	
हिवै	वालु त	ाम थी १ भागो तीजै विकल्प करि कहै छै—	
१८३	१	२ वालुक, १ तम, २ तमतमा	
हिवै	वालु त	ाम थी १ भांगो चोथे विकल्प करि कहै छै—	
१८४	१	१ वालुक, ३ तम, १ तमतमा	
हिवै	वालु त	ाम थी १ भागो पचमे विकल्प करि कहै छै —	
१८५	१	२ वालुक, २ तम, १ तमतमा	
हिवै	वालुक	, तम थी १ भागो छठै विकल्प करि कहै छै —	
१६६	१	३ वालुक, १ तम, १ तमतमा	
एव	वालु थ	ी ६ भांगा, ते ६ विकल्प करि ३६ भागा थया।	
थी भाग	हिनै पक थी ३ भागा, एक-एक विकल्प करिं हुनै, ते पक घूम थी २, पंक तम थी १ एव पक थी ३, छ विकल्प करि १८ भागा हुनै । तिहा पक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
१८७	8	१ पंक, १ धूम ३ तम	
१८८	२	.१ पक, १ धूम, ३ तमतमा	
हिवै	पक घृ	म थी २ भांगा दूजे विकल्प करि कहै छै—	
3=8	8	१ पंक, २ घूम, २ तम	
980	२	१ पंक, २ घूम, २ तमतमा	
हिनै पक घूम थी २ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै—			
१३१	१	२ पंक, १ घूम, २ तम	
१६२	२	२ पक, १ घूम, २ तमतमा	

हिवै	हियै पंक धूम थी २ भांगा चौथे विकल्प करि कहै छै—		
१९३	٤	१ पंक, ३ घूम, १ तम	
१६४	२	१ पंक, ३ धूम, १ तमतमा	
हिवै	पक धू	म थी २ भागा पचमे विकल्प करि कहै छै—	
१६५	१	२ पक, २ घूम, १ तम	
१६६	٦	२ पक, २ धूम, १ तमतमा	
हिवै	पक धू	म थी २ भागा छठै विकल्प करि कहै छै—	
१९७	१	३ पक, १ घूम, १ तम	
१६८	२	३ पंक, १ घूम, १ तमतमा	
एप	कथी	२ भागा ६ विकल्प करि १२ भोगा कह्या।	
		म थी १ भागो ते ६ विकल्प करि ६ भांगा हुवै। सम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै	
338	१	१ पक, १ तम, ३ तमतमा	
हिव	पिक त	म थी १ भांगो, ते दूजै विकल्प करि कहै छै—	
२००	8	१ पक, २ तम, २ तमतमा	
हिन	पंकत	म थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै—	
२०१	१	२ पंक, १ तम, २ तमतमा	
हिवै पक तम थी १ भागो चोथे विकल्प करि कहै छै			
२०२	१	१ पक, ३ तम, १ तमतमा	
हिर्वे पंक तम थी १ भागो पचमे विकल्प करि कहै छै—			
२०३	8	२ पक, २ तम, १तमतमा	
हि	हिवै पक तम थी १ भागो छठै विकल्प करि कहै छै		
२०४	8	३ पंक, १ तम,१ तमतमा	
एव पक थी ३ भागा छ विकल्प करि १८ भांगा थया।			

हि	हिये पूग थी १ भागो छ विकल्प करि कहै छै-		
२०५	१	१ घूम, १ तम, ३ तमतमा	
२०६	२	१ घूम, २ तम, २ तमतमा	
२०७	3	२ घृम, १ तम, २ तमतमा	
२०=	8	१ घूम, ३ तम, १ तमतमा	
308	ų	२ घूम, २ तम, १ तमतमा	
२१०	દ્	३ धूम, १ तम, १ तमतमा	
ų v	ए घूम थी १ भांगी ६ विकल्प करि ६ भांगा कह्या।		
एव पांच जीय ना त्रिकसयोगिया नां विकल्प ६, एक-एक विकल्प नां भागा पैतीस-पेतीस । रत्न थी १५, सकार थी १०, पालुक थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—एव ३५, ते ६ विकल्प करि २१० भागा कह्या । ते छहुं विकल्प नां रत्न थी ६०, सकार थी ६०,			

वालुक थी ३६, पक घी १८, घूम घी ६ - एवं गवं २१० भागा।

११६ नवमें गतक इकतीसम देशज, इकसौ अठंतरमी ढाल। भिक्षु भारिमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' संपति माल।

#### दूहा

१.पंच जीव नां हिव कहूं, चौक संयोगिक चग। चिंह विकल्प करि तेहनां, इकसौ चालीस भग।।

बा०—हिवै पांच जीव नां चलकसंजीगिक, तेहना विकल्प ४, भागा १४०। एक-एक विकल्प ना पैतीस-पैतीस भागा हुवै, ते माटै च्यार विकल्प ना १४० हुवै। एक विकल्प ना रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पंक थी १—एव पैतीस भागा हुवै। रत्न थी २० ते किसा ? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ६, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी १—एव रत्न थी एक-एक विकल्प ना २० भागा हुवै। रत्न सक्कर थी १० ते किसा ? रत्न सक्कर वालुक थी ४, रत्न सक्कर पक ३, रत्न सक्कर धूम थकी २, रत्न सक्कर तम थकी १ —एवं एक-एक विकल्प ना १० भागा हुवै। तिहा रत्न सक्कर वालु थकी ४ भागा प्रथम विकल्प कर कहै छै—

# \*श्री जिन भाखै सुण गंगेया ! [ध्रुपदं]

- २ अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालु अवलोय जी।
  पक विषे वे जीव ऊपजै, ए धुर भागो होय जी।
  ३. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुक उपजंत।
  धूमप्रभा में दोय ऊपजै, दूजो भांगो हुंत।।
  ४. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका मांय।
  छट्ठी नरक वे जीव ऊपजै, तृतीय भग कहाय।।
  ५. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुक पहिछाण।
  नरक सातमी दोय ऊपजै, चोथो भांगो जाण।।
  हिवै रत्न सक्कर वालु थकी दूजै विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीजी नरके दोय। पंक विषे इक जीव ऊपजै, पंचम भंगो होय॥
- ७. अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीजी नरके दोय। धूमप्रभा में एक ऊपजै, छट्टो भागो सोय।।
- झ्यवा एक रत्न इक सक्कर, वालुप्रभा में दोय।
   छट्ठी नरके एक उपजता, सप्तम भांगो सोय।
- ६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, वालुप्रभा में दोय। नरक सप्तमी इक उपजतां, अष्टम भंग अवलोय।। हिनै रत्न सक्कर वालुक थकी तीजै विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- १० अथवा एक रत्न वे सक्कर, वालुक माहे एक। एक पंक ने विषे ऊपजै, नवमो भंगो देख।
- ११. अथवा एक रत्न वे सक्कर, वालुक मांहे एक। धूमप्रभा मे एक ऊपजें, दशमो भंग विशेख।।

- २. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालु-यप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा
- ३-५. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

 ६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तसकरप्पभाए दो वालु-यप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा
 ७-६ एवं जाव अहेसत्तमाए।

- १०. अहवा एने रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एने वालु-यप्पभाए एने पंकप्पभाए होज्जा
- ११-१३. एव जाव सहवा एगे रयणप्पभाए दो मनकरप्प-भाए एगे वालुयप्पभाए एगे बहेमत्तमाए होज्जा।

चतुष्कसयोगे तु सप्ताना पञ्चित्रमिद्दिकल्पाः, पञ्चाना चतुराशितया स्थापने चत्वारो विकल्पास्तद्यया— तदेव पञ्चित्रमित्रभ्चतुर्भिर्गुणने चत्वारिशदिधक रात भवतीति । (वृ०प० ४४४)

<sup>&</sup>lt;sup>१</sup>लप: साघु म जाणो इण चलगत सूं

- १२. अथवा एक रत्न वे सक्कर, वालुक मांहे एक । नरक छट्टी मे एक ऊपजै, भंग ग्यारमी लेख॥
- १३. अथवा एक रत्न वे सक्कर, वालुक मांहे एक।
  एक सप्तमी नरक ऊपजै, द्वादणमो भंग देख।।
  हिवै रत्न सक्कर वालुक घकी घोवै विकल्प करि ४ भांगा कहै छै-
- १४. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक वालुक अवलोय। पंकप्रभा में एक ऊपजै, तेरसमीं भग होय॥
- १५. अथवा दोय रत्न इक सबकर, एक वालुक अवलोय। धूमप्रभा में एक ऊपजै, चवदणमों भंग जोय।।
- १६. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक वालुक अवलोय। छठी नरक में एक ऊपजै, भग पनरमों सोय॥
- १७. अथवा दोय रत्न उक सवकर, एक वालु अवलोय।

  एक सातमी नरक ऊपजै, भंग मोलमा होय॥

  हिवै रत्न मक्कर पक यकी तीन भागा, ते च्यार विकल्प करि बारै
  भागा। तिहा प्रथम विकत्प करि ३ भागा कहै छै—
- १८. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक पक वे धूम। अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक पंक वे तम ब्रूम।।
- १६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक पंक सप्तमी दोय। रत्न सक्कर ने पंक थकी त्रिण, पहिले विकल्प होय।। हिवै रत्न मक्कर पक थकी दूजै विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
- २०. अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय पंक इक धूम। अथवा एक रत्न इक सक्कर, वे पंक इक तम बूम।
- २१. अथवा एक रत्न इक सक्कर, वे पंक सप्तमी एक।
  रत्न सक्कर ने पक थकी त्रिण, वीजे विकल्प देख।।
  हिवै रत्न सक्कर पंक थकी तीजे विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
- २२. अथवा एक रत्न वे सक्तर, एक पंक इक धूम। अथवा एक रत्न वे सक्तर, इक पंक इक तम त्रूम।
- २३. अथवा एक रत्न वे सक्कर, इक पंक सप्तमी एक। रत्न सक्कर ने पक थकी त्रिण, तीजे विकल्प नेरा॥ हिवै रत्न सक्कर पक थकी चौषे विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—
- २४. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक पक इक धूम। अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक पंक इक तम बूम।
- २५. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक पंक सप्तमी एक।
  रत्न सक्कर ने पंक थकी त्रिण, चोथे विकल्प पेख ॥
  ए रत्न सक्कर पंक थकी ३ भांगा हुवै। ते च्यार विकल्प करि १२' भागा
  कहा। हिवै रत्न मक्कर ने घूम थकी दोय भागा च्यार विकल्प करि =
  भागा कहै छै—

प्रथम विकल्प करि २ भागा कहै छै-

२६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक धूम वे तम होय। अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक धूम सप्तमी दोय॥

- १४. ब्रह्मा दी रयणप्नाए एमे मनकरण्यनाए एमे वानु-यणभाए एमे पक्षभाए होज्जा
- १५-१७. जाव अहवा दी रयणप्यमाए एगे मनकरणभाए एगे वानुयप्यभाए एगे अहेमत्तनाए होज्या ।

- १८. सहया एवे रयणप्य माए एवं नवकरप्य माए एवे पंक-प्यभाए दो धूमणभाए होज्जा
- ६६-१०५ एव जहा चड्य चड्यक्ताजोगो भणियो तहा पंचण्ह वि चड्यक्यजोगो भाणियच्यो नवरं—अव्य-हियं एगो मंचारेयच्यो, एवं जाव अह्या दो पंगप्पभाए एगे ध्मणभाए एगे तमाए एगे अहेमत्तमाए होज्या।

- दूजै विकल्प करि २ भांगा कहै छै-
- २७. अथवा एक रत्न इक सक्कर, बे धूम इक तम पेख। अथवा एक रत्न इक सक्कर, बे धूम सप्तमी एक।। तीज विकल्प करि २ भांगा कहै छै—
- २८. अथवा एक रत्न बे सक्कर, इक घूम इक तम देख। अथवा एक रत्न वे सक्कर, इक घूम सप्तमी एक।। चौथे विकल्प करि २ भांगा कहै छैं—
- २६. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक धूम इक तम पेख ।
  अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक धूम सप्तमी एक ।।
  ए रत्न सक्कर धूम नां दोय भांगा, च्यार विकल्प करि द भांगा कहाा।
  हिवै रत्न सक्कर तम थकी एक भागो ४ विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ३०. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक तम सप्तमी दोय। रत्न सक्कर ने तमा थकी ए, पहिलै विकल्प जोय।
- ३१. अथवा एक रत्न इक सक्कर, वेतम सप्तमी एक। रत्न सक्कर ने तमाथकी ए, दूजै विकल्प देख।।
- ३२. अथवा एक रत्न वे सक्कर, इक तम सप्तमी एक ॥ रत्न सक्कर ने तमा थकी ए, तीजै विकल्प लेख ॥
- ३३. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक तम सप्तमी एक ।
  रत्न सक्कर ने तमा थकी ए, चोथे विकल्प पेख ।।
  ए रत्न सक्कर तम थकी १ भागो च्यार विकल्प करि ४ भागा कहा। ।
  एव रत्न सक्कर थकी १० भागा च्यार विकल्प करि ४० भागा कहा। ।
  वा०—हिर्व रत्न वालु थकी छ भागा हुवै, ते किसा ? रत्न वालु पक थकी
  ३, रत्न वालू धूम थकी २, रत्न वालू तम थकी १ एव —रत्न वालू थकी ६,
  ते ४ विकल्प करि चउवीस भागा हुवै। तिहा रत्न वालु पक थकी ३ भागा
  प्रथम विकल्प करि कहै छै—
- ३४. अथवा एक रत्न इक वालुक, एक पंक वे धूम।
  अथवा एक रत्न इक वालुक, एक पंक वे तम बूम।।
  ४५ अथवा एक रत्न इक वालुक, इक पंक सप्तमी दोय।
  रत्न वालुका पंक थकी त्रिण, धुर विकल्प ए होय।।
  - दूजै विकल्प करि ३ भागा कहै छै —
- ३६. अथवा एक रत्न इक वालुक, दोय पक इक धूम। अथवा एक रत्न इक वालुक, वे पंक इक तम बूम।।
- ३७. अथवा एक रत्न इक वालुक, वे पक सप्तमी एक। रत्न वालुक ने पंक थवी त्रिण, दूजै विकल्प देख।। तीर्ज विकल्प करि ३ भागा कहै छैं—
- ३८. अथवा एक रत्न बे वालुक, एक पक इक धूम। अथवा एक रत्न वे बालुक, इक पक इक तम बूम।।
- ३६. अथवा एक रत्न वे वालुक, इक पंक सप्तमी एक। रत्न वालुक ने पक थकी त्रिण, तीज विकल्प लेख।

## चोथे विकल्प करि ३ भांगा कहै छै-

- ४०. अथवा दोय रत्न इक वालुक, एक पंक एक धूम। अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक पंक इक तम न्नूम।।
- ४१. अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक पंक सप्तमी एक।
  रत्न वालुक नैं पंक थकी त्रिण, चोथै विकल्प लेख।।
  हिवै रत्न वालुक नै धूम थकी २ भागा ४ विकल्प करि आठ भागा करै
  छै। प्रथम विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ४२ अथवा एक रत्न इक वालुक, इक धूम वे तम होय। अथवा एक रत्न इक वालुक, इक धूम सप्तमी दोय।। दूर्ज विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ४३ अथवा एक रत्न इक वालुक, वे घूम इक तम पेख। अथवा एक रत्न इक वालुक, वे घूम सप्नमो एक। तीज विकरप करि २ भागा कहै छै—
- ४४. अथवा एक रत्न वे वालुक, इक घूम इक तम पेख। अथवा एक रत्न वे वालुक, इक घूम सप्तमी एक।। चौथे विकल्प करि २ भागा कहै छै-
- ४५. अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक घूम इक तम पेख।
  अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक घूम सप्तमी एक।।
  ए रत्न वालुक घूम थकी २ भांगा ४ विकत्प करि आठ भागा कहा।
  हिवै रत्न वालुक तमा थकी १ भागो हुवै, ते ४ विकत्प वरि ४ भांगा कहै छै—
- ४६ अथवा एक रत्न इक वालुक, इक तम सप्तमी दोय। रत्न वालुक ने तमा थकी ए, पहिले विकल्प होय।
- ४७. अथवा एक रत्न इक वालुक, वे तम सप्तमी एक। रत्न वालुका तमा थकी ए, दूजै विकल्प पेख।।
- ४८. अथवा एक रत्न वे वालुक, इक तम सप्तमी एक। रत्न वालुका तमा थकी ए, तीजै विकल्प लेख।।
- ४६. अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक तम सप्तमी एक। रत्न वालुका तमा थकी ए, चोथै विकल्प देख।।

ए रत्न वालुक तम थकी एक भांगो हुवै ते च्यार विकल्प करि ४ मागा कहा। एव रत्न वालुक थकी छ भागा हुवै, ते ४ विकल्प करि २४ भागा कहा। वा०—हिवै रत्न पक थकी तीन भागा हुवै ते किसा? रत्न पक धूम थकी २ भागा, रत्न पक तम थकी १ भागो, एव रत्न पंक थकी ३ भागा हुवै। ते च्यार विकल्प करि १२ भागा कहै छै। तिणमे प्रथम रत्न पक धूम थकी २ भागा च्यार विकल्प करि हुवै, ते कहै छै—

- ५०. अथवा एक रत्न इक पके, इक धूम वे तम होय। अथवा एक रत्न इक पंके, इक धूम सप्तमी दोय।। दूजे विकल्प करि २ भांगा कहै छै—
- ५१ अथवा एक रत्न इक पंके, वे धूम इक तम पेखा अथवा एक रत्न इक पके, वे धूम सप्तमी एक।।

तीज विकल्प करि २ भांगा कहै छै-

५२. अथवा एक रत्न बे पंके, इक धूम इक तम पेख। अथवा एक रत्न वे पके, इक धूम सप्तमी एक।। चौथे विकल्प करि २ भागा कहैं छैं—

५३. अथवा दोय रत्न इक पंके, इक धूम इक तम पेख।
अथवा दोय रत्न इक पके, इक धूम सप्तमी एक ॥
ए रत्न पक नै धूम यकी वे भागा ४ विकल्प करि = भागा कहा।
हिवै रत्न पक तम यकी एक भागो, ४ विकल्प करि च्यार भांगा कहै छै—

५४. अथवा एक रत्न इक पंके, इक तम सप्तमी दोय। रत्न पक नै तमा थकी ए, पहिलै विकल्प होय॥

५५. अथवा एक रत्न इक पके, बे तम सप्तमी एक। रत्न पक नै तमा थकी ए, दूजै विकल्प देखा।

५६. अथवा एक रत्न वे पके, इक तम सप्तमी एक। रत्न पक ने तमा थकी ए, तीजै विकल्प पेख।।

५७. अथवा दोय रत्न इक पंके, इक तम सप्तमी एक।

रत्न पंक ने तमा थकी ए, चोथै विकल्प लेख।।

ए रत्न पक तम थकी एक भागो ४ विकल्प करि कह्यो। एव रत्न पंक थकी

तीन भागा ४ विकल्प करि १२ भागा कह्या।

हिवै रत्न घूम थी १ भागो ४ विकल्प करि कहै छै —

५८ अथवा एक रत्न इक धूमा, इक तम सप्तमी दोय। रत्न धूम थकी एक भांगो, पहिलै विकल्प होय॥

५६. अथवा एक रत्न इक धूमा, वे तम सप्तमी एक। रत्न धूम थी ए इक भांगी, दुजै विकल्प देख।।

६०. अथवा एक रत्न वे धूमा, इक तम सप्तमी एक। रत्न धूम थी ए इक भांगो, तीजै विकल्प पेखा।

६१. अथवा दोय रत्न इक धूमा, इक तम सप्तमी एक । 💛 रत्न धूम थी ए इक भागो, चोथै विकल्प लेख ॥ 😭

ए रतन घूम थी १ भागो च्यार विकल्प करि ४ भागा कहा। एवं रतन थी २० भागा च्यार विकल्प करि ५० भागा थया।

हिवै सक्कर थी १० भागा एक-एक विकल्प ना हुवै ते किसा ? सक्कर वालु थी ६, सक्कर पंक थी ३, सक्कर घूम थी १ एव १० भागा सक्कर थी हुवै। सक्कर वालु थी ६ ते किसा ? सक्कर वालु पक थी ३, सक्कर वालु घूम थी २ सक्कर वालु तम थी १, एव ६ भागा सक्कर वालु थी एक-एक विकल्प ना हुवै। तिहा सक्कर वालु पक थी तीन भागा प्रथम विकल्प किर कहै छै—

६२. अथवा एक सक्कर इक वालुक, एक पक वे धूम। अथवा इक सक्कर इक वालुक, इक पंक वे तम ब्रम।।

६४ अथवा इक सक्कर इक वालुक, दोय पंक इक धूम। अथवा इक सक्कर इक वालुक वे पक इक तम ब्रूम।

- ६५. अथवा इक सक्कर इक वालुक, वे पंक सप्तमी एक। सक्कर वालुका पंक थकी त्रिण, दूजै विकल्प देख।।
- ६६. अथवा इक सक्कर वे वालुक, एक पंक इक धूम। अथवा इक सक्कर वे वालुक, इक पंक इक तम बूम।
- ६७. अथवा इक सक्कर वे वालुक, इक पक सप्तमी एक । सक्कर वालुक ने पंक थकी त्रिण, तीजै विकल्प पेख ।।
- ६ द अथवा वे सक्कर इक वालुक, एक पंक इक धूम। अथवा वे सक्कर इक वालुक, इक पंक इक तम ब्रूम।।
- ६६ अथवा वे सक्कर इक वालुक, इक पंक सप्तमी एक ।
  सक्कर वालुका पक थकी त्रिण, चोथ विकल्प लेख ।।
  ए सक्कर वालुक पक थी ३ भांगा ४ विकल्प करि १२ भांगा कहा।
  हिवै सक्कर वालुक घूम थी २ भांगा ४ विकल्प करि आठ मागा हुवै, ते कहै
- ७०. अथवा इक सक्कर इक वालुक, इक धूम बे तम होय। अथवा इक सक्कर इक वालुक, इक तम सप्तमी दोय।। दूजै विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ७१ अथवा इक सक्कर इक वालुक, वे धूम इक तम पेख। अथवा इक सक्कर इक वालुक, वे तम सप्तमी एक।। तीजै विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ७२. अथवा इक सक्कर बे वालुक, इक धूम इक तम पेख। अथवा इक सक्कर वे वालुक, इक तम सप्तमी एक ॥ चौथे विकल्प करि २ भांगा कहै छै—
- ७३. अथवा वे सक्कर इक वालुक, इक धूम इक तम लेख।
  अथवा वे सक्कर इक वालुक, इक धूम सप्तमी एक।।
  ए सक्कर वालु धूम धकी २ भांगा ४ विकल्प करि ५ भागा कह्या।
  हिवै सक्कर वालु तम थी १ भागो ४ विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ७४ अथवा इक सक्कर इक वालुक, इक तम सप्तमी दोय। सक्कर वालुक ने तमा थकी ए, पहिले विकल्प होय॥
- ७५ अथवा इक सक्कर इक वालुक, बे तम सप्तमी एक। सक्कर वालुका तमा थकी ए, दूजै विकल्प देख॥
- ७६. अथवा इक सक्कर वे वालुक, इक तम सप्तमी एक। सक्कर वालुका तमा थकी ए, तीजै विकल्प लेख।।
- ७७. अथवा वे सक्कर इक वालुक, इक तम सप्तमो एक। सक्कर वालुका तमा थकी ए, चोथै विकल्प पेख।।

हिवै सक्कर पंक थकी तीन भांगा एक-एक विकल्प ना हुवै, ते किसा? सक्कर पंक घूम थकी २, सक्कर पंक तम थकी १, एव ३। सक्कर पंक धकी ४ विकल्प नां १२ भागा हुवै, ते कहै छै—

७८. अथवा इक सक्कर इक पंके, इक धूम बे तम होय।। अथवा इक सक्कर इक पके, इक धूम सप्तमी दोय। ७१. अथवा इक सक्कर इक पंके, वे धूम इक तम पेख। अथवा इक सक्कर इक पंके, वे धूम सप्नमी एक।।

द०. अथवा इक सक्कर वे पंके, इक धूम इक तम पेख। अथवा इक सक्कर वे पके, इक धूम सप्तमी एक।।

दश्. अथवा वे सक्कर इक पंके, इक धूम इक तम पेख। अथवा वे सक्कर इक पंके, इक तम सप्तमी एक।।

हिवै सक्कर पंक तम थकी १ भांगो ४ विकल्प करि कहै छै-

दर. अथवा इक सक्कर इक पंके, इक तम सप्तमी दोय। सक्कर पंक नैं तमा थकी ए, पहिलै विकल्प होय॥

इ. अथवा इक सक्कर इक पंके, वे तम सप्तमी एक ।।
 सक्कर पंक नें तमा थकी ए, दूजे विकल्प देख ।।

प्तर. अथवा इक सक्कर वे पंके, इक तम सप्तमी एक। सक्कर पक ने तमा थकी ए, तीजे विकल्प पेखा।

प्र अथवा वे सक्कर इक पंके, इक तम सप्तमी एक। सक्कर पक नै तमा थकी ए, चोथै विकल्प लेख।।

हिवै सक्कर घूम तम थकी चिउं विकल्प करि ४ भांगा कहै छै-

८६. अथवा इक सक्कर इक घूमा, इक तम सप्तमी दोय। सक्कर घूम थकी ए भांगो, पहिलै विकल्प होय॥

५७ अथवा इक सक्कर इक धूमा, वे तम सप्तमी एक । सक्कर धूम थकी ए भागो, दूर्ज विकल्प देख।

६८. अथवा इक सक्कर वे धूमा, इक तम सप्तमी एक ॥ सक्कर धूम ए भागो, तीजै विकल्प पेख॥

प्रश्नित व सक्तर इक धूमा, इक तम सप्तमी एक। सक्तर धूम थकी ए भांगो, चोथै विकल्प लेख।।

हिवै वालु थकी एक-एक विकल्प ना च्यार-च्यार भागा हुवै, ते किसा? वालु पक थकी ३, वालु घूम थकी १, एव वालु थकी ४ भागा। वालु पंक थकी ३, ते किसा? वालु पक घूम थकी २, वालु पंक तम थकी १, एवं वालु पक थकी ३ भागा। तिहां प्रथम वालु पंक घूम थकी २ भागा ४ विकल्प करि आठ भागा कहै छ—

६०. अथवा इक वालुक इक पंके, इक धूम वे तम होय। अथवा इक वालुक इक पंके, इक धूम सप्तमी दोय।।

६१. अथवा इक वालु इक पंके, वे घूम इक तम पेखा। अथवा इक वालु इक पंके, वे घूम सप्तमीं एक ॥

६२. अथवा इक वालुक वे पंके, इक धूम इक तम पेख। अथवा इक वालुक वे पंके, इक तम सप्तमी एक।।

६३. अथवा बे वालुक इक पंके, इक धूम इक तम देख। अथवा वे वालुक इक पके, इक तम सप्तमी एक ॥ हिवे वालु पंक नै तमा धकी एक भांगो ४ विकल्प करि कहै छै —

६४. अथवा इक वालुक इक पंके, इक तम सप्तमीं दोय। वालु पंक नै तमा थकी ए, पहिले विकल्प होय।।

ey. अथवा इक वालुक इक पंके, वे तम सप्तमी एक ।। ँ वालुक पंक ने तमा थकी ए, दूजै विकल्प देख। ६६. अथवा इक वालुक वे पके, इक तम सप्तमी एक । वालुक पंक ने तमा थकी ए, तीजै विकल्प देख।। ९७. अथवा वे वालुक इक पंके, इक तम सप्तमी एक । वालु पंक नै तमा थकी ए, चोथै विकल्प लेख।। हिवै वालुक घूम थकी एक भागो ४ विकल्प करि ४ भागा कहै छै--६८. अथवा इक वालुक इक धूमा, इक तम सप्तमी दोय। वालु धूम थकी ए भागों, पहिले विकल्प होय।। ६६. अथवा इक वालु इक धूमा, वेतम सप्तमी एक । वालुक घूम थकी ए भागो, दूजै विकल्प देख।।, . -१०० अथवा इक वालुक वे धूमा, इक तम सप्तमी एक। वालुक धूम थकी ए भांगो, तीजै विकल्प पेख।।। १०१ अथवा वे वालुक इक धूमा, इक तम सप्तमी एक। वालु घूम थकी ए भांगो, चोथै विकल्प लेख।। हिवै पक थी एक भागो ४ विकल्प करि कहै छै-१०२. अथवा इक पके इक धूमा, इक तम सप्तमी दोय। पक नरक थी ए इक भांगो, पहिलै विकल्प होय।। १०३. अथवा इक पके इक धूमा, वे तम सप्तमी एक।। पंक नरक थी ए इक भांगो, दूजै विकल्प देख।। १०४. अथवा इक पके वे धूमा, इक तम सप्तमी एक।। पंक नरक थी ए इक भांगो, तीजै विकल्प लेख।। १०५ अथवा वे पके इक धूमा, इक तम सप्तमी एक। पंक नरक थी ए इक भांगो, चोथै विकल्प पेखा। एवं पंक थकी एक भागो ४ विकल्प करि ४ भागा कह्या। एवं रत्ने थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पंक थी १, एवं ३५ एक विकल्प ना हुवै, ते

#### दूह

१०६. एक एक फुन एक वे, ए धुर विकल्प जोय।
एक एक विल दोय इक, दूजै विकल्प होय।।
१०७. एक दोय ने एक इक, विकल्प तृतीय विशेख।।
दोय एक फुन एक एक, विकल्प तुर्यं सपेख।।
१०८. \*नवम शतक नो देश वतीसम, सौ गुणयासीमी ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, 'जय-जश' मगलमाल।।

च्यार विकल्प नां १४० पाच जीव ना च्यार संजोगिया भागा थया ।

\*लयः साधु म जाणो इण चल गत सूं

१. पाच जीवा रा चलकसजोगिया ४ विकल्प ---

१, १, १, २ प्रथम विकल्प।

१, १, २, १ द्वितीय विकल्प।

१, २, १, १ तृतीय विकल्प।

२, १, १, १ तुर्य विकल्प ।

पंच जीव नां चउकसयोगिक नां विकल्प च्यार। एक-एक विकल्प नां पैतीस-पैतीस भागा हुवै। च्यारूं विकल्प नां १४०। तिहां रत्न थी २०, मक्कर थी १०, दालुक थी ४, पंक थी १, एवं पैतीस एक-एक विकल्प ना हुवै। रत्न थी २०, ते किसा ? रत्न सनकर थी १०, रत्न वालु थी ६, रत्न पक थी ३, रत्न धूम थी १, एवं रत्न थी २०। रत्न सक्कर थी दश, ते किसा? रतन सक्कर वालु थी ४, रतन सक्कर पंक थी ३, रत्न सक्कर घूम थी २, रत्न सक्कर तम थी १, एवं रत्न सक्कर थी १० एक एक विकल्म ना हुवै। तिहा रत्न सक्कर वालु थी ४ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै-

१	१	१ रत्न, १ सक्तर, १ वालुक, २ पक
२	2	१ रत्न, १ सक्तर, १ वालुक, २ धूम
m	JA'	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ तम
४	४	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ सातभी

हिवै रत्न सक्कर वालुक थी ४ भागा दूजे विकल्प करि कहै ক্তী---

ሂ	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पंक
Ę	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ घूम
b	₹	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ तम
5	४	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ सातमी
हिनै रत्न सक्कर वालुक थी ४ भागा तीजै विकल्प करि कहै		

		ভ —
3	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पक
१०	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ धूम
१०	ĵŋ.	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ तम
१२	٧	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ सातमी

हिट	रै रहन <sup>र</sup>	सक्कर वालुक थी ४ <b>भांगा चौथे</b> विकल्प करि वहै छै—	
१३	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक	
१४	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ घूम	
१५	Ð,	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ तम	
<b>१</b> ६	8	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ सातमी	
		क्तर वालु थी ४ विकत्प करि १६ भागा कह्या। सक्कर पक थी ४ विकल्प करि ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छैं—	
<b>१</b> ७	१	१ रत्न, १ स∓कर, १ पंक, २ धूम	
१८	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ पक, २ तम	
33	m	१ रत्न, १ सक्कर, १ पक २ सातमी	
हिवै	रत्न स	विकर पक थी दूजै विकल्प करि ३ भांगा कहै छै —	
२०	१	१ रत्न, १ सक्तर, २ पंक, १ धूम	
२१	२	१ रत्न, १ सक्तर, २ पंक, १ तम	
77	m	१ रत्न, १ सनकर, २ पक १ सातमी	
हिवै	रत्न सव	कर पक थी ३ भागातीजै विकल्प करि कहै छै —	
२३	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ पक, १ धूम	
२४	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ पक, १ तम	
२५	₹	१ रत्न, २ सक्कर, १ पक, १ सातमी	
हिवै	हिवै रत्न सक्कर पक थी ३ भागा चौथे विकल्प करि कहै छै		
२३	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ घूम	
२७	२	२ रत्न, १ सक्कर, १पक, १ तम	
२६	3	२ रतन, १ सक र, १ पक, १ सातमी	
ए	रत्न सव	कर पंक यी ३ भागा ४ विकल्प करि १२ भागा कह्या।	

हिर्दे रत्न सक्कर घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —			
२६	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ घूम, २ तम	
३०	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ घूम, २ सातमी	
हिवै र	त्न सक	कर घूम थी २ भागा दूजै विकल्प करि कहै छै —	
₹ १	१	१ रत्न, १ सनकर, २ घूम, १ तम	
३२	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, १ सातमी	
हिवै	रत्न स	क्कर घूम थी २ भागा तीजै विकल्प वरिकहै छै—	
३३	१	१ रतन, २ सक्तर, १ घूम, १ तम	
₹8	ર	१ रत्न, २ सक्कर, १ घूम, १ सातमी	
हिवै	रत्न	सक्कर घूम थी २ भागाचोथै विकल्प करिकहै छै—	
३५	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ घूम, १ तम	
३६	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, १ सातमी	
ł	-	सनकर घूम थी ४ विकल्प करि ८ मागा कह्या। करतम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करिकहै र्छं—	
३७	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ तम, २ सातमी	
हिवै	रत्न स	वकर तम थी १ भागो दूजै विकल्प करि कहै छै —	
३८	8	१ रत्न, १ सक्कर, २ तम, १ सातमी	
हिबै	रत्न र	तक्कर तम थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै —	
38	8	१ रत्न, २ सक्कर, १ तम, १ सातमी	
हिवै	रत्न	सक्कर तम थी १ भागो चोर्यं विकल्प करि कहै छै —	
४०	8	२ रत्न, १ सनकर, १ तम, १ सातमी	
	ए रत्न सक्कर तम थी १ भागो च्यार विकल्प करि ४ भागा कह्या। एव रत्न सक्कर थी १० भागा ४ विकल्प करि ४० भागा थया।		

	रत्न वालु थी ६ भागा, ते किसा ? रत्न वालु पक थी ३,	
रत्न वालु घूम थी २, रत्न वालु तम थी १, एवं ६। हिवै रत्न वालुक पक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै		
	छै—	
४१	१ १ रत्न, १ वालुक, १ पक, २ घूम	
४२	२ । १ रत्न, १ वालुक, १ पक, २ तम	
४३	३   १ रत्न १ वालुक, १ पक, २ सातमी	
हिवै	रत्न वालुक पंक थी ३ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै—	
88	१   १ रत्न, १ बालुक २ पक, १ धूम	
४५	२ १ रतन, १ वालुक, २ पंक, १ तम	
४६	३   १ रत्न, १ वालुक, २ पंक, १ सातमी	
हिवै रत	त्न वालुक पक थी ३ मागातीजै विकल्प करि कहै छै —	
४७	१   १ रत्न, २ वालुक, १ पक, १ धूम	
४६	२ १ रत्न, २ वालुक, १ पक, १ तम	
38	३   १ रत्न, २ वालुक, १ पक, १ सातमी	
हिवे रत	त्न वालुक पक थी ३ भागा चोयै विकल्प करि कहै छै	
५०	१  २ रत्न, १ वालुक, १ पंक, १ घूम	
५१	२ २ रत्न, १ वालुक, १ पक, १ तम	
प्रर	३ २ रत्न, १ वालुक, १ पंक, १ सातमी	
	रत्न वालुक पक थी ४विकल्प करि १२ भांगा कह्या। रत्न वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहे	
	\$—	
५३	१ / १ रत्न, १ वालुक, १ घूम, २ तम	
28	२ १ रत्न, १ वालुक, १ घूम, २ सातमी	
हिवै	रत्न वालुक धूम थी २ भागा दूजी विकल्प करि कहै छै -	
५५	१ / १ रत्न, १ वालुक, २ धूम, १ तम	
प्र६	२   १ रत्न, १ वालुक, २ धूम, १ सातमी	

हिवै रत	न वालु	क घूम थी २ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै—	
५७	8	१ रत्न, २ वालुक, १ घूम, १ तम	
५६	२	१ रत्न, २ वालुक, १ घूम, १ सातमी	
हिवै र	त्न वा	लुक धूम थी २ भागा चोथे विकल्प करि कहै छै —	
3.8	8	२ रत्न, १ वालुक, १ धूम १ तम	
६०	٦	२ रत्न, १ वालुक, १ घूम, १ सातमी	
		लुक धूम थी ४ विकल्प करि ८ भागा कह्या । पुक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—	
६१	१	१ रत्न, १ वालुक, १तम, २ सातमी	
हिवै व	रस्न व	ालुतम थी <b>१ भागो दू</b> जै विकल्प करि कहै छै—	
६२	१	१ रत्न, १ वालुक, २ तम, १ सातमी	
हिवै	रत्न व	ालुक तम थी <b>१</b> भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै —	
६३	१	१ रत्न, २ वालुक, १ तम, १ सातमी	
हिवै	रत्न व	ालुक तम थी १ भागो चौथे विकल्प गरि कहै छै	
६४	१	२ रत्न, १ वालुक, १ तम, १ सातमी	
कह्या		।लुक तम थी १ भागो ४ विकल्प करि ४ भागा रत्न वालुक थकी ६ भागा ४ विकल्प करिकै २४ ।	
रतन	हिवै रत्न पंकथी ३ भागा, ते किसा ? रत्न पक घूम थी २, रत्न पंकतम थी १। तिहा रत्न पक घूम थी २ भागा प्रयम विकल्प करि कहै छै—		
६५	१	१ रत्न, १ पक, १ घूम, २ तम	
६६	२	१ रत्न, १ पंक, १ धूम, २ तमतमा	
रत्न	रत्न पक धूम थी २ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छैं —		
६७	१	१ रत्न, १ पंक, २ घूम, १ तम	
६८	२	१ रत्न, १ पक, २ धूम, १ तमतमा	

रत्त पक घूम थी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहे छै —
६६ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम
७० २ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तमतमा
रत्न पक घूम थी २ भागा चउथे विकल्प करि कहै छै —
७१ १ २ रत्न, १ पक, १ घूम, १ तम
७२ २ रतन, १ पक, १ धूम, १ तमनमा
हिवै रत्न पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै –
७३ १ १ रत्न, १ पक, १ तम, २ तमतमा
हिवै रत्न पक तम थी १ भागो दूजै विकल्प करि कहै छै —
७४ १ रत्न, १ प रु, २ तम, १ तमतमा
हिवै रत्न पक तम थी १ भागो तीजै विकल्प करि कहै छै—
७५ १ १ रत्न २ पक, श्तम, २ तमतमा
हिवै रत्न पक तम थी १ भागो चउथे विकल्प करि कहै छै -
७६ १ २ रत्न, १ पक, १ तम, १ तमतमा
ए रत्न पक थी ३ भागा ४ विकल्प करि १२ भागा कह्या।
हिवै रत्न घूप तम थो १ भागो प्रयम विकल्प कार कहै छै -
७७ १ रतन, १ धूम, १ तम, २ तमतमा
हिवें रत्न घूम तम थी १ भांगो दूजै विकल्प करि कहै छैं —
७ = १ १ रत्न, १ घूम, २ तम, १ तमतमा
हिवै रत्न धूम तम थी १ भागो तीजै विकल्प करि कहै छै
७६ १ रत्न, २ धूम, १ तम, १ तमतमा
हिवै रत्न घूम तम थी १ भागो चउथे विकल्प करि कहै छै -
८० १ २ रत्न, १ धूम, १ तम, १ तमतमा
ए रत्न धूम तम थी १ भागो ४ विकल्प करि कह्यो । एव रत्न थी २० भागा च्यार विकल्प करि ८० भागा कह्या ।

वालुव हिवै ३. स सवक हिवै	हिवै सक्तर थी १० एक एक विकल्प करि हुवं, ते सक्तर वालुक थी ६, सक्तर पक थी ३, सक्कर घूम थी १, एवं १०। हिवै सक्कर वालुक थी ६, ते किसा ? सक्कर वालु पंक थी ३. सक्तर वालु घूम थी २, सक्कर वालु तम थी १ एवं सक्तर वालु थी ६। ते च्यार विकल्प करि २४ भांगा हुवै। हिवै सक्तर वालु पंक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि यहै		
<b>د</b> ۲	8	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम	
<sup>5</sup> २	7	१ सक्कर, १ बालु, १ पक, २ तम	
53	n n	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ तमतमा	
हिवै	सवकर	वालु पंक थी ३ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —	
58	१	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ घूम	
८४	٦	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ तम	
६६	m	१ सक्तर, १ वालु, २ पक, १ तमतमा	
हिवै स	सक्कर व	गालु पक थी ३ भागा तीजे विकल्प करि कहै छै -	
50	१	१ सक्तर, २ वालु, १ पक, १ घूम	
55	२	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ तम	
37	ą	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ तमतमा	
हिवै	संवक्तर	वालु पक थी ३ भागा चउथे विकल्प करि कहै छै	
٥3	8	२ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम	
٤٤	२	२ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ तम	
63	ą	२ सनकर, १ धूम, १ पक, १ तमतमा	
हिवै	हिन सक्कर वालु घूम थी २ भागा प्रयक विकल्प करि कहै छ -		
६३	8	१ सनकर, १ वालु. १ घूम, २ तम	
४३	२	१ सक्तर, १ वालु, १ घूम, २ तमतमा	

_				
हिवै	मय हर	वालु घूम थी २ भागा द्विनीय विकल्प करि कहै छै		
£Х	1	१ मक्कर, १ बालु, २ घूम, १ तम		
εε	२	१ मवकर, १ च लु, २ घूम, १ तमतमा		
हिंची	मबक्तर	वालु घूम थी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै		
દહ	१	१ सकरर, २ वालु, १ घूम, १ तम		
£=	२	१ मक्कर, २ वालु, १ घूम, १ तमतना		
हिव	सक्कर	यालु धूम थी २ भांगा चटचे विकल्प करि कहै छै		
33	१	२ गकर, १ वालु १ घूम, १ तम		
१००	ર	२ सयकर, १ वालु, १ घूम, १ तमनमा		
ए ग कह		त्तु ध्म थी २ मांगा च्यार वित्तत्व करि <b>= भाग</b> .		
हिर्वं सकर घूम तम थी १ भागो ते ४ विकल्प करि ४ भांगा कहै छै। हिर्वे सकर घूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि दहै छै -				
२०१	8	१ सकर, १ घून, १ तम, २ तमतमा		
िर्वं मन कर धूम तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—				
१०२	8	१ माकर १ धूम, २ तम, १ तमतमा		
हिवै	सक् कर	धूम तम थी १ भांगो तृती । विकल्प करि कहै छै -		
१०३	8	१ सक्कर,२ घृम, १ तम, १ तमतमा		
हिवै	सकार	यूम तम थी १ भागो च उथे विकल्प करि कहै छै-		
१०४	१	२ मकर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा		
ए मक्कर वालुक थी ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कह्या। सक्कर पक थी ३ भागा एक एक विकल्प करि हुवै, ते किसा? सक्कर पह घूम थी २, सक्कर पक तम थी १, तिहा सक्कर पक यूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै -				
१०५	१	१ सवकर, १ पक, १ घूम, २ तम		
१०६	२	१ सबकर, १ पक, १ घूम, २ तमतमा		

हिवै	सक्कर	प क घूम थी २ भागा दूजै विकला करि कहै छै
१०७	۶	१ सक्कर, १ पक, २ घूम, १ तम
१०५	२	१ सक्कर, १ पक, २ घूत्र ,१ तमतमा
हिवै ३	सक्कर प	क धूम थी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै –
308	१	१ मक्कर, २ पक, १ घूम, १ तम
११०	२	१ सक्कर, २ पक, १ धूम, १ तमतपा
हिवै	सदकर प	न क्ष्म थी २ भागा च <b>उथे</b> विकल्प क्रि कहै छै
१११	१	२ सक्कर, १ पक, १ धूम, १ तम
११२	२	२ सक्कर, १ पक, १ घूम, १ तमनमा
हिवै	सक्कर	पक तम थी १ भागो प्रथम विवल्प करि कहै छै —
११३	१	१ सक्कर, १ पक, १ तम, २ तमतमा
हिवै	सकर :	पक तन थी १ भागो द्वितीय थिकल्प करि कहै छे —
११४	१	१ सक्कर, १ पक, २ तम, १ तमतमा
हि	वै सवक	र पक तन थी १ भागो तृतीय विवल्प करि कहै छे —
११५	१	१ सक्तर, २ पक, १ तम, १ तमतमा
हि —	वै सदक	र पक तम थी १ भागो चउथे विकल्प करि कहै छैं -
११६	8	२ स क्कर, १ पक, १ तम, १ तमतमा
1 "		पंक थी ३ भागा ४ विकल्प करि १२ भागा कह्या। र घूम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै —
११७	१	१ सक्कर, १ घूम, १ तम, २ तमतमा
हि	्वै सवक	र घूम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै —
११५	8	१ सक्कर, १ धूम, २ तम, १ तमतमा
f	हवै सक्ब	र धूम थी १ भागो तृतीय विकल्प करि कहै छै –
११६	. 8	१ सक्कर, २ घूम, १ तम, १ तमतमा

हिव	सक्कर	घूम थी १ भागो चउथे विकल्प करि कहै छैं —			
१२०	2	२ सक्कर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा			
एव र	प्तकर	थी १० भागा ४ विकल्प करि ४० भागा कह्य। ।			
पक <sup>्</sup> वालु ३ ए	थी ३, पक घृ क-एक	ी ४ भागा एक-एक विकल्प करि हुवै, ते वालु वालु घूम थी १ । हिवै वालु पंक थी ३, ते किसा ? म थी २, वालु पक तम थी १, एवं वालु पक थी विकल्प करि हुवै । तिहां वालु पक घूम थी २ विकल्प करि कहै छै—			
रेर१	१	१ वालु, १ पक, १ घूम, २ तम			
१२२	२	१ वालु, १ पक, १ घूम, २ तमतमा			
हिवै	वालु प	क घूम थी २ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै			
१२३	१	१ वालु, १ पंक, २ घूम, १ तम			
१२४	٦	१ वालु, १ पक, २ घूम १ तमतमा			
हिवै	वालु प	क घूम थी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै -			
१२५	१	१ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम			
१२६	२	१ वालु, २ प क, १ धूम, १ तगतमा			
हिवै	वालु '	पक धूम थी २ भागा चउथे विकल्प करि कहै छै			
१२७	१	२ वालु, १ पक, १ घूम, १ तम			
१२८	२	२ वालु, १ पक, १ घूम, १ तमतमा			
हिवै	वालु प	नक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै			
१२६	१	१ वालु १ पक, १ तम, २ तमतमा			
हिवै	वालु प	क तम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छ —			
१३०	१	१ वालु, १ पक, २ तम, १ तमतमा			
हिवै वालुपक तम थी १ भागो तृतीय विकल्प करि कहै छं -					
१३१	\$	१ वालु, २ पक, १ तम, १ तमतमा			
हिवै	हिवै वालु पक तम थी १ भागो चउथे विकला करि कहै छै-				
१३२	१	२ वालु, १ पक, १ तम, १ तमतमा			
ए वा	लुपक	थी ३ भागा ४ विकल्प करि १२ भागा कह्या।			

हिवै वालु धूम थी १ भागो प्रथम विकल्प का	रे कहै छै -			
१३३ १ १ वालु, १ धूम, १ तम, २ तमतम	ſſ			
हिने वालु घूम थी १ भागो द्वितीय विकल्प का	रे कहै छैं —			
१३४ १ १ वालु, १ धूम, २ तम, १ तमतग	रा			
हिवै वालु घूम थी १ भागो तृतीय विकल्प करि	महै छै -			
१३५ १ १ वालु, २ धूम, १ तम, १ तमतम	П			
हिवै वालु घूम थी १ भागो चख्ये विकत्प करि	कहै छैं —			
१३६ १ २ वालु, १ घूम, १ तम, १ तमतः	T			
ए वालु धूम थी १ भांगो ४ विकल्प करि ४ भ एव वालु थी ४ भागा ४ विकत्म करि १६ भ	-			
हिवै पक थी १ मागो प्रथम विकल्प करि क	हे छै -			
१३७ १ १ पक, १ घूम १ तम, २ तमतमा				
हिवै पक थी १ भागो हितीय विकल्प करि व	हि ई-			
१३८ १ १ पक, १ घूम, २ तम, १ तमतम				
हिवै पक थी १ भांगो तृ-ीय विकल्प करि क	है छै—			
१३६ १ १ पंक, २ चूम, १ तम, १ तमतमा				
हिवै पक थी एक भागो चउथे विकल्प करि	महै छै—			
१४० १ २ पंक, १ धूम, १ तम, १ तमतमा				
ए पक थी १ भागो ४ विकल्प करि ४ भांगा कह्या।				
एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पक थी १, ए पैतीस भागा एक विकल्प ना हुवै, ते पाच जीव ना चौक- सजोगिया ४ विकत्प करि १४० भागा कह्या। ए पांच जीव ना इकमजोगिया ७, दिकसंजोगिया ५४, त्रिकसंजोगिया २१०, चौकसजोगिया १४०। एव सर्व ४४१ भागा कह्या। हिवै पाचमजोगिया इकवीस भागा आगल कहिसै।				

हिन रतन सक्कर घूम थी १ भागो कहै छै-

१२. तथा एक रत्न इक सक्करे, एक धूम तम एक।
इक जीव नारिक सप्तमी, ए भग दशम उवेख।।
ए रत्न सक्कर धूम थी १ भागो कह्यो। एव रत्न सक्कर थी १० भागा

हिर्न रत्न वालुक थी च्यार भागा कहै छै—ते किसा? रत्न वालुय पक थी ३, रत्न वालुय धूम थी १। तिण से रत्न वालुय पक थी ३, ते किया? रत्न वालुय पक धूम थी २ अने रत्न वालुय पक तम थी १—एव रत्न वालुय पक थी ३। तिहा रत्न वालुय पक धूम थी २ भागा, ते कहै छै—

- १३. तथा एक रत्न एक वालुका, एक पक उपजंत। इक धूम एक तमा विये, भग इग्यारमी तंत।।
- १४. तथा एक रत्न इक वालुका, एक पक उपजेह।
  एक धूम इक सप्तमी, द्वादशमो भग एह।।
  ए रत्न वालुय पक धूम थी २ भागा कहा।
  हिवै रत्न वालु पक तम थी १ भागो कहै छै—
- १५. तथा एक रत्न इक वालुका, एक पक अवलोय।
  एक तमा इक सप्तमी, तेरसमो भंग जोय।।
  ए रत्न वालुय पंक थी ३ भागा कह्या।
  हिवै रत्न वालुय धूम थी १ भागो कहै छै—
- १६. तथा एक रत्न इक वालुका, एक धूम आख्यात।
  एक तमा इक सप्तमी, चउदशमो भंग थात।।
  ए रत्न वालुय थी ४ भागा कहा।
  हिवै रत्न पक थी १ भागो कहै छै—
- १७. तथा एक रत्न इक पक में, एक धूम रै मांय। एक तमा इक सप्तमी, भग पनरमी पाय॥ ए रत्न थी १५ भागा कहा।

हिवै सक्कर थी ५ भागा कहै छै, तिणमें रत्न पांचू मेड टा ाणी अने एकेक नरक पश्नानुपूर्वी करकै टालणी—

- १८. तथा एक सक्कर इक वालुका, एक पंक पहिछाण। एक धूम ने इक तमा, सोलसमो भंग जाण॥ ए सोलमे भागे सातमी टनी।
- १६. तथा एक सक्कर इक वालुका, एक पंक अवलोय। एक धूम इक सप्तमी, सतरसमी भंग जोय॥ ए सतरमे भागे छठी नरक दली।
- २०. तथा एक सक्कर इक वालुका, एक पंक आख्यात। एक तमा इक सप्तमी, भंग अठारम थात॥ इहां अठारमे भागे पचमी नरक टनी।
- २१. तथा एक सक्कर इक वालुका, एक धूम उपजंत। एक तमा इक सप्तमी, उगणीसम भंग तंत।।

१२. अहवा एगे रयणप्यभाए एगे संस्करप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे तमाए एगे अहेगत्तमाए होज्जा

- १३. अहवा एगे रयणप्यभाए एगे वानुयप्यमाए एगे पक्षप्रमाए एगे व्मप्यमाए एगे तमाए होज्जा
- १४. बहुवा एगे रयणप्यमाए एगे वानुयणमाए एगे परुष्यमाए एगे धूमप्यमाए एगे बहुमत्तमाए होज्जा
- १५. बहुवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुप्पभाए एगे पंक्रप्य-भाए एगे तमाए एगे बहुसत्तमाए होज्जा
- १६ अहवा एगे रयणप्पमाए एगे वालुयप्पमाए एगे धूमप्रमाए एगे तमाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा
- १७. अहवा एगे रयणप्पमाए एगे पंकप्पमाए जाव एगे अहेमत्तमाए होज्जा
- १८. बहवा एगे सक्करप्पमाए एगे वालुयप्पमाए जाव एगे तमाए होज्जा,
- १६. महवा एगे सक्करप्पमाए जाव एगे पकप्पमाए एगे धूमप्पमाए एगे महेसत्तमाए होज्जा
- २० अह्वा एगे सक्करप्पमाए जाव एगे पक्रप्पमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा
- २१. अहवा एगे सनकरप्पमाए एगे वालुयप्पमाए एगे वूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

१०४ भगवती-जोड़

ए उगणीममें भांगे चडयी नरक टली।

- २२. तथा एक सक्कर इक पंक में, एक धूम रै मांय।
  एक तमा इक सप्तमी, वीसमों भंग कहाय।।
  ए वीसमें भागे तीजी नरक टली। ए मक्कर थी ५ भागा कह्या।
  हिवै वालु थी १ भागो कहै छै—
- २३. तथा एक वालुक इक पंक मे, एक धूम एक तम। एक सप्तमी ऊपजै, ए भंग इकवीसम।।
- २४. पंचसंयोगिक ए कह्या, इकवीस भंग विचार। विकल्प एक अछै तसु, ए वच यंत्र' मझार।।
- २५. \*पनर रत्न थी पंच सक्कर थी, वालुक थी डक देखियै। पंच योगिक भंग ए, इकवीस ही इम लेखियै॥
- २६. पनर रत्न थी तेह इहविध, दश रत्न सक्कर थकी। रत्न वालू थी चिहुं अरु, रत्न पंक थी इक नकी।।
- २७. रत्न सक्कर थकी दश इम, पट रत्न सक्कर वालु हुंती। रत्न सक्कर पंक थी त्रिण, इक रत्न सक्कर धूम थी।।
- २ प्त. रत्न सक्कर वालु थी पट, तेह इहविघ कीजियै। रत्न सक्कर वालु पंक थी, भंग तीन भणीजियै॥
- २६. रत्न सक्कर वालु धूम थी, दोय भांगा आणियै। रत्न सक्कर वालु तम थी, भंग एक बखाणियै॥
- ३०. रत्न सक्कर वालु थी षट, प्रथम इहविध लीजियै। एम नारिक आगली पिण, पूर्व उक्तज कीजियै।।
- ३१. पंच जीव नां इकसंयोगिक, सप्त भांगा जाणियै। दिकसंयोगिक च्यार विकल्प, चोरासी भंग आणियै।।
- ३२. त्रिकसंयोगिक पट विकल्पे, दोयसौ दश भंग कह्या। चउ संयोगिक च्यार विकल्प, इक सौ चाली भंगलह्या।।
- ३३. पंच संयोगिक एक विकल्प, भंग इकवीसे भण्या। च्यार सीने वासठ सगला, भंग संख्या करि गिण्या।।
- ३४. †शत नवम बतीसम देश ए, एक सौ असीमी ढाल । सयाणां ! भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' मंगल माल ।। सयाणां ! (जय-जय ज्ञान जिनेंद्र नों ।)

- २२. बहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे बहेसत्तमाए होज्जा।
- २३. अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेमत्तमाए होज्जा। (१०।६।६२)

३३. सर्वंमीलने च चत्वारि शतानि द्विपट्यधिकानि भवन्तीति । (वृ०प०४४४)

१. यह धर्मनी यंत्र की सूचना है।

\*सय : पूज मोटा मांजी तोटा †सय : शिवपुर नगर सुहामणी पच जीव ना पचसंयोगिक तेहनो विकल्प १, भांगा इकवीस। तिहां रत्न थी १५, सक्कर थी ५, वालुक थी १- एवं २१। रत्न थी १४, ते किसा ? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालु थी ४, रत्न पंक थी १--एवं रत्न थी १५। ते पनरा में रत्न सक्कर यी १०, ते किमा ? रत्न सक्कर वालुक यी ६, रत्न सक्कर पक्र थी ३, रत्न सक्कर घूम थी १ - एवं रत्न सक्कर थी १०। ते दशा मे रत्न सक्कर वालुक थी ६, ते किसा ? रत्न मक्कर वालुक पक्र थी ३, रत्न मक्कर वालुक घूम थी २, रत्न मक्कर वालुक तम थी १--एवं रत्न मक्कर वालुक थी ६। ते छ भागा में प्रथम रतन सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा कहै छी -पं वा त तम 8 १ 8 0 ₹ 2 0 १ 8 8 ए रत्न मक्कर वालुक पक थी ३ भागा कहा।। हिवै रतन सक्कर वालुक धूम यो २ भागा कहै छै-¥ ' १ हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भांगी कहै छ --१ ए रत्न सक्कर वालुक थी ६ भागा कह्या। हिवै रतन सक्कर पंक थी ३ मागा, ते किसा ? रतन सक्कर पंक यूम थी २, रतन सक्कर पंक तम थी १। तिहां रतन मक्कर पक घूम थी २ भागा कहै छै-G 8 8 हिवं रतन सककर पंक तम थी १ भागो कहै छै -१ 8 8 ए रत्न सक्कर पंक थी ३ भागा कह्या। हिवै रतन सक्कर घूम थी १ मांगो कहै छै-१० ए रत्न मक्कर थी १० भागा कह्या।

३, रत्न वालुक यूम थी १, तिणमे रत्न वालुक पंक थी ३, ते किसा ? रत्न वालु पंक यूम थी २, रत्न वालुक पक तम थी								
१, तिहा रत्न वालुक पंक धूम थी २ मांगा कहे छै-								
		र	स	वा	र्ष	घू	त	तम
११	१	१	0	१	१	8	?	٥
१२	२	2	ø	1	8	8	0	3
हिवै	रत्न व	ालुक प	क तम	यी १	भांगी व	है छै-	-	
<b>१</b> ३	१	8	0	1	8	٥	2	१
ए ३	त्त वाल्	हुक पंक	थी ३	भांगाः	∓ह्या ।			
हिव	रत्न व	ालुक ध	रूम थी	१ भांग	ो कहै ह	j		
१४	१	१	o	१	0	१	2	१
ए ३	त्न वाल्	ुकथी	४ भांग	ा कह्य			·	
हिवं	रत्न प	क थी	१ भांग	ो कहै ह	<del>-</del>			
१५	8	१	0	o	8	१	8	१
एवं	रत्न र्थ	ተየሂን	गागा क	ह्या ।				
हिवं	सक्कर	थी ५	भागाः	कहै छी-				
१६	ŧ	0	१	१	8	१	?	0
<b>१</b> ७	२	0	१	?	?	8		१
<b>१</b> 5	ą	0	१	१	8	0	१	१
38	४	o	₹	१	۰	१	१	8
२०	પ્ર	0	१	0	१	१	१	१
ए सक्कर थी ५ भांगा कह्या ।								
हिव	हिवै वालुक थी १ भागो कहै छै—							
२१	१	٥	0	१	१	१	१	१
ए पंच जीव नां पंचसंजोगिया रत्न थी १५, सक्कर थी ५, वालुक थी १—एव २१ भांगा जाणवा।								

हिवै रत्न वालु थी ४ भागा, ते किमा? रत्न वालुक पंक थी

#### दूहा

- हे भदंत! षट नेरइया, नरक-प्रवेशण काल।
   रत्नप्रभा में स्यूं हुवै, प्रश्न पूर्ववत न्हाल।
   श्रिन कहै गगेया! सुणे, छहूं रत्न उपजंत।
  - अथवा षट सक्कर मझे, तथा वालुक षट हुंत ॥
- ३. अथवा पंक विषेज षट, अथवा षट ह्वै धूम। अथवा षट तम विल तथा, षट तमतमाज बूम।।
- ४. इकसंयोगिक आखिया, भांगा ए इम सात। इक विकल्प करि ओलखो, वारू विध अवदात।।

	र	स	वा	पं	घू	त	तम	
१	Ę,	0	o	0	٥	0	0	
२	0	W	o	0	0	o	0	
R		٥	Ę	0	0	0	0	
४	0	0	0	Ę	0	o	0	
ય	0	0	0	0	Ę	0	0	
Ę	0	0	0	0	0	Ę	0	
છ	0	0	0	•	0	0	Ę	

हिवै ६ जीव ना द्विकसयोगिक तेहनां विकल्प ५ भागा १०५ कहै छै-

- ५. द्विकयोगिक षट जीव नां, विकल्प पंच विशेष। भांगा एक सौ पच है, कहियै तेह अशेप।। \*वीर कहै गंगेया! सुणे। (ध्रुपदं)
- ६. अथवा इक ह्वं रत्न मे, पंच सक्कर में पेखो रे। अथवा इक ह्वं रत्न में, पच वालुका देखो रे॥
- ७. अथवा इक ह्वं रत्न में, पंच पंक रै मांही। अथवा इक ह्वं रत्न में, पंच घूम कहिवाई।।
- अथवा इक ह्वं रत्न में, पच तमा पहिछाणी।
   अथवा इक ह्वं रत्न में, पंच तमतमा जाणी।।
   ए रत्न थी प्रथम विकल्प करि ६ भागा कह्या।
   दुर्ज विकल्प करि ६ भागा कहै छैं —
- ह. तथा दोय ह्वं रत्न में, चिंउ सक्कर अवलोयो।जाव तथा दोय रत्न में, च्यार सप्तमी होयो।।
- भलपः वात म काढो वरत नी

- १. छटमते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा ।
- २,३. गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
- ४. इहैकत्वे सप्त

(वृ०प०४४५)

- ५. द्विकयोगे तु पण्णां द्वित्वे पञ्च विकल्पाः स्तद्यया— १५।२४।३३।४२।५१। तैव्च सप्तपद-द्विकसंयोगएक-विद्यतेर्गुणनात् पञ्चोत्तरं भङ्गकशतं भवति। (वृ० प० ४४५)
- ६. अहवा एगे रयणप्पभाए पच सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए पंच वालुयप्पभाए होज्जा
- ७,८. जाव अहवा एगे रयणप्पभाए पंच अहेमत्तमाए होज्जा।
  - श्रवा दो रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा।

- तीज विकल्प करि ६ भांगा कहे छै-
- १०. तथा तीन ह्वं रत्न में, त्रिण सक्कर मे चीनो। जाव तथा त्रिण रत्न में, हुवं सप्तमी तीनो।। चउथे विकल्प करि ६ भागा कहै छं—
- ११. तथा च्यार ह्वं रत्न में, वे सक्कर अधखानो। जाव तथा चिंउ रत्न में, दोय तमतमा जानो।। पचमे विकल्प करि ६ भागा कहै छै-
- १२ तथा पांच ह्वं रत्न में, इक सक्कर दुखदायो।
  जाव तथा पच रत्न में, एक सप्तमी मांह्यो।।
  ए रत्न थी ६ भागा पाच निकरप करि ३० भागा कह्या।
  हिवं सक्कर थी ४ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कहै छै—
- १३. अथवा एक सक्कर ह्वं, पंच वालुका पेखो। जाव तथा इक सक्करे, पंच तमतमा लेखो।।
- १४. तथा दोय ह्वं सक्करे, च्यार वालुका मांही। जाव तथा वे सक्करे, च्यार सप्तमी थाई।।
- १५. तथा तीन ह्वं सक्करे, तीन वालुका होयो। जाव तथा तीन सक्करे, तीन सप्तमी जोयो॥
- १६ तथा च्यार ह्वं सक्करे, दोय वालुका जाणी। जाव तथा चिंउ सक्करे, दोय सप्तमी आणी॥
- १७. तथा पाच ह्वं सक्करे, इक वालुक आख्यातो। जाव तथा पंच सक्करे, एक तमतमा पातो।। हिवं वालुक थकी ४ भागा ५ विकल्प करि कहै छै—
- १८. तथा एक ह्वं वालुका, पंच पंक में पेखो। जाव तथा इक वालुका, पच सप्तमी लेखो।।
- १६ तथा दोय ह्वं वालुका, च्यार पंक रै माह्यो। जाव तथा वे वालुका, च्यार सप्तमी जायो॥
- २०. तथा तीन ह्वं वालुका, तीन पक दुखत्रासो। तथा जाव तीन वालुका, तीन सप्तमी वासो।।
- २१. तथा च्यार ह्वं वालुका, दोय पक पहिछाणी। जाव तथा च्यार वालुका, दोय सप्तमी जाणी।।
- २२. तथा पांच ह्वं वालुका, एक पक अवलोयो।
  जाव तथा पंच वालुका, एक सप्तमी होयो।।
  ए वालुक थकी ४ भागा पाच विकल्प कर २० भागा कह्या।
  हिवं पक थकी ३ भागा पाच विकल्प करि कहै छै—
- २३. तथा एक ह्वं पक मे, पंच धूम अघखानी। जाव तथा इक पंक में, पच सप्तमी जानी।।
- २४. तथा दोय ह्वं पक मे, च्यार धूम पहिछानी। जाव तथा वे पंक मे, च्यार तमतमा जानी।।
- २५. तथा तीन ह्वं पंक में, तीन धूम मे तेहो। जाव तथा त्रिण पंक में, तीन सप्तमी जेहो।।

१०-३५. अहवा तिण्णि रयणप्पभाए तिण्णि मनकरप्पभ एवं एएणं कमेणं जहा पचण्हं दुयासंजोगो तहा वि भाणियव्यो, नवरं—एक्को अव्महिको संचारेय जाव अहवा पच तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

- २६. तथा च्यार ह्वं पंक में, दोय धूम में देखो। जाव तथा चिंउं पंक में, दोय तमतमा पेखो।।
- २७. तथा पंच ह्वं पंक में, एक धूम आख्यातो। जाव तथा पंच पंक में, एक सप्तमी पातो। ए पक थकी ३ भागा ५ विकल्प करि १५ भागा कह्या। हिवै घूम थी २ भागा ५ विकल्प करि कहै छै-
- २८. तथा एक ह्वै धूम में, पंच तमा दुखपूरो। तथा एक ह्वं धूम मे, पंच सप्तमी भूरो।।
- २६ तथा दोय ह्वं धूम मे, च्यार तमार मांह्यो। तथा दोय ह्वं धूम में, च्यार सप्तमी जायो।।
- ३०. तथा तीन ह्वं धूम मे, तीन तमा उपजतो।
- तथा तीन ह्वं धूम में, तीन सप्तमी हुतो।। ३१. तथा च्यार ह्वं धूम में, दोय तमा में देखो।
- तथा च्यार ह्वै धूम मे, दोय सप्तमी पेखो।। ३२. तथा पंच ह्वै धूम मे, एक तमा अवलोयो। तथा पंच ह्वं धूम मे, एक सप्तमी होयो।। ए धूम थी २ भागा ५ विकल्प करि १० भागा कह्या। हिवै तमा थी १ भागो ५ विकल्प करि कहै छै —
- ३३. अथवा इक ह्वै तम मझै, पच तमतमा पेखो। अथवा दोय छठी विषे, च्यार सप्तमी लेखो।।
- ३४. तथा तीन छट्टी विषे, तीन सप्तमी मांह्यो। अथवा च्यार हुवै तमा, दोय तमतमा पायो।।
- ३५. अथवा पच हुवै तमा, एक सप्तमी होयो। ए विकल्प है पचमो, तमा थकी अवलोयो।।

ए तमा थकी १ भागो ५ विकल्प करि ५ भागा कह्या । रत्न थी ६, सक्कर थी ५, वालु थी ४, पक थी ३, घूम थी २, तम थी १—एवं २१ भागा एक-एक विकल्प करि हुवै। ६ जीव ना ५ विकल्प करि द्विकसजोगिया १०५ भागा। हिवै एहनो यत्र।

शाप, रा४, ३।३, ४।२, ४।१ छ जीव ना द्विकसजोगिया ए ५ विकल्प।

छ जीव ना द्विकसयोगिक ना विकल्प ५ भागा १०५। तिहा रत्न थी ६ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—				
१	१	१ रत्न, ५ सक्कर,		
२	२	१ रत्न, ५ वालुक		
Ą	n	१ रत्न, ५ पंक		
४	४	१ रत्न, ५ घूम		
પ્ર	ų	१ रत्न, ५ तम		
Ę	Ę	१ रत्न, ५ सप्तमी		

***************************************	हिवै र	त थी ६ भागा दूर्ज विवरप करि कहै छै
હ (	8	२ रहन, ४ सक्कर
5	٦	२ रत्न, ४ वालुक
<u> </u>	₹	२ रहन, ४ पक
१०	8	२ रत्न, ४ धूम
११	પ્ર	२ रत्न, ४ तम
१२	Ę	२ रत्न, ४ सप्तमी
	हिबै र	त्त थी ६ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै —
<b>१</b> ३	٤	३ रत्न, ३ सक्कर
१४	२	३ रत्न, ३ वालुक
१५	ą	३ रत्न, ३ पक
१६	8	३ रत्न, ३ धूम
१७	, X	३ रहन, ३ तम
१८	Ę	३ रत्न, ३ सप्तमी
	हिबै र	त्न थी ६ भांगा चल्रथे विकल्प करि कहै छै
38	8	४ रत्न, २ सक्कर
२०	२	४ रत्न, २ वालुक
२१	३	४ रहन, २ पंक
२२	8	४ रत्न, २ धूम
२३	, X	४ रत्न, २ तम
२४	Ę	४ रतन, २ सप्तमी

२५ १ ५ रत्न, १ सक्कर
२६ २ ५ रत्न, १ वालुक
२७ ३ ४ रतन, १ पक -
२८ ४ ५ रत्न, १ धूम
२६ ५ ५ रतन, १ तम
३० ६ ५ रतन, १ मप्तमी
एव रत्न थी ६, पंच विकत्प करि ३० भागा कह्या।
हिनै सनकर थी ५ भागा प्रथम विकल्प करि कहे छै –
३१ १ १ सकर, ५ वालु
३२ २ १ सक्कर, ५ पक
३३ । ३ । १ सनकर, ५ धूम
३४ ४ १ सवकर, ५ तम,
३५ ५ १ सबकर, ५ सप्तमी
सक्कर थी ५ भागा दूजै विकल्प करि कहै छ —
३६ १ २ सनकर, ४ वालुः
३७ २ र मृक्कर, ४ पंक
३८ ३ २ सक्कर, ४ धूम
३६ ४ २ सवकर, ४ तम
४० ५ २ मनकर, ४ मप्तमी

f	हिनै सक्कर थी ५ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै—				
४१	8	३ सक्तर, ३ वालुक			
४२	२ ∫	३ सक्कर, ३ पक			
४३	₹	३ सक्कर, ३ धूम			
४४	- ×	३ सक्कर, ३ तम्			
ሄሂ	પ્ર	३ सवकर, ३ सप्तमी			
	हिवै सक	कर थी ५ भागा चउथे विक्ल्प करि कहै छै —			
४६	8	४ सक्कर, २ वालु			
४७	२	४ सक्कर, २ पक			
<b>8</b> 5	æ	४ सक्कर, २ धूम			
38	8	४ सक्कर, २ तम			
५०	प्र	४ सनकर, २ मप्तमी			
fi	हबै सक्क	र थी ५ भागा पचमे विकल्प करि कहै छै			
ধং	१	५ सक्कर, १ वालु			
प्र२	२	५ सक्कर, १ पंक			
प्र३	ষ	५ सक्कर, १ घूम			
५४	8	५ सक्कर, १ तम			
ሂሂ	પ્ર	५ सक्कर, १ सन्तमी			
		सक्कर थी ५ विकल्प करि २५ भांगा कह्या।			
हि	हिवै वालुक थी ४ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—				
५६	8	१ वालुक, ५ पक			
ধূত	२	१ वालुक, ५ घूम			
ሂና	3	१ वालुक, ५ तम			
५६	४	१ वालुक, ५ सप्तमी			

हिवै	वालु	थी ४ भागो दूजै विकल्प करि कहै छै—
६०	१	२ वालुक, ४ पक
६१	२	२ वालुक, ४ घूम
६२	ą	२ वालुङ, ४ तम
६३	४	२ वालुक, ४ सप्तमी
हिवै	वालु	थी ४ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै—
६४	8	३ वालुक, ३ पक
६४	२	३ वालुक, ३ घूम
६६	*	३ वालुक, ३ तम
६७	४	३ वालुक, ३ सप्तनी
हिवै	वालु	थी ४ भागा चउथे विकल्ग करि कहै छै —
६न	१	४ वालुक, २ पक
33	२	४ वालुक, २ धूम
60	₹	४ वालुक, २ तम
७१	४	४ वालुक, २ सप्तमी
हिवै	वालुः	यी ४ भागा पचमे विकल्प करि कहै <del>छ</del> ै —
७२	१	५ वालुक, १ पक
७३	२	५ वालुक, १ धूम
७४	JO,	५ वालुक, १ तम
७४	8	५ वालुक, १ सप्तमी
एव	वालुक	थी ४ भागा पच विकल्प करि २० भागा कह्या।
हिवै	पक थ	ी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —
७६	8	१ पक, ५ घूम
৩৩	२	१ पक, ५ तम
৬দ	₹	१ पक, ५ सप्तमी

_		
हिवे पंक थी ३ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै—		
૭૬	1	२ पंक, ४ घूम
50	२	२ पक, ४ तम
द्ध	¥	२ पंक, ४ सप्तमी
हिन पक थी ३ भागा तीजे विकल्प करि कहै छै —		
द२	१	३ पक, ३ धूम
ធន្	२	३ पक, ३ तम
58	₹	३ पक, ३ सप्तमी
हिवै पंक थी ३ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै		
দধ	१	४ पक्त, २ घूम
54	२	४ पंक, २ तम
<b>দ</b> ৬	ą	४ पंक, २ सप्तमी
हिवे पंक थी ३ भांगा पचमे विकल्प करि कहै छै		
44	8	५ पंक, १ बूम
<b>द</b> ध	र	५ पंक, १ तम
03	3	५ पक, १ सप्तमी
ए पक थी ३ विकल्प करि १५ भागा कह्या ।		
हिर्दे घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै-		
83	8	१ वूम, ५ तम
६२	2	१ वूम, ४ सप्तमी
हिव बूम थी २ भांगा दूजी विकल्प करि कहै छी-		
<b>ξ</b> 3	8	२ वूम, ४ तम
83	7	२ थूम, ४ सप्तमी

हिनै वूम थी २ भागा तीजी विकल्प करि कहै छै —		
६५ १ ३ घूम, ३ तम		
६६ २ ३ घूम, ३ सप्तमी		
हिवै घूम थी २ भागा चजये विकल्प करि कहै छै —		
६७ १ ४ धूम, २ तम		
१ ५ पूम, २ सप्तमी		
हिवै घूम थी २ भांगा पचमे विकल्प करि कहै छै —		
६६ १ ५ घूम, १ तम		
१०० २ ५ घूम, १ सप्तमी		
एवं घूम थी २ भांगा पच विकत्प करि १० भांगा कह्या ।		
हिवे तम थी १ भागो प्रयम विकल्प करि कहै छै —		
१०१ १ १ तम, ५ सप्तमी		
हिवै तम थी १ भागो दूर्ज विकल्प करि कहै छै—		
१०२   १   २ तम, ४ सप्तभी		
हिवै तम थी १ भागो तीज विकल्प करि कहै छै		
१०३ १ ३ तम, ३ सप्तमी		
हिवै तम थी १ भागो चउथे विकल्प करि कहै छै		
१०४ १ ४ तम, २ सप्तमी		
हिवै तम थी १ भागो पंचमे विकल्प करि कहै छै-		
१०५ १ ५ तम, १ सप्तमी		
एव ६ जीव ना द्विकसजोगीया भांगा २१ पच विकल्प करि १०५ भागा कह्या।		

३३. <sup>१</sup>नवम वत्तीसम देश ए, ढाल इकसी इक्यासी। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' परम हुलासी॥

<sup>\*</sup> लय: वात म काढो वरत नी

## दूहा

- १. पट नारिक नां हिव कहूं, त्रिकसंजोगिक तास। भागा साढा तीन सौ, दश विकल्प करि जास।।
- २. रत्न थकी पनरे हुवै, सक्कर थी दश होय। पट वालु थी पंक त्रिण, धूम थकी इक सोय।।
- ३. ए पैतीसे भग ते, दश विकल्प करि देख। होवे साढा तीन सौ, कहिये छै सुविशेख।।

हिवै १५ रत्न थी, ते किमा ? रत्न मक्कर थकी ५, रत्न वालुक थकी ४, रत्न पक थकी ३, रत्न घूम थकी २, रत्न तम थकी १ — एवं १५ मांगा रत्न थी, ते दस विकल्प करि हुवै—

\*श्री जिन भाखें सुण गगेया ! (ध्रुपदं)

- ४. एक रत्न ने एक सक्कर ह्वै, च्यार वालुका होय। अथवा एक रत्न इक सक्कर, च्यार पंक अवलोय॥
- ५. अथवा एक रत्न इक सक्कर, च्यार धूम रै मांय। अथवा एक रत्न इक सक्कर, च्यार तमा दुख पाय॥
- ६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, च्यार सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, धुर विकल्प करि सोय।।
- ७. अथवा एक रत्न वे सक्कर, तीन वालुका होय। अथवा एक रत्न वे सक्कर, तीन पक अवलोय।।
- द. अथवा एक रत्न वे सक्कर, तीन धूम रै मांय। अथवा एक रत्न वे सक्कर, तीन तमा कहिवाय।।
- ६ अथवा एक रत्न वे सक्कर, तीन सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पच भंगा, द्वितीय विकल्प जोय।।
- १० अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन वालुका होय। अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन पंक अवलोय॥
- ११. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन घूम रै माय। अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन तमा दुख पाय।।
- १२. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पंच भगा, तृतीय विकल्प सोय॥
- १३. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय वालुका होय। अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय पंक अवलोय॥
- १४. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय धूम रै मांय। अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय तमा दुख पाय॥
- १५. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, चज्यै विकल्प जोय।।

- ४. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे मनकरप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि पकप्पभाए होज्जा।
- ४,६. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा।
- ७-१४ द. अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा पचण्ह तियासंजोगो भणिओ तहा छण्ह वि भाणियव्यो, नवर—एक्को अहिओ उच्चारेयव्यो, सेसं त चेव।

१. त्रिकयोगे तु पण्णां त्रित्वे दश विकल्पाः एतैञ्च पञ्चित्रिश्वतः सप्तपदित्रिकसयोगाना गुणनात् त्रीणि शतानि पञ्चाशदिषकानि भवन्ति । (वृ०प० ४४४)

<sup>\*</sup> लय: सीता आवं रे घर राग

- १६. अथवा दोय रत्न वे सक्कर, दोय वालुका होय। अथवा दोय रत्न वे सक्कर, दोय पंक अवलोय।।
- १७. अथवा दोय रत्न वे सक्कर, दोय धूम रै मांय। अथवा दोय रत्न वे सक्कर, दोय तमा दुख पाय।।
- १८. अथवा दोय रत्न वे सक्कर, दोय सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पंच भगा, पंचम विकल्प जोय॥
- १६. अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय वालुका होय। अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय पंक अवलोय॥
- २०. अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय धूम रै मांय। अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय तमा दुख पाय।।
- २१. अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, पप्टम विकल्प जोय।।
- २२. अथवा एक रत्न चिउं सक्कर, एक वालुका होय। अथवा एक रत्न चिउं सक्कर, एक पंक अवलोय॥
- २३. अथवा एक रत्न चिउं सक्कर, एक धूम रै मांय। अथवा एक रत्न चिउं सक्कर, एक तमा दुख पाय।।
- २४. अथवा एक रत्न चिउं सक्कर, एक सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, सप्तम विकल्प जोय।।
- २५. अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक वालुका होय। अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक पंक अवलोय।।
- २६. अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक धूम रै माय। अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक तमा दुख पाय।।
- २७. अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक सप्तमी होय।
- रत्न सक्कर थी ए प्ंच भंगा, अट्टम विकल्प जाय।।
- २८ अथवा तीन रत्न वे सक्कर, एक वालुका होय। अथवा तीन रत्न वे सक्कर, एक पंक अवलोय।।
- २६ अथना तीन रत्न वे सक्कर, एक धूम रै मांय। अथवा तीन रत्न वे सक्कर, एक तमा कहिवाय।।
- ३०. अथवा तीन रतन वे सक्कर, एक सप्तमी होय। रतन सक्कर थी ए पंच भंगा, नवमें विकल्प जोय।।
- ३१. अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक वालुका जान। अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक पंक अध्यान।।
- ३२. अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक धूम रै मांय। अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक तमा कहिवाय॥
- ३३. अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक सप्तमी माय। रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, दशमें विकल्प थाय॥
  - ए रत्न सक्कर थी ५ भागा १० विकल्प करि ५० भागा कहा। हिर्व रत्न वालुक थी ४ भागा दश विकल्प करि ४० भागा कहै छै— हिर्व प्रथम विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ३४. अथवा एक रत्न इक वालुक, च्यार पक उपजंत। जाव तथा इक रत्न वालु इक, च्यार तमतमा हुंत॥

- हिवै द्वितीय विकल्प करि ४ भागा कहै छै-
- ३५. अथवा एक रत्न वे वालुक, तीन पक उपजंत। जाव तथा इक रत्न वालु वे, तीन तमतमा हुंत।। हिवै तृतीय विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ३६. अथवा दोय रत्न इक वालुक, तीन पक अघखान। जाव तथा बे रत्न वालु इक, तीन तमतमा जान।। हिवै चतुर्थ विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ३७. अथवा एक रत्न त्रिण वालुक, दोय पक दुख पूर। जाव तथा इक रत्न वालु त्रिण, दोय तमतमा भूर॥ हिवै पंचम विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—
- ३८. अथवा दोय रत्न वालु बे, दोय पक पहिछान। जाव तथा बे रत्न वालु बे, दोय तमतमा जान।। हिवै पष्टम विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ३१. अथवा तीन रत्न इक वालुक, दोय पक दुख रास। जाव तथा त्रिण रत्न वालु इक, दोय तमतमा तास।। हिवै सप्तम विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ४० अथवा एक रत्न चिउ वालुक, एक पक अवलोय। जाव तथा इक रत्न वालु चिउं, एक तमतमा होय।। हिवै अष्टम विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—
- ४१ अथवा दोय रत्न त्रिण वालु, एक पंक दुख धाम। जाव तथा वे रत्न वालु त्रिण, एक तमतमा पाम।। हिवै नवम विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ४२. अथवा तीन रत्न वे वालुक, एक पक कहिवाय। जाव तथा त्रिण रत्न वालुक वे, एक सप्तमी जाय।। हिवै दशम विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ४३. अथवा च्यार रत्न इक वालुक, एक पक में पेख। जाव तथा चिउ रत्न वालु इक एक सप्तमी लेख।। ए रत्न वालुक थी ४ भागा दश विकल्प करि ४० भागा कहा। हिवै रत्न पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा। हिवै प्रथम विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ४४. अथवा एक रत्न इक पके, च्यार धूम उपजत। जाव तथा इक रत्न पंक इक, च्यार तमतमा हुत।। हिवै द्वितीय विकल्प करि ३ भागा कहे छै—
- ४५. अथवा एक रत्न बे पके, तीन धूम रै मांय। जाव तथा इक रत्न पंक बे, तीन तमतमा पाय।। हिवै तृतीय विकल्प करि ३ भागा कहै छै---
- ४६. अथवा दोय रत्न इक पंके, तीन धूम अघलान। जाव तथा दोय रत्न पंक इक, तीन तमतमा जान।।

- हिवे चतुर्थं विकला करि ३ भांगा कहै छै-
- ४७. अथवा एक रत्न त्रिण पंके, दोय धूम दुखपूर। जाव तथा इक रत्न पंक त्रिण, दोय तमतमा भूर॥ हिवै पंचम विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
- ४८. अथवा दोय रत्न वे पंके, दोय धूम पहिछान। जाव तथा बे रत्न पक बे, दोय तमतमा जान।। हिवै षष्टम विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ४६. अथवा तीन रत्न इक पके, दोय धूम दुखरास। जाव तथा त्रिण रत्न पंक इक, दोय तमतमा तास।। हिवै सप्तम विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
- ५०. अथवा एक रत्न चिउं पके, एक धूम अवलोय। जाव तथा इक रत्न पंक चिउं, एक तमतमा होय।। हिवै अष्टम विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
- ५१. अथवा दोय रत्ने त्रिण पके, एक धूम दुखधाम। जाव तथा बे रत्न पक त्रिण, एक तमतमा पाम।। हिवै नवम विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
- ५२. अथवा तीन रत्न वे पके, एक धूम कहिवाय। जाव तथा त्रिण रत्न पंक वे, एक सप्तमी जाय।। हिवै दशम विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
- ५३. अथवा च्यार रत्न इक पके, एक धूम मे पेख। जाव तथा चिउ रत्न पक इक, एक सप्तमी लेख।। ए रत्न पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कह्या। हिनै रत्न धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा। प्रथम विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ५४. अथवा एक रत्न इक धूमा, च्यार तमा उपजंत। अथवा एक रत्न इक धूमा, च्यार तमतमा हुंत।। हिवै द्वितीय विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ५५. अथवा एक रत्न बे धूमा, तीन तमा रै माय। अथवा एक रत्न बे धूमा, तीन तमतमा जाय।। हिवै तृतीय विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ४६. अथवा दोय रत्न इक धूमा, तीन तमा अघखान। अथवा दोय रत्न इक धूमा, तीन तमतमा जान।। हिवै चतुर्थ विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ५७. अथवा एक रत्न त्रिण धूमा, दोय तमा दुखपूर। अथवा एक रत्न त्रिण धूमा, तीन तमतमा भूर॥ हिवै पचम विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ५८. अथवा दोय रत्न बे धूमा, दोय तमा पहिछान। अथवा दोय रत्न बे धूमा, दोय तमतमा जान।।

हिबै पष्टम विकल्प करि २ भागा कहै छै-

- ५६. अथवा तीन रत्न इक धूमा, दोय तमा दुखरास। अथवा तीन रत्न इक धूमा, दोय तमतमा तास॥ हिर्व सप्तम विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ६०. अथवा एक रत्न चिउं धूमा, एक तमा अवलोय। अथवा एक रत्न चिउं धूमा, एक तमतमा होय।। हिवं अष्टम विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ६१. अथवा दोय रत्न त्रिण धूमा, एक तमा दुखधाम। अथवा दोय रत्न त्रिण धूमा, एक तमतमा पाम।। हिवै नवम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—
- ६२. अथवा तीन रत्न वे घूमा, एक तमा कहिवाय। अथवा तीन रत्न वे घूमा, एक सप्तमी जाय॥ हिवै दशम विंकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ६३. अथवा च्यार रत्न इक धूमा, एक तमा मे पेख।
  अथवा च्यार रत्न इक धूमा, एक सप्तमी लेख।।
  ए रत्न धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कह्या।
  हिवै रत्न तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कहै छै—
- ६४. अथवा एक रत्न इक तमा, च्यार तमतमाः जंत। अथवा एक रत्न वे तमा, तीन तमतमा हुंत।।
- ६५. अथवा दोय रत्न इक तमा, तीन तमतमा माय। अथवा एक रत्न त्रिण तमा, दोय तमतमा जाय॥
- ६६. अथवा दोय रत्न वे तमा, दोय तमतमा जोय। अथवा तीन रत्न इक तमा, दोय तमतमा होय॥
- ६७. अथवा एक रत्न चिउं तमा, एक तमतमा पेख। अथवा दोय रत्न त्रिण तमा, एक सप्तमी लेख।।
- ६८. अथवा तीन रत्न वे तमा, एक तमातमा मांय। अथवा च्यार रत्न इक तमा, एक सप्तमी जाय।।

ए रत्न तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या । ए रत्न थी १५ भागा दश विकल्प करि १५० भागा कह्या ।

हिवै सक्कर थी दश, ते किसा ? सक्कर वालुक थी ४, सक्कर पक थी ३, सक्कर धूम थी २, सक्कर तम थी १—एव दश भागा हुवै, ते दश विकल्प करि १०० भागा हुवै ते कहै छै—

- ६१. अथवा इक सक्कर इक वालुक, च्यार पक उपजत। जावत इक सक्कर इक वालुक, चिउ सप्तमी हुत।। हिवै द्वितीय विकल्पे ४ भागा कहै छै—
- ७०. अथवा इक सक्कर बे वालुक, तीन पक मे चीन। जावत इक सक्कर बे वालुक, अघो सप्तमी तीन।। हिवै तृतीय विकल्पे ४ भागा कहै छै—
- ७१. अथवा वे सक्कर इक वालुक, तीन पंक में लीन। जावत वे सक्कर इक वालुक, अधो सप्तमी तीन।।

- हिवै चतुर्थे विकल्पे ४ भागा कहै छै-
- ७२. अथवा इक सक्कर त्रिण वालुक, दोय पक अवलोय । जावत इक सक्कर त्रिण वालुक, अधो सप्तमी दोय ।। हिवै पंचम विकल्पे ४ भागा कहै छै—
- ७३. अथवा वे सक्कर वे वालुक, दोय पक अवलोय। जावत वे सक्कर वे वालुक, अघो सप्तमी दोय॥ हिवै पण्टम विकल्पे ४ भागा कहै छै—
- ७४. अथवा त्रिण सक्कर इक वालुक, दोय पक मे होय। जावत त्रिण सक्कर इक वालुक, अधो सप्तमी दोय।। हिवै सप्तम विकल्पे ४ भांगा कहै छै—
- ७५. अथवा इक सक्कर चिउं वालुक, एक पक मे पेख। जावत इक सक्कर चिउं वालुक, अधो सप्तमी एक।। हिवै अप्टम विकल्पे ४ भागा कहै छै—
- ७६. अथवा वे सक्कर त्रिण वालुक, एक पंक मे पेख। जावत इक सक्कर चिउ वालुक, अघो सप्तमी एक॥ हिवै नवम विकल्पे ४ भांगा कहै छै—
- ७७. अथवा त्रिण सक्कर वे वालुक, एक पंक में पेख। जावत त्रिण सक्कर वे वालुक, अधो सप्तमी एक।। हिवै दगम विकल्पे ४ भागा कहै छै—
- ७८. अथवा चिउं सक्कर इक वालुक, एक पंक में पेख। जावत चिउ सक्कर इक वालुक, अधो सप्तमी एक ॥ ए सक्कर वालुक थी ४ भागा दश विकल्प करि ४० भागा कह्या। हिवै सक्कर पक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
- ७६. अथवा इक सक्कर इक पंके, च्यार धूम उपजत। जावत इक सक्कर इक पंके, चिउं सप्तमी हुंत॥
- द०. अथवा इक सक्कर वे पंके, तीन धृम रै मांय। जावत इक सक्कर वे पके, त्रिण सप्तमी जाय॥
- ५१. अथवा वे सक्कर इक पंके, तीन धूम अघखान। जावत वे सक्कर इक पंके, तीन सप्तमी जान॥
- ५२. अथवा इक सक्कर त्रिण पंके, दोय धूम दुखरास।जावत इक सक्कर त्रिण पंके, दोय सप्तमी तास।।
- द अथवा वे सक्कर वे पके, दोय धूम दुखधाम। जावत वे सक्कर वे पंके, दोय सप्तमी पाम।।
- प्तरः अथवा त्रिण सक्कर इक पके, दोय धूम मे पेख। जावत त्रिण सक्कर इक पके, दोय सप्तमी देख।।
- ५५. अथवा इक सक्कर चिउं पके, एक धूम अवलोय। जावत इक सक्कर चिउ पके, एक सप्तमी होय।।
- द६. अथवा वे सक्कर त्रिण पके, एक धूम दुख पाय। जावत वे सक्कर त्रिण पके, एक सप्तमी जाय।।

- द७. अथवा त्रिण सक्कर वे पके, एक धूम कहिवाय। जावत त्रिण सक्कर वे पंके, एक सप्तमी पाय।।
- दः अथवा चिउं सक्कर इक पके, एक धूम पहिछान। जावत चिउ सक्कर इक पंके, एक सप्तमी जान।। ए सक्कर पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कह्या। हिवै सक्कर धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहै छै—
- प्रश्. अथवा इक सक्कर इक धूमा, च्यार तमा उपजत। अथवा इक सक्कर इक धूमा, च्यार तमतमा हुत।
- ६०. अथवा इक सक्कर वे धूमा, तीन तमा रै मांय। अथवा इक सक्कर वे धूमा, तीन तमतमा जाय॥
- ६१ अथवा वे सक्कर इक धूमा, तीन तमा अघखान। अथवा बे सक्कर इक धूमा, तोन तमतमा जान।।
- ६२. अथवा इक सक्कर त्रिण धूमा, दोय तमा दुखपूर। अथवा इक सक्कर त्रिण धूमा, दोय तमतमा भूर।।
- ६३. अथवा वे सक्कर वे घूमा, दोय तमा पहिछान। अथवा वे सक्कर वे धूमा, दोय तमतमा जान।।
- ६४. अथवा त्रिण सक्कर इक धूमा, दोय तमा दुखरास। अथवा त्रिण सक्कर इक धूमा, दोय तमतमा तास।।
- ६५. अथवा इक सक्कर चिउ घूमा, एक तमा अवलोय। अथवा इक सक्कर चिउं घूमा, एक तमतमा होय।।
- ६६. अथवा वे सक्कर त्रिण धूमा, एक तमा दुखधाम। अथवा वे सक्कर त्रिण धूमा, एक तमतमा पाम।।
- ६७. अथवा त्रिण सक्कर वे धूमा, एक तमा कहिवाय। अथवा त्रिण सक्कर वे धूमा, एक सप्तमी जाय।।
- ६८. अथवा चिउं सक्कर इक धूमा, एक तमा रै माय। अथवा चिउं सक्कर इक धूमा, एक सप्तमी थाय।। ए सक्कर धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहा। हिवै सक्कर तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कही छै—
- ६६. अथवा इक सक्कर इक तमा, च्यार तमतमा जंत । अथवा इक सक्कर वे तमा, तीन तमतमा हुंत ॥
- १०० अथवा वे सक्कर इक तमा, तीन तमतमा माय। अथवा इक सक्कर त्रिण तमा, दोय तमतमा ताय।।
- १०१. अथवा व सक्कर वे तमा, दोय तमतमा मांय। अथवा त्रिण सक्कर एक तमा, दोय तमतमा जाय।।
- १०२. अथवा इक सक्कर चिउ तमा, एक तमतमा देख। अथवा वे सक्कर त्रिण तमा, एक तमतमा पेख।
- १०३. अथवा त्रिण सक्कर वे तमा, एक तमतमा होय। अथवा चिउ सक्कर इक तमा, एक तमतमा जोय।।

ए सक्कर तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या। एव सक्कर थी १० भागा दश विकल्प करि १०० भागा कह्या। हिनै वालुक थी ६ भागा, ते किसा ? वालु पक थी ३, वालु धूम थी २, वालु तम थी १--एवं वालु थी ६, ते दश विकल्प करि ६० भांगा हुवै, तिहां वालु पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि कहै छै--

१०४. अथवा इक वालुक इक पंके, च्यार धूम उपजंत। जावत इक वालू पंके इक, च्यार तमतमा हुंत।। १०५. अथवा इक वालू वे पके, तीन धूम रै मांय। जावत इक वालू पंके वे, तीन तमतमा पाय।। १०६. अथवा वे वालुक इक पंके, तीन धूम अघखान। जावत वे वालू पके इक, तीन तमतमा जान।। १०७. अथवा इक वालुक त्रिण पंके, दोय धूम दुखपूर। जावत इक वालू पंके त्रिण, दोय तमतमा भूर।। १०८. अथवा वे वालुक वे पंके, दोय धूम पहिछान। जावत वे वालू पके वे, दोय तमतमा जान।। १०६. अथवा त्रिण वालुक इक पके, दोय धूम दुखरास। जावत त्रिण वालू पंके इक, दोय तमतमा तास ॥ ११०. अथवा इक वालुक चिउं पके, एक धूम अवलोय। जावत इक वालू पंके चिउं, एक तमतमा होय॥ १११. अथवा वे वालू पके त्रिण, एक धूम दुखधाम। जावत वे वालू पके त्रिण, एक तमतमा पाम।। ११२. अथवा त्रिण वालुक वे पंके, एक धूम कहिवाय। जावत त्रिण वालू पके बे, एक सप्तमी जाय।। ११३. अथवा चिउं वालुक इक पंके, एक धूम में पेख। जावत चिउ वालू पके इक, एक सप्तमी लेख।। ए वालु पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कह्या। हिवै वालुक धूम थी २ भागा दश विकल्प करि कहै छै-

११४. अथवा इक वालू इक घूमा, च्यार तमा उपजंत। अथवा इक वालुक इक घूमा, च्यार तमतमा हुंत।।

११५ अथवा इक वालुक वे धूमा, तीन तमा दुख पाय।
अथवा इक वालुक वे धूमा, तीन तमतमा जाय।।
११६ अथवा वे वालुक इक धूमा, तीन तमा अधखान।
अथवा वे वालुक इक धूमा, तीन तमतमा जान।।

११७. अथवा इक वालू त्रिण धूमा, दोय तमा दुखपूर। अथवा इक वालु त्रिण धूमा, दोय तमतमा भूर॥

११८. अथवा वे वालुक वे घूमा, दोय तमा पहिछान। अथवा वे वालुक वे घूमा, दोय तमतमा जान।।

११६. अथवा त्रिण वालू इक घूमा, दोय तमा दुखरास।

अथवा त्रिण वालू इक घूमा, दोय तमतमा तास ॥ १२०. अथवा इक वालुक चिउं घूमा, एक तमा अवलोय । अथवा इक वालुक चिउं घूमा, एक तमतमा होय ॥

१२१. अथवा वे वालुक त्रिण धूमा, एक तमा दुखधाम । अथवा वे वालु त्रिण धूमा, एक तमतमा पाम ।। १२२. अथवा त्रिण वालुक वे धूमा, एक तमा कहिवाय।
अथवा त्रिण वालुक वे धूमा, एक सप्तमी जाय।।
१२३. अथवा चिउं वालुक इक धूमा, एक तमा मे पेख।
अथवा चिउं वालुक इक धूमा, एक सप्तमी लेख।।
ए वालु धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कही।
हिवै वालुक तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भागा कहै छै—

१२४. अथवा इक वालुक इक तमा, च्यार तमतमा जत।
अथवा इक वालू वे तमा, तीन तमतमा हुंत।।
१२५. अथवा वे वालु इक तमा, तीन तमतमा मांय।
अथवा इक वालू त्रिण तमा, दोय तमतमा पाय।।
१२६. अथवा वे वालू वे तमा, दोय तमतमा मांय।
अथवा त्रिण वालू इक तमा, दोय तमतमा जाय।।
१२७. अथवा इक वालू चिउं तमा, एक तमतमा जोय।
अथवा वे वालू त्रिण तमा, एक तमतमा जोय।
१२८. अथवा त्रिण वलू वे तमा, एक तमतमा पेख।
अथवा चिहुं वालू इक तमा, एक सप्तमी लेख।।

ए वालु तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या। एव वालुक थी ६ भागा दश विकल्प करि ६० भागा कह्या।

हिवै पक थी ३ भागा, ते किसा ? पंक धूम थी २, पक तम थी १, तिहा पक धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहै छै—

१२६. अथवा एक पंक इक धूमा, च्यार तमा उपजंत । अथवा एक पक इक धूमा, च्यार तमतमा हुत ॥ १३०. अथवा एक पक वे धूमा, तीन तमा दुख पाय । अथवा एक पंक वे धूमा, तीन तमतमा जाय ॥ १३१. अथवा दोय पंक इक धूमा, तीन तमतमा जोय ॥ अथवा दोय पंक इक धूमा, तीन तमतमा जोय ॥ १३२. अथवा एक पंक त्रिण धूमा, दोय तमा दुखरास । अथवा एक पंक त्रिण धूमा, दोय तमतमा तास ॥ १३३. अथवा दोय पंक वे धूमा, दोय तमतमा पाम ॥ १३४. अथवा दोय पंक वे धूमा, दोय तमतमा पाम ॥ १३४. अथवा त्रिण पके इक धूमा, दोय तमतमा तास ॥ १३४. अथवा त्रिण पके इक धूमा, दोय तमतमा तास ॥ १३५. अथवा एक पंक चिउं धूमा, एक तमा पहिछान । अथवा एक पंक चिउं धूमा, एक तमा पहिछान । अथवा एक पंक चिउं धूमा, एक तमतमा जान ॥

१३६. अथवा दोय पंक त्रिण धूमा, एक तमा मे पेख। अथवा दोय पक त्रिण धूमा, एक तमतमा लेख।।

१३७. अथवा तीन पक वे धूमा, एक तमा कहिवाय।
अथवा तीन पक वे धूमा, एक सप्तमी जाय।।
१३८. अथवा च्यार पक इक धमा, एक तमा अघखान।

१३८. अथवा च्यार पक इक धूमा, एक तमा अधखान। अथवा च्यार पक इक धूमा, एक तमतमा जान।।

ए पक घूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कह्या।

हिवै पंक तम थी १ भांगी दण विकल्प करि १० भागा कहै छै-

च्यार तमतमा जंत। १३६. अथवा एक पंक इक तमा, अथवा एक पंक वे तमा, तीन तमतमा हूंत।। १४०. अथवा दोय पंक इक तमा, तीन तमतमा माय। अथवा एक पंक त्रिण तमा, दोय तमतमा जाय ॥ १४१. अथवा दोय पंक वे तमा, दोय तमतमा देख। अथवा तीन पंक इक तमा, दोय तमतमा पेख ॥ १४२. अथवा एक पंक चिउं तमा, एक तमतमा देख। अथवा दोय पक त्रिण तमा, एक तमतमा पेख ॥ १४३ अथवा तीन पक वे तमा, एक तमतमा पाय। अथवा च्यार पक इक तमा, एक तमतमा जाय ॥ ए पक तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या। ए पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कह्या। हिवै घूम थी १ भागो दण विकल्प करि १० भागा कहै छै-

१४४. अथवा एक धूम इक तमा, च्यार तमतमा हुत। अथवा एक धूम वे तमा, तीन तमतमा जंत।।
१४५. अथवा दोय धूम इक तमा, तीन तमतमा देख। अथवा एक धूम त्रिण तमा, दोय तमतमा पेख।।
१४६. अथवा दोय धूम वे तमा, दोय तमतमा जान। अथवा तीन धूम इक तमा, दोय तमतमा मान।।
१४७. अथवा एक धूम चिउं तमा, एक तमतमा देख। अथवा दोय धूम त्रिण तमा, एक तमतमा देख।
१४८. अथवा तीन धूम इक तमा, दोय तमतमा होय।
अथवा च्यार धूम इक तमा, एक तमतमा होय।

ए घूम थी दम विकल्प करि १० भागा कह्या। एव रत्न थी १५०, सक्कर थी १००, वालुक थी ६०, पंक थी ३०, घूम थी १० मर्व विकसंजीगिया छह जीव नां ३५० भागा जाणवा।

छह जीव नां त्रिकसंजोगिया रतन थी १४, मनकर थी १०, वालुक थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—एवं ३४, दण विकरप किर ३४० भागा कह्या। तिहा रतन थी १४ ते किसा १ रतन मनकर थी ४, रतन वालुक थी ४, रतन पक थी ३, रतन धूम थी २, रतन तम थी १—एवं १४ भागा, दण विकरप किरकी १५० भागा रतन थी हुवे। तिहां रतन मकतर थी ४ भागा प्रथम विकरप किर कहे छै—

१	ş	१ रत्न, १ सक्कर, ४ बालु
२	ર	१ रत्न, १ सक्कर, ४ पंक
3,	a,	१ रतन, १ सक्कर, ४ धूम
૪	ч	१ रतन, १ सक्कर, ४ तम
y.	ų	१ रतन, १ सक्कर, ४ सप्तमी

रत्न	सक्कर	थी ५ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—
LY.	१	१ रत्न, २ सक्कर, ३ वालु
७	२	१ रत्न, २ सक्कर, ३ पंक
5	32	१ रत्न, २ सक्कर, ३ धूम
3	8	१ रत्न, २ सक्कर, ३ तम
१०	ų	१ रत्न, २ सक्कर, ३ सप्तमी
रत्त	सवकर	थी ५ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै—
११	१	२ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु
१२	२	२ रत्न, १ सक्कर, ३ पक
१३	ą	२ रत्न, १ सक्कर, ३ धूम
१४	४	२ रत्न, १ सक्कर, ३ तम
१५	X	२ रत्न, १ सक्कर, ३ सप्तमी
हिर्द	रत्न स	तक्कर थी ५ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—
१६	१	१ रत्न, ३ सक्कर २ वालु
१७	२	१ रत्न, ३ सक्कर, २ पक
१=	n n	१ रत्न, ३ सक्कर, २ धूम
38	8	१ रत्न, ३ सक्कर, २ तम
२०	¥	१ रत्न, ३ सक्कर, २ सप्तमी
हिं	नै रतन	सक्कर थी ५ भागा पचम विकल्प करि कहै छै-
२१	१	२ रत्न, २ सक्कर, २ वालु
२२	२	२ रत्न, २ सक्कर, २ पक
२३	TR.	२ रत्न, २ सक्कर, २ धूम
२४	8	२ रत्न, २ सनकर, २ तम
२५	×	२ रत्न, २ सक्कर, २ सप्तमी

हिवै	रत्न स	तक्कर थी ५ भांगा छठै विवल्प करि कहै छै—
२६	१	३ रत्न, १ सक्कर, २ वालु
२७	२	३ रत्न, १ सक्कर, २ पक
२६	a.	३ रत्न, १ सक्कर, २ धूम
38	8	३ रत्न, १ सक्कर, २ तम
३०	પ્ર	३ रत्न, १ सक्कर, २ सप्तमी
हिवै	रत्न स	सक्कर थी ५ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै—
38	१	१ रत्न, ४ सक्कर, १ वालु
३२	२	१ रत्न, ४ सक्कर, १ पंक
<b>३३</b>	३	१ रत्न, ४ सक्कर, १ घूम
₹¥ 	8	१ रत्न, ४ सक्कर, १ तम
३५	×	१ रत्न, ४ सक्कर, १ सप्तमी
- हिवै	रत्न स	तक्कर थी ५ भागा अष्टम विकल्प करि कहै छै—
३६	8	२ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु
३७	२	२ रत्न, ३ सक्कर, १ पक
₹म,	₹	२ रत्न, ३ सक्कर, १ घूम -
38	٤	२ रत्न, ३ सक्कर, १ तम
४०	_ &_	२ रत्न, ३ सक्कर,१-सप्तमी
ृ हिवै	रत्न स	क्कर थी ५ भागा नवम विकल्प करि कहै छै
४१	?	३ रत्न, २ सक्कर, १ वालु
४२	२	३ रत्न, २ सक्कर, १ पक
83	3	३ रतन, २ सक्कर, १ धूम
88	8	३ रत्न, २ सक्कर, १ तम
	<u> </u>	

४६     १     ४ रत्न, १ सक्कर, १ वालु       ४७     २     ४ रत्न, १ सक्कर, १ पक       ४८     ३     ४ रत्न, १ सक्कर, १ धूम       ४६     ४     ४ रत्न, १ सक्कर, १ तम
४८ ३ ४ रत्न, १ सक्कर, १ धूम
४६ ४ ४ रत्त १ सक्तर १ तम
- Control And
५० ५ ४ रत्न, १ सक्कर, १ सप्तमी
रत्त सक्कर थी ५ भागा ते दश विकल्प करि ५० भागा कह्या।
हिवै रत्त वालुक थी ४ भागा, ते दश विकल्य करि ४० भागा कहै छै । इहा रत्य वालुक थी ४ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
५१ १ रहन, १ बालु, ४ पक
५२ २ १ रत्न, १ वालु, ४ धूम
५३ ३ १ रत्न, १ वालु, ४ तम
५४ ४ १ रतन, १ वालु, ४ सप्तमी
हिवै रत्व बालुक थी ४ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—
५५ १ १ रत्न, २ वालु, ३ पक
५६ २ १ रतन, २ वालु, ३ धूम
५७ ३ १ रतन, २ वालु, ३ तम
४म ४ १ रत्न, २ वालु, ३ सप्तमी
हिनै रत्न वालुक थी ४ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै —
५६ १ २ रत्न, १ वालु, ३ पक
६० २ २ रत्न, १ वालु, ३ धूम
६१ ३ २ रत्न, १ वालु, ३ तम
६२ ४ २ रत्न, १ वालु, ३ सप्तमी

हिंचै रहा वालुक थी ४ भागा चतुर्थ विकल्प किर कहै छै—  ६३ १ १ रत्त, ३ वालु, २ पक  ६४ २ १ रत्त, ३ वालु, २ तम  ६६ ४ १ रत्त, ३ वालु, २ तम  ६६ ४ १ रत्त, ३ वालु, २ सप्तभी  हिंचै रता वालुक थी ४ भागा पत्रम विकल्प किर कहै छै—  ६७ १ २ रत्त, २ वालु, २ पक  ६६ २ २ रत्त, २ वालु, २ पक  ६६ ३ २ रत्त, २ वालु, २ तम  ७० ४ २ रत्त, २ वालु, २ तम  ७० ४ २ रत्त, २ वालु, २ तम  ७० १ ३ रत्त, १ वालु, २ तम  ७० १ ३ रत्त, १ वालु, २ पक  ७२ २ ३ रत्त, १ वालु, २ पक  ७२ २ ३ रत्त, १ वालु, २ तम  ७४ १ १ रत्त, १ वालु, २ तम  ७४ १ १ रत्त, १ वालु, २ तम  ७४ १ १ रत्त, ४ वालु, १ स्प्तमी  हिंचै रत्त वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—  ७४ १ १ रत्त, ४ वालु, १ तम  ७६ २ १ रत्त, ४ वालु, १ तम  ७६ २ १ रत्त, ४ वालु, १ सत्तमी  हिंचै रत्त वालुक थी ४ भागा अण्टम विकल्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ४ वालु, १ सत्तमी  हिंचै रत्न वालुक थी ४ भागा अण्टम विकल्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ सत्तमी  हिंचै रत्न वालुक थी ४ भागा अण्टम विकल्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ५० १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ५० १ २ रत्न, ३ वालु, १ स्प्तमी  ६० २ २ रत्न, ३ वालु, १ स्प्तमी		·····	
६४ २ १ रत्न, ३ बालु, २ धूम  ६५ ३ १ रत्न, ३ बालु, २ तम  ६६ ४ १ रत्न, ३ बालु, २ नम्प्तमी  हिनै रत्न बालुक थी ४ भागा पचम विकत्न करि कहै छै—  ६७ १ २ रत्न, २ बालु, २ धूम  ६६ ३ २ रत्न, २ बालु, २ धूम  ६६ ३ २ रत्न, २ बालु, २ धूम  ६६ ३ २ रत्न, २ बालु, २ तम  ७० ४ २ रत्न, २ बालु, २ तम  ७० ४ १ रत्न, १ बालु, २ सप्तनी  हिनै रत्न बालुक थी ४ भागा पष्ठ विकत्न करि कहै छै—  ७१ १ ३ रत्न, १ बालु, २ प्रम  ७३ ३ २ रत्न, १ बालु, २ सप्तमी  हिनै रत्न बालुक थी ४ भागा सप्तम विकत्न करि कहै छै—  ७४ १ १ रत्न, ४ बालु, १ स्मम  ७५ १ १ रत्न, ४ बालु, १ धूम  ७७ ३ १ रत्न, ४ बालु, १ धूम  ७७ ३ १ रत्न, ४ बालु, १ स्मामी  हिनै रत्न बालुक थी ४ भागा अप्टम विकत्न करि कहै छै—  ७६ १ १ रत्न, ४ बालु, १ स्मामी  हिनै रत्न बालुक थी ४ भागा अप्टम विकत्न करि कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ बालु, १ स्मामी  हिनै रत्न बालुक थी ४ भागा अप्टम विकत्न करि कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ बालु, १ सम्म  ६० २ १ रत्न, ३ बालु, १ पक	हिवै	रताव	। तुक थी ४ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—
६५ ३ १ रत्न, ३ वालु, २ तम  ६६ ४ १ रत्न, ३ वालु, २ मप्तभी  हिर्व रत्न वालुक थी ४ भागा पचम विकल्प किर कहे छै—  ६७ १ २ रत्न, २ वालु, २ प्रम  ६६ २ २ रत्न, २ वालु, २ प्रम  ६६ ३ २ रत्न, २ वालु, २ तम  ७० ४ २ रत्न, २ वालु, २ तम  ७० ४ २ रत्न, २ वालु, २ तम  ७० १ ३ रत्न, १ वालु, २ तम  ७२ २ ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम  ७२ २ ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम  ७३ ३ २ रत्न, १ वालु, २ तम  ७४ ४ ३ रत्न, १ वालु, २ तम  ७४ ४ १ रत्न, १ वालु, २ तम  ७६ २ १ रत्न, ४ वालु, १ प्रम  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ प्रम  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ प्रम  ०६ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ प्रम  ०६ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ प्रम  ०६ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ प्रम	६३	१	१ रत्न, ३ वालु, २ पक
हिंदी रत्न वालुक थी ४ भागा पचम विकल्प किर कहे छै—  ६७ १ २ रत्न, २ वालु, २ प्रम  ६० १ २ रत्न, २ वालु, २ प्रम  ६० ३ २ रत्न, २ वालु, २ प्रम  ६० ४ २ रत्न, २ वालु, २ प्रम  ७० ४ २ रत्न, २ वालु, २ सप्तनी  हिंदी रत्न वालुक थी ४ भागा पष्ठ विकल्प किर कहे छै—  ७१ १ ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम  ७२ २ ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम  ७३ ३ ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम  ७३ ३ १ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी  हिंदी रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहे छै—  ७५ १ १ रत्न, ४ वालु, १ प्रम  ७६ २ १ रत्न, ४ वालु, १ स्तम  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ स्तम  ६६वे रत्न वालुक थी ४ भागा अप्टम विकल्प किर कहे छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ प्रक  ६० २ २ रत्न, ३ वालु, १ प्रक  ६० २ २ रत्न, ३ वालु, १ प्रम  ६० २ २ रत्न, ३ वालु, १ प्रम	६४	२	१ रत्न, ३ वालु, २ धूम
हिबै रत्त बालुक थी ४ भागा पत्रम विकल्प किर कहै छै—  ६७ १ २ रत्न, २ बालु, २ प्रम  ६६ २ २ रत्न, २ बालु, २ प्रम  ६६ ३ २ रत्न, २ बालु, २ तम  ७० ४ २ रत्न, २ बालु, २ तम  ७० ४ २ रत्न, २ बालु, २ त्यन्नो  हिबै रत्न बालुक थी ४ भागा पष्ठ विकल्प किर कहै छै—  ७१ १ ३ रत्न, १ बालु, २ प्रम  ७३ ३ ३ रत्न, १ बालु, २ तम  ७४ ४ ३ रत्न, १ बालु, २ तम  ७४ ४ ३ रत्न, १ बालु, २ तम  ७४ १ १ रत्न, ४ बालु, २ तम  ७६ २ १ रत्न, ४ बालु, १ प्रम  ७७ ३ १ रत्न, ४ बालु, १ प्रम  ७७ ३ १ रत्न, ४ बालु, १ तम  ७६ १ २ रत्न, ४ बालु, १ सातमी  हिबै रत्न बालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ बालु, १ पक  ०६ १ २ रत्न, ३ बालु, १ पक  ०६ १ २ रत्न, ३ बालु, १ पक	६५	PA.	१ रत्न, ३ वालु, २ तम
६७       १       २ रत्न, २ वालु, २ प्रम         ६०       २       २ रत्न, २ वालु, २ प्रम         ६०       ४       २ रत्न, २ वालु, २ त्तम         ७०       ४       २ रत्न, २ वालु, २ त्तम         ७०       १       ३ रत्न, १ वालु, २ पंक         ७२       २       ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम         ७२       २       ३ रत्न, १ वालु, २ त्तम         ७४       ४       ३ रत्न, १ वालु, २ तम         ७४       १       १ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै—         ७५       १       १ रत्न, ४ वालु, १ प्रम         ७७       ३       १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अण्टम विकल्प करि कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ०६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ००       २       २ रत्न, ३ वालु, १ प्रम         ००       २       २ रत्न, ३ वालु, १ स्म         ००       २       २ रत्न, ३ वालु, १ स्म         ००       २       २ रत्न, ३ वालु, १ स्म	६६	४	१ रत्न, ३ वालु, २ सप्तभी
६६       २       २       रत्त, २ बालु, २ घूम         ७०       ४       २       रत्त, २ बालु, २ तम         ७०       ४       २       रत्त, २ बालु, २ सप्तनी         हिव रत्त बालुक थी ४ भागा पट्ठ विकल्प किर कहै छै—         ७२       २       ३       रत्त, १ बालु, २ धूम         ७३       ३       ३       रत्त, १ बालु, २ सप्तमी         हिव रत्त बालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—         ७५       १       १       रत्त, ४ बालु, १ पक         ७६       २       १ रत्त, ४ बालु, १ सातमी         हिव रत्न बालुक थी ४ भागा अण्डम विकल्प किर कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ बालु, १ पक         ७६       १       २ रत्न, ३ बालु, १ पक         ५       २ रत्न, ३ बालु, १ स्म         ५       २ रत्न, ३ बालु, १ सम         ०६       १       २ रत्न, ३ बालु, १ सम         ५       २ रत्न, ३ बालु, १ सम	हिर्व	रत्न व	गालुक थी ४ भागा पचम विकल्प करि कहै छै—
६६       ३       २ रत्त, २ वालु, २ तम         ७०       ४       २ रत्त, २ वालु, २ सप्तनी         हिर्व रत्न वालुक थी ४ भांगा पष्ठ विकल्प किर कहै छै—         ७१       १       ३ रत्न, १ वालु, २ पंक         ७२       २       ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम         ७३       ३       ३ रत्न, १ वालु, २ तम         ७४       ४       ३ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी         हिर्व रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—         ७६       २       १ रत्न, ४ वालु, १ धूम         ७७       ३       १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी         हिर्व रत्न वालुक थी ४ भागा अण्टम विकल्प किर कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ५       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ५       २ रत्न, ३ वालु, १ पक	६७	१	२ रत्न, २ वालु, २ पक
७०       ४       २ रत्न, २ बालु, २ सप्तनी         हिर्व रत्न बालुक थी ४ भागा पष्ठ विकल्प किर कहै छै—         ७१       १       ३ रत्न, १ बालु, २ प्रम         ७२       २       ३ रत्न, १ बालु, २ सप्तमी         ७४       ४       ३ रत्न, १ बालु, २ सप्तमी         हिर्व रत्न बालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—         ७५       १       १ रत्न, ४ बालु, १ पक         ७६       २       १ रत्न, ४ बालु, १ स्तम         ७५       ३       १ रत्न, ४ बालु, १ सातमी         हिर्व रत्न बालुक थी ४ भागा अण्डम विकल्प किर कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ बालु, १ पक         ५       २ रत्न, ३ बालु, १ पक         ५       २ रत्न, ३ बालु, १ पक         ५       २ रत्न, ३ बालु, १ पक	६८	२	२ रत्न, २ वालु, २ घूम
हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा पष्ठ विकल्प कि कहै छै—  ७१ १ ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम  ७२ २ ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम  ७३ ३ ३ रत्न, १ वालु, २ तम  ७४ ४ ३ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी  हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प कि कहै छै—  ७५ १ १ रत्न, ४ वालु, १ प्रम  ७६ २ १ रत्न, ४ वालु, १ प्रम  ७६ ४ १ रत्न, ४ वालु, १ स्तम  ७६ ४ १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी  हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ८० २ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ८० २ २ रत्न, ३ वालु, १ प्रम  ८१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ स्म	ક્રફ	ą	२ रत्न, २ वालु, २ तम
७१       १       ३ रत्न, १ वालु, २ पंक         ७२       २       ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम         ७३       ३       ३ रत्न, १ वालु, २ तम         ७४       ४       ३ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—         ७५       १       १ रत्न, ४ वालु, १ पक         ७६       २       १ रत्न, ४ वालु, १ प्रम         ७५       ३       १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अण्टम विकल्प किर कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ५       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ५       २ रत्न, ३ वालु, १ सम         ५       २ रत्न, ३ वालु, १ सम	७०	8	२ रत्न, २ वालु, २ सप्तनी
७२ २ ३ रत्न, १ वालु, २ धूम  ७३ ३ ३ रत्न, १ वालु, २ तम  ७४ ४ ३ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी  हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै—  ७५ १ १ रत्न, ४ वालु, १ पक  ७६ २ १ रत्न, ४ वालु, १ धूम  ७७ ३ १ रत्न, ४ वालु, १ तम  ७६ ४ १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी  हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प करि कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ६० २ २ रत्न, ३ वालु, १ धूम  ६१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ सम	हिवै	रत्न व	गालुक थी ४ भांगा पष्ठ विकल्प करि कहै छै—
७३ ३ ३ रत्न, १ वालु, २ तम  ७४ ४ ३ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी  हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—  ७५ १ १ रत्न, ४ वालु, १ पक  ७६ २ १ रत्न, ४ वालु, १ धूम  ७७ ३ १ रत्न, ४ वालु, १ तम  ७६ ४ १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी  हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ८० २ २ रत्न, ३ वालु, १ धूम  ८१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम	७१	१	३ रत्न, १ वालु, २ पंक
७४ ४ ३ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी  हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—  ७५ १ १ रत्न, ४ वालु, १ पक  ७६ २ १ रत्न, ४ वालु, १ धूम  ७७ ३ १ रत्न, ४ वालु, १ तम  ७६ ४ १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी  हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अप्टम विकल्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ६० २ २ रत्न, ३ वालु, १ धूम  ६१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम	७२	२	३ रत्न, १ वालु, २ धूम
हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै— ७५ १ रत्न, ४ वालु, १ घूम ७७ ३ १ रत्न, ४ वालु, १ घूम ७७ ३ १ रत्न, ४ वालु, १ तम ७६ ४ १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अण्टम विकल्प किर कहै छै— ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक ६० २ २ रत्न, ३ वालु, १ घूम ६१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम	७३	ą	३ रत्न, १ वालु, २ तम
७५       १ रत्न, ४ वालु, १ प्रम         ७७       ३ १ रत्न, ४ वालु, १ तम         ७५       ४ १ रत्न, ४ वालु, १ तम         ७६       ४ १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अण्टम विकल्प करि कहै छै—         ७६       १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ६०       २ २ रत्न, ३ वालु, १ धूम         ६१       ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम	७४	٧	३ रस्न, १ वालु, २ सप्तमी
७६       २       १ रत्न, ४ वालु, १ घूम         ७७       ३       १ रत्न, ४ वालु, १ तम         ७८       ४       १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अप्टम विकल्प करि कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ८०       २       २ रत्न, ३ वालु, १ घूम         ८१       ३       २ रत्न, ३ वालु, १ तम	हिर्व	रत्न व	वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै—
७७       ३       १ रत्न, ४ वालु, १ तम         ७८       ४       १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अप्टम विकल्प किर कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ८०       २       २ रत्न, ३ वालु, १ धूम         ८१       ३       २ रत्न, ३ वालु, १ तम	७५	१	१ रत्न , ४ वालु, १ पक
७८ ४ १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी हिनै रत्न वालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प किर कहै छै— ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक ८० २ २ रत्न, ३ वालु, १ धूम ८१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम	७६	२	१ रत्न, ४ वालु, १ घूम
हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प किर कहै छै— ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक ६० २ २ रत्न, ३ वालु, १ धूम ६१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम	७७	ą	१ रत्न, ४ वालु, १ तम
७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक ६० २ २ रत्न, ३ वालु, १ घूम ६१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम	৩5	8	१ रत्न, ४ वालु, १ सातमी
द० २ २ रत्न, ३ वालु, १ घूम द१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम	हिं	रहन व	गालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प करि कहै छै—
<b>८१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम</b>	૭૯	१	२ रत्न, ३ वालु, १ पक
1 1 37 (1)	೯೦	२	२ रत्न, ३ बालु, १ घूम
दर ४ रहन, ३ बालु, १ सप्तमी	58	ą	२ रत्न, ३ वालु, १ तम
	<del>द</del> २	8	२ रत्न, ३ बालु, १ सप्तमी

हिवै	रत्न व	ालुक थी ४ भागा नवम विकल्प करि कहै छै—
<sub>5</sub> श्	१	३ रत्न, २ वालु, १ पक
দ্বধ	२	३ रत्न, २ वालु, १ धूम
<b>5</b> X	3,	३ रत्न, २ वालु, १ तम
58	8	३ रत्त, २ वालु, १ सप्तमी
हिं	ने रहन व	वालुक थी ४ भागा दशम विकल्प करि कहै छै—
59	१	४ रत्न, १ वालु, १ पक
55	२	४ रत्न, १ वालु, १ घूम
দং	3	४ रत्न, १ बालु, १ तम
٥ع	8	४ रत्न, १ वालु, १ सप्तमी
रत्न	ापक र्थ	तुक थी ४ भागा, ते दश विकल्प करि ४० भागा कह्या। ो ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा। हिवै ो ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
83	१	१ रत्न, १ पक, ४ घूम
६२	२	१ रता, १ पक, ४ तम
६३	1	
	₹	१ रहा, १ पक, ४ सप्तमी
हि	1	१ रहर, १ पक, ४ सप्तमी पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—
हि १४	1	i
	। वै रता	पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—
8 x 8 x	वै रहा   १   २   ३	पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—  १ रता, २ पक, ३ धूम  १ रता, २ पक, ३ तम  १ रता, २ पक, ३ सप्तमी
8 ४ 8 ४ 8 ६ हिंद	वै रता १	पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—  १ रत्न, २ पक, ३ धूम  १ रत्न, २ पक, ३ तम  १ रत्न, २ पक, ३ सप्तमी  एक थी ३ भागा तृतीय विकल्म करि कहै छै —
8 x 8 x	वै रता   १   २   ३	पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—  १ रता, २ पक, ३ धूम  १ रता, २ पक, ३ तम  १ रता, २ पक, ३ सप्तमी  पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै —  २ रता, १ पक, ३ धूम
8 ४ 8 ४ 8 ६ हिंद	वै रता १	पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—  १ रत्न, २ पक, ३ धूम  १ रत्न, २ पक, ३ तम  १ रत्न, २ पक, ३ सप्तमी  एक थी ३ भागा तृतीय विकल्म करि कहै छै —

हिवै	रतन	पंक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—
१००	8	१ रत्न, ३ पक, २ धूम
१०१	7	१ रत्न, ३ पक, २ तम
१०२	37	१ रत्न, ३ पक, २ सप्तमी
हिवै	रत्न प	पक थी ३ भागा पचम विकल्प करि कहै छै—
१०३	१	२ रत्न, २ पक, २ धूम
१०४	२	२ रत्न, २ पक, २ तम
१०५	3	२ रत्न, २ पक, २ सप्तमी
हिंवै	रत्न व	ांक थी ३ भागा पष्ठ विकल्प करि कहै छै —
१०६	8	३ रत्न, १ पक, २ धूम
१०७	२	३ रत्न, १ पक, २ तम
१०५	B	३ रत्न, १ पक, २ सप्तमी
हिवै	रत्न प	iक थी ३ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै —
३०१	१	१ रत्न, ४ पंक, १ धूम
११०	२	१ रहन, ४ पक, १ तम
१११	37	१ रत्न, ४ पक, १ सप्तमी
हिवै	रत्न प	कं थी ३ भागा अष्टम विकल्प करि कहै छै –
११२	8	२ रत्न, ३ पक, १ धूम
११३	२	२ रत्न, ३ पक, १ तम
888	Ŋ	२ रत्न, ३ पक, १ सप्तमी
हिवै	रत्न प	क थी ३ भागा नवम विकल्प करि कहै छै
११४	8	३ रत्न, २ पक, १ धूम
११६	₹	३ रत्न, २ पंक, १ तम
११७	7	३ रत्त, २ पक, १ सप्तमी

हिवै	रत्न प	नक थी ३ भागा दशम विकल्प करि कहै छै
११८	१	४ रत्न, १ पक, १ घूम
११६	२	४ रत्न, १ पक, १ तम
१२०	ą	४ रत्न, १ पंक, १ सप्तमी
हिवै	रत ध	त्थी ३ भागादश विकल्प करि ३० भागाकह्या। पूम थीदण विकल्प करि २० भागा कह्या। ते ल्प करि २ भागाकहै छै—
१२१	१	१ रत्न, १ धूम, ४ तम
१२२	२	१ रत्न, १ घूम, ४ सप्तमी
हिवै	रत्न ध्	म थी २ भागा दितीय विकल्प करि कहै छै
१२३	१	१ रत्न, २ घूम, ३ तम
१२४	२	१ रत्न, २ धूम, ३ मप्तमी
हिवै	रत्न ध्	म थी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै—
१२५	१	२ रत्न, १ धूम, ३ तम
१२६	२	२ रत्न, १ धूम, ३ सप्तमी
हिवै	रत्न धृ	म थी २ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै -
१२७	१	१ रत्न, ३ घूम, २ तम
१२८	٦	१ रत्न, ३ धूम, २ सप्तमी
हिवै	रत्न धृ	म थी २ भागा पचम विकल्प करि कहै छै —
१२६	8	२ रतन, २ धूम, २ तम
१३०	२	२ रतन, २ घूम, २ सप्तमी
हिबै	रता धृ	म थी २ भागा पष्ठ विकल्प करि कहे छै—
१३१	3	३ रत्न, १ धूम, २ तम
१३२	२	३ रत्त, १ धूम, २ मप्तमी
		The state of the s

-		
हिंद	ते रस्त १ -	यूम थी २ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै –
१३३ ——	<u>१</u>	१ रतन, ४ धूम, १ तम
१३४	२	१ रत्न, ४ घूम, १ सप्तमी
हिल	वै रतन	घूम थी २ भागा अप्टम विकत्प करि कहै छै —
१३५	1 8	२ रत्न, ३ घूम, १ तम
१३६	२	२ रत्न, ३ धूम, १ सप्तमी
हिं	वै रहन ।	यूम थी २ भागा नवम विकल्प करि कहै छै —
१३७	8	३ रत्न, २ धूम, १ तम
१३८	२	३ रत्न, २ धूम, १ मप्नमी
हिवं	रहा	रूत थी २ भागा दशम क्किटन करि कहै <del>छै</del> –
3 🕫 🤊	१	४ रत्न, १ धूम, १ तम
१४०	२	४ रत्न, १ घूम, १ सप्तभी
ए र	रन धूम	थी २ भागा १० विकल्प करि २० भांगा कह्या।
हिवँ	रत्न त	म थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै 🕏 —
१४१	१	१ रतन, १ तम, ४ सप्तनी
रत्न	तम थी	१ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—
१४२	8	१ रतन, २ तम, ३ सप्तभी
हिवै	रता तम	ा थी १ भांगो तृतीय विकत्त्र किर कहै <del>छै</del> —
१४३	8	२ रतन, १ तम, ३ सप्तमी
हिवै	रत्न तम	थी १ भागो चतुर्थं विकल्य करि कहै छै-
१४४	१	१ रत्न, ३ तम, २ सप्तमी
हिवें	रत्न तम	थी १ भागो पचम विकल्प करि कहे छैं —
१४४	१	२ रत्न, २ तम, २ सप्तमी
हिवै	रत्न तम	थी १ भागो पष्ठ विकल्प करि कहै छै—
१४६	8	३ रत्न, १ तम, २ सप्तमी

हिवै रत्न तन थी १ भागो सप्तम विकल्प करि कहै छै—
१४७ १ १ रत्न, ४ तम, १ सप्तमी
हिवै रत्न तम थी १ भागो अप्टम विकल्प करि कहै छै —
१४६ १ २ रत्न, ३ तम, १ सप्तमी
हिवै रत्न तम थी १ भागो नवम विकल्प करि कहै छै —
१४६ १ ३ रत्न, २ तम, १ सप्तमी
हिवै रत्न तम थी १ भागो दशम विकल्प करि कह छै—
१५० १ ४ रतन, १ तम, १ सप्तमी
हिंचै सक्कर थी १० भागा एक-एक विकल्प ना हुवै ते दश किसा ? सक्कर वालु थकी ४, सक्कर पक थकी ३, सक्कर धूम थभी २, सक्कर तम थी १—एव १० भागा, दश विकल्प करि १०० भागा। तिहा सक्कर वालु थी ४ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
१५१ १ १ सक्कर, १ वालु, ४ पक
१५२ २ १ सक्कर, १ वालु, ४ धूम
१५३ ३ १ सक्कर, १ वालु, ४ तम
१५४ ४ १ सक्कर, १ बालु, ४ सप्तमी
हिवै सक्कर वालु थी ४ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै -
१५५ १ १ सक्कर, २ बालु, ३ पक
१५६ २ १ सक्कर, २ वालु, ३ धूम
१५७ ३ १ सक्कर, २ बालु, ३ तम
१५८ ४ १ सक्कर, २ वालु, ३ सप्तमी
हिनै सक्कर वालु थी ४ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै—
१५६ १ २ सक्कर, १ वालु, ३ पक
१६० २ २ सक्कर, १ वालु, ३ धूम
१६१ ३ २ सक्कर, १ वालु, ३ तम
१६२ ४ २ सक्कर, १ वालु, ३ सप्तमी ,

हिवं	सवकर	वालु थी ४ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै —
१६३	१	१ सक्कर, ३ वालु, २ पंक
१६४	२	१ सक्कर, ३ वालु, २ धूम ′
१६५	ą	१ मक्कर, ३ वालु, २ तम
१६६	४	१ सक्कर, ३ वालु, २ सप्तमी
हिवै	सक्कर	वालु थी ४ भागा पचम विकल्प करि कहै छै -
१६७	१	२ सक्कर, २ वालु, २ पंक
१६८	२	२ सक्कर, २ वालु, २ धूम
१६६	ą	२ सक्कर, २ वालु, २ तम
१७०	४	२ सक्कर, २ वालु, २ सप्तमी
हिवै	मक्कर	वालु थी ४ भागा पष्ठ विकल्प करि कहै छै –
१७१	१	३ सक्कर, १ वालु, २ पक
१७२	२	३ सक्कर, १ वालु, २ घूम
१७३	'n	३ सक्कर, १ बालु, २ तम
१७४	٧	३ सक्कर, १ वे।लु, २ सप्तमी
हिवं	मक्कर	वालु थी ४ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै -
१७५	१	१ सक्कर, ४ वालु १ पक
१७६	२	१ सक्कर, ४ वालु १ धूम
१७७	३	१ सक्कर, ४ वालु १ तम
१७८	४	१ सकर, ४ वालु १ मप्तभी
हिवै	मक्कर	वालु थी ४ भागा अप्टम विकल्प करि कहै छै -
30 <i>8</i>	१	२ सक्कर, ३ वालु, १ पक
१५०	२	२ सक्कर, ३ वालु, १ धूम
१८१	Ą	२ सक्कर, ३ वालु, १ तम
१८२	ሄ	२ सक्कर, ३ वालु, १ मप्तमी

१८३ १ ३ सक्कर, २ वालु, <b>१ प</b> क
१८४ २ ३ सक्कर, २ वालु, <b>१</b> धूम
१८५ ३ ३ सक्कर, २ वालु, १ तम
१८६ ४ ३ सक्कर, २ वालु, १ सप्तमी
हिवै सक्कर वालु थी ४ भागा दशम विकल्प करि कहै छै —
१८७ १ ४ सक्कर, १ वालु, १ पक
१८६ २ ४ सक्कर, १ वालु, १ धूम
१८६ ३ ४ सक्कर, १ वालु, १ तम
१६० ४ सक्कर, १ वालु, १ सप्नमी
हिवै सक्कर पक थी प्रथम विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
१६१ १ १ सक्कर, १ पक, ४ धूम
१६२ २ १ सक्कर, १ पक, ४ तम
१६३ ३ १ सक्कर, १ पक, ४ सप्तमी
हिवै सक्कर पक थी ३ भागा द्विनीय विकल्प करि कहै छै—
१६४ १ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम
१६५ २ १ सक्कर, २ पक, ३ तम
१६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ सप्तमी
हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै
१६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम
१६८ २ २ सक्कर, १ पक, ३ तम
१६६ ३ २ सक्कर, १ पक, ३ सप्तमी

-		
हिर्द	र सक्क	र पक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छैं —
२००	१	१ सक्कर, ३ पक, २ धूम
२०१	२	१ सक्कर, ३ पक, २ तम
२०२	3	१ सक्तर, ३ पंक, २ सप्तमी
हिवै	सक्क	र पक थी ३ भागा पचम विकल्प करि कहै छै —
२०३	१	२ सककर, २ पक, २ धूम
२०४	२	२ सक्कर, २ पक, २ तम
२०५	34	२ सक्कर, २ पक, २ सप्तमी
हिवै	सक्क	र पक थी ३ भागा छठे विकल्प करि कहें छैं —
२०६	१	३ सक्कर, १ पक, २ धूम
२०७	२	३ सक्कर, १ पक, २ तम
२०६	Ą	३ सक्कर, १ पक, २ सप्तमी
हिवै	सक्कर	पक थी ३ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै—
२०६	१	१ सक्कर, ४ पक, १ धूम
२१०	२	१ सक्कर, ४ पक, १ तम
२११	3	१ सक्कर, ४ पक, १ सप्तमी
हिवै	सक्कर	पक थी ३ भागा अप्टम विकल्प करि कहै छै —
२१२	8	२ सक्कर, ३ पक. १ धूम
२१३	२	२ सक्कर, ३ पक, १ तम
११४	₹	२ सक्कर, ३ पक, १ सप्तमी
हिवै	सवकर	पक थी ३ भागा नवम विकल्प करि कहै छै —
११५	8	३ सक्कर, २ पक, १ धूम
१६	٦	३ सक्कर, २ पक, १ तम
१७	₹	३ सक्कर, २ पक, १ सप्तमी

हिवै सक्कर पक थी ३ भागा दशम विकल्प करि कहै छै -
२१८ १ ४ सक्कर, १ पक, १ धूम
२१६ २ ४ सक्कर, १ पक, १ तम
२२० ३ ४ सक्कर, १ पक, १ सप्तमी
ए सक्कर पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कह्या।
हिवै सक्कर धूम थी २ भागा दण दिकल्न करि २० भागा हुवै । तेहमे २ भागा प्रथम विकल्न करि कहै छै—
२२१ १ १ सक्कर, १ धूम, ४ तम
२२२ २ १ सक्कर, १ धूम, ४ सप्तभी
हिनै सक्कर धूम यी २ भागा द्वितीय विकल्न करि कहै छै
२२३ १ १ सक्कर, २ धूम, ३ तम
२२४ २ १ सक्कर, २ धूम, ३ सप्तमी
हिवै सक्कर धूम थी २ भागा तृतीय दिकल्प करि कहै छै—
२२५ १ २ सक्कर, १ धूम, ३ तम
२२६ २ २ सक्कर, १ घूम, ३ सप्तमी
हिवै सक्कर घूम थी २ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै
२२७ १ १ सक्कर ३ धूम, २ तम
२२८ २ १ सक्कर, ३ धूम, २ सप्तमी
हिवै सक्कर धूम थी २ भाग। प्रज्ञम बिकल्य-करि कहै छै —
२२६ १ २ सक्कर, २ धूम, २ तम
२३० २ २ सक्कर, २ धूम, २ सप्तमी
हिवै सक्कर धूम थी २ भागा जष्ठ विकल्प करि कहै छै-
२३१ १ ३ सक्कर, १ धूम, २ तम
२३२ २ ३ सक्कर, १ धूम, २ मप्तमी

हिवै सक्कर धूम थी २ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै		
२३३	१	१ सक्कर, ४ घूम, १ तम
२३४	~ ₹	१ सक्कर, ४ धूम, १ सप्तमी
हिवै	सक्कर	धूम थी २ भागा अप्टम विकल्प करि कहै छै —
२३५	१	२ सक्कर, ३ धूम, १ तम
२३६	7	२ सक्कर, ३ धूम, १ सप्तमी
नवस	विकर	पे
२३७ ,	٤-	३ सक्कर, २ घूम, १ तम
२३८	२	३ सक्कर, २ धूम, १ मातमी
दशम	विकर	पे
२३६	१	४ सक्कर, १ धूम, १ तम
२४०	२	४ सक्कर, १ धूम, १ सप्तमी
1	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	न थी २ भागा दश दिकल्प करि २० भागा कह्या। र तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै —
२४१	१	१ सक्कर, १ तम, ४ सप्तमी
द्विर्त	ोय विव	त्त्य <u>े</u>
२४२	१	१ सक्कर, २ तम, ३ सप्तमी
्र्व तृती -	य विक	ले
२४३	१	२ सक्कर, १ तम, ३ सप्तमी
चतुः	र्थे विक	ले
२४४	१	१ सक्कर, ३ तम, २ मप्नमी
पच	म विक	ल्पे
२४५	₹.	२ सक्कर, २ तम, २ सप्तमी
पष्ठ	विकल	प
२४६	१	३ सक्कर, १ तम, २ सप्तमी

राप्तम विकल्पे				
२४७	8	१ सवकर, ४ तम, १ सप्तमी		
अप्ट	अष्टम विकल्पे			
२४८	१	२ सक्कर, ३ तम, १ सप्तमी		
नवम	विकल्प	ों .		
२४६	8	३ सक्कर, २ तम, १ सप्तमी		
दशम	। विकल्			
२५०	8	४ सक्कर, १ तम, १ सप्तमी		
ए सक्कर थी १० भागा १० विकल्ग करि १०० भागा कह्या। हिनै वालु पक थी ३ भागा १० विकल्प करि ३० भागा। ते प्रथम विकल्प करि कहै छै—				
२५१	१	१ बालु, १ पक, ४ घूम		
२५२	२	१ बालु, १ पंक, ४ तम		
२५३	त्र	१ वालु, १ पक, ४ सप्तमी		
द्वितं	ोय विक	ल्पे		
२५४	१	१ वालु, २ पक, ३ धूम		
२५५	२	१ वालु, २ पक, ३ तम		
२५६	72	१ वालु, २ पक, ३ सप्तमी		
तृर्त	ोय विक	ल्पे		
२५७	1	२ वालु, १ पक, ३ धूम		
२५८	२	२ वालु, १ पक, ३ तम		
२५९	ą	२ वालु, १ पक, ३ सप्तमी		
च	तुर्थं विव	ल्पे		
२६०	8	१ वालु, ३ पक, २ धूम		
२६१	२	१ वालु, ३ पंक, २ तम		
२६२	भ	१ वालु, ३ पंक, २ सप्तमी		

पचम विकल्पे			
२६३	१	२ वालु, २ पक, २ घूम	
२६४	२	२ वालु, २ पक, २ तम	
२६५	74	२ वालु, २ पक, २ मप्तमी	
पप्ठ	विकल्पे		
२६६	१	३ वालु, १ पक्ष, २ धूम	
२६७	ર	३ वालु, १ पंक, २ तम	
२६८	₹	३ वालु, १ पक, २ मप्तमी	
सप्त	म विक	त्ये	
२६६	8	१ वालु, ४ पक, १ धूम	
२७०	२	१ वालु, ४ पक, १ तम	
२७१	, av	१ वालु, ४ पक, १ सप्तमी	
अष्ट	म विक	ल्पे	
२७२	१	२ वालु, ३ पंक, १ धूम	
२७३	२	२ वालु, ३ पक, १ तम	
२७४	ro-	२ वालु, ३ पक, १ मप्तमी	
नव	म विकल	पे	
२७४	१	३ वालु, २ पक, १ धूम	
२७६	२	३ वालु, २ पक, १ तम	
२७७	Ę	३ वालु, २ पंक, १ सप्तमी	
दशम विकल्पे			
२७६	१	४ वालु, १ पक, १ घूम	
२७६	२	४ वॉलु, १ पक, १ तम	
२६०	ą	४ वालु, १ पक, १ सप्तमी	
एव	वालु पक	थी ३ भागा १० विकल्प करि ३० भागा कह्या।	

हिवै वालु धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा ते प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
२८१	१	१ वालु, १ धूम, ४ तम
२६२	२	१ वालु १ धूम, ४ सप्तमी
द्विर्त	ोय विव	न् <del>र</del> पे
२८३	१	१ वालु, २ धूम, ३ तम
२८४	२	१ वालु, २ धूम, ३ सप्तमी
तृती	ाय विक	ल्पे
२५५	१	२ वालु, १ घूम, ३ तम
२८६	२	२ वालु, १ धूम, ३ सप्तमी
चतु	र्थं विक	ये
२८७	१	१ वालु, ३ धूम, २ तम
२८८	२	१ वालु, ३ धूम, २ सप्तमी
पच	म विक	ल्पे
२५६	१	२ वालु, २ धूम, २ तम
२६०	ं २	२ वालु, २ धूम, २ सप्तमी
षद	ठ विकल् ———	ने
२६१	8	३ वालु, १ धूम, २ तम
१६२	२	३ वालु, १ धूम, २ सप्तमी
सप	तम विव	ल्पे
२६३	8	१ वालु, ४ धूम, १ तम
२६४	₹	१ वालु, ४ धूम, १ सप्तमी
अप	उटम विव	तल्प <u>े</u>
२६५	۶	२ वालु, ३ धूम, १ तम
२६६	२	२ वालु, ३ धूम, १ सप्तमी

तवम विकल्पे   १   १   वालु, २ धूम, १ तम   १९६   १   १   वालु, २ धूम, १ तम   १९६   १   ४   वालु, १ धूम, १ तम   १००   २   ४   ४   ४   ४   ४   १   १   १   १   १				
दशम विकल्पे  २६६ १ ४ वालु, १ धूम, १ तम  ३०० २ ४ वालु, १ धूम, १ तम  ३०० २ ४ वालु, १ धूम, १ सप्तमी  ए वालु धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहाा। हिवै वालु तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा, ते  प्रथम विकल्प करि कहै छै—  ३०१ १ १ वालु, १ तम, ४ सप्तमी  स्वितीय विकल्पे  ३०२ १ १ वालु, २ तम, ३ सप्तमी  चतुर्थ विकल्पे  ३०४ १ १ वालु, १ तम, ३ सप्तमी  पचम विकल्पे  ३०४ १ १ वालु, २ तम, २ सप्तमी  पचम विकल्पे  ३०५ १ २ वालु, २ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०० १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  नवम विकल्पे	नवम विकल्पे			
दशम विकल्पे  २६६ १ ४ वालु, १ घूम, १ तम  ३०० २ ४ वालु, १ घूम, १ सप्तमी  ए वालु घूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कह्या। हिनै वालु तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा, ते  प्रथम विकल्प करि कहै छै —  ३०१ १ १ वालु, १ तम, ४ सप्तमी हितीय विकल्पे  ३०२ १ १ वालु, २ तम, ३ सप्तमी  चतुर्य विकल्पे  ३०४ १ १ वालु, १ तम, ३ सप्तमी  पचम विकल्पे  ३०४ १ १ वालु, २ तम, २ सप्तमी  पचम विकल्पे  ३०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  ३०० १ १ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  नवम विकल्पे  ३०० १ १ वालु, ३ तम, १ सप्तमी	२६७	१	३ वालु, २ धूम, १ तम	
२९६ १ ४ वालु, १ घूम, १ तम  ३०० २ ४ वालु, १ घूम, १ सप्तमी  ए वालु घूम थी २ भागा दश विकल्प किर २० भागा कहाा। हिवै वालु तम थी १ भागो दश विकल्प किर १० भागा, ते  प्रथम विकल्प किर कहै छै —  ३०१ १ १ वालु, १ तम, ४ सप्तमी हितीय विकल्प  ३०२ १ १ वालु, २ तम, ३ सप्तमी  चतुर्य विकल्प  ३०३ १ २ वालु, १ तम, ३ सप्तमी  पचम विकल्प  ३०४ १ १ वालु, २ तम, २ सप्तमी  पचम विकल्प  ३०५ १ २ वालु, २ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्प  ३०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्प  ३०६ १ ३ वालु, १ तम, १ सप्तमी  सप्तम विकल्प  ३०६ १ २ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्प  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  जप्टम विकल्प  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  नवम विकल्प	२६५	२	३ वालु, २ धूम, १ सप्तमी	
२०० २ ४ वालु, १ धूम, १ सप्तमी  ए वालु धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहा। । हिन्नै वालु तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा, ते प्रथम विकल्प करि कहै छै —  ३०१ १ १ वालु, १ तम, ४ सप्तमी  हितीय विकल्पे  ३०२ १ १ वालु, १ तम, ३ सप्तमी  चतुर्थ विकल्पे  ३०४ १ १ वालु, १ तम, ३ सप्तमी  पचम विकल्पे  ३०४ १ १ वालु, २ तम, २ सप्तमी  पचम विकल्पे  ३०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, १ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  ववम विकल्पे	दशम	विकर	पे	
ए बालु धूम थी २ भागा दश विकल्प किर २० भागा कहा। हिवै वालु तम थी १ भागो दश विकल्प किर १० भागा, ते प्रथम विकल्प किर १० भागा, ते प्रथम विकल्प किर कहै छै —  ३०१ १ १ वालु, १ तम, ४ सप्तमी  हितीय विकल्पे  ३०२ १ १ वालु, १ तम, ३ सप्तमी  चतुर्थ विकल्पे  ३०४ १ १ वालु, १ तम, २ सप्तमी  पचम विकल्पे  ३०५ १ २ वालु, २ तम, २ सप्तमी  पच्म विकल्पे  ३०५ १ ३ वालु, २ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  जप्टम विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  जप्टम विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  नवम विकल्पे	335	१	४ वालु, १ घूम, १ तम	
हिवै वालु तम थी १ भागो दश विकल्प किए १० भागा, ते प्रथम विकल्प किए कहै छै —  ३०१ १ १ वालु, १ तम, ४ सप्तमी  हितीय विकल्पे  ३०२ १ १ वालु, २ तम, ३ सप्तमी  तृतीय विकल्पे  ३०३ १ २ वालु, १ तम, ३ सप्तमी  चतुर्थ विकल्पे  ३०४ १ १ वालु, ३ तम, २ सप्तमी  पचम विकल्पे  ३०५ १ २ वालु, २ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  चवम विकल्पे	₹00	7	४ वालु, १ धूम, १ सप्तमी	
हितीय विकल्पे  २०२ १ १ वालु, २ तम, ३ सप्तमी  तृतीय विकल्पे  २०३ १ २ वालु, १ तम, ३ सप्तमी  चतुर्थ विकल्पे  २०४ १ १ वालु, ३ तम, २ सप्तमी  पचम विकल्पे  २०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  २०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  २०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  २०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  वम विकल्पे			तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा, ते	
३०२ १ १ वालु, २ तम, ३ सप्तमी  तृतीय विकल्पे  ३०३ १ २ वालु, १ तम, ३ सप्तमी  चतुर्थ विकल्पे  ३०४ १ १ वालु, ३ तम, २ सप्तमी  पचम विकल्पे  ३०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  चम विकल्पे	३०१	8	१ वालु, १ तम, ४ सप्तमी	
तृतीय विकल्पे  ३०३ १ २ वालु, १ तम, ३ सप्तमी  चतुर्थं विकल्पे  ३०४ १ १ वालु, ३ तम, २ सप्तमी  पचम विकल्पे  ३०६ १ ३ वालु, २ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  नवम विकल्पे	द्विती	य विक	ल्पे	
३०३ १ २ वालु, १ तम, ३ सप्तमी  चतुर्थ विकल्पे  २०४ १ १ वालु, ३ तम, २ सप्तमी  पचम विकल्पे  २०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  २०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  २०० १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  जप्टम विकल्पे  २०० १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  नवम विकल्पे	३०२	१	१ वालु, २ तम, ३ सप्तमी	
चतुर्थ विकल्पे  २०४ १ १ वालु, ३ तम, २ सप्तमी  पचम विकल्पे  २०५ १ २ वालु, २ तम, २ सप्तमी  पघ्ठ विकल्पे  २०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  २०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  नवम विकल्पे	तृतीय	विक	त्पे	
२०४ १ १ वालु, ३ तम, २ सप्तमी  पचम विकल्पे  २०५ १ २ वालु, २ तम, २ सप्तमी  पच्ठ विकल्पे  २०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  २०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  नवम विकल्पे	३०३	१	२ वालु, १ तम, ३ सप्तमी	
पचम विकल्पे  ३०५ १ २ वालु, २ तम, २ सप्तमी  पच्ठ विकल्पे  ३०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  नवम विकल्पे	चतुर्थ	विकर	न्पे	
३०५ १ २ वालु, २ तम, २ सप्तमी  पष्ठ विकल्पे  सप्तम विकल्पे  अप्टम विकल्पे  ३०६ १ २ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  नवम विकल्पे	३०४	१	१ वालु, ३ तम, २ सप्तमी	
पष्ठ विकल्पे  ३०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  नवम विकल्पे	पचम	विकल	प	
३०६ १ ३ वालु, १ तम, २ सप्तमी  सप्तम विकल्पे  अप्टम विकल्पे  ३०५ १ २ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  जप्टम विकल्पे  नवम विकल्पे	३०५	8	२ वालु, २ तम, २ सप्तमी	
सप्तम विकल्पे  ३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  नवम विकल्पे	षष्ठ (	वकल्पे		
३०७ १ १ वालु, ४ तम, १ सप्तमी  अप्टम विकल्पे  ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी  नवम विकल्पे	३०६	8	३ वालु, १ तम, २ सप्तमी	
अप्टम विकल्पे ३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी नवम विकल्पे	सप्तम विकल्पे			
३०८ १ २ वालु, ३ तम, १ सप्तमी नवम विकल्पे	३०७	8	१ वालु, ४ तम, १ सप्तमी	
नवम विकल्पे	अप्टम विकल्पे			
	३०८	8	२ वालु, ३ तम, १ सप्तमी	
३०६ १ ३ वालु, २ तम, १ सप्तमी	नवम	विकल्प		
	30€	8	३ वालु, २ तम, १ सप्तमी	

C				
दशम विकल्पे				
११० १ ४ वालु, १ तम, १ सप्तमी				
ए वालु थी ६ भागा दश विकल्प करि ६० भागा कह्या। हिवै पक थी ३ भागा ते किसा १ पक धूम थी २, पक तम थी १ एव पक थी ३, दश विकल्प करि ३० भागा कह्या। निहा पक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—				
३११ १ १ पक, १ धूम, ४ तम				
३१२ २ १ पंक, १ धूम, ४ सप्तमी				
हिवै पक धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्पे				
३१३ १ १ पंक, २ धूम, ३ तम				
३१४ २ १ पक, २ धूम, ३ सप्तमी				
हिवै पक धूम थी २ भागा तृतीय विकल्पे				
३१५ १ २ पक, १ धूम, ३ तम				
३१६ २ २ पंक, १ धूम, ३ सप्तमी				
चतुर्थं विकल्पे				
३१७ १ १ पक, ३ घूम, २ तम				
३१८ २ १ पंक, ३ धूम, २ सप्तमी				
पचम विकल्पे ′				
३१६ १ २ पक, २ धूम, २ तम				
३२० २ २ पक, २ धूम, २ सप्तमी				
पष्ठ विकल्पे				
३२१ १ ३ पक, १ धूम, २ तम				
३२२ २ ३ पक, १ धूम, २ सप्तमी				
सप्तम विकल्पे				
३२३ १ १ पक, ४ धूम, १ तम				
३२४ २ १ पक, ४ घूम, १ सप्तमी				

अष्टम विकल्पे				
२४	१	२ पक, ३ धूम, १ तम		
२६	२	२ पक, ३ धूम, १ सप्तमी		
नवः	म विक	ल्पे		
३२७	8	३ पक, २ धूम, १ तम		
 ₹२=	२	३ पक, २ धूम, १ सप्तमी		
दश	म विव	<b>त्रल्पे</b>		
३२६	1	४ पक, १ धूम, १ नम		
३३०	1 2	४ पक, १ धूम, १ सप्तमी		
हि	वै पक	ूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कह्या। तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा। ते कल्ग करि कहै छै—		
३३१		१ १ पक, १ तम, ४ सप्तमी		
, no	वि पव	तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे		
३३२		१   १ पक, २ तम, ३ सप्तमी		
<u> </u>	हवै पव	o तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे		
333	1	१ २ पक, १ तम, ३ सप्तमी		
f	हेवै पं	कतम थी १ भागो चतुर्थ विकल्पे		
<b>₹</b> ₹`	8	१ १ पक, ३ तम, २ सप्तमी		
	हिनै पक तम थी १ भागो पचम विकल्पे			
३३५ १ २ पक, २ तम, २ सप्तमी		१ र पक, २ तम, २ सप्तमी		
	हिनै पक तम थी १ भागो पष्ठ विकल्पे			
३३	६	१ ३ पक, १ तम, २ सप्तमी		
	हिवै प	क तम थी १ भागो सप्तम विकल्पे		
ą₹	9	१ १ पक, ४ तम, १ सप्तमी		

हिवै पक तम थी १ भांगो अष्टम विकल्पे  ३३६ १ २ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पक तम थी १ भागो नवम विकल्पे  ३३६ १ ३ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै पक तम थी १ भागो दशम विकल्पे  ३४० १ ४ पक, १ तम, १ सप्तमी  ए पक तम थी १ भागो १० विकल्प करि १० भागा कह्या। एव पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा
हिवै पक तम थी १ भागो नवम विकल्पे  ३३६ १ ३ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै पक तम थी १ भागो दशम विकल्पे  ३४० १ ४ पक, १ तम, १ सप्तमी  ए पक तम थी १ भागो १० विकल्प करि १० भागा
३३६ १ ३ पक, २ तम, १ सप्तमी हिवै पक तम थी १ भागो दशम विकल्पे ३४० १ ४ पक, १ तम, १ सप्तमी ए पक तम थी १ भागो १० विकल्प करि १० भागा
हिवै पक तम थी १ भागो दशम विकल्पे  ३४० १ ४ पक, १ तम, १ सप्तमी  ए पक तम थी १ भागो १० विकल्प करि १० भागा
३४० १ ४ पक, १ तम, १ सप्तमी ए पक तम थी १ भागो १० विकल्प करि १० भागा
ए पक तम थी १ भागो १० विकल्प करि१० भागा
कह्या। हिनै धूम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा। तिहा प्रथम विकल्पे
rage of the state
३४१ १ १ धूम, १ तम, ४ सप्तमी
द्वितीय विकल्पे
३४२ १ १ धूम, २ तम, ३ सप्तमी
तृतीय विकल्पे
३४३ १ २ धूम, १ तम, ३ सप्तमी
चतुर्थं विकल्पे
३४४ १ १ धूम, ३ तम, २ सप्तमी
पचम विकल्पे
३४५ १ २ धूम, २ तम, २ सप्तमी
पष्ठ विकल्पे —
३४६ १ ३ धूम, १ तम, २ सप्तमी
सप्तम विकल्पे
३४७ १ १ घूम, ४ तम, १ सप्तमी
अप्टम विकल्पे
३४८ १ २ धूम, ३ तम, १ सप्तमी
नवम विकल्पे
३४६ १ ३ धूम, २ तम, १ सप्तमी

दशम विकल्पे—

३५० १ ४ धूम, १ तम, १ सप्तमी

ए धूम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या। एव

रत्न थी १५, सक्कर थी १०, वालुक थी ६, पक थी ३, धूम

थी १-एव ३५ भागा, ते एक-एक विकल्प करि हुवै। दश

विकल्प करि त्रिकसजीगिया भागा ३५० जाणवा।

१४६. एक एक नै च्यार, प्रथम विकल्प ए जानो। दोय नैं तीन, द्वितीय विकल्प पहिछानो। एक नें तीन, तृतीय विकल्प ए कहियै। एक तीन ने दोय, तुर्य विकल्प ए लहियै। फुन दोय-दोय ने दोय गण, ए पंचम विकल्प कह्यां। विल तीन एक नैं दोय इम, ए छठुं विकल्प लह्यु ।। १५०. एक च्यार नें एक, सखर विकल्प ए सप्तम। दोय तीन नै एक, आख्युं ए विकल्प अष्टम। तीन दोय नें एक, नवम विकल्प निरखीजै। च्यार एक नें एक, दशम विकल्प दिल लीजै। षट जीव तणां त्रिकयोगिका, विकल्प इहविध दाखिया। भांगाज तीन सय तसुं भला, अधिक पचासही आखिया।। १५१. "ए षट जीव तणां त्रिकयोगिक, सार्द्ध तीन सय शुद्ध। दश विकल्प करि भांगा दाख्या, वर्णन तसु अविरुद्ध ।। बतीसम देशे, सौ बयांसीमीं ढाल। १५२ नवम शतक भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश 'हरष विशाल।।

ढाल : १८३

## दूहा

१. हिवै कहूं षट जीव नां, चउकसंयोगिक चंग। दश विकल्प करि दाखिया, सार्द्ध तीन सय भंग।।

वा--छ जीव ना चउकसयोगिक तेहना विकल्प तो दश, भागा साढा तीन-सौ । एक-एक विकल्प नां भागा पैतीस-पैतीस हुवै, ते माटै दश विकल्प ना ३५० हुवै। एक-एक विकल्प नां—रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १--एव ३५। रत्न थी २० ते किसा? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ६, रत्न पक थी ३, रत्न धूम थी १ - एव २०। रत्न थी एक-एक विकल्प ना हुवै। रत्न सक्कर थी १० ते किसा? रत्न सक्कर वालुक थकी ४, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थकी १- एव १० एक-एक विकल्प नां हुवै। ते कहै छै---

- २. †तथा रत्न इक सक्कर एक, इक वालुक त्रिहुं पंक विशेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, इक वालुक त्रिहुं धूम संपेख ।।
- ३. तथा रत्न इक सक्कर एक, इक वालुक ने त्रिहुं तम पेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, इक वालुक त्रिहुं सप्तमी देख।।

\*लय: सीता आवं रे घर राग †लय: इण पुर कम्बल कोइ न लेसी

१. चतुष्कसंयोगे तु षण्णां चतूराशितया स्थापने दश विकल्पास्तद्यथा—पञ्चिति शतश्च सप्तपदचतुष्क-संयोगाना दशभिगुँणनात्त्रीणि शतानि पञ्चाशदिष-(वृ० प० ४४५) कानि भवन्ति।

- ४. तथा रत्न इक सक्कर एक, वे वालुक वे पंक विशेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, वे वालुक वे धूमा लेख।।
- प्र. तथा रत्न इक सक्कर एक, बे वालुक बे तमा उवेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, बे वालुक बे सप्तमी शेख।।
- ६. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक वालुक वे पके होय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, इक वालुक वे धूमा जोय।।
- ज्या रत्न इक सक्कर दोय, इक वालुक बे तम अवलोय।
   तथा रत्न इक सक्कर दोय, इक वालुक बे सप्तमी सोय।।
- द. तथा रत्न वे सक्कर एक, इक वालुक वे पंक विशेख। तथा रत्न वे सक्कर एक, इक वालुक वे धूमा लेख।।
- १. तथा रत्न बे सक्कर एक, एक वालुका बे तम पेख। तथा रत्न बे सक्कर एक, एक वालुका बे सप्तमी शेख।।
- १०. तथा रत्न इक सक्कर एक, त्रिण वालुक इक पंक विशेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, त्रिण वालु इक धूमा देख।।
- ११. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन वालुका इक तम लेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, त्रिण वालुक इक सप्तमी शोख।।
- १२. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय वालुक इक पके होय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय वालुक इक धूमा जोय।।
- १३. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय वालुक इक तम अवलोय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय वालुक इक तमतमा जोय।।
- १४. हिवै रत्न वे सक्कर एक, वे वालुक इक पंक विशेख। तथा रत्न वे सक्कर एक, वे वालुक इक धूमा लेख।
- १५. तथा रत्न वे सक्कर एक, वे वालुक इक तमा उवेख। तथा रत्न वे सक्कर एक, वे वालुक इक सप्तमी देख।।
- १६. तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक वालुक इक पक दुचीन। तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक वालुक इक धूमा लीन।।
- १७. तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक वालुंक इक तमा दुचीन। तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक वालुंक इक सप्तमी लीन।।
- १८. तथा रत्न बे सक्कर दोय, इक वालुक इक पंके जोय। तथा रत्न बे सक्कर दोय, इक वालुक इक धूमा होय।।
- १६. तथा रत्न बे सक्कर दोय, एक वालुका इक तम जोय। तथा रत्न बे सक्कर दोय, इक वालुक इक सप्तमी होय॥
- २०. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक वालुका इक पंक देख । तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, इक वालुक इक धूम उवेख ।।
- २१. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, इक वालुक इक तमा विशेख। तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक वालुक इक सप्तमी देख।।
  - हिवै रत्न सक्कर पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कहै छै---
- २२. तथा रत्न इक सक्कर एक, एक पंक त्रिहुं धूम विशेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, एक पंक त्रिहुं तमा उवेख।।
- २३. तथा रत्न इक सक्कर एक, एक पंक त्रिहु सप्तमी शेख। रत्न सक्कर ने पंक थी चीन, धुर विकल्प करि ए भग तीन।।

२४. तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय पंक विहुं धूमा देख। तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय पक दो तमा विशेख।। २५. तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय पंक दोय सप्तमीं गेख। रत्न सक्कर नें पंक थी चीन, द्वितीय विकल्प करि भागा तीन।।

२६. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक पक वे धूमा होय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक पंक वे तमा जोय।।

२७. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक पंक वे सप्तमी सोय। रत्न सक्कर नैं पंक थी चीन, तृतीय विकल्प करि भागा तीन।।

२८. तथा रत्न वे सक्कर एक, एक पंक वे धूम विशेख। तथा रत्न वे सक्कर एक, एक पंक वे तमा विशेख।

२१. तथा रत्न वे सक्कर एक, एक पक वे सप्तमी शेख। रत्न सक्कर नें पंक थी चीन, चउथै विकल्प करि भंगा तीन।।

३०. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन पंक इक धूमा देख। तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन पंक इक तमापेख।।

३१. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन पंक इक सप्तमी शेख। रत्न सक्कर ने पक थी चीन, पंचम विकल्प भंगा तीन।।

३२. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय पंक इक धूमा होय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय पक इक तम अवलोय।।

३३. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय पंक इक सप्तमी जोय। रत्न सक्कर नैं पंक थी चीन, छठै विकल्प करि भगा तीन।।

३४. तथा रत्न वे सक्कर एक, दोय पंक इक धूमा देख। तथा रत्न वे सक्कर एक, दोय पंक इक तमा लेख।।

३५. तथा रत्न वे सक्कर एक, दोय पंक इक सप्तभी शेख। रत्न सक्कर ने पंक थी चीन, सप्तम विकल्प भगा तीन॥

३६. तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक पंक इक धूमा चीन। तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक पंक इक तमा लीन।।

३७. तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक पंक इक सप्तमीं लीन। रत्न सक्कर ने पक थी चीन, अष्टम विकल्प भगा तीन॥

३८. तथा रत्न वे सक्कर दोय, एक पक इक धूमा जोय। तथा रत्न वे सक्कर दोय, एक पंक इक तम अवलोय।।

३६. तथा रत्न वे सक्कर दोय, एक पक इक तमतमा जोय। रत्न सक्कर ने पक थी चीन, नवम विकल्पे भंगा तीन।।

४०. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक पक इक धूमा देख। नथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक पक इक तमा विशेख।।

४१. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक पक इक सप्तमी शेख।
रत्न सक्कर ने पक थी चोन, दशम विकल्पे भगा तीन।

हिनै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहै छै-

४२. तथा रत्न इक सक्कर एक, एक धूम त्रिहु तमा विशेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, एक धूम त्रिहु सप्तमी लेख।।

४३. तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय धूम वे तमा देख। तथा रत्न इक सक्कर एक, वे धूमा वे सप्तमी पेख।।

- ४४. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक धूम वे तमा होय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक धूम वे सप्तमी जोय।।
- ४५. तथा रत्न वे सक्कर एक, एक धूम वे तमा विशेख। तथा रत्न वे सक्कर एक, एक धूम वे सप्तमी शेख।।
- ४६. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन धूम इक तमा उवेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन धूम इक सप्तमी शेख।।
- ४७. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय घूम इक तमा जोय । तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय घूम इक सप्तमी होय।।
- ४८ तथा रत्न वे सक्कर एक, दोय धूम इक तमा शेख। तथा रत्न वे सक्कर एक, दोय धूम इक सप्तमी पेख।।
- ४६. तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक धूम इक तमा चीन। तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक धूम इक सप्तमी लीन।।
- ५०. तथा रत्न वे सक्कर दोय, एक धूम इक तम अवलोय। तथा रत्न वे सक्कर दोय, एक धूम इक सप्तमी जोय।।
- ५१. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक धूम इक तमा उवेख। तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक धूम इक सप्तमी लेख।।

हिवै रत्न सक्कर तम थी १ भागो दश विकल्प करि दश भागा कहै छै-

- ५२. तथा रत्न इक सक्कर एक, एक तमा त्रिण सप्तमी शेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय तमा वे सप्तमी लेख।।
- ५३. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक तमा वे सप्तमी सोय। तथा रत्न वे सक्कर एक, एक तमा वे सप्तमी पेख।।
- ५४. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन तमा इक सप्तमी पेख। तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय तमा इक सप्तमी होय॥
- ५५. तथा रत्न वे सक्कर एक, दोय तमा इक सप्तमी देख। तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक तमा इक सप्तमी लीन।।
- ५६. तथा रत्न वे सक्कर दोय, एक तमा इक सप्तमी जोय। तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक तमा इक सप्तमी लेख।।

हिवै रत्न वालुक थी एकेक विकल्प ना ६ भागा, ते किसा ? रत्न वालुक पक थी ३, रत्न वालुक घूम थी २, रत्न वालुक तम थी १ — एव ६ भागा, दश विकल्प करि ६० भागा। तिहा रत्न वालुक पक्ष थी ३ भागा दश विकल्प करि ६० भागा कहै छै —

- पू७. तथा रत्न इक वालुक एक, एक पंक त्रिहुं धूम विशेख। तथा रत्न इक वालुक एक, एक पंक त्रिहुं तमा देख।।
- ५८. तथा रत्न इक वालुक एक, एक पंक त्रिहु सप्तमी देख। रत्न वालुक नै पंक थी चीन, धुर विकल्प करि ए भग तीन।।
- ५६. तथा रत्न इक वालुक एक, दोय पक वे धूम उवेख। तथा रत्न इक वालुक एक, दोय पंक वे तमा विशेख।
- ६०. तथा रत्न इक वालुक एक, दोय पक वे सप्तमी देख। रत्न वालुक ने पक थी चीन, द्वितीय विकल्प करि भंगा तीन।।
- ६१. तथा रत्न इक वालुक दोय, एक पंक वे धूमा होय। तथा रत्न इक वालुक दोय, एक पंक वे तमा जोय।।

६२. तथा रत्न इक वालुक दोय, एक पंक वे सप्तमी होय। रत्न वालुक ने पंक थी चीन, तृतीय विकल्प करि भगा नीन ।। ६३. तथा रत्न वे वालुक एक, एक पंक विहुं धूम उवेख। तथा रत्न वे वालुक एक, एक पंक विहुं तमा विणेख।। ६४. तथा रत्न वे वालुक एक, एक पंक विहुं मप्तमी पेख। रत्न वालुक ने पंक थी चीन, चउथे विकल्पे भंगा तीन ॥ ६५. तथा रत्न इक बालुक एक, तीन पंक इक धूम उवेख। तथा रत्न इक वालुक एक, तीन पक इक तमा विशेख ॥ ६६. तथा रत्न इक वालुक एक, तीन पंक इक सप्तमी देख। रत्न वालुक ने पक थी चीन, पचमे विकल्प भंगा तीन।। ६७. तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय पक इकधूमा जोय। तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय पंक इक तम अवलोय।। ६८. तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय पंक इक सप्तमी जोय। रत्न वालुक नै पंक थी चीन, छठै विकल्प मंगा तीन।। ६ ह. तथा रत्न वे वालुक एक, दोय पंक इक धूमा देख। तया रत्न वे वालुक एक, दोय पंक इक तमा उवेख ॥ ७०. तथा रत्न वे वालुक एक, दोय पंक इक सप्नमी देख। रत्न वालुक ने पंक थी चीन, सप्तम विकल्प भगा तीन ॥ ७१. तथा रत्न इक वालुक तीन, एक पंक इक घूम मलीन। तथा रत्न इक वालुक तीन, एक पंक इक तमा दुर्चान।। ७२. तथा रत्न इक वालुक तीन, एक पंक इक सप्तमी लीन। रत्न वालुक ने पंक थी चीन, अप्टम विकल्प भगा तीन।। ७३. तथा रतन वे वालुक दोय, एक पंक इक घूमा जीय। तथा रत्न वे वालुक दोय, एक पंक इक तमा होय।। ७४. तथा रत्न वे वालुक दोय, एक पंक इक सप्तमी होय। रत्न वालुक ने पंक थी चीन, नवमे विकल्प भंगा तीन ॥ ७५. तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक पंक इक धूम उवेख। तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक पंक डक तमा विशेख ॥ ७६. तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक पंक इक सप्तमी शेख।

हिनै रतन वालुक धूम थी २ भागा दण विकरप करि २० भागा कहै छै-

रत्न वालुक ने पंक थी चीन, दणमे विकल्प भंगा तीन।।

७७. तथा रत्न इक वालुक एक, एक धूम त्रिहुं तमा उवेख। तथा रत्न इक वालुक एक, एक धूमा त्रिहुं सप्तमी लेख।।
७८. तथा रत्न इक वालुक एक, वे धूमा वे तमा विणेख। तथा रत्न इक वालुक एक, वे धूमा वे सप्तमी णेख।
७६. तथा रत्न इक वालुक दोय, एक धूम वे तम अवलोय। तथा रत्न इक वालुक दोय, एक धूम वे सप्तमी जोय।।
८०. तथा रत्न वे वालुक एक, एक धूम वे तमा उवेख। तथा रत्न वे वालुक एक, एक धूम वे सप्तमी णेख।।
८१. तथा रत्न इक वालुक एक, तीन धूम एक तम उवेख। तथा रत्न इक वालुक एक, तीन धूम एक सप्तमी णेख।।

५२. तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय धूम एक तम अवलोय। तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय धूम इक सप्तमी होय।।

 तथा रतन वे वालुक एक, दोय धूम इक तम उवेख। तथा रत्न वे वालुक एक, दोय धूम इक सप्तमी शेख।।

५४ तथा रत्न इक वालुक तीन, एक धूम इक तम दुचीन। तथा रत्न इक वालुक तीन, एक धूम इक सप्तमी लीन।।

८५. तथा रत्न वे वालुक दोय, एक धूम इक तमा होय।

तथा रत्न वे वालुक दोय, एक धूम इक सप्तमी जोय।।

८६. तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक धूम इक तमा विशेख। तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक धूम इक सप्तमी शेख।।

हिंवै रत्न वालुक तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भागा कहै छै-

५७. तथा रत्न इक वालुक एक, एक तमा त्रिहु सप्तमी लेख। रत्न वालुक ने तम थी देख, धुर विकल्प करि भगो एक।।

८८. तथा रत्न इक वालुक एक, दोय तमा विहु सप्तमी पेख। रत्न वालुक ने तम थी देख, द्वितीय विकल्प करि भगो एक।।

८६. तथा रत्न इक वालुक दोय, एक तम वे सप्तमी होय। रत्न वालुक ने तम थी देख, तृतीय विकल्प करि भगो एक ॥

६०. तथा रत्न वे वालुक एक, एक तमा बिहुं सप्तमी लेख। रत्न वालुक ने तम थी देख, चउथे विकल्प भंगो एक ।।

६१. तथा रत्न इक वालुक एक, तीन तमा इक सप्तमीं शेख। रत्न वालुक ने तम थी जोय, पचमे विकल्प इक भंग होय।।

६२. तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय तमा इक सप्तमी होय। रत्न वालुक नै तम थी जोय, छठे विकल्प इक भग होय।।

६३. तथा रत्न वे वालुक एक, दोय तमा इक सप्तमी लेख। रत्न वालुक ने तम थी जोय, सप्तम विकल्प इक भंग होय।।

६४. तथा रत्न इक वालुक तीन, एक तमा इक सप्तमी चीन। रत्न वालुक ने तम थी जोय, अष्टम विकल्प इक भग होय।।

६५. तथा रत्न वे वालुक दोय, एक तमा इक सप्तमी होय। रत्न वालुक नै तम थी चग, नवमे विकल्प ए इक भग।।

६६. तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक तमा इक सप्तमी शेख। रत्न वालुक तम थकी गिणेह, दशमे विकल्प इक भंग एह।।

हिवै रत्न पक थी एक एक विकल्प करि ३ भागा, ते किसा ? रत्न पक धूम थी २, रत्न पक तम थी १ एव ३ भागा। दश विकल्प करि ३० भागा। तिहा रत्न पक धूम थी २ भागा, दश विकल्प करि २० भागा कहै छै—

६७. तथा रत्न इक पंके एक, एक धूम त्रिण तमा विशेख। तथा रत्न इक पके एक, एक धूम त्रिहुं सप्तमी देख।।

६ द तथा रत्न इक पके एक, दोय धूम वे तमा उवेख। तथा रत्न इक पंके एक, दोय धूम बे सप्तमी शेख।।

६६ तथा रतन इक पके दोय, एक धूम बे तमा होय। तथा रत्न इक पके दोय, एक धूम बे सप्तमी जोय।। १००. तथा रत्न वे पंके एक, एक धूम वे तमा विशेख। तथा रत्न वे पके एक, एक धूम वे सप्तमी शेख।।

१०१ तथा रत्न इक पंके एक, तीन धूम इक तमा उवेख। तथा रत्न इक पंके एक, तीन धूम इक सप्तमी शेख।।

१०२. तथा रत्न इक पके दोय, दोय धूम इक तमा जोय। तथा रत्न इक पंके दोय, दोय धूम इक सप्तमी जोय।।

१०३. तथा रत्न वे पंके एक, दोय धूम इक तमा उवेख। तथा रत्न वे पंके एक, दोय धूम इक सप्तमी शेख।।

१०४. तथा रत्न इक पके तीन, एक धूम इक तम मलीन। तथा रत्न इक पंके तीन, एक धूम इक सप्तमीं लीन।।

१०५. तथा रत्न वे पंके दोय, एक धूम एक तमा जोय। तथा रत्न वे पंके दोय, एक धूम इक सप्तमीं होय।।

१०६. तथा रत्न त्रिण पंके एक, एक धूम इक तमा पेख।
तथा रत्न त्रिण पके एक, एक धूम इक सप्तमी णेख।।
हिवै रत्न पक तम थी १ भागो दण विकरप करि १० भागा कहै छै-

१०७ तथा रत्न इक पके एक, एक तम त्रिण सप्तमी शेख। तथा रत्न इक पके एक, दोय तमा वे सप्तमी लेख।।

१० द. तथा रत्न इक पके दोय, एक तमा वे सप्तमी सोय। तथा रत्न वे पके एक, एक तमा वे सप्तमी शेख।।

१०६. तथा रत्न इक पके एक, तीन तमा इक सप्तमी लेख। तथा रत्न इक पके दोय, दोय तमा इक सप्तमी सोय।।

११०. तथा रत्न वे पके एक, दोय तमा इक सप्तमीं लेख।
तथा रत्न इक पंके तीन, एक तमा इक सप्तमी लीन।

१११. तथा रत्न वे पके दोय, एक तमा इक सप्तमीं जोय। तथा रत्न त्रिण पके एक, एक तमा एक सप्तमी शेख।। हिवै रत्न धूम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कहै छै—

११२ तथा रत्न इक धूमा एक, एक तमा त्रिण सप्तमी देख। तथा रत्न इक धूमा एक, दोय तमा वे सप्तमी शेख।।

११३ तथा रत्न इक धूमा दोय, एक तमा वे सप्तमी होय। तथा रत्न वे धूमा एक, एक तमा वे सप्तमी पेख।

११४. तथा रत्न इक धूमा एक, तीन तमा इक सप्तमी शेख। तथा रत्न इक धूमा दोय, दोय तमा इक सप्तमी सोय।।

११५. तथा रत्न वे घूमा एक, दोय तमा इक सप्तमी लेख। तथा रत्न इक घूमा तीन, एक तमा एक सप्तमी चीन।।

११६. तथा रत्न वे धूमा दोय, एक तमा इक सप्तमी होय। तथा रत्न त्रिण धूमा एक, एक तमा एक सप्तमी शेख।।

हिवै सक्कर थी १० भागा, ते किसा ? सक्कर वालुक थी ६, सक्कर पक थी ३, सक्कर घूम थी १ एव सक्कर थी १० एकेक विकल्प किर हुवै। तिहा सक्कर वालुक थी ६, ते किसा ? सक्कर वालुक पक थी ३, सक्कर वालुक धूम थी २, मक्कर वालुक तम थी १, तिहां सक्कर वालु पक थी ३ भागा दश विकल्प किर ३० भागा कहै छै—

- ११७. तथा सक्कर इक वालुक एक, एक पंक त्रिण धूम विशेख। तथा सक्कर इक वालुक एक, एक पक त्रिण तमा उवेख।।
- ११८. तथा सनकर इक वालुक एक, एक पक त्रिण सप्तमी लेख। सक्कर वालुक पंक थी चीन, धुर विकल्प करि ए भंग तीन।।
- ११६. तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय पक बे धूमा लेख। तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय पक वे तमा विशेख।।
- १२० तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय पक वे सप्तमी शेख। सक्कर वालुक पक थी चीन, द्वितीय विकल्प करि ए भग तीन।।
- १२१. तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक पक वे धूमा जोय। तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक पक बे तमा होय।।
- १२२. तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक पक बे सप्तमी जोय। सक्कर वालुक पक थी चीन, तृतीय विकल्प करि भगा तीन।।
- १२३. तथा सक्कर बे वालुक एक, एक पंक बिहु धूम विशेख। तथा सक्कर बे वालुक एक, एक पंक विहु तमा उवेख।।
- १२४ तथा सक्कर वे वालुक एक, एक पक बिहु सप्तमी शेख। सक्कर वालुक पंक थी चीन, चउथे विकल्प भगा तीन।।
- १२५. तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन पक इक धूमा देख। तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन पक इक तमा विशेख।।
- १२६. तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन पक इक सप्तमी पेख। सक्कर वालुक पक थी चीन, पचमे विकल्प भगा तीन।।
- १२७ तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय पक इक धूमा जोय। तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय पंक इक तमा होय।।
- १२८. तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय पक इक सप्तमी जोय। सक्कर वालुक पंक थी चीन, षष्ठम विकल्प भंगा तीन ॥
- १२६. तथा सक्कर वे वालुक एक, दोय पक इक धूमा देख। तथा सक्कर वे वालुक एक, दोय पंक इक तमा लेख।।
- १३०. तथा सक्कर वे वालुक एक, दोय पंक इक सप्तमी शेख। सक्कर वालुक पक थी चीन, सप्तम विकल्प भगा तीन।।
- १३१. तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक पक इक धूमा लीन। तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक पक इक तमा दुचीन।।
- १३२. तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक पंक इक सप्तमी लीन। सक्कर वालुक पक थी चीन, अष्टम विकल्प भंगा तीन ॥
- १३३. तथा सक्कर वे वालुक दोय, एक पक इक धुमा जोय। तथा सक्कर वे वालुक दोय, एक पक इक तमा जोय ॥
- १३४. तथा सक्कर वे वालुक दोय, एक पक इक सप्तमी जोय। सक्कर वालुक पक थी चीन, नवमे विकल्प भगा तीन।
- १३५. तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक पक इक धूमा लेख। तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक पंक इक तमा देख।।
- १३६. तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक पक इक सप्तमी शेख। सक्कर वालुक पक थी चीन, दशमे विकल्प भगा तीन।।

ए सक्कर वालुक पक थी ३ भागा, दश विकत्प करि ३० भागा कह्या।

हिवै सक्कर वालुक धूम थो हैं २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहै छै-

- १३७. तथा सक्कर इक वालुक एक, एक धूम त्रिहुं तमा विशेख। तथा सक्कर इक वालुक एक, एक धूम त्रिहुं सप्तमीं शेख।।
- १३८. तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय घूम वे तमा विशेख। तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय धूम वे सप्तमी शेख।।
- १३६. तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक धूम वे तम अवलोय। तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक धूम वे सप्तमी सोय।।
- १४०. तथा सक्कर वे वालुक एक, एक धूम वे तम उवेख। तथा सक्कर वे वालुक एक, इक धूम वे सप्तमी शेख।।
- १४१. तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन धूम इक तमा देख। तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन धूम इक सप्तमी शेख॥
- १४२. तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय धूम इक तम अवलोय। तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय धूम इक सप्तमी होय।।
- १४३. तथा सक्कर वे वालुक एक, दोय धूम इक तम संपेख। तथा सक्कर वे वालुक एक, दोय धूम इक सप्तमीं देख।।
- १४४. तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक धूम इक तम मलीन। तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक धूम इक सप्तमी चीन।।
- १४५. तथा सक्कर वे वालुक दोय, एक धूम इक तम अवलोय। तथा सक्कर वे वालुक दोय, एक धूम इक सप्तमी होय।।
- १४६. तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक धूम इक तमा उवेख ।
  तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक धूम इक सप्तमी शेख ।।
  ए सक्कर वालुक धूम थी २ भागा, दश विकल्प करि २० भागा कहा।
  हिवै सक्कर वालुक तम थी १ भागो, दश विकल्प करि १० भागा कहै छै—
- १४७. तथा सक्कर इक वालुक एक, एक तमा त्रिहुं सप्तमी लेख। तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय तमा वे सप्तमी शेख।।
- १४८. तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक तमा वे सप्तमी जोय। तथा सक्कर वे वालुक एक, एक तमा वे सप्तमी पेख।।
- १४६. तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन तमा इक सप्तमी लेख। तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय तमा इक सप्तमी होय।।
- १५०. तथा सक्कर वे वालुक एक, दोय तमा इक सप्तमी पेख। तथा सक्कर इक वालुक तीन, एकतमा इक सप्तमी चीन।।
- १५१. तथा सक्कर त्रिण वालुक दोय, एक तमा इक सप्तमी सोय। तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक तमा इक सप्तमी शेख।।

ए सक्कर वालुक तम थी १ भागो, दश विकल्प करि १० भागा कह्या । एव सक्कर थी १० भागा, दश विकल्प करि १०० भागा कह्या ।

हिवै वालुक थी ४ भांगा, दश विकल्प करि ४० भागा। वालुक थी ४, ते किसा? वालुक पक थी ३, वालुक धूम थी १। वालुक पक थी ३, ते किसा? वालुक पक धूम थी २ वालुक पक तम थी १— एव वालुक पक थी ३ भागा। तिहा वालुक पंक धूम थी २ भागा दश विकल्प करि कहै छै —

१५२. तथा वालुक इक पंके एक, एक धूम त्रिण तमा उवेख। तथा वालुक इक पंके एक, एक धूम त्रिण सप्तमी शेख।।

- १५३. तथा वालुक इक पंके एक, दोय धूम वे तमा विशेख। तथा वालुक इक पंके एक, दोय धूम वे सप्तमी लेख।।
- १५४. तथा वालुक इक पके दोय, एक धूम बे तमा जोय। तथा वालुक इक पंके दोय, एक धूम बे सप्तमी होय।।
- १५५. तथा वालुक बे पंके एक, एक धूम बे तमा पेख। तथा वालुक बे पंके एक, एक धूम बे सप्तमी शेख।।
- १५६. तथा वालुक इक पंके एक, तीन धूम इक तमा उवेख। तथा वालुक इक पके एक, तीन धूम इक सप्तमी लेख।।
- १५७. तथा वालुक इक पंके दोय, दोय धूम इक तमा जोय। तथा वालुक इक पंके दोय, दोय धूम इक सप्तमी होय।।
- १५८. तथा वालुक बे पंके एक, दोय धूम इक तमा उवेख। तथा वालुक वे पंके एक, दोय धूम इक सप्तमी शेख।।
- १५६. तथा वालुंक इक पंके तीन, एक ध्म इक तमा दुचीन। तथा वालुंक इक पके तीन, एक धूम इक सप्तमी लीन।।
- १६०. तथा वालुक वे पंके दोय, एक धूम इक तमा होय। तथा वालुक वे पंके दोय, एक धूम इक सप्तमी जोय।।
- १६१. तथा वालुक त्रिण पंके एक, एक धूम इक तमा विशेख।
  तथा वालुक त्रिण पंके एक एक धूम इक सप्तमी शेख।।
  ए वालुक पक धूम थी २ भागा, दश विकल्प करि २० भागा कहा।
  हिवै वालुक पंक तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कहै छै—
- १६२. तथा वालुक इक पंके एक, एक तमा त्रिण सप्तमीं शेख। तथा वालुक इक पके एक, दोय तमा वे सप्तमी शेख।।
- १६३. तथा वालुंक इक पंके दोय, इक तमा वे सप्तमी होय। तथा वालुंक वे पंके एक, एक तमा वे सप्तमी शेख।।
- १६४. तथा वालुक इक पंके एक, तीन तमा इक सप्तमी पेख। तथा वालुक इक पंके दोय, दोय तमा इक सप्तमी जोय।
- १६५. तथा वालुक वे पंके एक, दोय तमा इक सप्तमी पेख। तथा वालुक इक पके तीन, एक तमा इक सप्तमी लीन।।
- १६६. तथा वालुक वे पंके दोय, एक तमा इक सप्तमी होय। तथा वालुक त्रिण पंके एक, एक तमा इक सप्तमी शेख।।

ए वालुक पक तम थी १ भागो, दश विकल्प करि १० भागा कहा.। ए वालु

पक थी ३ भागा, दश विकल्प करि ३० भागा कह्या।

हिवै वालुक घूम थी १ भागो, दश विकल्प करि १० भागा कहै छै-

- १६७. तथा वालुक इक धूमा एक, एक तमा त्रिण सप्तमी देख। तथा वालुक इक धूमा एक, दोय तमा वे सप्तमी शेख।।
- १६८. तथा वालुक इक घूमा दोय, एक तमा वे सप्तमी होय। तथा वालुक वे धूमा एक, एक तमा वे सप्तमी पेख।।
- १६६. तथा वालुक इक घूमा एक, तीन तमा इक सप्तमी शेख। तथा वालुक इक धूमा दोय, दोय तमा इक सप्तमी होय॥
- १७०. तथा वालुक वे धूमा एक, दोय तमा इक सप्तमी पेख। तथा वालुक इक धूमा तीन, एक तमा इक सप्तमी लीन।।

१७१. तथा वालुक वे धूमा दोय, एक तमा इक सप्तमीं गोय। तथा वालुक त्रिण धुमा एक, एक तमा इक सप्तमी लेख।। ए वालुक धूम थी १ भागो, १० विकला करि १० भागा कह्या। एव वालुक थी ४ भागा दश विकल्प करि ४० भांगा कह्या।

हिवै पक थी १ भागो, दश विकल्प करि १० भागा कहै छै-

१७२ तथा पंक इक धूमा एक, एक तमा त्रिण सप्तमी शेख। तथा पंक इक धूमा एक, दोय तमा वे सप्तमी लेख।।

१७३. तथा पंक इक धूमा दोय, एक तमा वे सप्तमी मोय। तथा पंक वे धूमा एक, एक तमा वे सप्तमी देख॥

१७४. तथा पंक इक धूमा एक, तीन तमा इक सप्तमी शेख। तथा पंक इक धूमा दोय, दोय तमा इक सप्तमी सोय।।

१७५. तथा पक वे धूमा एक, दोय तमा इक सप्तमी लेख। तथा पंक इक धूमा तीन, एक तमा इक सप्तमी लीन।।

१७६. तथा पंक वे घूमा दोय, एक तमा इक सप्तमी सोय। तथा पंक त्रिण घूमा एक, एक तमा इक सप्तमी शेख।।

ए पक थी १ भागो दण विकल्प करि १० भागा कहा। एव एकेक विकल्प करि रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पक थी १ - ए ३५ भागा, ते दण विकल्प करि रत्न थी २०० भागा। सक्कर थी १०० भागा। वालुक थी ४० भागा। पक थी १० भागा। एवं सर्व ३५० चडकसजोगिया भागा जाणवा। हिवै एहनो यंत्र कहै छै—

वा०—छह जीव नां चलकसंयोगिक, तेहनां विकल्प तो दण, भागा नाढा तीन सी। एक-एक विकल्प नां भागा पैतीम पैनीम हुवै ते मार्ट दण विकला ना ३५० भांगा हुवै। एक-एक विकल्प ना रत्न थी २०, सक्कर थी १०, बालुक थां ४, पंक थी १— एव ३५। रत्न थी २० ते किमा ? रत्न सक्कर थी १०, रत्न बालुक थी ६, रत्न पंक थी ३, रत्न घूम थी १— एवं २० रत्न थी एक एक विकत्प नां हुवै। रत्न गक्कर थी १० ते किमा ? रत्न सक्कर बालुक थी ४, रत्न मक्कर पक थी ३, रत्न मक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थकी १ - एव १० एक-एक विकल्प नां हुवै। तिहां रत्न मक्कर बालुक थकी ४ भांगा प्रथम विकल्प करि कहि

र	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ बालुक ३ पंक
ર્	२	१ रत्न, १ सबकर, १ वालुक, ३ घूम
n,	3.	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, ३ तम
٧	٧	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक,३ सप्तमी

हिवै	द्वितीय	विकल्पे ४ भागा
٧	8	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ पक
Ę	٦	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ धूम
૭	भ	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ तम
ធ	8	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ सप्तमी
हिवै	तृतीय	विकल्पे ४ भागा
e,	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक २ पक
१०	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, २ घूम
११	ą	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, २ तम
१२	४	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, २ मप्तमी
हिर्व	चतुर्थ	विकल्पे ४ भागा
१३	8	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक
१४	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ घूम
१५	74	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ तम
१६	8	२ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, २ सप्तमी
हिं	वै पचम	विकल्पे ४ भागा
१७	१	१ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ पक
१५	२	१ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम
38	३	१ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ तम
२०	8	१ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ सप्तमी
हि	वै पष्ठ	विकल्पे ४ भागा
२१	१	१ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ पक
२२	२	१ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ धूम
२३	3	१ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ तम
२४	8	१ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ सप्तमी

हिनै	सप्तम	विकल्पे ४ भागा
२५	१	२ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पंक
२६	२	२ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ घूम
२७	æ	२ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ तम
२५	४	२ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ सप्तमी
हिवै	अप्टम	विकल्पे ४ भागा
२६	१	१ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु, १ पंक
३०	२	१ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु, १ घूम
३१	Įγ	१ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु, १ तम
३२	४	१ रत्न, ३ सक्कर, १ व.लु, १ सप्तमी
हिवै	नवम	विकल्पे ४ भागा
३३	१	२ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पक
३४	२	२ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ धूम
३५	₹	२ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ तम
३६	8	२ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ सप्तमी
हिवै दशम विकल्पे ४ भागा		
३७	१	३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक
35	२	३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ धूम
₹8	Ę	३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ तम
80	४	३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ सप्तभी
ए र	त्न सवव	र वालुक थी ४ भागा दश विकल्प करि ४० भागा कह्या।

हिवै	रत्न स	वकर थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—	
४१	१	१ रत्न, १ सक्कर १ पंक, ३ धूम	
४२	२	१ रत्न, १ मक्कर, १ पक, ३ तम	
४३	ą	१ रत्न, १ सक्कर, १ पक, ३ सप्तमी	
हिवै	द्वितीय	विकल्पे	
88	१	१ रत्न, १ मक्कर, २ पक, २ धूम	
४४	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ पक, २ तम	
४६	n	१ रत्न, १ सक्कर, २ पक, २ सप्तमी	
हिवै	तृतीय	विकल्पे	
४७	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, २ घूम	
४८	ર	१ रत्न, २ सक्कर, १ पक, २ तम	
38	m	१ रत्न, २ मक्कर, १ पक, २ सप्तमी	
हिवै	चतुर्थ	विकल्पे	
५०	१	२ रत्त, १ मक्कर, १ पक, २ घूम	
५१	२	२ रत्न, १ मक्कर, १ पंक,२ तम	
५२	Ą	२ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, २ सप्तमी	
हिवै	हिवै पचम विकल्पे ३ भागा		
४३	१	१ रत्न, १ सक्कर, ३ पक, १ धूम	
አ፞ጹ	२	१ रत्न, १ सक्कर, ३ पक, १ तम	
ሂሂ	s,	१ रत्न, १ सक्कर, ३ पक, १ मप्तमी	
हिवै पष्ठ विकल्पे ३ भागा			
प्रह	१	१ रहन, २ सकरूर, २ पंक, १धून	
५७	२	१ रहत, २ सक्कर, २ पंक, १ तम	
ሂና	३	१ रत्न, २ सक्कर, २ पक, १ मप्तमीं	

५०       २       २ रत्न, १ सकर, २ पंक १ तम         ६०       २       २ रत्न, १ सकर, २ पंक १ तम         ६१       ३       २ रत्न, १ सकर, २ पक, १ सप्तमी         हिवै अप्टम विकल्पे ३ भागा       ६२       १       १ रत्न, ३ सकर, १ पक, १ धूम         ६३       २       १ रत्न, ३ सकर, १ पक, १ सप्तमी         हिवै नवम विकल्पे ३ भागा       ६५       १       २ रत्न, २ सकर, १ पंक, १ धूम         ६५       २       २ रत्न, २ सकर, १ पंक, १ तम         ६७       ३       २ रत्न, २ सकर, १ पंक, १ तम         ६७       ३       २ रत्न, १ सकर, १ पंक, १ तम         ६०       ३       २ रत्न, १ सकर, १ पंक, १ तम         ६०       ३       २ रत्न, १ सकर, १ पंक, १ तम         ६०       ३       २ रत्न, १ सकर, १ पंक, १ तम         ६०       ३       २ रत्न, १ सकर, १ पंक, १ तम         ६०       ३       २ रत्न, १ सकर, १ पंक, १ तम         ६०       ३       २ रत्न, १ सकर, १ पंक, १ तम         ६०       ३       २ रत्न, १ सकर, १ पंक, १ तम         ६०       ३       २ रत्न, १ सकर, १ पंक, १ तम         ६०       ३       २ रत्न, १ सकर, १ पंक, १ तम
<ul> <li>६१ ३ २ रतन, १ सक्कर, २ पक, १ मप्तमी</li> <li>हिवै अप्टम विकल्मे ३ भागा</li> <li>६२ १ १ रतन, ३ सक्कर, १ पक, १ धृम</li> <li>६३ २ १ रतन, ३ सक्कर, १ पक, १ तम</li> <li>६४ ३ १ रतन, ३ सक्कर, १ पक, १ सप्तमी</li> <li>हिवै नवम विकल्पे ३ भागा</li> <li>६५ १ २ रतन, २ सक्कर, १ पंक, १ धूम</li> <li>६६ २ २ रतन, २ सक्कर, १ पंक, १ तम</li> <li>६७ ३ २ रतन, २ सक्कर, १ पक, १ सप्तमी</li> <li>हिवै दणम विकल्पे ३ भागा</li> <li>६६ २ ३ रतन, १ सक्कर, १ पक, १ धूम</li> <li>६६ २ ३ रतन, १ सक्कर, १ पक, १ धूम</li> <li>६६ २ ३ रतन, १ सक्कर, १ पक, १ स्तम</li> <li>७० ३ ३ रतन, १ सक्कर, १ पक, १ नप्तमी</li> <li>हिवै रतन सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कर्ह</li> </ul>
हिबै अप्टम विकल्पे ३ भागा  ६२ १ १ रत्न, ३ सक्कर, १ पक, १ धृम  ६३ २ १ रत्न, ३ सक्कर, १ पक, १ तम  ६४ ३ १ रत्न, ३ सक्कर, १ पक, १ सप्नमी  हिबै नवम विकल्पे ३ भागा  ६५ १ २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ धूम  ६६ २ २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ नम  ६७ ३ २ रत्न, २ सक्कर, १ पक, १ धूम  ६६ १ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ धूम  ६६ २ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ धूम  ६६ २ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम  ७० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम  ७० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ नप्तमी  हिबै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कर्ह
६२       १       २
६३       २       १ रत्न, ३ सक्कर, १ पक, १ तम         ६४       ३       १ रत्न, ३ सक्कर, १ पक, १ सप्तमी         हिवै नवम विकल्पे ३ भागा       ६५       १       २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ धूम         ६६       २       २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ तम         ६७       ३       २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ तम         ६७       ३       २ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ धूम         ६८       २       २ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम         ७०       ३       ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ नप्तमी         हिवै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कर्ह
<ul> <li>६४ ३ १ रत्न, ३ सक्कर, १ पक, १ सप्तमी</li> <li>हिर्व नवम विकल्पे ३ भागा</li> <li>६५ १ २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ धूम</li> <li>६६ २ २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ तम</li> <li>६७ ३ २ रत्न, २ सक्कर, १ पक १ सप्तमी</li> <li>हिव दणम विकल्पे ३ भागा</li> <li>६८ २ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ धूम</li> <li>६८ २ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम</li> <li>७० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ सप्तमी</li> <li>हिव रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कर्ह</li> </ul>
हिब नवम विकल्पे ३ भागा  ६५ १ २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ धूम  ६६ २ २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ नम  ६७ ३ २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक १ सप्तर्मा  हिव देशम विकल्पे ३ भागा  ६६ १ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ धूम  ६६ २ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम  ७० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ नप्तमी  हिव रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कर्ह
<ul> <li>६५ १ २ रतन, २ मक्कर, १ पंक, १ धूम</li> <li>६६ २ २ रतन, २ मक्कर, १ पंक, १ नम</li> <li>६७ ३ २ रतन, २ मक्कर, १ पंक १ मप्तमी</li> <li>हिवै दणम विकल्पे ३ भागा</li> <li>६६ १ ३ रतन, १ मक्कर, १ पंक, १ धूम</li> <li>६६ २ ३ रतन, १ मक्कर, १ पंक, १ तम</li> <li>७० ३ ३ रतन, १ सक्कर, १ पंक, १ नप्तमी</li> <li>हिवै रतन सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कर्ह</li> </ul>
६६       २       २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ नम         ६७       ३       २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक १ सप्तर्मा         हिवै दशम विकल्पे ३ भागा         ६८       १       ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ सम         ५०       ३       ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम         ५०       ३       ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ नप्तमी         हिवै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कही
<ul> <li>६७ ३ २ रत्न, २ नक्कर, १ पक १ नप्तमी</li> <li>हिवै दणम विकल्पे ३ भागा</li> <li>६८ १ ३ रत्न, १ नक्कर, १ पक, १ धूम</li> <li>६८ २ ३ रत्न, १ नक्कर, १ पंक, १ तम</li> <li>७० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ नप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै</li> </ul>
हिवै दणम विकल्पे ३ भागा  ६ १ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ धूम  ६ १ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम  ७० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कई
६८       २       २ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम         ७०       ३       २ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम         ७०       ३       २ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ नप्तमी         हिवै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै
६६ २ ३ रत्न, १ मक्कर, १ पंक, १ तम ७० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ मप्तमी हिवै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै
७० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ मप्तमी हिर्व रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कही
हिवै रतन सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै
७१ । १ रत्न, १ सक्कर, १ घूम, ३ तम
७२ २ १ रत्न, १ सक्कर, १ घूम, ३मप्तमी
हिवै द्वितीय विकल्पे २ भांगा
७३ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, २ तम
७४ २ १ रत्न, १ मक्कर, २ घूम, २ सप्तनी

हिवै	तृतीय	विकल्पे २ भागा
'७५	१	१ रत्न,२ सक्कर, १ घूम, २ तम
७६	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ घूम, २ सप्तमी
हिवै	चतुर्थ	विकल्पे २ भागा
७७	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ धूम २ तम
৩=	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, २ सातमी
हिवै	पचम	विकल्पे २ भागा
30	१	१ रत्न, १ सक्कर, ३ धूम, १ तम
<u>ټ</u> ه	२	१ रत्न, १ सक्कर, ३ धूम, १ सप्तमी
हिवै	पष्ठ f	वकल्पे २ भागा .
দং	१	१ रत्न, २ सक्कर, २ धूम, १ तम
. ५२	२	१ रत्न, २ सक्कर, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै	सप्तम	विकल्पे २ भागा
<i>ष</i> श्र	१	२ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, १ तम
58	२	२ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै	अप्टम	विकल्पे २ भागा
写某	१	१ रत्न, ३ सक्करं, १ घूम, १ तम
<del>५</del> ६	२	१ रत्न, ३ सक्कर, १ धूम, १ सप्तमी
हिवै	नवम	विकल्पे २ भागा
<b>দ</b> ও	१	२ रत्न, २ सक्कर, १ धून, १ तम
55	२	२ रत्न, २ सक्कर, १ घूम, १ सप्तमी
हिवै	दशम	विकल्पे २ भागा
5 ۾	१	३ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, १ तम
03	२	३ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, १ सप्तमी

हिंवै रत्न सक्कर तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे			
६१ १ १ रतन, १ सक्कर, १ तम, ३ सप्तमी	_		
हिवै द्वितीय विकल्पे १ भांगो	_		
६२ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ तम, २ सप्तमी	_		
हिवै तृतीय विकल्पे १ भांगो	_		
६३ १ १ रत्न, २ सक्कर, १ तम, २ सप्तमी			
हिनै चतुर्थ विकल्पे १ भागो			
१४ १ रतन, १ सक्कर, २ तम, २ सप्तमी			
हित्रै पचम विकल्पे एक भांगो			
६५ १ १ रतन, १ सक्कर, ३ तम, १ सप्तमी			
हिनै पष्ठ विकल्पे एक भागो	_		
६६ १ १ रतन, २ सक्कर, २ तम, १ सप्तमी			
हिवै सप्तम विकल्पे १ भागो			
६७ १ २ रत्न, १ सक्कर, २ तम, १ सप्तमी			
हिवै अष्टम विकल्पे एक भागो	_		
६८ १ १ रत्न, ३ सक्कर, १ तम, १ सप्तमी			
हिवै नवम विकल्पे १ भागो	_		
१ २ रतनः २ सक्कर, १ तम, १ सप्तमी	_		
हिवै दशम विकल्पे एक भागो	-		
१०० १ ३ रत्न, १ सक्कर, १ तम, १ सप्तमी	_		
एव रत्न सक्कर थी १० भांगा, दश विकल्प करि १०० भागा कह्या।			

किस वालु	ा <sup>?</sup> रत कतमः	तालुक थी ६। एकेक विकल्प करि ६ मागा ते त वालुक पक थी ३, रत्न वालुक धूम थी २, रत्न थी १—एव ६। रत्न वालुक पक थी ३ भागा प करि कहै छै—
१०१	१	१ रत्न, १ वालुक, १ पक, ३ धूम
१०२	२	१ रत्न, १ वालुक, १ पक, ३ तम
१०३	m	१ रत्न, १ वालुक, १ पक, ३ सप्तमी
हिवै	द्वितीय	विकल्पे तीन भागा
१०४	१	१ रत्न, १ वालुक, २ पक, २ धूम
१०५	२	१ रत्न, १ वालुक, २ पक, २ तम
१०६	₹	१ रत्न, १ बालुक, २ पक, २ सप्तमी
हिं	तृतीय	विकल्पे ३ भागा
१०७	१	१ रत्न, २ वालु, १ पक, २ धूम
१०५	२	१ रत्न, २ वालु, १ पक, २ तम
१०६	Ą	१ रत्न, २ वालु, १ पक, २ सप्तमी
हि	वै चतुर्थ	विकल्पे ३ भागा
११०	१	२ रत्न, १ वालु, १ पक, २ धूम
१११	२	२ रत्न, १ वालु, १ पक, २ तम
११२	, a	२ रत्न, १ वालु, १ पक, २ सप्तमी
हि	्वै पचम	विकल्पे ३ भागा
११३	3	१ रत्न, १ वालु, ३ पक, १ घूम
११४	7	१ रत्न, १ वालु, ३ पक, १ तम
११५	₹ 3	१ रत्न, १ वालु, ३ पक, १ सप्तमी

हिवै पष्ठ विकल्पे ३ भागा			
११६   १   १ रत्न, २ वालु, २ पंक, १ धूम			
११७   २   १ रत्न, २ वालु, २ पक, १ तम			
११८ ३ १ रत्न, २ वालु, २ पंक, १ मप्तमी			
हिवै सप्तम विकल्पे ३ भागा			
११६ १ २ रत्न, १ बालु, २ पक, १ धूम			
१२० २ २ रत्न, १ वालु, २ पंक, १ तम			
१२१ ३ २ रत्न, १ वालु, २ पक, १ सप्तमी			
हिवै अप्टम विकल्पे तीन भागा			
१२२ १ १ रत्न, ३ वालु, १ पंक, १ घूम			
१२३   २   १ रत्न, ३ वालु, १ पक, १ तम			
१२४   ३   १ रत्न, ३ वालु, १ पंक, १ सप्तमी			
हिनै नवम विकल्पे ३ भागा			
१२५   १   २ रत्न, २ वालु, १ पक, १ घूम			
१२६ २ २ रत्न, २ वालु, १ पक, १ तम			
१२७ ३ २ रत्न, २ वालु, १ पक, १ सप्तमी			
हिवै दशम विकल्पे ३ भागा			
१२८ १ ३ रत्न, १ वालु, १ पक, १ धूम			
१२६ २ ३ रत्न, १ वालु, १ पक, १ तम			
१३० ३ ३ रत्न, १ वालु, १ पक, १ सप्तमी			
हिबै रत्न वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहे छै —			
१३१ १ रतन, १ बालु, १ घूम, ३ तम			
१३२ २ १ रत्न, १ वालु, १ घूम, ३ सप्तमी			

हिवै तृतीय विकल्पे २ भागा  १३४ १ १ रत्न, २ वालु, १ घूम, २ तम  १३६ २ १ रत्न, २ वालु, १ घूम, २ तम  १३६ २ १ रत्न, २ वालु, १ घूम, २ तम  १३७ १ २ रत्न, १ वालु, १ घूम, २ तम  १३० १ २ रत्न, १ वालु, १ घूम, २ तम  १३० १ २ रत्न, १ वालु, १ घूम, २ तम  १३० २ १ रत्न, १ वालु, ३ घूम, १ तम  १४० २ १ रत्न, १ वालु, ३ घूम, १ तम  १४० २ १ रत्न, १ वालु, ३ घूम, १ तम  १४२ १ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ तम  १४२ २ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ १ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ १ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, १ वालु, १ घूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम	हिवै द्वितीय विकल्पे २ भांगा
हिनै तृतीय विकल्पे २ भागा  १३५ १ १ रत्न, २ वालु, १ धूम, २ तम  १३६ २ १ रत्न, २ वालु, १ धूम, २ सप्तमी  हिनै चतुर्थं विकल्पे २ भागा  १३७ १ २ रत्न, १ वालु, १ धूम, २ तम  १३८ १ १ रत्न, १ वालु, १ धूम, २ तम  १३८ १ १ रत्न, १ वालु, ३ धूम, १ तम  १४० २ १ रत्न, १ वालु, ३ धूम, १ तम  १४० २ १ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, २ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, २ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ २ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, १ वालु, १ धूम, १ तम  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ तम	१३३ १ १ रत्न, १ वालु, २ घूम, २ तम
१३५ १ १ रत्न, २ वालु, १ घूम, २ तम  १३६ २ १ रत्न, २ वालु, १ घूम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे २ भागा  १३७ १ २ रत्न, १ वालु, १ घूम, २ तम  १३० २ १ रत्न, १ वालु, १ घूम, २ तम  १३० २ १ रत्न, १ वालु, ३ घूम, १ तम  १४० २ १ रत्न, १ वालु, ३ घूम, १ तम  १४० २ १ रत्न, १ वालु, ३ घूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, १ वालु, १ घूम, १ तम  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४७ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम	१३४ २ १ रत्न, १ वालु, २ घूम, २ सप्तमी
हिबै चतुर्थं विकल्पे २ भागा  हिबै चतुर्थं विकल्पे २ भागा  १३७ १ २ रत्न, १ बालु, १ धूम, २ तम  १३८ २ २ रत्न, १ बालु, १ धूम, २ सप्तमी  हिबै पंचम विकल्पे २ भागा  १४० २ १ रत्न, १ बालु, ३ धूम, १ तम  १४० २ १ रत्न, १ बालु, ३ धूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, २ बालु, २ धूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, २ बालु, २ धूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, २ बालु, २ धूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, १ बालु, २ धूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, १ बालु, २ धूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, १ बालु, २ धूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, १ बालु, १ धूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, ३ बालु, १ धूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ बालु, १ धूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ बालु, १ धूम, १ सप्तमी  हिबै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ धूम, १ सप्तमी	हिवै तृतीय विकल्पे २ भागा
हिवै चतुर्थं विकल्पे २ भागा  १३७ १ २ रत्न, १ वालु, १ घूम, २ तम  १३८ २ २ रत्न, १ वालु, १ घूम, २ सप्तमी  हिवै पंचम विकल्पे २ भागा  १३८ १ १ रत्न, १ वालु, ३ घूम, १ तम  १४० २ १ रत्न, १ वालु, ३ घूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे २ भागा  १४३ १ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ सप्तमी	१३५ १ १ रत्न, २ वालु, १ धूम, २ तम
१३७ १ २ रत्न, १ वालु, १ घूम, २ तम  १३८ २ २ रत्न, १ वालु, १ घूम, २ सप्तमी  हिवै पंचम विकल्पे २ भागा  १३८ १ १ रत्न, १ वालु, ३ घूम, १ तम  १४० २ १ रत्न, १ वालु, ३ घूम, १ तम  १४२ २ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ तम  १४२ २ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे २ भागा  १४३ १ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ सप्तमी	१३६ २ १ रत्न, २ वालु, १ धूम, २ सप्तमी
१३८ २ २ रत्न, १ बालु, १ घूम, २ सप्तमी  हिवै पंचम विकल्पे २ भागा  १३६ १ १ रत्न, १ बालु, ३ घूम, १ तम  १४० २ १ रत्न, १ बालु, ३ घूम, १ तम  १४१ १ १ रत्न, २ बालु, २ घूम, १ तम  १४२ २ १ रत्न, २ बालु, २ घूम, १ तम  १४३ १ २ रत्न, १ बालु, २ घूम, १ तम  १४३ १ २ रत्न, १ बालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ २ रत्न, १ बालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ १ रत्न, १ बालु, २ घूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, ३ बालु, १ घूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ बालु, १ घूम, १ तम  १४७ १ २ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम	हिवै चतुर्थ विकल्पे २ भांगा
हिवै पंचम विकल्पे २ भागा  १३६ १ १ रत्न, १ वालु, ३ धूम, १ तम  १४० २ १ रत्न, १ वालु, ३ धूम, १ सप्तमी  हिवै पण्ठ विकल्पे २ भागा  १४१ १ १ रत्न, २ वालु, २ धूम, १ तम  १४२ २ १ रत्न, २ वालु, २ धूम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे २ भागा  १४३ १ २ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ २ २ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे २ भागा  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी	१३७   १   २ रत्न, १ वालु, १ घूम, २ तम
१३६ १ १ रत्न, १ वालु, ३ घूम, १ तम  १४० २ १ रत्न, १ वालु, ३ घूम, १ सप्तमी  हिवै षण्ठ विकल्पे २ भागा  १४१ १ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ तम  १४२ २ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे २ भागा  १४३ १ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै अण्डम विकल्पे २ भागा  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ घूम, १ सप्तमी	१३८ २ र रत्न, १ वालु, १ घूम, २ सप्तमी
१४० २ १ रत्न, १ वालु, ३ घूम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकल्पे २ भागा  १४१ १ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ तम  १४२ २ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे २ भागा  १४३ १ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे २ भागा  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ घूम, १ तम	हिवै पंचम विकल्पे २ भागा
हिवै पष्ठ विकल्पे २ भागा  १४१ १ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ तम  १४२ २ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे २ भागा  १४३ १ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ १ १ रत्न, १ वालु, १ घूम, १ तम  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ घूम, १ तम	१३६ १ १ रत्न, १ वालु, ३ धूम, १ तम
१४१ १ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ तम  १४२ २ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे २ भागा  १४३ १ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे २ भागा  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ घूम, १ तम	१४० २ १ रतन, १ वालु, ३ धूम, १ सप्तमी
१४२ २ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे २ भागा  १४३ १ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै अण्डम विकल्पे २ भागा  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ घूम, १ तम	हिवै षष्ठ विकल्पे २ भागा
हिवै सप्तम विकल्पे २ भागा  १४३ १ २ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ २ २ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे २ भागा  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ धूम, १ तम	१४१ १ १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ तम
१४३ १ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ २ रत्न, १ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे २ भागा  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ घूम, १ तम	१४२ र १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ सप्तमी
१४४ २ २ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे २ भागा  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ धूम, १ तम	हिनै सप्तम विकल्पे २ भागा
हिवै अप्टम विकल्पे २ भागा  १४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ घूम, १ तम	१४३ १ २ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ तम
१४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ घूम, १ तम	१४४ २ २ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी
१४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे २ भागा  १४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ धूम, १ तम	हिवै अष्टम विकल्पे २ भागा
हिवै नवम विकल्पे २ भागा १४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ द्यूम, १ तम	१४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ तम
१४७   १   २ रत्न, २ वालु, १ घूम, १ तम	१४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी
	हिवै नवम विकल्पे २ भागा
१४५ २ २ रत्न, २ वालु, १ धूम १ सप्तमी	१४७ १ २ रत्न, २ वालु, १ धूम, १ तम
	१४८ २ २ रत्न, २ वालु, १ धूम १ सप्तमी

हिवै दशम विकल्पे २ भागा			
१४६	१	३ रत्न, १ वालु, १ धूम,१ तम	
१५०	२	३ रत्न, १ वालु, १ धूम, १ मप्तमी	
हिवै ३	रत्न वा	तुक तम थी १ भागो प्रथम <sup>,</sup> विकल्प करि कहै छै—	
१५१	१	१ रत्न, १ वालु, १ तम, ३ सप्तमी	
द्विर्त	ोय विव	ल्पे १ भागो	
१५२	१	१ रत्न, १ वाल्, २ तम, २ सप्तमी	
तृती	य विक	त्पे १ भागो	
१५३	१	१ रत्न, २ वालु, १ तम, २ सप्तमी	
चतु	र्थं विक	ल्पे १ भागो	
१५४	१	२ रत्न, १ वालु, १ तम, २ सप्तमी	
पच	म विक	ले १ भागो	
१५५	१	१ रत्न, १ वालु, ३ तम, १ सप्तमी	
हिर्द	हिनै पष्ठ विकल्पे १ भागो		
१५६	१	१ रत्न, २ वालु, २ तम, १ सप्तमी	
हिर्द	हिवै सप्तम विकल्पे १ भागो		
१५७	8	२ रत्त, १ वालु, २ तम, १ सप्तमी	
हिवै अष्टम विकल्पे १ भागो			
१५५	8	१ रत्न, ३ वालु, १ तम, १ सप्तमी	
हिब नवम विकल्पे १ भागो			
१५६	8	२ रत्न, २ वालु, १ तम, १ सप्तमी	
हिं	हिर्वे दशम विकल्पे १ भागो		
१६०	8	३ रत्न, १ बालु, १ नम, १ सप्तमी	
ए रत	न वालु	क थी ६ भागा दश विकल्प करि ६० भागा कह्या ।	

रत्न प	क घूम	थी एकेक विकल्प करि ३ भागा, ते किमा ? थी २, रत्न पक तम थी १-एव ३। तिहा रत्न भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै-			
१६१	2	१ रत्न, १ पक, १ धूम, ३ तम			
१६२	2	१ रहन, १ पक, १ धूम, ३ मप्तमी			
हिब हि	इतीय रि	वकरप			
१६३	2	१ रत्न, १ पंक, २ धूम, २ तम			
१६४	٦	१ रत्न, १ पक, २ धूम, २ सप्तमी			
हिबै र	रृतीय वि	वकल्प			
१६५	\$	१ रतन, २ पक, १ घूम, २ तम			
१६६	२	१ रत्न, २ पक, १ घूम, २ सप्तमी			
हिवै	चतुर्था	वकरप			
१६७	2	२ रत्न, १ पंक, १ धूम, २ तम			
१६८	२	२ रत्न, १ पक, १ धूम, २ सप्तमी			
हिबै	पचम वि	वकरप			
१६६	१६६ १ १ रतन, १ पक, ३ धूम, १ तम				
१७०	٦	१ रत्न, १ पंक, ३ धूम, १ मप्तमी			
हिवै	हिर्वै पष्ठ विकल्प				
१७१	१	१ रत्न, २ पक, २ धूम, १ तम			
१७२	ર	१ रत्न, २ पक, २ घूम, १ सप्तमी			
हिर्वे सप्तम विकल्प					
१७३	१	२ रत्न, १ पक, २ धूम, १ तम			
१७४ २ २ रत्न, १ पक, २ धूम, १ सप्तमी					
हिर्वे अप्टम विकरप					
१७५	1	१ रत्न, ३ पक, १ धूम, १ तम			
१७६	२	१ रत्न, ३ पक, १ धूम, १ सप्तमी			

हिवै नवम विकरप
१७७ १ २ रहन, २ पंक, १ घूम, १ नम
१७ = ३ २ रत्न, २ पक, १ धूम, १ मप्तमी
हिंवै दणम विकल्प
१७६   १   ३ रत्न, १ पक्र, १ घूम, १ तम
१८० २   ३ रत्न, १ पंक, १ घूम, १ मप्तमी
हिवै रत्न पक तम श्री १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै—
१८१   १   १ रत्न, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी
हिवै द्वितीय त्रिकरप
१८२ १ १ रतन, १ पंक, २ तम, २ मध्नमी
हिवै तृतीय विकत्प
१८३ १ १ रस्त, २ पंक, १ तम, २ गप्तमी
हिवै चतुर्यं विकल्प
१८४ १ २ रत्न, १ पक, १ तम, २ सप्तभी
हिर्दे पंचम विकल्प
१८५ १ १ रतन, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी
हिनै पण्ठ विकल्प
१८६ १ १ रत्न, २ पक, २ तम, १ मप्तमी
हिवै सप्नम विकल्प
१८७ १ २ रतन, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी
हिवै अप्टम विकल्प
१८६ १ १ रतन, ३ पक, १ तम, १ सप्तमी
हिवै नवम विकरप
१८६ १ २ रस्न, २ पक, १ तम, १ मप्तमी
•

हिवै दशम विकल्पे	
१६० १ ३ रत्न,	१ पक, १ तम, १ सप्तमी
ए रत्न पक तम थी १	भागो दश विकल्प करि १० भागा
कह्या ।	
हिवै रत्न धूम तम थी	१ भागो प्रथम विकल्प
१६१ १ १ रत्न,	१ घूम, १ तम, ३ सप्तमी
हिवै द्वितीय विक्ल्पे	
१६२ १ १ रत्न,	१ धूम, २ तम, २ सप्तमी
हिनै तृतीय विकल्पे	
१६३ १ १ रहन,	२ धूम, १ तम, २ सप्तमी
हिवै चतुर्थ विकल्पे	
१६४ १ २ रत्न,	१ घूम, १ तम, २ सप्तमी
हिवै पचम विकल्पे	
१६५ १ १ रत्न,	१ धूम, ३ तम, १ सप्तमी
हिवै पष्ठ विकल्पे	
१९६ १ १ रत्न,	२ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिवै सप्तम विकल्पे	
१६७ १ २ रत्न,	१ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिवै अष्टम विकल्पे	
१६८ १ १ रतन,	३ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिवै नवम विकल्पे	
१६६ १ २ रत्न,	२ घूम, १ तम, १ सप्तमी
हिवै दशम विकल्पे	
२०० १ ३ रत्न,	१ घूम, १ तम, १ सप्तमी
ए रत्न थी २० भागा	दश विकल्प करि २०० भागा कह्या ।

वाल् सक	ाुक थी कर वाद	र था एकक विकल्प कार १० त किसा: सक्कर ६, सक्कर पक थी ३, सक्कर धूम थी १-एव १०। तुक थी ६ ते किसा? सक्कर वालुक पक थी ३, तुक धूम थी २, सक्कर वालुक तम थी १-एवं६।
तिह छै -		र वालुक पक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै
२०१	8	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ धूम
२०२	२	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ तम
२०३	m	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ सप्तमी
हिवै	द्वितीय	विकल्प
२०४	१	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, २ धूम
२०५	२	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, २ तम
२०६	m	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, २ सप्तमी
हिवै	तृतीय	विकल्प
२०७	१	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, २ घूम
२०५	े २	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, २ तम
305	Ą	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, २ सप्तमी
हिवै	चतुर्थ ।	विकल्प
२१०	8	२ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम
२११	2	२ सक्कर, १ बालु, १ पक, २ तम
२१२	3	२ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ सप्तमी
हिवै	पचम ि	वकल्पे
२१३	8	१ सक्कर, १ वालु, ३ पक, १ घूम
२१४	٦	१ सक्कर, १ वालु, ३ पक, १ तम
२१५	₹	१ सक्कर, १ वालु, ३ पक, १ सप्तमी

हिन सक्कर थी एकेक विकल्प करि १० ते किसा? सक्कर

हिवै	पण्ठ ि	वकल्पे
२१६	१	१ मक्कर, २ वालु, २ पंक, १ धूम
२१७	ર્	१ सक्कर, २ वालु, २ पक, १ तम
२१६	á	१ मक्कर, २ वालु, २ पक, १ सप्तमी
हिवै	सप्तम	विकल्पे
२१६	8	२ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ धूम
२२०	२	२ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ तम
२२१	ą	२ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ सप्तमी
हिवै	अप्टम	विकल्पे
२२२	१	१ मक्कर, ३ वालु, १ पक, १ धूम
२२३	ર	१ सक्कर, ३ वालु, १ पक, १ तम
२२४	'n,	१ मक्कर, ३ बालु, १ पक, १ सप्तमी
हिवै	नवम	विकल्पे
२२४	<b>?</b>	२ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ धूम
२२६	ર	२ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ तम
२२७	na.	२ मक्कर, २ वालु, १ पंक, १ सप्तमी
हिबै	दशम (	विकल्पे
२२८	१	३ सक्तर, १ बालु, १ पंक, १ घूम
२२६	ર	३ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ तम
२३०	3	३ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ सप्तमी
हिवै छै-	मक्कर -	वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै
२३१	?	१ सक्तर, १ बालु, १ धूम, ३ तम
२३२	ર્	१ सक्कर, १ बालु, १ धूम, ३ सप्तमी

64646			
हिर्व द्विनीय विकत्पे			
२३३ १ १ गवकर, १ वालु, २ धूम, २ तम			
२३४ २ १ सक्कर, १ वालु, २ धूम, २ सप्तमी			
हिबै तृतीय विकल्पे			
२३५ १ १ सनकर, २ वालु, १ धूम, २ तम			
२३६ २ १ सक्कर, २ वालु, १ धूम, २ मप्तमी			
हिवै चतुर्थं विकल्पे .			
२३७   १   २ सक्कर, १ वालु, १ धूम, २ तम			
२३८ २ २ सबकर, १ वालु, १ घूम, २ सप्तमी			
हिंबै पचम विकल्पे			
२३६   १   १ सक्कर, १ बालु, ३ धूम, १ तम			
२४० र १ समकर, १ वालु, ३ घूम, १ सप्तमी			
हिवै पष्ठ विकल्पे			
२४१ । १ । १ सकर, २ वालु, २ धूम, १ तम			
२४२   २   १ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ सप्तमी			
हिवै सप्तम विकल्पे			
२४३ १ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम			
२४४ २ २ सक्कर, १ बालु, २ घूम, १ सप्तमी			
हिवै अप्टम विकल्पे			
२४५ १ १ सक्कर, ३ बालु, १ धूम, १ तम			
२४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी			
हिवै नवम विकल्पे			
२४७ १ र सक्कर, २ वालु, १ घूम, १ तम			
२४८ २ र सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ सप्तमी			

हिंबै	दशम	विकल्पे
२४६	१	३ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ तम
२५०	२	३ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ सप्तमी
हिवें छै-		वालुक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै
२५१	१	१ सक्कर, १ वालु, १ तम, ३ सप्तमी
हिवै वि	द्वतीय 1	विकल्पे
२५२	१	१ सक्कर, १ वालु, २ तम, २ सप्तमी
हिवै	तृतीय	दिकल्पे
२५३	१	१ सक्कर, २ दालु, १ तम, २ सप्तमी
हिवै	चतुर्थ	विकल्पे
२५४	8	२ सक्कर, १ वालु, १ तम, २ सप्तमी
हिवै	पचम '	विकल्पे
२४४	१	१ सक्कर, १ वालु, ३ तम, १ सप्तमी
हिवै	पष्ठ रि	वकल्पे
२५६	१	१ सक्कर, २ वालु, २ तम, १ सप्तमी
हिवै	सप्तम	विकल्पे
२५७	8	२ सक्कर, १ वालु, २ तम, १ सप्तमी
हिवै	अष्टम	विकल्पे
२५६	१	१ सक्कर, ३ वालु, १ तम, १ सप्तमी
हिवै	नवम रि	वकल्पे
२५६	१	२ सक्कर, २ वालु, १ तम, १ सप्तमी
हिवै	दशम (	वेकल्पे
२६०	१	३ सक्कर, १ वालु, १ तम, १ सप्तमी
ए सन् कह्या		ालुक थी ६ भागा दश विकल्प करि ६० भागा

7		
₹,	सक्कर	र पक थी ३ भांगाते किसा <sup>?</sup> सक्कर पंक धूम थं पक तम थी १ । तिहासक्कर पक धूम थी २ भागा वंकल्प करि कहै छै—
२६१	8	१ सक्कर, १ पक, १ धूम, ३ तम
२६२	२	१ सक्कर, १ पक, १ धूम, ३ सप्तमी
हिर्द	रे सक्क	र पक धूम थी २ भागा द्वितीय विकल्पे
२६३	8	१ सक्तर, १ पक, २ धूम, २ तम
२६४	२	१ सक्कर, १ पक, २ धूम, २ सप्तमी
हिवै	तृनीय	विकल्प करि
२६५	१	१ सक्कर, २ पक, १ धूम, २ तम
२६६	२	१ सक्कर, २ पक, १ धूम, २ सप्तमी
हिवै	चतुर्थ	विकल्प करि
२६७	१	२ सक्कर, १ पक, १ धूम, २ तम
२६८	२	२ सक्कर, १ पक, १ धूम, २ सप्तमी
हिवै	पचम (	विकल्प करि
२६६	१	१ सक्कर, १ पक, ३ धूम, १ तम
२७०	7	१ सक्कर, १ पक, ३ धूम, १ सप्तमी
हिवै	षष्ठ वि	कल्प करि
२७१	8	१ सक्कर, २ पक, २ घूम, १ तम
२७२	2	१ सक्कर, २ पंक, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै :	सप्तम ि	वेकल्प करि
२७३	8	२ सक्कर, १ पक, २ धूम, १ तम
२७४	2	२ सक्कर, १ पक, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै व	क्टम वि	वकल्प करि
२७४	8	१ सक्कर, ३ पंक, १ धूम, १ तम
२७६	२	१ सक्कर, ३ पक, १ धूम, १ सप्तमी

हिवै नवम विकल्प करि
२७७ १ २ सक्कर, २ पक, १ घूम, १ तम
२७८ २ २ सक्कर, २ पक, १ धूम, १ सप्तमी
हिवै दशम विकल्प करि
२७६ १ ३ सक्कर, १ पक, १ घूम, १ तम
२८० २ ३ सक्कर, १ पक, १ घूम, १ सप्तमी
हिवै सक्कर पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे
२८१ १ १ सक्कर, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी
हिवै द्वितीय विकल्प
२८२ १ १ सक्कर, १ पक, २ तम, २ सप्तमी
हिवै तृतीय विकल्प
२८३ १ १ सक्कर, २ पक, १ तम, २ सप्तमी
हिवै चतुर्थ विकल्प
२८४ १ २ सक्कर, १ पक, १ तम, २ सप्तमी
हिवै पचम विकल्य
२८५ १ १ सक्कर, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी
हिनै पष्ठ विकल्प
२८६ १ १ सम्कर, २ पक, २ तम, १ सप्तमी
हिवै सप्नम विकल्प
२८७ १ २ सक्कर, १ पक, २ तम, १ सप्तमी
हिवै अष्ठम विकल्प
१८८ १ सक्कर, ३ पक, १ तम, १ सप्तमी
हिवे नवम विकल्प
१८ १ र सक्कर, २ पक, १ तम, १ सप्तमी

,		
	हिवै दशम	विकल्प
38	0 8	३ सकर, १ पक, १ तम, १ मप्तमी
ए	सवकर प	कथी ३ भागादण विकल्प करि ३० भागाकह्या
f	हेवै गक्क	र धूम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै -
388	1 8	१ सक्कर, १ धूम, १ तम, ३ सप्तमी
fi	हवे द्वितीय	। विकल्पे १ भागो
२६२	2 2	१ सक्कर, १ धूम, २ तम, २ सप्तमी
f	हवै तृतीय	विकल्पे १ भागो
२६३	8	१ सक्कर, २ धूम, १ तम, २ मप्नमी
हि	वं चतुर्थ	विकल्पे १ भागो
२६४	१	२ सवकर, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी
हि	वै पचम वि	वेकल्पे १ भागो
२६५	8	१ सक्कर, १ धूम, ३ तम, १ सप्तमी
हिं	बै पष्ठ वि	कल्पे १ भागो
२६६	8	१ सकर, २ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिन	ते सप्तम (	वेकल्पे १ भागो
२६७	१	२ सक्कर, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिवै	अष्टम वि	वकल्पे १ भागो
२६६	१	१ सक्कर, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिवै	नवम वि	कल्पे १ भागो
338	8	२ सक्कर, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिवै	दशम वि	कल्पे १ भागो
00	8 =	सक्कर, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी
		थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा क्कर थी १० भागा दश विकल्प करि १०० भागा कह्या।

किसा थी ४ वालु	हिनै वालुक थकी एक-एक विकल्प करि च्यार-च्यार भागा ते किसा ? वालुक पक थी ३, वालुक धूम थी—१ एव वालुक थी ४। वालुक पक धूम थी २ वालुक पक तम थी १। तिहा वालुक पक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —			
३०१	8	१ वालुक, १ पक, १ घूम, ३ तम		
३०२	२	१ वालुक, १ पंक, १ घूम, ३ सप्तमी		
हिवै	द्वितीय	विकल्पे		
३०३	१	१ वालु, १ पक, २ घूम, २ तम		
४०४	२	१ वालु, १ पक, २ धूम, २ सप्तमी		
हिवै	तृतीय	विकल्पे		
३०५	१	१ वालु, २ पक, १ धूम, २ तम		
३०६	२	१ वालु, २ पक, १ घूम, २ सप्तमी		
हिवै	चतुर्थ	विकल्पे		
२०७	१	२ वालु, १ ।क, १ धूम, २ तम		
३०८	२	२ वालु, १ पक, १ धूम, २ सप्तमी		
हिवै	पचम	विकल्पे		
308	१	१ वालु, १ पक, ३ धूम, १ तम		
३१०	२	१ वालु, १ पक, ३ धूम, १ सप्तमी		
हिवै	हिवै पष्ठ विकल्पे			
३११	१	१ वालु, २ पक, २ धूम, १ तम		
३१२	२	१ वालु, २ पक, २ धूम, १ सप्तमी		
हिं	हिवै सप्तम विकल्पे			
३१३	१	२ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम		
३१४	२	२ वालु, १ पक, २ धूम, १ सप्तमी		

३१५       १       श वालु, ३ पक, १ धूम, १ सप्तमी         १६व नवम विकल्पे       १       २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम         ३१७       १       २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम         ३१०       २       २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम         ३१०       १       ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम         ३२०       २       ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी         ६वं पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे         ३२१       १       १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी         ६वं द्वतीय विकल्पे         ३२२       १       १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी         ६वं चतुर्थ विकल्पे         ३२४       १       १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी         ६वं पचम विकल्पे         ३२५       १       १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी         ६वं पण्ठ विकल्पे       ३२६       १       १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी         ६वं सप्तम विकल्पे       ३२७       १       वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी         ६वं सप्तम विकल्पे       ३२७       १       वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी         ६वं सप्तम विकल्पे       ३२०       १       वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी         ६वं सप्तम विलल्पे       ३२०       १       वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी         ६वं सप्तम विलल्पे       ३२०       १       वालु, १ पक, १ तम, १ तम, १ सप्तमी	हिनै अप्ट	म विकल्पे	
हिवै नवम विकल्पे  ३१७ १ २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम  ३१८ २ २ वालु, २ पक, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै दशम विकल्पे  ३१६ १ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ३२० २ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे  ३२१ १ १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी  हिवै हितीय विकल्पे  ३२२ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२४ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पप्ट विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ट विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ट विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै व्यानु १ पक, २ तम, १ सप्तमी	३१५ १	१ वालु, ३ २क, १ घूम, १ तम	
३१७ १ २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम  ३१८ २ २ वालु, २ पक, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै दशम विकल्पे  ३१६ १ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ३२० २ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे  ३२१ १ १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी  हिवै दितीय विकल्पे  ३२२ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२४ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै व्यानु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी	३१६ २	१ वालु, ३ पक, १ धूम, १ सप्तमी	
हिवै दशम विकल्पे  ११६ १ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  १२० २ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  १२० २ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे  ११ १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी  हिवै दितीय विकल्पे  ११ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थं विकल्पे  ११ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थं विकल्पे  ११ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ११ १ वालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ठ विकल्पे  ११ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ११ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ११ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	हिबै नवम	। विकल्पे	
हिवै दशम विकल्पे  ३१६ १ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ३२० २ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे  ३२१ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै दितीय विकल्पे  ३२३ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२५ १ १ वालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्ठ विकल्पे  ३२६ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अण्टम विकल्पे	३१७ १	२ वालु, २ पक, १ घूम, १ तम	
३१६ १ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम ३२० २ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी हिवै पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे ३२१ १ १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी हिवै दितीय विकल्पे ३२२ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी हिवै चतुर्थ विकल्पे ३२३ १ १ वालु, २ पक, १ तम, २ सप्तमी हिवै पचम विकल्पे ३२४ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी हिवै पचम विकल्पे ३२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी हिवै पप्ठ विकल्पे ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी हिवै सप्तम विवल्पे ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी हिवै सप्तम विवल्पे ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी	३१८ २	२ वालु, २ पक, १ घूम, १ सप्तमी	
हिवै पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे  स्र १ १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी  हिवै दितीय विकल्पे  स्र १ १ वालु, १ पक, २ तम, २ सप्तमी  हिवै तृतीय विकल्पे  स्र १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थं विकल्पे  स्र १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  स्र १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पच्म विकल्पे  स्र १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ठ विकल्पे  स्र १ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  स्र १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  स्र १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अण्टम विकल्पे	हिवै दशम	। विकल्पे	
हिबै पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे  ३२१ १ १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी  हिबै द्वितीय विकल्पे  ३२३ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिबै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिबै पचम विकल्पे  ३२४ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिबै पच विकल्पे  ३२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिबै पप्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिबै सप्तम विकल्पे  ३२६ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिबै अप्टम विकल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिबै अप्टम विकल्पे	₹१६ १	३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम	
हिवै द्वितीय विकल्पे  हिवै प्रिंग विकल्पे  हिवै प्रिंग विकल्पे  हिवै प्रिंग विकल्पे  हिवै प्रम विकल्पे  हिवै प्र वालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी  हिवै प्रम विकल्पे  हिवै अप्टम विकल्पे	३२० २	३ वालु, १ पक, १ घूम, १ सप्तमी	
हिवै द्वितीय विकल्पे  २२२ १ १ वालु, १ पक, २ तम, २ सप्तमी  हिवै तृतीय विकल्पे  २२३ १ १ वालु, २ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  २२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  २२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पघ्ठ विकल्पे  २२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  २२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	हिवै पक	तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे	
हिवै तृतीय विकल्पे  १ श्वालु, १पक, २तम, २सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  १ श्वालु, १पक, १तम, २सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  १ श्वालु, १पक, १तम, २सप्तमी  हिवै पच विकल्पे  १ श्वालु, १पक, ३तम, १सप्तमी  हिवै पघ्ठ विकल्पे  १ श्वालु, १पक, २तम, १सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  १ श्वालु, १पक, २तम, १सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  १ वालु, १पक, २तम, १सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	३२१ १	१ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी	
हिवै तृतीय विकल्पे  ३२३ १ १ वालु, २ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	हिवै द्विती	य विकल्पे	
१ १ वालु, २ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  २२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  २२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकल्पे  २२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे  २२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	३२२ १	१ वालु, १ पक, २ तम, २ सप्तमी	
हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	हिबै तृती	य विकल्पे	
३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	३२३ १	१ वालु, २ पक, १ तम, २ सप्तमी	
हिवै पचम विकल्पे  ३२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	हिवै चतुः	र्भं विकल्पे	
३२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	३२४ १	२ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी	
हिबै पष्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २०क, २ तम, १ सप्तमी  हिबै सप्तम विकल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिबै अष्टम विकल्पे	हिवै पच	म विकल्पे	
३२६ १ १ वालु, २०क, २ तम, १ सप्तमी हिवै सप्तम विक्ल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी हिवै अष्टम विकल्पे	३२५ १	१ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी	
हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	हिवै पष्ठ	विकल्पे	
३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी हिवै अष्टम विकल्पे	३२६ १	१ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी	
हिवै अप्टम विकल्पे	हिवै सप्त	म विवल्पे	
	३२७ १	वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी	
३२८ १ १ वाल, ३ पक, १ तम. १ सप्तमी	हिवै अष्टम विकल्पे		
	३२८ १	१ वालु, ३ पक, १ तम, १ सप्तमी	

हिवै र	विकल्पे
३२६	१ २ वालु, २ पक, १ तम, १ सप्तमी
हिबै व	प्राम विकल्पे
३३०	१ ३ वालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी
	ालु पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कह्या।
· हिवै	वालू घूम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै—
३३१	१ १ वालु, १ धूम, १ तम, ३ सप्तमी
हिवै वि	द्वतीय विकल्पे
३३२	१ श्वालु, १ धूम, २ तम, २ सप्तमी
हिबै	नृतीय विकल्पे
३३३	१ श्वालु, २ धूम, १तम, २ मप्तमी
हिवै	वतुर्थं विकल्पे
३३४	१ २ वालु, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी
हिवै	पचम विकल्पे
३३५	१ श वालु, १ घूम, ३ तम, १ सप्तमी
हिवै	पट्ठ विकल्पे
३३६	१ श्वालु, २ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिवै	सप्तम विकरपे
३३७	१ २ वालु, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिवै	अष्टम विकल्पे
३३८	१ श वालु, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिबै	नवम विकल्पे
388	१ र वालु, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिवै	दशम विकल्पे
₹ <b>४</b> ०	१ ३ वालु, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी
ए वा	लु थी ४ भागा दश विकल्प करि ४० भागा कह्या ।

हिवै द्वितीय विकल्पे  हिवै द्वितीय विकल्पे  हिवै तृतीय विकल्पे  हिवै तृतीय विकल्पे  हिवै चतुर्थ विकल्पे  हिवै चतुर्थ विकल्पे  हिवै पचम विकल्पे  हिवै पप्ट विकल्पे  हिवै नवम विकल्पे  हिवै वप्टम विकल्पे  हिवै नवम विकल्पे  हिवै नवम विकल्पे  हिवै नवम विकल्पे	
हिवै हितीय विकल्पे  ३४२ १ १ पक, १ धूम, २ तम, २ सप्तमी  हिवै वतुर्थ विकल्पे  ३४४ १ १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३४५ १ १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै पट विकल्पे  ३४६ १ १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ट विकल्पे  ३४६ १ १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिवै वप्टम विकल्पे  ३४७ १ २ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिवै वप्टम विकल्पे  ३४८ १ १ पक, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै वप्टम विकल्पे  ३४८ १ १ पक, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै वक्षम विकल्पे  ३४८ १ १ पक, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै दशम विकल्पे  ३४० १ ३ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए पक यी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या।  एव रत्न थी २०, सवकर थी १०, वालु थी ४, पक थी १—  ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै। दश विकल्प ना ३५०	हिवै पक थी १ मागो प्रथम विकरप करि कहै छै
हिन्नै तृतीय विकत्पे  हिन्नै तृतीय विकत्पे  हिन्नै तृतीय विकत्पे  हिन्नै चतुर्थं विकल्पे  हिन्नै पचम विकल्पे  हिन्नै पप्ठ विकल्पे  हिन्नै वप्ठ विकल्पे  हिन्नै वप्ठम विकल्पे  हिन्नै वप्ठम विकल्पे  हिन्नै वप्ठम विकल्पे  हिन्नै वप्रम विकल्पे  हिन्नै वप्रम विकल्पे  हिन्नै प्रम विकल्पे	३४१ १ १ पक, १ धूम, १ तम, ३ गप्तमी
हिंदै तृतीय विकत्पे  ३४३ १ १ पक, २ धूम, १ तम, २ सप्तमी  हिंदै चतुर्थं विकल्पे  ३४४ १ २ पक, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी  हिंदै पच विकल्पे  ३४६ १ १ पक, २ धूम, ३ तम, १ सप्तमी  हिंदै सप्तम विकल्पे  ३४७ १ २ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिंदै अप्टम विकल्पे  ३४७ १ २ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिंदै अप्टम विकल्पे  ३४८ १ १ पक, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिंदै विस्तम विकल्पे  ३४८ १ २ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिंदै दशम विकल्पे  ३४० १ ३ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए पक थी १ भागो दश विकल्प किर १० भागा कहा।  एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १—  ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै। दश विकल्प ना ३५०	हिवै द्वितीय विकल्पे
हिवै चतुर्थ विकल्पे  हिवै चतुर्थ विकल्पे  हिवै पत्रम विकल्पे  हिवै पप्ठ विकल्पे  हिवै व्यप्प विकल्पे  हिवै प्रम विकल्पे  हिवै प्रम विकल्पे  हिवै प्रम विकल्पे  हिवै प्रम विकल्पे	३४२ १ १ पक, १ धूम, २ तम, २ सप्तमी
हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३४४ १ २ पक, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३४६ १ १ पक, १ धूम, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पण्ठ विकल्पे  ३४६ १ १ पक, २ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे  ३४६ १ १ पक, ३ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे  ३४६ १ १ पक, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै विमम विकल्पे  ३४६ १ २ पक, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै दशम विकल्पे  ३४६ १ २ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए पक थी १ भागो दश विकल्प किर १० भागा कह्या।  एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १—  ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै। दश विकल्प ना ३६०	हि्र्वै तृतीय विकत्पे
हिबै पचम विकल्पे  ३४५ १ १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिबै पण्ठ विकल्पे  ३४६ १ १ पक, २ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिबै सप्तम विकल्पे  ३४७ १ २ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्नमी  हिबै अप्टम विकल्पे  ३४८ १ १ पक, ३ धूम, २ तम, १ सप्नमी  हिबै नवम विकल्पे  ३४८ १ २ पक, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिबै नवम विकल्पे  ३४८ १ २ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिबै वसम विकल्पे  ३४० १ ३ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए पक वी १ भागो दश विकल्प किर १० भागा कहाा।  एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १—  ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै। दश विकल्प ना ३५०	३४३ १ १ पक, २ धूम, १ तम, २ सप्तमी
हिबै पचम विकल्पे  ३४५ १ १ पक, १ धूम, ३ तम, १ सप्तमी  हिबै पप्ट विकल्पे  ३४६ १ १ पक, २ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिबै सप्तम विकल्पे  ३४७ १ २ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिबै अप्टम विकल्पे  ३४८ १ १ पक, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिबै विम विकल्पे  ३४८ १ २ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिबै दशम विकल्पे  ३५० १ ३ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए पक थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कहाा।  एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १—  ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै। दश विकल्प ना ३५०	हिवै चतुर्थ विकल्पे
हिबै पष्ठ विकल्पे  हिबै पष्ठ विकल्पे  हिबै पष्ठ विकल्पे  हिबै सप्तम विकल्पे  हिबै सप्तम विकल्पे  हिबै वष्टम विकल्पे  हिबै वप्टम विकल्पे  हिबै नवम विकल्पे  हिबै नवम विकल्पे  हिबै दशम विकल्पे	३४४ १ २ पक, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी
हिबै पप्ट विकल्पे  ३४६ १ १ पक, २ घूम, २ तम, १ सप्तमी  हिबै सप्तम विकल्पे  ३४७ १ २ पक, १ घूम, २ तम, १ सप्तमी  हिबै वप्टम विकल्पे  ३४८ १ १ पक, ३ घूम, १ तम, १ सप्तमी  हिबै नवम विकल्पे  ३४८ १ २ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिबै दशम विकल्पे  ३५० १ ३ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए पक थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या।  एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १—  ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुबै। दश विकल्प ना ३५०	हिवै पचम विकल्पे
हिंदे सप्तम विकल्पे हिंदे सप्तम विकल्पे हिंदे अप्टम विकल्पे हिंदे अप्टम विकल्पे हिंदे विकल्पे हिंदे नवम विकल्पे हिंदे नवम विकल्पे हिंदे नवम विकल्पे हिंदे प्रमा विकल्पे हिंदे प्रमा विकल्पे हिंदे प्रमा विकल्पे हिंदे दशम विकल्पे	३४५ १ १ पक, १ धूम, ३ तम, १ सप्तमी
हिंबे सप्तम विकल्पे  ३४७ १ २ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिंबे अप्टम विकल्पे  ३४६ १ १ पक, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिंबे नवम विकल्पे  ३४६ १ २ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिंबे दशम विकल्पे  ३५० १ ३ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए पक यी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या।  एव रत्न थी २०, सवकर थी १०, वालु थी ४, पक थी १—  ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै। दश विकल्प ना ३५०	हिवै पप्ट विकल्पे
हिये अप्टम विकल्पे  हिये अप्टम विकल्पे  हिये नवम विकल्पे  हिये नवम विकल्पे  हिये नवम विकल्पे  हिये दशम विकल्पे  हिये दशम विकल्पे  हिये दशम विकल्पे  ए पक यी १ भागो दश विकल्प किर १० भागा कह्या।  एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १—  ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै। दश विकल्प ना ३५०	३४६ १ १पक, २ घूम, २ तम, १ सप्तमी
हिंबे अप्टम विकल्पे  ३४८ १ १ पक, ३ घूम, १ तम, १ सप्तमी  हिंबे नवम विकल्पे  ३४६ १ २ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिंबे दशम विकल्पे  ३५० १ ३ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए पक यी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या। एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १— ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै। दश विकल्प ना ३५०	हिंवे सप्तम विकल्पे
हिये नवम विकल्पे  इस्ह १ र पक, ३ घूम, १ तम, १ सप्तमी  हिये नवम विकल्पे  हिये दशम विकल्पे  इस्ह १ २ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिये दशम विकल्पे  ए पक थी १ भागो दश विकल्प किर १० भागा कह्या।  एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १—  ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै। दश विकल्प ना ३५०	३४७ १ २ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्नमी
हिब नवम विकल्पे  ३४६ १ २ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिब दशम विकल्पे  ३५० १ ३ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए पक यी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या।  एव रत्न थी २०, सयकर थी १०, वालु थी ४, पक थी १—  ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुव । दश विकल्प ना ३५०	हिंदै अप्टम विकल्पे
हिवै दशम विकल्पे  ३५० १ ३ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए पक यी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या।  एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १—  ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै। दश विकल्प ना ३५०	३४८ १ १ पक, ३ घूम, १ तम, १ सप्तमी
हिनै दशम विकल्पे  ३५० १ ३ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए पक यी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या।  एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १—  ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुनै। दश विकल्प ना ३५०	हिर्व नवम विकल्पे
१५० १ ३ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए पक यी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या।  एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १—  ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै। दश विकल्प ना ३५०	३४६ १ २ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
ए पक थी १ भागो दश विकल्प किर १० भागा कह्या। एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १— ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै। दश विकल्प ना ३५०	हिंवे दशम विकल्पे
एव रत्न थी २०, सबकर थी १०, वालु थी ४, पक थी १— ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै । दश विकल्प ना ३५०	३५० १ ३ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी
	एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १— ए पैतीस भागा एकेक विकल्प ना हुवै । दश विकल्प ना ३५०

१७७ <sup>१</sup>ए षट जीव तणां सुविचार, चउक्कसयोगिक भागा सार। दश विकल्प करिने पहिछाण, तीनसौ ने पचास प्रमाण॥ १७८. नवम शतक नों बतीसम देश, इकसौ तयासीमी ढाल विशेष। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय पसाय, 'जय-जश' सपति हरष सवाय॥

१७७. चउनकसँजोगो वि तहेव। र

ढाल: १८४

# दूहा

१. हिवै कहू षट जीव नां, पंच सयोगिक संच। विकल्प पच करी भला, भंग एक सय पंच।। २ एक एक विकल्प करि, इकवीस-इकवीस जाण। भागा भणवा इहविधे, वरविघ करी पिछाण।।

वा॰ — एकेक विकल्प करि रत्न थी १४, सक्कर थी ४, वालुक थी १— एव २१। रत्न थी १४ तेहनो विवरो — रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ४, रत्न पक थी १— एव १४। ते पनरे ने विषे रत्न सक्कर थी १०, ते किसा? रत्न सक्कर वालुक थी ६, रत्न सक्कर पक थकी ३, रत्न सक्कर धूम थी १— एव रत्न सक्कर थी १०। ते दशा माहे रत्न सक्कर वालुक थकी ६, ते किमा? रत्न सक्कर वालुक पक थी ३, रत्न सक्कर वालुक धूम थी २, रत्न सक्कर वालुक तम थी १— एव रत्न सक्कर वालुक थी ६ भागा हुवै। तिहा रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

- ३ †अथवा एक रत्न मझै, एक सक्कर रै माय। इक वालुक इक पंक मे, दोय धूम कहिवाय।।
- ४ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर मे ताय। एक वालुक इक पक मे, दोय तमा में जाय।।
- ५. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजत। इक वालुक इक पक मे, दोय सप्तमी हुत।। हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्प किर कहे छै —
- ६ अथवा एक रत्न मझै, एक सक्कर रै माय। इक वालुक वे पंक मे, एक धूम कहिवाय।।
- ७. अथवा एक रत्न मझे, इक सक्कर रे माय। इक वालुक वे पक मे, एक तमा मे जाय॥
- अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजत।
   इक वालुक वे पक मे, एक सप्तमी हुत।।
   हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै—
- ६ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै माय। वे वालुक इक पक मे, एक धूम कहिवाय॥

\* लय: इण पुर कबल कोय न लेसी † लय: प्रभवो मन माहि चितवें १,२. पञ्चकसयोगे तु पण्णा पञ्चधाकरणे पञ्च विकल्पा-स्तद्यथाः स्त्राना च पदाना पञ्चकसयोगे एकविशतिविकल्पा , तेषा च पञ्चभिर्गुणने पञ्चोत्तर शतिनित । (वृ० प० ४४५)

१ ढाल १८३ में सात नरक के चतु संयोगिक ३५० भगों का उल्लेख है। उनमें सकर-पक और मक्कर धूम के ४० भग गाथाओं में छूटे हुए हैं। सक्कर-वालू से बनने वाले १० विकल्पों के ६० भग १५१ तक की गाथाओं में आ गए। उसके वाद वार्तिका में सक्कर के १० भगों के १० विकल्पों से होने वाले १०० भगों की सूचना दी गई है पर वे भग गाथाओं में नहीं दिए। आगे यन्त्र में पूरे भग (२६१ से ३००) दिए हुए है।

- १०. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजेत। वे वालुक इक पक मे, एक तमा मे जत।।
- ११. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजत। वे वालुक इक पंक मे, एक सप्तमी हुत।।

हिवै रतन सक्कर वालुक पक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै-

- १२ अथवा एक रत्न मझै, दोय सक्कर रै मांय। इक वालुक इक पक में, एक धुम मे जाय।।
- १३. अथवा एक रत्न मझै, वे सक्कर मे पाय। इक वालुक इक पक मे, एक तमा कहिवाय।।
- १४ अथवा एक रत्न मझै, वे सक्कर उपजत । इक वालुक इक पक मे, एक सप्तमी हुत ।। हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा पचम विकल्प करि कहै छै---
- १५ अथवा दोय रत्न मझै, एक सक्कर रै माय। इक वालुक इक पक मे, एक धूम कहिवाय।।
- १६ अथवा दोय रत्न मझै, एक सक्कर मे पाय। इक वालुक इक पक मे, एक तमा मे जाय।।
- १७. अथवा दोय रत्न मझै, एक सक्कर उपजत। इक वालुक इक पक मे, एक सप्तमी हुत।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा पच विकल्प करि १० भागा, तिहा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

- १८ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय। इक वालुक इक धूम मे, दोय तमा मे जोय।।
- १६. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजत। इक वालुक इक धूम मे, दोय सप्तमी हुत।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै-

- २०. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै माय। इक वालुक वे धुम मे, एक तमा मे जाय।।
- २१ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै माय। इक वालुक वे धूम मे, एक सप्तमी थाय।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै-

- २२. अथवा एक रत्न मझी, इक सक्कर दुखधाम। वे वालुक इक धूम मे, एक तमा मे पाम।।
- २३. अथवा एक रत्ने मझै, इक सक्कर पहिछान । वे वालुक इक धूम मे, एक सप्तमी जान ॥ हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा चतुर्थ विकल्म करि कहै छै—
- २४. अथवा एक रत्न मझै, वे सक्कर दुखरास। इक वालुक इक धूम मे, एक तमा अभित्रास॥
- २५. अथवा एक रत्ने मझै, वे सक्कर दुखपूर। इक वालुक इक धूम में, एक सप्तमीं भूर॥

हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा पचम विकल्प करि कहै छै-

२६. अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर रै माय। इक वालुक इक धूम मे, एक तमा दुख पाय।।

- २७ अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर अघखान । इक वालुक इक धूम मे, एक सप्तमी जान ॥ ए रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा ५ विकल्प करि १० भागा कह्या। हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भागो पाच विकल्प करि कहै छै---
- २८ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजत । इक वालुक इक तम विषे, दोय सप्तमी हुत ॥ हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—
- २६ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै माय। इक वालुक वे तमा विषे, एक सप्तमी जाय।। हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भागो तृतीय विकल्प करि कहै छै—
- ३० अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर दुख पाय। वे वालुक इक तम विषे, एक सप्तमी कहाय।। हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भागो चतुर्थ विकल्प करि कहे छै---
- ३१ अथवा एक रत्न मझं, वे सक्कर अवलोय। इक वालुक इक तम विषे, एक सप्तमी होय।। हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भागो पचम विकल्प करि कहै छै—
- ३२ अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर पहिछान। इक वालुक इक तम विषे, एक सप्नमी जान।।
  ए रत्न सक्कर वालुक थी ६ भागा पाच विकल्प करि ३० भागा कह्या।
  हिवै रत्न सक्कर पक थी ३ भागा, ते किसा १ सक्कर रत्न पक धूम थी २,
  पक तम थी १। तिहा रत्न सक्कर पक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि
  कहै छै—
- ३३. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै माय। एक पक इक घूम मे, दोय तमा कहिवाय॥
- ३४. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजत।
  एक पक इक धूम मे, दोय सप्तमी हुत।।
  हिवै रत्न सक्कर पक धूम थी २ भागा द्वितीय विकल्प किर कहे छै---
- ३५ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय। एक पक वे धूम मे, एक तमा मे जोय।।
- ३६ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर पहिछान।
  एक पक वे धूम मे, एक सप्तमी जान।।
  हिवै रत्न सक्कर पक धूम थी २ भागा तृनीय विकल्प करि कहै छै---
- ३७. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर दुखरास। दोय पक इक धूम मे, एक तमा अभित्रास।। ३८. अथवा एक रत्न मझै, एक सक्कर अघखान। दोय पक इक धूम मे, एक सप्तमी जान।।

हिवै रतन सक्कर पक धुम थी २ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै-

- ३६. अथवा एक रत्न मझै, वे सक्कर पहिछान। एक पंक इक धुम में, एक तमा दुखखान।।
- ४०. अथवा एक रत्ने मझै, वे सक्कर रै मांय। एक पंक इक धूम में, एक सप्तमी पाय।। हिवै रत्न सक्कर पक धूम थी २ भांगा पचम विकल्प करि कहै छै— '
- ४१. अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय। एक पक इक धूम में, एक तमा दुख होय।।
- ४२. अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर आख्यात।
  एक पक इक धूम मे, एक सप्तमी जात।।
  हिवै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो प्रथम विवस्प करि कहै छै—
- ४३. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय।
  एक पंक इक तम विषे, दोय सप्तमी होय।।
  हिवै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—
- ४४ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजत।
  एक पंक वे तम विषे, एक सप्तमी हुंत।।
  हिवै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो तृतीय विकल्प करि कहै छै—
- ४५. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर मे देख। दोय पक इक तम विषे, एक सप्तमी पेख।। हिवै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो चतुर्थ विकल्य करि कहै छै—
- ४६. अथवा एक रत्न मझै, वे सक्कर पहिछान।
  एक पक इक तम विषे, एक सप्तमी जान।।
  हिवै रत्न सक्कर पंक तम थी १ भागो पंचम विकल्प करि कहै छै—
- ४७ अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय।
  एक पंक इक तम विपे, एक सप्तमी होय।।
  ए रत्न सक्कर पक थी ३ भागा पच विकल्प करि १५ भागा कह्या।
  हिवै रत्न सक्कर घूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै—
- ४८. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर में पेख।
  एक घूम एक तम विषे, दोय सप्तमी लेख।।
  हिवै रत्न मक्कर घूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—
- ४६. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर सोय।
  एक घूम वे तम विषे, एक सप्तमी होय।।
  हिवै रत्न सक्कर घूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्प करि कहै छै-
- ५० अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर अघखान। दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमी जान।। हिवै रत्न सक्कर धूम तम थी १ भागो चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—
- ५१. अथवा एक रत्न मझै, वे सक्कर दुखपूर। एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमी भूर॥

हिवै रत्न सक्कर धूम तम थी १ भागो पचम विकल्प करि कहै छै— ५२. अथवा दोय रत्न मझे, इक सक्कर दुखरास। एक धूम इक तम विपे, एक सप्तमी तास।।

ए रत्न सक्कर थी १० भागा पच विकल्प करि ५० भागा कहा। । हिचै रत्न वालुक थी ४ भागा एकेक विकल्प करि तेहनो विवरो—रत्न वालुक पक थी ३, रत्न वालुक घूम थी १। रत्न वालुक पक थी ३, ते किसा १ रत्न वालुक पक धूम थी २, रत्न वालुक पक तम थी १—एव ३। तिहा रत्न वालुक पक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

५३. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका माय। एक पक इक धूम मे, दोय तमा कहिवाय।।

५४ अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका माय। एक पक इक धूम मे, दोय सप्तमी पाय।।

हिवै रत्न वालुक पक घूम थी २ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै--

५५. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका होय। एक पक दोय धूम मे, एक तमा अवलोय।।

५६. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका होय। एक पक वे धूम में, एक सप्तमी जोय।।

हिवै रत्न वालुक पक धूम थी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै-

५७. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका माय। दोय पक इक धूम मे, एक तमा कहिवाय।

५८. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका देख। दोय पक इक धूम मे, एक सप्नमी शेष।। हिवै रत्न वालुक पक धूम थी २ भागा चतुर्थ दिकस्य करि कहै छै—

५६. अथवा एक रत्न मझै, दोय वालुका मांय। एक पक इक धूम में, एक तमा दुखदाय।।

६० अथवा एक रत्न मझै, दोय वालुका पाय। एक पक इक धूम मे, एक सप्तमी जाय।।

हिवै रत्न वालुक पक धूम थी २ भागा पचम विकल्प करि कहै छै-

६१. अथवा दोय रत्न मझै, एक वालुका सोय। एक पक इक धूम मे, एक तमा अवलोय।।

६२. अथवा दोय रत्न मझै, एक वालुका होय। एक पक इक धूम मे, एक सप्तमी जोय॥ हिवै रत्न वालुक पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

६३. अथवा एक रतन मझै, एक वालुका सोय।
एक पक इक तम विषे, दोय सप्तमी होय।।
हिवै रत्न वालुक पक तम थी १ भागो दितीय विकल्प करि कहै छै----

६४. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका मांय। एक पक वे तम विषे, एक सप्तमी जाय।। हिवै रत्न वालुक पक तम थी १ भागो तृतीय विकल्प करि कहै छै---

६५. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका देख। दोय पक इक तम विषे, एक सप्तमी शेष।। हिवै रत्न वालुक पंक नम थी १ भागो नतुर्थ विकरप करि कहै छै-

६६. अथवा एक रत्न मझै, दोय वालुका पेरा। एक पंक इक तम विषे, एक सप्तमी लेख।। हिवै रत्न वालुक पक तम थी १ भागो पचम विकरण करि कड़ै छै—

६७. अथवा दोय रत्न मझै, एक वालुका मांय।
एक पक इक तम विषे, एक सप्तमी जाय।।
ए रत्न वालुक वक थी ३ भागा पाच विकरप किंग्स्थ भागा कह्या।
हिवै रत्न वालुक धूम तम थी १ भागो प्रथम विकरप किंर किंह

६ स्न अथवा एक रतन मझै, एक वालुका चीन।
एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमी लीन।।
हिवै रतन वालुक धूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै--

६६. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका पेछ।
एक धूम वे तम विषे, एक सप्तमी देख।।
हिवै रत्न वालुक धूम तम थी १ भागो तृतीय विकरप किंग् कहै छै—

७० अथवा एक रतन मझै, एक वालुका सोय।
दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमी होय॥
हिवै रत्न वालुक धूम तम थी १ भागो चतुर्थ विकटा करि कहै छै—

७१ अथवा एक रत्न मझै, दोय वालुका देख।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमी लेख।।
हिवै रत्न वालुक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्प करि गर्र छै—

७२ अथवा दोय नत्न मझ, एक वालुका सोय।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमी होय।।
ए वालुक थी ४ भागा पाच विकल्प करि २० भागा कह्या।

हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पाच विकल्प करि ५ भागा हुवै, ते प्रथम विकरप करि कहै छै---

७३. अथवा एक रत्न मझै, एक पक अवलोय।
एक धूम इक तम विपे, दोय सप्तमी होय॥
हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो हितीय विकरप करि कहै छै—

७४. अथवा एक रत्न मझै, एक पक अवलोय।
एक धूम वे तम विषे, एक सप्तमी होय।।
हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्प करि कहै छै—

७५ अथवा एक रत्न मझै, एक पंक उपजत। दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमी हुत।। हिवै रत्न पक धूम तम थी १भागो चतुर्थ विकत्प करि कहै छै—

७६ अथवा एक रत्न मझै, दोय पक दुखरास।
एक धूम इक तम विपे, एक सप्तमी वास।।
हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पंचम विकल्प करि कहै छै—

७७. अथवा दोय रत्न मझै, एक पंक दुखपूर। एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमी भूर॥ ए रत्न घूम थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भांगा कह्या ।

हिवै सक्कर थी ५ भागा ५ विकल्प करि २५ हुवै। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो पाच विकल्प करि कहै छै, तिणमे सातमी नरक टली।

७८. अथवा एक सक्कर मझें, इक वालुक अवलोय। एक पंक इक धूम में, दोय तमा में होय॥

७६. अथवा एक सक्कर मझे, इक वालुक उपजत। एक पंक वे धूम मे, एक तमा मे हुत।।

द०. अथवा एक सक्कर मझे, इक वालुक दुखरास।

दोय पंक इक धूम मे, एक तमा अतित्रास ।।

दश् अथवा एक सक्कर मझै, दोय वालुका देख। एक पक इक धूम मे, एक तमा दुख पेख।।

प्त पंत इक धूम मे, एक तमा में जाय।।

हिवै सक्कर थी द्वितीय भागो ५ विकल्प करि कहै छै, तिणमे छठी नरक टली ।

द्र अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक उपजत। एक पक इक धूम मे, दोय सप्तमी हुत।।

द४. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक अवलोय । एक पक वे धूम मे, एक सप्तमी सोय ॥

दथ्र. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक दुखदाय I

दोय पक इक धूम मे, एक सप्तमी जाय।।

द६ अथवा एक सक्कर मझै, दोय वालुका देख। एक पक इक धूम मे, एक सप्तमी शेख।।

द७. अथवा दोय सक्कर मझै, एक वालुका माय। एक पंक इक घूम में, एक सप्तमी जाय।।

हिबै सक्कर थी तृतीय भागो ५ विकल्प करि कहै छै, तिणमे पचमी नरक

टली ।

दद. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक उपजत । एक पक इक तम विषे, दोय सप्तमी हुंत ॥

द ह. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक अवलोय। एक पंक वे तम विषे, एक सप्तमी होय।।

६०. अथवा एक सक्कर मझै, एक वालुका पेख।दोय पंक इक तम विषे, एक सप्तमी शेख।

६१. अथवा एक सक्कर मझै, दोय वालुका देख। एक पंक इक तम विषे, एक सप्तमी पेख।।

हर. अथवा दोय सक्कर मझै, इक वालुक कहिवाय।
एक पक एक तम विषे, एक सप्तमी जाय।।
हिवै सक्कर थी चतर्थ भागो ४ विकल्प करि कहै छै.

हिवै सक्कर थी चतुर्य भागो ५ विकल्प करि कहै छै, तिणमे चउयी नरक

टली ।

६३ अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक अवलोय। एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमी सोय॥ ६४. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक उपजंत । एक धूम वे तम विषे, एक सप्तमी हुत ॥

६५. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक दुखरास। दोय धुम इक तम विषे, एक सप्तमी तास।।

६६. अथवा एक सक्कर मझै, दोय वालुका देख। एक धूम एक तम विषे, एक सप्तमी लेख।।

ह७. अयवा दोय सक्कर मझै, इक वालुक दुखधाम। एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं पाम।।

हिबै मक्कर थी पचमो भागो ५ विकत्य करि कहै छै, निणमे नीजी नरक

## टली ।

६८. अथवा एक सक्कर मझै, एक पंक कहिवाय। एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमी जाय।।

६६. अथवा एक सक्कर मझै, एक पंक उत्पन्त । एक धूम वे तम विषे, एक सप्तमी जन्त ॥

१००. अथवा एक सक्कर मझै, एक पंक अवलोय। दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमी जोय॥

१०१. अथवा एक सक्कर मझै, दोय पक रै मांय। एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमी जाय॥

१०२. अथवा दोय सक्कर मझै, एक पंक उपजंत।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमी हुंत।।
ए सक्कर थी ५ भागा पाच विकरप करि २५ भागा कहा।
हिवै वालुक थी १ भागो ५ विकरप करि ५ भागा कहै छै—

१०३. अथवा एक वालुक मझै, एक पंक अवलोय। एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमी जोय।।

१०४. अथवा एक वालुक मझै, एक पंक उपजंत। एक धूम वे तम विषे, एक सप्तमी हुंत॥

१०५. अथवा एक वालुक मझै, एक पंक पहिछान। दोय घूम इक तम विषे, एक सप्तमी जान।।

१०६. अथवा एक वालुक मझै, दोय पक दुखरास। एक धूम एक तम विषे, एक सप्तमी वास।।

१०७. अथवा वे वालुक मझै, एक पक दुखखान। एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमी जान।।

१० द. रैपनर रत्न थी पंच सक्तर थी, इक वालुक थी जाणिये। इकवीस विकल्प एक करि ए, पंचयोगिक आणिये।।

१०६. जीव पट ना पंच विकल्प पचयोगिक ना कह्या। एक सौ ने पंच भगा, पूर्व रीत करी थया।।

एकेक विकरप करि रत्न थी १४, मक्कर थी ४, वालुक थी १—एव २१। रत्न थी १४ हुवै, तेह्नो विवरो—रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ४, रत्न पक थी १— एव १४। ते पनरै नै विषे रत्न सक्कर थी १०, ते किमा? रत्न सक्कर वालुक थी ६, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी १—एव रत्न

१०७. बहुवा दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे बहेसत्तमाए होज्जा।

<sup>\*</sup> लय: पूज मोटा भाज तोदा

१६४ भगवती-जोड्

सक्कर थी १०। ते दशा माहे रत्न सक्कर वालुक थकी ६, तें किसा ? रत्न सक्कर वालुक पक थी ३, रत्न सक्कर वालुक धूम थी २, रत्न सक्कर वालुक तम थी १—एवं रत्न सक्कर वालुक थी ६ भागा हुवै। तिहा रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

<ul> <li>१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ घूम</li> <li>२ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ तम</li> <li>३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ सप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्पे</li> <li>४ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ घूम</li> <li>५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ घूम</li> <li>६ ३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ सप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा तृतीय विकल्पे</li> <li>७ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ घूम</li> <li>द १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ सप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्पे</li> <li>१० १ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्पे</li> <li>१० १ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ घूम</li> <li>११ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे</li> <li>१३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे</li> <li>१३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम</li> <li>१४ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम</li> <li>१४ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम</li> <li>१४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर वालुक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे</li> <li>१६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ घूम, २ तम</li> <li>१७ २ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ घूम, २ तम</li> <li>१७ २ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ घूम, २ तम</li> </ul>	३ भागा प्रथम विकल्प करि कह छ-		
हवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्पे ४ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ धूम  प २ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ धूम  प २ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा तृतीय विकल्पे  ७ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ धूम  ८ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ दिम  ६ ३ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा चतुर्य विकल्पे  १० १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  १० १ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  ११ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ दिम  १२ ३ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे  १३ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  १४ २ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालु पक धी ३ भागा पचम विकल्पे  १३ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी	8	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम
हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्पे ४ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ धूम  ५ २ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ तम  ६ ३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा तृतीय विकल्पे ७ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ धूम  ८ २ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ तम  १ ३ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्पे १० १ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  ११ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ द्वम  ११ ३ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे १३ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  १४ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ तम  १४ ३ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ तम  १४ ३ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी	२	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ तम
<ul> <li>४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ धूम</li> <li>५ २ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ तम</li> <li>६ ३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ सप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा तृतीय विकल्पे</li> <li>७ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ धूम</li> <li>६ ३ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ धूम</li> <li>६ ३ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्पे</li> <li>१० १ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम</li> <li>१२ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे</li> <li>१३ १ २ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे</li> <li>१३ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ धूम</li> <li>१४ २ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे</li> <li>१६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी</li> </ul>	m	Ħ	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ सप्तमी
प्र २ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ तम  ६ ३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ सप्तमी  हिन्नै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा तृतीय विकल्पे  ७ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ धूम  ६ ३ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ तम  १ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिन्नै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्पे  १० १ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  ११ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिन्नै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे  १३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  १४ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिन्नै रत्न सक्कर वालु पक्ष थी ३ भागा पचम विकल्पे  १३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिन्नै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिन्नै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ तम	हिवै	रत्न स	क्कर वालुक पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्पे
ह इ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा तृतीय विकल्पे  ७ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ धूम  ८ २ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्पे  १० १ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  १० १ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  ११ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे  १३ १ २ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  १४ २ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  १४ ३ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी	8	१	१ रत्न. १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ धूम
हिबै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा तृतीय विकल्पे  थ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ धूम  द २ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ तम  हिबै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्पे  १० १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  ११ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  १२ ३ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिबै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे  १३ १ २ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिबै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे  १३ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  १४ २ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिबै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी	પ્ર	2	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ तम
७ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ धूम	W	इ	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ सप्तमी
	हिर्द	रत्न र	तक्कर वालुक पक थी ३ भागा तृतीय विकल्पे
ह	b	8	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ धूम
हिब रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्पे  १० १ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम  ११ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम  १२ ३ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिव रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे  १३ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ धूम  १४ २ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम  १५ ३ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी  हिव रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ तम	5	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ तम
१० १ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ घूम  ११ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम  १२ ३ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकत्पे  १३ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ घूम  १४ २ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम  १५ ३ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालुक घूम थी २ भागा प्रथम विकत्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ घूम, २ तम	3	37	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी
११ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम  १२ ३ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे  १३ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ धूम  १४ २ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम  १५ ३ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ तम	हि	वै रतन	सक्कर वालु पक थी ३ भागा चतुर्थं विकल्पे
१२ ३ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे  १३ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ धूम  १४ २ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम  १५ ३ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ तम	१०	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ घूम
हिबै रत्न सक्कर वालु पक्ष थी ३ भागा पचम विकल्पे  १३ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ धूम  १४ २ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम  १५ ३ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी  हिबै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ तम	११	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम
१३ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ धूम  १४ २ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम  १५ ३ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ तम	१२	lb/	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी
१४ २ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम  १५ ३ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी  हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे  १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ तम	हि	वै रत्न	सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे
१५ ३ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ तम	१३	8	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ धूम
हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे १६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ तम	१४	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम
१६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ तम	१५	R	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी
	f	्वै रत्न	सक्कर वालुक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे
१७ २ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ सप्तमी	१६	.   १	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ तम
	१७	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ सप्तमी

والمراجع المراجع
हिवै रत्न सक्कर वालु धूम थी २ भागा दितीय विकल्पे
१८ १ रत्न, १ खनकर, १ वालु, २ धूम, १ तम
१६ २ १ रतन, १ सब्कर, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै रत्न सक्कर वालु धूम थी २ भागा तृतीय विकल्पे
२०   १   १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम
२१ २ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ सप्तमी
हिवें रत्न सक्कर वालु धूम थी २ मागा चतुर्थ विकल्पे
२२ १ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, १ तम
२३ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, १ सप्तमी
हिवै रत्न सक्कर वालु धूम थी २ भागा पचम विकल्पे
२४ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ घूम, १ तम
२५ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ सप्तमी
हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै—
२६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ तम, २ सप्तमी
हिंवे रत्न सक्कर वालु तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे
२७ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ तम, १ सप्तमी
हिवै रत्न सक्कर वालु तम थी १ भागो तीजे विकल्पे
२८ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ तम, १ सप्तमी
हिनै रत्न सक्कर वालु तम थी १ भागो चतुर्थ विकल्पे
२६ १ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ तम, १ सप्तमी
हिबै रत्न सक्कर वालु तम थी १ भागो पचम विकल्पे
३० १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ तम, १ सप्तमी
ए रत्न वालुक थी ६ भागा पच विकल्प करि ३० भागा कह्या।

हिवै रत्न सक्तर पक थी ३ भागा ते किसा <sup>२</sup> रत्न सक्कर पक धूम थी २, रत्न सक्कर पक तम थी १ तिहा रत्न सक्कर पक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
३१ १ १ रतन, १ सक्कर, १ पक, १ धूम, २ तम		
३२ २ १ रत्न, १ मक्कर, १ पक, १ धूम, २ सप्तमी		
हिवै रत्न सक्कर पक धूम थी २ मागा दूजे विकरपे		
३३ १ १ रहन, १ सबकर, १ पक, २ धूम १ तम		
३४ २ १ रतन, १ सक्कर, १ पक, २ धूम, १ सातमी		
हिवै रत्न सक्कर पक घूम थी २ भागा तीजे विकरपे		
३५ १ १ रत्न, १ सबकर, २ पक, १ धूम, १ तम		
३६ २ १ रत्न, १ सक्कर, २ पक, १ धूम, १ सप्तमी		
हिबै रत्न सबकर पक धूम थी २ भागा चतुर्य विकल्पे		
३७ १ १ रत्न, २ मक्कर, १ पक, १ धूम, १ तम		
३८ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी		
हिवै रत्न सक्कर पक धूम थी २ भागा पचम विकल्पे		
३६ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ धूम, १ तम		
४० २ २ रत्न, १ सनकर, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी		
हिबै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
४१ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ तम, २ मप्तमी		
हिर्वे रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो द्वितीय विवल्पे		
४२ १ १ रतन, १ सक्कर, १ पक, २ तम, १ सप्तमी		
हिनै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो तृतीय विकरपे		
४३ १ १ रतन, १ सनकर, २ पक, १ तम, १ सप्तमी		
हिवै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो चतुर्थ विकरपे		
४४ १ १ रतन, २ मक्कर, १ पक, १ तम, १ सप्तमी		

हिवै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो पचम विकरपे		
४५ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ तम, १ सप्तमी		
ए रत्न मनकर पक थी ३ भागा, ५ विकल्प करि १५ भागा कह्या।		
हिवै रत्न सक्कर घूम थी एक भागो पच विकल्प करि ५ भागा कहै छै—		
४६ १ १ रतन, १ मक्कर, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी		
रत्न सक्कर धूम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे		
४७ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ घूम, २ तम, १ मध्तमी		
रत्न सकर धूम थी १ भागो तृतीय विकल्पे		
४८ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी		
रत्न मक्कर धूम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्पे		
४६ १ १ रत्न, २ सक्कर, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं		
रत्न सक्कर धूम थी १ भागो पचम विकल्पे		
५० १ २ रत्न, १ सबकर, १ धूम, १ तम, १ मध्तमी		
ए रत्न सक्कर धूम थी १ भागो पंच विकल्प करि कह्यो। एव रत्न मक्कर थी १० भागा, पच विकत्प करि ५० भागा कह्या।		
हिनै रत्न वालुक थी ४ भागा एकेक विकल्प करि हुनै ते किसा रेरत्न वालु पक थी ३, रत्न वालु धूम थी १, तिहा रत्न वालुक पक थी ३ ते किसा रेरत्न वालुक पक धूम थी २, रत्न वालुक पक धूम थी २, रत्न वालुक पक तम थी १ एव ३। तिहा रत्न वालुक पक सुम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
५१ १ १ रत्न, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम		
५२ २ १ रत्न, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ सप्तमी		
हिवै रस्त वालुक पक घूम यो २ भागा द्वितीय विकल्पे		
५३ र १ रत्न, १ वालु, १ पक, २ घूम, १ तम		
५४ २ १ रत्न, १ वालु, १ पक, २ घूम, १ सप्तमी		

हिवै रत्न वालु पक धूम थी २ भागा तृतीय विकल्पे
५५ १ १ रत्न, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम
५६ २ १ रत्न, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ सप्तमी
हिवै रत्न वालु पक धूम थी २ भागा चतुर्थ विकल्पे
५७ १ रत्न, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम
५६ २ १ रत्न, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी
हिवै रत्न वालुक पक घूम थी २ भागा पचम विकल्पे
५६ १ २ रत्त, १ वालु, १ प म, १ धूम, १ तम
६० २ रत्न, १ वाधु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी
हिनै रत्न वालु पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै —
६१ १ १ रत्न, १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी
हिवै रत्न वालु पक तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे
६२ १ १ रत्न, १ बालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी
हिवै रत्न वालु पक तम यी १ भागो तृतीय विकल्पे
६३ १ १ रत्न, १ वालु, २ पक, १ तम, १ सप्तमी
हिवै रत्न वालु पक तम थी १ भागो चतुर्थ विकल्पे
६४ १ १ रतन, २ वालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी
हिबै रत्न वालु पक तम थी १ भागो पचम विकल्पे
६५ १ २ रत्न, १ बालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी
ए रत्न वालुक पक थी ३ भागा कह्या।
हिव रत्न वालुक धूम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहे छै-
६६ १ १ रतन, १ वालु, १ घूम, १ तम, २ सम्तमी
हिवै रत वालुक धूम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे
६७ १ रत्न, १ वालु, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी

हिन रत्न वालु धूम थी १ भागो चतुर्थ विकल्पे  हिन रत्न वालु धूम थी १ भागो चतुर्थ विकल्पे  हिन रत्न वालु धूम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७० १ र रत्न, १ वालु, १ धूम, १ तम,१ सप्तमी  ए रत्न वालुक पक थी ४ भागा पच विकल्प करि २० भागा कहा।।  हिन रत्न पक धूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे  ७१ १ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी  हिन रत्न पक धूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे  ७२ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिन रत्न पक धूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे  ७३ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिन रत्न पक धूम तम थी १ भागो चतुर्थ विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिन रत्न पक धूम तम थी १ भागो चतुर्थ विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिन रत्न पक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए रत्न थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कहा।।  हिन सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प करि ७५ भागा कहा।।  हिन सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प करि छुन, ते पाच विकल्प करि २६ हुन ते तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि २६ हुन ति तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि २६ हुन ति तिहा सक्कर थी पक, १ धूम, १ तम  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ७६ ४ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम	हि	वै रत्न	वालु घूम थी १ भागो तृतीय विकल्पे
हिंदै रत्न वालु घूम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७० १ र रत्न, १ वालु, १ घूम, १ तम,१ सप्तमी  ए रत्न वालुक पक थी ४ भागा पच विकल्प करि २० भागा कहाा।  हिंदै रत्न पक घूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै—  ७१ १ रत्न, १ पक, १ घूम, १ तम, २ सप्तमी  हिंदै रत्न पक घूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे  ७२ १ १ रत्न, १ पक, १ घूम, २ तम, १ सप्तमी  हिंदै रत्न पक घूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे  ७३ १ १ रत्न, १ पक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी  हिंदै रत्न पक घूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, १ पक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी  हिंदै रत्न पक घूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी  हिंदै रत्न पक घूम तम थी १ भागो चचम विकल्पे  ७४ १ २ रत्न, १ पक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी  ए रत्न थी १४ भागा पच विकल्प करि ७४ भागा कहा।।  हिंदै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प करि ७४ भागा कहा।।  हिंदै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प करि ७४ भागा कहा।।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, २ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, १ तम	६८	8	१ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिंवे रत्न वालु घूम थी १ भागो पचम विकल्पे  ए रत्न वालुक पक थी ४ भागा पच विकल्प करि २० भागा कहाा।  हिंवे रत्न पक घूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै—  ७१ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी  हिंवे रत्न पक घूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे  ७२ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिंवे रत्न पक घूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे  ७३ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिंवे रत्न पक घूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिंवे रत्न पक घूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिंवे रत्न पक घूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए रत्न थी १४ भागा पच विकल्प करि ७४ भागा कहाा।  हिंवे सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्म करि हुवै, ते पाच विकल्प करि २४ हुवै। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि रु४ हुवै। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम	हि	वै रत्न	वालु धूम थी १ भागो चतुर्थ विकल्पे
७० १ र रत्न, १ वालु, १ धूम, १ तम,१ सप्तमी  ए रत्न वालुक पक थी ४ भागा पच विकल्प करि २० भागा कह्या।  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै  ७ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो दितीय विकल्पे  ७२ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे  ७३ १ १ रत्न, १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए रत्न थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कह्या।  हिवै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्म करि हुवै, ते पाच विकल्प करि २५ हुवै। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ७६ ४ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम	६९	8	१ रत्न, २ त्रालु, १ घूम, १ तम,१ सप्तमी
ए रत्न वालुक पक थी ४ भागा पच विकल्प किर २० भागा कहा।।  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प किर कहै छै—  ७१ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे  ७२ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे  ७३ १ १ रत्न १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७४ १ २ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए रत्न थी १४ भागा पच विकल्प किर ७४ भागा कहा।।  हिवै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प किर ७४ भागा कहा।।  हिवै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प किर ७४ भागा कहा।।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम	हि	वै रत्न	वालु धूम थी १ भागो पचम विकल्पे
हिबै रत्न पक धूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प किर कहै छै—  ७१ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी  हिबै रत्न पक धूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे  ७२ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिबै रत्न पक धूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे  ७३ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिबै रत्न पक धूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिबै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७४ १ २ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए रत्न थी १५ भागा पच विकल्प किर ७५ भागा कह्या।  हिबै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प किर ७५ भागा कह्या।  हिबै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प किर छूम, १ तम  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ७६ ४ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम	৬০	8	२ रत्न, १ वालु, १ धूम, १ तम,१ सप्तमी
७१ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागी द्वितीय विकल्पे  ७२ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागी तृतीय विकल्पे  ७३ १ १ रत्न १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७४ १ २ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए रत्न थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कह्या।  हिवै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प करि इवै, ते पाच विकल्प करि २५ हुवै। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम			लुक पक थी ४ भागा पच विकल्प करि २० भागा
हिब रत्न पक धूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे  ७२ १ १ रत्न, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी  हिव रत्न पक धूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे  ७३ १ १ रत्न १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिव रत्न पक धूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिव रत्न पक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७४ १ २ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए रत्न थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कह्या।  हिव सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प करि इव, ते पाच विकल्प करि २५ हुव। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि २५ हुव। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ७६ ४ १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम			पक धूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्य करि कहै
हिन रत्न पक घूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे  हिन रत्न पक घूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे  हिन रत्न पक घूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  हिन रत्न पक घूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  हिन रत्न पक घूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  हिन रत्न पक घूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  हिन रत्न पक घूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  हिन रत्न पक घूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  हिन रत्न पक घूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  हिन रत्न पक घूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  हिन रत्न पक घूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  हिन रत्न पक घूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  हिन रत्न पक घूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  हिन सक्तर थी पच भागा एकेक विकल्प करि हुन, ते पाच विकल्प करि २५ हुन । तिहा सक्तर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि २५ हुन । तिहा सक्तर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली ।  हिन सक्तर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम  हिन सक्तर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  हिन सक्तर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम	৬१	8	१ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी
हिवै रत्न पक घूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे  ७३ १ १ रत्न १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक घूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक घूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७५ १ २ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए रत्न थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कह्या।  हिवै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प करि हुवै, ते पाच विकल्प करि २५ हुवै। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ७६ ४ १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम	हि	वै रत्न	पक धूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे
१   १ रत्न १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी     हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे     ७४   १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी     हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे     ७५   १   २ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी     ए रत्न थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कह्या ।     हिवै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प करि हुवै, ते पाच विकल्प करि २५ हुवै । तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली ।     ७६   १   १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम     ७७   २   १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम     ७६   ४   १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम     ७६   ४   १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम     ७६   ४   १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम	७२	8	१ रत्न, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  ७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७५ १ २ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए रत्न थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कह्या।  हिवै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्म करि हुवै, ते पाच विकल्प करि २५ हुवै। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ७६ ४ १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम	हि	नै रत्न	पक घूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे
७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७५ १ २ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए रत्न थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कह्या।  हिवै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प करि हुवै, ते पाच विकल्प करि २५ हुवै। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ७६ ४ १ सक्कर, २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम	७३	१	१ रत्न १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिनै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे  ७५ १ २ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए रत्न थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कह्या।  हिनै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प करि हुनै, ते पाच विकल्प करि २५ हुनै। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ७६ ४ १ सक्कर, २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम	हि	ने रत्न	पक धूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे
७५ १ २ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी  ए रत्न थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कह्या।  हिवै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्प करि हुवै, ते पाच विकल्प करि २५ हुवै। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ७६ ४ १ सक्कर, २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम	৬४	१	१ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी
ए रत्न थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कह्या।  हिवै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्म करि हुवै, ते पाच विकल्प करि २५ हुवै। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ७६ ४ १ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम	हिरं	ने रत्न ।	पक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे
हिनै सक्कर थी पच भागा एकेक विकल्म करि हुनै, ते पाच विकल्प करि २५ हुनै। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम  ७८ ४ १ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम	৬ৼ	१	२ रत्न, १ पक, १ धून, १ तम, १ सप्तमी
विकल्प करि २५ हुनै । तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली ।  ७६ १ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम  ७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम  ७६ ४ १ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम	ए :	रत्न थी	१५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कह्या।
७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम ७६ ४ १ सक्कर, २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम	विव	न्लप का	रे २५ हुवै। तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५
७६ ४ १ सक्कर, २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम	७६	१	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम
७६ ४ १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम	৩৩	२	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम
	৬=	₹	१ सक्तर, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम
८० ५ २ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम	30	४	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम
	50	પ્ર	२ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम

•	सक्कर नरक ट	थी द्वितीय भांगी ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे इली ।
58	8	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ सप्तमी
द२	٦	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, १ सप्तमी
ធង្	ą	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ सप्तमी
द४	٧	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी
与义	ų	२ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, १ सप्तमी
		थी तृतीय भागो ५ विकल्प करि कहे छै तिणमे हटली।
K &	१	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी
=6	२	१ सक्कर, १ बालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी
ធធ	n,	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ तम, १ सप्तमी
32	8	१ नक्कर, २ वालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी
60	ય	२ मक्कर, १ वालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी
हिर्व चो	सक्कर भी नरक	थी चतुर्य भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे टली।
83	१	१ सक्कर, १ वालु, १ घूम, १ तम, २ सप्तमी
દર	२	१ सक्कर, १ वालु, १ घूम, २ तम, १ सप्तमी
£3	n.	१ सकर, १ वालु, २ घूम, १ तम, १ सप्तमी
83	8	१ सकर, २ वालु, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी
٤٤	¥	२ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी

वाज	सक्कर ो नरक	थी पचमो भागो ५ विकत्प करि कहै छै तिणमें टली।
દદ્દ	8	१ सक्कर, १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी
દહ	२	१ सक्तर, १ पंक, १ घूम, २ तम, १ सप्तमी
६६	m.	१ मक्कर, १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
33	४	१ सक्कर, २ पक, १ धूम, १ तम, १ मप्तमीं
१००	¥	२ सक्कर, १ पंक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी
तया अन्य प्रकार करिकै पिण २५ भागा हुनै ते कहै छै — ते सक्कर थी ५ भागा प्रथम विकत्य किर किहिना, पछै ते ५ भागा द्वितीय विकत्य किर किहिना, पछै ते ५ भागा तृतीय विकत्प किर किहिना, पछै ते ५ भागा चतुर्य विकत्प किर किहिना, पछै ते ५ भागा पंचम विकत्प किर किहिना, इण प्रकार करिकै पिण तेहिज २५ भागा हुनै, एन सक्कर थी ५ भागा पाच विकत्प किर २५ कहा।। हिनै नालुक थी १ भगो		
		विकल्प करि २५ कह्या । हिवै वालुक थी १ मगो करि ५ भागा कहै छैं —
	वकल्प	_
५ ह	वेकल्प १	करि ५ भागा कहै छैं —
५ ह	वेकल्प १	किर ५ भागा कहै छैं — १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी
प्र हिं १०१ हिंदी १०२	वेकल्प १ वालुः १	किर ५ भागा कहै छैं — १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी थी १ भगो द्वितीय विकल्पे
प्र हिं १०१ हिंदी १०२	वेकल्प १ वालुः १	किर ५ भागा कहै छैं — १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी थी १ भगो द्वितीय विकल्पे १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, १ मप्तमी
प्र हिर्दे १०२ हिर्दे १०३	वकल्प १ वालु १ वालु १ वालु १	किर ५ भागा कहै छैं — १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी थी १ भगो द्वितीय विकल्पे १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, १ मप्तमी थी १ भागो तृतीय विकल्पे
प्र हिर्दे १०२ हिर्दे १०३	वकल्प १ वालु १ वालु १ वालु १	किरि ५ भागा कहै छै —  १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी  थी १ भगो द्वितीय विकल्पे  १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, १ मप्तमी  थी १ भागो तृतीय विकल्पे  १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
प्र हिर्दे १०२ हिर्दे १०३	वेकल्प १ वालु १ वालु १ हिवै वा	किर ५ भागा कहै छैं —  १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी  थी १ भगो द्वितीय विकल्पे  १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, १ मप्तमी  थी १ भागो तृतीय विकल्पे  १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  लु थी १ भागो चतुर्य विकल्पे
प्र हिर्दे १०२ हिर्दे १०३	वेकल्प १ वालु १ वालु १ हिवै वा	किरि ५ भागा कहै छैं —  १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी  थी १ भगो द्वितीय विकल्पे  १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, १ मप्तमी  थी १ भागो तृतीय विकल्पे  १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी  लु थी १ भागो चतुर्य विकल्पे  १ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी

एवं छ जीव ना पचसयोगिक एक-एक विकल्प करि रत्न थी १४, सर्वकरं थी ४, वालुक थी १, इम २१ भागा, ते पच विकल्प करि १०५ भागा कह्या। रत्न थी ७४, सक्कर थी २५, वालु थी ५, ए सर्व १०५ भागा जाणवा।

११०. \*नवम बतीसम देश ए, सौ चौरासीमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' मंगलमाल।।

# ढाल: १५४

### दूहा

- १. हिवै कहू छह जीव नां, इक विकल्प करि एह। षट-संयोगिक सप्त भग, सुणज्यो तज सदेह।। †जिन भाखै सुण गगेय! षट-योगिक भग भणेह।। [घ्रुपद]
- अथवा इक रत्न उवेख, इक सक्कर वालुक एक।
   इक पक एक धूम जोय, एक तमा विषे अवलोय।।
- अथवा इक रत्न उवेख, इक सक्कर वालुक एक।
   इक पक धूम इक जाण, इक सप्तमी नरक पिछाण।।
- ४ अथवा इक रत्न विशेष, इक सक्कर वालुक एक। एक पंक तमा इक कहियै, इक नारिक सप्तमी लहियै।।
- प्र अथवा इक रत्न सपेख, इक सक्कर वालुक एक। इक धूमा तमा इक तास, इक नारिक सप्तमी वास।।
- ६ अथवा इक रत्न मे देख, इक सक्कर पंके एक। इक धूम तमा इक जीव, इक सप्तमी नरक कहीव।।
- ७ अथवा इक रत्न उवेख, इक वालुक पके एक। इक धूमा तमा इक पाय, इक नरक सप्तमी जाय।।
- झ्यवा इक सक्कर लेख, इक वालुक पके एक।
   इक धूम तमा इक जाण, इक नारक सप्तमी आण।।
- षट जीव तणा ए जाण, षट-योगिक ना पहिछाण।
   इक विकल्प नै भंग सात, जिन आखै ए अवदात।।

१ पट्कसयोगे तु सप्तैव । (वृ० प० ४४५)

- २ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा।
- अहवा एगे रयणप्यभाए जाव एगे धूमपप्भाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।
- ४. अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेतत्तनाए होज्जा।
- ५ अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सक्करप्यभाए एगे वालुयप्पभाए एगे घूमप्यभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।
- ६ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकष्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।
- अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।
- द अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा। [(भ० ६/६३)

<sup>\*</sup>लय: प्रमवो मन माहि चिन्तवै †लय: रे चिन्तातुर मुन्दर चाली

	छ जीव ना छ संजोगिया ना विकरप तो १ भागा ७		
१	१ रत्न, १ सनकर, १ वालु, १ पक, १ घूम, १ तमा		
२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ मप्नमी		
ą	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ तम, १ गप्तमी		
Y	१ रत्न, १ सकर, १ बालु, १ धूम, १ तम, १ सप्तर्मा		
Y.	१ रत्न, १ सनकर, १ पक, १ धूब, १ तम, १ सप्तमी		
Ę	१ रत्न, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ मप्तमी		
હ	१ सकर, १ बालु, १ पक, १ घूम, १ तम, १ गणमी		

- १०. पट जीव तणां आख्यात, इक-संयोगिक भग सात। हिक-योगिक विकल्प पंच, भंग एकसी पच मुसंच।।
- ११. त्रिक-योगिक विकल्प दश, साढा तीन सौ भागा अवस्स । दश विकल्प चउकक-संयोगी, साढा तीन सौ भंग प्रयोगी ॥
- १२. पच-योगिक विकल्प पंच, भंग एक सो पच सुगंच। पट-योगिक विकल्प एक, तमुं सप्त भंग सुविणेप।।
- १३. पट जीव तणां भग जाण, नवसी चडवीस प्रमाण। इक्योगिक आदि ए आख्या, सर्वे सच्या करीने भार्या॥
- १४. नवम देश वतीसम न्हाल, एकसी पच्यागोमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय, 'जय' संपति हरप सवाय॥

१३ ते च गर्यभीतने नर शतानि चतुर्विशस्युत्तराणि नयन्तीति । (यू० प० ४४४)

ढाल: १८६

# दूहा

- १. सप्त जीव नां हे प्रभु! नरक प्रवेशन काल। तास प्रश्न पूछे छते, दाखे ताम दयाल।।
- २. रत्न सप्त यावत हुवै, तथा सप्तमी सात। इक-योगिक इक विकल्पे, भागा सात विच्यात।।
  - \* त्रिभुवन नाथ वीर प्रभु भाखै, सांभल तूं गगेया! [झुपद]
- ३. सप्त जीव नां इकसंयोगिक, भागा सप्त विचारी। इक विकल्प करिने तसु आख्या, पूर्व रीत प्रकारी॥

- १. सत्त भने । नेरइया नेरइयणवेमणएण पविसमाणा कि रयणप्रभाए होज्जा ? — पुच्छा ।
- २. गगेया <sup>1</sup> रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेमत्तमाए या होज्जा ।
- ३. इहैकत्वे सप्त । (यृ० प० ४४४)

<sup>\*</sup> लय: प्रमाती

४. सप्त जीव ना द्विक-संजोगिक, षट विकल्प करि तास।
भग एक सौ षटवीस भणीजै, पूर्व रीत प्रकासं।।
५. इक-षट वे-पंच त्रिण-चिउ तीजो, च्यार-तीन पच-दोय।
षट-इक द्विकयोगिक विकल्प छ, सप्त जीव ना होय।।

#### स्थापना

१६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१ । सप्त जीव ना द्विक सजोगिक रा ए ६ विकल्प जाणवा ।

६. सप्त जीव ना त्रिकसंजोगिक, विकल्प पनर जगीस। भग पच सौ नै पणवीसं, इक विकल्प पैतीसं॥

### छुप्पय

७. एक एक नै पंच, एक वे च्यार अखीजै। दोय एक नै च्यार, एक त्रिहु विल त्रिहु लीजै। दोय दोय नै तीन, तीन इक तीन कहीजै। एक च्यार नै दोय, दोय त्रिहुं दोय लहीजै। त्रिहुं दोय दोय, चिहु एक वे, इक पंच इक, बे च्यार इक। त्रिण तीन एक, चिउ दोय इक, पच इक इक त्रिकयोगिक।।

#### स्थापना

११४, १२४, २१४, १३३, २२३, ३१३, १४२, २३२, ३२२, ४१२, १४१, २४१, ३३१, ४२१, ४११।

द. सप्त जीव नां चउकसयोगिक, विकल्प वीस जगीस। अखिल सात सय भगा आख्या, इक विकल्प पणतीस।।

#### स्थापना

**१११४, ११२३, १२१३, २११३,** ११३२, १२२२, २१२२, १३१२, २२१२, ३११२, ११४१, १२३१, २१३१, १३२१, २२११, ३२११, ४१११।

६. सप्त जीव ना पचसयोगिक, विकल्प पनर जगीस।भंगा तास तीन सय पनरै, इक विकल्प इकवीस।।

#### स्थापना

११११३, १११२२, ११२१२, १२११२, २१११२, १११३१, ११२२१, १२१२१, २११२१, ११३११, १२२११, २१२११, १३१११, २२१११, ३११११। १० सप्त जीव ना पटसयोगिक, पट विकल्प करि ख्यात। वयालीस भांगा तसु कहिवा, इक विकल्प ना सात।।

#### स्थापना

११११२, ११११२१, १११२११, ११२१११, १२११११, २१११११।
११. सप्त जीव ना सप्तसजीगिक, विकल्प तेहनो एक।
भागो एक कह्यो छै तेहनो, वारू रीत विशेख।।
१२. सप्त जीव ना भागा ए सहु, सतरे सौ ने सोल।
अनुक्रम सख्या करिने गिणवा, जिन वच अधिक अमोलं।।

४ द्विकयोगे तु सप्ताना द्वित्वे पड् विकल्पास्तद्यथा— पड्भिश्च सप्तपदद्विकसयोगएकविशतेर्गुणनात् पड्-विशत्युत्तर भङ्गकशत भवति । (वृ० प० ४४५)

६ त्रिकयोगे तु सप्ताना त्रित्वे पञ्चदश विकल्पास्तद्यथा एतैश्च पञ्चित्रशत सप्तपदित्रकसयोगाना गुणनात् पञ्च शतानि पञ्चिवशत्यधिकानि भवन्तीति । (वृ० प० ४४५,४४६)

- चतुष्कयोगे तु सप्ताना चत्राशितया स्थापने एक एक एकश्चत्वार श्चेत्यादयो विशतिविकल्पा " विशत्या च पञ्चित्रशतः सप्तपदचतुष्कसयोगाना गुणनात् सप्त शतानि विकल्पाना भवन्ति (वृ० प० ४४६)
- १ पञ्चकसयोगे तु सप्ताना पञ्चतया स्थापने एक एक एक एकस्त्रयश्चेत्यादय पञ्चदश विकल्पा एतैश्च सप्तपदपञ्चकसंयोगएकविंशतेर्गुणनात् त्रीणि शतानि पञ्चदशोत्तराणि भवन्ति । (वृ० प० ४४६)
- १० पट्कसयोगे तु सप्ताना पोढाकरणे पञ्चैकका द्वी चेत्यादय षड् विकल्पा । सप्ताना च पदाना पट्कसयोगे सप्त विकल्पा , तेपा च पड्भिर्गुणने द्विचत्वारिशद्वि-कल्पा भवन्ति । (वृ० प० ४४६)
- ११ सप्तकसयोगे त्वेक एवेति । (वृ० प० ४४६)
- १२ सर्वेमीलने च सप्तदश शतानि पोडशोत्तराणि भवन्ति । (वृ० प० ४४६)

# सोरठा

- १३, नारिक अप्ट भदंत ! नरक प्रवेसण रत्न में। जाव सप्तमी हुंत ? जिन भार्ख गगेय ! सुण ॥ १४. अप्ट रत्न उपजन, जाव तथा अठ सप्तमीं। इकसयोगिक, हुत, इक विकल्प करि सप्त भंग॥
- १५. \*अष्ट जीव नां द्विकसंयोगिक, विकल्प सप्त जगीसं। भंग एकसी नै सैताली, इक विकल्प इकवीस॥

### स्थापना

१७, २६, ३४, ४४, ५३, ६२, ७१।

१६. अप्ट जीव ना त्रिकसंयोगिक, विकल्प तसु इकवीस।
भागा तास सप्त सय पैत्रिस, इक विकल्प पणतीसं।।

### स्थापना

११६, १२५, २१५, १३४, २२४, ३१४, १४३, २३३, ३२३, ४१३, १५२, २४२, ३३२, ४२२, ६११, १६१, २५१, ४३१, ४३१, ५२१, ६११। [१७. अष्ट जीव नां चउक्कसजीगिक, पैंत्रिस विकल्प दीस। भंग वार सय पचवीस फून, इक विकल्प पणतीस।।

#### स्थापना

१११४, ११२४, १२१४, २११४, ११३३, १२२३, २१२३, १३१३, २२१३, ३११३, ११४२, १२३२, २१३२, १३२२, २२२२, ३१२२, १४१२, २३१२, ३२१२, ४११२, १४११, १४४१, २४४१, १३३१, ४२२१, ५१११। १८. अष्ट जीव नां पंचसंयोगिक, विकल्प तसु पणतीस। भांगा तास सातसौ पंत्रिस, इक विकल्प इकवीस।।

### स्थापना

११११४, १११२३, ११२१३, १२११३, २१११३, १११३२, ११२२२, १२१२२, २११२२, ११३१२, १२२१२, २१२१२, १३११२, २२११२, ३१११२, १११४१, ११२३१, १२३६, ११३६, ११३२१, १२२२१, २१२२१, १३१२१, २२१२१, ३११११, ३२१११, ४११११।

१६. अप्ट जीव ना पटसयोगिक, विकल्प इकवीस ख्यात। भंग एक सौ ने सैतालीस, इक विकल्प भंग सातं॥

#### स्थापना

१११११३, ११११२२, १११२१२, ११२११२, १२१११२, २११११२, ११११३, १११२२, ११२१२१, १२११२१, २१११२१, १११३११, ११२२-११, १२१२११, २११२११, ११३१११, १२२१११, २१२१११, २२११११, ३१११११।

\* लय: प्रमाती

- १३.१८ अट्ट भते । नेरज्या नेरज्यप्यवेमणएण पविममाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा ।
  - गगेया । रयणप्यभाग् वा होज्जा जाव अहेयत्तमाए वा होज्जा।
  - इहैकरवे मध्न विकल्पा. (वृ० प० ४४६)
- १५ द्विकसयोगे त्वप्टाना द्वित्वे एक. सप्तेत्यादय: सप्त विकल्पा. प्रतीता एव, तैश्च मप्तपदद्विकमयोगैक-विश्वतेर्गुणनाच्छतं सप्तचत्वारिणदिधकाना भवतीति । (वृ० प० ४४६)
- १६ त्रिकसयोगे त्वप्टाना त्रित्वे एक एक: पह् इत्यादय एकविणतिविकरपा, तैण्च सप्पदित्रकसयोगे पञ्च-त्रिणतो गुणने सप्त णतानि पञ्चित्रणदिधकानि भवन्ति। (वृ० प० ४४६)
- १७ चतुष्कमयोगे त्वष्टाना चतुर्द्वात्वे एक एक एक एक प्रक्र-त्यादय पञ्चित्रणद्विकल्पा, तैरच मप्तपदचतुष्क-मयोगाना पञ्चित्रश्रातो गुणने द्वादण श्रातानि पञ्च-विश्रात्युत्तराणि भङ्गकाना भवन्तीति (वृ० प० ४४६)

१६ पट्नयोगे त्वष्टाना पोढात्वे पञ्चैककास्त्रयश्चेत्यादयः एकविशतिविकल्पा , तैश्च सप्तयदपट्कसयोगाना सप्तकस्य गुणने सप्तचत्वारियदिधक भङ्गकशत भवतीति (वृ० प० ४४६) २०. अष्ट जीव ना सप्तसयोगिक, विकल्प सप्त विख्यातं। भागा पिण तसु सप्त भणीजै, कहियै तसु अवदात।।

हिवै	अष्ट जीव ना सप्त सजीगिक ना विकल्प सात भागा सात कहै छैं-
8	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, १ तम, २ सप्तमी
२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी
₹	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ घूम, १ तम, १ सप्तमी
8	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी
¥.	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी
Ę	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी
હ	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी
	ए अष्ट जीव ना सप्तसजोगिक जाणवा ।

२१. अष्ट जीव ना ए सहु भागा, तीन सहस्र नै तीन। इकसंयोगिक आदि देई नै, सप्त सयोग सुचीन।।

### सोरठा

२२. नारिक नव भगवत । नरक प्रवेसण रत्न मे। जाव सप्तमी हुत । जिन भाखे गगेय । सुण।। २३. नव रत्ने उपजंत, जाव तथा नव सप्तमी। इकसंयोगिक हुत, इक विकल्प करि सप्त भग।।

२४. \*नव जीवा ना द्विकसयोगिक, विकल्प अध्य जगीस। भगा तास एकसौ अडसठ, इक विकल्प इकवीस।।

#### स्थापना

१८, २७, ३६, ४४, ४४, ६३, ७२, ८१।
२४. नत्र जोवा ना त्रिकसयोगिक, त्रिकल्प तसु अठवीस।
भागा नवसै असी अधिक है, इक विकल्प पणतीस।।

#### स्थापना

११७, १२६, २१६, १३४, २२४, ३१४, १४४, २३४, ३२४, ४१४, १४३, २४३, ३३३, ४२३, ४१३, १६२, २४२, ३४२, ४३२, ५२२, ६१२, १७१, २६१, ३४१, ४४१, ५३१, ६२१, ७११। २६. नव जीव ना चउकसयोगिक, विकल्य छप्पन दीस। उगणीसौ ने साठ भंग है, इक विकल्य पणतीस।।

२०. सप्तसयोगे पुनरष्टानां सप्तधात्वे सप्त विकल्पाः प्रतीता एव, तैश्चैकैकस्य सप्तकसयोगस्य गुणने सप्तैव विकल्पाः (वृ० प० ४४६)

२१. एपा च मीलने त्रीणि सहस्राणि त्र्युत्तराणि भवन्तीति । (वृ० प० ४४६)

२२,२३ नव भते । नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पवि-समाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा। गगेया। रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

इहाप्येकत्वे सप्तैव, (वृ० प० ४४७) २४ द्विकसयोगे तु नवाना द्वित्वेऽष्टो विकल्पा. प्रतीता

एव, तैश्चैकविशते सप्तपदद्विकसयोगाना गुणनेऽघ्ट-पष्टचिधक भङ्गकशत भवतीति ।

(वृ० प० ४४७)

- २५ त्रिकसयोगे तु नवाना द्वावेकको तृतीयश्च सप्तक इत्येवमादयोऽष्टाविशतिविकल्पा, तैश्च सप्तपदित्रक-सयोगपञ्चित्रशतो गुणने नव शतान्यशीत्युत्तराणि भङ्गकाना भवन्तीति। (वृ० प० ४४७)
- २६ चतुष्कयोगे तु नवाना चतुर्द्धात्वे त्रय एकका पट् चेत्यादय पट्पञ्चाशद्विकत्पा , तैश्च सप्तपदचतुष्क-सयोगपञ्चित्रशतो गुणने सहस्र नव शतानि पष्टिश्च भङ्गकाना भवन्तीति । (वृ० प० ४४७)

<sup>\*</sup> लय: प्रभाती

#### स्थापनो

28 6 6 6, 6 6 4 5 7 8 6 6, 8 6 6, 8 6, 8 6

ए पूर्वे कह्या ते नव जीवा ना चउवकसजोगिया ५६ विकल्प इम करिवा।

२७. नव जीव ना पचसयोगिक, सित्तर विकल्प दीसं। चवदै सौ ने सित्तर भागा, इक विकल्प इकवीसं॥

#### स्थापना

११११४, १११२४, ११२१४, ११२१४, २१११४, ११११३, ११११३, ११११३, ११११३, ११११३, ११११३, ११११३, ११११३, ११११३, ११११३, ११११३, ११११३, ११११३, ११११२, ११११२, ११११२, ११११२, ११११२, ११११२, ११११२, ११११२, १११११, १

ए पूर्वे कह्या ते नव जीवा ना पचसयोगिक ७० विकल्प इम करिवा।

२८. नव जीवा ना पटसंयोगिक, छप्पन विकल्प ख्यात । प्रवर तीन सय वाणूं भागा, इक विकल्प करि सातं ॥

#### स्थापना

११११४४, ११११२३, १११२१३, ११२११३, १२१११३, र११११३<sup>६</sup>, ११११३२<sup>६</sup>, १११२२२<sup>६</sup> ११२१२२<sup>६</sup>, १२११२२<sup>६</sup>, २१११२२<sup>६</sup>, १११३१२<sup>१२</sup>, ११२२१२\*\*, १२१२१२\*\*, २१**१**२१२,<sup>१५</sup> १२२११२१७, २१२११२१८, १३१११२ २२१११२<sup>२</sup>°, ११११४१<sup>२३</sup>, १११२३१<sup>३</sup>, ११२१३१<sup>२४</sup>, ्रेन्११३१<sup>२</sup>, २१११३१<sup>२९</sup>, १११३२१ ", ११२२२१३ , १२१२२१<sup>२९</sup>, २११२२१³°, १२२१२१ वर, २१२१२१ १३११२१ रहे रहे , १११४११<sup>३७</sup>, ११२३११³६, १२१३११३९, २११३११<sup>\*°</sup>, १२२२११ भर, २१२२११<sup>४३</sup>, १३१२११ ४४, ~~????<sup>™</sup>, ११४१११ रें, १२३१११ रें, २१३१११<sup>४९</sup>, १३२१११<sup>५</sup>°, २२१११२<sup>५</sup>९. चेश्रश्र<sup>५,</sup> १४११११<sup>५,</sup> २३११११<sup>५,</sup>, ३२११११<sup>५,</sup> ४१११११<sup>५,</sup> । ए पूर्वे कह्या ते नव जीवा रा पटसयोगिक ५६ विकल्प इम करिवा।

२७. पञ्चकसयोगे तु नवाना पञ्चधात्वे चत्वार. एकका. पञ्चकश्चेत्यादय. सप्तिर्विकल्पा, तैश्च मप्तपद-पञ्चकसयोगएकविणतेर्गुणने सहस्त्र चत्वारि शतानि सप्तिरच भङ्गकाना भवन्तीति (वृ० प० ४४७)

२८. पट्कसयोगे तु नवाना पोढात्वे पञ्चैककाश्चतुष्क-कश्चेत्यादयः पट्पञ्चादाद्विकत्वा भवन्ति, तैश्च सप्तपदपट्कसंयोगमप्तकस्य गुणने शतत्रय द्विनवत्य-धिक भञ्जकाना भवन्तीति । (वृ० प० ४४७)

१७४ भगवती-जोड़

२६ नव जीवां नां सप्तसंयोगिक, विकल्प तसु अठवीसं। भांगा पिण अठवीस भणेवा, ते जूजुआ कहीस।। ए नव जीव ना सप्तसयोगिक विकल्प २८ भागा २८

₹. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, ३ सप्तमी १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, २ सप्तमी २ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम, २ सप्तमी Ę १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ घूम, १ तम, २ सप्तमी ٧, १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, २ संप्नमी ሂ. १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी ξ. २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, १ तम, २ सप्तमी ७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ३ तम, १ सप्तमी 5 १ रत्न, १ सक्कर; १ वालु, १ पक, २ धूम, २ तम, १ सप्तमी 3. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी 80 ११ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ घूम, २ तम, १ सप्तमी १२ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी १३ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी १४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी १५ १६ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी १७ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी १= २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्नमी 38 २० १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २१ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २२ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २३. १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ पक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी २४ १ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २५ २ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी १ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २६ २ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २७. ३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २५.

३० नव जीवां नां ए सह भागा, पच सहस्र ने पच। इकसयोगिक आदि देइ ने, सप्त-संयोगिक सच।।

३१ दश जीवा नां इकसयोगिक, इक विकल्प भग सात। दिकसयोगिक नव विकल्प, भग सौ नव्यासी ख्यात।

३२ दश जीवा ना त्रिकसयोगिक, विकल्प है षट तीस। वारे सौ ने साठ भग है, इक विकल्प पणतीस।। २१. सप्तपदसयोगे पुंनर्नवाना सप्तत्वे एकका षट् त्रिकश्चेत्यादयोऽष्टाविशतिविकल्पा भवन्तीति, तैश्चैकस्य सप्तकसयोगस्य गुणनेऽष्टाविशतिरेव भञ्जका । (वृ० प० ४४७)

३० एपा च सर्वेपा मीलने पञ्च सहस्राणि पञ्चोत्तराणि विकल्पाना भवन्तीति। (वृ० प० ४४७)

३१. इहाप्येकत्वे सप्तैव, द्विकसयोगे तु दशाना द्विधात्वे एको नव चेत्येवमादयो नव विकल्पा तैरचैकविंशते सप्तपदद्विकसयोगाना गुणने एकोननवत्यधिकं भञ्जकात भवतीति। (वृ० प० ४४७)

३२ त्रिकयोगे तु दशाना त्रिधात्वे एक एकोऽज्टो चेत्येव-मादय पर्ट्रिशद्विकल्पा, तैश्च सप्तपदित्रकसयोग-पञ्चित्रशतो गुणने द्वादश शतानि पष्टयधिकानि भञ्जकाना भवन्तीति। (वृ० प० ४४७)

- ३३. दश जीवां देनां चउकसंयोगिक, चउरासी विकल्प दीसं।
  गुणतीसी नैं चालीस भांगा, इक विकल्प पणतीसं।।
- ३४. दश जीवां नां पंचसंयोगिक, विकल्प इकसौ छवीस। भंग छवीसो अधिक छयाली, इक विकल्प इकवीस।।
- ३५. दश जीवां नां पटसंयोगिक, विकल्प इकसौ छवीसं। भग आठ सौ नै वयासी, इक विकल्प सत दीस।।
- ३६. दश जीवां नां सप्तसंयोगिक, विकल्प चउरामी दीसं। भागा पिण चउरासी तेहनां, निपुण विचार कहीसं॥
- ३७. च्यार रत्न इक सक्कर, जाव इक सप्तमी होय।
  चरम भग विकल्प ए भणवो, सप्त संयोगिक सोय॥
  ३८ दश जीवां नां ए सहु भांगा, अष्ट सहस्र ने आठ।
  इकसंयोगिक आदि देइ ने, सप्त संयोग सुवाटं॥
  ३६. नवम शतक नो देश वतीसम, सी छ्यासीमी ढाल।
  भिक्ष भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' हरप विशाल॥

# ढाल: १८७

# दूहा

- १. इकसंयोगिक आदि दे, सप्त-सयोगिक सार। तसु विकल्प नी आमना, हिव कहियै सुविचार॥
- २. एक दोय त्रिण आदि दे, जीव अनेक सुजोय। इक संयोगिक तेहनों, विकल्प एकज होय।।
- ३. द्विकयोगिक वे जीव ना, विकल्प कहियै एक। द्विकयोगिक त्रिण जीव नां, विकल्प दोय विशेख।।
- ४. इम यावत सी जीव नां, द्विकयोगिक पहिछान। विकल्प निन्याणूं कह्या, इम आगल पिण जाण।। एक जीव आदि देइ सख असख जीव रो एकसयोगियो विकल्प एक सगलैंड।

हिवै द्विकसंजोगिया री आमना लिखियै छै-

- ३३ चतुष्कसयोगे तु दशाना चतुर्धात्वे एककत्रयं सप्तकरचेत्येवमादयश्चतुरशीतिर्विकल्पाः, तैश्च मप्तपदचतुष्कसयोगपञ्चित्रशतो गुणने एकोन- त्रिशच्छतानि चत्वारिशदिधकानि भङ्गकाना भवन्तीति। (व० प० ४४७)
- ३४. पञ्चकसयोगे तु दशाना पञ्चधात्वे चत्वार एककाः पट्कण्चेत्यादय. पट्विशत्युत्तरथतमञ्जूषा विवत्या भवन्ति तैण्व सप्तपदपञ्चकसयोगैकविशतेर्गुणने पट्विशति शतानि पट्चत्वारिशदधिकानि भञ्जकानां भवन्तीति। (वृ० प० ४४७)
- ३५. पट्कमयोगे तु द्याना पोढात्वे पञ्चैकका पञ्च-कण्चेत्यादयः पड्विंगत्युत्तरमतसस्या विकल्पा भवन्ति, तैश्च सप्तपदपट्कसयोगसप्तकस्य गुणनेऽप्टौ गतानि द्वयमीत्यधिकानि भञ्जकानां भवन्तीति ।
- (वृ० ५० ४४७)
  ३६ मध्तकसयोगे तु दशाना सप्तधात्वे पटेककाण्यतुष्कश्चेत्येवमादयण्यतुरशीतिविकल्या, तैरचैकस्य
  सप्तकसयोगस्य गुणने चतुरशीतिरेव भङ्गकाना
  भयन्ति। (वृ० ५० ४४७)
- ३७. अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेमत्तमाए होज्जा। (ग० ६/६७)
- ३८. सर्वेषां चैषां मीलनेऽष्टसहस्राणि अष्टोत्तराणि विकल्पानां भवन्तीति । (वृ० प० ४४७)

दोय जीव रो द्विकसंजोगियो १ विकल्प, तीन जीव रा द्विकसजोगिया २ विकल्प, इम यावत मौ जीवा रा द्विकसजोगिया ६६ विकल्प, जेतला जीव लेणा तिण सू एक ऊणो विकल्प।

हिवै त्रिकसंजोगिया ना विकल्प नी आमना---

- ५. त्रिकयोगिक त्रिण जीव नों, विकल्प एक सुचीन। त्रिकयोगिक चिउ जीव ना, किहयै विकल्प तीन।।
- ६. त्रिकयोगिक जतु जिता, तेहथी दोय घटाय। शेष अक लिखने गिण्यां, तेता विकल्प थाय।।

या० — जेतला जीव लेवें तिण माहि थी दोय काढियें, पाछ रहे ते एक सू गिणियें । तिवारें जेतला हुवें जितरा विकल्प जाणवा। कोइ एक इम पूछें — जे दश जीवा रा त्रिकसजोगिया केतला विकल्प ? तिवारें इम किहयें — जे दश माहि थी २ काढियें तिवारें पछें द रहे, ते इम लिखणा — १,२,३,४,५,६,७,६ हिवें ए आका ने इम गिणणा ते विध कहे छें — एक ने दोय – तीन, तीन ने तीन — छ, छ ने च्यार — दश, दश ने पाच — पनरें, पनरें ने छ — इकवीस, इकवीस ने सात — अठावीस, अठावीस ने आठ — छतीस — इम दश जीवा रा ३६ विकल्प हुवें । विल कोइ पूछें — वीस जीवा रा विकल्प किता ? तेहनो उत्तर — वीस माहि थी २ काढियें, पाछें अठारें रहें । ते एक सू लेइनें अठारें ताइ गिणिया १७१ हुवें, एतला वीस जीवा रा विकल्प जाणवा। आगल पिण इमहिज करिवा।

हिवै चउकसजोगिया विकल्प नी आमना---

- ७. चउयोगिक चिउ जीव नो, विकल्प इक अवधार। चउयोगिक पच जीव नां, कहियै विकल्प च्यार।।
- द. चउयोगिक षट जीव ना, दश विकल्प सुकहीस। चउयोगिक सत्त जीव नां, कहियै विकल्प वीस।।
- इ. चउयोगिक जतू जिता, तेह्यी तीन घटाय।
   पाछ रहै तेहनों घडो, दीघा जितरा थाय।
- १०. पट जतू ना केतला, विकल्प हुवै सुलेख? पट थी त्रिण काढचो छते, लिखो अक त्रिण पेख।।
- ११. एको बीओ ने तीओ, प्रथम ओल ए अक। दितीय ओल धुर अक इक, लिख तसू घडो निसंक।।
- धूर इक अंक लिख्यो अछै, तसु जोडे विल ताय।
   एक अनै वे त्रिण हुवै, तीओ अक लिखाय।।
- १३ तीन अने विल त्रिण मिल्यां, गिणिया षट कहिवाय। तीआ अक पासे वली, षट नो अक लिखाय।।
- १४ दूजी ओली नो घडो, दीधा दश ह्वं सोय। विकल्प दश पट जीव नां, इम आगल पिण होय।।

वा—जेतला जीव लेणा त्या माहि थी ३ काढियँ, पछ तेहनोइज घडो देणो जे कोइक इम पूछं—दश जीवा रा चउनसजोगिया केतला विकल्प ? जव इम कहीजं—१० माहि थी ३ काढियँ, पाछं सात रहै ते एक सू लेइ ने इम लिखणा—१,२,३,४,६,७। हिवं ए ओली ने इम गिणवी—एक नं दोय—३, तीन ने तीन—६, छ ने च्यार—१०, दश नं पाच—१५, पनरें ने छ—२१, इकवीस ने सात—२५, ए दूजी ओल पहिली ओल हेठें इम लिखणी—१,३,६,१०,१४,२९,२६।

हिनै बीजी ओल नै गिण्या जेतला हुनै तेतला विकल्प जाणवा, ते इम गिणवा—एक नै तीन—४, च्यार ने छ—१०, दम नै दम—२०, वीस नै पनरै—३५, पैतीस ने इकवीस—५६, छप्पन ने अठावीस— ६४। इम दम जीव ना चउक्कसयोगिया चउरासी विकल्प थया। इम सौ ताइ गिण लीजै। घटो जिताइज विकल्प जाणवा।

तथा विल अन्य प्रकार करिकै चउकसजोगिया ना विकरप नी आमना-

हिवै छ जीवा रा चउकसजोगिया विकल्प कितरा ? उत्तर—छ माहि थी एक जीव घटाया पाच जीवा रा चउकसजोगिया ४ विकल्प अने पाच जीवा रा विकसजोगिया ६ विकल्प । दोनू भेला गिण्या विकल्प हुवै इतरा विकल्प छ जीवा रा चउकसजोगिया विकल्प किता ? उत्तर —छ जीवा रा चउकसजोगिया अने छ जीवा रा विकसयोगिया दोनू भेला गिण्या जितरा विकल्प हुवै तितरा सात जीवा रा चउकसंजोगिक ह्वै।

१५. पच सयोगिक ना हिवै, विकल्प तणो विचार ।।
 ऊपर वारी तेहनी, किह्यै छै अधिकार ।।
१६. सप्त जीव पंचयोगिका, कितरा विकल्प तास ?
 विकल्प तेहनां पनर है, सुणियै आण हुलास ।।
१७ चउयोगिक पट जीव ना, पचयोगिक पट जीव ।
ए विहुं ना दश पच इता, सत्त जीव नां पीव ।।
१८. इम आगल जतू जिता, तेहथी एक घटाय ।
विकल्प चउ पच योगिका, मेल्या जिता कहाय ।।

वा०—नव जीवा रा पाचसजोगिया रा विकल्प किता ? उत्तर—सित्तर विकल्प हुवै। ते किम ? आठ जीव चउकसयोगिक ना ३५ विकल्प हुवै, अने आठ जीव पच सजोगिक ना पिण ३५ विकल्प हुवै, ए दोनू मिलाया मित्तर हुवै। एतलाज सित्तर विकल्प नव जीव ना पचसजोगिया ना हुवै। इम आगल पिण जाणवा।

१६. पट-सजोगिक नां हिवै, विकल्प तणो विचार। अपर वारी तेहनी, किहयै छै अधिकार।।
२०. अप्ट जीव पट-योगिका, कितरा विकल्प तास?
विकल्प तसु इकवीस है, सुणियै आण हुलास।।
२१. सप्त जीव पचयोगिका, सप्त जीव पट योग।
पट पनरै विकल्प तसु, इम इकवीस प्रयोग।।
२२ इम आगल जतू जिता, तेहथी एक घटाय।
विकल्प पच पटयोगिका, मेल्या जिता कहाय।।

चा०—नव जीवा रा पटसजोगिक विकल्प कितरा? उत्तर—छप्पन विकल्प हुवै ते किम? आठ जीव पचसजोगिक ना ३५ विकल्प अने आठ जीव पटसजोगिक ना ३६ हुवै। एतलाज छप्पन विकल्प नव जीव ना पट सजोगिक ना हुवै। इम आगल पिण जाणवा। सप्त सयोगिक जेतला विकल्प जेतलाइ भागा जाणवा।

२३. सख्याता प्रभु ! नेरइया, एकादश थी आद । नरक-प्रवेसण नी पृच्छा, उत्तर जिन अहलाद ॥ २३ सखेज्जा भते । नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पितसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा। तत्र सख्याता एकादशादय.। (वृ० प० ४४८)

- २४. \*रत्नप्रभा मे सखेज ए, अथवा सक्कर में ते कहेज ए। अथवा वालुक माहे तेह ए, अथवा पंक तमा धूम जेह ए।।
- २५ अथवा तमा विषे उपजत ए, अथवा नरक सप्तमी हुंत ए। इक योगिक भागा सात ए, इक विकल्प करि आख्यात ए॥

हिन्नै द्विकसंजोगिक ना विकल्प ११ भागा २३१। एक रत्न सख्याता सक्कर इम ११ विकल्प। एक-एक विकल्प मा इकवीस-इकवीस भागा हुनै तिवारे २३१ भागा थाय, ते कहै छै—

- २६. तथा एक रत्न अवलोय ए, संख्याता सक्कर सोय ए। तथा रत्न इक जाण ए, सख्याता वालुक माण ए॥
- २७. अथवा रत्न मे एक ए, संख्याता पक सपेख ए। अथवा रत्न इक जाय ए, संखेजज धूम दुख पाय ए।।
- २८. अथवा रत्न इक हुंत ए, सखेज्ज तमा उपजंत ए। अथवा रत्न इक तास ए, सखेज्ज सप्तमीं वास ए॥
- २६ अथवा रत्न मे दोय ए, सख्याता सक्कर होय ए। इम जाव तथा रत्न दोय ए, सख्याता सप्तमी सोय ए।।
- ३०. अथवा रत्न में तीन ए, सख्याता सक्कर चीन ए। इम जावत तथा रत्न तीन ए, सखेज्ज सप्तमी लीन ए।।
- ३१. अथवा रत्न मे च्यार ए, संख्याता सक्कर धार ए। इम जाव तथा रत्न च्यार ए, संखेज्ज सप्तमी भार ए॥
- ३२. अथवा रत्न मे पच ए, संख्याता सक्कर सच ए। इम जाव तथा रत्न पच ए, संखेजज सप्तमी विरच ए।।
- ३३ अथवा रत्न पट जत ए, सख्याता सक्कर हुंत ए। इम जाव तथा रत्न षट ए, सख्याता सप्तमी बट्ट ए॥
- ३४. अथवा रत्न मे सात ए, संख्याता सक्कर जात ए।
- इम जाव तथा रत्न सात ए, सख्याता सप्तमी ख्यात ए॥ ३४ अथवा रत्न मे आठ ए, सख्याता सक्कर वाट ए।
- इम जाव तथा रत्न आठ ए, सखेज्ज सप्तमी काट ए।। ३६ अथवा रत्न नव न्हाल ए, सख्याता सक्कर भाल ए।
- १६ अथवा रतन नव न्हाल ए, संख्याता सक्कर माल ए। इम जाव तथा नव रत्न ए, संखेज्ज सप्तमी प्रपन्न ए॥
- ३७. अथवा रत्न दश तास ए, सख्याता सक्कर वास ए। इम जाव तथा दश रत्न ए, सख्याता सप्तमी पन्न ए॥
- ३८. अथवा रत्न सख्यात ए, संख्याता सनकर जात ए। इम जाव तथा रत्न सख ए, सखेज सप्तमी वक ए॥
- ३६. ए रत्न थकी पहिछाण ए, पट् भांगा तेह सुजाण ए। ग्यारा विकल्प करि सुविचार ए, कह्या छासठ भगा सार ए॥
- ४० इम सक्कर थी भग पच ए, ऊपरली पृथ्वी सग सच ए। ग्यारा विकल्प करिनै तेह ए, भग पचपन प्रवर भणेह ए।।

- २४,२५. गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा । इहाप्येकत्वे सप्तैव (वृ० प० ४४८)
- २६-२८. अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।
- २६. अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्त-माए होज्जा।
  - ३०-३७. अहवा तिष्णि रयणप्पभाए सक्षेजजा सक्तरप्प-भाए होज्जा। एव एएण कमेण एक्केक्को सचारे-यव्वो जाव अहवा दम रयणप्पभाए सक्षेज्जा सक्तरप्पभाए होज्जा। एव जाव अहवा दस रयणप्पभाए सक्षेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

- ३८. अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।
- ४० अहवा एगे सक्करप्पभाए सक्षेज्जा बालुयप्पभाए होज्जा, एव जहा रयणप्पभा उवरिमपुढवीहिं सम चारिया एव सक्करप्पभा वि उवरिमपुढवीहिं सम चारेयव्वा ।

<sup>&</sup>lt;sup>\*</sup>लय: बाई । मांग-माग बाई ! **मांग** ए

४१. इम वालुक थी भंग च्यार ए, ऊपरली पृथ्वी संगधार ए।
ग्यारा विकल्प करि सुजगीस ए, भग भणवा चउमालीस ए॥
४२. इम पक थकी भंग तीन ए, ऊपरली पृथ्वी सग चीन ए।
ग्यारा विकल्प करिने कहीस ए, तंत भांगा छै तेतीस ए॥
४३. इम धूम थकी भग दोय ए, ऊपरली पृथ्वी संग सोय ए।
ग्यारा विकल्प करीने दीस ए, भणिवा भगा वावीस ए॥
४४. इम तम थकी इक भग ए, सप्तमीं पृथ्वी सग ए।
ग्यारा विकल्प करि सुविचार ए, ए तो भणिवा भग इग्यार ए॥
४५ संख्यान जीवा रा एह ए, द्विकसजोगिक इम लेह ए।
ग्यारा विकल्प करीने उमंग ए, दोय सौ इकतीस सुभग ए॥
४६. यावत अथवा एह ए, सख्याता तमा कहेह ए।
सख्याता सप्तमी जाण ए, ए चरम भंग पहिछाण ए॥

हिवै त्रिकसजोगिक ना २१ विकल्प एकेक विकल्प ना पंतीस-पंतीस भागा तिवारे २१ विकल्प ना ७३५ भागा हुवै। तिहा रत्न थी १५, मक्कर थी १०, वालुक थी ६, पक थी ३, धूम थी १—ए ३५ भागा २१ विकल्प किर हुवै। तिहा रत्न थी १५ ते किसा ? रत्न सक्कर थी ५, रत्न वालु थी ४, रत्न पक थी ३, रत्न धूम थी २, रत्न तम थी १— एव १५, इकवीस विकल्प किर हुवै। इमज सक्कर थी १०, वालु थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—ए इकवीस-इकवीम विकल्प करिवा।

४७. अथवा रत्न में एक ए, इक सक्कर मे संपेख ए। सखेज वालुका मंग ए, धुर विकल्प ए भगए। ४८. अथवा रत्नप्रमा में एक ए, इक सक्कर मांहि उवेख ए। पंकप्रभा मे सख्यात ए, भग दूजो ए आख्यात ए।। ४६. तथा एक रत्न सक्कर एक ए, सखेज धूम संपेख ए। तथा एक रत्न सक्कर एक ए, सखेज तमा सुविशेख ए॥ ५०. तथा एक रत्न सक्कर एक ए, सखेज सप्तमी लेख ए। रतन सक्कर थी भग पच ए, धुर विकल्प करि ए सच ए।। ५१. तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, सखेज्ज वालुका सोय ए। तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, सखेज पक अवलोय ए॥ ५२. तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, सखेज्ज धूम मे होय ए। तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, सखेज तमा मे जोय ए।। ५३. तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, सखेज्ज सप्तमी होय ए। रत्न सक्कर थी भग पच ए, दूजे विकल्प करीने विरच ए।। ५४ तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, सखेज वालुका लीन ए। तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, सखेज्ज पक मे चीन ए।। ५५ तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, सखेज धूम मे लीन ए। तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, सखेज तमा आधीन ए॥

५६. तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, सखेज्ज सप्तमी दीन ए। रत्न सक्कर थी भग पंच ए, तीजे विकल्प करीने सच ए॥ ५७ तथा एक रत्न सक्कर च्यार ए, सखेज वालुका घार ए। जाव तथा रत्न इक अंक ए, चिइं सक्कर सप्तमी संख ए॥ ४१,४४. एव एननेवका पुढवी उवरिमपुढवीहि सम चारेयव्वा।

४६. जाव अहवा सच्चेज्जा तमाए सच्चेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा ।

४७ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा।

४८. अहवा एगे रयणप्पभाए एने सनकरप्पभाए सक्षेण्जा पकप्पभाए होज्जा।

४६,५० जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संक्षेत्रजा अहेसत्तमाए होज्जा।

५१-५३ अहवा एगे रयणप्पभाए दो सनकरप्पभाए सक्षेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सनकरप्पभाए सक्षेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

१४ ६४. बहुवा एगे रयलप्पमाए तिण्णि सक्करप्पमाए सक्षेण्या वालुयप्पमाए होज्जा, एव एएण कमेण एक्केक्को सचारेयच्वो सक्करप्पभाए जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सक्षेण्या सक्करप्पभाए सक्षेण्या वालु-यप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सक्षेण्या वालुयप्पभाए सक्षेण्या अहेसत्तमाए होज्जा।

- ५८. तथा एक रत्न सक्कर पंच ए, संखेज वालुका संच ए। जाव तथा रत्न इक अक ए, पंच सक्कर सप्तमी सख ए।। ५६. तथा एक रत्न मे लहेज ए, षट सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न इक अंक ए, षट सक्कर सप्तमी सख ए।। ६०. तथा एक रत्न मे कहेज ए, सप्त सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न इक अक ए, सप्त सक्कर सप्तमी संख ए।। ६१. तथा एक रत्न मे लहेज ए, अठ सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न इक अंक ए, अष्ट सक्कर सप्तमी सख ए॥ ६२. तथा एक रत्न मे लहेज ए, नव सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न इक अक ए, नव सक्कर सप्तमी सख ए॥ ६३. तथा एक रत्न में कहेज ए, दश सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न इक अक ए, दश सक्कर सप्तमी संख ए।। ६४. तथा एक रत्न मे कहेज ए, सख सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न इक अक ए, सख सक्कर सप्तमी सख ए।। ६५ तथा दोय रत्न मे लहेज ए, सख सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न वे अक ए, सख सक्कर सप्नमी सख ए।।
- ६६. तथा तीन रत्न में कहेज ए, सख मक्कर वालु संखेज ए। जाव तथा रत्न त्रिण अक ए, सख सक्कर सप्तमी सख ए।। ६७ तथा च्यार रत्न मे लहेज ए, सख सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न चिउ अक ए, सख सक्कर सप्तमी सख ए।। ६८ तथा पच रत्न में कहेज ए, सख सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न पच अक ए, सख सक्कर सप्तमी सख ए॥ ६६. अथवा पट रत्न कहेज ए, षट सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न षट अक ए, षट सक्कर सप्तमी सख ए।। ७० तथा सप्त रत्न मे कहेज ए, सप्त सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न सप्त अक ए, सप्त सक्कर सप्तमी सख ए।। ७१. तथा अष्ट रत्न मे लहेज ए, अष्ट सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न अष्ट अक ए, अष्ट सक्कर सप्तमी सख ए।। ७२ अथवा नव रत्न लहेज ए, नव सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न नव अक ए, नव सक्कर सप्तमी संख ए।। ७३. अथवा दश रत्न लहेज ए, दश सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न दश अर्क ए, दश सक्कर सप्तमी सख ए॥ ७४. अथवा सख रत्न कहेज ए, सख सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न सख अक ए, सख सक्कर सप्तमी सख ए॥ ७५. रत्न सक्कर थी भग पच ए, विकल्प इकवीस विरच ए। कह्या एकसौ ने पच भग ए, हिवै रत्न वालुक थी प्रसग ए ॥ ७६. तथा एक रत्न मे कहेज ए, इक वालुक पक सखेज ए। जाव तथा रत्न इक अक ए, इक वालुक सप्तमी सख ए॥
- ६४. अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्त-माए होज्जा।
- ६६-७४. अहवा तिष्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्प-भाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा। एवं एएण कमेण एक्केक्को रयणप्पभाए सचारेयव्वो जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा सखेज्जा रयणप्प-भाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

७६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए सक्षेज्जा पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए सक्षेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । ७७ अथवा इक रत्न लभेज्ज ए, दोय वालुका पंक संखेज्ज ए। जाव तथा रत्न इक अक ए, दोय वालुका सप्तमी संख ए।। ७८. इम इहविघ अनुक्रमेण ए, रत्न वालू थी चिउं भग श्रेण ए।। इकवोस विकल्प करि जोय ए, तसु भंग चउरासी होय ए॥ ७६. रत्न पक थकी भग तीन ए, इकवीस विकल्प करि चीन ए। त्रेमठ भागा जाण ए, तिके पूर्व रीत पिछाण ए॥ द०. रत्न धूम थकी भंग दोय ए, इकवीस विकल्प करि जोय ए। भागा वयालीस तास ए, विध पूर्व रीत प्रकाण ए॥ ५१ रत्न तमा थकी भग एक ए, इकवीस विकल्प करि पेख ए। भणवा भांगा इकवीस ए, विध पूर्व उक्त जगीस ए॥ भागा पनर रत्न थी एह ए, विकल्प इकवीस करेह ए। हुवै तीन सी नै इकवीस ए, हिवै सक्कर थकी कहीम ए।। ६३. इम सक्कर थी दश देख ए, विकल्प इकवीस मुलेख ए। हुनै दोय सी नै दश भग ए, भणवा पूर्व रीत सुचंग ए।। ५४. भग वालुका थी पट तेह ए, विकल्प डकवीस भणेह ए। भांगा ह्वै एक सौ नै छवीस ए, ते पिण पूर्व रीत जगीस ए।। ८५ पंक थकी भंग तीन ए, विकल्प इकवीस आधीन ए। त्रेसठ भागा तास ए, वारु बुद्धि विमल सुविमास ए॥ ६६. घूम थकी भंग एक ए, विकल्प इकवीस सुलेख ए। इकवीस भांगा अवलोय ए, विधि पूर्व उक्तज होय ए।। ८७. इम त्रिकसंजोगिक भंग ए, सातसो ने पैतीस सुचग ए। इम नारिक भ्रमण करेय ए, जिन भाखे सुण गंगेय ! ए॥ इद. देण नवम वतीसम न्हाल ए, एकसी ने सत्यासीमी ढाल ए।

७७. अहवा एगे रयणप्यमाण, दो वालुयप्यभाए समेजजा पनप्यभाए होज्जा, एव एएण कमेण नियामजोगो.

# ढाल : १८८

भिक्षु भारीमाल ऋपिराय ए, सुख 'जय-जग' हरप सवाय ए।।

हिनै मस्याता जीवां रा चडकसंयोगिक तेहना विकल्प ३१ भागा १०६५ तिणरो विवरो —चडकमजोगिक ३५ भागा एकेक विकल्प करि हुनै। रत्न थी २०, मक्कर थी १०, वालुक थी ४, पक थी १—एव ३५। रत्न थी २० ते किमा? रत्न मक्कर थी १०, रत्न वालु थी ६, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी १—एव २०। रत्न सक्कर थी १० ते किमा? रत्न सक्कर वालु थी ४, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थी १—एव १०। इम आगल पिण जिम सभवै तिम करिवा तिहा प्रथम रत्न मक्कर वालु थी ४ भागा इकतीस विकर्प करि १२४ भागा कहै छै—

### दूहा

जीव सखेज तणां हिवै, चउकसयोगी कहीस।
 पिच्यासी इक सहस्र मंग, विकल्प तसु इकतीस।

१. चतुष्कसयोगेषु पुनराखाभिश्चतसृभि प्रथमश्चतुष्क-सयोगः तत एते सर्वेऽप्वेकत्र चतुष्कयोगे एकि त्रिजत्,

# \* श्री जिन भाखै सुण गगेया । (घ्रुपदं)

२. तथा रत्न इक सक्कर मे इक, एक वालु पक माहि सख्यात। तथा रत्न इक सक्कर में इक, एक वालु धूम सख्याता जात।।

- ३. तथा रत्न इक सक्कर मे इक, एक वालु तम सख भणेज। तथा रत्न इक सक्कर मे इक, एक वालु सप्तमी मे सखेज।।
- ४ तथा रत्न इक सक्कर मे इक, वे वालुक पक माहि सख्यात। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, वे वालुक सख सप्तमी जात।।
- ५. तथा रत्न इक सक्कर मे इक, त्रिण वालुपक माहि सखेय।
- जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, त्रिण वालु सखेज सप्तमी लेय।। ६ तथा रत्न इक सक्कर मे इक, चिउ वालु पक सखेज कहेय।
  - जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, चिउ वालु सप्तमी सक्षेज लेय ।।
- ७. तथा रत्न इक सक्कर में इक, पच वालु पक सखेज लेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, पच वालु सप्तमी में सखेय।।
- प्तथा रत्न इक सक्कर में इक, पट वालु पक सख्यात पीडात। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, पट वालु सप्तमी माहि सख्यात॥
- ह तथा रत्न इक सक्कर मे इक, सप्त वालु पंक सखेज लेय।
  जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, सप्त वालु सप्तमी मे सखेय।
- १० तथा रत्न इक सक्कर मे इक, अष्ट वालुक पंक सखेज वेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, अष्ट वालु सप्तमी मे सखेय।।
- ११ तथा रत्न इक सक्कर मे इक, नव वालु पक सखेज वदेह। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, नव वालु सखेज सप्तमी लेह।।
- १२. तथा रत्न इक सक्कर मे इक, दश वालु पक सखेज वदेह। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, दश वालु सखेज सप्तमी लेह।।
- १३. तथा रत्न इक सक्कर में इक, सखेज वालु सखेज पकेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।
- १४ तथा रत्न इक सक्कर मे वे, सखेज वालु सखेज पकेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर वे, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।
- १५ तथा रत्न इक सक्कर मे त्रिण, सखेज वालु सखेज पकेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर त्रिण, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।
- १६ तथा रत्न इक सक्कर में चिज, सखेज वालु सखेज पकेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर चिज, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।
- १७. तथा रत्न इक सक्कर में पच, सखेज वालु सखेज पक्केय। जाव तथा इक रत्न सक्कर पच, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।
- १८ तथा रत्न इक सनकर मे पट, सखेज वालु संखेज पकेय। जाव तथा इक रत्न सनकर षट, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।
- १६. तथा रत्न इक सक्कर मे सप्त, सखेज वालु सखेज पकेय। तथा रत्न इक सक्कर मे सप्त, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।
- २०. तथा रत्न इक सक्कर मे अब्ट, सखेज वालु सखेज पंकेय। तथा रत्न इक सक्कर मे अब्ट, सखेज वालु सप्तमी मे सखेय।।

अनेया च सप्तपदचतुष्कसंयोगाना पचित्रशतो गुणने सहस्रं पंचाशीत्यधिक भवति । (वृ० प० ४४६)

<sup>\*</sup>लय: घोड़ी री:

२१. तथा रत्न इक सक्कर में नव, सखेज वालु सखेज पंकेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर नव, सखेज वालु सप्तमी संखेय।।

२२. तथा रत्न इक सक्कर मे दश, संखेज वालु संखेज पकेय। जाव तथा रत्न इक सक्कर मे दश, संखेज वालु सप्तमी संखेय॥

२३. तथा रत्न इक सक्कर सख्याता, सखेज वालु सर्येज पकेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर सख, सखेज वालु सप्तमी सर्येय।।

२४ तथा रत्न वे सक्कर सख्याता, सक्षेज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न वे सख सक्कर, सक्षेज वालु मप्तमीं सक्षेय॥

२५. तथा रत्न त्रिण सक्कर संख्याता, सरोज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न त्रिण सख सक्कर, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।

२६. तथा रत्न चिउ सक्कर सख्याता, संसेज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न चिहुं सख सक्कर, संसेज वालु सप्तमी संसेय॥

२७ तथा रत्न पच सक्कर संख्याता, सखेज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न पच सख सक्कर, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।

२८. तथा रत्न पट सक्कर सख्याता, सखेज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न पट संख सक्कर, संखेज वालु सप्तमी सखेय।।

२६. तथा रत्न सन्त सक्कर सख्याता, सखेज वालु पक संख लेय। जाव तथा रत्न सन्त सख सक्कर, सखेज वालु सन्तमी सखेय।।

३०. तथा रत्न अष्ट सक्कर संख्याता, सखेज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न अठ सख सक्कर, संखेज वालु सप्तमी सखेय।।

३१. तथा रत्न नव सक्कर सख्याता, संखेज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न नव सख सक्कर, संखेज वालु सप्तमी सखेय।।

३२. तथा रत्न दश सक्कर सख्याता, संखेज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न दश सख सक्कर, संखेज वालु सन्तमो मखेय।।

३३. तथा रत्न सख सक्कर सख्याता, संखेज वालु पंक सख लेय। जाव तथा रत्न संख सक्कर, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।

३४ ए रत्न सक्कर वालु थी चिउ भागा,

इकतीस विकुल्प इक सी चोवीस ।

रत्न सक्कर पक थी त्रिण भागा, इकतीस विकल्प त्राणू जगीस।।

३५. रत्न सक्कर धूम थी दोय भागा, इकतीस विकल्प वासठ दीस । रत्न सक्कर तम थी इक भगो, इकतीस विकल्प भग इकतीस ॥

३६ ए रत्न सकर थी दश भागा, ते तोनसी दश विकल्प डकतीस। इमज रत्न वालु थी पट भागा, एकसो ने वयासी सुजगीस।।

३७ इमहिन रत्न पक थो ति भग, इकतीस विकल्प त्राणु दीस। रत्न धून थी एक भागो, ते इकतीस विकल्प भग इकतीस।।

३८. रत्न थकी ए वोस भगा इम, इकतोस विकल्प छसी वोस। सकर यो दण भागा इमहिज, नोनसी नै दण इमज कहीस।।

३६ वालु थी चिड भग इकतीस विकल्प, भागा हुवै एक सी चीवीस। पक यको इक भागो हुवै, ते इकतीस विकल्प भंग इकतीस।।

४०. सखेन जीवा रा चउनसंजीगिक,

भागा हुवै एक सहस्र पच्चासी । पैतीस भागा मूल छै त्या नै, इकतीस गुणा किया इता थासी ॥ ४१. नवम शतक नों वतीसम देशज, एकसी नें अठचासीमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' सपित हरप विशाल।।

# ढाल: १८६

हिवै सस्यात जीवा रा पचसयोगिक ना विकल्प ४१, भागा ६६१ तिणरो विवरो—पच सयोगिक २१ भागा एक-एक विकल्प करि हुवै। रत्न यकी १५, सक्कर थी ४ वालुक थी १, एव २१। तिहा रत्न थी १४ तेहनो विवरो—रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालु थी ४, रत्न पक थी १ एव १४। तिहा रत्न सक्कर थी १० ते किसा रत्न सक्कर वालु थी ६, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी १ एव १०। तिहा रत्न सक्कर वालुक थी ६ ते किसा र रत्न सक्कर वालु पक थी ३, रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा ४१ विकल्प करि १२३ भागा कहै छै—

### दूहा

- १ जीव सखेज तणा हिवै, पच-सयोगि कहीस। अठ सय इकसठ भग तसु, विकल्प इकतालीस।।
- २. \*अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका, पक इक घूम सख्यात जात ॥ जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक इक सप्तमी में संख्यातं। विकल्प प्रथम जिनराज इम नागरे।।

३. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पके वे धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक वे सप्तमी मे सख्यात।

विकल्प द्वितीय जिनराज इम वागरै।।

४. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक त्रिण घूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक त्रिण सप्तमी मे सख्यात।

विकल्प तृतीय जिनराज इम वागरै।।

५. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक चिउ धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक चिउ सप्तमी मे संख्यात ।

विकल्प तुर्यं जिनराज इम वागरै॥

१ पञ्चकसयोगेपु त्वाद्याभि पञ्चभि प्रथम. पञ्चक-योग., ""तत एते सर्वेऽप्येकत्र पञ्चकयोगे एकचत्वा-रिशत्, अस्याश्च प्रत्येक मष्तपदपञ्चकसयोगानामेक-विश्वतेर्लाभादण्टशतानि एकपण्ट्यधिकानि भवन्ति । (वृ प० ४४६)

<sup>&</sup>lt;sup>‡</sup>लप: फडखा री

६. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुकी,

पक पंच धूम संख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालुक इक,

पंक पांच सप्तमी मे संख्यातं।

पंचम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

७. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पंक पट धूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक पट सप्तमी में संख्यातं।

पप्टम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पंक सप्त धूम संख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पंक सप्त सप्तमी मे संख्यात।

सप्तम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक अष्ट धूम सख्यात जात।

जाव तथा इक रत्न सक्कर इक वालु इक,

पंक अष्ट सप्तमी मे संख्यात।

विकल्प अष्टम श्री जिनराज कहै।।

१०. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक नव धूम संख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक नव सप्तमी में सख्यातं।

नवम विकल्प जिनराज इम वागरै॥

११. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक दश धूम संख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पंक दश सप्तमी मे सख्यात।

दशम विकल्प जिनराज इम वागरै।।

१२. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

संख पंक धूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

संख पंक सप्तमी मे सख्यात।

एकादशम विकल्प जिनराज वागरै।।

१३. अथवा इक रत्न इक सक्कर वे वालुका,

सख पंक धूम संख्यात जात।

जाव तथा रतन इक सक्कर इक वालु वे,

संख पंक सप्तमी मे संख्यातं।

द्वादशम विकल्प जिनराज वागरै॥

१४. अथवा इक रत्न इक सक्कर त्रिण वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु त्रिण,

संख पक सप्तमी मे सख्यात।

त्रयोदशम विकल्प जिनराज वागरै।।

१५. अथवा इक रत्न इक सक्कर चिउ वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु चिउ,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

चउदशम विकल्प जिनराज वागरै।।

१६. अथवा इक रत्न इक सक्कर पच वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु पच,

सख पक सप्तमी मे संख्यात।

पनरम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१७. अथवा इक रत्न इक सक्कर षट वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु षट,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

सोलसम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१८. अथवा इक रत्न इक सक्कर सप्त वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु सत्त,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

सतरमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१६. अथवा इक रत्न इक सक्कर अठ वालुका,

सख पक घूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु अठ,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

अठारमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२०. अथवा इक रत्न इक सक्कर नव वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु नव,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

उगणीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२१. अथवा इक रत्न इक सक्कर दश वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु दश,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

वीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै।।

६. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुंकी,

पंक पच धूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालुक इक,

पक पांच सप्तमी मे संख्यातं।

पचम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

७. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक पट धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक पट सप्तमी मे सख्यात।

पष्टम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक सप्त घूम संख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक सप्त सप्तमी मे सख्यात।

सप्तम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक अष्ट धूम सख्यात जात।

जाव तथा इक रत्न सक्कर इक वालु इक,

पक अष्ट सप्तमी मे सख्यात।

विकल्प अष्टम श्री जिनराज कहै।।

१०. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पंक नव धूम संख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पंक नव सप्तमी में संख्यात।

नवम विकल्प जिनराज इम वागरै॥

११. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक दश धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक दश सप्तमी में संख्यात।

दशम विकल्प जिनराज इम वागरै।।

१२. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

संख पंक घूम सख्यात जात।

जाव तथा रतन इक सक्कर इक वालु इक,

सख पंक सप्तमी मे सख्यातं।

एकादशम विकल्प जिनराज वागरै।।

१३. अथवा इक रत्न इक सक्कर वे वालुका,

सख पंक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु वे,

संख पक सप्तमी मे संख्यातं।

द्वादशम विकल्प जिनराज वागरे॥

१४. अथवा इक रत्न इक सक्कर त्रिण वालुका, सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु त्रिण,

संख पक सप्तमी में सख्यात।

त्रयोदशम विकल्प जिनराज वागरै।।

१५. अथवा इक रत्न इक सक्कर चिउं वालुका,

सख पक धूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु चिंउ,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

चउदशम विकल्प जिनराज वागरै।।

१६. अथवा इक रत्न इक सक्कर पच वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु पच,

सख पक सप्तमी मे सख्यातं।

पनरम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१७. अथवा इक रत्न इक सक्कर षट वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु षट,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

सोलसम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१८. अथवा इक रत्न इक सक्कर सप्त वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु सत्त,

सख पक सप्तमी मे संख्यात।

सतरमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१६. अथवा इक रत्न इक सक्कर अठ वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु अठ,

सख पक सप्तमी मे सख्यातं।

अठारमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२०. अथवा इक रत्न इक सक्कर नव वालुका,

सख पक घूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु नव,

संख पक सप्तमी मे सख्यात।

उगणीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२१. अथवा इक रत्न इक सक्कर दश वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु दश,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

वीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२२. अथवा इक रत्न इक सक्कर संख वालुका,

संख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रतन इक सक्कर इक वालु सख,

संख पक सप्तमी मे सख्यात।

इकवीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै॥

२३. अथवा इक रत्न वे सक्कर सख वालुका,

संख पक घूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर वे वालु सख,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

वावीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२४. अथवा इक रत्न त्रिण सक्कर संख वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर त्रिण वालु संख,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

तेवीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२५. अथवा इक रत्न चिउ सक्कर सख वालुका,

संख पंक धूम संख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर चिउ वालु सख,

सख पंक सप्तमी में संख्यात।

चउवीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२६. अथवा इक रत्न पच सक्कर सख वालुका,

सख पक धूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर पंच वालु संख,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।।

पणवीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२७. अथवा इक रत्न पट सक्कर सख वालुका,

संख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर पट वालु सख,

संख पक सप्तमी मे सख्यात।

पटवीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै॥

२८. अथवा इक रत्न सप्त सक्कर सख वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर सप्त वालु सख,

सख पक सप्तमी मे सख्यातं।

सप्तवीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२६. अथवा इक रत्न अठ सक्कर सख वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर अठ वालु सख,

पक सख सप्तमी मे सख्यात।

अष्टवीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

३०. अथवा इक रत्न नव सक्कर संख वालुका, संख पक धूम संख्यात जात। जाव तथा रत्न इक सक्कर नव वालु सख, संख पंक सप्तमी मे सख्यात। गुणतीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३१. अथवा इक रत्न दश सक्कर सख वालुका, संख पंक धूम सख्यात जात। जाव तथा रत्न इक सक्कर दश वालु सख, सख पक सप्तमी मे सख्यात।

तीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३२. अथवा इक रत्न सख सक्कर सख वालुका, सख पक धूम सख्यात जात। जाव तथा रत्न इक सक्कर संख वालु सख, सख पक सप्तमी मे सख्यात। इकतीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३३. अथवा बे रत्न सख सक्कर सख वालुका, सख पक धूम सख्यात जात। जाव तथा रत्न वे सक्कर संख वालु सख, सख पक सप्तमी मे सख्यात। वतीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३४. अथवा त्रिण रत्न सख सक्कर सख वालुका, सख पक धूम सख्यात जातं। जाव तथा रत्न त्रिण सख सक्कर वालु संख, सख पक सप्तमी मे सख्यात। तेतीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३५. अथवा चिंउ रत्न सख सक्कर संख वालुका, सक पक घूम सख्यात जातं। जाव तथा रत्न चिंउ सख सक्कर वालु सख, सख पक सप्तमी में सख्यात। चंउतीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३६. अथवा पंच रत्न सख सक्कर सख वालुका, सख पक धूम सख्यात जात । जाव तथा रत्न पच सख सक्कर वालु सख, पक सख सप्तमी मे सख्यात । पैतीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३७. अथवा षट रत्न सख सक्कर सख वालुका, सख पक धूम सख्यात जातं। जाव तथा रत्न षट सख सक्कर वालु सख, पक सख सप्तमी मे सख्यात। छतीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१ रत्न, १ सक्कर; १ वालु, १ पंक, ६ घूम, संख्यात तम г. १० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १० धूम, सख्यात तम ११ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम १२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम १३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम १४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम १५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम १६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम १७ १ रत्न, १ गक्कर, १ वालु, ७ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम १८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु = पक, सख्यात घूम, सख्यात तम 38 १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, संख्यात धूम, संख्यात तम २० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पक, सख्यात धूम, सख्यात तम २१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, मख्यात तम २२ १ रत्न, १ मक्कर, २ वालु, सख्यात पक, सख्यात घूम, सख्यात तम २३ १ रतन, १ सक्कर, ३ वालु, सस्यात पक, सख्यात घूम, सस्यात तम २४ १ रत्न, १ सक्कर, ४ वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम २५. १ रत्न, १ सक्कर, ५ वालु, सख्यात पक, सख्यात घूम, सख्यात तम २६ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम २७. १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, सस्यात पक, सख्यात घूम, सख्यात तम २८. १ रत्न, १ मक्कर, = वालु, सस्यात पक, सस्यात धूम, सस्यात तम २६ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, सख्यात पक, सख्यात घूम, सल्यात तम ३०. १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ३१ १ रत्न, १ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक्क, संख्यात धूम, संख्यात तम ३२. १ रत्न, २ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ३३. १ रत्न, ३ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ३४. १ रत्न, ४ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ३५. १ रत्न, ५ सक्कर, संख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ३६ १ रत्न, ६ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात वूम, सख्यात तम ३७. १ रत्न, ७ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात वूम, सख्यात तम ३८ १ रत्न, ८ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ३६ १ रत्न, ६ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ४० १ रत्न, १० सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ४१ १ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यान पक, संख्यात धूम, संख्यात तम ४२. २ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात घू , संख्यात तम ४३ ३ रत्न, संख्यात संक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात धूम, संस्थात तम ४४ ४ रत्न, सम्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ४५ ५ रतन, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात घूम, संख्यात तम ४६ ६ रत्न, सख्यात सन्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सस्यात तम ४७ ७ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ४८. ८ रत्न, संख्यात संकार, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात घूम, संख्यात तम ४६ ६ रत्न, सह्यान सङ्गर, सहयात वालु, सख्यात पक, सख्यात धून, सह्यान तन

५० १० रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात धूम, संख्यात तम

५१ सख्यात रत्न, सख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, सख्यात घूम सख्यात, तम

सक्षेज जीव ना पट-संजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा कह्या, तिणमे सप्तमी नरक टली।

इमहिज सक्षेज जीव ना षट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे छठी नरक टालणी।

इम सक्षेज जीव ना षट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा तिणमे पाचमी नरक टालणी।

इम सक्षेज जीव ना पट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा तिणमे चउथी नरक टालणी।

इमहिज सक्षेज जीव ना पट-सयोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे तीजी नरक टालणी।

इमहिज सक्षेज जीव ना षट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे दूजी नरक टालणी।

इमहिज सक्षेज जीव ना षट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे प्रथम नरक टालणी।

एव सक्षेज जीव ना षट-सयोगिक ५१ विकल्प करि ३५७ भागा हुवै। हिवै सप्त सयोगिक कहै छै---

४ सख जीव सप्तयोगिका, इगसठ विकल्प एम। भागा पिण इगसठ तसु, कहू जूजुआ जेम।। सक्षेज जीव ना सप्त-सयोगिक ६१ विकल्प, भागा पिण ६१, ते कहैं छै—

१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, सख्यात सप्तमी

२ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, सख्यात सप्तमी

३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ३ तम, सख्यात सप्तमी

४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ४ तम, सख्यात सप्तमी

५. १ रतन, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ५ तम, सख्यात सप्तमी

६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ६ तम, सख्यात सप्तमी

७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ७ तम, सख्यात सप्तमी

५ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक १ धूम, द तम, सख्यात सप्तमी

६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु १ पक, १ धूम, ६ तम, सख्यात सप्तमी

१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, १० तम, सख्यात सप्तमी

११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१२ १ रत्न, १सक्कर, १ वालु, १ पक, २ घूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी १३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ घूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१४ १ रत्न १ सक्कर, १ वाल, १ पक, ४ धम, संस्थात तम, संस्थात सप्तमी

१४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ४ धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमी

१५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ५ घूम, सख्यात तम, मख्यात सप्तमी

१६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ घूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ७ घूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी १८ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ८ घूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

२० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १० घूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

२१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

२२ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, सस्यात धूम, सस्यात तम, सस्यात सप्तमी

४ सप्तकसयोगे तु पूर्वोक्तभावनयैकपिष्टिविकल्पा भवन्ति, सर्वेषा चषा मीलने त्रयस्त्रिशच्छतानि सप्त-त्रिशदिधकानि भवन्ति । (वृ०प०४४६)

- १ रत्न, १ सक्कर; १ वालु, १ पंक, ६ धूम, संख्यात तम 3 १० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १० धूम, सख्यात तम
- १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, संख्यात धूम, संख्यात तम ११.
- १२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम १₹. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पक, सल्यात घूम, सख्यात तम
- १४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पक, सम्यात धूम, मस्यात तम
- १५. १ रत्न, १ सकर, १ वालु, ५ पक, सख्यात धूम, सग्यात तम
- १६. १ रत्न, १ सकरर, १ वालु, ६ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम
- १७ १ रत्न, १ गकार, १ वालु, ७ पक, सख्यात धूम, संग्यात तम
- **१**5. १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु = पक, सम्यात धूम, सरयात तम
- १ रत्न, १ नक्कर, १ वालु, ६ पक, सस्यात धूम, मन्यात तम 38
- ₹0. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पक, मख्यात धूम, सख्यात तम
- २१. १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, सरयात पक, सख्यात धूम, सन्यात तम
- २२. १ रत्न, १ सक्कर, २ बालु, सल्यात पक, सरयात धूम, सन्यात तम
- २३ १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, सस्यात पक, सस्यात धूम, मन्यान तम
- २४ १ रत्न, १ सक्कर, ४ बालु, सम्यात पक, सम्यात धूम, सम्यात तम
- २५. १ रत्न, १ सक्कर, ५ वालु, सख्यात पक, सख्यान धूम, सध्यात तम
- २६ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, मख्यात पक, सख्यात धूम, मन्यात नम
- २७. १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, सख्यात पक, मस्यान धूम, मन्यात तम
- २५. १ रत्न, १ मक्कर, ६ वालु, सन्यात पक, सत्यात धूम, मत्यात तम
- २६ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, सख्यात पक, सस्यात धूम, मस्यात तम
- ३०. १ रत्न, १ मक्कर, १० वालु, मख्यात पंक, सख्यात धूम, मख्यात तम
- ३१ १ रत्न, १ मक्कर, सहयात वालु, सहयात पक्क, सहयात धूम, संद्यात तम
- ३२ १ रत्न, २ मक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम
- ३३. १ रत्न, ३ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सस्यात धूम, संख्यात तम
- ३४. १ रत्न, ४ सक्कर, सत्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात घूम, सख्यात तम
- ३५ १ रत्न, ५ सक्कर, सल्यात वालु, सल्यात पक, सल्यात धूम, सल्यात तम
- ३६ १ रत्न, ६ सक्कर, संख्यात वालु, मरुयात पक, सरुयात घूम, सरुयात तम
- ३७. १ रत्न, ७ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात यूम, सख्यात तम
- ३८ १ रत्न, ८ मक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, संख्यात तम
- ३६ १ रत्न, ६ सक्कर, मख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम
- ४०. १ रत्न, १० सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सस्यात धूम, सरयात तम
- ४१ १ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सस्यात घूम, सख्यात तम
- ४२ २ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात घूा, सख्यात तम
- ४३ ३ रत्न, सख्यात सक्कर, संस्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात धूम, संस्यात तम
- ४४ ४ रत्न, सम्यात सन्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, मख्यात तम
- ४५ ५ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सस्यात तम
- ४६ ६ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, संख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम
- ४७ ७ रत्न, सख्यात मक्कर, सख्यात वालु, सस्यात पक, सस्यात धूम, सख्यात तम
- ४८ ८ रतन, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात घूम, सख्यात तम
- ४६ ६ रत्न, सहरात नरकर, महयात वालु, सख्यात पक, सख्यात धून, महरात तन ५०. १० रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात धूम, संख्यात तम

५१ सख्यात रत्न, सख्यात सक्कर, संख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात घूम संख्यात,

सखेज जीव ना पट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा कह्या, तिणमे सप्तमी नरक टली।

इमहिज सक्षेज जीव ना पट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे छठी नरक टालणी।

इम सखेज जीव ना पट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा तिणमे पाचमी नरक टालणी।

इम सखेज जीव ना षट-सजीगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा तिणमे चउथी नरक टालणी।

इमहिज सक्षेज जीव ना षट-सयोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे तीजी नरक टालणी।

इमहिज सक्षेज जीव ना पट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे दूजी नरक टालणी।

इमहिज सक्षेज जीव ना पट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे प्रथम नरक टालणी।

एव सक्षेज जीव ना षट-सयोगिक ५१ विकल्प करि ३५७ भागा हुवै। हिवै सप्त सयोगिक कहै छै---

४ सख जीव सप्तयोगिका, इगसठ विकल्प एम। भांगा पिण इगसठ तसु, कहू जूजुआ जेम।। मखेज जीव ना सप्त-सयोगिक ६१ विकल्प, भागा पिण ६१, ते कहै छै-

१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, सख्यात सप्तमी

२ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, सख्यात सप्तमी

३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ३ तम, सख्यात सप्तमी

४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ४ तम, सख्यात सप्तमी

५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ५ तम, सख्यात सप्तमी

६ १ रत्न, १ सक्कर, १ बालु, १ पक, १ धूम, ६ तम, सख्यात सप्तमी

७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, ७ तम, सख्यात सप्तमी

८ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक १ धूम, ८ तम, मख्यात सप्तमी

६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु १ पक, १ धूम, ६ तम, सख्यात सप्तमी

१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १० तम, सख्यात सप्तमी

११ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१२ १ रत्न, १सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ४ धूम, सस्यात तम, सख्यात सप्तमी १५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ५ घूम, सख्यात तम, मख्यात सप्तमी

१६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी १७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ७ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१८ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ८ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तनी

१६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

२० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १० धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

२१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सस्यात सप्तमी

२२ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

पूर्वोक्तभावनयैकपष्टिविकल्पा ४ सप्तकसयोगे तु भवन्ति, सर्वेषा चषा मीलने त्रयस्त्रिशच्छतानि सप्त-त्रिशदधिकानि भवन्ति । (वृ० प० ४४६)

- २३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पक, मस्यात घूम, सस्यात तम, मन्यात मप्नमी
- २४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पक, सम्यात धूम, संन्यात तम, सम्यात मप्नमी
- २५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु ५ पक, सख्यात धूम, मख्यात तम, मरयात मप्नमी
- २६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, सस्यात घूम, मख्यात तम, सख्यात गप्नमी
- २७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ७ पक, सख्यात घूम, मरयात तम, सरयात मध्नमी
- २६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, संख्यात घूम, मख्यात तम, सख्यात मप्तमी
- २६ १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, ६ पक, संस्थात धूम, संस्थात तम, संस्थात यप्नमी
- ३०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पक, सम्यात धूम, सस्यात तम, सस्यात सप्तमी
- ३१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, सख्यात पंक, सख्यात धूम, संख्यात तम, सय्यात सप्नर्म
- ३२ १ रत्न, १ मक्कर, २ बालु, सस्यात पक, सख्यात घूम, सरयात तम, मरयात मन्त्रमी
- ३३ १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, सख्यात पंक, सस्यात धूम, सख्यात तम, मग्यात मप्नमी
- ३४ १ रत्न, १ मनकर, ४ वालु, सस्यात पक, सरयात धूम, सस्यात तम, सन्यात सप्तर्म
- ३५ १ रत्न, १ मक्कर, ५ वालु, मख्यात पक, सस्यात घूम संख्यात तम, मख्यात सप्तमी
- ३६ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, सख्यात पक, संस्थात धूम, मख्याल तम, सर्यान सन्दर्भी
- ३७ १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, सरुयात पक, मख्यात धूम, सख्यात तम, सरुयात मध्यात मन्त्रमी
- ३८ १ रत्न, १ सक्कर, ८ वालु, सत्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, मख्यात सप्तमी
- ३६ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, सस्यात पंक, सस्यात धूम, सख्यात तम, सस्यात सप्तर्म
- ४० १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, सङ्यात पक, सङ्यात धूम, सस्यात तम, सङ्यात सप्तमी
- ४१ १ रत्न, १ सक्कर, सस्यात वालु, सस्यात पक, सस्यात घूम, सस्यात तम, सस्यात नप्नमी
- ४२ **१** रत्न, २ सक्कर, मस्यात वालु, सस्यात पक, मस्यात धूम, सस्यात तम, सस्यात मप्नमी
- ४३ १ रत्न, ३ सक्कर, मख्यात वालु, संस्थात पक, मख्यात धूम, संस्थात तम, सस्यात सप्तमी
- ४४ १ रत्न, ४ मक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, संख्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ४५ १ रत्न, ५ सक्कर, मस्यात वालु, सस्यात पक, सस्यात धूम, मस्यात तम, सस्यात सप्तमी
- ४६ १ रत्न, ६ सक्कर, संख्यात वालु, सस्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ४७. १ रत्न, ७ मन्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमी

- ४८. १ रत्न, ८ सक्कर, सस्यात वालु, सस्यात पक, सस्यात घूम, संख्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ४६. १ रत्न, ६ सक्कर, सस्यात वालु, संत्यात पक, सस्यात धूम, सस्यात तम, सस्यात सप्तमी
- ५० १ रत्न, १० सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात घूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ५१ १ रत्न, सख्यात सक्कर, सस्यात वालु, सस्यात पक, सस्यात धूम, सस्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ५२ २ रत्न, संख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सस्यात पंक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ५३. ३ रत्न, सस्यात सक्कर, सस्यात वालु, सस्यात पंक, सस्यात धूम, सस्यात तम, सस्यात सप्तमी
- ५४ ४ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ५५ ५ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सख्यात मप्तमो
- ५६ ६ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पन, सख्यात धूम, सख्यात तम, मख्यात सप्तमी
- ५७ ७ रत्न, सख्यात सक्कर, सस्यात वालु, सख्यात पक, सस्यात धूम, सख्यात तम, सस्यात सन्तमी
- ५८ द रत्न, मल्यात सक्कर, सल्यात वालु, सल्यात पक, सल्यात धूम, सल्यात तम, सल्यात मण्तमी
- ५८ ६ रत्न, संख्यात मक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात संद्यात संद्यात
- ६० १० रत्न, स स्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पकः, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमी
- ६१. सख्यात रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, मख्यात धूम, सख्यात तम, सस्यात सप्तमी

हिवै सख्यात जीवा रा भागा रो घडो कहै छै-

- १. इक सयोगिक ७ ।
- २. द्विक सयोगिक २३१।
- ३ त्रिक सयोगिक ७३५।
- ४. चउनक सयोगिक १०८५।
- ५. पच सयोगिक ८६१।
- ६. पट सयोगिक ३५७।
- ७ सप्त सयोगिक ६१।

ए सर्व ३३३७।

सरयात जीव नरक मे जाय तेहना इकयोगिक भागा ७ विकल्प १ ते लिखिये

- १. सख्याता रत्नप्रभा मे कपनी।
- २ अथवा सक्कर मे ऊपजै।
- ३ जाव अथवा तमतमा मे ऊपजै। सस्याता जीव नरक मे जाय तेहना द्विकसजोगिया विकल्प ११ ते लिखियै छै—

- १ १ रत्न, संख सक्कर ए प्रथम विकल्प।
- २ २ रत्न, संख सक्कर ए द्वितीय विकल्प । इम रत्न मे अनुक्रमे दश ताइ एक एक वधारता दसमो विकल्प—
- १०. १० रतन, सख सक्कर ए दशमो विकल्प।
- ११. सख रत्न, सख सक्कर ए इग्यारमो विकल्प । ए द्विकसजोगिया सख्याता जीवा रा ११ विकल्प अनै एक-एक विकल्प ना इकवीस-उकवीम भागा हुवै ते माटै इग्यारै ने २१ गुणा कीधे छते २३१ भागा हुवै ।

सङ्पाता जीव नरक मे जाय तेहना विकसजोगिया विकरा २१ ते लिखिये

🕏 --

- १ १ रतन, १ सक्कर, सख वालुक ए प्रथम विकल्प।
- २ १ रहत, २ सक्कर, सख वालुक ए द्वितीय विकल्प । इम सक्कर में अनुक्रमें दश ताइ एक-एक वधारता दसमो विकल्प—
- १०. १ रत्न, १० सक्कर, सरा वालुक ए दशमो विकल्प।
- ११ १ रत्न, सख सक्कर, सख वालुक, ए इग्यारमो विकल्प।
- १२. २ रत्न, सख सक्कर, सुख वालुक ए बारमो विकल्प। इम रत्न मे दश ताइ अनुक्रमे एक-एक वधारता वीसमो विकल्प—
- २०. १० रत्न, सख सक्कर, सख वालु ए वीसमो विकल्प।
- २१ सख रत्न, सख सक्कर, सस वालुक ए इकवीममी विकल्प । ए त्रिकसजीगिया सल्यात जीवा रा २१ विकल्प, अनै एक-एक विकल्प ना पैतीस-पैतीस भागा हुवै ते माटै इकवीस नै ३५ गुणा कीधे छते ७३५ भागा हुवै।

सल्याता जीव नरक मे जाय, तेहना चौकसजोगिया विकल्प ३१ एहनी आमना लिखिये छै—

- १. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, सख पक ए प्रथम विकल्प।
- २ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, सख पक ए द्वितीय विकल्प। इम वालुक मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता दसमो विकल्प—
- १० १ रतन, १ सक्कर, १० वालुक, सख पक, ए दशमी विकल्प।
- ११. १ रत्न, १ सक्कर, सख वालुक सख पक ए ११ मो विकल्प।
- १२. १ रत्न, २ सकर, मख वालुक, सख पक ए १२ मो विकल्प। इम सक्कर में दश ताइ अनुक्रमे एक-एक वधारता वीसमो विकल्प—
- २० १ रत्न, १० सक्कर, मख वालुक, सख पक ए वीसमी विकल्प।
- २१ १ रत्न, सख सक्कर, सख वालुक, सख पक ए २१ मो विकल्प।
- २२ २ रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक ए २२ मो विकल्प । इम रत्न मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता तीसमो विकल्प-
  - ३० १० रत्न, सख सक्कर, सख वालुक, सख पक ए तीसमी विकल्प।
- ३१ सख रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक ए ३१ मो विकल्प । चतक-सजोगिया सख्याता जीवा रा ३१ विकल्प अनै एक-एक विकल्प ना पैतीस-पैतीस भागा हुवै ते माटै ३१ मे ३५ गुणा की छे छते १०८५ भागा हुवै । सख्याता जीव नरक मे जाय तेहना पचसजोगिया विकल्प ४१ तेहनी आमना लिखियै छै—
  - १. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, सख घृम, ए प्रथम विकल्प।
  - २ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, सख धूम, ए द्वितीय विकल्प । इम पक मे

१. सख्यात के स्थान पर सख शब्द का प्रयोग हुआ है।

- अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारतां दसमों विकल्प---
- १० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पंक, सख धूम ए दशमो विकल्प।
- ११ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, सख पक, सख धूम ए ११ मो विकल्प।
- १२ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, सख पक, सख धूम ए १२ मो विकल्प, इम वालुक मे अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारता वीसमो विकल्प —
- २० १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, सख पक, सख धूम, ए २० मो विकल्प।
- २१. १ रत्न, १ सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, ए २१ मो विकल्प।
- २२. १ रत्न, २ सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, ए २२ मो विकल्प। इम सक्कर मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता तीसमो विकल्प---
- ३० १ रतन, १० सक्कर, सख वालु, सख पक, सख घूम ए ३० मो विकल्प।
- ३१. १ रतन, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम ए ३१ मो विकल्प।
- ३२ २ रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम ए ३२ मो विकल्प। इम रत्न मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता चालीसमो विकल्प—
- ४० १० रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख, प्क, सख धूम ए चालीसमो विकल्प।
- ४१ सख रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम ए ४१ मो विकल्प।

ए सख्यात जीवा रा पाचसजोगिया ४१ विकल्प, अने एक-एक विकल्प ना इक्कीस-इक्कीस भागा हुवै, ते माटै इकतालीस ने २१ गुणा कीधे छते ८६१ भागा हुवै।

सल्याता जीव नरक मे जाय तेहना पट सजोगिया विकल्प ५१, तेहनी आमना लिखियै छै—

- १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, सख्यात तम, ए प्रथम विकल्प ।
- २. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, सख्यात तम ए द्वितीय विकल्प । इम धूम में अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता दसमो विकल्प—
- १० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १० धूम, सख्यात तम ए १० मो विकल्प।
- ११ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, सख धूम, सख तम ए ११ मो विकल्प।
- १२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, सख धूम, सख तम ए १२ मो विकल्प । इस पक मे अनुक्रमे दश नाइ एक-एक वधारता वीसमो विकल्प—
- २०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पक, सख धूम, सख तम, ए २० मो विकल्प।
- २१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, सख पक, सख धूम, सख तम ए २१ मो विकल्प।
- २२. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, सख पक, सख धूम, सख तम, ए २२ मो विकल्प। इम वालुक मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता तीसमो विकल्प—
- ३० १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, सख पक, सख धूम, सख तम ए ३० मो विकल्प।
- ३१ १ रत्न, १ सक्कर, सख वालु, सखपक, सख धूम, सख तम, ए ३१ मी विकल्प।
- ३२ १ रत्न, २ सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम, ए ३२ मो विकल्प।
  - इम सक्कर मे अनुऋमे दश ताइ एक-एक वधारता चालीसमो विकल्प---
- ४० १ रत्न, १० सक्तर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम ए४० मो विकल्प।
- ४१. १ रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम ए ४१ मो विकल्प।
- ४२ २ रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम ए ४२ मी विकल्प। इम रत्न मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता पचाममो विकल्प---

- ५० १० रस्त, सन्व सबकर, सन्य वालु, सन्य पक, सन्व घूम, सन्य तम ए ४० मों विकल्प ।
- ४१ मन रत्न, मंख मक्कर, सप्प वालु, मन पंक, मख घृम, मख तम ए ४१ मी विकल्प।

ए सन्त्यात जीवा रा छमंजोगिया ५१ विकल्प, अने एक-एक विकल्प ना सान-मात भागा हुवै, ते माटै ५१ ने मात गुणा कीवे छने ३५७ भागा हुवै।

मन्याना जीव नरक में जाय तेहना मातमजोगिया विकरप ६१ तेहनी वामना निनियै छै--

- १ १ रत्न, १ सकार, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, मध्य मध्यमी, ए प्रथम विकटप ।
- २ १ रत्न, १ नक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, मन्य नष्त्रमी, ए द्विनीय विकल्य । उम तम में अनुत्रमे दण ताड एक-एक वधारता दममो विकत्य—
- १०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १० तम, सय सप्तर्मा ए १० मो विकत्य ।
- ११ १ रत्त, १ सक्कर, १ बालु, १ पक, १ घूम, सख तम, सख मध्यमी, ए ११ मो विकल्प।
- १२ १ रत्न, १ सक्कर, १ बालु, १ पक, २ धूम, सन्य नम, सन्य सप्तर्मा, ए १२ मो विकल्प। इस धूम मे अनुत्रमे दण ताङ एक-एक वधारना बीममो विकल्प—
- २० १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, १ पक, १० घूम, मख तम, मख मप्तमी ए २० मो विरत्य ।
- २१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, मन्व घूम, मंख तम, मंख मप्तमी, ए २१ मी विकत्त्र।
- २२ १ रत्न, १ सक्कर, १ बालु, २ पक, मध धूम, मंख नम, सन्य मध्तमी, ए २२ मो विकल्य।

इम पक मे अनुक्रमे दय ताइ एक-एक वधारता तीनमो विकल्प-

- ३०. १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, १० पक, मख धूम, मख तम, सख सप्तमी, ए ३० मो विकल्प।
- ३१. १ रत्त, १ मक्कर, १ वालु, सल पक, नया धूम, मख तम, सय मप्तमी ए ३१ मो विकल्प।
- ३२ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, सख पक, मख धूम, संख तम, सख मप्नमी ए ३२ मी विकल्प। इम वालुक में अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता चालीममी विकल्प-
- ४०. १ रत्न, १ मक्कर, १० वालु, संख पक, संख धूम, मंग्व तम, सन्व मण्नमी ए ४० मी विकल्य।
- ४१. १ रत्न, १ सक्कर, संख वालु, सख पंक, संख धूम, सख तम, सख सप्तमी ए ४१ मो विकल्प।
- ४२ १ रत्न, २ सक्कर, मंख वालु, मम्ब पकः, मंख धूम, सम्ब तम, मख सप्तमी, ए ४२ मी विकल्प । डम मक्कर मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता पचासमी विकल्प---
- ५० १ रत्न, १० मक्कर, सख वालु, मख पंक, मख धूम, मख तम, सख सप्तमी, ए ५० मों विकल्य।

- ५१. १ रत्न, सख सक्कर, संख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम, सख सप्तमी ए ५१ मो विकल्प ।
- ५२ २ रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम, सख सप्तमी ए ५२ मो विकल्प । इम रत्न मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता साठमो विकल्प—
- ६० १० रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम, सख सप्तमी ए ६० मो विकल्प।
- ६१ सख रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम, सख सप्तमी , ए ६१ मो विकल्प ।

ए सख्यात जीवा रा सात सयोगिया ६१ विकल्ग अनै एक-एक विकल्प नो एक २ भागो हुवै ते माटै भागा पिण ६१ जाणवा।

\*जिन कहै गगेया । सुणे ॥ (ध्रुपद)

- ५ हे प्रभु । असल्याता नेरइया, नरक-प्रवेशन प्रश्न निहाल कै। जिन कहै रत्नप्रभा विषे, जावत अथवा सप्तमी भाल के।।
- ६ अथवा एक रत्न विषे, सक्कर माहे असिखज्ज होय कै। इह विधि द्विकसजोगिया, यावत सप्तसजोगिक जोय कै।।
- ७ जिम कह्यो सख्याता जीव नो, असख्याता नो कहिवो तेम कै। णवर पद असख्यात नो, द्वादश नो कहिवो धर प्रेम कै।।
- □ दिकसंजोगिक ना इहा, द्वादश विकल्प करिनै कहीस कै। वे सय वावन भग हुवै, इक विकल्प भागा इकवीस कै।। हिवै असक्षेज जीवा रा द्विकसजोगिक ना १२ विकल्प कहै छै—
- १ १ रत्न, असल्यात सक्कर
- २ २ रत्न, असख्यात सक्कर
- ३ ३ रत्न, असख्यात सक्कर
- ४ ४ रत्न, असख्यात सक्कर
- ५ ५ रतन, असख्यात सक्कर
- ६ ६ रत्न, असख्यात सक्कर
- ७ ७ रत्न, असख्यात सक्कर
- प्रत्न, असख्यात सक्कर
- ६. ६ रतन, असख्यात सक्कर
- १०. १० रतन, असख्यात सक्कर
- ११. सख रतन, असख्यात सक्कर
- १२ असल्यात रत्न, असल्यात सक्कर

एव १२ विकल्य कह्या। एक-एक विकल्य करि इक्वीस-इक्वीस भागा कीघे छते २५२ भागा हुवै।

- ५ असखेज्जा भते । नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पिवस-माणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा । गगेया । रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेमत्तमाए वा होज्जा ।
- ६ अहवा एगे रयणप्पभाए असखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एव दुयास नोगो जाव सत्तगस जोगो य।
- प्रवासिक्जाण भणिओ तहा असखेज्जाण वि भाणि-यव्यो, नवर — असखेज्जओ अव्भिह्यो भाणियव्यो । (श० ६।६६) नवरिमहासल्यातपद द्वादशमधीयते

(वृ० प० ४४६) म द्विकसयोगादौ तु विकल्पप्रमाणवृद्धिर्भवति, सा चैव—

द्विकसयोगे द्वे शते द्विपञ्चाशदिधिके २५२, (वृ० प० ४४६)

श० ६, उ० ३२, ढाल १६० १६६

<sup>\*</sup>लय . हू बिलहारी हो जादवा

हिवै त्रिकसजोगिया भागा कहै छै-

ह. त्रिकसजोगिक नां इहां, तेवीस विकल्प करि मुजगीस कै। भंग अष्ट सय पच है, इक विकल्प भांगां पैतीस कै॥

असस्यात जीवा रा त्रिकमजोगिक विकरय २३ जुदा-जुदा कहै छै —

१ १ रत्न, १ सक्कर, असम्व बालु

२ १ रत्न, २ मक्कर, असस वालु

३ १ रत्न, ३ नक्कर, असंख वालु

४. १ रतन, ४ सतकर, असल वालु

५ १ रत्न, ५ सक्कर, अमख वालु

६. १ रतन, ६ मनकर, अमल बालू

७ १ रत्न, ७ मक्कर, अमप बालु

८. १ रत्न, ८ सक्कर, अमख वालु

६. १ रत्न, ६ मक्कर, अमस वालु

१०. १ रतन, १० मक्कर, अमंत्र बालु

११ १ रत्न, मख मनकर, अमन बानु

१२. १ रत्न, असंख सक्कर, अमख वालुका

१३ २ रत्न, अमन्त्र सक्कर, असन्य वालुका

१४ ३ रत्न, असन्व नकर, अमंख वालुका,

१५. ४ रत्न, असल मक्कर, अमंख वालुका

१६ ५ रत्न, असल नक्कर, अमल वालुका

१७ ६ रत्न, असल नक्कर, अमग्न वालुका

१८ ७ रतन, अमख मक्कर, असख वालुका

१६. ८ रत्न, असल मक्कर, अमंख वालुका

२०. ६ रत्न, अमख सक्कर, असंख वालुका

२१. १० रत्न, असख सक्कर, असम्व वालुका

२२. सख रत्न, अमख सक्कर, असय वालुका

२३. अमंत्र रतन, अमख सनकर, असत्व वालुका

एवं २३ विकल्प कहा। एक-एक विकल्प करि पैतीय-पैतीय भागा की छे छते ५०५ भागा हुवै।

हिबै असंख जीवा रा चढक सयोगिक

१० च उकसजोगिक नां इहां, च उतीस विकल्प करि मुजगीस कै। भग ग्यारेमी नेळ हुवै, इक-इक विकरप करि पैतीस कै।। हिवै असर्गत जीवां रा च उकसयोगिक विकल्प ३४ जुदा-जुदा कहै छै —

१. १ रतन, १ सक्कर, १ वालु, असंख पक

२ १ रत्न, १ मक्कर, २ वालु, असख पक

३ १ रत्न, १ मक्कर, ३ बालु, असंख पंक

४ १ रत्न, १ मक्कर, ४ वालु, अमस पंक

५ १ रत्न, १ मक्कर, ५ वालु, अमंख पक

६ १ रतन, १ मनकर, ६ वालु, असख पक

७ १ रत्न, १ सनकर, ७ वालु, असंख पक

८ १ रत्न, १ सक्कर, ८ वालु, असंख पक

६. १ रत्न, १ नक्कर, ६ वालु, असंख पंक

१०. चतुष्यसयोगे त्वेकादगदातानि नवत्यधिकानि ११६० (व.० ४४६)

२०० भगवती-जोड

१० १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, असंख पंक ११. १ रत्न, १ सक्कर, सख वालु, असख पक १२ १ रत्न, १ सक्कर, असख वालु, असख पक १३ १ रत्न, २ सक्कर, असख वालु, अमख पक, १४ १ रत्न, ३ सक्कर, असख वालु, असख पक १५ १ रत्न, ४ सक्कर, असख वालु, असख पक १६ १ रत्न, ५ सक्कर, असख वालु, असख पक १७ १ रत्न, ६ सक्कर, असख वालु, असख पक १८ १ रत्न, ७ सक्कर, असख वालु असख पक १६. १ रत्न, द सक्कर, असख वालु, असख पक २० १ रत्न, ६ सक्कर, असख वालु, असख पक · २१ १ रत्न, १० सक्कर, असख वालु, अस ख पक २२ १ रत्न, असख सक्कर, असख वालु असख पक २३ १ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक २४ २ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक २५ ३ रत्न, असल सक्कर, असल वालु, असल पक २६ ४ रत्न, असल सक्कर, असल वालु, असल पक २७ ५ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक २८ ६ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक २१ ७ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक ३०. ८ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक ३१ ६ रत्न, असल सक्कर, असल वालु, असल पक ३१. १० रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पंक ३३ सख रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक ३४ असख रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक

एव ३४ विकल्प कह्या। एक-एक विकला करि पैतीय-पैतीय भागा की धे छते ११६० भागा हुवै---

हिवे असख जीवा रा पच सयोगिक —

११ पचसयोगिक ना इहा, पैतालीस विकल्प करि दीस कै। नव सय पैतालीस भग है, इक-इक विकल्प भग इकवीस कै।। असल्यात जीवा रा पच सयोगिक विकल्प ४५ जुदा-जुदा कहै छै—

१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, असख धूम

२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, असख धूम

३ १ रतन, १ सक्कर, १ वालु, ३ पक, असख धूम

४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पक, असल धूम

५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पक, असख धूम

६ १ रत्न, १ सनकर, १ वालु, ६ पक, असख ध्म

७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ७ पक, असख धूम

**८ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ८ पक, असख धूम** 

६ १ रत्न, १ सक्तर, १ वालु, ६ पक, असख धूम

१० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पक, असख धूम

१९ १ रत्न १ मक्कर १ वाल मत वक अमत धा

११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, सख पक, असख घूम

१२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, असख पक, असख धूम

११. पञ्चकसयोगे पुनर्नव शतानि पञ्चचत्वारिशदधि-कानि ६४५, (वृ० प० ४४६) १३. १ रत्न, १ मक्कर, २ वालु, असय पक, अमंख धूम १४. १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, अमस पक, अमस धूम १५. १ रतन, १ मकरर, ४ वालु, असल पक, असम घूम १६ १ रतन, १ सकतर, ५ वालु, असंख पक, असख धूम १७. १ रत्न, १ मक्कर, ६ वालु, अमख पंक, अमख धूम १८. १ रत्न, १ मक्कर, ७ वालु, असरा पक, असरा ध्म १६. १ रत्न, १ सरकर, न वालु, असख पक, असख धूम २०. १ रतन, १ सकरर, ६ बालु, असय पक, असय धूम २१ १ रत्न, १ सकर, १० वालु, असय पक, अमेरा धूम २२. १ रत्न, १ सक्कर, सख बालू, असख पक, असख धुम २३. १ रत्न, १ सक्कर, असय वानु, असय पक, असव धूम २४ १ रत्न, २ सकर, अगच बालु, अमच पक, अमच घुग २४. १ रतन, ३ सकार, असल वाजु, असंल पक, असल धूम २६. १ रत्न, ४ मनकर, असख बालु, असप पक, असख धूम २७. १ रत्न, ५ नक्कर, अनख वालु, अनख पक, असख धूम २८. १ रतन, ६ सरकर, असख वालु, असख पक, असंव धूम २६ १ रत्न, ७ सक्कर, असल वालु, असल पंक, असल धुम ३० १ रत्न, ६ सक्कर, असय वालु, असय पक्र, असंय धूम ३१. १ रत्न, ६ सरकर, असख वालु, असख पक, असंख चूम २२ १ रत, १० मक्कर, अमख बालु, अमख पक, अमख धूम ३३. १ रत्न, मख मक्कर, अमख वानु, अमख पक्र, अमख घूम ३४. १ रत्न, अनय सकर, अमय वालु, असय पक, अमय धूम ३५ २ रत्न, असख सक्कर, असल वालु, असल पंक, असल धूम ३६ ३ रत्न, असल सक्कर, असल वालु, असम्य पक्र, असंग्र धूम ३७. ४ रत्न, अनल सक्कर, असल वालु, असल पक, असल धूम ३८. ५ रत्न, असख सक्कर, असंख वालु, अभख पंक, असख धृम ३६ ६ रत्न, अनख सक्कर, असख बालु, असख पक, असख धूम ४० ७ रत्न, असस सक्कर, असीच बालु, असाच प्रक, असस धूम ४१. = रत्न, अनख नक्कर, असख बालु, अमख पंक, अमख ध्म ४२. ६ रन्न, असख सक्कर, असख बालु, असख पंक, असख धूम ४३. १० रत्न, अमय मनकर, अमय बालु, जनस्य पंक, अमय धृग ४४ मख रत्न, असप्र सक्कर, असख वालु, असख पंक, असप्र धूम ४५ असय रत्न, असख सरकर, असंख बालु, असख पक, असख धूम

एव ४५ विकरन कह्या । एक-एक विकरन करि इकनीम-इक्नीम भागा कीबे छते ६४५ भागा हुवै ।

हिवै असय जीवा रा पट सयोगिक-

१२. पट सयोगिक नां इहां, छपन्न विकल्प करि अवदात कै। तीनसी वाणूं भांगा हुवै, इक-इक विकल्प करि सान-सात कै॥ अमरपात जीवा रा पट सजोगिक विकटप ५६ जुदा-जुदा कहै छै --

१. १ रत्न, १ सनकर, १ बालु, १ पक, १ धूम, असंख तम

२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, असल तम

३ १ रत्न, १ नमकर, १ वालु, १ पक, ३ धूम, असख तम

१२. पट्कसयोगे तु त्रीणि ज्ञतानि द्विनवत्यधिकानि ३६२, (बु० प० ४४६)

२०२ भगवती-जोड

४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ४ धूम, असंख तम ५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ५ धूम, असख तम ६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ धूम, असख तम ७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ७ घूम, असख तम ८ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ८ धूम, असख तम ६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ धूम, असख तम १० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १० धूम, असख तम ११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, सख धूम, असख तम १२ १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, १ पक, असख धूम, असख तम १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, असख धूम, असख तम १४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पक, असख धूम, असख तम १५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पक, असख धूम, असख तम १६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पक, असल धूम, असल तम १७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, असख धूम, असख तम १८ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ७ पक, असख धूम, असख तम १६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पक, असख धूम, असख तम २० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, असख धूम, असख तम २१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पक, असख धूम, असख तम २२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, सख पक, असख धूम, असख तम २३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम २४ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, असल पक, असल घूम, असल तम २५ १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, असख पक, असख घूम, असख तम २६ १ रतन, १ सक्कर, ४ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम २७ १ रत्न, १ सक्कर, ५ वालु, असख पक, असख घूम, असख तम २८ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम २६ १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, असख पक, असख वूम, असख तम ३० १ रत्न, १ सक्कर, = वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३१ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३२ १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३३ १ रत्न, १ सक्कर, सख वालु, असल पक, असल धूम, असख तम ३४ १ रत्न, १ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख नम ३५ १रत्न, २ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३६. १ रत्न, ३ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३७ १ रत्न, ४ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३८ १ रतन, ५ सक्कर, असल वालु, असल पक, असल धूम, असल तम ३६ १ रत्न, ६ सनकर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ४० १ रत्न, ७ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ४१ १ रत्न, = सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ४२ १ रत्न, ६ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ४३ १ रत्न, १० सनकर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ४४ १ रत्न, सख सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ४५. १ रत्न, असख सक्तर, असख वालु, असख पक्त, असख धूम, असख तम

४६. २ रत्न, असल सक्कर, असल वालु, असल प क, असल धून, असल तम

४७. ३ रत्न, असख मक्कर, असय वालु, असय पक, असय घूम, असय तम ४६. ४ रत्न, असय सक्कर, असख वालु, असय पक, असय घूम, असय तम ४६. ५ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असय पक, असय घूम, असय तम ५०. ६ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असय पक, असख घूम, असय तम ५१. ७ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असय पक, असख घूम, असय तम ५२. ६ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असय पक, असय घूम, असय तम ५३ ६ रत्न, असय सक्कर, असख वालु, असय पक, असय घूम, असय तम ५४. १० रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक, असय घूम, असंय तम ५५ सख रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक, असय घूम, असंय तम ६६ असंख रत्न, असंख सक्कर, असख वालु, असख पक, असय घूम, असय तम

एव ५६ विकल्प कह्या । एक-एक विकल्प करि सात-सात भागा की छै छने ३६२ भागा हुवै ।

हिवै असप जीवा रा सप्त सयोगिक कहै छै --

१३. सप्तसयोगिक ना इहां, सतसठ विकल्प करि अवदात कै। भागा पिण सतसठ तमु, विकल्प जितरा भंग कहात कै।। हिबै असल्यात जीवा रा सप्त मयोगिक विकल्प ६७, भागा पिण ६७ ते कहे १३. मप्तकसयोगे पुन मप्तपष्टि, (वृ० प० ४४६)

```
<del>ਹ</del>ੈ---
  १. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, अमख सप्तमी
 २. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, २ तम, अमख सप्तर्मा
  ३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ ध्म, ३ तम, अमध सप्तमी
 ४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, ४ तम, असंग्र मध्तमी
  ५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम ५ तम, असख मध्तमी
  ६. १ रत्न, १ सकरर, १ वालु, १ पक, १ घूम, ६ तम, अमंख मध्नमी
 ७. १ रत्न, १ नक्कर, १ वालु, १ पंक, १ घूम, ७ तम, असय सप्तमी
 द. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, द तम, असंख मध्तमी
 ६ १ रत्न, १ सकर, १ वालु, १ पक, १ घूम, ६ तम, असंख मध्नमी
१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, १० तम, असख सप्तमी
११. १ रत्न, १ सकरर, १ वालु, १ पक, १ धूम, मध तम, असख मप्तमी
१२. १ रत्न, १ सक्तर, १ बालु, १ पक, १ धूम, असख तम, असख सप्तमी
१३ १ रतन, १ सकर, १ वालु, १ पक, २ घूम, असय तम, अपय मध्तमी
१४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ धूम, असय तम, अमय मध्नमी
१५ १ रतन, १ मनकर, १ वालु, १ पक, ४ धूम, असख तम, असख मप्तमी
१६. १ रतन, १ सकरर, १ वालु, १ पक, ५ घूम, अमख तम, असख सप्तमी
१७ १ रतन, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ धूम, असख तम, असख मध्नमी
१८. १ रत्न, १ सम्कर, १ वालु, १ पक, ७ धूम, असख तम, असख सप्तमी
१६. १ रत्न, १ सकर, १ वालु, १ पक, ६ घूम, असख तम, असख सप्तमी
२०. १ रत्न, १ सकर, १ वालु, १ पर्क, ६ धूम, असंख तम, असख सप्तमी
२१. १ रत्न, १ नक्कर, १ वालु, १ पक, १० धूम, असख तम, असख सप्तमी
२२ १ रत्न, १ सकर, १ वालु, १ पक, मख धूम, असख तम, असख सप्तमी
२३. १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, १ पंक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
२४. १ रतन, १ नवकर, १ वालु, २ पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
२५. १ रत्न, १ सनकर, १ बालु, ३ पक, अनख धून, असख तम, अमख सप्तमी
```

- २६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पंक, असेख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- २७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पंक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- २८ १ रतन, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- २६ १ रत्न, १ सक्कर, १ बालु ७ पक, असख घूम, असख तम, अमख सप्तमी
- ३० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पंक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ३१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, असख धूम, अमख तम, असख सप्तमी
- ३२ १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, १० पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ३३ १ रत्न, १सक्कर, १ वालु, सख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ३४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, असख पक, असख घूम, असख तम, असख सप्तमी
- ३५ १ रत्न, १ सक्तर, २ वालु, असख पक, असख घूम, असख तम, असख सप्तमी
- ३६ १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, असख पक, असख घूम, असख तम, असख सप्तमी
- ३७ १ रत्न, १ सक्कर, ४ वालु, असल पक, असल धूम, असल तम, असल सप्तमी
- ३८ १ रत्न, १ सक्कर, ५ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ३६ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, असख पक, असख घूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४० १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, असख पक, असख घूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४१ १ रत्न, १ सक्कर, द वालु, असख पक, असख घूम, अमख तम, असख सप्तमी
- ४२ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, असल पक, असल धूम, असल तम, असल सप्तमी
- ४३ १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४४. १ रत्न, १ सक्कर, सख वालु, असख पक, असख घूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४५. १ रत्न, १ सक्कर, असख वालु, असख पक, अमख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४६. १ रत्न, २ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख घूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४७ १ रत्न, ३ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४८ १ रत्न, ४ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४६ १ रत्न, ५ सक्कर, असल वालु, असल पक, असल धूम, असल तम, असल सप्तमी
- ५० १ रत्न ६ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ५१ १ रत्न, ७ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ५२ १ रत्न, = मक्कर, असख वालु, असख पंक, असख धूम, असख तम, असख सप्तर्म
- ५३. १ रत्न, ६ सनकर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ५४ १ रत्न, १० स≢कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४५. १ रत्न, सख सक्कर, असख वालु, असख पक्त, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी

- ५६ १ रत्न, असख सक्कर, अमख वालु, असख पक, अमंख घूम, असंख तम, अमंख मध्तर्म
- ५७ २ रत्न, असप नक्कर, असप वाल्, असंख पक, असप धूम, असख तम, असप सप्तमी
- ५८. ३ रत्न, अमख मक्कर, अमख वालु, अमख पक, असख धूम, अमख तम, असख सप्तमी
- ५६. ४ रत्न, अमख मयकर, अमय वालु, अमख पक्र, अमख धूम, अमख तम, अमय मप्नमी
- ६०. ५ रत्न, असय सक्कर, असय वालु, असख पक, असय वूम, असख तम, असय सन्तमी
- ६१ ६ रत्न, असख मक्कर, अमख वालु, असय पक, अमख यूम, असय तम, अमय मध्यमी
- ६० ७ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक, असख वृम, असख तम, असख सप्तर्मा
- ६३ = रत्न, अमख मक्कर, असय वालु, अमय पक्क, असय यूम, अमख तम, अमय मध्तमी
- ६४ ६ रत्न, असय मनकर, अमय वालु, असख पक, असय घूम, असय तम, अमय सप्तमी
- ६५ १० रत्न, असख मनकर, असख वालु, असख पक, असख वूम, असल तम, असख मध्नमी
- ६६ सप रत्न, अमख सक्तर, अमख वालु, अमख पक, अमख बूम, अमख तम, असख मध्तमी
- ६७ असल रत्न, असल मक्कर, अमल वालु, अमल पक, असल वूम, अमल तम, असल सप्तमी

एव असल्याता जीवा रा सप्त सजोगिक विकल्प ६७ भागा ६७ कह्या।

## दूहा

- १४ हिवै प्रकारातर वली, नरक-प्रवेसन न्हाल। प्रश्न करै गोय मुनि, आखै वीर दयाल।।
- १५. \*उत्कर्प हे प्रभु । नेरइया, उत्कृष्ट पद करिनै उपजेह कै। तास प्रवन कीथे छते, श्री जिन भाखें मुण गगेय कै।।
- १६ सर्व प्रथम हुवै रत्न मे, इक सजीगे इक भग एह के। जे उत्कृष्ट पदे करी, ते सहु रत्नप्रभा उपजेह कै।।

## सोरठा

- १७. रत्ने जावणहार, जीव बहु छै ते भणी। अथवा रत्न मझार, नारिक पिण बहुला अछै॥
- १८ इकसयोगिक एक, भागो इहिवच आखियो। द्विवसजोगिक पेख, पट भगा कहियै हिवै।। हिवै द्विक नयोगिक ६ भागा कहै ईं—
- १६. तथा रत्न विल सक्कर में,' अथवा रत्न वालु में होय की । तथा रत्न विल पक में, अथवा रत्न धूम विल जोय की ॥
- \*लय: हू बिनहारी हो जादवा !

- १४. अय प्रकारान्तरेण नारकप्रवेशनकमेवाह— (वृ० प० ४४६)
- १५,१६. उनकोसेण भते ि नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविममाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा। गगेया ! सब्वे वि ताव रयणप्पभाए होज्जा, 'उनकोसेण' मित्यादि, …… उत्कृष्टपदिनस्ते सर्वेऽपि रत्नप्रभाया भवेयु. (वृ० प० ४५०)
- १७. तद्गामिना तत्स्यानाना च वहुत्वात्, (वृ० प० ४५१)
- १८ इह प्रक्रमे द्विकयोगे पट् भङ्गका (वृ० प० ४५१)
- १६,२० अहवा रयणप्पमाए य सक्करप्पमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पमाए य वालुयप्पमाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा,

२०. तथा रत्न विल तम विषे, तथा रत्न सप्तमी माहि कै । उत्कृष्ट पद दिकयोगिका, ए पट भांगा दाख्या ताहि कै ।।

बा०—हिनै उत्कृष्ट पदे नरक मे उपजै तेहना त्रिकसयोगिक १५ भागा कहै छै—रत्न सक्कर थी ५, रत्न वालु थी ४, रत्न पक थी ३, रत्न धूम थी २ रत्न तम थी १—एन १५ भागा रत्न थकीज हुनै। उत्कृष्ट पदे नरक मे कपजै तेह, नरक नै निषे ऊपजै तिवारे रत्नप्रभा मे तो ऊपजेईज, और नरक मे कोइ मे ऊपजै कोइ मे नही पिण ऊपजै, ते भणी रत्नप्रभा सू ईज १५ हुनै। तिहा प्रथम रत्न सक्कर सू ५ भागा कहै छै—

२१ तथा रत्न सक्कर वालु विषे', अथवा रत्न सक्कर पक होय कैं। अथवा रत्न सक्कर धूम में, अथवा रत्न सक्कर तम जोय कैं।। २२ तथा रत्न सक्कर ने सप्तमीं, रत्न सक्कर थी ए भंग पंच कें। हिवें रत्न अने वालुक थकी, किहये चिछ भागा नो सच कें।। २३. अथवा रत्न वालु पक मे, अथवा रत्न वालु धूम माय कें। अथवा रत्न वालु तम विषे, अथवा रत्न वालु सप्तमी पाय कें।

२४. अथवा रत्न पक धूम मे, अथवा रत्न पक तम चीन कै। अथवा रत्न पंक सप्तमी, रत्न पक थी ए भग तीन कै।। २५. अथवा रत्न धूम तम विषे, तथा रत्न धूम ने सप्तमी होय कै। रत्न ने धूमप्रभा थकी, एह कह्या छै भागा दोय कै।। २६ अथवा रत्न तम सप्तमी, ए रत्न थकी भग पनरै जाण कै। उत्कृष्ट नरके अपजै, निश्चै रत्न मे उपजै आण कै।।

वा०—हिनै उत्कृष्ट पदे नरक मे उपजै तेहना चड़क सयोगिक २० भागा कहै छै—ितके २० भागा रत्न सू ईज हुनै, रत्न मे तो अन्य उपजेंडज। तिणमे रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ६, रत्न पक यकी ३, रत्न धूम थी १—एव २०। तिहा रत्न सक्कर थी १० ते किसा १ रत्न सक्कर वालुक थी ४, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थी १—एव रत्न सक्कर थी १०, ते कहै छै—

२७ तथा रत्न सक्कर वालु पक मे,

तथा रत्न सक्कर वालु धूमे जत कै। तथा रत्न सक्कर वालु नम विषे,

तथा रत्न सक्कर वालु सप्तमी हुत कै।।

२८. तथा रत्न सक्कर पंक धूम मे,

तथा रत्न सक्कर पक तम लीन कै। तथा रत्न सक्कर पंक सप्तमी,

ए रत्न सक्कर ने पक थी तीन कै।। २६ तथा रत्न सक्कर धूम तम विषे,

तथा रत्न सक्कर धूम सप्तमी होय कै। रत्न सक्कर ने धूम थी, आख्या छै ए भगा दोय कै॥

३०. तथा रत्न सक्कर तम सप्तमी, ए रत्न सक्कर थी दश भग देख कै। हिवै रत्न अने वालुक थकी, भागा पट कहियै सुविशेख कै।। वा०-- त्रिकयोगे पञ्चदश (वृ० प० ४५१)

- २१,२२ अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्प-भाए य होज्जा, एव जाव अहवा रयणप्पभाए य मक्करप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा,
- २३ अहवा रयणणभाए वालुयप्पभाए पकप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए अहेस-त्तमाए य होज्जा,
- २४-२६ अहवा रयणप्पभाए पकप्पभाए घूमाए होज्जा, एव रयणप्पभ अमुयतेमु जहा तिण्ह तियासजोगो भणिओ तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा।

बा०-चतुष्कसयोगे विशति (वृ० प० ४५१)

- २७ अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पर्मप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्प-भाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा,
- २८-३६ अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पक्षप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा एव रयणप्पभ अमुयतेसु जहा चउण्ह चउक्कगसजोगो भणितो तहा भाणियव्य जाव अहवा रयणप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा।

वा॰—हिवै रत्न वालु थी पट भांगा ते किसा ? रत्न वालु पंक थी ३, रत्न वालु घूम थी २, रत्न वालु तम थी १। तिहा प्रथम रत्न वालुक पक थी ३ भागा कहे छै—

३१. तथा रत्न वालु पंक धूम में,

तथा रत्न वालु पंक तम मे चीन कै। तथा रत्नवालु पक सप्तमीं, ए रत्न वालुक नै पक थी तीन कै॥ ३२ तथा रत्न वालु घूम तम विषे,

तथा रत्न वालु धूम सप्तमी होय कै।
रत्न वालुक ने धूम थी, भांगा एह कह्या छै दोय कै।।
३३. तथा रत्न वालुक तम सप्तमी, रत्न वालुक थी पट भग एह कै।
रत्न अने विल पंक थी, तीन भांगा कहिये छै जेह कै।।

बाo — हिवै रतन पक थी ३ भागा ते किसा ? रतन पक घूम थी २, रतन पक तम थी — १ एव ३।

३४ तथा रत्न पक धूम तम विषे,

तथा रत्न पक घूम सप्तमी होय कै।
रत्न पक नै धूम थी, भागा एह कह्या छै दोय कै।।
३५. तथा रत्न पंक तम सप्तमी, रत्न पक थी त्रिण भग एह कै।
रत्न धूम थी भग डक, सांभलज्यो हिव कहियै जेह कै।।
३६. तथा रत्न घूम तम सप्तमी, रत्नप्रभा थी ए भग वीस कै।
दाख्या चलक्कसयोगिका, जत्कुप्ट नरक प्रवेशन दीस कै।।

बाo—हिंवै उत्कृष्ट पदे नरक मे ऊपर्ज तेहना पचसयोगिक १५ मागा रतन थी हुवै, ते कहे छै —रतन मक्कर थी १०, रतन वालुक थी ४, रतन पक थी १—एव १५। तिहा रतन मक्कर थी १० ते किसा? रतन मक्कर वालु थी ६, रतन मक्कर पक थी ३, रतन मक्कर घूम थी १—एव १०। तिहा रतन सक्कर वालु थी ६ ते किमा? रतन मक्कर वालु पक थी ३, रतन मक्कर वालु धूम थी २, रतन मक्कर वालु तम थी १—एव ६। तिहा रतन मक्कर वालु पक थी ३ भागा प्रथम कहे छै—

३७. \*तथा रत्न सक्कर वालु पके, धूम मांहि पहिछाणियै । तथा रत्न सक्कर वालु पंके, तमा छठी जाणियै ।।

३८. तथा रत्न सक्कर वालु पके, सप्तमीज लहीजियैं।
रत्न सक्कर वालु पक थी, भग तिण इम कीजियै।।
३६. तथा रत्न सक्कर वालु धूमा, तमा थी सुविणेषियें।
तथा रत्न सक्कर वालु धूमा, सप्तमी थी लेग्वियैं।।
४०. तथा रत्न सक्कर वालुका तम, सप्तमी नारक लही।
रत्न सक्कर वालुका थी, एह पट भगा सही।।
वा०—दिवै रत्न सक्कर पक थी ३ भागा ते किमा ? रत्न सक्कर पक धूम थी २ अने रत्न सक्कर पक तम थी १—एव ३।

४१. तथा रत्न सक्कर पंक धूमा, तम विषे अवधारियै। तथा रत्न सक्कर पक धूमा, सप्तमी सुविचारियै॥ वा०--पञ्च हमयोगे पञ्चदश (वृ० प० ४५१)

- ३७ अहवा रयणप्पभाए मक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पकप्पभाए तमाए य होज्जा,
- ३८. अहवा रयणप्पभाए जाव पक्षणभाए अहेसत्तमाए य होज्जा,
- ३६-४७. अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, एव रयणप्पभ अमुयतेसु जहा पचण्ड पचगसंजोगो तहा भाणियव्य जाव
  अहवा रयणप्पभाए पकप्पभाए जाव अहेमत्तमाए य
  होज्जा,

<sup>\*</sup> लव : पूज मोटा मांजी तोटा

४२. तथा रत्न सक्कर पंक ने तम, सप्तमी में आखिय। रत्न सक्कर पंक थी ए तीन भागा दाखिय। ४३. तथा रत्न सक्कर धूम ने तम, सप्तमी नारिक मझै। रत्न सक्कर थकी ए दश भग एम विचारजै।।

बाo—हिवै रत्न वालु थी ४ भागा ते किसा ? रत्न वालु पंक थी ३, रत्न वालु घूम थी १—एव ४। तिहा रत्न वालु पक थी ३, ते किमा ? रत्न वालु पक घूम थी २, रत्न वालु पक तम थी १ एव ३।

४४. तथा रत्न वालु पक धूमा, तमा पृथ्वी मे हुवै। तथा रत्न वालु पक धूमा, सप्तमी मे अनुभवै॥ ४५ तथा रत्न वालु पक ने तम, सप्तमी मे जाणियै।

रत्न वालु पंक थी इस, तीन भागा आणिये।। ४६. तथा रत्न वालु धूम ने तम, सप्तमी पृथ्वी मही।

रत्न वालु थंकी भांगा, च्यार ए आख्या सही।।
४७ तथा रत्न पंके धूम तमा, सप्तमी दुख अनुभवै।
रत्न सू इज भंग पनर ए, पच सयोगिक हुवै।।
हिवै उत्कृष्ट पदे नरक मे ऊपजै तहना पट सयोगिक ६ भागा कहै छै—

४८ तथा रत्न सक्कर वालुका पक, धूम नै तमा मझैं। तथा रत्न सक्कर वालुका पक, धूम ने सप्तमी सझैं।।

४६ तथा रत्न सक्कर वालुका पक, तम सप्तमी अनुभवैं। तथा रत्न सक्कर वालुका नै, धूम तम सप्तमी हुवैं।।

५० तथा रत्न सक्कर पक धूम तम, सप्तमी मे ऊपजैं। तथा रत्न वालु पक धूम तम, सप्तमी माहै लजें।।

५१. भग षट ए रत्न सू इज, षट-सयोगिक जाणियै। उत्कृष्ट पद ते भणी सप्तम भग रत्न विण नाणियै॥ हिवै उत्कृष्ट पदे नरक नै विषे ऊपजै तेहनो मप्त सयोगिक १ भागो कहै

प्र२. तथा रत्न सक्कर वालुका पक, धूम तम सप्तमी लहै। सप्तयोगिक भग इक ए, वीर जिनवर इम कहै।।

४३ हिव रत्नप्रभादिक विषेइज, नारकी नो जाणियै । अल्पबहुत्वादिक निरूपण अर्थ प्रश्न वखाणियै ।।

पू४. \*ए प्रभु ! रत्नप्रभा पृथ्वी, नरक प्रवेशन नो कहेश कै। सक्कर जाव इम सप्तमी, कुण-कुण अल्प वहु तुल्य विशेष कै।।

५५. जिन कहै गगेया । सुणे, सर्व ते थोडा प्रवेश करत कै। नरक सप्तमी नेरइया, शेष अपेक्षा तिहा अल्प जंत कै।। पड्योगे पट्

(वृ० प० ४५१)

४८ अहवा रयणप्पभाए मक्करप्पभाए जाव धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव धूमप्प-भाए अहेसत्तमाए य होज्जा।

४६ अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव पकप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाएधूमणभाए तमाए अहेसत्त-माए य होज्जा,

५० अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पक्ष्पभाए जाव अहेनत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्प-भाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा,

सप्तकयोगे त्वेक इति । (वृ० प० ४५१)

५२ अहवा रयणप्पभाए य सक्करभाए य जाव अहेमत्त-माए य होज्जा। (श० ६।१००)

५३. अय रत्नप्रभादिष्वेव नारकप्रवेशनकस्याल्पत्वादिनि-रूपणायाह— (वृ० प० ४५१)

पू४ एयस्स ण भते । रयणप्पभापुद्धाविनेरइयपवेमणगम्म सक्करप्पभापुद्धविनेरइयपवेमणगस्स जाव अहेसत्तमापुद्ध-विनेरइयपवेसणगस्स कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

४५ गगेया । सन्वत्योवे अहेसत्तमापुर्विवनेरडयपवेमणए, तद्गामिना शेपापेक्षया स्तोकत्वात्, (वृ० प० ४५१)

<sup>\*</sup>हूं बलिहारी हो जादवां!

५६. असंख्यात गुणा छठी विषे, जावणहार तिहां असंखेज कै। जावत रत्नप्रभा विषे, असख्यात गुणां प्रतिलोम' कहेज कै।। ५७ शत नवम वतीसम देश ए, एकसी नै नेउमी ढाल कै। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी,

'जय-जश' संपति हरप विशाल कै।।

५६. तमापुढिविनेरइयपवेसणए असंगेज्जगुणे, एवं पिंडली-मग जाव रयणप्यभापुढिव नेरइयपवेसणए असंक्षेज्ज-गुणे। (श० ६।१०१)

#### ढाल: १६१

#### दूहा

- १. तिर्यच प्रवेशन हे प्रभु । कितै प्रकार कथिदि ? जिन कहै पच प्रकार ह्वै, एगिदि जाव पचिदि ॥
- २. एक जीव तियँच मे, करैं प्रवेणन ताहि।  $\epsilon u$  एकेंद्री में हुवै, जाव पचेद्री माहि?
- ३. जिन कहै गगेया! सुणे, एकेद्री में होय। जाव तथा पंचेंद्रि मे, ऊपजवो अवलोय।।
- ४ इहां कह्यो एकेद्रि इक, जीव ऊपजै देख। ते देवादिक थी हुवै, तेह अपेक्षा एक।।
- ५ वीजूं एकेंद्रिय विषे, समय-समय अवलोग । जीव अनंता ऊपजै, सजातिया थी जोय ॥
- ६. सजातीया थी नीकली, सजातीया में सोय। उपजैतेह तणो इहां, प्रश्न करचो नहिं कोय।।
- ७ विजातीया थी नीकली, विजातीया मे होय। तेह प्रवेशन छैज तसु, प्रश्न कियो है सोय॥
- प्त जीव ना आखिया, एकेद्रियादिक जाण। पच स्थान तिण कारणे, पच भंग पहिछाण।। एक जीव तिर्यंच में ठ०पजै ते इकसंजीगिया नो विकल्प १ भागा ५—
- १ एक जीव एकेंद्रि मे ऊपजै
- २. नथा वेंद्रिय में ऊपजै
- ३. तथा तेंद्रिय मे कपजै
- ४. तथा चडरिंद्रिय में ऊपजै
- ५ तथा पर्चेद्रिय में रूपजै
- १. प्रतिलोम किहता—उलटा करता छठी थी पाचमी ना असस्यातगुणा। तेहथी चोथी नां असस्यातगुणा। तेहथी तीजी ना असस्यातगुणा। तेहथी बीजी ना असस्यातगुणा। तेहथी रत्नप्रभा पृथ्वी ना नारक जीव नरक ने विषे असस्यात-गुणा ऊपजै।

- १ तिरिक्सजोणियपवेसणए ण भते । कितिबिहे पण्णत्ते ? गेया ! पचिविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिदियति-रिक्खजोणियपवेसणए जाव पिचिदियितिरिक्खजोणियपवेसणए । (श० ६।१०२)
- २. एगे भते । तिरिक्यजोणिए तिरिक्खजोणियपवेमण-एण पविममाणे कि एगिदिएसु होज्जा जाव पिविदि-एसु होज्जा ?
- ३ गगेया । एगिदिएसु वा होज्जा जाव पिनिदिएसु वा होज्जा । (श० ६।१०३)
- ४-७ तत्र च यद्यप्येकेन्द्रियप्वेक. कदाचिदप्युत्पद्यमानो न लभ्यतेऽनन्तानामेव तत्र प्रतिममयमुत्पत्तेस्तथाऽपि देवादिभ्य उद्वृत्य यस्तत्रोत्पद्यते तदपेक्षयैकोऽपि लभ्यते, एतदेव च प्रवेशनकमुच्यते यद् विजातीयेभ्य आगत्य विजातीयेषु प्रविशति मजातीयस्तु सजातीयेषु प्रविष्ट एयेति किं तत्र प्रवेशनकमिति,

(बृ० प० ४४१)

तत्र चैकस्य क्रमेणैकेन्द्रियादिष् पञ्चसु पदेपूत्सादे
 पञ्च विकल्पा, (वृ० प० ४५१)

२१० भगवती जोह

हिवै दोय जीव तियँच से ऊपजै ते प्रश्न करै छै-

- ह. दोय जीव तिर्यच मे, उपजै तेहनो जाण।प्रश्न करै गगेय मुनि, भाखै तव जगभाण।
- १०. इकसयोगिक तेहनो, विकल्प एक विचार। भागा तेहना पच है, इहविध करिवा सार।
- ११ विहु एकेद्रिय ने विपे, तथा बेद्री माय। तथा तेद्री मे विहु, जीव ऊपजै आय।।
- १२ तथा चर्जिरद्री मे बिहु, तथा पचेद्री माय। इकसयोगिक इह विधे, पच भग कहिवाय।। दो जीव तिर्यंच मे ऊपजै ते इकसजोगिया नो विकल्प १ भागा ४—
- १-५ दो जीव एकेंद्री मे ऊपजै जाव पचेंद्री मे ऊपजै।
- १३. तथा एक एकेद्रिय, एक वेंद्रिय होय। नरक प्रवेशन जेम ए, तिरिक्ख-प्रवेशन जोय।।
- १४. तिहा सात पृथ्वी विषे, इहां पच है स्थान। जाव असख्याता लगै, कहिवो सर्व पिछान।।
- १५. भग हुवै नानापणै, तत्त्व अभियुक्तेन। पूर्वं उक्त न्याये करी, करिवा बुद्धि न्यायेन।।
- १६ द्विकसयोगिक एहनां, विकल्प तेहनो एक। दश भागा भणिवा तसु, तसु विधि एम सपेख।। 'सुण गगेया रे! भाखै जिन गुणगेहा।। [ध्रुपद]
- १७. अथवा एक एकेद्री माहे, एक वेद्रिय होय। अथवा एक एकेद्री में ऊपजै, एक तेद्री में जोय॥
- १ द. अथवा एक एकेद्रिय माहे, एक चर्जिरद्रिय माय। अथवा एक एकेद्रिय माहे, एक पंचेद्रिय थाय।।
- १६. अथवा एक वेइद्री मे ऊपजै, एक तेइद्रि मे होय। अथवा एक वेइद्री मे ऊपजै, एक चउरिद्रि मे जोय।।
- २०. अथवा एक वेइद्री मे ऊपजै, एक पचेद्रिय थाय। वे इद्रिय थी ए त्रिण भगा, भणवा जिन वच न्याय।।
- २१. अथवा एक तेद्रिय मे ऊपजै, एक चर्डिरद्री हुत। अथवा एक तेद्रिय मे ऊपजै, एक पंचेद्री जत।।
- २२. अथवा एक चर्डिरद्री मे ऊपजै, एक पचेंद्रिय थाय । द्विकसयोगिक ए दश भगा, तत्व युक्ति करि थाय ।।

हिवं तीन जीव तियँच में ऊपजे तेहना इकसयोगिक भागा ५--

- १-५ तीन जीव एकेंद्री में ऊपजैं जाव तथा पचेद्री में ऊपजैं।
  दिक सजोगिक विकल्प २ भागा २०, ते दोय विकल्प करि कहै छै---
  - ाह्रक संजापिक विकल्प र भागा रण, त दाय विकल्प कार क
- १. एक जीव एकेंद्री में कपजै दोय जीव वेइद्रिय में कपजै
- २ दोय जीव एकेंद्री मे उपजै एक जीव वेइद्रिय मे ऊपजै

- ६ दो भते । तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसण-एण--पुच्छा ।
- १० द्वयोरप्येकैकस्मिन्नुत्रादे पञ्चैव, (वृ० प० ४५१)
- ११,१२. गगेया । एगिदिएसु वा होज्जा जाव पिचिदिएसु वा होज्जा ।
- १३ अहवा एगे एगिदिएसु होज्जा एगे वेइदिएसु होज्जा, एव जहा नेरइयपवेसणए तहा तिरिक्खजोणियपवे-सणए वि भाणियव्वे।
- १४ पर तत्र सप्तसु पृथ्वीष्वेकादयो नारका उत्पादिता तिर्यञ्चस्तु तथैव पञ्चसु स्थानेष्ट्पादनीयां,

(वृ० प० ४५१) जाव असखेज्जा। (श० ६।१०४)

- १५ ततो विकल्पनानात्व भवति, तच्चाभियुक्तेन पूर्वोक्त-न्यायेन स्वयमवगन्तव्यमिति, (वृ० प० ४५१)
- १६ द्विकयोगे तु दश, (वृ० प० ४५१)

<sup>&</sup>quot;लय: रूडे चन्द नीहालं रे

ए वे विकल्प करि पूर्वे १० भागा कह्या, ते की घे छते २० मांगा हुवै। हिवै तीन जीव ना त्रिकमजोगिक नो विकल्प १ भागा १०-

१ १ एकेंद्री १ वेंद्रि १ तेंद्रिय मे

२. १ एकेंद्री १ वेद्रि १ चर्डारद्रिय

३. १ एकेंद्री १ वेंद्रि १ पचेंद्रिय मे

४. १ एकॅद्री १ तेंद्रि १ चर्डीरद्रि मे

५. १ एकेंद्री १ तेद्रि १ पचेंद्री मे

६ १ एकेंद्री १ चउरिटी १ पर्चेद्री मे

७ १ वेंद्रि १ तेद्रि १ चउरिद्री मे

८ १ वेदि १ तेदि १ पचेदी मे

६ १ वेंद्रि १ चउरिद्रिय १ पचेद्री मे

१० १ तेद्रि १ चउरिद्री १ पंचेंद्री मे ।

हिवै च्यार जीव तिर्यच मे जाय तेहना इकमयोगिक विकरा १ भागा ५ पूर्व कह्या निम करिवा।

चडवजमजोगिक नो विजरप १ भागा ४, ते कहै छै-

१ १ एकेंद्री, १ वेंद्रि, १ तेंद्रि, १ चर्डारद्रि

२ १ एजेंद्री, १ वेद्रि, १ सेंद्रि, १ पचेंद्री

३ १ एकेंद्री, १ वेंद्रि, १ चलिंद्रि, १ पचेंद्री

४ १ एकेंद्री, १ तेंद्रि, १ चर्डारहि, १ पचेंद्री

५ १ वेंद्री, १ तेद्रि, १ च उरिद्रि, १ पचेंद्री

हिवै पाच जीव एकेंद्रिय में ऊपजे तेहना इकमयोगिक विकल्प १ भागा ५ द्विकमयोगिक ना विकल्प ४ भागा ४० त्रिकनयोगिक ना विकल्प ६ भागा ६०

चउवजमयोगिक ना विकल्प ४ भागा ३०

पचमयोगिक नो विकत्प १ भांगी १

इम छ जीव प्रमुख असल्याता जीव नां पूर्वे कह्या तिण रीते विकल्प करि जेतला भागा हुवै तेतला भणिवा।

तीन जीव ना द्विक सयोगिक विकल्प २-१२,२१

च्यार जीव ना द्विक सयोगिक विकल्प ३ -- १३,२२,३१ त्रिक मयोगिक विकल्प ३--११२,१२१,२११

पच जीव ना द्विक सयोगिक विकल्प ४---१४,२३,३२,४१

त्रिक मयोगिक विकल्प ६--११३,१२२,२१२,१३१,२२१,३११ चउक्क सयोगिक विकल्प ४---१११२,११२१,१२११,२१११

२३. तीन आदि जीवा ना भागा, जाव असंखिज्ज जीवा। ते प्रवेशन नो नारिक जिम, नाना भंग कहीवा।।

२४ उत्कृष्ट पदे तियँच मे उपजै, तेह प्रश्न हिव कीध्। जिन कहै सर्व एकेंद्रि मे उपजै, इक्योगिक ए लीघू।।

## सोरठा

२५ एकेद्रिय वहु जाण, समय समय उत्पत्ति थकी। उत्कृष्ट पदे पहिछाण, सहु एकेद्री मे हुवै॥

वत्य : रुड़े चन्द नीहाल रे

गगेया । सन्वे वि ताव एगिदिएसु होज्जा, एकेन्द्रियाणामतिवहूनामनुममयमुत्पादात् (वृ० प० ४५१)

२४. उक्कोसा भते । तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिय-

पवेसणएण--पुच्छा ।

२१२ भगवती-जोड

- २६. <sup>1</sup> अथवा एकेद्री में ऊपजै, विल वेइद्री में होय। इम जिम नरक विषे गिणिया, तिम तिर्यंच मे पिण जोय।।
- २७ एकेद्रिय ने अणमूकते, द्विक त्रिक चउनक सयोग। पच सयोगिक भागा गिणवा, वारू दे उपयोग।।

#### सोरठा

२८ द्विकयोगिक चिउ धार, त्रिकसयोगिक भग षट। चउक्कसयोगिक च्यार, पचसयोगिक भग इक।।

उन्कृष्ट पदे तियँच मे ऊपजै तेहना द्विक, त्रिक, चउक्क, पचयोगिक कहै

- छै -द्विकसयोगिक ४ भागा कहै छै-
- १ अथवा एकेद्रिय मे ऊपजै वेइद्रिय मे ऊपजै
- २ अथवा एकेंद्रिय में ऊपजै तेइद्रिय में ऊपजै
- ३ अथवा एकेंद्रिय मे ऊपजै चउरिद्रिय मे ऊपजै।
- ४ अथवा एकेद्रिय मे ऊपजै पचेंद्रिय मे ऊपजै।

त्रिकसयोगिक ६ भागा कहै छै-

- १ अथवा एकेंद्री मे वेइद्रिय मे तेइद्रिय मे ऊपजै।
- २ अथवा एकेंद्रिय में वेइद्रिय में चर्डोरिद्रिय में ऊपजै।
- ३ अथवा एकेद्रिय मे वेइद्रिय मे पचेद्रिय मे ऊपजै।
- ४ अथवा एकेंद्रिय में तेइद्रिय में चर्जिंद्रिय में ऊपजै।
- प्र अथवा एकेद्रिय में तेइद्रिय में पचेद्रिय में ऊपजै।
- ६ अथवा एकेद्रिय मे चउरिंद्रिय मे पचेद्रिय मे ऊपजै।

हिवै चउक्कसयोगिक ४ भागा कहै छै-

- १ तथा एकेंद्रिय मे वेइद्रिय मे तेइद्रिय मे चर्डारद्रिय मे ।
- २ तथा एकेद्रिय में वेइद्रिय में तेइद्रिय में पचेद्रिय में ।
- ३. तथा एकेद्रिय मे वेइद्रिय मे चर्डारद्रिय मे पचेंद्रिय मे।
- ४. तथा एकेद्रिय मे तेइद्रिय मे चउरिंद्रिय मे पचेद्रिय मे।

हिवै पचसयोगिक १ भागो कहै छै-

१. तथा एकेद्रिय मे, वेइद्रिय मे, तेइद्रिय मे, चर्डारद्रिय मे, पचेंद्रिय मे ऊपजे।

इकसयोगिक-१

द्विकसयोगिक-४

त्रिकसयोगिक-६

चउक्कसयोगिक-४

पचसयोगिक-१

एव---१६

हिवै एकेद्रियादिक प्रवेशन नो अल्प-बहुत्व-तुल्य-विशेपाधिकपणा नु प्रवेशन कहै छै—

२६ \*हे प्रभु । एकेद्रिय प्रवेशन, जाव पचेद्री तिर्यच। तेह प्रवेशन नो कुण कुण थी, जाव विशेष सूसच?

3

\*लय: रुड़े चन्द नीहाल रे

- २६ अहवा एगिदिएसु वा वेइदिएसु वा होज्जा। एव जहा नेरइया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयव्वा।
- २५ इह प्रक्रमे द्विकसयोगश्चतुर्द्धा त्रिकसयोग पोढा चतुष्कसयोगश्चतुर्द्धा पञ्चकसयोगस्त्वेक एवेति । (वृ० प० ४५१)

२६ एयस्म ण भते । एगिदियतिरिक्खजोणियपवेमणगस्स जाव पचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? ३० श्री जिन भाखें सर्व थी थोड़ा, पंचेद्रिय तियँच। तेह विषेज प्रवेशन उत्पत्ति, तास न्याय इम सच।।

सोरठा

- ३१. जीव पचेद्रिय जाण, थोडा छै ते कारणे। अल्प कह्या जगभाण, पचेद्रिय तिर्यच ए॥
- ३२. \*चर्डारद्रिय तिर्यच प्रवेशन, विशेष अधिक विचारी। तिरि पचेद्रिय थी चर्डारद्रिय, विशेषाधिक उचारी।।

## सोरठा

- ३३. तिरि-पचेद्रिय थीज, चर्डारेद्रिय विसेसाहिया। ते माटैज कहीज, प्रवेशन पिण विशेपाधिक॥
- -३४. \*तेइद्रिय तियँच प्रवेशन, विशेप अधिक कहेस। वेइद्रिय विशेपाधिक तेह्यी, विशेप एकेद्री प्रवेश।।
- ३५. मनुष्य प्रवेशन कतिविध हे प्रभु ! जिन कहै दोय प्रकार। समुच्छिम मनुष्य प्रवेशन, गर्भेज माहै विचार।।
- ३६. एक मनुष्य विषे हे प्रभुजी ! मनुष्य प्रवेशन करतो । संमुच्छिम सूं मनुष्य विषे ह्वं , के गर्भज सचरतो ?
- ३७ जिन कहैं समुचिछम मनुष्य विषे ह्वं, तथा गर्भेज मे होय। इक सयोगिक ए वे भागा, एक जीव नां जोय।। हिवं दोय जीव मनुष्य मे ऊपजें तेहनो प्रश्न
- ३८ दोय मनुष्य प्रवेशन पुच्छा, जिन कहैं सुण गगेय। वेहु समुच्छिम तथा गर्भज में, इक योगिक भग वेय।।
- ३६ अथवा एक समुच्छिम मनुष्ये, इक गर्भेज मे होय। इम अनुक्रम जिम नरक प्रवेशन, तेम मनुष्य पिण जोय।।
- ४० यावत दशही प्रवेशन भागा, पूर्वली पर भणवा। जीव थकी इक-इक ऊणा जे विकल्प करि भंग थुणवा।। मनुष्य मे ऊपजै तेहना द्विकसजीगिक ना विकल्प और भागा—दोय जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहनो विकल्प एक, भागो एक कहे छै—

१ १ समुच्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।

तीन जीव मनुष्य मे कपजै तेहना विकल्प २, भागा २

१. १ समुच्छिम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।

२ २ समुच्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।

च्यार जीव मनुष्य में ऊपजे तेह्ना विकल्प ३, भांगा ३

१ १ ममुच्छिम मनुष्य मे, ३ गर्भेज मनुष्य मे कपजै।

२. '२ समुच्छिम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।

\*लय : रूट्टे चन्द नीहाल रे

३०. गगेया ! सञ्वयोवे पचिदियतिरिक्यजोणियपवेमणए,

३१. 'सन्वथोवा पचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए' त्ति पञ्चेन्द्रियजीवाना स्तोकत्वादिति,

(वृ० प० ४५१,४५२)

३२. चर्डोरिदयतिरिक्खजोणियपवेमणए विसेसाहिए,

- ३४. तेइदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, वेइदिय-तिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, एगिदियतिरि-क्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए। (१० ६।१०६)
- ३४. मणुस्सपवेमणए ण भते । कतिविहे पण्णत्ते ? गगेया ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा — समुच्छिममणुस्स-पवेसणए, गञ्भवक्कतियमणुस्सपवेसणए य । (श० १।१०७)
- ३६. एगे भते । मणुस्से मणुस्मपवेसणएण विवसमाणे कि समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा ? गव्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा ?
- ३७. गगेया । समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गव्भवनक-तियमणुस्सेसु वा होज्जा । (श० ६।१०८)
- ३८ दो भते । मणुस्सा—पुच्छा । गगेया । संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गव्भवक्क-तियमणुस्सेसु वा होज्जा ।
- ३६. अहवा एगे समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा एगे गव्भ-वक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, एव एएण कमेण जहा नेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणए वि भाणियव्वे,

४० जाव दस । (ग० ६।१०६)

```
३ ३ सम्चिछम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपनै।
            पाच जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहना विकल्प ४, भागा ४
१. १ समुच्छिम मनुष्य मे, ४ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
२ २ समुन्छिम मनुष्य मे, ३ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
३. ३ समुच्छिम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य मे कपजै।
४. ४ समुन्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
             छ जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहना विकल्प ५, भागा ५
१ १ समुच्छिम मनुष्य मे, ५ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
२ २ समूर्विछम मनुष्य मे, ४ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
३ ३ समुच्छिम मनुष्य मे, ३ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
४ ४ सम्चिछम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य मे कपजै।
प्र. प्र समुच्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
            सात जीव मनुष्य में ऊपजै तेहना विकल्प ६, भागा ६
१. १ समुच्छिम मनुष्य मे, ६ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
२ २ समुच्छिम मनुष्य मे, ५ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
३ ३ समुच्छिम मनुष्य मे, ४ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
४ ४ समुच्छिम मनुष्य मे ३ गर्भेज मनुष्य मे कपजै।
५ ५ समुच्छिम मनुष्य मे २ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
६. ६ समुन्छिम मनुष्य मे १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
            अब्ट जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहना विकल्प ७, भागा ७
१ १ सम्बिछम मनुष्य मे, ७ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
२ २ समुच्छिम मनुष्य मे, ६ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
३. ३ समुच्छिम मनुष्य मे, ४ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
४ ४ समुच्छिम मनुष्य मे ४ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
५ ५ सम्बिछम मनुष्य मे, ३ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
६ ६ समुच्छिम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
७ ७ समुच्छिम मनुष्य मे, १ गर्भे न मनुष्य मे ऊपजै।
            नव जीव मनुष्य मे करजै तेहना विकला ८, भागा ८
१ १ समृच्छिम मनुष्य मे, न गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
२ २ सम्बिछम मनुष्य मे ७ गर्भेन मनुष्य मे कपनै।
३ ३ समुच्छिम मनुष्य मे ६ गर्भेज मनुष्य मे उपजै।
४ ४ सम्च्छिम मनुष्य मे ५ गर्भेज मनुष्य मे कपजै।
५. ५ समुच्छिम मनुष्य मे, ४ गर्भेज मनुष्य मे कपजै।
६. ६ सम्चिछम मनुष्य मे, ३ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
७ ७ समुच्छिम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य मे कपजै।
द द समुच्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
           दश जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहना विकल्य ६, भागा ६
१ १ समुन्छिम मनुष्य मे, ६ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
२. २ समुन्छिम मनुष्य में, 🗸 गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै ।
३ ३ समुच्छिम मनुष्य मे, ७ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
४. ४ समुच्छिम मनुष्य मे, ६ गर्नेन मनुष्य मे ऊपजै ।
```

५ ५ समुन्छिम मनुष्य मे, ५ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।

A. Tale

- ६. ६ समृष्टिकम मनुष्य में, ४ गर्मेज मनुष्य मे ऊपजै । ७ ७ संमुच्छिम मनुष्य मे, ३ गर्मेज मनुष्य मे ऊपजै ।
- इ. इ समुच्छिम मनुष्य भे, २ गर्भेज मनुष्य मे कपजै ।

<del>ਹ</del>ੈ—

६ ६ समुन्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै । हिन्नै सख्यात जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहना ११ विकल्प करि ११ भागा कर्ह

४१ सखेज मनुष्य प्रवेशन पूछा, जिन कहै मुण गगेय !
समुच्छिम अथवा गर्भज मे, इक योगिक भग वेय ।।
हिवै मत्यात जीवा रा द्विकसजोगिक १ भागो हुवै ते ११ विकल्प करि
११ भागा कहै है—

४२. अथवा एक समुच्छिम मनुष्ये, सख्याता गर्भेज। अथवा दोय समुच्छिम मनुष्ये, गर्भिज मे संयेज।।

४३ अथवा तीन समुच्छिम मनुष्ये, सच्याता गर्भेज। अथवा च्यार संमुच्छिम मनुष्ये, गर्भेज मे सखेज।।

४४. अथवा पाच समुच्छिम मनुष्ये, सख्याता गर्भेज। अथवा पट समुच्छिम मनुष्य ह्वे, गर्भिज में सखेज।।

४५ अथवा सप्त समुन्छिम मनुष्ये, संख्याता गर्भेज। अथवा अप्ट समुन्छिम मनुष्ये, गर्भेज में संयेज।।

४६ अथवा नव समुन्छिम मनुष्य ह्वै, सख्याता गर्भेज। अथवा दण संमुन्छिम मनुष्ये, गर्भेज में सखेज॥

४७ तथा संखेज समुच्छिम मनुष्ये, गर्भेज मे सखेज।। इम इग्यारे विकल्प करिने, भग इग्यार भणेज।।

वा॰ — इहा सन्यात जीव मनुष्य मे कपजै तेहना नारकी नी परै उग्यारै विकरप कह्या। अनै असन्यात पद नै विषे पूर्वे नारकी नै विषे वारै विकरप कह्या। अनै इहा मन्ष्य नै विषे असर्याता ऊपजै तेहना विन इग्यारे उँज विकरप हुवै। जे भणी जो समुच्छिम मनुष्य नै गर्भेज मनुष्य ए विहु नै विषे असन्याता कपजै, जिद वारमो विकरप हुवै ते उम नहीं जे समुच्छिम मनुष्य नै विषे असस्याता कपजै, पण इन् गर्भेज मनुष्य नो स्वकृप थकी पिण असन्याता नथी तो तेहने विषे असस्याता कपजै पिण नथी ते भणी असर्यात पद नै विषे उग्यारै विकरप देखादवा नै अर्थे कहं छैं —

४८. हे प्रभु । जीव असख मनुष्य मे, उपजै तेहनी पृच्छा। जिन कहै सर्व ममुच्छिम मनुष्ये, ए इकयोगिक इच्छा।। हिवै दिकमयोगिक ११ विकरत करि ११ भागा कहै छै—

४६ अथवा असख संमुच्छिम मनुष्ये, इक गर्भज मनु होय। अथवा असख समुच्छिम मनुष्ये, गर्भज मनु मे दोय।।

५० एव जाव असख समुच्छिम, मनुष्य विषे अवधार। गर्भज मनुष्य विषे सख्याता, ए विकल्प भंग ग्यार॥ असर्याता जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहना विकल्प ११, भागा ११

१ असन्याता समृच्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे अपजै। २ असंस्थाता समृच्छिम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य में अपजै। ४१ मनेज्जा भते । मणुम्सा--पुच्छा । गोया । समुच्छिममणुम्सेमु वा होज्जा, गटमवस्क-तियमणुम्सेमु वा होज्जा ।

४२ अहवा एगे समुच्छिममणुस्मेमु होज्जा सखेज्जा गव्म-वरकितयमणुस्मेमु होज्जा, अहवा हो समुच्छिममणु-स्मेमु होज्जा मखेजजा गव्मवरकितयमणुस्मेमु होज्जा,

४३-४७ एव एउकेरक उम्मारितेमु जाव अहवा मखेज्जा समुच्छितमणुस्मेमु होज्जा सखेज्जा गटमवरकतिय-मणुस्मेमु होज्जा। (ण० ६।११०)

'मखेज्जे' त्यादि, उह हिरयोगे पूर्ववदेकादय विरत्पा अमाप्यातपदे तु पूर्व द्वादय विकल्पा उक्ता इह पुनरेकादर्शव, यतो यदि ममूच्छिमेषु गर्भजेषु चामन्यातत्व स्यात्तदा द्वादयोऽपि विकल्पो भवेत्, त चैव, इह गर्भजमनुष्याणा स्वरूपतोऽप्यमस्यातानामभावेन तत्प्रवेधनकेऽसस्यातासम्भवाद्, अनोऽनमस्यात्पर्वेऽपि विकल्पेकाद्यमस्यात्मम्यात्पर्वेऽपि विकल्पेकाद्यमस्यात्मम्यात्मभवेद्यात्मस्यात्मम्यात्मभवेद्यात्मस्यानस्यात्मस्यानस्यात्मस्यात्यस्यात्मस्यात्मस्यात्मस्यात्मस्यात्मस्यात्यस्यस्यसस्या

(वृ० प० ४५३)

४८. असरीज्जा भते ! मणुस्मा — पुच्छा । गगेजा ! सब्वे वि ताव समृच्छिममणुस्मेमु होज्जा ।

४६ अहवा असनेज्जा समुच्छिमसणुस्मेमु एगे गव्मवक्क-तियमणुम्मेमु होज्जा, अहवा असनेज्जा समुच्छिम-मणुम्मेमु दो गव्मवक्कतियमणुस्मेमु होज्जा,

५० एव जाव असर्वेज्जा समृच्छिममणुस्मेमु होज्जा मधेज्जा गटभवरकतियमणुस्सेमु होज्जा।

(श० ६।१११)

- ३. असरयाता समुच्छिम मनुष्य मे, ३ गर्भेज मनुष्य मे ठपजै।
- ४ असक्याता समुच्छिम मनुष्य मे, ४ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै।
- ५. असम्याता समुच्छिम मनुष्य मे, ५ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै।
- ६. असर्याता समुच्छिम मनुष्य में, ६ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
- ७ असल्याता ममुच्छिम मनुष्य में, ७ गर्भेज मनुष्य में ऊपजे ।
- असम्याता समुच्छिम मनुष्य में, द गर्भेज मनुष्य में ऊपजै।
- ६ असल्याता समुच्छिम मनुष्य मे, ६ गर्भेज मनुष्य में ऊपजे ।
- १०. असल्याता ममुच्छिम मनुष्य मे, १० गर्भेज मनुष्य में ऊपजै।
- ११ असरपाता समुच्छिम मनुष्य में, सख्याता गर्मेज मनुष्य में ऊपजै । हिंदै उत्कृष्ट पदे मनुष्य में ऊपजै ते कहै छैं---
  - ५१. मनुष्य विषे उत्कृष्ट पदे प्रभु । ऊपजै तेहनी पृच्छा। जिन कहै सर्व समुच्छिम मनुष्ये, ए इक योगिक इच्छा।।

चा० — ममुच्छिम मनुष्य असम्याता हुवै प्रवेशन पिण असस्याता नो हुवै ते भणी मनुष्य प्रवेशन उत्कृष्ट पदे ते समुच्छिम मनुष्य नै विषे सर्व पिण हुवै । हिवै द्विकसयोगिक १ भागो कहै छै—

- ५२. अथवा समुन्छिम मनुष्य विषे ह्वं, गर्भेज मे पिण होय। द्विकसयोगिक ए इक भगो, श्री जिन वचने जोय।।
- ५३. प्रमु । समुन्छिम मनुष्य प्रवेशन, गर्मज मनुष्य प्रवेशन । कुण-कुण जोव विशेषाधिक छै, हिवै उत्तर दे श्री जिन ॥
- प्र सर्व थकी थोडा गंगेया! गर्भज मनुष्य प्रवेशन। समुच्छिम मनुष्य प्रवेशन, असखेज गुणा प्रापन्न।।
- ५५ नवम शतक नो देश वतीसम, ढाल सी एकाणू विमासी। भिक्षु भारोमाल ऋपिराय प्रसादे, 'जय-जश' आनद थासी।।

- ५१. उनकोमा भते । मणुम्मा—पुच्छा।
  गरेया । मन्दे वि ताव समुच्छिममणुम्मेमु होज्जा।
  वा०—मंमूच्छिमानामसर्यानामा भावेन प्रविदान मणसन्याताना सम्भवस्ततश्च मनुष्वप्रवेशनक प्रत्युत्कृष्टपदिनस्तेषु गर्वेऽपि भवति । (वृ० प० ४५३)
- ५२ अहवा समुच्छिममणुस्सेमु य गव्भवनकतियमणुम्सेमु य होज्जा। (ण० ६।११२)
- ५३. एयस्स ण भते । समुन्धिमगणुम्मपवेमणगम्म गद्भ-वक्कतियमणुस्मपवेमणगम्म य कवरे कवरेहिना अपा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विमेमाहिया वा ?
- ५४ ग्रोया । सन्वत्योवे ग्रह्मवन्त्रतिग्मणुम्मप्रवेमणण समुच्छिममणुम्सप्रवेमणए असरोज्जगुणे ।

(ग० ६।११३)

ढाल: १६२

## •दूहा

- १. देव प्रवेशन हे प्रभु । आख्यो कितै प्रकार ? जिन कहै गोया । सुणे, चिउविध कह्यो उदार ॥
- २. प्रथम भवनवासी कृत्यो, देव प्रवेशन देख। यावत वंगानीक तुर्य, अमर-प्रवेशन पेखा।
- ३. हे भदत । इक जीव ते, देव प्रवेश करत। स्यू हाँ भवनपति विषे, जाव वैमानिक हुत?
- ४. जिन गहै भवनपति विषे, अथवा व्यतर घार। जोतिषि वैमानिक तथा, इकसयोगिक च्यार॥

- १ देवपवेमणए ण भते ! फतिविहे पण्याने ? गगेथा ! चउच्चिहे पण्याते,
- २ त जहा भवणवान्तिवयवेमणए जान वेमाणियदेव-पवेमणए। (घ० ६१११४)
- ३ एगे भते । देवे देवत्येमणएण पित्रमाणे ति भवणः वासीसु होज्ञा ? वाणमतर-जोडीसप-येसाणिएसु होज्ञा ?
- ४. गरेवा । भत्रणवासीनु वा होण्या, वाणमार-तेष्ट-सिय-वेमाणिएमु वा होण्या । (१० ८।११४)

शंव ६, उ० ३२, वान १८१,१६२ २१

# \*प्रश्न करै गंगेय जी ॥ [ध्रुपदं]

- प्. जीव दोय भगवंत जी ! देव प्रवेशन करता जी काइ। स्यू हुवै भवनपति विषे, जाव वैमानिक वरता जी कांइ?
- ६. जिन कहै भवनपति विहु, अथवा व्यतर मझारो जी काइ। जोतिपी वैमानिक तथा, इक संयोगिक च्यारो जी काइ। [जिन कहै गगेया! सुणे]
- ७ अथवा एक भवनपति, इक व्यंतर मे होयो। तिरिक्ख प्रवेशन जिम कह्यो, तिम सुर भणवा जोयो॥
- द. जाव असंख्याता लगै, हिवै उत्कृष्ट पद पृच्छा। जिन कहै जोतिपि ह्वै सहु, ए इकयोगिक इच्छा।

चा० — जोतिपी नै विषे जाणहार घणां ते माटै उत्कृष्ट पद ना घणी देव प्रवेशनवत सगनाई हुवै।

- स्थवा जोतिपी ने विपे, भवनपति में होयो।स्थवा जोतिपी ने विपे, वाणव्यतर में जोयो॥
- १० अथवा जोतीपी नै विपे, वैमानिक मे जोयो। द्विकसजोगिक आखिया, ए त्रिहुं भागा ताह्यो।।
- ११. अथवा जोतिपी नै विषे, भवनपति मे होयो। वाणव्यतर मे ह्वं विल, ए धुर भांगो जोयो॥
- १२. अयवा जोतिपी ने विपे, भवनपति रै माह्यो। वैमानिक में ह्वें विल, द्वितीय भग कहिवायो॥
- १३. अथवा जोतिपी नै विषे, वाणमतर रै मांह्यो। वैमानिक में ह्वै वली, तृतीय भग एपायो॥
- १४. अयवा जोतियों नै विषे, भवनपति मे पेखो। व्यंतर वैमानिक विषे, चउनकसयोगिक एको।।
- १५ भवनपति व्यंतर प्रभु! जोतिपी देव प्रवेशो। विल प्रवेश वैमानिके, कुण-कुण जाव विशेषो ?
- १६. जिन कहै थोड़ा सर्व थी, वैमानिक सुप्रवेशो। भवनपति मे प्रवेश ते, असखेजगुण एसो।। १७ वाणमंतर में प्रवेशनं, असंख्यातगुण जाणी। जोतिपी देव-प्रवेशन, सख्यात-गुणा पहिछाणी।।

वाणमतर मे प्रवेशन, असंख्यात गुण जाणी । ज्योतियी देव प्रवेशनं, असंख्यात गुणा पहिछाणी ।।

यहां जोड़ की मूल प्रति तथा उसकी प्रतिनिषि वाली प्रतियो मे 'असख्यात गुणा' लिखा हुआ है । किन्तु अगसुत्ताणि भाग २, जो आगम-सम्पादन की ऋखला

- ५. दो भते । देवा देवपवेसणएण—पुच्छा ।
- इ. गगेया । भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमतर-जोड-सिय-वेमाणिएसु वा होज्जा ।
- ७. अहवा एगे भवणवामीमु एगे वाणमतरेमु होज्जा, एवं जहा तिरिक्खजोणियपवेसणए तहा देवपवेमणए वि भाणियव्वे ।
- जाव असक्षेज्ज ति । (श० ६।११६) जक्कोमा भते !—पुच्छा ।
  गगेया ! मक्वे वि ताव जोडिमएमु होज्जा,
  वा०—ज्योतिष्कगामिनो बहुव इति तेपूत्कृष्टपिंदनो
  देवप्रवेशनकवन्त मर्वेऽपि भवन्तीति (वृ० प० ४५३)
- सहवा जोड्सिय-भवणवामीमु य होज्जा, अहवा जोड्-सिय वाणमंतरेमु य होज्जा,
- १०. अहवा जोडिमय-वेमाणिएमु य होज्जा,
- श्रः अहवा जोडिमिएनु य भवणवामीसु य वाणमतरेनु य होज्जा,
- १२. अहवा जोडिमिएमु य भवणवामीमु य वेमाणिएमु य होज्जा,
- १३ अहवा जोइसिएमु य वाणमतरेमु य वेमाणिएसु य होज्जा,
- १४. अहवा जोडसिएमु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य वैमाणिएमु य होज्जा। (ग० १।११७)
- १५. एयस्म ण भते । भवणवािमदेवनवेमणगस्म, वाण-मतरदेवपवेमणगस्स, जोइिमयदेवपवेमणगस्स, वेमा-णियदेवपवेमणगस्स य कयरे कयरेिंहतो जाव (स॰ पा०) विमेमाहिया वा ?
- १६ गगेया । सञ्चत्योये वेमाणियदेवपवेमणए, भवण-वामिदेवपवेसणए अससेज्जगुणे,
- १७. वाणमतरदेवपवेमणए असक्षेजजगुणे, जोइसियदेवपवे-सणए सक्षेजजगुणे । (श० ६।११८)

<sup>\*</sup>लय: कुगल देश सुहामणी

भगवृती की जोड ढाल १६२ गाया १७ में व्यन्तर एवं ज्योतिषि देवों में जीव के प्रवेश का वर्णन करते हुए लिखा गया है—

#### सोरठा

१८. वैमानिक मे जान, जावणहारा अल्प छै। तथा अल्प ते स्थान, ते कारण थोड़ा कह्या।। हिवै च्यार गित मे प्रवेशन नो अल्पवहुत्व कहै छै—

दुहा

- १६. ए प्रभु । नरक-प्रवेशनं, तियँच मनुष्य प्रवेशो । देव-प्रवेशन ने विषे, कुण-कुण जाव विशेषो ?
- २०. जिन कहै थोड़ा सर्व थी, मनुष्य-प्रवेशनवतो। मनुष्य क्षेत्र में इजं हुवै, ते भणी अल्प कहतो।।
- २१. तेहथी नरक-प्रवेशन, असंखेजगुण आख्या। नरक गमन करै तिके, नर ते असखगुणा भाख्या॥
- २२ तेह्यी देव-प्रवेशन, असखेजगुण जाणी। तिरि-प्रवेशन तेह थी, असखगुणा पहिछाणी।।

#### सोरठा

- २३ तिर्यंच गित रै माय, नरक मनुष्य सुर थी हुवै। असखगुणो इण न्याय, विजातिया नुप्रवेशनं॥
- दूहा २४. पूर्व प्रवेशन आखियो, ते तो छै उत्पाद। विल उद्धर्तन रूप है, तसु सवध इम लाध।।
- २५. नरकादिक नां ते विहुं, उत्पत उद्वर्त्तन । अतर-सहित रहितपणे, कीजै तेहिज प्रश्न ।।
- \*२६. नारक हे भगवत जी । उपज अतर-सहीतो। कै नारक ना नेरइया, उपज अतर-रहीतो?
- २७ असुर अतर-सिहत ऊपजै, उपजै अतर-रहीतो। जाव वैमानिक ऊपजै, अतर-रहित-सहीतो?

मे सम्पादित होकर 'जैन विषव भारती' द्वारा प्रकाशित हुआ है, के शतक ६ सूत्र ११८ मे 'सखेजजगुणा' पाठ है। मूल पाठ के इस अन्तर ने एक सन्देह खडा कर दिया। उसके निराकरण हेतु भगवती सूत्र की प्रतियो का निरीक्षण किया। प्राचीन प्रतियो मे 'सखेजजगुणा' पाठ मिला। तव हमने 'हेमभगवती' को देखा। यह भगवती सूत्र की वह प्रति है जिसके आधार पर जयाचार्य ने 'जोड' की रचना की थी, जो जयाचार्य के निचागुरु मुनि हेमराजजी के लिए स्वय जयाचार्य (मुनि अवस्था) एव मुनि सतीदासजी द्वारा लिखित है।

'हेम भगवती' के मूल पाठ में 'असखेज्जगुणा' पाठ लिखकर 'अकार' को दो रेखाओ द्वारा चिह्नित किया गया है, पर उसके अर्थ में असख्यातगुणा ही लिखा हुआ है। इमसे यह सिद्ध होता है कि सखेज्जगुणा' की बात समझ में आ गई थी, किन्तु अर्थ लिखते समय वह विस्मृत हो गई। जोड की रचना करते समय अर्थ की बात ही घ्यान में रहने से असख्यातगुणा हो गया। जोड के सम्पादन काल में अगसुत्ताणि तथा हेमभगवती को आधार मानकर यहां सख्यातगुणा किया गया है।

- १८. 'सन्वयोवे वेमाणियदेवप्पवेसणए' ति तद्गामिनां तत्स्थानानां चाल्पत्वादिति । (वृ० प० ४५३)
- १६. एयस्स ण भते । नेरइयपवेमणगस्स तिरिक्खजोणिय-पवेसणस्स मणुस्सपवेसणगस्स देवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव (स॰ पा॰) विसेसाहिया वा ?
- २०. गगेया । सन्वत्योवे मणुस्सपवेसणए, मनुष्यक्षेत्र एव तस्य भावात्, तस्य च स्तोकत्वात्, (वृ० प० ४५३)
- २१. नेरइयपवेसणए असखेज्जगुणे, तद्गामिनामसङ्ख्यातगुणत्वात्, (वृ० प० ४५३)
- २२. देवपवेसणए असखेज्जगुणे. तिरिक्खजोणियपवेसणए असखेज्जगुणे। (श० ६।११६)

- २४,२५ अनन्तर प्रवेशनकमुक्त तत्पुनरुत्पादोद्वर्त्तनारूप-मिति नारकादीनामुत्पादमुद्वर्त्तना च सान्तरिनरन्तरतया निरूपयन्नाह— (वृ० प० ४५३)
- २६ सतर भते । नेरइया अववज्जति निरतर नेरइया अववज्जति
- २७ सतर असुरकुमारा उववज्जितिः निरतर असुरकुमारा उववज्जित जाव सतर वेमाणिया उववज्जिति निरतर वेमाणिया उववज्जिति ?

<sup>\*</sup>लय: कुशल देश सुहामणी

- २८. नारिक संतरे नीकलै, नीकलै अतर-रहीतो। यावत व्यतर नीकलै, अतर-रहित-सहीतो?
- २६. जोतिषि नै वैमानिया, अतर-सहित चवंतो। तथा निरतर ते चवै ? ए प्रवन समूह पूछतो॥
- ३०. जिन कहै नारिक ऊपजै, अतर-सहित-रहीतो। इमहिज भवनपति दशू, उपजै तेह वदीतो।।
- ३१ सातर पृथ्वी न ऊपजै, उपजै अतर-रहीतो। एवं जावत वणस्सई, शेप नरक जिम कहोतो।।
- ३२ अंतर-सहित पिण नेरडया, नोकले छै किणवारो। अतर-रहित पिण नीकलै, इम जाव थणियक्मारो॥
- ३३. सांतर पृथ्वी न नीकलै, नीकलै अतर-रहिता। एव जाव वनस्पति, शेप नरक जिम कहितो॥
- ३४ णवर जोतिपि विमाणिया, चयति इहविध कहितो । यावत वैमानिक चवै, अंतर-सहित रु रहितो ॥

#### सोरठा

- ३५ हिव नारकादि प्रपन्न, अन्य प्रकार करी तसु। उत्पत्ति उद्दर्तन, कहियै छै ते साभलो।।
- ३६. 'प्रमु । छना नेरइया ऊपजै, अछता ऊपजै तेहो ? जिन कहै छताज ऊपजै, अछता नहीं उपजेहो ॥

वा—छना ते विद्यमान द्रव्यार्थपणे करी, पिण सर्वथा अछतो काइ न कपर्ज अछतापणा थकीज खरश्रम नी परें। जे माटे विद्यमानपणो तो तेहनी जीव द्रव्य नी अपेक्षा करी अथवा नारक पर्याय नी अपेक्षा करी। तिण प्रकार करिके हीज भावी नारक पर्याय नी अपेक्षाए द्रव्य थी नेरइया छता नेरइएपणे ऊपजे अयदा नरक ना आउखा ना उदय यकी भाव नेरइया हीज नेरइयापणें करी कपजें।

भाव नेरडया किणनै किहर्यै ? उत्तर—जे नरक नो आउखो भोगवै ते भाव नेरडया किहर्यै । अन्तराल गति ने विषे वर्त्तमान इत्यर्थ ।

अथवा सतो कहिता विभिवत ना परिणाम थी छता नै विषे ते पूर्व ऊपना नै विषे अनेरा ऊपजै पिण अछता नै विषे न ऊपजै लोक नै णाम्वतपणै करी मदाकाल हीज सद्भाव थी।

३७ एव जाव विमाणिया, छता ऊपजै सोयो। पिण अछता वैमाणिक नणो, ऊपजवू निह होयो॥ ३८. प्रभु । छता नेरइया नीकले, के अछता निकलै त्याही? जिन कहै छताज नीकलै, अछता नीकलै नाही॥

- २८. सतर नेरइया उब्बट्टीत निरतर नेरडया उब्बट्टीत जाव मंतर वाणमंतरा उब्बट्टीत निरतरं वाणमनरा उब्बट्टीत ?
- २६. सतर जोडसिया चयति निरतर जोडसिया चयति सतर वेमाणिया चयति निरतर वेमाणिया चयति ?
- ' ३०. गगेया! सतर पि नेरझ्या उववज्जित निरतर पि नेरझ्या उववज्जिति जाव मतर पि थणियकुमारा उववज्जिति निरतर पि थणियकुमारा उववज्जित,
  - ३१. नो सतर पुढिविक्जाइया उववज्जित निरतरं पुढ विक्काइया उववज्जित, एव जाव वणस्सइकाइया सेमा जहा नेरडया जाव सनरं पि वेमाणिया उववज्जित निरतर पि वेमाणिया उववज्जीत ।
  - ३२. सतर पि नेरज्या उब्बट्टित निरतर पि नेरडया उब्बट्टिन, एव जाव थणियकुमारा ।
  - ३३ नो सतरं पुढविक्काइया उच्चट्टिन निरतर पुढिवि-क्काइया उच्चट्टित, एव जाव वणस्मइकाइया। सेसा जहा नेरइया,
  - ३४. नवर जोडिमय-वेमाणिया चयति अभिनावो जाव सतर पि वेमाणिया चयंति निरतरं पि वेमाणिया चयति । (श० ६/१२०)
  - ३५ अथ नारकादीनामेव प्रकारान्तरेणोत्पादोद्वर्त्तने निरूपयन्नाह — (वृ० प० ४५५)
  - ३६. सतो भते । नेरडया उव्यक्जिति ? असतो नेरइया उववज्जिति ? गगेया ! मतो नेरइया उववज्जिति, नो असतो नेरडया उववज्जिति ।

वा॰—'मन्त ' विद्यमाना द्रव्यार्थतया, निह मर्वथै-वासत् किञ्चिदुत्पद्यते, अमत्त्वदिव प्रश्विपाणवत्, मत्व च तेपा जीवद्रव्यापेक्षया नारकपर्यायापेक्षया वा, तथाहि—भाविनारकपर्यायापेक्षया द्रव्यतो नारका मन्तो नारका उत्पद्यन्ते, नारकायुष्कोदयाद्वा भाव-नारका नारकत्वेनोत्पद्यन्त इति।

(वृ० प० ४५५)

अथवा 'सबी' ति विभक्तिपरिणामात् सत्सु प्रागुत्पन्ने-प्वन्ये समुद्रयद्यन्ते नामत्सु, लोकस्य शारवनत्वेन नारकादीना सर्वदैव सद्भावादिन ।

(वृ० प० ४५५)

३७ एव जाव वेमाणिया।

उद्म सतो भते । नेरडया उच्चट्टित ? असतो नेरड्या उच्चट्टित ? गगेया । सतो नेरड्या उच्चट्टित, नो असतो नेरड्या उच्चट्टित ।

<sup>\*</sup>लय: फुशल देश सुहामणी

- ३६ एवं जाव विमाणिया, णवर विशेष लहितू। जोतिषी वैमानिक विषे, चयति पाठज कहितू॥
- ४०. प्रभु । छता नेरइया उपजै, कै अछता उपजतो । छता असुर जे ऊपजे, जाव वैमानिक हुतो ?
- ४१ छता नेरडया नीकलै, कै अछता नीकलतो। छता अमुर जे नीकलै, जाव वैमानिक चयतो?
- ४२. जिन कहै गगेया मुणे, छता नारक उपजतो। पिण अछता नहि ऊपजे, इम जाव वैमानिक हुतो।।
- ४३ छता नेरइया नीकलै, अछता नीकलै नाही। जाव छता वैमानिक चवै, अछता न चवै नयाही।।

#### सोरठा

- ४४. नरक प्रमुख सुविशेष, उत्पादन उद्वर्त्ता। सातर आदि प्रवेश, पूर्व निरूपण ते कियो।। ४५ विल निरूपणा तास, करिवा नो कारण किसु। तसु उत्तर इम भास, वृत्ति विषे इम आखियो॥ ४६. पूर्व नारक आदि, जुदो-जुदो उत्पाद नो।
- दाख्यो सातरत्वादि, तिमहिज उद्वर्त्तन तणु ।। ४७. इहा विल नारक आद, सर्व जीव भेदा तणो । उद्वर्त्तन उत्पाद, आख्यो है समुदाय थी ।।
- ४८ \*किण अर्थे प्रभु । इम कह्यो, छता नारक उपजंतो। विण अछता नहि ऊपजं, जाय वैमानिक चयतो?
- ४६. जिन कहै गगेया ! मुणे, पुरिसादाणीय पासो ।
  पुरिस विषे आदानीय, अरहा अर्हन जासो ।
  ५०. सास्वतो लोक कह्यो जिणे, आदि अत करि रहितो ।
  जिम पंचम शत नै विषे, नवम उदेशे कहितो ॥
  ५१ यावत जे स्रवलोकियै, लोक तिको इज लवियै ।
  तिण अर्थे गगेय ! कह्य, छता वैमानिक चित्रयै ॥

#### सोरठा

५२ पार्व अर्हत तेह, शाञ्चत लोकज आखियो। ते शाख्वत भावेह, छता नारका ऊपजै॥ ५३ अथवा छता बहेह, पूर्व ऊपना तेह विषे। अन्य नारक ऊपजेह, इमहिज निकलै चवनकहाः॥

×.\*

- ३६ एवं जाव वेमाणिया, नवर---जोइसिय-वेमाणिएसु चयति भाणियन्व ।
  - (अगसुत्ताणि भा.२ पृ० ४२८)
- ४०. सतो भते । नेरइया उववज्जति, अमतीने रइया उववज्जति, मतो अमुरकुमारा उववज्जति जाव मतो वेमाणिया उववज्जति, असतो वेमाणिया उववज्जति ?
- ४१ मनो नेरझ्या उच्चट्टति, असतो नेरझ्या उच्चट्टति, सतो असुरकुमारा उच्चट्टति जाव मतो वेमाणिया चयति, अमतो वेमाणिया चयति ?
- ४२ गगेया । सतो नेरइया उववज्जति, नो अमतो नेरइया उववज्जति, जाव सतो वेमाणिया उववज्जति, नो अमतो वेमाणिया उववज्जति,
- ४३. सतो नेरइया उन्बट्टित, नो अमतो नेरइया उन्बट्टित जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति । (श० ६।१२१)
- ४४,४५. अथ नारकादीनामुत्पादादे सान्तरादित्य प्रवेशन-कात्पूर्व निरूपितमेवेति कि पुनस्तन्निरूप्यते ? इति, अत्रोच्यते, (वृ० प० ४५५)
- ४६ पूर्वं नारकादीना प्रत्येकमुत्पादस्य सान्तरत्वादि निरुपित, ततक्व तथैवोद्वर्त्तनाया, (वृ०प०४५५)
- ४७. इह तु पुनर्नारकादिमवं जीवभेदाना ममुदायत समुदितयोरेव चोत्पादोद्वर्त्तयोस्तन्निरूप्यत इति ।
  - (वृ० प० ४५५)
- ४८ से केणट्ठेण भते । एव वुच्चइ—सनो नेरइपा उथवज्जिति, नो अमतो नेरइपा उथवज्जित जाव सतो वेमाणिया चयित, नो अमतो वेमाणिया चयित ?
- ४६ से नूण भे गरीया । पानेण अरह पुरिसादाणीएण
- ५०,५१ मामए लोए बुउए अणादीए अणादरंगे जहा पचम-मए (स्० २५५) जाब (म० पा०) जे नौतरह से लोए। से तेणट्ठेण गगेवा । एव युक्तउ-पाव गतो वेमाणिया चयति, नो असतो नेमाणिया नयति। (श० १।१२२)
- ४२,४३ यत पादर्नेनाहृंना शाष्ट्रनो गोफ उक्तोऽनो मोफस्य शाञ्चतत्वात्सन्त एउ सत्स्वेव दा नारकादय उत्सवन्ते स्ववन्ते चेति साध्येगोच्यन इति । (वृ० प० ४४४)

<sup>\*</sup>लय · गुराल देश गुहामणी

- ५४. पार्के तणो जे नाम, महावीर देवे कह्यं। स्व मत पुष्टज पाम, वृत्ति विषे इम आखियो॥
- ५५. \*शत नवम वतीसम देश ए, ढाल इकसी वाणुमी विमासी। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' आनंद थासी।।

५४. 'में पूर्ण भते ! गगेया' इत्यादि, अनेन च नित्यहा-न्तेनैव स्त्रमत पोपित, (वृ० प० ४५५)

## ढाल: १६३

## दूहा

- १ हिवै गगेय भगवत नी ज्ञान संपदा जेह। चितवतोज थको सही, विकल्प करत वदेह।। † प्रभू नी ज्ञान संपदा केरी।
- २. स्वयं आपणपै इज प्रभूजी, चिह्न विना ए जाणो। अथवा चिह्न थकी ए वस्तु, जाणो आप प्रमाणो।। कीमत करतो छतो गगेयो प्रश्न पूछै छै फेरी।। (घ्रुपदं)
- ३ अणमुणियो आगम विण ए इम, जाणो आप प्रभूजी ! तथा अन्य वच साभल जाणो, आगम श्रुत करि वूझी ॥
- ४ जिन भाखें सांभल गंगेया! निज ज्ञाने करि जाणू। चिह्न विना ए सर्व पिछाण्ं, चिह्न यकी नींह माणूं॥
- प्. अणमुणिया आगम श्रुत विण हूं, इम जाणू गगेया! अन्य पुरुप नां मुख थी साभल, आगम थकी न जेया।।
- ६. छता नेरइया उपजै पिण ए, अछता उपजै नाही। जाव वैमानिक छता चवै छै, अछता न चवै क्याही।।
- ७ हे भदत! किण अर्थे ए, इम भाखो आप प्रभूजी! जाव वैमानिक अछता न चवै? इम गगेये बूझी।।
- मान-सिंहन' पिण वस्तू जाणे, मान-रिहत' पिण जाणे।
- इ. दक्षिण दिशि मे पिण इम जाणे, जिम कह्य शब्द उद्देशे ।पचम शत नो तुर्य भलायो, वारू रीत विशेषे ।।
- १०. जाव निरावरण ज्ञान केविल नों, तिण अर्थे इम कहियै। निमहिज जाव वैमानिक अछता, चवै नही इम लहियै।।

- १. अय गाङ्गियो भगवनोऽतिणायिनी ज्ञानसम्पदं सम्भाव-यन् विवत्त्रयन्नाह— (वृ० प० ४५५)
- २. सय भते । एतेव जाणह, उदाहु असय, 'सय भते । दत्यादि, स्वयभात्मना निद्धानपेक्षमित्यर्थः 'एव' ति वध्यमाणप्रकार वस्तु 'असय' ति अस्वय परनो लिङ्गतः इत्यर्थः, (वृ० प० ४५५)
- असोच्चा एतेवं जाणह उदाहु सोच्चा—
   'असोच्च' ति अश्रुत्याऽऽगमानपेदाम् 'एतेव' ति एतदेविमत्यर्थं., 'मोच्च' ति पुरुपान्तरवचनं श्रुत्वाऽऽ-गमत इत्ययंः
   (वृ० प० ४५४)
- ४ गगेया । मयं एतेवं जाणामि, नो असप,
- ५. असोच्चा एतेवं जाणामि, नो मोच्चा-
- ६ मतो नेरइया उववज्जिति, नी अमतो नेरइया उवव-ज्जित जाव सतो वेमाणिया चयित, नो अमतो वेमा-णिया चयित । (ग० ६।१२३)
- ७. मे केणट्ठेण भते । एव वुच्चइ—त चेव जाव (ग० पा०) नो अमतो वेमाणिया चयति ?
- न. गगेया । केवली ण पुरित्यमे ण मिय पि जाणइ,
   अमिय पि जाणङ ।
- दाहिणे ण एव जहा सद्दुद्देमए (४।६४-६७)
- १०. जाव (स० पा०) निव्युडे नाणे केवितस्म । ने तेण-ट्ठेण गगेया ! एव वृच्चइ—सय एतेव जाणामि, नो असय, अमोच्चा एतेव जाणामि, नो मोच्चा—त चेव जाव नो असतो वेमाणिया चयति । (श० ६।१२४)

<sup>\*</sup>लय: कुशल देश सुह्गमणी।

<sup>†</sup>लय कहो नी किम करि आवूजी

१ परिमाणवत् गर्भेज मनुष्य जीव द्रव्यादिक मख्याता ।

२. वनस्पति पृथिव्यादिक जीव अनता वा असस्याता ।

- ११. हे भगवंत ! नारकी नरके, पोतेइज उपजे छै। के पोते नहिं उपजे, पर नावण थी नरक पढे छै?
- १२. जिन भाखै पोतै इज नारिक, नरक विषे उपजै छे। पिण पर नावश थकी नारकी, नरके नांहि पडै छै।।
- १३. किण अर्थे भगवत । इम भाख्यो, जिन कहै सुण गगेया ।
  निज कृत कर्म उदय करि जतु, स्वय नरक उपजेया ।।
  वाo—जिम कोई कहै छै— ए जीवात्मा नै सुख-दुख उपजे ते ईश्वर नो
  प्रेरघो स्वर्ग मे जाय छै तथा नरक मे जाय छै। पिण पोता नै वण जातो नथी,
  परवश जाय छै। तेहनो मत खडन की घो, एतलै ईश्वर सुख-दुख नो कर्त्ता
  नथी।
  - १४. कर्मगुरू ते महत कर्म करि, कर्मभार करि जाणी। कर्मगुरूसभारपणे करि, अति प्रकर्ष पिछाणी।।
  - १५ ए तीनूइं पुन्य कर्म नी, अपेक्षाय पिण विदयै। तिण कारण आगल इम अखियै, अशुभ कर्म नै उदियै।।
  - १६. उदय प्रदेश थकी पिण ह्वै ते, तिण कारण इम कहियै। अणुभ कर्म ना विपाक करिकै, बंध्यो अनुभव लहियै॥
  - १७ ते तो मंद यकी पिण ह्वं छै, तिण कारण इम कहै छै। अशुभ कर्म फल विपाक करिके, स्वय नरक उपजे छै।।
  - १८. तिण अर्थे ? करिनै गगेया । इम आख्यो अवलोई। पोतै नारकी नरक उपजै, परवश पडै न कोई।।
  - १६. हे प्रभु । पोतै असुर ऊपजै, कै परवण उपजै त्याही। जिन कहै असुर ऊपजै पोतै, परवण उपजै नाही।।
  - २०. ते किण अर्थे । तब जिन भाखे, कर्म उदै करि जाणी। कर्म-विगम ते अणुभ कर्म नी, विगम-स्थिति पहिछाणी।।
  - २१. कर्म-विसोहि ते रस आश्री, कर्म-विशुद्धी जेहना।। कर्म प्रदेश अपेक्षा ए वच, तथा अर्थ इम एहना।।
  - २२. शुभ कर्म उदय वलि, शुभ कर्म विपाक करीने लहिये। पुन्य कर्म फल विपाक करिके, स्वय असुर ऊपिजये॥
  - २३. तिण अर्थे करि असुरपणै, पोनैज उपजै ज्याही। एवं यावत घणियकुमारा, परवण उपजै नाही।।
  - २४. हे प्रमु ! पुढवी उपजे पोते, के परवण उपजे छै ? जिन कहै पृथ्वी उपजे पोते, परवण नाहि पड़े छै।।

- ११ सय भंते ! नेरइया नेरइएसु उववज्जंति ? अमयं नेरइया नेरइएसु उववज्जति ?
- १२. गगेया । सय नेरइया नेरइएसु उनवज्जंति, नो अमय नेरइया नेरइएसु उववज्जित । (१० ६।१२५)
- १३ मे केणट्ठेण भते । एव वुच्चइ— गगेया ।

  कम्मोदएण,

  वा० यथा कैश्चिदुच्यते —

  'अज्ञो जन्तुरनीभोऽयमात्मन. मुलदु खयो ।

  ईश्वरप्रेरितो गच्छेत्स्यर्गं या श्वश्रमेव वा ।

  (वृ० प० ४४४)
- १४ कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, वम्मगुरुमभारियत्ताए, अतिप्रकर्पाव्स्थयेत्यर्थं, (वृ० ५० ४५६)
- १५ एतच्च त्रय युभकम्मिपिक्षयाऽपि स्यादत आह—'असु-भाण' मित्यादि, (वृ० प० ४५६) असुभाण कम्माण उदएण
- १६ उदय प्रदेशतोऽिप स्यादत आह— असुभाग कम्माण विवागेण, 'विवागेण' ति विपाको यथावद्धरमानुभूति ,

(वृ० प० ४५६)

- १७ स च मन्दोऽपि स्यादत आह— (वृ० प० ४५६) असुभाण कम्माण फनविवागेण मय नेग्इया नेरद्रएसु उववज्जति,
- १८ से तेणट्ठेण गगेया । एव वृच्चइ—मय नेरइया नेरइएसु खववज्जति, नो असय नेरइया नेरइएसु खववज्जति । (श० १।१२६)
- १६ सय भते । असुरकुमारा—पुच्छा।
  गोया । सय असुरकुमारा असुरकुमारेसु उववज्जति,
  नो असय असुरकुमारा असुरकुमारेसु उववज्जति।
  (घ० ६।१२७)
- २० मे केणट्ठेण त चेव जाव उववज्जति ?

  गरेवा ! कम्मोदएण, कम्मविगतीए,
  'कम्मविगईए' ति कम्मेणामद्युभाना विगत्वा—विगमेन
  स्थितिमाश्रित्व (वृ० ५० ४४६)
- २१ कम्मविमोहीए, कम्मविमुद्धीए, 'कम्मविमोहीए' ति रसमाश्रित्य 'कम्मविनुद्धीए' ति प्रदेशापेक्षया, (यृ० प० ४५६)
- २२ सुमाण वस्माण उदएण, सुमाण कस्माण विजानेण सुमाण वस्माण पत्रविवागेण सब असुरवृमात्त च्युर-सुमारताए उववज्जति,
- २३ में तेणट्ठेण जान जनवज्जित । एव जान चित्रत-कुमारा । (ग० ६११२=)
- २४ तय भते । पुढविषकाण्या—पुन्छा । गगेया। सय पुढविषकाण्या पुढविषकाण्यमु उवयञ्जात नो असय पुढविषकाण्यमु उवयञ्जात । (श्व. १।१२१)

- २५. किण अर्थे ? तव श्री जिन भाखै, कर्म उदय करि घारं। कर्मगुरू फुन कर्मभार करि, कर्मगुरूसंभार।।
- २६ शुभ अणुभ जे कर्म उदय करि, शुभाशुभ जे जाणं। कर्म तणां जे विपाक करिने, अनुभावे पहिछाणं॥

### सोरठा

- २७ शुभ जे वर्ण गधादि, जाति एकेंद्रियादिक अशुभ । नाम प्रकृति ए वादि, तेह तणे उदये करी ।।
- २८ <sup>१</sup>शुभाशुभ जे कर्म तणां फल, विपाक करिकै ज्याही। पुढवीपणे ऊपजे पोते, परवश उपजे नाही।।
- २६ तिण अर्थे करि जाव ऊपजै, जाव मनुष्या एमो। व्यतर जोतिपि विमानिया ते, असुरकुमारा जेमो।।
- ३० तिण अर्थे गगेय । कह्यो इम, सुर वैमानिक ज्यांही । यावत पोतै ईज ऊपजै, परवश उपजै नाही ॥
- ३१ ते वस्तु किह तेह समय ने, आदि देइ गगेय! महावीर भगवत श्रमण ने, प्रत्यक्ष ही जाणेय॥
- ३२ सर्व वस्तु ना जाणणहारा, सर्वज्ञ वीर पिछाणै। सर्व वस्तु ना देखणहारा, इम प्रत्यक्षज जाणै।
- ३३ गगेयो अणगार तिवारे, वीर प्रभू प्रति जेही। तीन वार दक्षिण पासा थी, प्रदक्षिणा करेई।।
- ३४ वदै स्तुति करै वचन थी, नमस्कार शिर नामी। इम कहै आप समीपै वांछू, हे प्रभु! अंतरजामी।।
- ३५. च्यार महाव्रत रूप धर्म थी, पन महाव्रत धर्मी। कालासवेसी पुत्र कह्यों जिम, तिमहिज भणवो मर्मो।।
- ३६ यावत सर्व दुख प्रक्षीण करीने मोक्ष सिघाया। सेव भंते । सेवं भते ! गोतम वीर वधाया।।
- ३७ नवम णतक वतीसमुद्देणक, इकसौ त्राण्मी ढालं।
  भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' गणि गुणमाल।।
  ३८ ए गगेय तणा भागा मे, भूल चूक कोइ आयो।
  तो मिच्छामिदुक्कडं म्हारै, पंडित शुद्ध करायो॥
  नवसशते द्वात्रिशत्तमोद्देशकार्यः॥६।३२॥
- १ पाछलै उद्देश आख्यो, गगेयो गुण-आगलो। वीर सेवा थकी सीधो, कीघो आतम नो भलो।। २ वीजो कोई कर्मवश, विपरोतपणु पिण पावियै। जिम जमाली त्रयस्त्रिशत उद्देशक देखावियै।।

- २५. से केणट्ठेणं जाव उववज्जित ? गगेया । कम्मोदएण, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारिय-त्ताए, कम्मगुरुसभारियत्ताए,
- २६. सुभामुभाण कम्माण उदएण, मुभामुभाण कम्माण विवागेण,
- २७ 'मुभासुभाण' ति शुभाना शुभवर्णगन्धादीनाम् अशु-भाना तेपामेकेन्द्रियजात्यादीना च ।

(वृ० प० ४५६)

- २८. सुभामुभाण कम्माण फलिवागेण सय पुढिविक्काइया पुढिविक्काइएमु उववज्जित, नो असय पुढिविक्काइया पुढिविक्काइएसु उववज्जिति ।
- २६ में तेणट्ठेण जान उननज्जिति । (श० ६।१३०) एन जान मणुस्सा । (श० ६।१३१) नाणमतर-जोडसिय-नेमाणिया जहां अमुरकुमारा ।
- ३० में तेणट्ठेण गगेया । एव वुच्चड मय वेमाणिया वेमाणिएमु उववज्जति, नो असय वेमाणिया वेमा-णिएमु उववज्जति । (श० १।१३२)
- 3१,3२ तप्पभिति च णं से गगेये अणगारे ममण भगव महाबीर पच्चभिजाणड मन्वण्णु सन्वदर्शित । 'तप्पभिद्र च' त्ति यस्मिन् समयेऽनन्तरोक्त वस्तु भग-वता प्रतिपादित ज्ञानस्य तत्त्रया, (वृ० प० ४५६)
- ३३ तए ण से गगेये अणगारे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेड,
- ३४ वदड नमसड, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी— इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिय
- ३५ चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहब्बइय एव जहा कालासवेसियपुत्तो (श० १।४३१-४३३) तहेव भाणियव्वं
- १,२ गागेयो भगवदुपासनात सिद्ध अन्यस्तु कर्मवशा-द्विपर्ययमप्यवाप्नोति यथा जमानिरित्येतहर्शनाय त्रयस्त्रिशत्तमोद्देशक, (वृ० प० ४५६)

<sup>\*</sup>लय: पूज मोटा भांज तोटा

- १. तिण काले ने तिण समय, वर माहणकुड ग्राम। नामे नगर हुतो भलो, अति वर्णन अभिराम।।
- २. चैत्य प्रवर वहुं साल वन, धातु चित्र् चयनेह। वर्णन करिव् तेहनु, अधिक अनोपम एह।। ३ ते माहणकुड ग्राम जे, नगर विपेज प्रसिद्ध।
  - ३ ते माहणकुड ग्राम ज, नगर विपज प्रसिद्ध। ऋपभदत्त नामे वसे, ब्राह्मण ऋद्ध समृद्ध।।
- ४. दित्त तेजस्वी तेजवत, दर्पवान वा दित्त। वित्ते प्रसिद्ध जाव ते, अपरिभूत कथित।।
- ५ ऋग यजू नै साम फुन, वेद अथर्वण मान। जिम खघक जावत अन्य, वहु ब्राह्मण नय जान।।
- ६. श्रमणोपासक जाणिया, जीवाजीव-स्वरूप। पुन्य पाप ना अर्थ फुन, लाघा अधिक अनूप।।
- ७ यावत मुनि प्रतिलाभतो, आनम भावित आप।। विचरे छै ते ऋपभदत्त, ब्राह्मण जिन वच थाप।।
- तसु देवानदा ब्राह्मणी, हुती अधिक अनूप।
   कोमल कर पग जाव तसु, प्रियदर्शण अतिरूप।
- ह. ते पिण श्रमणोपासिका, जीवाजीव पिछाण। पुन्य पाप फल ओलखी, यावत विचरै जाण।।

\*जी काइ देव जिनेन्द्र समवसर्या। जी काइ जगतारक जिनराज।। (ध्रुपद)

- १० तिण कारो ने तिण समे जी काइ, समवसर्या महावीर । परिपद पर्युपासन करी जी काइ, तिरवा भवदिघ तीर ॥
- ११. त्रत्यभदत्त तिण अवसरे जी काइ, स्वाम पधार्या जान । हरप गंतोप पायो घणो जी काइ, जाव हृदय विकसान ॥
- १२ जिहा देवानदा ब्राह्मणी जी काउ, आयो तिहा चलाय। देवानदा ब्राह्मणी प्रते जी काइ, बोलै इहविघ वाय।।
- १३ इम निश्चे देवानुप्रिया जी काइ, श्रमण तपस्वी सार। भगवत श्री महावीर जी काइ. वर्म आदि करणहार।।
- १४. यावत प्रभ् सर्वज्ञ छै जी काइ, सर्व वस्तु ना सोय। देग्नणहार दयाल है जी काउ, सर्वदर्शी इस होय॥
- १५ धर्म-चक्र आकाश मे जी काइ, तिण करि यावत ताम। सुन्दे-मुखे विचरता छता जी काइ, वीर प्रभू गुणवाम।।

- १. तेण कालेण तेण ममएण माहणकुढगामे नयरे होत्या—वण्णयो ।
- २ बहुमालए चेइए वण्णओ ।
- ३ तत्य ण माहणकुउग्गामे नयरे जमभदत्ते नाम माहणे परिवसङ — अड्ढे 'अड्ढे' ति समृद्ध (वृ० प० ४५६)
- ४ दित्ते वित्ते जाव बहुजणम्म अपरिभूए 'दित्ते' त्ति दीप्त — तेजस्वी दृष्तो वा — दणंवान् 'वित्ते' त्ति प्रसिद्धः, (वृ० प० ४५६)
- ५. रिन्वेद-जजुब्वेद-गामवेद-अधव्यणवेद जहा रादको जाव अण्णेसु (म० पा०) य वहूमु वभण्णएसु नयेमु सुपरिनिद्विए
- ६ समणोवासए अभिगयजीवाजीवे उवलद्वपुण्णपावे
- ७ जाव अहापरिग्गिहिएहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भावे-माणे विहरइ।
- तस्म ण जमभदत्तस्म माहणस्स देवाणदा नाम माहणी होत्या—सुकुमालपाणिपाया जाव पियदमणा मुम्वा
- समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जवनद्रपुण्णपावा जाव अहापिरग्गहिएहि नवोकम्मेहि अप्याण भावे-माणी विहरइ। (घ०६।१३७)
- १०. तेण कालेण तेण समएण सामी ममोमढे। परिमा पञ्जुवामइ। (१० ६।१३८)
- ११ तए ण से उमभदत्ते माहणे इमीमे कहाए लद्धट्टे ममाणे हट्ट जाव (म॰ पा॰) हियए
- १२. जेणेव देताणदा माहणी तेणेव उत्रागच्छति, उया गच्छिता, देवाणद माहणि एव वयानी---
- १३ एव खलु देवाणुणिए । ममणे भगव महावीरे आहि-गरे
- १४ जाव मध्यण्णू मध्यः रिमी
- १४. आगामगएण चातेण जाव मुहमुरेण विहरमाचे

<sup>\*</sup>लय: म्हारी सातूजी र पाच पुत्र

- १६ वहुसाल चैत्य विषे प्रभू जी कांइ, यथाप्रतिरूप तंत। अवग्रह आज्ञा ले करी जी काइ, यावत जिन विचरत।।
- १७ महाफल निञ्चै ते भणी जी काड, देवानुप्रिय । तथारूप अरिहत भगवत नु जी काइ, नाम गोत्र सुणवा नु होय।।
- १८ तो विल स्यू किहवो अर्छ जी काइ, अरिहत साहमु जाय। फल वदणा करिवा तणो जी काइ, नमस्कार नु सवाय।।
- १९ प्रश्न विल पूछण तणु जी काइ, सेव करण नु सार। ते फल नो कहिवो किसु जी काइ, निह सदेह लिगार।।
- २० इक पिण आर्य धर्म नु जी काइ, सुवचन श्री जिन पास। साभलवो तन मन करी जी काइ, महाफल तास विमास।।
- २१ तो विल स्यू किहवो अछं जी काइ, विस्तीरण जे अर्थ। प्रहिवै किर ते फल तणु जी काइ, स्यू वर्णवियै तदर्थ॥
- २२. ते भणी देवानुप्रिया । जी काइ, जड़ये थी जिन पास । श्रमण भगवत महावीर ने जी काइ, वदा स्तवना तास ।।
- २३ नमस्कार शिर नामिय जो काइ, यावत जिन नी जाण। सेव करा साचै मनै जी काइ, ऊजम अधिको आण॥
- २४ ए सेवा आपा भणी जी काइ, इहभव परभव हेर। हित सुख खम ने अर्थ छै जी काइ, अनुगम आस्ये केड।।

# सोरठा

- २५ हिताय हित् ने अर्थ, सुर्वाय सुख ने अर्थ फुन। क्षमज युक्त तदर्थ, शुभानुवच आनुगामिक।।
- २६ देवानदा तिण अवसरे जी काइ सुण ऋपभदत्त नी वाय। हरप सतोप पायो घणो जी काइ, जाव हृदय विकसाय।।

# सोरठा

- २७ अतिहि हर्प कथित, हृष्ट तुष्ट नो अर्थ ए। तथा हृष्ट विस्मित, सतोपवान चित तुष्ट ने।।
- २ आ ईपत कहिवाय, मुख सौम्यादि भाव करि। समृद्धि पामी ताय, अति समृद्धि फुन नदिता।।
- २६ प्रीतिमना काहिवाय, तृष्तिपणो अति मन विषे। परम भलो मन थाय, पाठ परम सोमणस्सिया॥
- ३० हर्प वशे करि तास, विकस्यो छै तेहनो हियो। जाव गव्द में जास, अर्थ विचारी आखियै।।
- ३१ \*विहुं करतल यावत करी जी काइ, ऋपभदत्त नो वचन्न । विनय करीने ग्रगीकरे जी काइ, तन मन थयो प्रसन्न ॥
- ३२. शत नवम तेतीसम देश ए जी काड, सौ चउराणूमी ढाल । भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी जी कांइ, 'जय-जश' हरप विशाल ॥

- १६. वहुसालए चेइए अहापटिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरह।
- १७ त महप्पल यालु देवाणुष्पिए । तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्म वि सवणयाए,
- १८,१६ किमग पुण अभिगमण-वटण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ?
- २०,२१ एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्य सवण-याए, किमग पुण विजलस्स अद्वस्स गहणयाए ?
- २२. त गच्छामो ण देवाणुष्पिए । समण भगव महावीर वंदामो
- २३. नमसामी जाव (स० पा०) पज्जुवासामी।
- २४. एय णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सड । (ग०।१३६)
- २५ 'हियाए' त्ति हिताय"" "'खमाए' त्ति क्षमत्वाय सगतत्वायेत्यर्थ, 'आणुगामियत्ताए' आनुगामिकत्वाय शुभानुबन्धायेत्यर्थ (वृ० प० ४५६)
- २६. तए ण सा देवाणदा माहणी उसभदत्तेण माहणेण एव बुत्ता समाणी हट्ट जाव (स॰ पा॰) हियया।
- २७. हृष्टतुष्टम् अत्यर्थं तुष्ट हृष्ट वा विस्मितं तुष्ट तोपविच्चत्त यत्र तत्तथा, (वृ० प० ४५६)
- २८. आनि विता ईपन्मुखसौम्यतादिभावे समृद्धिमुपगता, ततश्च निन्दिता समृद्धितरतामुपगता
  - (वृ० प० ४५६) यायन मनसि यस्या
- २६ 'पीइमणा' प्रीति प्रीणन आप्यायन मनसि यस्या सा प्रीतिमना 'परमसोमणस्सिया' परमसौमनस्य — सुष्ठु सुमनस्कता सञ्जात यस्या सा परमसौमनस्यिता (वृ० प० ४५६)
- ३० 'हरिसवसविसप्पमाणहियया' हर्पवशेन विमर्पद् विस्तारयायि हदय यस्या सा तथा (वृ० प० ४४६)
- ३१. करयल जाव (स० पा०) कट्ट उसभदत्तस्स माहण-स्स एयमहु विणएण पडिसुणेइ। (श० ६।१४०)

<sup>\*</sup>लय: म्हारी सासूजी रै पाच पुत्र

## दूहा .

- १ ऋषभदत्त ब्राह्मण तदा, कोडिवक नर तेड। कहै धार्मिक रथ त्यार करि, वृपभे-जुक्त समेर॥
- २ \*करो काज अति क्षिप्र, अहो देवानुप्रिया, वृपभ विहु अति चतुर, शीघ्र तसु गमन क्रिया। गमन क्रिया जी, तिण जुगत लिया, रथ सग विहु ते जोतरिया, महै तो जासा-जासा वदन वीर, अधिक तन मन रिलया।।
- ३ अतिहि प्रशस्त पिछाण, जोगवत रूप भिला। सम खुर ने तसुं पूछ, विल सम श्रुग भला। सम श्रुग भलाजी, अतिहि उजला, लक्षण गुणरूप अधिक निमला। म्है तो जासा-जासा वदन वीर, प्रभू गुण ज्ञाननिला।
- ४ कठाभरण कलाप, जबूनद स्वर्णमयी। वेगादिक गुण करी, विशिष्ट प्रधान सही। प्रधान सही जी, अति कीर्ति कही, जन जोवत ही आनद लही। महै तो जासा-जासा वदन वीर, अधिक तन मन उमही॥
- ५ रजत रूप्यमय घट, भणण भिणकार वणै। सूत्र-रज्जु ते रासिंड सूत नी वृपभ तणै। वृपभ तणै जी, अति दिप्तपणै, तसु जातिवत, लौकीक गिणै। महै तो जासा-जासा वदन वीर, हरप आनद घणै।
- ६ नाथ नासिका-रज्जु, प्रवर सुवरण मिडित। सुवरण तेह प्रधान, तिणे करि अवग्रहित। अवग्रहित, जिन जश कहित, पेखत जन मन आनद लहितं। महै तो जासा-जासा वदन वीर, परम प्रभु स्यू प्रीत॥
- ७ नील वर्ण जे उत्पल, कमल करी नीको। शिर-शेखर अभिराम, वलभ है जग जी को। जग जी को जी, निरखण पीको, तसु आभरण करि रूपे अधिको। महै तो जासा-जासा वदन वीर, प्रभू त्रिभुवन टीको।।
- द. वृषभ प्रधान युवान, लक्षणवता आणी। ते रथ जोतर कह्यो, वृषभ वरणन माणी। वरणन माणी जी, हिव रथ जाणी, आगल वरणन कहियै ठाणी। महै तो जासा-जासा वदन वीर, प्रभू केवल नाणी।।
- ६. नानाविघ ना न्हाल, प्रवर मिण रत्न तणी। घटा अधिक रसाल, जाल चउफेर वणी। चउफेर वणी जी िक्तणकार घणी, मन प्रश्न हुवै तसु शब्द सुणी। महै तो जासा-जासा वदन वीर, घीर प्रभु तीर्थं घणी।।

- १ तए ण से उसभदत्ते माहणे कोड्वियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—
- २,३. खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय-समखुरवालिहाण-समिलिहियसिंगेहि, लघुकरण — शीझिकयादक्षत्व तेन युक्तौ यौगिकौ च—प्रशस्तयोगवन्तौ " ""'वालिहाण' त्ति वालधाने —पुच्छौ (वृ० प० ४५६)
- ४. जवूणयामयकलावजुत्त-पितविसिट्ठेहि,
  जाम्बूनदमयौ—सुवर्णनिवृंतौ यौ कलापौ—कण्ठाभरणविशेषौ ताभ्या युक्तौ प्रतिविशिष्टकौ च—
  प्रधानौ जवादिभियौं तौ (वृ० प० ४५६)
- ४,६. रययामयघटा-सुत्तरज्जुय-पवरकचणनत्थपग्गहोग्गहियएहि,
  रजतमय्यौ—रूप्यविकारौ घण्टे ययोस्तौ तथा, सूत्ररज्जुके—काप्पीसिक-सूत्रदवरकमय्यौ वरकाञ्चने—
  प्रवरसुवर्णमण्डितत्वेन प्रधानसुवर्णे ये नस्ते —नासिकारज्जू तयो. प्रग्रहेण—रिष्मनाऽवगृहीतकौ—बद्धौ
  यौ तौ (वृ० प० ४५६)
  - ७. नीलुप्पलकयामेलएहिं, नीलोत्पलै —जलजिवशेपै. कृतो—निहित. 'आमेल' त्ति आपीडः—शेखरो ययोस्तौ (वृ० प० ४५६)
- ८. पवरगोणजुवाणएहि
- ६ नाणामणिरयण-घटियाजालपरिगयं,

<sup>\*</sup>लय: धन-धन भिक्षु स्वाम्

- १० प्रशस्त रूडा काप्ठ, तणो जूसर जासं। योत्र रज्जुका युग ए, अतिही शुभ तास। शुभ तास जी, वर सुख वास, निरखत ही हरप अघिक आस। म्है तो जासा-जासां वदन वीर, करण जिन पर्युपास।।
- ११. कारीगर अति निपुण, भलेज प्रकार करी।
  ए सहु विरचित निर्मित, कीवा हरप घरी।
  हरप घरी जी, जन जश उचरी, अति परम लक्षण करि सहित वरी।
  म्है तो जासा-जासा वदन वीर, स्वाम सपति सखरी॥
- १२. एहवो वार्मिक जाण-पवर जोतिर थापो। जीव्र करी सफ त्यार, आण मुफ ने आपो। मुफ ने आपो जी, तज सतापो, वर विनय करी तुफ जस व्यापो। म्है तो जासा-जासा वदन वीर, मिटै प्रभु थी पापो॥
- १३ नवम तेतीसम देश, ढाल इकसौ पच्चाणु।
  भिक्षु भारिमाल ऋषिराय, गणी 'जय-जश' भाणु।
  जय जश भाणु जी, गण गुण-खाणु, महावीर तणो शासण जाणू।
  महानै लागै-लागै स्वाम सुभाव, भाव सपत माणु॥

१०,११. सुजायजुग-जोत्तरज्जुयजुग-पसत्यसुविरिचयिनिमिय, सुजात--मुजातदारुमय (वृ० प० ४५६)

१२. पवरलक्खणोववेयं-धिम्मयं जाणप्पवर जुत्तामेव चवद्ववेह, चवद्ववेत्ता मम एतमाणत्तिय पच्चिप्पणह। (म० १।१४१)

## ढाल : १६६

# दूहा

- श. कोडुविक तिण अवसरे, ऋपभदत्त नी वाय। सांभल ने हरण्यो घणो, जाव हियो विकसाय।।
   २ करतल जोडी इम कहै, एव इम हे स्वाम तहत वचन ए आपरो, जीघ्र करेसू काम।।
   ३ आज्ञा विनय करी वचन, यावत श्रगीकार। कार्य सर्व करी तिणे, सूपी आज्ञा सार।।
   ४. ऋपभदत्त ब्राह्मण तदा, स्नान जाव अल्प भार। मोल करी मुह्गा इसा, आभरण पहिर्या सार।।
   ५ अलकृत तनु ने करी, निज घर थी निकलत। वाह्य साल उवट्ठाण ज्या, जिहा घाम्मिक रथ तत।।
   ६ तिहा आव्या आवी करी, घामिक यान प्रधान। याहृढ थयो चढ्यो तदा, पेखत ही पुन्यवान।।
   ७ देवानदा तिण अयसरे, ग्रतेचर मे न्हाय। कुलीन स्त्री ते कारणे, प्रच्छन स्नान कहाय।।
- देवानदा नो इहा, वर्णन इम देखाय।
   वाचनातरे ते अछै, साभलज्यो चित ल्याय।।

- १. तए ण ते कोडुवियपुरिसा उसभदत्तेण माहणेण एव वृत्ता समाणा हट्ट जाव (स० पा०) हियया
- २,३. करयल जाव (स॰ पा॰) एव सामी । तहत्ताणाए विणएण वयणं पडिसुर्णेति, पडिसुर्णेता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त जाव धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव जबद्ववेत्ता, तमाणित्तय पच्चिप्पणित । (श॰ ६।१४२)
- ४,४. तए ण से उसभदत्ते माहणे ण्हाए जाव अप्पमहग्धा-भरणालिकयसरीरे साओ गिहाओ पिडिणिक्खमिति, पिडिणिक्खिमत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणमाला जेणेव धिम्मए जाणप्पवरे
  - ६. तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर दुरुढे । (१४३)
  - ७. तए ण सा देवाणदा माहणी (पा० टि० ६) अतो अतेजरिस ण्हाया। 'अन्त.' मध्येऽन्त पुरस्य स्नाता, अनेन च कुलीना स्त्रिय. प्रच्छन्ना स्नान्तीति दिशत, (वृ० प० ४५६)

ь. इह च स्थाने वाचनान्तरे देवानन्दावर्णक एव दृश्यते (वृ० प० ४५६)

<sup>\*</sup>पुण्य प्यारी सुणज्यो देवानंदा अधिकार । (घुपदं)

ह. करी स्नान विलक्षम सार, कीधा कोतक विविध प्रकार।
 मसी तिलकादिक सुविचार रे।।

१० मगलीक ने अर्थे प्रसाधि, ग्रहै सरसव ने द्रोवादि। टालवाज अशुभ सुपनादि॥

११ विल अन्य कीघो ते किहयै, वर नेउर चरणे लिहयै।
मणी मेखला किट-तट गिहयै।

१२ हार करिकै रचित हिय छायो, उचित युक्त करि शोभायो । तसु पेखत नेत्र ठरायो ॥

१३ कडै करिकै अधिक काति होते, मुद्रिका अगुलिया सोहै। जन देखत ही मन मोहै।।

१४ विचित्र मणिमय जाणी, एकावली काति वखाणी। तिणसु देवानदा दीपाणी।।

१५ कठ-सूत्र अधिक श्री कार, विल उर रह्या आभरण सार। रूढिगम्य कह्या वृत्तिकार।।

१६ ग्रैवेयक प्रसिद्ध कहियै, ए तो आभरण कठ नां लहियै। तिणसू देवानदा गहगहियै।।

१७ कटिसूत्रेण नाना प्रकार, मणि रत्ना ना भूषण सार। तिणसू शोभित अग उदार।।

१८ चीन अशुक नाम ए दोय, वस्त्र मध्ये प्रवर ते होय। तिके पहिर्या छै अवलोय।।

१६ दुकूल वृक्ष तणी सुविधान, वल्कल थी नीपनो जान। तिको दुकूल वस्त्र पहिछान।।

२० ते पिण वस्त्र घणु सुखमाल, अपर ओढणो तेह विशाल। मन हरपै नयण निहाल।

२१ सर्व ऋतु ना नीपना अशेष, सुगंघ फूल करी सुविशेष। तिण सूं वीट्या शिर ना केश।

२२. वर चदन चरचित चगी, निलाट विपेज सुरगी। आभरण भूपित अगी।।

२३ कृष्णागर सुगव अशेष, धूपे धूपित सुविशेष। श्री देवी सरिखो वेष'।।

२४ काया चलक-चलक चलकती, प्रभा भलक-भलक भलकती। जाणै मुलक-मुलक मुलकती।।

#### सोरठा

२५ एह थकी हिव सोय, प्रकृत छै जे वाचना। कहियै छै अवलोय, एहवु आख्यो वृत्ति मे।।

- ११ किंच [किते (व) ]—वरपादपत्तणेउर-मणिमेहला-
- १२ हाररिचत-उचिय-उचितै: युक्तै. (वृ० प० ४५६)

१३ कडग-खुड्डाग-'खुड्डाग' त्ति अड्गुलीयकैंग्च (वृ० प० ४५६)

१४. एकावली-विचित्रमणिकमय्या (वृ० प० ४५६)

१५,१६. कठमुत्त-उरत्यगेवेज्ज-कण्ठसूत्रेण च--- जर.स्थेन च रूढिगम्येन (वृ० प० ४५६)

१७. मोणिसुत्तग-नाणामणि-रयणभूसणविराइयगी,

१८. चीणसुयवत्यपवरपरिहिया,

१६,२० दुगुल्लसुकुमालउत्तरिज्जा, दुकूलो—वृक्षविशेपस्तद्वल्काज्जात दुकूल—वस्त्र-विशेपस्तत् सुकुमारमुत्तरीयम् उपरिकायाच्छादन यस्याः सा तथा (वृ० प० ४६०)

२१ सन्वोतुयसुरिभकुसुमवरियसिरया,

२२. वरचदणवदिता, वराभरणभूसितगी, वरचन्दन वन्दित—ललाटे निवेशित

(वृ० प० ४६०)

२३. कालागरुधूवधूविया, सिरिसमाणवेसा श्री.—देवता तया समाननेपथ्या,

(वृ० प० ४६०)

२५ इतः प्रकृतवाचनाऽनुश्रियते- (वृ० प० ४६०)

६,१० कयवलिकम्मा कय-कोजय-मगल-पायन्छित्ता, तत्र कौतुकानि—मपीतिलकादीनि मङ्गलानि— सिद्धार्थंकदूर्वादीनि (वृ० प० ४५६)

<sup>\*</sup>१. राणी भाखें सुण रे सूड़ा

१ प्रस्तुत ढाल की गाथा ७ से २३ तक की जोड वाचनान्तर के आधार पर की गई है, जो अगसुत्ताणि पृष्ठ ४३४ टि॰ ६ से यहा उद्धत किया हैं।

२६ \*जाव तोल हलका मोल भारी, एहवा आभरण अधिक उदारी। अलकृत तनु सिणगारी ॥ अनुपम तनु सोवन वरणी। २७ एहवी देवानदा मन हरणी, की वी पूर्व भव मे करणी।। २८ दास्या कृटजका साथ घणेरी, विल चिलात देशज केरी। जाव शब्द थी एह अनेरी।। २६ वामणी हस्व तन् नी कहियै, वडभी' हियो ऊची लहियै। वव्यरी वव्यर देश नी गहियै।। ३० वर्सिया देश नी उपनी, ऋषिगणिका देश नी निपनी। वासीगणिका देश नी जन्नी॥ ३१ उपनी योनिका देश केरी, पल्हवित देश नी पिण चेरी। देश ल्हासिया तणी घणेरी ॥ ३२ देश लउसिया नी प्रकाशी, आरव दमिल सिहल देश वासी। पुलिदि पक्कण नी गुणरासी।। ३३ वहिल मुरुड देश नी जाणी, सब्बर पारसी देश नी स्थाणी। वहविध जनपद थी आणी ॥ ३४ नेहवा देश तणी अपेक्षायो, अन्य देश विषे पिण थायो। तिके की घी एक ठी ताह्यो।। ३५ निज देश विपे ते जाणी, वस्त्र पहिरै जेम पिछाणी।। ग्रहण कियो है वेप सयाणी।। ३६ इगित चेप्टा नेत्रादि, चितित पर चितव्य सावि।

३८ वरिसघर ते नपुसक की घा, स्थिवर प्रयोजने सुप्रसिघा।
जावै अते छर मे सी घा।।
३६ कचुइज पोलिया गहियै, महतरग तणो अर्थ कहियै।
अते छर ना कार्य चितवियै।।
४० एतला ना वृद थी अमदा, परवरी थकी देवानदा।
अते छर थी नी कली आनदा।।

चेटिका

एतो जाणै घर अहलादि॥

चक्रवालज

वद ॥

कुशल डाही विनीत अमद।

# सोरठा

४१. वली सर्व ए जाण, अन्य वाचना नै विषे। छै साक्षात पिछाण, एहवु आख्यु वृत्ति मे।। ४२ \*जिहा वाहिरली उवट्ठाण साला, जिहा घामिक यान निहाला। तिहा आवी छै गुणमाला।।

ैलयः राणी भाखै सुण रे सूड़ा २. जिसका थागे का भाग निकला हुआ हो ।

३७. प्राथित परवांछा जाणद,

२६. जाव अप्पमहम्घाभरणालिकयमरीरा

२८ वहूँ हि युज्जाहि, चिलातियाहि जाव

२६ 'वामणियाहि' ह्रस्यशरीराभि 'वडहियाहि' मडह-कोण्ठाभि. 'वव्यरियाहि (वृ० प० ४६०)

३०. पत्नोसियाहि ईसिगणियाहि वामगणियाहि (व० प० ४

(वृ० प० ४६०)

३१. जोण्हियाहि परहवियाहि ल्हासियाहि

(वृ० प० ४६०)

३२. लजिमयाहि आरबीहि दिमलाहि मिहलीहि पुनिदीहि पक्तणीहि (वृ० प० ४६०)

३३,३४. वहलीहि मुरुडीहि सवरीहि पारमीहि णाणादेस-विदेसपरिविडियाहिं नानादेशेम्यो— बहुविद्यजनपदेभ्यो विदेशे— तहेशापेक्षया देशान्तरे परिविण्डिता या.

(बृ० प० ४६०)

३५. सदेसनेवत्थगहियवेसाहि (वृ० प० ४६०)

३६,३७. 'इगियचितियपित्ययिवयाणियाहि' इङ्गितेन— नयनादिचेष्टया चिन्तित च परेण प्रायित च— अभिलपित विजानन्ति य।स्तास्तया ताभि 'कुसलाहि विणीयाहि' युक्ता इति गम्यते 'चेडियाचवकवाल' (वृ० प० ४६०)

३६-४०. विरसधर-थेरकचुइज्ज-महत्तरकवदपरिविखता'
वर्षधराणा—विधितककरणेन नपुमकीकृतानामन्त
पुरमहत्त्वकाना 'थेरकचुइज्ज' ति स्यविरकञ्चिकिना
—अन्त पुरप्रयोजनिनवेदकाना प्रतीहाराणा वा
महत्तरकाणा च – अन्त पुरकार्यचिन्तकाना वृन्देन
परिक्षिप्ता (वृ० प० ४६०)

४१. इद च सर्वं वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति । (वृ० प० ४६०)

४२. निग्गच्छित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ,

१ अगसुत्ताणि मे वाचनान्तर का पाठ उद्धृत किया है, वहा 'वजिसपाहि' पाठ है। जोड इसी पाठ के आदार पर की हुई प्रतीत होती है। पर वृत्ति मे इस स्थान पर 'पओसियाहि' पाठ है। इस सन्दर्भ मे समग्र पाठ वृत्ति से लिया गया है। इसलिए यहां भी उसे ही उद्धृत किया जा रहा है। ४३ तेह धार्मिक यान प्रधान, आरूढ थर्ड गुणवान।
मन हरप घणो असमान।
४४ शत नवम तेतीसम देश, एक सौ ने छन्नूमी एस।
कही ढाल रसाल विशेप।।
४५. भिक्षु भारीमाल ऋपिराय, सुख सपित 'जय-जश' पाय।
गण आनद हरप सवाय।।

४३. उवागच्छिता घम्मियं जाणप्यवरं दुरूढा । (श॰ ६।१४४)

#### ढाल १६७

#### दूही

- १ ऋपभदत्त तिण अवसरे, देवानंदा साथ। धार्मिक यान प्रधान प्रति, आरूढ थकै विख्यात ।। २. पोता ने परिवार करि, परवरियो पुन्यवत।
- साहणकुड जे ग्राम ते, नगर मध्य निकलत।।
- ३ चैत्य जिहा वहुसाल छै, तिण ठामे आवत। छत्रादिक जितवर तणा, वर अतिशय देखत।।
- ४ घामिक यान प्रधान प्रति, तिण ठामे स्थापत । घामिक यान प्रधान थी, ऋपभदत्त उतरत ।।
- ५ भगवत श्री महावीर प्रति, पर्चावधे पहिछाण। अभिगम करि सनमुख गमन, सखर साचवै जाण।।
- ६ सचित्त द्रव्य पुष्पादि तज, जिम बीजे शतकेह। नचमुद्देशा मे कह्यो, ते विघ इहा कहेह।।
- ७ जाव त्रिविध पर्युपासना, मन वच काया जाण। शुद्धपणे सेवा करै, अधिक उलट मन आण।।

भजगतारक वीर जिनदा, लाल सुगणजी। (ध्रुपद)

- द देवानदा तिण अवसर, लाल सुगण जी,
  - वर घामिक रथ थी उत्तर जो।।
- ६ वह कुब्ज साथ सचरी, जाव महत्तर वृद परवरी।।
- १० प्रभु प्रति पचविध चित्त त्यावै, अभिगम करि सन्मुख जावै।।
- ११ द्रव्य सचित्त पुष्पादि पिछाणी, तसु अलगा मूकै जाणी।।
- १२ द्रव्य अचित्त् वस्त्रादि वारू, ते अणतजवे सुख सारू॥
- १३ गात्रलट्टी ते देही, ते नमी विनय करि तेही॥
- १४ चक्षु देखता मन मोडै, अजिल बेहु कर जोड़ै।।
- \*लय: सुखपाल सिहासण लायज्यो राज

- १ तए णं से उसभदत्ते माहणे देत्राणदाए माहणीए सद्धि धम्मिय जाणप्यवरं दुरुढे समाणे
- २ नियगपरियालसपरिवृढे माहणकुडगाम नगर मज्झ-मज्झेण निग्गच्छइ,
- ३ जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छिता छत्तादीए तित्यकरातिसए पासइ,
- ४ धम्मिय जाणप्पवर ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाण-प्पवराक्षो पच्चोरुहइ,
- प्रसमण भगव महावीर पचिवहेण अभिगमेण अभि-गच्छति,
- ६,७ सिन्वताण दव्ताण विओसरणपाए एव जहा वितियसए [२।६७] जाव (स॰ पा॰) तिविहाए पञ्जुवासणाए पञ्जुवासद । (श॰ ६।१४४)
  - न तए ण सा देवाणदा माहणी धम्मियाओ जाणव्य-वराओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता
  - ह. वहूहि खुज्जाहि जाव • महत्तरग-वदपिक्खित्ता
- १०. समण भगव महावीर पचिवहेण अभिगमेण अभिगच्छइ,
- ११ सिचत्ताण दव्वाण विओसरणयाए पुष्पताम्बूलादिद्रव्याणा व्युत्सर्जनया त्यागेनेत्यर्थ (वृ० प० ४६०)
- १२ अचित्ताण दव्वाण अविमोयणयाए वस्त्रादीनामत्यागेनेत्यर्थ (वृ० प० ४६०)
- १३ विणयोणयाए गायलट्टीए
- १४. चक्खुप्फासे अजलिपग्गहेण

१५. मन चंचल ते स्थिर करते, विघ पंच एम अनुसरते ॥ १६ जिहा भगवत श्री महावीर, तिहा आवै छै गुणहीर ॥ १७ प्रभु प्रति त्रिणवार विचक्षण, दक्षिण कर थकी प्रदक्षिण ॥

१८ वदै वच स्तुति वरती, विल नमस्कार आति करती।। १९ द्विज ऋपभदत्त प्रति जाणी, आगल कर रही सयाणी।।

# सोरठा

२०. ठिया चेव नो ताय, छै जन्दार्थ स्थिता रही।
वृत्तिकार कहिवाय, ऊभी पिण वैठी नही॥
२१ 'ठागित निवृत्ति घातु, वैसण रो पिण अर्थ ह्वं।
ऊभी तणो कहातु, कारण को दीसै नही॥
२२ सूत्र उवाई' माय, कोणिक नृप राण्या सहित।
श्री जिन वदन आय, एहवु आख्यू छै तिहा॥
२३ कोणिक कर अगवाण, रमण सुभद्रा प्रमुख जे।
ठिया पाठ पहिछाण, सेव करै प्रभु पे रही॥

२४ जिन वाणी सुण ताम, कोणिक ऊठै ऊठ नै। जिन वदी सिर नाम, आयो जिण दिशि ही गयो।। २५ रमण सुभद्रा आदि, ऊठै ऊठी नै तदा। जिन वदी अहलादि, नमण करी ते पिण गई।। २६ जो वैठी नींह होय, तो ऊठै ऊठी करी। इम किम आख्यो जोय, पाठ देख निर्णय करो।। २७ तृतीय उत्तराभयण, सुरवर जे सुरलोक मे। ठिच्चा रही सुवयण, चवी मनुष्य मे ऊपजै।। २८ इहा पिण घातू तेह, अर्थ हुवै ऊभा तणो। तो स्यू सुर वर जेह, मुरलोके वेसे नही।। २६ तिण कारण अवलोय, पठा धातू नो अर्थ जे। वेसण नो पिण होय, नियम नयीं ऊभा तणो॥' (ज०म०) ३० परिवार सहित विधि घरती, सुश्रूपा सेवा करती।। ३१ वले नमस्कार जिर नमती, सन्मुख विनये करि रमती। ३२ कर जोड करै इम सेवा, तसु करण जोग सुघ लेवा।। ३३ तिण अवसर देवानदा, प्रमु पेखता आणदा।। ३४. पुत्र स्नेह थकी सुख पायो, स्तनमुखे दूव तव आयो।।

३५ सुत दर्शन करि चित ठरिया, आनद जल लोचन भरिया।।

३६ अति हरप-वृद्धि तनु थावै, विलिया मे वाह न मावै।।

- १६ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ,
- १७ समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ,
- १८. वदइ नमसइ,
- १६ उसभदत्त माहण पुरओ कट्टु
- २० ठिया चेव 'ठिया चेव' त्ति कद्ध्वंस्थानस्थितैव अनुपविष्टेत्यर्थ (वृ० प० ४६०)
- २३ तए ण ताओ सुभद्दपमुहाओ देवीओ ......कूणिय-राय पुरओ कट्टु ठिइयाओ चेव सपरिवाराओ अभिमुहाओ विणएण पजलिकडाओ पज्जुवासित (ओवाइय सू० ७०)
- २४. तएण से कूणिए राया भिभसारपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा ... जामेव दिस पाउन्भूए तामेव दिस पिडगए। (ओवाइय सू० ८०)
- २७ तत्य ठिच्चा जहाठाण, जनवा आउनखए चुया। उर्वेति माणुस जोणि, से दसगेऽभिजायई।। (उत्तर० ३/१६)

३० सपरिवारा सुस्सूसमाणी

३१ नमसमाणी अभिमुहा विणएण

३२ पजलिकडा पज्जुवासइ । (श॰ ६/१४६)

३३ तए ण सा देवाणदा माहणी

३४ आगयपण्हया 'आयातप्रस्रवा' पुत्रस्नेहादागतस्तनमुखस्तन्येत्यर्थः

ॅ(वृ० प० ४६०)

३५ पप्पुयलोयणा प्रप्लुतलोचना पुत्रदर्शनात् प्रवित्ततानन्दजलेन (वृ० प० ४६०)

३६. सवरियवलयवाहा सवृतौ—हर्पातिरेकादतिस्यूरीभवन्तौ निपिद्धौ वलयै. —कटकै वींहू—भुजौ यस्या. सा (वृ० प० ४६०)

१. बो॰ सू॰ ६६,७०

१५. मणस्स एगत्तीभावकरणेणं)

३७ कंचुक ना अचल खुलिया, कस छूट तनु वृद्धि रलिया।।

३८ घन नी घारा करि हणिया, तरु कद पुष्प जिम फलिया।।

३६ तिम रोमकूप उलसाया, इम आनद अधिको पाया ॥ ४० दृष्टि प्रति अणमीचती, प्रभु पेख रही पुन्यवती ॥

४१ गोतम भगवत विशेखी, ए सगलो विरतन देखी।। ४२ प्रभुवदी नमण करता, लाल स्वाम जी,

हे भगवत । एम वदता ।। ४३ हे भगवत ए किण कारण, देवानदा गुण धारण ॥ ४४ स्तनमुखे दूध तसु आयो, आनद जल नेत्र भरायो ॥ ४५ विलिया में वाह न माने, कस छूटी कचुक भाने ॥ ४६. रू कूप तास उलसाया, जिम घन थी पुफ विकसाया ॥ ४७ देवानुप्रिय ने देखी, इणरे जाग्यो स्नेह विशेखी ॥ ४८ तुम जोय रही इक घारा, निह खडे निजर लिगारा ॥ ४६ निरखती मूल । धापै, इणरे तन मन प्रेमज व्यापै ।॥ ५० तव भगवत श्री महावीर, लाल गोयमा,

गोतम प्रति वदै सधीर ।।
(गोतम जी सुणियै कारण, लाल गोयमा ।)
५१ इम निश्चै गोतम जाणी, ए देवानदा स्याणी ।।
५२ ए ब्राह्मणी म्हारी मात, हू छू एहनो अगजात ।।

५३ रात्री वयासी ताह्यो, प्रभु रह्या कूल रै माह्यो ॥
५४ ए आचारण मे जाणी, इहा समचै वात वलाणी ॥
५५ तिण कारण देवानदा, आ रोम-रोम हुलसदा ॥
५६ प्रथम गर्भआघानु, ते पुत्र स्नेह करि जानु ॥
५७ तिण कारण प्हानो आयो, जाव रोम-कूप विकसायो ॥
५० मुभ इक घारा निरखती, मुभ देख-देख हरषती ॥
५० मिरखती निजर न खडे, पूरव सुत-नेह न छडे ॥
६० शत नवम तेनीसम देशो, इकसी सताणूमी एसो ॥
६१ भिक्षु भारीमाल ऋपिराया, 'जय-जश' सुख हरष सवाया ॥

३७ कचुयपरिक्खित्तिया
कञ्चुको—वारवाण परिक्षिप्तो—विस्तारितो हर्षातिरेकस्यूरीभूतशरीरतया यया सा (वृ० प० ४६०)

३८ धाराहयकलवग पिव मेघधाराभ्याहतकदम्बपुष्पमिव (वृ० प० ४६०)

३६ समूसवियरोमकूवा

४०. समण भगव महावीर अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ। (श० ६/१४७)

४१, ४२ भतेति । भगव गोयमे समण महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—

४३ किंण भते। एसा देवाणदा माहणी

४४ आगयपण्हया पष्पुयलीयणा

४५ सवरियवलयवाहा कचुयपरिविखत्तिया

४६. धाराहयकलवग पिव समूसवियरोमकूवा

४७-४६ देनाणुष्पिय अणिमिसाए दिहीए देहमाणी-देहमाणी चिटुइ ?

५० गोयमादि । समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी---

५१ एव खलु गोयमा <sup>1</sup> देवाणदा

५२ माहिणी मम अम्मगा, अहण्ण देवाणदाए माहिणीए अत्तए।

४३ · · · · · वासीतिहिं राइदिएहिं वीइनकतेहिं (आयार चूला १५/५)

४५-५७. तण्ण एसा देवाणदा माहणी तेण पुन्वपुत्तिसणे-हरागेण आगयपण्हया जाव (स० पा०) समूसवियरोम-कूवा

४८, ४६. मम अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठह । (श० ६/१४८)

- १ गोतम प्रति ए वीर जिन, आखी वात उदार। देवानंदा साभली, पामी तन मन प्यार॥ \*प्रभुजी । आप छो भय भजना जी। (ध्रुपद)
- २. श्री जिन-वचन सुणी देवानदा, होजी आतो पामी परम आनंदा ।।
- ३ भाग्यवत मुभ पुन्य सवाया, होजी एतो वीर म्हारी कूखे आया ॥
- ४ उत्पत्ति मूलगी तो छै म्हारी, होजी लियो क्षत्रियकुल अवतारी ॥
- ५ श्रमण भगवत म्हारा अगजातो,

होजी महै तो कदेय सुणी नहिं वातो।।

६ चरण केवल घर वीर विख्यातो,

होजी हुआ तीन लोक रा नायो।।

- ७ च्यार तीर्थ ना नायक स्वामी, होजी एतो मुक्ति जावा रा कामी ॥
- देवािंचदेव तीथंकर जानी, प्राम् वात नही कोड छानी।।
- ६ जग दीपक जल द्वीपा समान, होजी एतो तिरण तारण भगवान ॥
- १० अभयदायक जिनदेव विख्याता, होजी एतो ज्ञान चक्षु ना दाता ॥
- ११ राग-द्वेप अरि जीतणहारा, प्रभु गुण करि ज्ञान भडारा॥
- १२. अनिशय घारक आप जिनदा, होजी एतो मेटण भव दुग्व फदा ।।
- १३ जगत उद्घारक श्री जिन नीको,

होजी ओतो तीन भवन जग टीको ॥

- १४ नाथ अनाथा रा आप अमीरा, एतो घर्म चक्री जिन हीरा।।
- १५ ऐसा है वीर-प्रभ् गुण घार, होजी म्हे तो देख्यों है आज दिवार ॥
- १६. ते मुभ कुक्षि विषे अवतरिया, होजी ज्यानै पेखत लोचन ठरिया।।

१७ इम देवानदा हरप मन घरती,

होजी आतो श्री जिनदर्शन करती॥

## दूहा

१८. एह डाल कही वारता, सूत्र विषे ते नाय। परपराइ करि कही, अनुमानं कर ताय।।

१६. रैनवम तेतीसम देश विशालं, होजी आतो इकसी अठाणूमी ढाल ।।

२०. भिक्षु भारीमाल ऋषिराय पसायो,

होजी ओतो 'जय-जग' आनद पायो ॥

<sup>ै</sup>लय: आज अंवाजी रे नोपत वाजी

- १. तिण अवसर प्रभु वीर जिन, ऋपभदत्त नै ताय। देवानदा नै विल, मोटी परपद माय॥
- अति मोटी परपद विये, ऋषि परषदा माय।
   जाव परिपदा पडिगया, धर्म सुणी नै ताय।!
- ३ जाव शब्द मे अर्थ ए, मुनि-परपदा माय ॥ वाचयम मुनि नाम है, वचन गुप्त अधिकाय ॥
- ४ यती परपदा ने विषे, घर्म क्रिया रै माय। यत्नवान अतिही तिको, यती अर्थ कहिवाय।।
- प्र अनेक सय नी परिपदा, अनेक सय परिमाण। तास वृद परिवार जसु, इत्यादिक पहिछाण।। \*प्रभु मोरा शोभ रह्या मुनिगन भे, सुर नर परिषद वृदन मे।।

\*प्रभु मोरा शोभ रह्या मुनिगन मे, सुर नर परिषद वृदन में ॥ (ध्रुपद)

- ६ ऋपभदत्त ब्राह्मण तिण अवसर, जिन वच सुण हरव्यो मन मे । ७. अधिक सतोप पायो हिरदा विच, ऊठी ऊभा ह्वं तन मे ।।
- द. तीन प्रदक्षिण देई प्रभु नै, वदन स्तुति करि प्रणमे।। ६ वीर प्रतै कहै हे प्रभु । इमहिज, सत्य वचन तुभना जग मे।।
- १० जिम खधक कह्यो तिम यावत, ए तुम्है कहो छो तिमज गमे।। ११ एम कही जई कृण ईशाणे, आभरण माल्य उतार वमे।।
- १२ स्वयमेव लोच पच मुष्टी करि, वीर पे आय वर्दै प्रणमे।। १३. कर जोडी कहै जीव लोक प्रभु । समस्तपणे ए ज्वलित धमे।।
- १४. प्रकर्पे करि ज्वलित जीव ए, जरा मरण करि अधिक भमे।।
- १५ जिम खधक तिम दीक्षो लीघी, ऋपभदत्त मुनि चरण रमे।
- १६ जाव सामायक आदि देई ने, अग इग्यार भण्यो हिय मे।। १७ जाव वहु चौथ छट्ठ अट्टम तप, दशम तप किर आत्म दमे।। १८ जाव विचित्र तपे किर आतम, भावित वासित शासन मे।।

- १,२ तए ण समणे भगव महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणदाए माहणीए तीसे य महतिमहालियाए इमिपरिसाए जाव (स॰ पा॰) परिसा पडिंगया (श॰ ६/१४६)
- ३ यावत्करणादिद दृश्यं— मुणिपरिसाए (वृ०प०४६०) तत्र मुनयो—वाचयमा. वृ०प०४६०)
- ४. जइपरिसाए यतयस्तु—धर्मिकयासु प्रयतमाना (वृ० प० ४६०)
- ५. अणेगसयाए अणेगमगयवदाए अणेगसयवद परियालाए अनेकानि शतानि यस्याः सा तथा तस्यै अनेकणत । प्रमाणानि वृन्दानि परिवारो यस्या सा तथा तस्यै । (वृ० प० ४६०)
- ६,७. तए ण से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ठे उट्टाए उट्ठेइ,
- ५,६ समण भगव महावीर तिनखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेता वदइ नमसइ, विदत्ता नमिसत्ता एव वदासी—एवमेय भते । तहमेय भते ।
- १०,११. जहा खदओ जाव (म० पा०) से जहेय तुब्भे बदह त्ति कट्टु उत्तरपुरित्थम दिसिभाग अवक्कमित। अवक्किमित्ता सयमेव आभर-णमल्लालकार ओमुयइ,
- १२,१३ सयमेव पचमुद्विय लोय करेइ, करेता जेणेव समणे भगव महाबीरे तेणेव उवागच्छई ... वदइ नममइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अ।लित्ते ण भते । लोए,
- १४ पिलत्ते ण भते ! लोए, ञालित्त-पिलत्ते ण भते ! लोए जराए मरणेण य ।
- १५ एव एएण कमेण जहा खदओ तहेव पव्यइओ। (पा॰ टि॰ ७)
- १६,१७ जाव सामाइयमाइयाइ एनकारम अगाई बहिज्जइ अहिज्जित्ता बहुहि चउत्यष्ट्टटुम-दसम
- १८ जाव (स॰ पा॰) विचित्तेहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भानेमाणे

<sup>\*</sup>लय: हाजरी में स्वामीनाय हमेशा याद करू

- १ ते माहणकुड ग्राम नगर नै, पिश्चम दिशि मे पेख। इहा क्षत्रियकुड ग्राम जे, हुतो नगर विशेख।। २. वर्णक उवाई थकी, तेह क्षत्रियकुड ग्राम। नगर विषे क्षत्रिय-सुत, वसे जमाली नाम।। ३. समृद्ध धनादि परिपूर्ण, तेजवत ते जोय।। यावत अपरिभूत छै, पराभवि सकै न कोय।। ४ धन करि वल करि रूप करि, गज सकै निर्हि तास। इसो जमालीकुमर ते, पुन्यवत सुप्रकाश।। \*चरित्र जमाली नो तुम्हे साभलो रे।। (ध्रुपद)
- प्र ऊपर प्रसाद वर वैठा थका रे, अतिहि रभस करि तेह। आस्फालित मस्तक मृदग नारे, फूटवा नी पर जेह।।
- ६ द्वात्रिगत प्रकार अभिनय तणा, तेह थकी सवद्ध। अथवा पात्रे करी इम इक कहै, नाटक में सन्नद्ध।।
- ७ नानाविध वहु देश नी ऊपनी, चितहरणी तनु चग । प्रवर प्रधानज तिण तरुणी करी, सप्रयुक्त रस रग।।
- प्त जे जमाली ने पास रह्या छता, नृत्य करण थी जेह। नाटिकया नाचे विल जमाली तणा, गुण गावै घर नेह।।
- ह वाछित अर्थ प्रतेज पमाडवै, दिवरावते छते दान। जे वाजित्र वजावै तेहना, वाछितार्थ करण थी जान।।
- १० श्रावण भाद्रव पाउस फुन वर्षा, आसोज कात्तिक मत । मृगशिर पोप शरद ऋतु जाणवी, माह फागुण हेमत ॥
- ११ चैत वैशाख वसत ऋतु कही, जेठ आपाढ सुलेह। ग्रीष्म छेहडे ए छहु ऋतु भली, ते काल-विशेष विपेह।।
- १२ जिम जे-जे ए छहु ऋतु नै विषे, ते ऋतु नो पहिछाण। सुख अनुभाव प्रते अनुभवतो थको, काल गमावतो जाण।।
- १३ वल्लभ शब्द फरिस रस रूप ने, विल शुभ गघ करेह। पच-विध मनुष्य तणा काम भोगने, भोगवतो विचरेह।।
- \*लय: साधुजी नगरी आया सदा मला रे
- १ ओवाइय सू० १

- तस्स ण माहणकुडग्गामस्स नगरस्स पच्चित्यमे ण एत्थ ण खत्तियकुडग्गामे नाम नयरे होत्या—
- २. वण्णको । तत्थ णं खत्तियकुडग्गामे नयरे जमाली नाम खत्तियकुमारे परिवसइ—
- ३ बड्ढे दित्ते जाव बहुजणस्स अपरिभूते,
- ५ उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहि मुइगमत्थएहि
  'फुट्टमाणेहि' ति अतिरभसाऽऽस्फालनात्स्फुटिद्भिरव (वृ० प० ४६२)
- ६ बत्तीसतिबद्धेहिं णाडएहिं 'बत्तीसतिबद्धेहिं' ति द्वात्रिशताऽभिनेतच्यप्रकारैं पात्रैरित्येकें (वृ० प० ४६२)
- ७ वरतरुणीसपउत्तेहिं
- प्रवित्ति च्याणे-उवनिष्यजमाणे, उविगिज्जमाणे-उविगिज्जमाणे, 'उवनिष्यजमाणे' त्ति उपनृत्यमान तमुपश्चित्य नर्त्त-नात् 'उविगिज्जमाणे' त्ति तद्गुणगानात् (वृ० प० ४६२)
- धवनालिज्जमाणे-उवनालिज्जमाणे,
   'उवनालिज्जमाणे' ति उपनाल्यमान ईप्सितार्थ-सम्पादनात्
   (वृ० प० ४६२)
- १०. पाउस-वासारत्त-सरद-हेमत'पाउसे' त्यादि, तत्र प्रावृट् श्रावणादि वर्पारात्रोऽश्वयुजादि शरत् मार्गशीर्पादि हेमन्तो माघादि ।
  (वृ० प० ४६२)
- ११ वसत-गिम्ह-पज्जते छप्पि उक वसन्त चैत्रादि ग्रीष्मो ज्येष्ठादि '''''''ऋतून्' कालविशेपान् (वृ० प० ४६२)
- १२. जहाविभवेण माणेमाणे, काल गालेमाणे, 'माणमाणे' ति मानयन् तदनुभावमनुभवन् 'गालेमाणे' ति 'गालयन्' अतिवाहयन् । (वृ० प० ४६२)
- १३ इहे सद्द-फिरस-रस-रुव-गद्ये पचित्रहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ। (श० ६।१५६)

- १४ तव क्षत्रियकुड ग्राम नगर विषे, सिंघाटक त्रिक चउनक। चच्चर यावत वहु जन वोलता, एक-एक ने वक्क ॥ १५ जिम उववाइ-उपगे' आखियो, जावत इम पन्नवेह। तेह विषे ए फुन दाख्यो तिको, लेश थकी निसुणेह ।।
  - सोरठा
- १६ जन-व्यूह जन समुदाय, वोल ते अव्यक्त वर्ण। ध्वनि कलकल तेहिज ताय, वचन विभागज लाभने।।
- १७. जन-ऊर्मिम ए जान, लोक तणु सवाच जन-उत्कलिका मान, अति लघु जे समुदाय ते॥
- १८ जन-सन्निपातज सोय, अपर-अपर स्थानक थकी। वह जन न अवलोय, मिलवू जे इक स्थानके ॥
- माहोमाहि, इम आर्खे सामान्य थी। विल इम भाखे ताहि, प्रगट पर्यायज वचन करि।।
- २० एहिज अर्थ जु दोय, पर्याय थी अनुक्रम करि। छै अवलोय, चित्त लगाई साभलो।।
- २१ ⁴डम पन्नवेइ कहितां विशेष थी, जन कहै माहोमाय। एव परूवेड तह प्ररूपणा, करता जन समुदाय ॥
- २२ इम निश्चै देवानुप्रिया । श्रमण भगवत महावीर। वर्म नी आदि तणा करणहार छै, जाव सर्वज संवीर।।
- २३ भला ने पघारचा हो श्री महावीरजी, जगत उघारण जिहाज। पूर्ण ज्ञान दर्शन करि परिवर्या, जयवता जिनराज।।
- २४ देखणहार प्रभु सर्व वस्तु ना, माहणकुड ग्राम जेह। नगर ने वाहिर छै भलु, वहुसाल चैत्य विवेह ।।
- २५ यथाप्रतिरूप जाय विचरै प्रमु, इहां जाव शब्द मे जान। अवग्रह प्रति ग्रही सजम तप करी, आतम भावित मान ।।
- २६ ते भणी महाफल देवानुशिया । निश्चै करिनै न्हाल। तथारूप अरिहत तणो वलि, भगवत नो मुविञाल।।
- २७. जिम उववाई उपग विषे कह्यु, जाव इक दिशि साहमा जाय। सूत्र उवाई में जे आखियों, ते निसुणो चित ल्याय।
- २८ नाम गोत्र जिन नो मुणवे करी, मोटो फल छै तास। तो स्यु भहियो रातमुख गमन नो, इहां जयणा सुविमास ॥
- २१. वदन स्तुति करवा नु वलि, नमस्कार जिर नाम। प्रश्न पूछ्या नो विल किह्वो किसु, मोटो फल गुण वाम ॥

\*लय: साधुजी नगरी आया सदा भला रे

१४,१५ तए ण खत्तियकुडग्गामे नयरे सिघाडग-तिक-चउक्क-चच्चर-जाव (स॰ पा॰) वहु जणसद्दे इ वा जाव एव भासइ

- १६. जणवूहे इ वा जणवीले इ वा जणकलकले इ वा 'जनव्यूह' जनसमुदाय वोल:-अव्यक्तवर्णी ध्वनि. कलकल:---स एवोपलभ्यमानवचनविभाग. (वृ० प० ४६३)
- १७. जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा र्कीम्म.-सम्बाध. उत्कलिका-लघुतर समुदाय
- १८ जणसण्णिवाए इ वा सनिपात - अपरापरस्थानेभ्यो जनानामेकत्र मीलन (वृ० प० ४६३)
- १६ वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एव भासइ, आख्याति -- सामान्यत भापते -- व्यक्तपर्यायवचनत , (बृ० प० ४६३)
- २० एतदेवार्थंद्वयं पर्यायत क्रमेणाह -- (वृ० प० ४६३)
- २१ एव पण्णवेइ, एव परुवेइ,
- २२ एव खलु देवाणुष्पिया । समणे भगव महावीरे आदि-गरे जाव मन्वण्णू
- २४ सव्वदरिमी माहणकुडग्गामसस नगरसस बहिया वहु-सालए चेइए
- २५ अहापिडरूव ओग्गह ओगिण्हिता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।
- २६. त महप्फल खलु देवाणुष्पिया । तहारूवाण अरहताण भगवताण
- २७ जहा ओववाइए [सूत्र ५२] जाव एगाभिमुहे 'जहा उववाइए' त्ति, तदेव लेशतो दर्श्यते---

(वृ० ५० ४६३) २८,२६. त महप्फल खलु भो देवाणुष्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवताण

नामगोयस्तवि सवणयाए किमग पुण अभिगमणवदण-णमसणपिंदपुच्छणपज्जुवासणयाए (ओवाइय सू ४२)

(वृ० प० ४६३)

१. बो० सू० ५२

३०. ''इहा महाफल सार, प्रश्न पूछवा नु कह्यूं। ते जयणा स्यूं धार, तिम जयणा सू गमन फल।। ३१ निरवद्य कारज एह, मन जिन ने वदण तणो। तसु अर्थे पग देह, जयणा थी ते पिण पवर।। ३२ मन वचन ने काय, निरवद्य ए त्रिहु योग नी। आज्ञा दे जिनराय, ते काय भली किम प्रवर्ते॥ ३३ मुनि प्रतिलाभण हेत, अथवा दर्शण निमित्त जे। सू पग देत, तथा करादि ऊभो ह्वं ते वेस नै। ३४ जयणा स् अवलोय, प्रतिलाभै वदै मुनि।। ऊभो होय, ३५ पिण ते हस्त थकीज, वहिरावै तनु योग थी। जुद्ध जयणा थीज, एहमे श्री जिन आगन्या।। ३६ गृही ने न कहै स्वाम, चःलो तथा हलाव तू। ते किण कारण ताम ? सभोग नहीं छै ते भणी।।" (ज० स०)

३७ \*डक पिण आर्य धार्मिक सुवच नो साभलवै फल सार।
तो स्यू किह्वो विपुलज अर्थ नै, ग्रहवै किर सुविचार।।
३६ ते माटै हे देवानुप्रिया जावा आपा ताम।
श्रमण भदत वीर प्रभु विदयै, करा नमस्कार शिर नाम।।
३६. सतकारा आदर देवा विल, फुन सनमाना स्वाम।
प्रभु जोग भिक्त करिवै करी, निरवद्य ते अभिराम।।

४० कल्लाण हेतु किल्याण ना, विल प्रभुजी मगलीक। दुरित विघन उपगम करिवा तणा, हेतू स्वाम सधीक।।

४१. तीन लोक ना अधिपति ते भणी, देवय देवाधिदेव। सुप्रशस्त मन हेतु स्वाम जी, तिण सू चैत्य कहेव।।

# सोरठा

- ४२. शब्द देवय सोय, विल चैत्य नो अर्थ जे। इहा कह्यो अवलोय, रायप्रश्रेणी वृत्ति थी।। ४३ \*विनय करी सेवा प्रभु नी करा, ए स्वाम वदना आदि। आपारे पर भव जन्मातरे, फुन इहभव अहलादि॥ ४४ हियाए हित ने अर्थे अछै, पत्य अन्नवत पेख। सुहाए सुख ने अर्थे अछै, वदनादिक सुविशेख॥
- ४५ खमाए सर्व वस्तू मेलवा, समर्थ अर्थे सोय। निस्सेयसाए कहिता जाणवू, मोक्ष अर्थे अवलोय।।

- ३७ एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमंग पुण विजलस्स अट्टस्स गहणयाए
- ३८ त गच्छामो ण देवाणुष्पिया । समण भगव महावीर वदामो णमसामो (ओ० सु० ५२)
- ३६ सक्कारेमो सम्माणेमो (ओ० सू० ५२) 'सक्कारेमो' ति सत्कुमं आदर वस्त्राद्यचंन वा विदष्टम 'सम्माणेमो' ति सन्मानयाम उचित-प्रतिपत्तिभि (ओ० वृ० प० १०६)
- ४० कल्लाण मगल (ओ० सू० ५२) कल्याण—कल्याणहेतुत्वादभ्युदयहेतु मगल—दुरितो-पशमहेतु (ओ० वृ० प० १०६)
- ४१ देवय चेइय (ब्रो० सू० ५२) देवता —देव त्रैलोक्याधिपतित्वात्, चैत्य सुप्रशस्त-मनोहेतुत्वात् (रायपसेणइय वृ० प० ५२)
- ४३ पज्जुवासामो एय णे पेच्चमवे 'इहभवे य'

(ओ० सू० ५२)

- ४४ हियाए सुहाए (ओ० सू० ५२)
  'हियाए' ति हिताय पथ्यान्नवत् 'सुहाए' ति सुखाय
  सर्मणे (ओ० व० प० १०६)
- शमंणे (ओ० वृ० प० १०६) ४५ खमाए निस्तेयसाए (ओ० सू० ५२) 'खमाए' ति क्षमाए सगतत्वाय 'निस्तेयसाए' ति निश्रेयसाय मोक्षाय (ओ० वृ० प० १०६)

<sup>\*</sup>लय: साधुजी नगरी आया सदा भला रे

# सोरठा

- ४६. इणहिज भव रै माय, दालिद्र विघन मूकायवै। फुन परभव में ताय, कर्म मूकावा ने अरथ।।
- ४७. \*फुन जे भव नी परंपरा विषे, हुस्यै सुख नै अर्थ। इण हेतु थी प्रभुजी विदयै, कीजै सेव तदर्थ॥
- ४८ एम कहीने वहु उग कुलोत्पना, थापित आदिम देव। कोटवाल ना वन विषे थया, ते कुल उग्र कहेव॥
- ४९ उग्र पुत्र जे तेहनाईज छै, पुत्र पोतादि कुमार। इमहिज भोग राजन क्षत्रिय कह्या, वहु भट सुभट उदार।।
- ५० केइक वदण निमित्तज नीसर्या, केडक पूजण काज। इम सत्कार सम्मान ने, दर्शण निमत्त सुस्हाज।।
- ५१ इम कोतुहल निमित्तज नीसरचा, इत्यादिक अवधार। जावत इक दिशि सन्मुख जन वहु, चाल्या घर मन प्यार॥
- ५२ क्षत्रियकुड ग्राम नगर तणे, मध्योमध्य थड निकलेह। जिहा माहणकुड ग्राम नगर छै, जिहां बहुसाल चैत्य विपेह।।
- ५३. इम जिम उववाइ में आखियो, जाव त्रिविघ जोगेह। पर्युपासना सेवा करता छता, ढाल दोय सीमी एह।।

४७. आणुगामियत्ताए भिवस्सद (क्षे० सू० ५२) 'आणुगामियत्ताए' ति आनुगामिकत्वाय भवपरम्परामु सानुबन्धमुखाय भविष्यतीतिगृत्वा—इति हेनोरित्ययं.।

४८. इतिकट्टु वहवे उग्गा (बो॰ सू॰ ५२) 'उग्ग' ति बादिदेवावस्यापितारक्षवराजा

४६. उग्गपुत्ता भोगा राइन्ना प्यत्तिया भागा जोहा) (थो० सू० ५२)

'उग्गपुत्त' ति त एव कुमारावस्या

(ओ० वृ० प० १०६)

५०. अप्पेगइया वदणवित्तय एव पूयणवित्तय मक्कारवित्तय (सम्माणवित्तय) (वृ० प० ४६३)

५१. को उहलयित्तर्य (वृ० प० ४६३)

- ५२ खित्तयकुण्डग्गामं नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छित, निग्गच्छिता जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए,
- ५३. एव जहा भोववाइए (सूत्र ५२) जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासित। (श० ६/१५७)

हाल: २०१

# दूहा

- १ ते जमाली तदा, क्षत्रियकुमर ने ताप। ने अथवा जन-सन्निवाय।। जन-रव जाव ही, अथवा वहु जन देख। २. वहु जन रव सुणता थका, आश्रित एहवा, अध्यवसाय आतम विशेख। शब्द मे ३ जावत सम्यक ऊपना, जाव घार। चितित प्रार्थित वाछित स्मरण रूप ते, सार ॥
- ४ मनोगत मन मे रह्यु. वाहिर प्रकास्यु नाय। सकल्प विचार ऊपनो, ते सुणज्यो चित ल्याय॥ †वन माहै वीर पघार्या स्वामी, भविजन अन्तरजामी रे। दरसण कर वहु जन ऊम्हाया, हरप हिये हुलसाया रे॥ (ध्रुपद)
- १२ तए ण तस्स जमालिस्स खित्तयकुगारस्स त महया-जणसद् वा जाव जणसिन्नवाय वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झित्यए 'अज्झित्यए' त्ति आध्यात्मिक —आत्माश्चित. (वृ० प० ४६३)
- जाव (सं० पा०) समुप्पिज्ज्ञत्था
  यावत्करणादिद दृश्य—'चितिए' ति स्मरणरूपः
  'पित्यए' ति प्राथित —लब्धु प्राथित.

(वृ० ५० ४६३)

४ 'मणोगए' त्ति अवहि प्रकाशित 'सकप्पे' ति विकल्प (वृ० प० ४६३)

\*लय: साधुजी नगरी आया सदा भला रे †लय: लाल हजारी को जामो

२४० भगवती-जोइ

५ क्षत्रियकुड ग्राम नगर विषे स्यु, इन्द्र महोच्छव आजो रे। अथवा खघक कार्त्तिकेय नु महोच्छव,

के हरि वलदेव नो स्हाजो रे?

- ६ अथवा नाग देव नु महोच्छव, कै जक्ष व्यतर नो जाणी।
  अथवा भूत तणो महोच्छव छै कै कूप महोच्छव माणी।।
  ७ अथवा तलाव तणो महोच्छव छै, कै नदी महोच्छव न्हाली।
  अथवा आज महोच्छव द्रह नो, कै गिरि महोच्छव सुविशाली।।
  ८ अथवा रूख तणो महोच्छव छै, कै चैत्य महोच्छव चगो।
  अथवा मृतक वाले ते ऊपर, चोतरो थभ प्रसगो।।
  १ जे भणी ए वहु उग्र वश ना, ऊपना वर कुलभूता।
  भोगा भोग-वश में ऊपना, कै राजन-वश प्रसूता।।
  १० ईखाग वश तणा फुन ऊपना, ज्ञातपुत्र गुणवता।
  कोरव क्षत्रिय क्षत्रिय ना सुत, सुभट सुभटसुत मता।।
  ११ सेनापित सेना ना नायक, सीखदायक पसत्थारो।
  लेच्छकी जाति ना विल बाह्मण, इव्भ गजतईव्य भूमि मभारो।।
- १२ जिम उववाड माहि कह्यो छै, सार्थवाह मुखकारो। प्रमुख सगलाइ स्नान करी फुन, करि विल कर्म ववहारो॥
- १३ जिम उववाइ उपगे आख्यु, जावत निकलै ताह्यो। जन वृद इक दिशि सन्मुख जायै, स्यु महोच्छव पुर माह्यो॥
- १४ इम मन माहि विचारी जमाली, कचुइज पुरुप वोलायो। अत पुर नी चिता नो कारक, ते कचुइज ने कहै वायो।।
- १५ अहो देवानुप्रिया । क्षत्रियकुडज, ग्राम नगर रै माह्यो। आज महोच्छव इद्र तणो स्यु, जाव निकलै जन वृद ताह्यो ?
- १६ तिण अवसर ते पुरुप कचुइज, जमाली क्षत्रियकुमारो। इम पूछ्ये छते हरपित हुवो, पायो सतोष जिहवारो।।
- १७ श्रमण भगवत महावीर तणो जे, आगम आविव घारो। तेह विषे जै ग्रह्युकीधू जिण, निश्चय निर्णय सारो।।
- १ प्रहाथ दोनूड जोड जमाली नै, क्षत्रियकुमर प्रतेहो। जय विजय शब्द करिने वधावै, वधावी वचन वदेहो।।

# गीतक-छंद

- १६ जय त्व विजय त्व एहवै आशीर्वाद वचन कही। भगवत नु आगमन ते, आनद करि तुभ वृद्धि ही।।
- २० \*अहो देवानुप्रिया । क्षत्रियकुडज ग्राम नगर मे आजो। निश्चै नही छै इद्र महोच्छव, जाव निकलै तेहथी समाजो।।
- \*लय: लाल हजारी को जामो
- १ ओवाइय सूत्र ५२ के वाचनान्तर मे "पायदहरेण " 'एगदिसि एगाभिमुहे" पाठ है। देखें ओ० वृ० प० ११३

- ५. किण्णं अञ्ज खत्तियकुंडगामे नयरे इंदमहे इं वा, खदमहे इ वा, मुगुंदमहे इ वा, 'खदमहेइ व' ति स्कन्दमह — कार्तिकेयोत्मवः 'मुगुदमहेइ व' ति इह मुकुन्दो वासुदेवो वलदेवो वा (वृ० प० ४६३)
- ६ नागमहे इ वा, जन्खमहे इ वा, भूयमहे इ वा, क्वमहे इ वा,
- ७. तडागमहे इ वा, नईमहे इ वा, दहमहे इ वा, पन्वयमहे इ वा,
- ८ रुक्खमहे इ वा, चेइयमहे इ वा थूभमहे इ वा,
- ६ जण्ण एते वहवे उग्गा, भोगा, राइण्णा,
- १०. इक्खागा, णाया, कोरव्वा, खत्तिया, खत्तियपुत्ता भडा, भडपुत्ता,
- ११ जोहा पसत्यारो "" लेच्छई "" इन्म इन्म प्यत्यारो ति धर्म शास्त्रपाठका " " इम्या यद्व्रव्यिनचयान्तिरतो महेभो न दृश्यते (ओ० वृ० प० ११०)
- १२. जहा ओववाइए (ओ० सू० ५२) जाव (स० पा०) सत्यवाहप्पभितयो ण्हाया कयविलकम्मा
- १३,१४ जहा ओववाइए (ओ० सू० ५२) जाव खत्तिय-कुडग्गामे नयरे मज्झमज्झेण निग्गच्छति ? —एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कचुइ-पुरिस सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वदासी—
- १५, किण्ण देवाणुष्पिया ! अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ? (श० ६/१५८)
- १६. तए ण से कचुइ-पुरिसे जमालिणा खत्तियकुमारेण एव वृत्ते समाणे हट्टुतुट्टे
- १७ समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहिय-विणिच्छए।
- १८ करयल जाव (स० पा०) जमालि खत्तियकुमार जएण विजएण वद्घावेद, वद्घावेत्ता एव वयासी—
- १६. जय त्व विजयस्व त्विमत्येवमाशीर्वचनेन भगवत समागमनसूचनेन तमानन्देन वर्द्धयतीत भाव । (वृ० प० ४६३)
- २० नो खलु देवाणुष्पिया । अज्ज खत्तियकुडगगामे नवरे इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ।

- २१. अहो देवानुप्रिया । इस निब्नै करि, श्रमण भगवंत महावीरो । निज तीर्थ में आदि ना कर्त्ता, जाव सर्वज पुरुप संधीरो ।। २२ सर्व वस्तु नां देखणहारा, माहणकुंड इण नामे । ग्राम नगर मे वाहिर रूडो, वहु साल चैत्य सुवामे ।। २३. यथा योग्य अभिग्रह प्रति गृही ने, जावत विचर जाणी । ते भणी ए वहु उग्र वश नां, भोग-वश ना माणी ।।
- २४ जावत केइयक वदणा निमित्ते, यावत निकलै ताह्यो । मोटे मडाण करीनै वहु जन, वीर समीपे जायो ॥
- २५ जमाली क्षत्रिय-सुत तिण अवसर, कचुइज नर ने पासो।
  एह अर्थ सुण हिये घारी, पायो हरप सतीप विमासो।।
  २६ दोय सौ एकमी ढाल विपे कह्यु, जमाली मन हरपायो।
  भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, जय-जग' हरप सवायो।।

- २१. एवं खलु देवाणुष्पिया ! अन्ज (समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव सच्चण्ण
- २२. सन्वदिरसी माहणकुटम्गामरस नयरस्म बहिया बहुसानए चेइए
- २३. अहापिटिरुवं ओग्गह ओगिण्हित्ता मजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरद्द । तए ण एते वहवे उग्गा, भोगा।
- २४. जाच अप्पेगद्या वदणवत्तिय निग्गच्छति । (श० ६/१५६)
- २५ तए णं से जमानी यत्तियशुमारे कचुड-पुरिसस्स अंतियं एयमट्टं गोच्चा निमम्म हटुतुट्टे ।

## ढाल: २०२

## दूहा

- १ कोडुविक नर तेडने, वोले एहवी वाय। चउघट हय रथ जोतरी, मुभपै थापो ताय।।
- २ इहिवध जमाली कह्या, कोडुविक नर जाण। यावत रथ त्यारी करी, आज्ञा सूपी आण।।
- 3. तव जमाली क्षत्रिय-सुत, तिहा मज्जन घर सीध। तिहा आवै आवी करी, स्नान विल-कर्म कीध।।
- ४ जिम जवाइ ने विपे, परिपद वर्णक ख्यात। कोणिक नी परिपद कही, तिम कहिवो अवदात॥

वा०—जिम कोणिक नै उवाइ उपग नै विषे परिवार-वर्णक कहा ते वर्णक, तिम ए जमाली नो पिण । तिहा अनेक जे गणनायक प्रकृतिमहत्तर, दडनायक ते तत्रपालिका, राजा ते मडलीक, ईश्वर ते युवराजा, तलवर ते राज तुष्टमान थइ नै दीधो पट्टवध तेणे करीने विभूषित राजस्थानिका, माडविक ते छिन्नमडप ना अधिपती, कोटुविक ते केतलायक कृटुव थी ऊपना ते सेवक, मत्री प्रसिद्ध, महामत्री ते मत्री ना समूह मे प्रधान हस्ती ना दल इति वृद्धा । गणका ते गणित चास्त्र ना जाण, भडारी इति वृद्धा । दोवारिय ते पोलिया, अमच्च ते राज्य अधिष्ठायका, चेड ते पग नै मूल रहै, पीठमइ ते सभा नै विषे आसन के समीप रहै ते सेवक, नगर ते नगरवासी प्रजा, निगम ते कारणिक काण-मुल्हायदा वाला, सेट्ठि ते श्री देवता नो दीधो सुवर्णपट्ट करि विभूषित मस्तक जेहनो एतलै श्री देवी नो सुवर्ण

- १ कोटुवियपुरिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एव वयामी— खिप्पामेव भो देवाणुष्पिया । चाउन्घट आसरह जवट्ठवेह, जुत्ताभेव जबट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चिष्पणह। (श० ६।१६०)
- २. तए ण ते कोडुवियपुरिसा जमालिणा प्रत्तियकुमारेण एव वृत्ता समाणा चाउग्घंट आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेति, उवट्टवेत्ता तमाणत्तिय पच्चिष्पणित । (ण० १/१६१)
- ३. तए ण मे जमाली खत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ण्हाए कयविलकम्मे
- ४. जाव ओववाइए (ओ० सू०६३) परिसावण्णको तहा भाणियन्व

वा०—तत्रानेके ये गणनायका.—प्रकृतिमहत्तरा दण्डनायका.—तन्त्रपालका राजानो—माण्डलिका ईश्वरा—युवराजान तलवरा —पिरतुष्टनरपितप्रदत्त-पट्टवन्धिवभूपिता राजस्थानीया माडिम्बका छिन्न-मडम्बाधिपा कोडुम्बिका.—कितपयकुटुम्बप्रभव. अवलगका —सेवका मन्त्रिण प्रतीता महामन्त्रिणो —मन्त्रिमण्डलप्रधाना हिस्तसाधनोपिरका इति च वृद्धा । गणका —गणितज्ञा भाण्डागारिका इति च वृद्धा । दौवारिका —प्रतीहारा अमात्या—राज्याधि-प्रायका, चेटा,—पादमूलिका. पीठमई —आस्थाने

पट्टबंध मस्तक ने विषे छै जेहने, सेनापित ते सेना ना नायक, सार्थवाह, दूत, सिंधपाल ते राज्य-सिंध ना रक्षक, तेणे करि सिंहत परिवरचो ।

- ५ जावत ते चदन करी, लीप्योगात्र शरीर। सर्व अलकारे करी, थई विभूपित हीर।।
- ६ मजणघर सू नीकली. जिहा वाहरली सोय। उपस्थान-साला अछै, दिवानखानो जोय।।
- ७ जिहा च्यार घटा तणो, हय रथ त्या आवेह। चउघट हय रथ ऊपरें, चढै चढी ने तेह।।
- द सकोरट नामे तरु, तसु फूला नी माल। तिणे करीने छत्र ते, घरीजते सुविशाल।।
- ह मोटा सुभट अने नफर', अति विस्तार सुवृंद। तिण करिने वीट्युं थक्, शोभ रह्युं सुसकद।।
- १० क्षत्रियकुड नामे प्रवर, ग्राम नगर ने ताम। मध्योमध्य थई करी, निकलै निकली आम।।
- ११ जिहा माहणकुड प्रवर जे, ग्राम नगर अवलोय। तिहा चैत्य वहुसाल त्या, आवै आवी सोय।।
  - \*प्रभुजी जग प्यारे। ओ तो त्रिभुवनतिलक सुहायो, जिनजी हद प्यारे॥ (ध्रुपद)
- १२ तुरग ग्रहै ग्रही नै तामो, रथ थापै थापी तिण ठामो।।
- १३ रथ उत्तर उत्तरी तिवारो, छाडै फूल तवोल हथियारो।।
- १४ आदि शब्द थकी अवलोई, तजै चामर छत्रादी जोई।।
- १५ विल पानही पग थी तजतो, प्रभु भिक्त करै घर खतो।।
- १६ इक पट विचै सीवण नाही, तिण सु करि उत्तरासग त्याही ।।
- १७ शीच अर्थे उदक फर्शतो, चोखो अशीच द्रव्य टालतो।।
- १८ एह थकीज अवलोई, ओतो परम शुचिभूत होई॥
- १६ अजली कर सुप्रसीघ, दोडा नी पर जिण कीघ।।
- २० जिहा श्रमण भगवत महावीर, तिहा आवै आवी जिन तीर।।
  †करै शुद्ध सेव जिन देव नी क्षत्रिय-सुत। (घ्रुपद)

आसनासीनसेवका वयस्या इत्यर्थः । नगर—नगर-वासि प्रकृतय निगमा —कारणिका श्रेष्ठिनः श्री-देवताऽध्यासितसौवर्णपट्टिनभूषितोत्तमाङ्गा सेनापतयः —सैन्यनायकाः दूता —अन्येपा राजादेशनिवेदकाः सन्धिपाला—राज्यसन्धिरक्षका (वृ० प० ४६३,४६४)

- ५. जाव चदणुक्खित्तगायसरीरे सन्वालकारविभूसिए
- ६. मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला
- ७. जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उनागच्छइ, उवा-गच्छित्ता चाउग्घट आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता
- सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण
- ६. महयाभडचडकरपहकरवदपरिविखत्ते
- वित्तयकुडग्गाम नगरं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ,
   निग्गच्छत्ता
- ११. जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छद, उवागच्छित्ता
- १२. तुरए निगिण्हेइ, निगिण्हेता रह ठवेइ, ठवेता
- १३,१४ रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पुष्फतबोला-उहमादिय

इहादिशब्दाच्छेखरच्छत्रचामरादिपरिग्रह (वृ० प० ४६४)

- १५ पाहणाओ य विसज्जेति
- १६ एगसाडिय उत्तरासग करेड
- १७ आयते चोक्खे
  'आयते' त्ति शौचार्यं कृतजलस्पर्शः 'चोक्खे' त्ति
  आचमनादपनीताशुचिद्रव्यः (वृ० प० ४६४)
- १८. परमसुइन्भूए 'परमसुइन्भूए' त्ति अत एवात्यर्थं शुचीभूतः (वृ० प० ४६४)
- १६ अजलिमजलियहत्ये अञ्जलिना मुकुलिमव कृती हस्ती येन सः (वृ० प० ४६४)
- २० जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छेई, उवागच्छिता

१. सेवक

<sup>\*</sup>लय: ज्यांर शोभे केसरिया साड़ी

<sup>†</sup>लय: कड़खो

२१ श्रमण भगवंत महावीर प्रते वार त्रिण, जीमणा पासा थी जाव जाणी। त्रिविय-त्रिविय मन वचन काया त्रिहु जोग नी, पर्युपासनाइ करी सेव ठाणी।।

२२. श्रमण भगवंत महावीर तिण अवसरे,

जमानी क्षत्रिय सुतन नै जाणी। मोटी विस्तारवत ऋषि परिषद आदि नै,

जावत धर्म-कथा वखाणी।।

२३. \*जाव परपद गई निज स्थान, बारू वीर तणी सुण वान ॥ २४. जमाली क्षत्रियकुमर तिवारे, बीर वाणी सुणी हिये घारे॥

२५. वहु हरप सतोपज पायो, जाव हृदय अति विकसायो ॥
२६. ऊठवै करि ऊभो थावै, ओतो ऊभो थई डम भावै ॥
२७. एतो श्रमण भगवत महावीर, त्यानै तीन वार गुणहीर ॥
२८ जाव नमस्कार करि ताह्यो, ओतो वोनै इहविच वायो ॥
२८ सरघू छू हे भगवानं । निग्रैंथ नां प्रवचन जानं ॥
३०. प्रीत विपय करू छूं भदंत, निग्रैंथ ना प्रवचन तत ॥
३१. हूं तो रोचवु प्रभुजी ! उदारू, एतो निग्रेंथ प्रवचन वारू ॥
३२. उद्यमवत थयो छूं भदत ! एतो निग्रंथ प्रवचन तत ॥
३३. इमहिज प्रभुजी ! जे उक्त, जायमान प्रकार सजुक्त ॥

३४. तिमहिज हे भगवंत ! आप्त वच करि जाणियै तत।।

३५ अवितथ ए अन्यया न थाई, प्रभु ! किणही काल रै माही ॥

३६. हे भगवंत । सदेह रहीत, एतो आपरा वचन वदीत ।। ३७. जावत ते जिम एह, प्रभु तुम्है वदो छो जेह ।। ३८. जे एतलु विशेप सुवामी, अहो देवानुप्रिया । अतरजामी ।। ३९. कही ढाल दोयसो दूजी, प्रतिवोध्यो जमाली ने प्रभूजी ।। २१. समणं भगवं महाबीरं तिक्युत्तो आयाहिण-गयाहिण करेइ, करेत्ता वंदठ नममठ, विदत्ता नमंगित्ता तिविहाए पञ्जुवासणाए पञ्जुवासक (भ० ६/१६२)

२२. तए णं ममणे भगवं महाबीरे जमानिस्म सत्तिय-कुमारस्स, तीमे य महतिमहानियाए इमि जाव (स॰ पा॰) धम्मकहा

२३. जाव परिमा पटिगया । ( ण० ६/१६३ )

२४. तए ण से जमाली यत्तियकुमारे ममणस्य भगवशो
महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा नियम्म

२५. हट्ट जाय (सं० पा०) हियए

२६ चट्टाए उद्ठेइ, उद्ठेता

२७. ममण भगव महावीर तिक्युती

२८. जाव (स॰ पा॰) नमित्ता एव वयामी-

२६. सद्हामि ण भते ! निग्गयं पावयणं

३०. पत्तियामि ण भते ! निगाय पावयणं

३१. रोएमि ण भते । निग्गंथं पावयण

३२. अब्मुट्ठेमि णं भते ! निगायं पावयण

३३. एवमेयं भते !

'एयमेयं' ति उपलक्यमानप्रकारवत् (वृ० प० ४६७)

३४. तहमेय भते । 'तहमेय' ति आप्तयचनावगतपूर्वाभिमतप्रकारवत् (वृ० प० ४६७)

३६. असदिखमेयं भते !

३७. जाव (म० पा०) से जहेयं तुरने यदह

३८. ज नवरं-देवाणुणिया !

ढाल: २०३

दूहा

मात पिता ने पूछसूं, तठा पछै अवघार।
 देवानुप्रिय आगलै, मुंड थई ने सार।।

 अम्मापियरो आपुच्छामि, तए ण अह देवाणुप्पियाण अंतिय मुडे भिवत्ता

<sup>\*</sup>लय: ज्यांदै शोभे केसरिया साड़ी

- २ गृहस्थावास अगार थी, अणगारपणां प्रतेह। अगीकार करसू सही, निमल चरण गुणगेह।।
- ३ जिम सुख देवानुप्रिया । मा प्रतिवध करेह। जमाली जिन वचन सुण, हरप सतीप लहेह।।
- ४. श्रमण भगवत महावीर नै, तीन वार घर खत। जावत नमण करै करी, चउघट रथे चढत।।
- ५ श्रमण भगवत महावीर ना, समीप थी अवलोय। यहुसाल नामा चैत्य थी, पाछो निकलै सोय।।
- ६. सकोरट पुफमाल करि, जावत छत्र घरेह। मोटा भट नफरे करी, जावत वीट्यू जेह।।
- ७ जिहां क्षत्रियकुड जे, ग्राम नगर तिहा आय। क्षत्रियकुड ग्राम नगर मे, मध्योमध्य थइ ताय।।
- द जिहा पोता नो घर अछै, जिहा वाहिरली जेह। उपस्थान-साला तिहा, आवै आवी तेह।।
- ह. तुरग प्रति ग्रहै ग्रही करी, रथ प्रति स्थापै सोय। रथ थापी फुन रथ थकी, उतरै उतरी जोय।।
- १० जिहा अभ्यतर माहिली, उवस्थान जे साल। जिहा मात अरु तात त्या, आवै आवी न्हाल।।
- ११ मात पिता ने जय विजय, वचने करी वधाय। जय विजय गटद वधायने, वोलै एहवी वाय।।

# \*हू अरज करूं छू आपसू ।। (ध्रुपद)

- १२ इम निश्चै करि म्है सही, अहो मात पिता सुखदाय। हो माजी । श्रमण भगवत महावीर पै म्है, धर्म सुण्यो चित ल्याय।। हो पिताजी!
- १३ ते पिण धर्म म्है विछियो, वछ्यो विल वारूवार । हो माजी । अथवा भाव थी पडिवज्यो, ते पडिच्छिय सुविचार ।। हो पिताजी ।
- १४ अभिरुइय ते धर्म नो स्वादपणा प्रति पाय। हो माजी । ओपमा वाची ए शब्द छै, सरस धर्म सुखदाय।। हो पिताजी ।
- १५ तिण अवसर जमाली तणा, मात पिता हरपाय। रे जाया। जमाली क्षत्रियकुमर नै, वोलै एहवी वाय।। रे जाया। विन्य धन्य पुत्र। धन्य तू।
- १६ घन्य लिच्च छै ते भणी, अहो पुत्र । तू घन्न । रे जाया । कृतार्थ पुत्र तू अछै, कीचू निज प्रयोजन्न ॥ रे जाया ।
- १७ कीघू छै पुन्य पुत्र ! तै, पिवत्र घर्म उदार। रेजाया ! अर्थ सिहत लक्षण देह ना, तू कृत-लक्षण सार॥ रेजाया!

- २ अगाराओ अणगारिय पव्वयामि ।
- ३. अहासुह देवाणुष्पिया । मा पडिवध । (श० १।१६४)
- ४ समण भगव महाविश्र-तिक्खुत्तो जाव (सं पा ) नमसित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहइ
- प्रमणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ वहुसालाओ चेइयाओ पिडिनिक्खमइ
- ६. सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण महया भड-चडगरपहकरवदपरिक्खित्ते
- ७ जेणेव खर्तियमुहम्मामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता खत्तियमुहम्माम नयर मज्झमज्झेण
- जेणेव सए गेहे जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
- ह. तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चीरुहइ, पच्चीरुहित्ता
- १० जेणेव अन्भितरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव अम्मा-पियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
- ११ अम्मापियरो जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयासी-
- १२ एव खलु अम्मताओं। मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे निसते
- १३. से वि य में धम्मे इन्छिए, पिंडिन्छिए 'पिंडिन्छिए' ति पुन पुनिरिष्टः भावतो वा प्रतिपन्न (वृ० प० ४६७)
- १४ अभिरुइए (श० ६।१६५) 'अभिरुइए' ति स्वादुभाविमवीपगत (वृ० प० ४६७)
- १५. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी---
- १६ धन्ने सि णं तुम जाया । कयत्ये सि ण तुम जाया । 'कयत्येऽसि' ति 'कृतार्थं 'कृतस्वप्रयोजनोऽसि (वृ० प० ४६७)
- १७. कयपुण्णे सि ण तुम जाया । कयलक्खणे सि ण तुम जाया !
- ्. 'कयलक्खणे' त्ति कृतानि—सार्थकानि लक्षणानि— देहचिह्नानि येन स कृतलक्षणः । (वृ० प० ४६७)

<sup>\*</sup>ल्यः जी स्वामी म्हारा राजा नै धर्मं सुणावज्यो

- १८ जे भणी श्रमण भगवंत नै, महावीर नै पास। रे जाया । वर्म सुणी ते पिण वर्म ने वाछ्यो आण हुन्तास।। रे जाया ।
- १९ पडिच्छिय कहिता तिको, वंछ्यो वारूवार। रे जाया ! अभिरुइय स्वाद भाव जे, पाम्यो तू सुखकार॥ रे जाया !
- २० क्षत्रिय सुत जमाली तदा, मात पिता ने ताय। हो माजी! दितीय वार पिण विधि करी, वोलै एहवी वाय।। हो पिताजी!
- २१. डम निश्चै माता । पिता । श्रमण भगवत वीर पास । हो माजी ! वर्म सुणी दिल घारियो, जाव रोचव्यो हुलास ॥ हो पिताजी ।
- २२ ते माटै माता ! पिता ! चतुर्गतिक ससार । हो माजी ! तेहनां भय थी उद्देग जे, पाम्यो खेद अपार ।। हो पिताजी !
- २३. वीहनो जनम मरणे करी, ते माटै अववार। हो माजी ! वाळू छूं हे माता ! पिता !, तुम्ह आजा थया सार।। हो पिताजी !
- २४ श्रमण भगवत महावीर पै, मुंड थई घर त्याग। हो माजी । वर अणगारपणा प्रतै, पडिवजवू जिव माग।। हो पिताजी ।
- २५. जमाली क्षत्रियकुमर नी, माता ते तिण वार । हो भवियण ! तेह अनिष्ट अवछका, वचन सुण्या दुखकार ।। हो भवियण ! (विरुक्षो मोह ससार मे ।)
- २६. अकात ते मनोहर नही, अप्रिय अप्रीतिकार। हो भवियण । अमनोज्ञ मन मे न जाणिय, वच नु सुदरपणु सार।। हो भवियण ।
- २७. अमणाम ते मन नै विपे, नहीं संभरिय वारूवार । हो भवियण ! एहवा वचन अलखावणा, अति अणगमता अपार ।। हो भवियण !
- २द पूर्वे कदेई सुणी नही, एहवी निसुणी वाण।हो भवियण । हृदय विषे घारी करी, उपनो दुक्ख अचाण।।हो भवियण ।
- २६ परिसेवो आविवै करी, रोम-कूप थी तेह। हो भवियण ! भरवा लागा विदुवा, क्लीन थई तसु देह।। हो भवियण !
- ३०. अतिही शोक करी विल, प्रकर्षे किर सीय। ही भवियण ! कंपण लागो अग जसु, तेज वीर्य रहित होय।। हो भवियण !
- ३१. दीन विमन जिम मुख जसु, करतल मसली जेह। हो भवियण ! कुमलाणा फूला तणी, माला जिम थइ तेह।। हो भवियण !
- ३२. दीक्षा-वचन सुणी ततिखणे, ग्लान दुर्वल थड देह । हो भिवयण । फुन लावण्य करि शून्य थई,
  - विल कांति रहित थड जेह ।। हो भवियण ।
- ३३ शोभा रहित थई तिको, प्रकर्षे अवलोय। हो भवियण । शिथल भूपण थया जेहना, दुर्वलपणां थी सोय।। हो भवियण ।
- ३४. भूपण पडवा लागा वली, वहु कृश थकी जेह। हो भवियण ! नमती भूइ पड़वा थकी, अन्य प्रदेश विपेह।। हो भवियण !

- १८ जण्णं तुमे समणस्स भगवयो महावीरस्स अतिय धम्मे निसते, से वि य ते धम्मे इच्छिए
- १६. पिंडिन्छिए, अभिरुइए । (श॰ ६।१६६)
- २०. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो दोच्च पि एवं वयामी—
- २१. एवं खलु मए अम्मताओ ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसते जान (स॰ पा॰) अभिरुद्ध ।
- २२. तए ण यहं अम्मतायो ! ससारभउव्यिगो
- २३. भीते जम्मण-मरणेणं, त इच्छामि ण अम्मताओ । तुटभेहिं अव्भणुण्णाए समाणे
- २४. समणस्स भगवनो महावीरस्स अतियं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पन्वइत्तए। (२००६।१६७)
- २५. तए ण सा जमालिस्स खित्तयकुमारस्स माता त अणिट्ठं 'अनिट्ठ' ति अवाच्छिताम् (वृ० प० ४६७)
- २६. अकंत अप्पिय अमणुण्ण 'अकंत' ति अकमनीयाम् 'अप्पिय' ति अप्रीतिकरीम् 'अमणुन्न' ति न मनसा ज्ञायते सुन्दरतयेत्यमनोज्ञा ताम् (वृ० प० ४६७)
- २७. अमणाम
  'अमणाम' ति न मनसा अम्यते गम्यते पुन पुन
  सस्मरणेनेत्यमनोज्ञा ता (वृ० प० ४६७)
  २८. अस्सुयपुर्वं गिरं सोच्चा निसम्म
- २६. सेयागयरोमक्वपगलतचिलिणगत्ता
- ३०. सोगभरपवेवियगमगी नित्तेया (वृ० प० ४६७)
- ३१ दीणविमणवयणा करयलमलिय व्व कमलमाला
- ३२ तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरलावण्णसुन्ननिच्छाया तत्क्षणमेव-प्रव्रजामीतिवचनश्रवणक्षण एव अवरुग्ण-म्लानं दुर्वेल च अरीर यस्या सा (वृ० प० ४६७)
- ३३. गयसिरीया पसिढिलभूसण प्रशिषिलानि भूपणानि दुर्वेलत्वाद्यस्या सा (वृ० प० ४६८)
- ३४,३५. पडतखुण्णियसचुण्णियधवलवलय-पटभट्टउत्तरिज्जा पतन्ति—कृशीभूतवाहुत्वाद्विगलन्ति 'खुन्निय' ति भूमिपतनात् प्रदेशान्तरेषु निमतानि संचूणितानि च— भग्नानि कानिचिद्ववलवलयानि—नथाविधकटकानि

- ३५. चूर्णे थया भागा वली, घवल निमल विलया जास । हो भिवयण ! व्योकुलपणा थी ओढणो, मस्तक थी पडचो तास ।। हो भिवयण ! ३६ मूच्छी-वश न्हाटी चेतना, भारीपणों तन नु तास । हो भिवयण ! सुकमाल केश चोटी तणा, विखरिया छै जास ।। हो भिवयण !
- ३७ फरसी ते कुहाडे करी, छेदै छतै जिवार। हो भवियण ।
  भूड पडे चपक लता, तिम पडी राणी तिवार।। हो भवियण ।
  ३८ निवर्त्या महोच्छव यदा, इद्रलट्टी पहिछाण। हो भवियण ।
  विमुक्त-सिंघ वघण जसु, भूड पडे तिम जाण।। हो भवियण ।
  ३६ मणि भूमितल ने विपे, घसक ऊतावली घार। हो भवियण !
  सर्वांगे करि भूइ पडी, थई अचेत तिवार।। हो भवियण !
  ४० ढाल दोयसी ऊपरै, तीजी आखी ताय। हो भवियण !
  मोह वंगे माता थई, अथि-अथि मोह वलाय।। हो भवियण !

यस्याः सा तथा, प्रम्नप्ट न्याकुलत्वादुत्तरीयं वमन-विशेषो यस्याः सा (वृ० प० ४६८)

३६. मुच्छावमणट्ठचेतगरुई मुकुमानविकिण्णकेसहत्या मूच्छावशान्नष्टे चेतिस गुर्व्यी—अलघुगरीरा या मा (वृ० प० ४६८)

२७. परसुणियत्त व्य चपगलया परशुच्छिन्नेय चम्पकलता (वृ० प० ४६८)

३८. निव्वत्तमहे व्व इदलट्टी, विमुक्कमधिवधणा कोट्टिमतलंसि धसत्ति सव्वगेहि सनिवाहिया। (श॰ ६।१६८)

## ढाल: २०४

#### दूहा

- १ जमाली क्षत्रियकुमर नी, माता ते तिणवार। सभ्रमचित व्याकुलपणे, थई अचेत अपार॥
- २. ताम शीघ्र दासी तसु, कचन वर भृगार। तसु मुख थी निर्गत विमल, शीतल जल नी घार।।
- ३ तिण जलघाराङ करी, सीचवै करि धार। निर्वापिता स्वस्थी कृता, गात्र-लिट्ट तनु सार।।
- ४ उत्क्षेपक वशादिमय, मुष्टिग्राह्य जस दङ। तालवृन्त तरु ताल नो, पत्रच्छोड सुमङ॥
- पू अथवा कहियै चर्ममय, तालपत्र आकार। वीजनक वशादिमय, तेह तणोज प्रकार।।
- ६ इत्यादिक वीजन करी, जिनत वाय सुखदाय। तेह वीजणो जल करी, भीजोवी करै वाय॥
- ७ विदु-सिहत वीजणे करी, वीज्या थई सचेत। अनेउर परिजन करी, आसासतीज तेथ।।
- प्त. रोवती आक्रन्द फुन, करती शब्द विशेख।परती शोक मने करी, विलपती सुत पेख।।
- इ. जमाली क्षत्रियकुमर, तेह प्रते अवधार।मोह वश माता इहविघे, वचन वदै तिहवार।।

- १. तए णं सा जमालिस्स खित्तयकुमारस्स माया समध-मोवित्तयाए ससम्ब्रम व्याकुलिचत्ततया (वृ० प० ४६८)
- २,३. तुरिय कचणींभगरमुह्विणिग्गय-सीयलजनविमल-धारपरिसिच्चमाणनिव्वावियगायलट्टी निर्व्वापिता—स्वस्थीकृता (वृ० प० ४६ = )
- ४,६. उक्सेवय-तालियंट-त्रीयणगजणियवाएण
  उत्सेपकोवशदलादिमयो मुष्टिग्राह्यदण्डमध्यभाग.
  तालवृन्त—तालाभिधानवृक्षपत्रवृन्त तत्पत्रच्छोट
  इत्यर्थं. तदाकार वा चम्ममय वीजनक तु—वशादि-मयमेवान्त ग्रीह्यदण्ड एतैंजीनतो यो वात म तथा तेन (पृ० प० ४६८)
  - ७ सफुसिएण अतेउरपरिजणेण आसामिया ममाणी 'सफुसिएण' सोदकविन्दुना (वृ० प० ४६८)

  - ६. जमानि यत्तियकुमार एवं वयामी-

# \*रे जाया । इम किम दीजै रे छेह ॥ (ध्रुपदं)

- १० एक पुत्र तू माहरै रे, वल्लभ इष्ट अपार। कात मनोहर तू सही रे, प्रिय ते प्रीतीकार॥
- ११ मनोज्ञ मनगमतो घणो, मणाम ते मन माय। वार-वार हू सभक्ष, अहनिज्ञि मे अधिकाय।।
- १२ स्थिरता गुण जोगे करी, थेज्जे कहियै जान।
  . वेसासिए कहिता वली, विश्वास नो तू स्थान।।
- १३ मान्य हुवै सहज्या सही, जेणे कीघो कार्य। समत कहियै तेहने, न करै ते अविचार्य।।
- १४ बहुमत वहु कारज विषे, पिण मानवा योग्य उमग। अथवा तू मुभ ने घणो, मानवा योग्य सुचग।।
- १५ अनुमत ते कारज विषे, कदा हुवै व्याघात। पछै पिण मानण योग्य छै, अणगमतो नहि तिलमात॥
- १६ भड करडक सारिखो, भड ते आभरण जाण। तसु भाजन जे डावडो, तेह करड समान॥
- १७ रयण कहिता नर-जात मे, उत्कृष्टपणा थी रत्न । अथवा रजक तू सही, रयण अर्थ सप्रयत्न ॥
- १ द तूरत्न चितामणि सारिखो, जीविकसविए जाण। मुभ जीवित छै तुभ थकी, तुभ विण निह रहै प्राण।।
- १६ अथवा जीवित नै विषे जी, ओच्छव सम अधिकाय। फुन मन समृद्ध कारको, देख्या हिय हरखाय।।
- २०. ऊवर फूल लाधै नहीं, तिम सुणवो दुर्लभ सोय। फून देखण रो कहिवो किस् ? अग आमत्रणे जोय।।
- २१. ते माटे निश्चे करी, तुभ विजोग खिण-मात'।
  निह वछा महै निह सुणा, हे सुत । साभल वात।।
  २२. ते भणी रहो घर ने विषे, त्या लग हे सुत । सार।
  महै जीवा छां ज्या लगै, महै काल गया पछै घार।।
  २३ वय-परिणत वृद्ध थया पछै, पुत्र-पोत्रादि वघार।
  कुल रूप वश ततु तिको, दीर्घपणै विस्तार।।

\*लय: खिम्यावंत जीय भगवत रो रे ज्ञान

१. क्षण भर

- १० तुमं सि णं जाया । अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते पिए
- ११. मणुणो मणामे
- १२ थेज्जे वेसासिए
  'थेज्जे' त्ति स्थैर्यगुणयोगात्स्थैर्यं. 'वेसासिए' त्ति
  विश्वासस्थानं (वृ० प० ४६८)
- १३. समए 'समए' त्ति समतस्तत्कृतकार्याणा समतत्वात् (वृ ० ५० ४६८)
- १४. वहुमए
  'वहुमए' त्ति वहुमत वहुव्विष कार्येषु वहु वा अनल्पतयाऽस्तोकतया मतो वहुमत । (वृ० प० ४६८)
- १५ अणुमए
  'अणुमए' त्ति कार्य्यंव्याघातस्य पश्चादिष मतोऽनुमत (वृ० प० ४६८)
- १६ भडकरडगसमाणे भाण्ड—आभरण करण्डक तद्भाजन तत्समानस्त-स्यादेयत्वात् (वृ० प०४६८)
- १७ रयणे 'रयणे' त्ति रत्नं मनुष्यजाताबुत्कॄष्टत्वात् रजनो वा रञ्जक इत्यर्थ (वृ० प० ४६८)
- १८,१६ रयणव्भूए जीविकसिविए हिययनिवजणणे हिययनिवजणणे

  'रयणभूए' ति चिन्तारत्नाविविकल्प 'जीविकसिवए'

  ति जीवितमुत्सूते—प्रसूत इति जीवितोत्सव।

  जीवितविषये वा उत्सवो—मह स इव य स
  जीवितोत्सिवक (वृ० प० ४६०)
- २० उवरपुष्फ पिव दुल्लभे सवणयाए, किमग । पुण-पासणयाए ? 'उवरे' त्यादि, उदुम्बरपुष्प ह्यलभ्य भवत्यतस्तेनोप-मान 'किमग पुण' त्ति किं पुन अगेत्यामन्त्रणे (वृ० प० ४६८)
- २१ त नो खलु जाया । अम्हे इच्छामो तुब्म खणमिव विष्पयोग।
- २२. त अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहि कालगएहिं समाणेहि
- २३. परिणयवए विड्ढयकुलवसततुकज्जिम्म विद्वते—पुत्रपौत्रादिभिवृंद्विमुपनीते कुलरूपो वशो न वेणुरूप कुलवश.—सन्तानः स एव तन्तुर्दीर्घत्वसा-धर्म्यात् कुलवशतन्तुः (वृ० प० ४६८)

- २४. एहिज सहु कारज करी, थइ विषय नी वाछा-रहीत। सकल प्रयोजन साधने, चरण थकी घर प्रीत।।
- २५ श्रमण भगवत महावीर पे, मुड थई सुखकार। अगार गृहस्थावास थी, तू थार्ज अणगार॥ २६. वे सी चीथी ढाल मे, मोह तणे वश माय। सुत घर मे राखण भणी, किया अनेक उपाय॥

२४. निरवयक्षे
'निरवकाक्षः' निरपेक्षः सन् सकलप्रयोजनानाम्
(वृ० प० ४६८)

२५. समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुढे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइहिसि । (श॰ ६।१६६)

### ढाल: २०४

#### दूहा

- १ तव जमाली खित्र-सुत, [कहै] मात पिता नैं वाय। तिमहिज ते निह अन्यथा, जे मुक्त आख्यु ताय॥ २ हे मात पिताजी जे भणी, थे मुक्त इम भाखत। तू छैं इक सुत माहरै, हे जात डिज्ट अरु कत॥ ३, तिमहिज ते पूर्वे कहां, तिम किहवू अवदात। जाव अणगारपणा प्रते, पिडवजे तू जात अनेक जन्म जरा मरण, रोग रूप अवधार॥ ४, शारीरिक तापादि फुन, चिता मन नु जान। ए दोनूई दुख तणु, भोगविवू असमान॥ ६ चौर्य खूर्तादक ना व्यसन, जेह सैंकडा जोय। उपद्रव किर पराभवू, ए नर भव अवलोय॥
- ७. इण कारण थी अधुव ए, नियत काले ताय। अवश्य उदय जिम रिव तणु, तिम ध्रुव नर भव नाय।।
- प्त. नियत रूप नहिं ए वली, राजा नै पिण जेम। दालिद्रपणु हुवै कदा, नर-भव अनियत एम।।
- ह. नर भव वली अशाश्वतो, खिरण-स्वभाव पिछाण। तेहिज कहिये छै हिवै, उपमाये करि जाण।।
- १० सघ्या ना वादल जिसो, पच रग सम पेख। जल परपोटा सारिखो, मनुष्य आउखो देख।। ११ डाभ अग्र जल विंदु सम, स्वप्न-दर्शन उपमान। चचल वीजल नी परं, ए तनु अनित्य जान।।

- १. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि ण त
- २. अम्मताओ ! जण्ण तुन्भे मम एव वदह—तुम सि ण जाया ! अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते
- ३. त चेव जाव पव्वइहिंसि
- ४. एव खलु अम्मताओ । माणुस्सए भवे अणेगजाइ-जरा-मरण-रोग-
- **५. सारीरमाणसपकामदुवखवेयण**
- ६ वसणसतोवद्वाभिभूए व्यसनानां च—चौर्यद्यूतादीना यानि णतानि उपद्रवाण्च (वृ० प० ४६६)
- ७. अधुवे 'अधुवे' ति न घ्रुवः सूर्योदयवन्न प्रतिनियतकालेऽ-वश्यम्भावी (वृ० प० ४६६)
- न. अणितिए
  'अणितिए' ति इतिशब्दो नियतस्पोपदर्शनपर. तत्तक्च
  न विद्यत इति यत्रामार्यानितिक —अविद्यमाननियतस्वरूप इत्यर्थं. ईण्वरादेरिप दारिद्रघादिभावात्
  (वृ० प० ४६६)
- श्वसासए
   'असासए' ति क्षणनभ्वरत्वात्, अभाभ्वतत्वमेवोपमानै-देशंयन्नाह— (यृ० प० ४६६)
- १०. संझब्भरागसरिसे जलवुब्बुदममाणे
- ११. कुमग्गजलविदुमन्निभे सुविणदनणोतमे विज्जुलया-चचले अणिच्चे

श० ६, उ० ३३, ढाल २०४,२०५ र्४६

# गीतकछंद

- १२. सडवूज अगुलि आदि नु, कुप्टादि रोगे करि कही। पडवूज वाहू प्रमुख नु, खडगादि जोगे करि वही।।
- १३. फुन तनु विधसन क्षय हुवै, एहीज छै जसु धर्म ही। तेहथी पहिला पछैवा, हुस्यै त्यजिवू अवश्य ही।।

### दूहा

- १४ कुण जाणै हे मात । पितु । पिता पुत्र नों जोय। पहिला मरित्रु केहनु, पाछै केहनु होय?
- १५ तिणस् हू बाछू अछू, अहो मात । फुन तात। तुम्ह आज्ञा दीघे छते, दीक्षा ल्यू प्रभु हाथ।।
- १६. तिण अवसर क्षत्रिय-तनय, जमाली नै वाय। मात-पिता कहै इहविधे, साभलज्यो चित त्याय।। \*मात कहै वच्छ । सांभले। (ध्रुपद)
- १७. ए तनु हे सुत ! तांहरो, अतिहि विधिष्ट सुरूपो रे। लक्षण व्यजन गुण भला, तिण करि सहित अनूपो रे।।
- १८. लक्षण श्रीवच्छ प्रमुख जे, व्यजन मस तिलकादि। विहु ना गुण करि सहित छै, ए तुज तनु अहनादि।।

## गीतकछंद

- १६ स्थिर अस्थि जेहनी तेहनों फल, अर्थ लाभ विशेप ही। फुन मास उपचित ने विषे, जे रह्युं सुख सपेख ही।।
- २०. त्वच पातली नै विषे लहियै, भोग लाभ म जाणियै। विशिष्ट चक्षु तास फल वर, लाभ स्त्री नु माणिये।।
- २१ रमणीक सुदर गति तणु, फल यान लाभ लहीजियै। स्वर शोभनीकज फल तसु, वर आण तास वहीजियै।।
- २२ गुण सत्व में सगला रह्या इम, वृत्तिकार वखाणियो। ते थकी अधिकार सगलो, अत्र महै पिण आणियो॥
- २३. \*उत्तम बल करि सहित छै, उत्तम वीर्य सहीतो। उत्तम सत्व सहित जे, तू सुत पवर पुनीतो॥
- २४. बल ने शरीर तणु कह्यु, वीर्यमन नु आघारो। सत्व ते चित्त ना अवीखरचा अध्यवसाय उदारो॥
- २५ अथवा उत्तम जे बिहु, वल फुन वीर्य उदारो। तेह विषे सत्व जे सत्ता तिण करि युक्त कुमारो।
- २६ विज्ञान वहुत्तर कला करि, तू छै विचक्षण डाहो। सोभाग्य सहित गुणे करी तू, ऊचो अधिक अथाहो।।
- २७. अभिजात कुलीन छै, मोटी क्षमा वरदाई। अथवा कुलीन छै तेह मे, पुजनीक नै समर्थाई।।

- १४. से केस ण जाणइ अम्मताओं । के पुब्ति गमणवाए, के पच्छा गमणवाए ?
- १५. त इच्छामि णं अम्मताओ । तुन्भेहि अन्मणुण्णाए समाणे समणस्स जाव (सं० पा०) पन्वइत्तए। (श० १।१७०)
- १६. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरी एव वयासी—
- १७ इम च ते जाया ! मरीरग पिवसिट्ठरूव लक्खण-वजण-गुणोववेय

१६-२१ लक्षणम्—
'अस्यिष्वर्थः सुख मासे, त्विच भोगा. स्त्रियोऽक्षिपु ।
गतौ यान स्वरे चाज्ञा, सवँ सत्त्वे प्रतिष्ठितम्
(वृ० प० ४६६)

# २३. उत्तमबलवीरियसत्तजुत्त

- २४. तत्र बलं गारीर. प्राणो वीर्यं मानसोऽवष्टम्भः सत्त्वं चित्तविशेष एव (वृ० प० ४६१)
- २५. अथवा उत्तमयोर्वलवीर्ययोर्यत्मत्त्व—सत्ता तेन युक्त (वृ० प० ४६६)
- २६. विण्णाणवियक्खण ससोहगगगुणसमूसिय
- २७. अभिजायमहक्त्वम
  'अभिजायमहक्त्वम' ति अभिजात—कुलीन महती
  क्षमा यत्र तत्त्रया : अथवाऽभिजाताना मध्ये महत्—
  पूज्य क्षमं—समर्थं च (वृ० प० ४६९)

१२,१३. सटण-पडण-विद्धंसणधम्मे, पुन्ति वा पच्छा वा अवस्सविप्पजिह्यव्ये भविस्सइ 'सडणपडणविद्धसणधम्मे' त्ति शटन---कुट्यदिनाऽगु-ल्यादे. पतन बाह्यादे. यट्गच्छेदादिना विध्यमन---क्षयः एत एव धर्मा यस्य म (वृ० प० ४६६)

⁴लय : कुशालांजी मन चिन्तवं

- २८. विविध प्रकार नी व्याधि ते, रोग कुष्टादिक न्हालो । तिण करि पुत्र रहीत ही, तुभ तनु महा सुखमालो ॥ २६. विल उपघात नही अछै, निह पित-वायु विकारो । उत्तम वर्णादिक तणो, गुण तुभ अधिक उदारो ॥ ३० इण कारण थी लष्ट छै, मनहर इद्रिय पचो । अप-आपरा विषय नै, ग्रहण विषे पटु सचो ॥
- ३१ प्रथम वय जोवन भरी, तेह विषे रह्यो पुत्तो। अपर अनेक उत्तम भला, गुण करि सहित ससुत्तो।।
- ३२ ते भणी भोगव प्रथम ही, हे सुत । निज तनु चारू। तसु रूप सोभाग्य जोवन तणा, गुण वर्णादि उदारू॥
- ३३ तिवार पछै ते भोगवी, निज तनु रूप उदारो। सौभाग्य गुण जोवन तणा, म्है काल किये छते घारो॥
- ३४ वृद्ध थया वय परिणम्यां, कुल वश सतान वघारी। कार्य एह करी वली, विषय नी वाछा निवारी॥
- ३५ श्रमण भगवत महावीर पे, मुड थइनै सारो। गृहस्थावास तजी करी, तू थाजै अणगारो।।
- ३६ जमाली क्षत्रियकुमर तदा, कहै मात पिता नै वायो। तुम्है कह्युं तिमहीज छै, हे मात! पिताजो। ताह्यो।।
- ३७ जे भणी थे मुफ्त इम कहो, हे सुत ए तनु थारो। त चेव जावत त्यां लगै, अणगारपणा प्रति घारो॥
- ३८ इम निश्चै हे माता । पिता । ए नरतनु दुख नो अगारो । विघ-विघ व्याघि सैकडा, तेहनो स्थान असारो ।।
  [पुत्र कहै सुणो मातजी ]
- ३६ हाड रूप काष्ठे करी, नीपनो ए तनु नाह्यो। कठिनपणा ना साधम्यं थी, अस्थि-काष्ठ कहिवायो।।
- ४० नाडी अने नसा तणु, तिण करि अति ही वीटाणो'। अशुचि अमेध्य करी तनु, प्रत्यक्ष दुष्ट पिछाणो।।
- ४१ असमाप्त पूरा थावै नही, सर्व काल रै माह्यो। थाप्याजे कार्य शरीर ना, ते हुवै सपूर्ण ताह्यो॥
- ४२ जरा करी जीरण तनु, मृतक कलेवर गधो। जर-जर जीरण घर जिको, तेह सरीखो मदो।।

# २८ विविहवाहिरोगरहिये

- २६,३० निरुवहय-उदत्त-लट्टपचिदियपडु
  निरुपहतानि—अविश्वमानवाताद्युपन्नातानि उदात्तानि
  —उत्तमवर्णादिगुणानि अत एव लष्टानि—मनोहराणि
  पञ्चापीन्द्रियाणि पटूनि च—स्वविपयग्रहणदक्षाणि यत्र
  (वृ० प० ४६६)
- ३१ पढमजोव्वणत्य अणेगउत्तमगुणेहि संजुत्तं
- ३२. त अणुहोहि ताव जाया ! नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे,
- ३३ तओ पच्छा अणुभूय नियगसरी रक्त्व-सोहग्ग-जोव्वण-गुणे अम्हेहि कालगएहि समाणेहि
- ३४. परिणयवए विड्डयकुलवंसततुकज्जिम्म निरवयक्खे
- ३५ समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पन्वइहिसि । (श० ६।१७१)
- ३६. तए ण से जमाली खत्तियनुमारे अम्मापियरो एव वयासी--तहा वि ण त अम्मताओ ।
- ३७. जण्ण तुरुभे मम एव वदह—इम च ण ते जाया! सरीरग त चेव जाव पव्वइहिंसि
- ३८. एव खलु अम्मताओ । माणुस्सग सरीर दुक्खाययणं विविहवाहिसयसिनकेत सिनकेत—स्थानम् (वृ० प० ४६१)
- ३६. अट्ठियकट्ठुडिय
  'अट्ठियकट्ठुडिय' ति अस्थिकान्येव काण्ठानि काठिन्यसाधम्यात्तेभ्यो यदुत्थित तत्तया (वृ० प० ४६६)
- ४० छिराण्हारुजाल-ओणद्धसपिणद्ध असुइसिकिलिट्ठ भिरा—नाड्य 'ण्हारु' ति स्नायवस्तासा यज्जाल— समूह स्तेनोपनद्ध सपिनद्ध—अत्यर्थं वेष्टित यत्तत्तथा 'असुइ-सिकिलिट्ठ' ति अशुचिना—अमेध्येन सविलष्ट—दुष्ट यत्तत्तथा (वृ० प० ४६१)
- ४१ अणिद्विवय-सञ्चकालसठप्पय अनिष्ठापिता —असमापिता सर्वकाल—सदा सस्या-प्यता—तत्कृत्यकरण यस्य स तथा (वृ० प० ४६१)
- ४२. जराकुणिमजज्जरघर व जराकुणपश्च—जीर्णताप्रधानशवो जर्जरगृह च— जीर्णगेहसमाहारद्वन्द्वाज्जराक्णपजर्जरगृह (वृ० प० ४६६)

१ अगसुत्ताणि भाग २ श० ६।१७२ मे 'ओणद्ध-सिपणद्ध' के वाद 'मिट्टियभड व दुव्वल' पाठ है। इस पाठ की जोड नहीं है। सभवत जयाचार्य को प्राप्त आदर्श मे यह पाठ नहीं था।

- ४३ सडवु पडवु विनाज नु, घर्म स्वभाव विमासी।
  पूर्व अथवा पछै तनु, अवश्य छाडवु थासी।।
  ४४ ते कुण जाणे हो मात जी । पहिला मरण किणरो न्हालो।
  तिर्माहज जाव दिख्या ग्रहू, ए दोयसी पचमी ढालो।।
- ४३. सडण-पडण-विद्वसणधम्मं, पुन्ति वा पन्छा वा अवस्सविष्पजहियन्त्र भविस्सइ ।
- ४४. से केस ण जाणइ अम्मताओ । के पुर्विव त चेव (स॰ पा॰) पव्वइत्ता (श॰ ६।१७२)

## ढाल : २०६

दूहा

१. जमाली क्षत्रिय-सुत प्रते, मात पिता तिणवार । वली वचन इहविय वदै, ते सुणज्यो सुविचार ॥

'जमाली मान रे जाया ! इम किम दीजै छेह । (ध्रुपद)

- २ प्रत्यक्ष ए ताहरी वली जाया <sup>।</sup> वाला रूप रसाल । मोटा कुल नी ऊपनी जाया <sup>।</sup> तुभः सरिखी सुखमाल ।।
- ३ सरीखी छै तनु चामडी जाया । वय सरिखी सुवदीत । सरीखो लावण्य रूप छै जाया । जोवन गुण थी सहीत ।।
- ४ सरीखो कुल पक्ष पितर नो जाया । तेह थकी सुविचार। आणी ते परणी सही जाया । केहवी ते वर नार।।
- ५ कला-कुगल डाही घणी जाया । सर्व काल रे माय। लालिता किणहि दुहवी नही जाया । ते सुख जोग्य सुहाय।।
- ६. मार्दव मृदु गुण युक्त ही जाया । निपुण विनय उपचार । तेह विपे पडित घणी जाया । एहवी विचक्षण नार ।।
- ७ मजुल कोमल शब्द थी जाया । ते पिण मित मर्याद। मधुर ते अर्थ थकी भलु जाया । वोलिवु जेहनु स्वाद।।
- द्र हसवु देख़वुं चालवु जाया । नेत्र-विकार विलास । रहिवु विजिप्टपणे वली जाया । चतुर सहु मे विमास ।।
- १ अविकल कहिना ऋदी करि जाया । परिपूर्ण कुल है जास। शील आचार करी वली जाया । शोभावत विमास।।
- १० विशुद्ध कुल बग सतान ही जाया । ततु वर्द्धन करि तेह। समर्थ वय जोवन भली जाया । सत्ता तास विपेह।। वा० —विशुद्ध कुल वश हीज सतान-ततु ते विस्तारिततु, ते वधारवै करी

चा॰ —िवशुद्ध कुल वश हीज सतान-ततु ते चिस्तारिततु, ते वधारवै करी— पुत्र उत्पादन द्वारे करी तेहनी वृद्धि ने विषे प्रगल्भ ते समर्थ जे वय जोवन, तेहनो भाव सत्ता विद्यमान छै जेहने एह्दी स्त्रिया। अथवा 'विसुद्धकुलंवससताणततु-वद्धणपगव्मुव्यपभाविणीओ' त्ति पाठातर तिहा विल विशुद्ध कुल वश सतान-ततु वधारण वालो जे प्रगव्मा—प्रकृष्ट गर्भ, तेहनो उद्भव प्रगट होयवो, तेहने विषे १ तए ण तं जमार्ति खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी----

- २, इमाओ य ते जाया । विपुलकुलवालियाओ सरिसियाओ (पृ० ४४४-टि० १)
- ३. सरित्तयाओ सरिव्वयाओ सरिसलावण्णरूप-जोव्वण-गुणोववेयाओ (पृ० ४४४-टि० १)
- ४. सिरसएहिंतो कुलेहिंतो आणिएल्लियाओ (पृ० ४४४-टि० १)
- ५. कलाकुसल-सन्वकाललालिय-सुहोचियाओ,
- ६. मद्वगुणजुत्त-निउणविणओवयारपडिय-वियक्खणाओ
- ७. मजुलिमयमहुरभिणय

  मञ्जुल—कोमल शब्दत मित—परिमित मधुर—

  अक्टोरमर्थतो यद्भिणत (वृ० प० ४६६)
- विहसिय-विष्पेक्खिय-गति-विलास-चिट्ठियविसारदाओ
   विलासण्च—नेत्रविकारो विस्थित च—विशिष्टा
   स्थितिरिति (वृ० प० ४६६)
- १०. विसुद्धकुलवससताणततुबद्धण-प्पगव्भवभवपभाविणीओ

वा०—विशुद्धकुलवश एव सन्तानतन्तु —विस्तारितन्तु-स्तद् वर्द्धनेन—पुत्रोत्पादनद्वारेण तद्वृद्धौ प्रगल्म —समर्थं यद्धयो – यौवन तस्य भाव सत्ता विद्यते यासा तास्तया"" पाठान्तर तत्र च विशुद्धकुलवशसन्तानतन्तुवर्द्धना ये प्रगल्मा. —प्रकृष्टगर्भास्तेपाय उद्भव —सम्भूतिस्तत्र य प्रभाव — सामर्थ्यं स यासामस्ति ता.। (वृ० प० ४७०)

वत्यः जम्बू ! तू तो मान रे जाया !

जे प्रभाव--समर्थपणो छै जेहनै तिके विशुद्ध कुलवशसतानततुवर्द्धेनप्रगर्भेउद्भव-प्रभाविका ।

- ११. मन अनुकूल गमती घणी जाया हिदय स्यू वाछणहार। ए आठूई सुदरी तुभ गुण करि वल्लभ सार॥
- १२ ए उत्तम छैँ कामणी जाया । नित्य जे चित्त नु प्रेम। तिण करिने राती घणी जाया । सर्वाग सुदर तेम।।
- १३. भोगव भोगी भ्रमर ज्यूं जाया । ज्या लग सामर्थ्य सुजात । कामभोग विस्तीर्ण मनुष्य ना जाया । ए रमणी सघात ॥
- १४. भुक्त भोगी थइ ने पछे जाया । विषय-रहित थई चित्त । अत्यत क्षीण कोतृहल करी जाया ।

म्हा काल गया लीजे व्रत पवित्त ।।

- १५. जमाली क्षत्रियकुवर तदा, कहै मात-पिता नै वाय। तिमहिज ते हो माता पिता माजी । अन्यथा निंह छै ताय। [माजी । तू तो मान लै जननी । लेस्या हे सजम भार।।]
- १६ जे अम्ह ने तुम्है इम कहो माजी । ए तुभ रमण हे जात । मोटा कुल नी ऊपनी, जाव दीक्षा लीजै प्रभु हाथ।।
- १७ इम निश्चे हे माता । पिता । काम भोग मनुष्य ना ताय । अजुचि अपवित्र छै घणा विल अशास्त्रता स्थिर नाय ।।

### सोरठा

- १८ इहा काम भोग ग्रहणेह, तेहना जे आधार थी। पुरुष अने स्त्री जेह, ग्रहिवा ए तसु तनु प्रतै।।
- १६ \*वमन प्रते आश्रवे भरे माजी ! पित्त प्रते आश्रवत । खेल इलेष्म प्रते श्रवे माजी ! शुक्र ने रुधिर भरत । [सुणो मोरी मात जी ! सुणो मोरा तात जी !

मुभने अनुमति दीजै आज ।।

- २० उच्चार-पासवण खेल थी माजी । सिघाण वमन नै पित । राघ शुक्र लोही विल माजी । एतला थी उपचित्त ॥
- २१ अणगमता दुष्ट रूप ही माजी । मूत्रे करी कुह्यु उचार। तिणे करी प्रतिपूर्ण छै माजी । ए तनु अशुचि-भडार।।
- २२ मृतक जिसो गव जेहनो माजी । एहवा उस्सास पिछाण। अशुभ नि स्वास तिणे करी माजी । जन-उद्देगका जाण।।
- २३ ए काम-भोग दुगछा तणा माजी । छै उपजावणहार। लघु स्वभाव हलवा आपणो माजी । कामभोग नो घार।।

- ११. मणाणुकूलहियइच्छियाओ, अट्ठ तुन्भ गुणवल्लहाओ
- १२ उत्तमाओ, निच्च भावाणुरत्तसव्वगसुदरीओ
- त भुजाहि ताव जाया ! एताहि सिद्ध विउले माणु-स्सए कामभोगे
- १४. तओ पच्छा भृतभोगी विसय-विगयवोच्छिण्ण-कोउहल्ले अम्हेहिं कालगएहिं जाव (स॰ पा॰) पन्वइहिसि । (श॰ ६।१७३)
- १५. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ !
- १६. जण्ण तुब्भे मम एय वदह—इमाओ ते जाया । विपुलकुलवालियाओ जाव पव्वइहिसि ।
- १७. एव खलु अम्मताओ । माणुस्सगा कामभोगा असुई असासया
- १८. इह कामभोगग्रहणेन तदाधारभूतानि स्त्रीपुरुप-शरीराण्यभित्रेतानि (वृ०प०४७०)
- १६. वतासवा, पित्तासवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणिया-सवा (पृ० ४४४ टि० ८)
- २० उच्चार-पासवण-खेल-पिघाणग-वत-पित्त-पूय-सुक्क-सोणिय समुब्भवा ।
- २१ अमणुष्णदुरुय-मुत्त-पूर्य-पुरीसपुष्णा अमनोज्ञाश्च ते दूरूपमूत्रेण पूतिकपुरीपेण च पूर्णाश्चेति विग्रह, इह च दूरूप—विरूप पूतिक च—कुथित (वृण्प० ४७०)
- २२. मयगधुस्सास-असुभनिस्सासउ व्वेयणगा मृतस्येव गन्द्यो यस्य स मृतगन्धि स चासावु च्छ्वासश्च मृतगन्ध्यु च्छ्वासस्तेनाशुभनि श्वासेन चोद्वेगजनका— उद्वेगकारिणो जनस्य ये ते तथा (वृ० प० ४७०)
- २३ वीभच्छा, अप्पकालिया, लहुनगा
  'वीभच्छ' ति जुगुप्सोत्पादका 'लहुस्सग' ति लघुस्वका.
  लघुस्वभावा (वृ० प० ४७०)

- २४ कलिमल जे अगुभ द्रव्य नु माजी ! देह विषे अधिवास। ते अञ्भ न रहिव शरीर में माजी ! तिणकर दुख ही विमास ॥
- २५ वहु जन ने साधारणा माजी । स्त्रियादिक ने अवलोय। भोगविव वछै घणा माजी । इम वहु जन साघारण जोय।। २६ क्लेश महामानसी दुख करी माजी । अति तनु दुख करि ताय। वन करिये कामभोग ने माजी ! दुख थी साघिव थाय।।
- २७ अवुष मूर्ख जन सेविया माजी । सदा मुनि ने निदनीक। अनत ससार वचारणा माजी! कामभोग तहतीक।। २८ फलरूप विपाक कटुक जसु माजी ! बलतो जिम तृण-पूल। ते अणमूक्या कर वलै, तिण कामभोग दुख-मूल।।
- २६ सिद्धि गति जाता जीव ने माजी । विघ्न तणां करणहार। कुण जाणे हो माता पिता । पहिला पछ मरण केहनु घार ॥ ३०. ते माटे हू वाछू अछूं, अहो मात-पिताजी । विशाल। जावत दीक्षा घारवी, आसी दोय सौ छट्टी ए ढाल ॥

- २४. कलमलाहिवासदुक्खा कलमलस्य-शरीरसत्काशुभद्रव्यविशेपस्याधिवासेन-अवस्थानेन दु.खा--दु खरूपा ये ते (वृ० प० ४७०)
- २५. वहुजणसाहारणा
- २६. परिकिलेसिकच्छदुक्खसज्झा परिक्लेशेन--महामानसायासेन कृच्छूदु खेन च--गाढशरीरायासेन ये साध्यन्ते—वशीकियन्ते ये ते (वृ० प० ४७०)
- २७. अबुहजणणिसेविया, सदा साहुगरहणिज्जा अणत-ससारवद्धणा
- २८. कडुगफलविवागा चुडल्लिव अमुन्चमाणदुक्खाणु-'कडुगफलविवागा' "" फलरूपो विपाक: फलविपाक कटुक. फलविपाको येपा ते तथा 'चुडलिव्व' ति प्रदीप्ततृणपूलिकेव (वृ० प० ४७०)
- २६. सिद्धिगमणविग्घा। से केस णं जाणइ अम्मताओ। के पुब्वि गमणयाए ? के पच्छा गमणयाए ?
- ३०. त इच्छामि ण अम्मयताओ । जाव (स॰ पा॰) पव्वइत्तए। (হা০ ৪। १७४)

## हाल: २०७

# दूहा

- १. तिण अवसर क्षत्रिय-सुत, जमाली प्रति वाय। मात पिता इहविव कहै, ते सुणज्यो चित ल्याय॥ \*पुत्र । कह्यो मान हमारो रे, प्राण-वल्लभ तू प्यारो रे। (ध्रुपद)
- २ हे पुत्र । ए तुभ दादा तणो रे, परदादा नो पेख। पिता ना परदादा तणो रे, सचियो द्रव्य अशेख।।
- ३ अति वहु हिरण्य ते अणघडचुं रे, सुवर्ण ते घडचुं सार। विल भाजन कासी तणां, अरु वस्त्र विविध प्रकार।।
- ४ विपुल कहिता विस्तीर्ण घणु रे, घन ते गवादि कहेज। कणग ते घान्य भणी कह्यं, जाव सतसार सावतेज।।

#### सोरठा

प्रजावत कहिवा थीज, रत्न कर्केतन आदि चद्रकातादि मणीज, मोती प्रसिद्ध शख

१. तए णंत जमालि खत्तियकुमारं अम्मापियरी एवं वयासी---

- २,३ इमे य ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिचपज्जयागए सुवहू हिरण्णे य सुवण्णे य, कसे य, दूसे य। आर्यः-पितामह प्रार्येक.-पितु. पितामह पितृ-प्रार्यक:-पितु प्रपितामहस्तेभ्यः सकाशादागत (वृ० प० ४७०) यत्ततथा
- ४. विजलघण-कणग जाव सतसार-सावएज्जे 'विपुलधणे' ति प्रचुर गवादि 'कणग' ति धान्य (वृ० प० ४७०)
- ५,६. रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्यवालरत्तरयण यावद् करणादिद दृश्य … 'रयण' त्ति कर्केतनादीनि 'मणि' ति चन्द्रकान्ताद्याः मीक्तकानि शह्वाश्च

<sup>&</sup>quot;लय: राजनगर भणतां थकां रे।

- ६. शिल प्रवाल विद्रुमादि, रक्त-रत्न पद्म राग ते। इत्यादिक सवादि, ए दीसै जाव शब्द में।।
- ७. \*सत कहिता विद्यमान छै रे, आप तर्ण वश जेह। सार प्रधानज द्रव्य ही रे, तिके छै तुक्क घर ने विषेह।।
- द अलाहि कहिता पर्याप्त है रे, ज्यां लग ए परिमाण। कुल वश सात पीढ्या लगैरे, जे देवे अति घणुदान॥
- ह पोते भोगववै करी रे, न्याती-गोती ने जेह। वाटी ने वहु देता थका रे, सात पीढचा लगै न खूटेह।।
- १०. ते भणी पहिला भोगवी रे, हे सुत! मनुष्य तणाय। विस्तीर्ण कामभोग ने रे, विल ऋद्धि सत्कार समुदाय।।
- ११ कल्याणकारी भोगवी रे, तिवार पछै सुविचार। कुलवश ततु वधारने रे, जाव सजम लीजै सार॥
- १२ जमाली क्षत्रिय-सुत तदा रे, कहै मात पिता नै एम। तिमहिज छै माता पिता काइ, जे तुम्ह भाख्यो तेम।।
- १३ जे तुम्है मुफ्त नै इम कहो, इम वली ताहरै ए जात । घन दादा परदादा रो सचियो, जाव दीक्षा लीजै प्रभु हाथ ।।
- १४ इम निश्चै हे माता पिना । हिरण्य सुवर्ण जावत द्रव्य । अग्नि साधारण अग्नि मे वलै, चोर साधारण भव्य ।।
- १५. राय साधारण नृप लिये रे, मृत्यु साधारण मान। न्याती गोती साधारण वली रे, एतो हिरण्यादिक पहिछाण।

# सोरठा

- १६ एहिज द्रव्य प्रतेह, अति परवशपणु जणायवा। अन्य पर्याय करेह, कहियै छै ते सांभलो।।
- १७ \*अग्नि सामान्य ते अग्नि थी रे, हुवै हिरण्यादिक नु विणास । जाव पुत्रादि सामान्य छै तिके रे, कुटव सामान्य विमास ।। बा॰—पूर्वे कह्यो साधारण, इहा सामान्य कह्या ते एकार्य जाणवू ।
- १म अध्नुव अनित्य अशाश्वतो रे, पूर्व तथा पछै जेह। अवश्य छाडिवू हुस्यै सही रे, काङ हिरण्यादिक द्रव्य तेह।।
- १६ ते माटै कुण जाणै वली रे, त चेव तिमहिज न्हाल। जाव प्रव्रज्या आदरू रे, तुभ आज्ञा थी सुविशाल।।
- २० क्षत्रिय-सुत जमाली तणा रे, मात पिता तिहवार। जमाली प्रति चलायवा काइ, समर्थ नही जिहवार॥
- २१ विषय शब्दादिक जेहने रे, अनुलोम ते विषय विषेह। प्रवृत्ति जनकपणे करि तिके रे, अनुकूल वचन करेह।।

- प्रतीताः 'सिलप्पवाल' ति विद्रुमाणि 'रत्तरयण' ति पद्मरागास्तान्यादिर्यस्य (वृ० प० ४७०)
- ७. 'संत' त्ति विद्यमानं स्वायत्तिमत्यर्थः 'सार' ति प्रधान (वृ० प० ४७०)
- द. अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउ 'पकाम दाउ' न्ति अत्यर्थं दीनादिभ्यो दातुम् (वृ० प० ४७०)
- एकाम भोत्तु परिभाएउ
   भोक्तु—स्वय भोगेन 'परिभाएउ' ति परिभाजियतु
   दायादादीना प्रकामदानादिषु यावत् स्वापतेयमल
   तावदस्ति (वृ० प० ४७०)
- १०. त अणुहोहि ताव जाया । विजले माणुस्सए इड्डि-सक्कारसमुदए,
- ११. तओ पच्छा अणुहूयकल्लाणे, विड्ढयकुलवम जाव (स॰ पा॰) पव्वइहिसि। (श॰ ६।१७५)
- १२. तए ण से जमाली खित्तयकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ ।
- १३. जण्ण तुन्भे मम एव वदह—इम च ते जाया । अज्जय-पज्जय-पिजपज्जयागए जाव पन्वइहिसि ।
- १४,१५. एव खलु अम्मताओ । हिरण्णे य, सुवण्णे य जाव सावएञ्जे अग्गिसाहिए, चोरसाहिए रायसाहिए मच्चुसाहिए, दाइयसाहिए अग्न्यादे. साधारणमित्यर्थे । (वृ० प० ४७०)
- १६. एतदेव द्रव्यस्यातिपारवश्यप्रतिपादनार्थं पर्यायान्तरे-णाह--- (वृ० प० ४७०)
- १७. अश्वितामण्णे जाव (स॰ पा॰) दाइयसामण्णे 'दाइयसाहिए' त्ति दायादा —पुत्रादय

(वृ० प० ४७०)

- १८ अधुवे, अणितिए, असासए, पुन्ति वा पच्छा वा अवस्सविष्पजहियन्वे भविस्सइ
- १६ से केस ण जाणइ त चेव जाव (स० पा०) पव्यक्तए। (श० १।१७६)
- २०. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मताओ जाहे नो सचाएति
- २१ विसयाणुलोमाहिं 'विसयाणुलोमाहिं' ति विषयाणा— शन्दादीनामनु-लोमा.—तेषु प्रवृत्तिजनकत्वेनानुकूला विषयानुलोमा-स्ताभिः (वृ० प० ४७०)

<sup>\*</sup>लय: राजनगर भणतां थकां रे

- २२. घणुं सामान्यपणें करि कहिवुं, तिण वचने करि आम। विल विशेपपणे करि कहिवुं, तेह वयण करि ताम।।
- २३ वचने करि जगाडवू रे, जिम रहै संसार माय। विल प्रेम युक्त प्रार्थना करी तिको, वीनती करि अधिकाय।। २४ वचन सामान्यपणे कही रे, विल कही वयण विशेख। संवोधन वचन कही वली, विनती प्रेम युक्त संपेख।। २५ वचन विषे अनुलोमका रे, कही थाका तिण काल। विषये प्रतिकृल वच हिवै कहै, आखी दोय सी सातमी ढाल।।

२२. बहूरि आघवणाहि य पण्णवणाहि य 'आघवणाहि य' त्ति आख्यापनाभिः—सामान्यतो भणनैः 'पन्नपणाहि य' त्ति प्रज्ञापनाभिष्च—विशेष- कथनैः (वृ० प० ४७०, ४७१)

२३-२४. सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य वाघवेत्तए वा पण्णवेत्तए वा

'सन्नवणाहि य' ति सञ्ज्ञापनाभिष्च – सम्बोधनाभिः 'विन्नवणाहि य' ति विज्ञापनाभिष्च—विज्ञप्तिकाभि सप्रणयप्रार्थनैः (वृ० प० ४७१)

## ढाल: २०८

## दूहा

- १ विषय तणो परिभोग जे, तास निषेधक ताम। तेह विषे प्रतिलोमका, वचने करि कहै आम।।
- २ सजम थी भय ऊपजै, विल तसु चिलवु होय। इसो शील छै जेहनु, ते वचने करि सीय।।
- ३ जे विशेप वचने करि, कहिता वचन विशेख। मात-पिता इह विध कहै, जमाली प्रति पेख।।

\*जाया । संजम दुक्कर कार। (ध्रुपद)

४ इम निश्चै करिनै हे जाया । निर्ग्रथ प्रवचन सार । सत्य अणुत्तर एह थकी अन्य, निहं अति प्रवर उदार ॥ ५ केवल ए सम निहं को दूजो, जेम आवश्यक माहि । यावत अत करै सह दुख नों, मुनि प्रवचन थी ताहि'॥

# सोरठा

- ६ जाव शब्द थी देख, पडिपुन्ने ते शिव गति।
  पमाडवा ना पेख, गुणे करी भरियो अछै।।
  ७. नेयाउए ए न्हाल, नायक प्रापक शिव तणो।
  अथवा न्याय विशाल, प्रवचन समय विषे कह्यो।।
- द ससुद्धे अतिहि शुद्ध, समस्तपणै करी तिको। सल्लगत्तणे बुद्ध, कापणहारज सल्य नो।।

- १. ताहे विसयपडिकूलाहि
  विषयाणा प्रतिकूला तत्परिभोगनिषेधकत्वेन प्रति-लोमा यास्ता (वृ० प० ४७१)
- २. संजमभयुव्वेयणकरीहि सयमाद्भय—भीति उद्वेजन च—चलन कुर्वन्तीत्ये-वशीला यास्ता (वृ० प० ४७१)
- ३. पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एवं वयासी—
- ४. एवं खलु जाया । निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे
- ५. केवले जहा आवस्सए (४१६) जाव (स॰ पा॰) सव्वदुक्खाण अत करेंति 'केवल' त्ति केवल—अद्वितीयं (वृ॰ प॰ ४७१)
- ६. पडिपुण्णे अपवर्गप्रापकगुणैर्मृत (वृ० प० ४७१)
- ७. नेयाउए नायक मोक्षगमकिमत्यर्थः नैयायिक वा न्यायानपेत-त्वात् (वृ० प० ४७१)
- म ससुद्धे सल्लगत्तणे सामस्त्येन शुद्ध 'सल्लगत्तणे' मायादिशल्यकर्त्तन (वृ० प० ४७१)

\*लय: सीता आवै रे घर राग

२५६ भगवती-जोड़ 🔧 -

१ स० पा० के अनुसार पाचवी गाथा मे पूरा पाठ आ गया है। उसके बाद पुन ६ से १५ तक की गायाओं मे पूरे पाठ की जोड की गई है।

- सिद्धिमग्ग सुविधान, हितार्थ प्राप्ति उपाय जे।
   मुत्तिमग्ग महिमान, अहित-विच्युति उपाय जे।।
- २०. निज्जाणमग्गे ताय, सिद्ध क्षेत्र तेहने विषे। जावा तणो उपाय, निर्ग्य-प्रवचन जाणवू॥
  - ११ निव्वाणमग्गे न्हाल, सकल कर्म नां विरह थी।
     उपनो सुख सुविज्ञाल, तेह तणोज उपाय ए॥
  - १२ अवितह कहितां सोय, कालातर पिण अनपगत। तथाविध अवलोय, अभिमत प्रकार एह छै।।
  - १३ अविसंघि' सुवदीत, प्रवाह करी विच्छेद नही। तथा सदेह रहीत, अर्थ अविसदिद्ध नु॥
  - १४ सह दुख प्रतीक्षण मग्ग, एह प्रवचन विपे जिके। जीवा रह्या उदग्ग, सिज्कै बुज्कै मुच्चवै॥
  - १५ हुवै शीतलीभूत, अत करै सहु दुख तणो। जाव शब्द में सूत, कह्या आवसग थीज ए।।
  - १६ \*सर्पं तणी पर एकात-निश्चय, दृष्टि—बुद्धि अवलोय। इण निर्ग्रथ प्रवचन विषे, चारित्र पालण सोय॥

- १७ अहि नी आमिष काज, एकान्ता—एकनिश्चया। दृष्टि हुवै निव्याज, तिम चरण पालण इक दृष्टि—चुद्धि।।
- १८ \*जेह पाछणा नी परै, एकात जे समान-धारा, जिम क्रिया जसु, जे चरण विषे सुविधान।।
- १६ जिम लोह ना जब चाविवा, तिम निग्रंथ प्रवचन सार । निरअतिचारपणे पालिवु, दुक्कर चरण उदार॥
- २० सार रहित जिम कवल वालु ना, निर्ग्रथ प्रवचन तेम। विषय तणा सुख स्वाद रहित छै, चरण घरण सुख खेम।।
- २१. महानदी गगा नैं साहमे, स्रोते दुखे गमन। तिम सजम मार्ग आचरता, दुस्तर है प्रवचन।।
- २२ महासमुद्र जिम भुजा करीने, तिरणी दुक्करकार। तिम प्रवचन वर चरण पालवु, दुस्तर अधिक अपार।।

- सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे
   (सिद्धिमग्गे' हितार्थप्राप्त्युपाय 'मृत्तिमग्गे' अहितविच्युतेरुपाय (वृ० प० ४७१)
- १०. निज्जाणमग्गे सिद्धिक्षेत्रगमनोपाय. (वृ० प० ४७१)
- ११ णिव्वाणमग्गे सक्तकर्मविरहजसुखोपायः (वृ० ७० ४७१)
- १२. अवितहे कालान्तरेऽप्यनपगततथाविधाभिमतप्रकारम् (वृ० प० ४७१)
- १३ अविसधि प्रवाहेणान्यविच्छन्न (वृ० प० ४७१)
- १४. सन्बद्धक्खप्पहीणमग्गे, एत्य ठिया जीवा सिज्झति, बुज्झति मु<del>न्च</del>ति
- १५ परिनिन्वायति सन्वदुक्खाण अत करेति
- १६ अहीव एगतिदद्वीए
  अहेरिव एकोऽन्तो— निश्चयो यस्या सा (एकान्ता
  सा) दृष्टि —बुद्धिर्यस्मिन् निर्ग्रन्यप्रवचने चारित्रपालन प्रति तदेकान्तदृष्टिकम् (वृ० प० ४७१)
- १७. अहिपक्षे आमिपग्रहणैकतानतालक्षणा एकान्ता— एकनिश्चया दृष्टि — दृग् यस्य स एकान्तदृष्टिक (वृ० प० ४७१)
- १८. खुरो इव एगतधाराए
  एकान्ता—उत्सर्गलक्षणैकविभागाश्रया धारेव धारा—
  किया यत्र तत्त्तया (वृ० प० ४७१)
- १६ लोहमया जवा चावेयव्वा लोहमया यवा इव चर्वियतव्या, नंग्रेन्थ प्रवचन दुष्करमिति हृदय (वृ० प० ४७१)
- २० वालुयाकवले इव निस्साए वालुकाकवल इव निरास्वाद वैपयिकसुखास्वादना-पेक्षया प्रवचनमिति (वृ० प० ४७१)
- २१. गगा वा महानदी पडिसोय गमणयाए
  गगा वा—गगेव महानदी प्रतिश्रोतसा गमन प्रतिश्रोतोगमन तद्भावस्तत्ता तया, प्रतिश्रोतोगमनेन
  गगेव दुस्तर् प्रवचनिमिति भाव । (वृ० प० ४७१)
- २२ महासमुद्दो वा भुयाहि दुत्तरो एव समुद्रोपम प्रवचनमपि (वृ० ५० ४७१)

१. जयाचार्यं को प्राप्त आदर्शं में अविसिध और अविसिद्धि—ये दो पाठ में रहे होगे। अगसुत्ताणि १।१७७ में यहा एक ही पाठ है—अविसिध। इस पाठ में पाठान्तर की भी कोई सूचना नहीं है।

<sup>\*</sup>लय: सीता आवे रे घर राग।

- २३. खडगादिक नी तिथिण घारा, ऊपर गमन दुखेह। तिम दुक्कर है चरण पालिवु, सजम घार विषेह।।
- २४ महाशिला रज्जु वाघी नै, कर घरता दुक्करकार। तिम प्रवचन गुरुता प्रति घरवू, चरित्र निरतिचार॥
- २५. असिघार अतिक्रमता दुक्कर, तिम व्रत नेम उदार। निग्रंथ प्रवचन प्रते पालिवु, तेहथी दुक्करकार।।

- २६. चारित्त दुक्करकार, किण कारण इहा आखियो ? वर मुनि नो आचार, देखालै हिव आगलै।।
- २७. \*श्रमण निर्ग्रंथ भणी निह कल्पै, निश्चै करि हे जात ! मुनि अर्थे असणादिक कीधु, आधाकर्मी ख्यात ।।
- २८ सर्व दर्शणी अर्थ कर्यु ते, उद्देशिक कहिवाय। मुनि-गृहि विहु ने अर्थ निपायु, मिश्र कहीजै ताय।।
- २६ आधण में अधिको ऊर्यू जे, मुनि नै अर्थे आ'र। अज्भोयर ते श्रमण मुनी नै, कल्पै नही लिगार॥
- ३० सीत मिली आधाकर्मी नी, अन्य आ'र रै मांय। पूर्तिकर्म कहीजै तेहनै, ए पिण कल्पै नाय।।
- ३१ साधु अर्थे मोल लियो जे, कृतगड किह्यै तास।। साधु अर्थे लियो उघारो, पामिच्च किह्यै जास।।
- ३२. अन्य तणो जे खोसी देवै, अच्छिज कहियै तेह। अणिसिट्ट एक तणी डच्छा विण, दियै सीर नो जेह।।
- ३३ अभिहड ते साहमो आण्यो, फुन कतार भत्तेह ॥ अटवी विषे भिक्षाचर अर्थे, निपजायो अन्न जेह ॥
- ३४ दुर्भिक्खभक्त दुकाल विपे, भिखारचा अर्थे कीव। गिलाणभक्त फुन रोगी अर्थे, निपजायो सुप्रसीघ।।
- ३५ वहलियाभत्त मेह वर्पतां, जे भिखार्या काज। असणादिक निपजायो ते पिण, कल्पै नही समाज।।
- ३६ वली प्राहुणा अर्थ निपायो, घर का जीमै नांहि। प्राहुणभत्त कहीजै तेहनै, ते पिण कल्पे नाहि॥
- ३७ सेज्जातर फुन राजिंपड फुन, मूल-भोजन विल जाण। कद-भोजन विल फल नो भोजन, वीज-भोजन पहिछाण।।
- ३८. हरित-भोजन वा रव सहु ठामे, भोगविवो अवलोय। अथवा जे पीवू नहिं कल्पै, सत मुनी ने सोय॥
- ३६ सुख भोगविवा योग्य पुत्र । तू, वा सुख उपचय ताय। पिण दुख नैं भोगविवा योग्यज, निश्चै करिने नाय।।
- \*लय: सीता आवे रे घर राग

- २३. तिक्खं किमयव्वं यदेतत् प्रवचन तत्तीक्षण खड्गादि ऋमितव्य (वृ० प० ४७१)
- २४. गरुय लवेयव्व
  'गुरुक' महाशिलादिक 'लम्वयितव्यम्' अवलम्बनीय
  रज्ज्वादिनियद्ध हस्तादिना धरणीयं प्रवचनं
  (वृ० प० ४७१)
- २५. असिधारग वय चरियव्व असेधारा यस्मिन् व्रते आक्रमणीयतया तदसिधाराक 'व्रतं' नियमः 'चरितव्यम्' आसेवितव्य, यदेतत् प्रवचनानुपालनं तद्वहुदुष्करित्यर्थं. (वृ० प० ४७१) २६. अथ कस्मादेतस्य दुष्करत्वम् ? (वृ० प० ४७१)
- २७. नो खलु कप्पद्द जाया । समणाण निग्गयाण अहाकिम्भए इ वा २८. उद्देसिए इ वा, मिस्सजाए इ वा
- २६. अज्झोयरए इ वा,
  स्वार्यं मुलाद्रहणे कृते साध्वाद्यर्थमधिकतरकणक्षेपणमिति (वृ० प० ४७१)
  ३०. पूहए इ वा
- ३१. कीते इ वा, पामिच्चे इ वा
- ३२. अच्छेज्जे इ वा, अणिसट्ठे इ वा
- ३३. अभिहडे इ वा, कंतारभत्ते इ वा
  'कतारभत्तेइ व' ति कान्तार—अरण्य तत्र यद्भिक्षुकार्यं सस्त्रियते तत्कान्तारभक्तम् (वृ० प० ४७१)
  ३४. दुव्भिक्खभते इ वा गिजाणभत्ते इ वा
- ३५ वहलियाभत्ते इ वा
- ३६. पाहुणगमत्ते इ वा
- ३७. सेज्जायरिंपडे इ वा, रायिंपडे इ वा, मूलभोयणे इ वा, कदभोयणे इ वा, फलभोयणे इ वा, वीयभोयणे इ वा
- ३८. हरियभीयणे इ वा, भोत्तए वा पायए वा
- ३६. तुम सि च णं जाया । सुहसमुचिए नो चेव ण दुहसमुचिए

- ४० नहीं समर्थ सी खमवा उष्णज, सहिवा समर्थ नांय। भूख अने तिरखा सहिवा ने, समर्थ नहिं तुभ काय।। ४१. चोर तणा उपद्रव सहिवा ने, समर्थ नही छ ताय। व्वापद भुयग तणा उपद्रव पिण, सहिवा समरथ नाय।। ४२ दंस तणा उपद्रव सहिवा पिण, समर्थ नही छै कोय। माछर ना उपद्रव सहिवा नै, समर्थ नहीं छै सोय।। ४३ वाय पित्त कफ वली एकठा, थया तिको सन्निपात। विविध प्रकार तणा ते रोगज, कुष्ठादिक आख्यात।। ४४ आतक गीघ्र हणे शूलादिक, तेह परीसह आय। फुन उपसर्ग उदय आया तू, सिहवा समर्थ नाय।। ४५ ते माटै निश्चै करि जाया ! क्षण मात्र पिण ताय। विरह तुम्हारो म्है निह वाछा, साभल सुत! मुक्त वाय।। ४६ तिणस् घर मे रहिवै पहिला, महै जीवां जिहा लगेह। म्हा काल गया पाछै यावत ही, प्रवर प्रवर्ण लेह।। ४७ ए दोयसी ऊपर आख़ी, ढाल अष्टमी माय। दुक्कर चारित्र धर्म वतायो, मात पिताइ ताय।।
- ४०. नालं सीयं, नालं उण्हं, नालं खुहा, नालं पिवासा
- ४१. नालं चोरा, नाल वाला
- ४२. नालं दंसा, नाल मसगा
- ४३,४४. नाल वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सिन्नवाइए विविहे रोगायके परिस्सहोवसग्गे उदिण्णे अहियासेत्तए। 'रोगायके' ति इह रोगा.—कुष्ठादय आतका— आशुघातिन. शूलादयः (वृ० प० ४७१)
- ४५. त नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुन्म खणमिव विष्योगं
- र्ष्ट्र, त अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामी तओ पच्छा अम्हेहिं जाव (स० पा०) पव्वइहिसि । (श० ६।१७७)

दाल: २०६

# दूहा

- १ तव जमाली क्षत्रिय-सुत, कहैं मात पिता ने वाय। तिमहिज हे माता ! पितर । कह् युं अन्यथा नांय।।
- २. जे तुम्ह मुभ नैं इम कहो, इम निश्चै हे जात। निर्भ्य प्रवचन सत्य फुन, सर्वोत्कृष्ट सुहात।।
- ३ केवल शुद्ध इत्यादि जे, तिमहिज जावत तेह।
  प्रव्रज्या लेज्यो तुम्है, मुक्त काल गयां पाछेह।।

  \*जमाली ना चरणमहोत्सव जाण।
  मात-पिता महिमानिला रे करता कोड किल्याण।।(ध्रुपद)
- ४ इम निश्चै माता ! पिताजी । निग्रंथ प्रवचन सार । क्लीव मद सघयण ना धनी, तास दुक्करकार ।।
- प्र अथिर चित्त छै जेहनों रे, कायर तेह कहाय। इण कारण थी कापुरुप ने रे, दुक्कर चरण अथाय।।
- ६ इहलोक ना सुख विये राता, परलोक नो भय नांहि। ते उपराठा परलोक थी रे, वले विषय तिसिया ताहि॥

- तए णं से जमाली खित्तयकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ ।
- २. जण्ण तुब्भे ममं एव वदह एव खलु जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे
- ३. कैवले त चेव जाव पव्वइहिसि
- ४. एव खलु अम्मताओ । निग्गथे पावयणे कीवाण 'कीवाण' ति मन्दसहननाना (वृ० प० ४७१)
- ४, कायराणं कापुरिसाण 'कायराण' ति चित्तावष्टम्भवजितानाम् । (वृ० प० ४७१)
- ६. इहलोगपिडवद्धाण परलोगपरमुहाण विसयतिसियाण

<sup>\*</sup> लयः कवि रे विया संदेशो कहे रे

- पूर्व अर्थ आख्यात, अन्वय फुन व्यतिरेक कर।
   विल किंद्य अवदात, चित्त लगाई<sup>१५</sup> साभलो।।
- \*दुखे सेववा योग्य छै, इम, निग्नंथ प्रवृत्तन ख्यात ।
   ते पागय—प्राकृत पुरुप नैं, दुंक्कंर चरण विख्यात ।।
- ध् घीर जे साहसीक छै जे, तेहने पिणे अवलोय। ए कार्य करिव हिज मुक्तने, इम निक्चैवत ने सोय।।
- ' १०. तेह विपे पिण जे वली दे, उद्यमवंत ने ताम। जे कार्य ना उपाय ने रे, प्रवर्त्तक ने आम।।
- ११ निश्चै कर तसु इह प्रवचने तिको रे, अथवा लीक विषेत । किंचित पिण दुक्कर नही रे, क्रिया करेवी जेह ।।
  - १२ ते भणी हूं वाछू अछूं रे, अहो मात ! फुन तात । आप तणी आज्ञा थया रे, जाव चरण ग्रहूं जिन हाथ ।।
  - १३ जमाली क्षत्रिय-सुत प्रतै रे, मात पिता तिणवार। घर माहै राखण भणी रे, समर्थ नही जिवार॥
  - १४ विषय अनुकुल वचने करि रे, विषय प्रतिकूल चरित्त । ते चरण पालिव् कठिन है रे, इम वचन करीने कथित्त ।।
  - १५ जे सामान्यज वच करी रे, विशेष वचन करेह। सवोधन वचन जगाडवै रे, प्रेम युक्त वचनेह।।
  - १६. जे सामान्यज वच कही रे, जावत वीनवी जोय। विण इच्छा हीज चरण नी रे, अनुमत दीघी सोय।।
  - १७ जमाली क्षत्रिय-सुत तणो रे, जनक तदा तिण ठाय। कोटुविक नर तेडने रे, वोलै एहवी वाय।।
  - १८ गीघ्र अहो देवानुप्रिया ! रे, क्षत्रियकुड अवघार। ग्राम नगर छै ते प्रते रे, अभ्यंतर फून वार॥
  - १६ छिडकाव करो उदके करी रे, पूजो प्रमाजिका करेह। लीपो गोवर आदि सूरे, जिम उववाई विपेह।

- २० जिम उववाई मांहि, आख्यो छैं तें इहिवधे। शृंगाटक त्रिक ताहि, चतुष्क चन्चर चतुर्मख।।
- २१ फुन महापथ विषेह, छाटो ईपत जैल करी। फुन अति जल छिडकेह, इण कारण थी शूचि करो।।
- २२. फुन कचरो काढेह, सेरी सेरी सुघ करो। आपण वीथी जेह, हाट मार्ग तेहने विषे॥

७. पूर्वोक्तमेवार्थमन्वयव्यतिरेकाभ्यां पुनराह— (वृ० प० ४७१)

7:

- दुरणुचरे पागयजणस्स
   'दुरनुचरं' दु खासेव्यं प्रवचनिमिति प्रकृतं
   (वृ० प० ४७१)
- धीरस्स निन्छियस्स
   'धीरस्स' त्ति साहसिकस्य तस्यापि 'निश्चितस्य'
   कत्तंव्यमेवेदमितिकृतनिश्चयस्य तस्यापि
   (वृ० प० ४७१,४७१)
- १०. ववसियस्स 'व्यवसितस्य' उपायप्रवृत्तस्य (वृ० प० ४७२)
- ११. नो खलु एत्यं किंचि वि दुक्करं करणयाए 'एत्यं' ति प्रवचने लोके वा (वृ० प० ४७२)
- १२. तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुन्भेहि अन्मणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव (सं० पा) पन्वइत्तए । (श० ६।१७८)
- १३ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो जाहे नो सचाएंति
- १४ विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिकूलाहि य
- १५,१६. बहूहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवेत्तए वा जाव (स॰ पा॰) विण्णवेत्तए वा ताहे अकामाइ चेव जमालिस्स खत्तिय-कुमारस्स निक्खमण अणुमण्णित्या। (श॰ ६।१७६)
- १७. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडु-वियपुरिसे सहावेद, सहावेत्ता एव वयासी--
- १८. खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खत्तियकुडग्गाम नयर सर्विभत्रवाहिरियं
- १६. आसिय-सम्मिष्जिओविलत्त जहा ओववाइए (सू० ५५) जाव आसिक्तमुदकेन संमाजित प्रमार्जनिकादिना उपलिप्त च गोमयादिना यत्तत्तथा। (वृ० प० ४७६)
- २०-२२. 'जहा उववाइए' त्ति एव चैतत्तत्र—'सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउमुहमहापहपहेसु आसित्तसित्तसुइयसमट्टरत्थतरावणवीहिय' आसिक्तानि—ईपत्सिक्तानिसिक्तानि च—तदन्यान्यत एव शुचिकानि—
  पवित्राणि समृष्टानि कचवरापनयनेन रथ्यान्तराणि—
  रथ्यामध्यानि आपणवीययश्च—हट्टमार्गा यत्र तत्तथा
  (वृ० प० ४७६)

<sup>\*</sup>लय: कपि रे प्रिया संदेशों कहै रे

- २३. वली मच पर मच, तिणै करीने सहित फुन। नानाविध रग सच, तिण करि ऊची ध्वज वली।।
- २४ चक्र सीहादि जाण, लाछन करी सहीत ते। घ्वजा पताका माण, तेह करि मंडित वली।।
- २५ इत्यादिक अवलोय, सूत्र उववाइ में कह्यूं। यावत आज्ञा सोय, पाछी सूपै नफर ते॥
- २६ \*तव जमाली क्षत्रियकुमर नों रे, जनक दूजी वार। कोटुविक नर तेडनै रे, वोलै इम अवधार॥ २७ शीघ्र अहो देवानुप्रिया। रे, जमाली क्षत्रियकुमर नै जाण। महाअर्थ प्रयोजन प्रतै रे, विल महामूल्य पिछाण॥
- ्द मोटा माणस जोग्य जे रे, विस्तीरण सुविचार। दीक्षा महोच्छव सामग्री प्रते रे, करो सज्ज उदार॥
- २६ कोटुविक नर तिण अवसरे रे, तिमहिज जावत जाण ॥ सर्व सामग्री सज्ज करी रे, आज्ञा सूपी आण ॥
- ३० जमाली क्षत्रियकुमर नै रे, मात पिता तिणवार। प्रवर सिंघासण नै विषे रे, पूर्व सन्मुख वैसार॥
- ३१ पूर्व साहमो वेसार नै रे, एकसो आठ उदार। कलशा जे सोवन तणा इम, जिम रायप्रश्लेण मभार॥

# ्रसोरठा ्

- ३२ इकसी आठ उदार, कलशा जे रूपा तणां। मणी तणा फुन सार, कलश एक सौ आठ ह्वै।।
- ३३ सोवन रूप मक्तार, कलश एक सौ आठ फुन। सोवन मणि रासार, ते पिण इकसौ आठ छै।।
- ३४ कलश एक सौ आठ, रूपा ने फुन मणि तणा। इकसौ आठ सुघाट, सोवन रूप मणी तणा।।
- ३५ 'जावत जे माटी तणा रे, कलश एक सौ आठ। आठसौ ने चोसठ कह्या रे, कलशा रूडे घाट।।
- ३६ सर्व ऋद्धि करिनै तिको रे, समस्त जे छत्राद। राजिचह्न रूपे करी रे, यावत महारव साद॥

#### सोरठा

३७. जाव गव्द मे श्रेष्ठ, सहु द्युति आभरणादि नी। अथवा उचित यथेष्ट, वस्तु घट ना लक्षण करी॥

- २३,२४. 'मंचाइमंचकलिय णाणाविहरागभूसियभयपडाग।इपडागमडिय' नानाविधरागै रुच्छृतैद्द्वंजे चन्नसिंहादिलाञ्छनोपेतै. पताकाभिश्च—तदितराभिरति
  पताकाभिश्च पताकोपरिवर्त्तिनीभिर्मण्डित यत्तत्त्था
  (वृ० प० ४७६)
- २५. ..... ते वि तहेव पच्चिष्पणित । (श० ६।१८०)
- २६. तए ण से जमालिस्स खित्तयकुमारस्स पिया दोच्च पि कोडुवियपुरिसे सद्दावेत्ता एव वयासी—
- २७. खिष्पामेव भो देवाणुष्पिया । जमालिस्स खित्तयः कुमारस्स महत्यं महग्घ 'महत्य' ति महाप्रयोजन 'महग्घ' ति महामूल्य (वृ० प० ४७६)
- २८. महरिह विपुल निक्खमणाभिसेय जवहुवेह ।
  'महरिह' ति महाहँ—महापूज्यं महता वा योग्य
  'निक्खमणाभिसेय' ति निष्कमणाभिषेकसामग्रीम्
  (वृ० प० ४७६)
- २६. तए णंते कोडुवियपुरिसा तहेव जाव उवट्टवेंति। (श० ६।१८१)
- ३०. तए ण त जमानि खत्तियकुनार अम्मापियरो सीहासणवरिस पुरत्याभिमुह निसीयार्वेति
- ३१. निसीयावेत्ता अट्ठसएण सोवण्णियाण कलसाण एव जहा रायप्पसेणइज्जे (सूत्र २७१) जाव (स॰ पा॰)
- ३२. अहुसएण रूप्यमयाण कलसाण, अहुसएण मणिमयाण कलसाणं
- ३३ अट्टसएण सुवण्णरुप्यामयाण कलसाण, अट्टमएण सुवण्णमणिमयाण कलसाण
- ३४. अट्ठसएणं रूप्पमणिमयाण कलसाण अट्ठसएण सुवण्ण-रूप्पमणिमयाणं कलसाण
- ३५. अटुसएण भोमेज्जाण कलसाण
- ३६. सिव्विड्ढीए जाव (स॰ पा॰) रवेण सर्व्वेद्धर्या—समस्तछत्रादिराजिचह्नरूपया (वृ॰ प॰ ४७६)
- ३७ सन्वजुतीए यावत्करणादिद दृश्य — 'सन्वजुईए' सर्वेद्युत्या — आभ-रणादिसम्बन्धिन्या सर्वेयुक्त्या वा उचितेष्टवस्तुघटना-लक्षणया (वृ० प० ४७६)

१ ओवाइय सू० ६१,६२

<sup>\*</sup>ल्य : कपि रे प्रिया संदेशो कहै रे

- ३ महु यल सेन्य करेह, सर्वज समुदाये करी।
  पुरवासी जन जेह, तेह तणे मिलवे करी।।
- ३६ सर्व उचित जे जोग, कृत्य करण रूपे करी।। मर्व विभूति अरोग, सर्व सपदाये करी।।
- ४० सर्व विभूषा सार, तेह सर्व कोभा करी। सहु सभ्रम उदार, प्रमोद कृत्, उत्सुक करी॥
- ४१ सर्व पुष्प वर गव, माल्य अलंकारे करी। सर्व वाजित्र अमद, तसु रव मिल महाघोप जे।।
- ४२ सर्व गट्द अवलोय, अल्प अर्थ मे पिण हुवै। तिण कारण थी जोय, आगल कहियै छै हिवै॥
- ४३. मोटी ऋदि करि सोय, महाद्युति आभरणादि करि । महावल करिकै जोय, मोटे समुदाये करी ।।
- ४४. महा वर वाजित्रेह, जमक-समक समकाल करि । प्रकर्षे करि जेह, वजाडत्रै करिने वली।।
- ४५. शख गव्द सुप्रतीत, पणव पडह जे भाड नो। पडहग ढोल वदीत, भेरी ते मोटी ढक्का।
- ४६. ऊची अल्प विमास, महामुख वीटी चर्म करि। कही भल्लरी तास, खरमुही ते काहला॥
- ४७ हुंडुक वार्जित्र नाम, मुरज तिको मृदग महा। मृदग मादल ताम, ढक्का विशेष दुंदुभि॥
- ४८. शखादिक नो जेह, निर्घोप महा प्रयत्न करि। उपजायो रव तेह, फून निनाद व्वनि मात्र जे।।
- ४१. शब्द अने ध्वनि वेह, एहिज लक्षण जेह रव। ते ध्वनि शब्द करेह, ए जाव शब्द मे जाणवा।।
- ५० \*मोटे-मोटे दीक्षा तणी रे, करै ताम अभिपेक। इम अभिपेक करी तदारे, करतल जाव संपेख।।
- ५१. जय विजय शब्दे करी रे वधावे वधावी कहै एम। कहै जाया! स्यू दीजियं रे ? तुभ प्रार्थना प्रेम।।

- प्र. अथवा देवां जोय, किह्यै ते सामान्य थी। प्रार्थना अवलोय, विशेष थी किह्यै तिको।।
- ५३. \*अथवा किण वस्तु थकी रे, ताहरूं अर्थ प्रयोजन । दोयसी ने नवमी कही रे, सरस ढाल गोभन ॥

- ् ३८. सञ्चवलेणं सञ्चसमुदएण 'सञ्चवलेणं' सञ्चंसैन्येन 'सञ्चममुदएण' पौरादिमीलनेन (वृ० प० ४७६)
  - ३६. सब्वादरेणं सक्विवभूईए
    'सब्वायरेणं' सर्वोचितकृत्यकरणरुपेण 'सब्विवभूईए'
    सर्वसम्पदा (वृ० प० ४७६)
  - ४०. सन्विविभूसाए सन्वसंभ्रमेण 'सन्विविभूसाए' ममस्तशोभया 'सन्वसभ्रमेण' प्रमोदकृतौत्मुक्येन । (वृ० ५० ४७६)
  - ४१. सञ्चपुष्फगधमल्लालकारेणं सञ्चतुिंहयसद्मिणणाएणं सञ्चतुर्यंगञ्दाना मीलने यः संगती निनादी महाघोपः स तथा तेन (वृ० प० ४७६)
  - ४२. अल्पेप्विप ऋद्वयादिषु सर्वशब्दप्रवृत्तिर्दृष्टेत्यत आह— (वृ० प० ४८६)
  - ४३. महया इड्ढीए महया जुईए महया वलेणं महया समुदएण
  - ४४. महया वरतुिंडय-जमगसमग-प्यवाइएण
     यमकसमक युगपदित्यर्थः (वृ० प० ४७६)
  - ४५. संख-पणव-पडह-भेरि-पणवो—भाण्डपटह. भेरी—महती ढक्का (वृ० प० ४७६)
  - ४६. झल्लरि-खरमुहि

    भल्लरी-अल्पोच्छ्या महामुखा चम्मीवनद्वा खर
    मुखी-काहला (वृ० प० ४७६)
  - ४७. हुंदुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहि मुरजो—महामईंल: मृदङ्गो—मईंल: दुन्दुभी—दक्का-विशेष एव (वृ प० ४७६)
  - ४५.४६. णिरघोसणाइयरवेणं
    ततः शङ्घादीनां निर्घोपो महाप्रयत्नांत्पादितः शब्दो
    नादितं तु—ध्विनमात्रं एतद्द्वयलक्षणो यो रवः स
    तथा तेन (वृ० प० ४७६)
  - ५०. महया-महया निक्खमणाभिसेगेण अभिसिचति, अभि-सिचित्ता करयल जाव (स॰ पा॰)
  - ५१. जएण विजएण वढावेंति, वढावेत्ता एव वयासी— भण जाया ! कि देमो ? कि पयच्छामो ?
  - ५२. अथवा ददा सामान्यत प्रयच्छाम. प्रकर्पेणेति विशेष. (वृ० प० ४७६)
  - ५३. किणा व ते अहो ? (श० ६।१८२)

<sup>\*</sup>लय: कपि रे प्रिया संदेशो कहै रे

#### दूहा

- १ तव जमाली क्षत्रिय-सुत कहें मात पिता ने एम। अहो मात <sup>!</sup> ने तात जी <sup>!</sup> हू वछू घर पेम।।
- २ कुत्रिकापण थी रजोहरण, पात्र अणावी फेर। काइयप ते नाई प्रतै, तेडावी फुन हेर॥
- ३ कु कहिता महि त्रिक त्रितय, स्वर्ग मर्त्य पाताल । तत्सभवि वस्तू अपि कुत्रिक कहियै न्हाल ॥
- ४ ते वस्तू सम्पादिका, आपण हाट अखेह। कही कुत्रिकापण तिका, देवाधिष्ठित एह।।

वा०—कुत्तियावण दुकान नो धणी ते केहवो हुवै ? ते कहै छै—क्रोध, रिहत, गर्व-रिहत, राग-द्वेप-माया-लोभ-रिहत, जिताश, जितपरीपह, शूर, दाता, अविरित सम्यग्दृष्टि, भगवत ऊपर राग, पर-उपगारी, राजादिक जेहने घणु मानै ? देवता वैमानिक पूर्व नै स्नेह किर प्रिय मित्र तथा पितर—दादो, पितादिक तीन भुवन माहि जे वस्तु ते सर्व दिये । कुत्तियावण जे नगर मा होय, ते नगर नो राजा सर्व प्रकारे अणाचार वर्जे, न्याय मे चाले, तिहा असोक वृक्ष नित्य हुवै । जेहने घर ने विषे कुत्रिकापण हाट हुवै, तेहने देव अधिष्ठायक हुवै । रत्नप्रवोध ग्रन्थ मध्ये एहनू कह् यू छै ।

- प्र जमाली क्षत्रिय-सुत, तास पिता तिहवार। कोटविक नर तेहनै, इम वोलै अवघार॥
- ६ अहो देवानुप्रिय । तुम्हैं, श्री भडार थकीज। सोनैया त्रिण लक्ष ते, ग्रहण करी शीघ्रहीज।।
- ७ सोनैया वे लक्ष कर, कुत्रिक आपण थीज। रजोहरण फुन पात्र जे, आणो ए वर चीज।।
- द सोनैया एक लक्ष दे, काश्यप—नापित जेह। तेह प्रते तेडाविये जनक आज्ञा इम देह।।

\*सुण सुखकारी, दीक्षा महोत्सव जमाली ना भारी। (ध्रुपद)

- ए कोडविक तिणवारो. ओतो जमाली क्षत्रियकुमारो।
   तसु जनक तणो वच ताह्यो, सुण हरप सतोपज पायो।।
- १० करतल जोडी जिवारो, ओतो वचन करै अगीकारो। शीघ्र भडार थी सारो, ओतो त्रिण लक्ष लेई दीनारो॥
- ११ तिमहिज यावत देई भावे, इक लक्ष नापित तेडावे। वे लक्ष सुवर्ण करि माणे, रजोहरण पात्र प्रति आणे॥
- १२ काश्यप नापित तिवारो, जमाली नै पिता जिहवारो। कोडुविक नर पास तेडाया, ओतो हरष सतोपज पाया।।

- तए णं से जमाली खित्तयकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—इच्छामि ण अम्मताओ ।
- २-४. कुत्तियावणाओ रयहरण च पिडग्गह च आणिय, कासवर्गं च सद्दाविय (श० ६।१८३) 'कुत्तियावणाओ' त्ति कुत्रिक—स्वर्गमत्यंपाताललक्षण भूत्रय तत्सम्भवि वस्त्विप कुत्रिक तत्सम्पादको य आपणो—हट्टो देवाधिष्ठितत्वेनासौ कुत्रिकापणस्त-स्मात्। 'कासवग' ति नापित (वृ० प० ४७६)

- ५ तए ण से जमालिस्स खित्यकुमारस्स पिता कोडु-वियपुरिसे सद्दावेद, सद्दावेत्ता एव वयामी—
- ६. खिप्पामेन भो देनाणुप्पिया । सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइ गहाय 'सिरिघराओ' ति भाण्डागारात् (नृ० प० ४७६)
- ७. दोहि सयसहस्सेहि कुत्तियावणाओं रयहरण च पिडग्गह च आणेह
- स्यसहस्सेण कासवर्ग सद्दावेह । (श० ६।१८४)
- ६. तए ण ते कोडुवियपुरिसा जमानिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एव बुत्ता समाणा हट्टतुट्टा
- १०. करयल जाव (स० पा०) पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओं तिण्णि सयसहस्साइ गिण्हति
- ११ दोहि सयसहस्सेहि कुत्तियावणाओ रयहरण च पिडग्गह च आर्णेति, सयमहस्सेण कासवग सद्दावेंति । (श० ६/१८४)
- १२ तए ण से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिचणा कोडुविय पुरिसेहि सद्दाविए ममाणे हट्टलुट्ठे

<sup>\*</sup>लय: सुण चिरताली थारा

१३ स्नान विलक्षम कीया, जाव तनु श्रंगार सीया। जिहा जनक जमाली नो जाणी, तिहा आवे आवी पहिछाणी।। [मुण भव प्राणी, ए तो चरण-महोच्छव जाणी]

१४ करतल जोडी तामो, जमाली ना पिता नै शिर नामो। जय-विजय वचन सू वधायो, ओतो वोलै इहविध वायो॥

१५. अहो देवानुप्रिया जी । मुक्त आजा देवो तुम ताजी । जे मुक्त कार्य करिवू, तिको हरप घरी आदिरवू ॥ १६ जमाली क्षत्रियकुमारो, तास जनक तिहवारो । तेह नापित प्रति एमो, ओतो वचन वदे घर प्रेमो ॥ १७ अहो देवानुप्रिया जी । जमाली क्षत्रिय-सुत ने समाजी । परम यत्न करि पेखी, चिहुं आगुल वर्जी विभेखी ॥

१८ दीक्षा प्रयोग सुस्थापो, अग्रभूत केश प्रति कापो। लोच ने अर्थे विशेषो, चिहुं आगुल राखो केशो।।

१६ काव्यप नापित तिवारो, जमाली ने जनक जिहवारो । इम वचन कहाँ छतै ताह्यो, ओतो हरप सतोपज पायो ॥

२० करतल यावत एमो, स्वामी तहत्ति आज्ञा किह तेमो। विनय करी सुविचारो, ओतो वचन करे अगीकारो॥

२१ सुगव गवोदक करिनें, कर पग पखाले पखाली नै। निर्मल अठ पुड वस्त्र करीने, मुख वांवे मुख वांवी नै।।

२२ जमाली क्षत्रियकुमर नै, परम यत्न करि चित्त घर नै। चिहु आगुल वर्जी दीक्षा योग्य, पवर केश कापे सुप्रयोग्य।।

२३ जमानी क्षत्रियकुमारो, श्रोतो तास माता तिहवारो। हंस लक्षण पट शाटक करीने, अग्र गहै सुग्रही ने ॥

# सोरठा

२४ उज्जल हस सरीस, अथवा श्वेतज हस ना। चिह्न रूप सुजगीस, हस लक्षण कहियै तसु।। २५ जाटक जे पट रूप, पट-जाटक कहियै तसु। ज्ञटन तणो तदूप, कर्त्ता पिण जाटक हुवै।। २६ ते व्यवछेदन अर्थ, पट नो ग्रहण कियो इहां। वा जाटक तदर्थ, वस्त्र मात्र ते पृथुल पट।।

वा० — पडसाटएण पटरप शाटक ते पट णाटक। गटन ते वस्त्र, तेहनो करणहार पिण गाटक किहर्य। ते व्यवद्धेदन अर्थे पट नो ग्रहण कर्यू। अथवा गाटक ते वस्त्र मात्र ते पृथुल विस्तारवत पट किहर्य ते भणी पट-णाटक जाणवो। २७ सुग्च गवोदके न्हाली, तिके केश पखाले पखाला। अग्र प्रघान करी पेखो, वर श्रेष्ठ करी सुविशेखो।।

२८ गंघ ने फुन माल करीने, तिके केश अर्चे अर्ची ने। शुद्ध वस्त्रे वार्ध वांधी ने, रतनकरड प्रक्षेप प्रक्षेपी ने॥

१३. ण्हाए कयवां निकम्मे जाव (म० पा०) सरीरे जेणेव जमानिस्म प्रत्तियकुमारस्म पिया तेणेव उवागच्छड उवागच्छिता

१४. करवल जाव (स॰ पा॰) जमानिस्म चत्तियकुपारम्म पियय जएण विजएण वद्घावेइ वद्घावेत्ता एव वयासी —

१५. सदिसतु णं देवाणुप्पिया ! ज मए करणिज्ज ? (श० १/१८६)

१६. तए ण से जमानिस्स खत्तियकुमारस्म पिया त कास-वगं एवं वयामी—

१७. तुमं देवाणुष्पिया ! जमालिस्म यत्तियकुमारस्स परेण जत्तेणं चटरंगुलवज्जे

१८. नियममणपाओगो अगाकेमे कप्पेहि । (ज० ६/१८७) 'अगाकेसे' ति अग्रभूता. केशा अग्रकेशास्तान्

(वृ० प० ४७६) १६. तए ण से कासवगे जमानिस्म खत्तियकुमारस्स

विचणा एव वृत्ते समाणे हट्टतुद् हे

२०. करयल जाब (मं० पा०) एवं सामी । तहत्ताणाए विणएण वयण पटिसुणेइ

२१. सुरिभणा गंघोदएण हत्यपादे पक्खालेड, पक्खालेसा सुद्धाए अट्टपडलाए पोत्तीए मुहं वघड, विधत्ता

२२. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेण जत्तेण चउरगुत-वज्जे निक्खमणपाओगो अगाकेमे कप्पेइ।

(श॰ ६।१८८)

२३ तए ण सा जमानिस्स खत्तियकुनारस्म माया हसनक्खणेण पडसाटएणं अग्गकेसे पडिच्छइ

२४. 'हसलक्खणेण' ग्रुक्लेन हसचिह्नेन वा (वृ० प० ४७६)

२५,२६ 'पडमाडएण' ति पटरूप गाटक. पटगाटक, गाटको हि गटनकारकोऽप्युच्यत इति तद्व्यवच्छेदार्थं पटग्रहणम्, अथवा गाटको वस्त्रमात्र म च पृयुक्त. पटोऽभिद्यीयत इति पटगाटक. (वृ० प० ४७६)

२७. सुरिमणा गधोदएण पनखालेइ, पनखालेता अगोहिं वरेहिं 'अगोहिं' ति 'अमुपै.' प्रधाने (वृ० प० ४७६)

२८ गधेहि मल्लेहि अच्चेति, अच्चेता 'सुद्वे वत्थे' वधइ, विधत्ता रयणकरडगिस पिक्खवित, पिक्खविता

- २६. हार मोत्या रो उदक नी घारो, सिंदुवार तरु विशेष विचारो। केइ कहै निर्गुडी ना फूलो, तिके उज्जल अधिक अतूलो।।
- ३० छेदी मोती नी मालो, जेहवी दीसै तेहवा आसू न्हालो। सुत-विरह दुसह चित डोले, आसू मूकती इम वोले।। ३१ ए जमाली क्षत्रियकुमारो, तेहना अग्र-केश वस्तु सारो। वर मदन त्रयोदशी आदि, घणी तिथि विषे सुसवादि।।
- ३२. पर्व दीवाली प्रमुख विषेहो, वली बहु उत्सव विषे एहो। ते प्रिय-जन-सगम समुदायो, कौमुदी प्रमुख कहिवायो॥
- ३३ यज्ञ नागादि पूजा कहेहो, छण इद्र महोत्सवादि विषेहो। ए केश तणु सुविमासी, मोने अपच्छिम दर्शण थासी।।

- ३४ अपच्छिम इहा अकार, अमगल टालण ने अर्थ।, पित्र्यम छेहलो सार, हुस्यै दर्श केशा तृणो।।
- ३५ दर्श केश नु एह, जमाली ना शिर तणा। केश देखवे जेह, दर्शण दीठो सुन तणो।।
- ३६ वा पश्चिम छेहडो नाहि, वार-वार ए केश थी। जमाली नो ताहि, मुफ्तनै दर्शण थ.पसै।। वा॰—नहीं पश्चिम छेहडो ते अपश्चिम कहियै। एतलै वार-वार करिकै

जमालीकुमार नो दर्शन ए केश देख्ये छते थास्यै, सभारिवा था । ३७. एम कहीने तेहो, एतो ओसीसामूल विषेहो । स्थापै केशा ने जिवारो, आनो मोह वश मात तिवारो ॥

३८ जमाली क्षत्रियकुमारो, तसु मात पिता तिहतारो। दूजी वार उत्तर दिश स्हामो, सिहासन रचावै अभिरामो॥

#### सोरठा

- ३६ उत्तरावक्रमणक होय, उत्तरवो उत्तर दिशि। जेह थकी अवलोय, त्या वेसाड़ै सुत भणी।।
- ४० \*क्षत्रिय-सुत जमाली नै, रूपा सोना ना कलश करी नै। स्नान करावै सुचगो, स्नान करावी नै लूहै अगो।।
- ४१ पशमवत सुकुमाल, सुरिभगघ प्रधान विशाल। रक्त वस्त्र रुमाल करी नै, गात्र प्रतै लूहै लूहीनै।।

- '२६. हार-वारिधार-मिंदुवार
  - 'सिंदुवार' ति वृक्षविशेषो निर्मुण्डीति केचित् , तत्कुसुमानि सिन्दुवाराणि तानि च शुक्लानीति (वृ० प० ४७६)
- ३० छिण्णमुत्ताविलप्पगासाइं सुयवियोगदूमहाइ असूइ विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी एव वयासी—
- ३१. एस ण अम्हं जमालिस्म खत्तियकुमारस्स बहूसु
  तिहीसु यं -'एस ण' ति एतत्. अग्रकेशवस्त ''तिहीस य' ति

'एम ण' ति एतत्, अग्रकेशवस्तु ''तिहीसुय' ति मदनत्रयोदश्यादितिथिपु (वृ० प० ४७६)

२२ पन्वणीसु य उस्सवेसु य 'पन्वणीसु य' ति पन्वंणीपु च कार्तिक्यादिषु 'उस्सवेसु य' ति प्रियसङ्गमादिमहेपु

(वृ० प० ४७६)

३३ जण्णेसु य छणेसु य अपिन्छमे दिरमणे भविस्सिति
, 'जन्नेसु य' ति नागादिपूजासु 'छणेसु य' ति
, इन्द्रोतसवादि लक्षणेपु (वृ० प० ४७६)

- ३४. 'अपच्छिमे' त्ति अकारस्यामगलपरिहारार्थं त्वात् पश्चिम दर्शन भविष्यति (वृ० प० ४७७)
- ३५ एतत् केशवर्शनमपनीतकेशावस्यस्य जमालिकुमारस्य यहर्शन ' (वृ० प० ४७७)
- ३६. अथवा न पश्चिम पौन पुन्येन जमालिकुमारस्य दर्शनमेतद्दर्शने भविष्यतीत्यर्थ (वृ० प० ४७७)
- ३७ इति कट्टु ऊभीसगमूले ठवेति । (श॰ ६/१८६)
- ३८ तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो दोच्च पि उत्तरावक्कमण सीहासण रयावेंति
- ३६ 'उत्तरावकमण' ति उत्तरस्या दिश्यपनमण— अवतरण यस्मात्तद् उत्तरापकमणम्—उत्तरामिमुख (वृ० प० ४७७)

४० जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सेया-पीयएहि कलसेहि ण्हार्वेति ण्हावेत्ता 'सीयापीयएहिं' ति रुप्यमये. मुवर्णमयेष्टेनेत्यर्थ

सायापायए।ह ।त रुप्यमयः मुवणमयरचत्यय (वृ० प० ४७७)

४१. पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गधकानाईए गायाद लूहेति, लूहेता 'पम्हलसुकुमालाए' ति पक्ष्मवत्या सुकुमालया चेत्द्रां 'गधकासाइए' ति गन्धप्रधानया कपायरक्तया शाटिकयेत्यर्थं (वृ० प० ४७)

<sup>\*</sup>लय: सुण चिरताली थारा

- ४२ सरस तत्काल नों घस्यो जेह, गोशीर्प चंदन तेह । ते प्रधान चदन करीने, गात्र प्रते लीपे लीपी ने ॥ ४३. नासिका ने नि.स्वासज वाय, तेणे करी उडे कपाय। अति ही हलुओ वस्त्र विचारी, ते तो चक्षु ने आनदकारी॥
- ४४. प्रवर वर्ण फर्ग सहित न्हालो, हय-लाल थी अधिक सुहालो। अत्यंत ववल उज्जास, मुवर्ण खिचत विहुं छेहडा जासं॥

- ४५ मोटा योग्य उज्जल हस सरिखो, अथवा हंस ना रूप सरिखो।
  एहवा पट्ट बाटक सुखदाय, पहिरावै पहिरावी ताय।।
  ४६ अठारैसरियो हार, पहिरावै अधिक उदार।
  विल नवसरियो अद्वहार, पहिरावै पहिरावी सार।।
- ४७. इम जिम मुरियाभ नै जाणी, अलकार तिमहिज पिछाणी । नानाविव रयण संकट उत्कृष्टं, वारु मुकुट पहिरावै सुइष्ट ॥

- ४८. मुरियाभे सुर सोय, अलंकार पहिर्या तिमज। इहा कहिवो अवलोय, रायप्रश्रेणी थी कहू। ४९. विचित्र मणी में ताहि, पहिरावे एकावली। इम मुक्ताविल ताहि, केवल मुक्ताफलमयी।।
- ५० कनकाविल कहिवाय, सुवर्ण-मणिमय शोभती। रत्नावली सुहाय, माला केवल रत्न नी।।
- ५१ अगद केयूर दोय, वाहू नां आभरण जे। तास विशेष सुजोय, जुदा कह्या किण कारणे।।
- ५२ नाम कोप रै माहि, एकार्थ ए आखिया। इहा जुदा कह्या ताहि, फेर आकार नु जाणवू।।
- ५३. कटक तिको अवलोय, कलाचिका आभरण जे। शृदित वहिरखा होय, कटिसूत्र कणदोरो वली।।
- पू४ हस्तागुलि दग देख, दीपती दग मुद्रिका। सुवर्ण-साकल पेख, हिय-गेहणो वक्ष-सूत्र ए।।
- ५५. वच्छा-सूत्रज एह, पाठातर कह्यूं वृत्ति में। सकल ए शुभ रेह, उत्तरासग जिम पहिरिड।।

- ४२. सररोणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुनिपंति अणुनिपत्ता
- ४३. नासानिस्मामवायवोज्ज चक्युहर
  'नासानीसासे' त्यादि नामानि श्वामवातवाह्यमितनघुत्वात्
  चक्षुहर-नोचनानन्ददायक्त्वात्। (वृ० प० ४७७)
- ४४. वण्ण-फरिसजुत्त ह्यलालापेलवातिरेगं धवल कणगराचितंतकम्म 'वन्नफरिसजुत्त' ति प्रधानवणंस्पर्गमित्यर्थं. हयलालायाः सकाशात् पेलवं - मृदु अतिरेकेण—अतिशयेन यत्तत् तथा कनकेन राचित—पण्डित अन्तयो —अंचलयो कमं—वानलक्षण यत्तत्तया। (वृ० प० ४७७)
- ४५. गहरिह हंसलनयणपटमाडग परिहिति परिहित्ता
- ४६. हार पिणहेंति पिणहेत्ता अद्धहार पिणहेंति, पिणहेत्ता 'हार' ति अप्टादणमरिक 'पिणहित' पिनहात पितरा-विति शेष. 'अद्धहार' ति नवसरिकम् (वृ० प० ४७७)
- ४७ एव जहा सूरियाभस्म अलकारो तहेव जाव (स॰ पा॰) चित्त रयगसकडुक्कड मडड पिणद्वेंति रत्नसंकट च त दुत्कट च—उत्कृष्ट रत्नसकटोत्कट (वृ॰ प॰ ४७७)
- ४८. रायपसेणइय सूत्र २८५
- ४६ एगाविन पिणद्वेति मुत्ताविन पिणद्वेति तत्रैकावली—विचित्रमणिकमयी मुक्तावली—केवल-मुक्ताफलमयी। (वृ० प० ४७७)
- ५०. रयणार्वील पिणर्द्धेति कनकावली—सौवर्णमणिकमयी रत्नावली—रत्नमयी (वृ० प० ४७७)
- ५१. अगयाई केयूराइ अङ्गदं केयूरं च वाह्वाभरणविशेष

(वृ० प० ४७७)

- एतयोग्च यद्यपि नामकोशे एकाथंतोक्ता तथाऽपीहाऽऽ-कारविशेपाद् भेदोऽवगन्तव्य (वृ० प० ४७७)
- ५३ कडगाइ तुडियाइ कडिसुत्तग कटक —कलाचिकाभरणविशेष. त्रुटिकं—वाहुरक्षिका (पृ० प० ४७७)
- ४४ दसमुद्दाणतग विकच्छमुत्तग दशमुद्रिकानन्तक —हस्ताङ्गुलीमुद्रिकादशक वक्ष-सूत्र—हृदयाभरणभूतमुवर्णसकलक (वृ० प० ४७७)
- ५५ 'वेच्छासुत्त' ति पाठान्तर तत्र वैकक्षिकासूत्रम् उत्तरासगपरिधानीयं संकलक (वृ० प० ४७७)

५६. मादल नैं आकार, मुखी कहियै मादलो। फुन कठमुखी सार, गेहणु तेह गला तणु॥

कहिये छै पहिछान. ५७ पालव जे पहिर्या कान, चूडामणि क्षिर सेहरो॥ कुडल ५८ वाचनातरे वर्णक ए आभरण वान, सूत्र विषे सुविधान, दीसै छै साक्षात ए॥ ५६ \*घणु वखाण स्यू कीजै, गथिम सूत्रे करि माल गूथीजै। वेढिम वीटी ने निपजाई माला, पुष्फ लबूसकादि विशाला।। ६०. पुरिम वश शिलाकादी पोई, हिवै सघातिम अवलोई। माहोमाहि नालिका करेह, नालिक गूथी माला निपावेह ।।

६१ ए चिहु विध माला करि सोय, कल्प वृक्ष नी पर अवलोय। कल्प वृक्ष फूल करि शोभेह, तिम अलक्कृत विभूपित करेह।।

वा॰—वाचनातरे वली ए अधिक दीसै छै—'दहरमलयसुगिधगिधिए हिं गायाइ भुकुडें ति' ति । एहनो अर्थ — तिहा दहर अने मलय नामैं विहु
पर्वंत सबधी तेह यनी अपना चदनादि द्रव्यजपणे करी जे सुगध, तेहनी गिधका
ते वामना, तेणे करी । वली अनेरा आचार्य इम कहै छैं—दईर ते वस्त्रे करी
वाध्यो कुडिकादिक भाजन नो मुख, तेणे करी गाल्यो अथवा तेहने विषे पचायो
जे। मलयगिरि ने विषे अपजव किरि मलयज— श्रीखड सबधी सुगध—गिधका
नी वासना, तेणे करी गायाइ—गात्र प्रते भुकुडेंति अर्थात् उद्धूलें — लेपन करें।
६२, ए दोयसी दशमी ढालो, तिण मे आखी वात विशालो।
चरण लेवा जमाली थयो त्यारी, जनक करें महोत्सव भारी।।

ढाल: २११

#### दूहा

- १ जमाली क्षत्रियकुवर, तास जनक तिहवार । कोटुविक नर तेडनै, इम कहै वच अवधार ॥ २ देवानुप्रिय ! शीघ्र ही, अनेक सैकडा थभ । तेह वि ेलीला करी, रही पूतल्या रभ ॥
- वा॰ —वाचनातरे विल ए इम दीसै छै —-अब्भुग्गय-सुकयवइरवेइय-तोरण-वररइयलीलिट्टियसालभजियाग ति । तिहा अब्भुग्गय — ऊची सुकय—सम्यक्
- \* लय: मुण चिरताली थारा

- ५६ मुर्राव कठमुर्राव मुरवी—मुरजाकारमाभरणं कण्ठमुरवी—तदेव कण्ठा-सन्ततरावस्थानं (वृ० प० ४७७)
- ५७ पालव कुडलाइ चूडामणि प्रालम्ब—झुम्बनक (वृ० प० ४७७)
- ५८. वाचनान्तरे त्वयमलकारवर्णकः साक्षाल्लिखित एव दृश्यत इति \_ (वृ० प० ४७७)
- ५६,६० कि वहुणा ? गथिम-वेढिम-पूरिम-सघातिमेण इह ग्रन्थिम-प्रथनिवर्नृतं सूत्रग्रथितमालादि वेष्टिम —वेष्टितनिष्पन्न पुष्पलम्बूसकादि पूरिमं—येन वश- शलाकामयपञ्जरकादि कूर्चीद वा पूर्यते सघातिम तु यत्परस्परतो नालसङ्घातनेन सङ्घात्यते

(वृ० प० ४७७) ६१. चउिव्वहेण मल्लेण कप्परुक्खग पिव अलिकय-विभूसिय करेति । (श० ६।१६०)

वा०—वाचनान्तरे पुनिरिदमिधक " दृश्यते, तत्र च दर्द्रमल-याभिधानपर्वतयो सम्बन्धिनस्तदुद्भूतचन्द नादिद्रव्यजस्वेन ये सुगन्धयो गन्धिका —गन्धावासास्ते तथा, अन्ये त्वाहु — दर्देर —चीवरावनद्ध कुण्डिकादिभाजनमुख तेन गालिता स्तत्र पक्वा वा ये 'मलय' ति मलयोद्भवत्वेन मलयजस्य— श्रीखण्डस्य सम्बन्धिनः सुगन्धयो गन्धिका—गन्धास्ते तथा तैर्गात्राणि 'भुकुर्डेति' ति उद्धूलयन्ति (वृ० प० ४७७)

- १ तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुवि-यपुरिसे सद्दावेद्र सद्दावेत्ता एव वयासी—
- २ खिप्पामेव भो देवाणुष्पिया अणेगखभसयसण्णिविट्ठ लीलद्वियसालभजियाग शालिभञ्जिका —पुत्रिकाविशेषा वृ० प० ४७७) वा०—वाचनान्तरे पुनरिदमेव दृश्यते तत्र चाम्युद्गते-उच्छिते सुकृतवज्जवेदिकाया सम्वन्धिन तोरणवरे रचिता
  - १ अगसुत्ताणि भाग २ श० ६।१६० के टि० १० में 'विकच्छसुत्तग' के स्थान पर वृत्ति के दो पाठान्तर उद्धृत किये है—वच्छसुत्त और वेकच्छसुत्त । जया-चार्य ने इस स्थान पर वच्छासुत्त पाठ रखा है।

प्रकारे कीघी वडरवेइय—वच्च नी वेदिका सवधी तोरण वररइय—प्रधान तोरण नै विषे रची लीलद्वियसालभाजयागं—लीला करी रही पूतल्यां जेहने विषे तिका। लीलास्थिता शालभञ्जिका यस्या सा तथा तो (वृ० प० ४७७)

### दूहा

- ३ जिम रायप्रश्रेणी ने विषे, वर सूर्याभ विमाण। तेह तणु वर्णक कहाू, तेम इहा पिण जाण।।
- ४. जाव मणि रत्नां तणी, सखर घटिका जाल। तेणे करी सहीत छै, प्रवर पालखी न्हाल॥ वा०—विमाण नुवर्णक तिम पालसी नुं वर्णक ते इम।

### गीतकछंद

- ५ ईहामृगा ते वरगडा फुन वृषभ हय नर मगर ही। पंखी वली वालग्ग अहि वा स्वापदा अर्थ उभय ही।
- ६. किन्नर सुरा मृग सरभ चमरज गज प्रवर वन नी लता। ए सर्व चित्रामे सुचित्रित सेविका रचिये रता॥
- ७ स्तभ विषे स्थापी वज्र नी, वर वेदिका करि परिगता। इह कारणे अभिराम ते, रमणीक देख्या चितरता॥
- द विद्यावरा नी श्रेणि यमलज, युगल द्वय स्त्री पुरुपही। तिणहीज यत्रे करीने ते, युक्त सिवका छै वही।।
- १ अर्च्ची हजारा तणी माला, आवली छै जे विपे। फुन रूप सहस्रगमैज सहित मुदीप्यमानज जन अखै।।
- १० अत्यर्थ करि फुन दीष्तिमानज तेह छै अति दीपती। विल चक्षु लोचन लेस तेहन्, अर्थ किह्यै वृत्ति थी।।
- ११ चक्षु तिका जसु देखवै करि, दिलप्यती इव ते हुवै। देखवा योग्यपणे करी, आनद अति ही अनुभवै॥
- १२. सुखकारियों छैं फर्ज जेहनु, रूप जोभा सहीत ही। घटावली चलते छते तसु, मधुर मनहर स्वर वही।।
- १३ शुभ कात देखण योग्य जे, फुन निपुण पुरिसे ओपिता। देदीप्यमानज मणि रतन नी, घटिका वृद परिखिता।।

# सोरठा

१४. आख्यो ए विस्तार, रायप्रश्रेणि सूत्र थी। वाचनांतरे सार, दीसै छै साक्षात सहु।।

#### दूहा

१५ प्रवर पालखी प्रति पुरुष. सहस्र उपाड़ै जेह। ते स्थापो स्थापी करी, मुक्त आज्ञा सूपेह।।

- 3. जहा रायणमेणडज्जे (सू० १२४) विमाणवण्णयो
- ४. जाव मणिरयणघटियाजालपरिविधत्त
- ४,६. ईहामियउमभतुरगनरमगरविहगवालगिकन्तरहरु-सरभवमरकुजरवणलयपउमलयभित्तिचित्त : ईहामृगा—। वृका. ऋषभा वृषभा व्यालका — ग्वापदा भुजगा वा किन्नरा—देविवशेषा हरवो — मृगविशेषा. (वृ० प० ४७७,४७०)
- ७ 'यमुगायवइरवेइयापरिगयाभिराम' स्तम्मेषु उद्गता— निविष्टा या वज्यवेदिका तथा परिगता—परिकरिता अत एवाभिरामा च रम्या या मा

(वृ० प० ४७८)

- प्विज्जाहरजमनजुयलजंतजुत्तिपव' विद्याघरयोर्यद्
   यमल—समश्रेणीकं युगलं—ह्यं तेनेव यन्त्रेण—ताम्
   मञ्चिरिष्णुपुरुषप्रतिमाह्यरूपेण युक्ता या सा तथा
   (वृ० प० ४७८)
- ६. 'अञ्चीसहस्समालिणीय' अञ्चित्तसहस्रमालाः— दीप्तिसहस्राणामावल्यः मन्ति यस्यां सा क्वगमह-स्सक्तिय 'भिममाण' दीप्यमाना (वृ० प० ४७६)
- १०,११ 'भिव्मिममाणां' अत्ययं दीप्यमानां 'चन्खु-लोयणलेस' चक्षु कर्तृं लोकने —अवलोकने सति लिशतीय —दर्शनीयस्वातिशयात् विलप्यतीव यस्या सा तथा ता (वृ० प० ४७८)
- १२. 'मुहफास सस्सिरीयरूव' सशोभरूपका 'घटावितच-लियमहुरमणहरमर' (वृ० प० ४७८)
- १३. सुहं कत दरिमणिज्जं निज्जोवियमिमिमिसतमणि-रयणघटियाजालपरिविखत्तं (वृ० प० ४७८)
- १४. वाचनान्तरे पुनरय वर्णक. साक्षाद् दृश्यत एवेति । (वृ० प० ४७८)
- १५ पुरिससहस्सवाहिणि सीय उबट्टवेह, उबट्टवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चिप्पणह ।

२६८ भगवती जोड़

- १६. कोडंविक तिण अवसरे, जावत सूपै आण । शिविका पूर्व कही तिमज, त्यार करी सुविधान ॥ \*चारू जमाली ना चरणमहोत्सव साभलो । (ध्रुपद)
- १७ हारे लाला, जमाली क्षत्रिय-सुत तदा, हारे लाला केशालकार करेह। हारे लाला, केश तेहिज अलकार छै,

हा रे लाला, केशालकार कह्यु एह ॥

# १७. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे केसालकारेण 'केसालकारेण' ति केशा एवालद्कार केशालद्कारस्तेन

(श० ६।१६१)

(ৰু০ ৭০ ४७८)

१६. तए ण ते कोडुवियपुरिमा जाव पच्चिप्पणिति ।

- १८. यद्यपि केशज तास, पहिला जे काप्या हुता। इण हेतू थी जास, सम्यक ए नींह सभवे।।
- १६. तथापि केइय केश, रह्या हुता जे तेहनु। अलकार कह्यु एस, प्रथम अर्थ इम वृत्ति मे।।
- २०. तथा केश नु सार, अलकार पुष्पादि जे। ते केशालकार, करी विभूपा तिण करी॥
- २१. \*वस्त्र ने अलकारे करी, माला ने अलकारेह। आभरण अलकारे करी, ए चिहु अलकार करेह।
- २२. चिहु अलकार कीधे छते, प्रतिपूर्ण अलकार। गेहणा पहिरी सिंहासन थकी, ऊठै ऊठी तिहवार।।
- २३ सिवका प्रते जे प्रदक्षिणा, करतो छतो मन रग। सिवका विषे चढै ते तदा, सिवका चढी नै सुचग।।
- २४. सखर सिंहासन ने विषे, पूरव साम्हों पेख। मुख करीने वेसे तदा, मन मांहै हरप विशेख।।
- २५ जमाली क्षत्रियकुमर नी, माता करीनै स्नान। जाव शरीर श्रुगार नै, वस्त्र गेहणा परिधान।।
- २६ हस लक्षण पट शाटक ग्रही, सिवका नै प्रति तह।। अनुप्रदक्षिण करती थकी, चढ़ै चढी नै जेह।।
- २७ जमाली क्षत्रियकुमार नै, दक्षिण पासै देख। प्रवर भद्रासन नै विषे, आय वैठी सुविशेख।।
- २८ जमाली क्षत्रियकुमार नी, घाय माता तिहवार। स्नान करी सुविशेख थी, यावत तनु श्रृगार॥
- २६ रजोहरण पात्रा ग्रही, सिवका प्रति सुविशेख ॥ अनुप्रदक्षिणा करती थकी, चढै चढी सपेख ॥
- ३० जमाली क्षत्रियकुमार नै, डावै पासै चित ढाय। प्रवर भद्रासण ने विषे, वैठी छै धाय माय।।
- ३१. जमाली क्षत्रियसुत नै तदा, पूठै इक तरुणी प्रघान। श्रुगार रस तणी घर जिसो, मनहर वेप सुजान।।
- ३२ गमन प्रमुख विषे चतुर ते, जावत रूप आकार। योवन वय ने विलास जे, तिण करि सहित उदार।।

- १८ यद्यपि तस्य तदानी केशा. किल्पता इति केशालङ्कारो न सम्यक् (बृ० प० ४७८)
- १६. तथाऽपि कियतामपि सद्भावात्तद्भाव इति (वृ० प० ४७८)
- २० अथवा नेशानामलकार पुष्पादि केशालकारस्तेन (वृ० प० ४७८)
- २१,२२. वत्यालकारेण, मल्लालकारेण आभरणाल-कारेण —चउित्वहेण अलकारेण अलंकारिए समाणे पिंडपुण्णालकारे सीहासणाको अव्मुट्ठेइ अव्मुट्ठेता
- २३. सीय अणुष्पदाहिणीकरेमाणे सीय दुरुहइ दुरुहित्ता
- २४. सीहासणवरिस पुरस्थाभिमुहे सिण्णसण्णे । (श० ६।१६२)
- २५. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता ण्हाया कयवलिकम्मा जाव अप्पमहग्याभरण।लिकियसरीरा
- २६. हसलक्खण पडसाडग् गहाय सीय अणुप्पदाहिणी-करेमाणी सीय दुष्हद्द, दुष्हित्ता
- २७. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासण-वरसि सण्णिसण्णा। (श० ६।१६३)
- २८ तए ण जस्स जमालिस्स खित्यकुमारस्स अम्मद्याती ण्हाया कयवलिकम्मा जाव अप्पमहग्वाभरणालिकय-सरीरा
- २६ रयहरण पडिग्गह च गहाय सीय अणुप्पदाहिणी-करेमाणी सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता
- ३० जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरिस सिष्णसण्णा। (श० ६।१६४)
- ३१ तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिगारागारचारुवेसा श्रृगारस्य—रसविशेषस्यागारिमव (वृ० प० ४७८)
- ३२ सगयगय जाव (स॰ पा॰) रूवजोव्वणविलास-

<sup>\*</sup>लय: ऐसी जोगणी री जोगमाया

- ३३. जाव शब्द मे जाण, हसिया भणिवा में चतुर।
  फुन चेप्टित पहिछाण, विलास नेत्र विकार जे।।
- ३४ भणिवूं मांहोमाय. सलाप कहिये तेहने। उल्लाप जे कहिवाय, वक्रोक्ति वर्णन भणी।।
- ३५ \*आसन स्थान गमन वली कर भ्रू नेत्र विकार। तिणे करीने सहीत ही, तेह विलास विचार॥
- ३६ मुन्दर थण कह्यू सूत्र में, इण वच करि सुप्रयोग्य। जघन्य वदन कर चरण ही, लावण्य वछवा योग्य।।
- ३७. रूप आकार कहीजिये, तरुणपणो ते योवन्त । गुण ते मृदु स्वर प्रमुख ही, तिण करि सहित सुजन्त ।।
- ३८. वरफ रूपो ने कुमोदनी, मचकुन्द चद सरीस। कोरट तरु नां फूला नणी, माला सहीत जगीस।।
- ३६. एहवा घवल जे छत्र नं, ग्रहण करी लीला सहीत। शिर ऊपर घरती छती, तिप्ठे ते रमण सुरीत।।
- ४० जमाली क्षत्रियकुमार ने, उभय पासै तिहवार। तरुणी उभय मुप्रवान ही, रगुगार रस नो आगार॥
- ४१ जाव यौवन गुण सहीत ही, उभय चामर ग्रहि हाथ।। तेह चामर छै केहवा, साभनजो अवदात।।
- . ४२. नाना मणी कनक रत्न मे, निर्मल मोटा योग्य। उज्जल तपाया सोना तणो, विचित्र दह आरोग्य।।

# सोरठा

- ४३ कनक तपनीय मांय, स्यू विशेष इहा आखियो। कनक पीत कहिवाय, रक्त वर्ण तपनीय जे॥
- ४४ \*देवीप्यमानज दीपतो, शख अने अक रत्न।
  फूल मचकुन्द तणो विल, जल नां फुहारा सुजन्न।।
- ४५ अमृत ने मिथया यका, तेहना जे फेण नी राजि। तेह सरीखा सफेत जे, चामर उभय विमासि॥
- ४६ एहवा जे चामर ग्रही करी, लीला सहित विहुं पास। वीजती वीजती रमणि विहु, तिष्ठै छै बाण हुलास।।

काववा वर्णनमुल्लापः सलापो भाषण मिथः ॥

# \*लय: ऐसी जोगणी री जोगमाया

१ गाया ३३ एव ३४ के प्रतिपाद्य से सम्बन्धित दो पद्य सुक्त के रूप में प्राप्त होते हैं— हावो मुखिवकार स्याद् भावस्चित्तसमुद्भवः। विलासो नेत्रजो ज्ञेयो, विश्रमो श्रूममुद्भव ॥ अनुलापो मुहुभीपा प्रलापोऽनयंक वच.।

- ३३. हिमय-भणिय-चेट्टिय-विलास-इह च विलामो नेत्रविकार: (वृ० प० ४७८)
- ३४. संनाव-निरुण जुत्तोवयारकुमना सनापो—मियोभाषा उल्नापम्तु काकृवर्णन (वृ० प० ४७६)
- ३५. स्थानायनगमनाना हस्त श्रूनेत्रकर्म्मणा चैव उत्पद्यने विशेषो यः शिलप्टोऽमी विलास. स्यात् । (वृ० प० ४७८)
- ३६ मुदरयण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-नावण्ण-लावण्य चेह स्पृहणीयता (वृ० प० ४७८)
- ३७ रूप —आकृति:यौयनं तारुण्य गुणा मृदुन्यरत्वादय (वृ० प० ४७८)
- ३८ हिम<sup>3</sup>-रयय-कुमुद-कुर्देदुष्पगाम मकोरेंटमल्लदाम सकोरेण्टकानि—कोरण्टपुष्पगुच्छ्युक्तानि माल्यदा-मानि—पुष्पमाना यत्र तत्त्तया (वृ० प० ४७८)
- ३६ धवलं आयवत्तं गहाय मलील 'श्रोधरेमाणी-श्रोधरेमाणी चिट्ठति । (ग० ६।१६५)
- ४०,४१ नए ण तस्म जमालिस्म (ह्यत्तियकुमारस्स<sup>?</sup>) उभयो पामि दुवे वरतहणीयो मिगारागार जाव (म० पा०) कलियायो
- ४२. नाणामणि-कणग रयण-विमलमहरिहतवणिज्जुज्जल-विचित्तदंडाओ
- ४३. अयात्र कनकतपनीययो को विशेष. ? चच्यते, कनक पीतं तपनीयं रक्तिमिति (वृ० प० ४७८)
- ४४ चिल्लियाओ, सलंक-कृद-दगरय-'चिल्लियाओ' ति दीप्यमाने : इह चाको रत्नविशेष-(वृ० प० ४७८)
- ४५,४६ अमय-महिय-फेणपुजसिष्णकासाओ धवलाओ चामराओ गहाय मलीलं वीयमाणीओ-वीयमाणीओ चिट्ठति । (घ० ६।१६६)
  - १. वृत्ति में इम स्थान पर संलावुल्लावनिज्ण पाठ है।
  - २. इस गाथा में हिम शब्द से पाठ शुरू होता है। अग-सुत्ताणि में इसमें पहले 'सरदब्भ' शब्द और है। यह शब्द कई आदर्शों में नहीं है। जयाचार्य को उपलब्ध आदर्श में भी यह नहीं रहा होगा, इसलिए इसकी जोड़ नहीं है।

- ४७. जमाली क्षत्रियकुमार ने, ईशाण कूण तिवार।
  एक तरुणी सुप्रधान ते, श्रुगार रस नों आगार।।
  ४८. जाव योवन गुण सहीत ही, क्वेत रूपा नो उदार।
  निर्मल जल करिने भरियो, मत्त गज महा मुखाकार।।
  ४६. तेह समान भगार ते, पाणी नो भारो पिछाण।
  तेह कलश प्रति ग्रही करी, तिष्ठे ए रमण ईशाण।।
  ५०. जमाली क्षत्रियकुमार ने, अग्नि कूणे तिहवार।
  एक तरुणी सुप्रधान ते, श्रुगार रस नो आगार।।
  ५१. जाव जोवन गुण सहीत ही, विचित्र कनक नो दंड।
  ताल वृंत वीजणा प्रतै, ग्रही ने तिष्ठे सुमड।।
  ५२ जमाली क्षत्रियकुमार नो, जनक सेवग ने वोलाय।
  इम कहै अहो देवानुप्रिया! शोघ्र कार्य करो जाय।।
- ५३. सरीखा पुरुष सरीखी त्वचा, सरीखी वय सुसगीत। सरीखो लावण्य आकार छै, रूप गुणे करि सहीत।। ५४. एक सरीखा दीसै एहवा, आभरण वस्त्र उदार। तिणरो गृहीत परिकर जिणे, तरुण कोडुविक वार।।
- ४४. एहवा वर संहस पुरुप तेडविये, कोडविक तिहवार। जावत वचन अंगीकरी, शीघ्र सरीखा नर घार।।
- ५६ जाव तेडावै सहस्र पुरुप नै, कोडविक तिहवार । जमाली जनक ना कोडिविके, तेडाया हरप अपार ।। ५७ विल संतोप पाम्या घणा,

स्नान करी शुद्ध थाय। कीघा वलिकर्म विल कोतुक किया,

तिलक मपी प्रमुख ताय।।

- प्रतः मगल कीचा विघ्न मिटायवा, प्रायश्चित्त सुप्रयोग। एक सरीखा गेहणा वस्त्र नै, ग्रह्मा परिकर नियोंग।।
- ५६ जमाली क्षत्रियकुमार नो,जनक जिहां छै तिहा आय। करतल जाव वयावै ते तदा, वधावी कहै इम वाय।।
- ६० अहो देवानुप्रिया जी ! तुम्है, दीजै आदेश उदार । कार्य करिवा जोग जे, ते मुक्त करिवू मार ॥ ६१. जमाली क्षत्रियकुमार नो, जनक तिको तिहवार । वर तरुण सहस्र कोटुम्बिक भणी, इहविध वोलै विचार ॥ ६२ तुम्है अहो देवानुप्रिया । न्हाया कृत जावत सुजोय । ग्रह्या निर्योग वस्त्राभरण जे, एक सरीखा पहिरी सोय ॥ ६३ जमाली क्षत्रियकुमार नी, सिवका उपाडो वहो सार । तव कोटुम्बिक जमाली ना जनक नो, वचन करै अगीकार ॥

- ४७. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तर-पुरित्थमे णं एगा वरतरुणी सिंगारागार-
- ४८,४६. जाव (स॰ पा॰) किलया सेतं रययामय विमल-सिललपुर्णण मत्तगयमहामुहािकितिसमाण भिगार गहाय चिट्ठद । (श॰ ६।१६७)
- ५० तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्य दाहिण-पुरत्थिमे ण एगा वरतरुणी सिगारागार
- ५१. जाव (स॰ पा॰) किलया चित्तकणगदड तालवेंट गहाय चिट्ठइ। (श॰ ६।१६८)
- ५२. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुवियपुरिसे सद्दावेद, सद्दावेत्ता एव वयासी— खिष्पामेव भो देवाणुष्पिया !
- ५३ सरिसय सरित्तय सरित्वय सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण गुणोववेय
- ५४. एगाभरणवसण-गहियनिज्जोय कोडुवियवरतरुण-एक.—एकादश साभरणवसनलक्षणो गृहीनो निर्योग. —परिकरो यैस्ते तथा (वृ० प० ४७१)
- ५५. सहस्स सहावेह। (श॰ ६।१६६) तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सरिसय जाव (सं० पा०) सरित्तय।
- ५६,५७ कोडुवियवरतरुणसहस्सं सद्दार्वेति ।
  (श० ६।२००)
  तए ण ते कोडुवियवरतरुणपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुवियपुरिसेहि सद्दाविया समाणा
  हट्ठतुट्ठा ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउय-
- ५८. मगलपायच्छिता एगाभरणवसण-गहियनिज्जोया
- ५६ जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता करयन जाव (स॰ पा॰) वद्धावेत्ता एव वयासी—
- ६०. सिंदसंतु ण देवाणुप्पिया । ज अम्हेहि करणिज्जं। (श० ६।२०१)
- ६१ तए ण से जमालिस्स खित्तयकुमारस्स पिया त कोडु-वियवरंतरुणसहस्म एव वयासी –
- ६२. तुन्ने णं देवाणुष्पिया । ण्हाया कय जाव (स॰ पा॰) गहियनिण्जोया

<sup>\*</sup>लय: ऐसी जोगणी री जोगमाया

६४. स्नान करि यावत जिणे, ग्रह्मा निर्योग परिकर जेण। जमाली क्षत्रियकुमार नी, सिविका वहै शुभ श्रेण।। ६५ दोयसौ ने इग्यारमी, ढाल विशाल सुचग। जमाली चरण लेवा भणी, त्यार थयो मन रग।।

६४. ण्हाया जाव एगाभरणवसण-गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्म सीय परिवहंति । (१०० ६।२०३)

ढाल: २१२

#### दूहा

१. तव जमाली क्षत्रिय-सुत, वहै जसु पुरुप हजार ।
एहवी वर सिविका प्रते, चढचे छते अवघार ।।
२. विविक्षित वस्तू मभे, प्रथमपणे ते मत ।
मगलीक अठ-अठ क्रमे, मुख आगल चालत ।।
३ अण्ट-अण्ट वे वार जे, अत्र शब्द आख्यात ।
वीप्सा विषेज द्विवचन, मगल वस्तू ख्यात ।।
४ अन्य आचार्य इम कहै, अठ-अठ सख्यक जाण ।
आठ मागलिक वस्तु जे, चाले आगीवाण ।।
५ अप्ट मगल कहिये तिके, प्रथम साथियो पेख ।
श्रीवत्स यावत जाणवो, दर्षण अप्टम देख ।।

### सोरठा

- ६ जाव शब्द थी जोय, नंद्यावर्त्त निहालियै।
  वर्द्धमान अवलोय, तेह सराव कही जियै।।
  ७ अन्याचार्य कहेह, पुरुपारूढज पुरुप ए।
  फुन अन्य इम आखेह, स्वस्तिक पचक ए अछै।।
  ८ फुन अन्य कहै प्रासाद, भद्रासण नै कलश फुन।
  मच्छयुग्म अहलाद, जाव शब्द में पंच ए।।
  \*जी काइ चरण लेवा नै सचर्यो,
  जी कांइ खत्रियकुवर घर खत। (ध्रुपद)
- तदनतर चालै तदा जी काइ, पूर्ण कलश भृगार।
   जिम उववाई नै विषे जी काइ, जात्र गगन तल घार।।

# सोरठा

१० वाचनातरे वाय, दीसै छै साक्षात ए। ते छै इहविच ताय, चित लगाई साभलो।।

# गीतक-छंद

- ११ वर दिव्य छत्र सहीत जे, पताक चामर सहित ही। फुन रचित आरीसो जिहां, अतिहीज उच्चपणे रही।
- \* लय: म्हारी सासूजी रै पांच पुत्र

- १. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्य-वाहिणि सीय दुरुढस्स समाणस्स
- २ तप्पढमयाए इमे अट्टट्टमगलगा पुरलो अहाणुपुत्वीए सपट्टिया
- ३. 'अट्टहमगलग' ति अप्टावप्टाविति वीप्साया द्विवं-चन मगलकानि मागल्यवस्तुनि (वृ० प० ४७६)
- ४. अन्ये त्वाहु अष्टसख्यानि अष्टमगलकसञ्ज्ञानि वस्तूनि (वृ० प० ४७६)
- ५ त जहा- सोत्यिय-सिरियच्छ जाव [स॰ पा॰] दप्पणा
- ६. णदियावत्त-बद्धमाणग तत्र वर्द्धमानकं--- शरावं (वृ० प० ४७६)
- ७. पुरुपारूढपुरुप इत्यन्ये स्वस्तिकपञ्चकमित्यन्ये (वृ० प० ४७६)
- प्रदामण-कलस-मच्छप्रासादविशेपमित्यन्ये (वृ० प० ४७६)
- ह. तदाणतर च ण पुण्णकलसिमगारं छहा ओववाइए (सू० ६४) जाव (स० पा०) गगणतलमणुलिहती....
- १०. 'जहा उववाइए' (सू० ६४) ति अनेन च यदुपात्त तद्वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति तच्चेद (वृ० प० ४७६)
- ११-१३. दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दसण-रइयआलोय-दरिसणिज्जा वाउद्धृय-विजयवेजयती य ऊसिया' गगणतलमणुलिहती पुरको अहाणुपुठ्वीए सपट्टिया।

२७२ भगवती-जोड़

१२ जन निजर पहुंचे ज्यां लगे, दीसे छै जे दृष्टी करी।
पवने करी उडती छती, विहुं पास वे लघु घ्वज घरी।।
१३. एहवी विजय नी करणहारी वैजयती घ्वज छती।
नभतल प्रतेज उल्लघती, अनुक्रमे आगल चालती।।

बाo—विहुं पासे चामर सिंहत जिका तिका सचामर किहये। आरीसो रच्यो छै जेहने विषे ते अदसरइय किहये। आलोक ते दृष्टिगोचर ज्या लगे दीसे छै अति ऊचैपणे किर जिका, तिका आलोकदर्शनीया ध्वजा किहये। ते भणी इहा कर्मधारय समासं किरवू—सचामरादसणरइयआलोय-दिरसणिज्जित्त। पाठातरे तु सचामरे ति भिन्नपदं। दर्शन जमाली नो दृष्टि पथ, तिण नै विषे रचित अथवा दर्शन नै विषे रितदा किहता सुख नी दाता ते दर्शणरितदा किहये। ते इसी आलोकदर्शनीया ध्वजा छै। इम कर्मधारय समास।

१४ \*इम जिम उववाई विपे, तिमहिज भणिवू सार। जाव आलोक करता थका, जय-जय शब्द उचार॥

#### गीतकछंद

- १५ तदनतर जे छत्र चानै, तास वर्णक जाणियै। वैड्यंमय देदीप्यमानज, विमल दह वलाणियै।।
- १६ लवायमानज वृक्ष कोरट, तेहना पुष्पदाम ही। तिण करी उपशोभित, जे छत्र अति अभिराम ही।।
- १७ शशि तणु मडल ते सरीख़, उर्द्ध कीघू विमल ही। आतपत्र तडको टालवा ने, छत्र उज्जल निमल ही।।
- १८. फुन वर सिंहासण रत्न मणि नु पायपीठ सुहामणू। निज पादुकायुग करो सहितज, दीसतू रिलयामणू।।
- १६ प्रभु पूछने जूजुआ कारज करै ते किंकर कह्या। विण पूछिया जे करै कारज, कर्मकर ते पिण वह्या।।
- २०. किंकर करमकर पुरुष पायक-वृद वीट्यू जलहलै। एहवू सिंहासण शोभतो, अनुक्रमे चालै आगलै॥
- २१ तदनतर वहु लहिग्राहक, कुतग्राहक जाणियै। चामर तणा जे ग्रहणहारा, पासग्राहक माणियै।।
- २२ फुन धनुषग्राहक पोथग्राहक, फलगग्राहक वहु जना । विल पीढग्राहक वीणग्राहक, कुतुपग्राहक नर घना ॥

#### सोरठा

- २३ चोवा ने चपेल, शतपाकादिक ना वली। मोगरेल फुन तेल, तास डावडा कुतुप ते॥
- २४ हडप्पग्राहक तेह, ग्राहक जे नाणा तणा। वा तावूल अर्थेह, भाजन पूगफलादि ना।।
- २५ यथानुक्रमे जोय, आगल ए सहु चालिया। विल विशेष अवलोय, चालै ते कहियै हिवै॥

वा०—सह चामराभ्या या सा सचामरा आदर्शो रिचतो यस्या साऽऽदर्शे रिचता आलोकं— दृष्टिगोचरं यावद्दृश्यतेऽत्युच्चत्वेन या साऽऽलोकदर्शे त्या, ततः कम्मंधारय, 'सचामरा दसणरइयआलोयदिरसणिज्ज' ति पाठान्तरे तु सचामरेति भिन्नपद, तथा दर्शने-जमालेदृष्टिपथे रिचता—विहिता दर्शनरिचता दर्शने वा सित रितदा—सुखप्रदा दर्शनरितदा सा चासावा-लोकदर्शनीया चेति कर्मधारय:। (वृ० प ४७६)

१४. 'जहा उववाइए' (सू० ६४) त्ति अनेन यत्सूचित तदिद (वृ० ५० ४७६)

- १५. तदाणतर च ण वेरुलिय-भिसत-विमलदड 'भिसत' ति दीप्यमान (वृ० ५० ४७६)
- १६ पलवकोरटमल्लदामोवसोभिय
- १७. चदमडलणिश समूसिय विमल आयवत्त
- १८ पवर सीहासण वर मणिरयणपादपीढ सपाउया-जोयसमाउत्त
- १६,२० वहुर्किकर कम्मकर पुरिस-पायत्त परिविखत्त पुरक्षो अहाणुपुन्वीए सर्पाट्टयं। किंकरा.—प्रतिकम्मं प्रभो पृच्छाकारिण कर्म्म-कराश्च तदन्यथाविद्यास्ते (वृ० प० ४७६)
- २१ तदाणतर च ण बहवे लड्डिग्गाहा कुतग्गाहा चामर-ग्गाहा पासग्गाहा
- २२ चावग्गाहा पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा
- २३ कुतुप —तैलादिभाजनविशेप (वृ० प० ४७६)
- २४ हडप्पग्गाहा हडप्पो---द्रम्मादिभाजन ताम्ब्रुलार्थं पूगफलादिभाजन वा (वृ० प० ४७६)

२५. पुरको अहाणुपुन्वीए सपट्टिया ।

<sup>\*</sup>लय . म्हारी सासूजी रै पाच पुत्र

### गीतकछंद

- २६ तदनंतरा बहु दडग्राहक, मुडिता शिरमुंडिका। चोटी तणां जे धरणहारा, जटाघारी तुडिका।
- २७. फुन मोर-पिच्छज तणा घारक, हास्यकारक फुन कह्या। विग्रह तणा कारक वली, परिहास ना कारक वह्या॥
- २८ चाटूकरा प्रियवादना, कंदिंप्पका केलीकरा। कुक्कुडया ते भांड अथवा भाड सरिखा नर घरा॥
- २६ क्रीडा कुतूहल वली रामत, करें ते किड्डाकरा। वाजत्र नेज वजावता फुन, गीत गावता नरा॥
- ३०. विल नाचता अति नृत्य करता, अन्य प्रति ही नचावता । अति हास्य करता हसै फुन जे, अन्य प्रति ही हसावता ॥
- ३१. विल विविध भाषा भाखता अरु सीख प्रति देता सही। सभलावता अमुको रु अमुको, हुस्यै पौर परार ही।।
- ३२ फुन राखता अन्याव प्रति जे, एह प्रथम-उपग¹ ही। वर अर्थ आख्यो तेम भाख्यो, जाव शब्द सुचग ही।।
- ३३ फुन वाचनांतर विषे प्रायज, एह सगलू जाणियै। साक्षात टीसै प्रगट पाठज, वृत्तिकार वखाणियै।
- ३४ \*आलोक करता देखता, मगल अर्थे न्हाल। आरीसादिक वस्तु ने, विल गज प्रमुख विशाल।।
- ३५ जय-जय शब्द प्रजूभता, अनुक्रम आगल ताय। चालता चित्त चूप सू, मन मे हरप अथाय।।

### सोरठा

इ६ तथा अपर अधिकाय, तेहिज वाचनांतर विषे। जेह कह्युं वृत्ति मांय, हय गय रथ पय वण्यको।।

# गीतक छंद

- ३७ तदनतर जे जातिवंतज, प्रवर माल्याघान ही। जे पुष्प-ववन स्थान शिर ना, केश-समूह पिछान ही।।
- ३८ अथवा विकस्वर पवर पुष्पज, तेहवत तसु घ्राण ही। तरमिल्लहायणाण किहाइक, तास अर्थ हिव आण ही।।

\*लय : म्हारी सासूजी रै पांच पुत्र

१. ओवाइय सू० ६४

२. पदाति

- २६. तदाणतरं च ण बहुवे दहिणो मुटिणो मिहहिणो जहिणो सि हंटिणो— दिासाधारिणः जटिणो—जटाधराः (यृ ० ५० ४७१)
- २७ पिछिणो हासकरा टमरकरा दवकरा पिच्छिणो—मयूरादिपिच्छवाहिन. हासकरा ये हमित टमरकरा—विद्वदकारिणः दवकरा.—पिरहास-कारिणः (वृ० प० ४७६)
- २८. चाढुकरो कंदिप्यया कोक्कुइया चाटुकरो — प्रियवादिन: कंदिप्पया — कामप्रधानकेलि-कारिण: कुकुडया — भाण्डा. भाण्डप्राया वा (वृ० प० ४७६)
- २६ किहुकरा य वायंता य गायता य
- ३०. णच्चंता य हसता य
- ३१. भासता य सामंता य सार्वेता य 'सार्विता य' इद चेद भविष्यतीत्येयभूतवचांसि श्रावयन्तः (यृ० प० ४७६)
- ३२. रनयता य अन्यायं रक्षन्तः (वृ० प० ४७६)
- ३३ एतच्च वाचनान्तरे प्रायः साक्षाद्दृश्यत एव (वृ० प० ४७६)
- ३४. आलोय च करेमाणा
- ३५. जय-जय सहं पराजमाणा पुरक्षो अहाण्पुट्वीए सप-द्विया।
- ३६. तथेदमपरं तत्रैवाधिक (वृ० प० ४७६)
- ३७ तयाणतर च ण जच्चाण वरमिल्लहाणाण · · · वर माल्याधान पुष्पवन्धनस्थान शिरः केशकलापो येपा ते (वृ० प० ४७६,४५०)
- ३८ अथवा वरमिल्लकावद् ग्रुवलत्वेन प्रवरिवचिकिल-कुसुमवद् घ्राण—नासिका येपा ते तथा तेपा ववचित् 'तरमिल्लहायणाण' ति दृश्यते तत्र च

(वृ० प० ४५०)

- ३१. तर वेग अथवा वल प्रवल तसु, घरणहारो छै सही। हायन संवत्सर वर्त्तवू जसु, सखर योवन वय रही॥
- वाo—तर किहतां वेग अथवा वल अने मिल्ल धातु ते धारण अर्थ ने विषे ते भणी तर ते वेग—वल नो धरणहार, हायन किहतां संवत्सर वर्त्ते जै जेहने तेतरो 'मिल्लहायणा' किहयै, एतलै योवनवत इत्यथः।
- ४०. वर मिलल भासणाण किहाइक पाठ दीसै छै सही। वर माल्यवान इण कारणे हिज, दीप्तिवता शोभही।।

वाo — वर किहता प्रधान, मिल्ल किहता माल्यवान इण कारण थकीज भासणाण किहता दीप्तिमान।

- ४१ चच्च्रित जे कुटिल गमन, वा शुक-चांच तणी परै। जे वक्रता करि ऊर्द्ध थाव्, चरण-उत्पाटन करै।।
- ४२ तेहीज लिलत विलास नी पर, पुलित गमन-विशेष ही। विशिष्ट क्रमण क्षेत्र लघन प्रवर गति सुउल्लास ही।।
- ४३ क्विचत फुन चचुरित लिलतज, पुलितरूपा गित सही। चल चपलथीज अत्यत चचल, अधिक ही मनहर रही।।
- ४४ हरिमेल नामै वनस्पति नु, मुकुल डोडो जाणियै। जे मल्लिका विकसर समी, तसु चक्र घवल पिछाणियै।।
- ४५ दर्पण तणे आकार हय नुं, अलंकार विशेष ही। अम्लान चामर दंड करि परिमंडिता जसु कटिक ही।।
- ४६. मुख तणु जे आभरण ही, लवायमान गुच्छा वही। दर्पणाकार आभरण हय नु, प्रवर तास पलाण ही।।

वा॰—'चमरीगडपरिमडितकटय' इति एहनों अर्थ—चमरी गाय ना चामर दंड किर मडित—शोभायमान किट छै जे अथव नी। किहाइक विल ए इम दोसै—थासगअहिलाणचामरगडपरिमंडियकडीणं ति। अहिलाण किहता लगाम छै जे अथव नी, शेष पूर्ववत्।

### सोरठा

४७ एहवा प्रवर तुरंग, इकसौ आठ सुओपता। यथानुक्रमे सुचग, आगल चालंता छता।।

१. पांव उठाना

- ३६. तरो—वेगो बलं तथा 'मल मलल घारणे' ततश्च तरोमल्ली—तरोघारको वेगादिघारको हायन — सवत्सरो वर्त्तते येथा ते तरोमल्लिहायना.—यौवनवत इत्यर्थः (वृ० प० ४८०)
- ४०. वरमिल्लभासणाणं ति क्वचिद्दृश्यते, तत्र तु प्रधान-माल्यवतामत एव दीप्तिमता चेत्यर्थः

(बृ० प० ४८०)

- ४१,४२. 'चंचुिच्चयललियपुलियविक्कमविलासियगईण'
  ति 'चंचुिच्चय' ति प्राकृतत्वेन चञ्चुरित—कुटिलगमनम्, अथवा चञ्चु शुक्रचञ्चुस्तद्वद्वक्त्रतया
  शिच्चतम्— उञ्चताकरण पदस्योत्पाटन वा (शुक)
  पादस्येवेति चञ्चुिच्चत तच्च लित क्रीडित पुलित
  च—गतिविशेपः प्रसिद्ध एव विक्रमण्च— विशिष्ट
  क्रमणं क्षेत्रलंघनमिति द्वंदस्तदेतत्प्रधाना विलामिता—
  विशेषेणोल्लासिता गतिर्यस्ते (वृ० प० ४८०)
- ४३. क्वचिदिद विशेषणमेवं दृश्यते— 'चचु च्चियलियपुलियचलचवलचचलगईण' ति तत्र च चञ्चुरितलिलतपुलितरूपा चलाना— अस्थिराणा सता चञ्चलेभ्यः सकाशाच्चञ्चला— अतीवचटुला गतिर्येषा ते
  (वृ० प० ४८०)
- ४४. 'हरिमेलमजलमिलयच्छाण' ति हरिमेलको— वनस्पतिविशेपस्तस्य मुकुलं—कुड्मलं मिल्लका च —विचिकलस्तद्वदक्षिणी येपा, शुक्लाक्षाणामित्यर्थः

(वृ० प० ४८०)
४५. 'थासगमिनाणचामरगडपरिमडियकरीण' ति स्थासका—दर्पंणाकारा अश्वालंकारविशेपास्तैरम्लानचामरैर्गण्डैश्च—अमिलनचामरदण्डैः परिमण्डिता
कटिर्येषां ते (वृ० प० ४८०)

४६. तत्र मुखभाण्डक—मुखाभरणम् अवचूलाश्च—प्रलंब-मानपुच्छाः स्थासकाः प्रतीताः 'मिलाण' त्ति पर्या-णानि च येपां सन्ति ते । (वृ० प० ४८०) वा०—चमरी (चामर) गण्डपरिमण्डितकटय इति पूर्वेवत् "स्विचित्पुनरेविमद दृश्यते —'थासगअहिलाण-चामरगंडपरिमडियकडीणं' ति (वृ० प० ४८०)

# गीतक छंद

- ४८. तदनंतरं गज कलभ ते, लघु दंत अल्पज नीसर्या।
  फुन अल्प जे मदवत विल तसु, दत केहवा उच्चर्या।।
  ४६ फुन जेहने वर दत ना जे पृष्ठ देश विशेष ही।
  ईषत विशालज यौवनारंभवित्त घवलज दंत ही।।
- ५०. कंचन तणी खोली विषे जे, दत पैठा छै स्ही। तिण करीने उपशोभिता, ए कलभ नी महिमा कही।। ५१. गज तणां कलभज एहवा, जे एकसी अठ सोहता। मुख आगले अनुक्रमे चाले, जन तणा मन मोहता।।
- ५२ तदनतर जे छत्र-सहितज, ध्वजा सहित वसाणियै। विल घट-सहित पताक-सहितज, प्रवर रथ पहिछाणियै।
- ५३ गरुडादि रूपे करी युक्तज, ध्वजा तेह कहीजियै। तेह थकी अन्य पताक फुन, तोरण सहित सलहीजियै।।
- ५४. लघु घटिका तेणे करी जे, सहित ही सुदर किया। वर हेम जाले करी रथ पर्यंत, चिहुं दिशि वीटिया।
- ' ५५: रव नंदि-घोप सहीत द्वादश, तूर्यघ्विन समुदाय ही। भभा मकुद रु मई्लादिक, प्रवर रव सुखदाय ही।।
  - ५६ लघु घंटिका तेणे करी जे, सहित ही सुंदर कियो। वर हेम जाले करी रथ, पर्यंत चिहुं दिशि वीटियो।। ५७ गिरि हेमवत ना नीपना जे, चित्र विविध प्रकार ना। कठ तिनिश नामे तरु तणां ते, कनक खचित रथ तना।।
  - ५८ अति भला छै जे चक्र जेहने, मंडला वृत वाटला। विल धुरा पिण रमणिक अर शोभायमानज भिलमिला।।
  - प्र अय जेह कालायस विशेषण, तिण करी की धुभलु। नेमी तिका जे चक्र नुवर भाग ऊपरलु फिलु।।
  - ६०. तिण अय करी जे चक्रघारा, वाघवा नी वर क्रिया। रथ चक्र नु जे अग्र भागज, नेमि ते दृढता लिया।।
  - ६१. विल जातिवतज वर तुरगम, जोतरचा ते रथ तणे। नर चतुर अवसर जाण सारथि, सग्रह्या प्रयतनपणे।।

- ४८. 'ईसि दंताणं' ति 'ईपद्दान्ताना' मनाग्ग्राहितशिक्षाणा गजकलभानामिति योगः। (वृ० प० ४८०)
- ४६. ईनि उच्छगउन्नयविसालघवलदंताण ति उत्संगः— पृष्ठदेश. ईपदुत्सगे उन्नता विशालाश्च ये यौवनारम्भ-वर्त्तित्वात्ते तथा ते च ते घवलदन्ताश्चेति

(बृ० प० ४८०)

(वृ० प० ४५१)

- ५०. कंचणकोरीपिवट्टदतोवसीहियाण' ति इह काञ्चन-कोशी—सुवर्णमयी योला (वृ० प० ४८०)
- ५२,५३. 'मञ्ज्ञयाण सपडागाण' इत्यत्र गरुडादिर पयुक्तो ध्वज. तदितरा तु पताका (वृ० प० ४८०)
- ५४ 'सिंखियणीहेमजालपेरतपरिक्षित्ताण' ति सिंक-किणीकं—क्षुद्रघण्टिकोपेत यद् हेमजाल—सुवर्ण-मयस्तदाभरणिवशेपस्तेन पर्यन्तेषु परिक्षिप्ता ये ते (वृ० प० ४८०,४८१)
- ५५. 'सनदिघोसाणं' ति इह नन्दी—द्वादगतूर्यसमुदाय, तानि चेमानि— "भभा मउद मद्दल कडब झल्लिर हुडुक्क कसाला। काहल तिलमा बसो संखो पणवो य वारसमो॥"
- ५७ 'हेमवयचित्ततिणिसकणगनिजुत्तदारुगाण' ति हैमव-तानि—हिमवद्गिरिसम्भवानि चित्राणि—विवि-धानि तैनिसानि—तिनिसाभिधानतरुसम्बन्धीनि कनकनियुक्तानि—सुवर्णखचितानि दारुकाणि— काष्ठानि येपु ते (वृ० प० ४८१)

५८. 'सुसंविद्धचक्कमङलधाराण' ति सुष्ठु सविद्धानि चक्राणि मण्डलाश्च वृत्ता धारा येथा ते

- (वृ० प० ४५१)
  ५६,६० कालायससुकयनेमिजतकम्माण' ति कालायसेन् लोह्विशेपेण सुष्ठु कृत नेमे चक्रमण्डनधाराया
  यन्त्रकर्म बन्धनिक्रया येपा ते
- ६१. 'आइन्नवरतुरगसुसपउत्ताण' ति आकीर्णे जात्यैर्वर-तुरगे सुष्ठु सप्रयुक्ता ये ते ' कुसलनरच्छेपसारहि-सुसपगहियाण' ति कुशलनरे विज्ञपुरुपैग्छेकसारथि-भिग्न—दक्षप्राजितृभि सुष्ठु सप्रगृहीता ये ते (वृ०-प० ४८१)

- ६२. गर घालवा नां भायडा वत्तीस कर मंडित वही। इक एक भायड विषे सौ-सौ वाण छै अत प्रवर ही।।
- ६३ कवचे करीने वली जे, अवतंस शेखर सहित ही। शिर-त्राण रक्षा कारका, तिण करीने युक्त ही।।
- ६४ फुन घनुप गर करिकै सहित, हथियार खड्गादिक घणा। हालादि करि विल रथ भर्यो ए, सज्ज है जोघां तणां।।
- ६५. वर एहवा रथ एकसी अठ, सुघट सखर सुहामणा। अनुक्रमे आगल चालता वहु जन भणी रिलयामणां।।
- ६६ तदनतर फुन असी शक्ती, कृत तोमर सूल ही। विल लकुट ने भिडमाल घनु कर घरी सिक्स्या मूल ही।।
- ६७ वर सुभट एहवा यथा अनुक्रम, चालता आगल वही। ए वाचनांतर वृत्ति में, चतुरग वर्णन छै सही॥
- ६८. \*तदनतर वहु चालिया, उग्र कुले उत्पन्न । ऋपभ कोटवालपणे स्थापिया, तास वंश ना जन्न ॥
- ६९ वहु भोग कुल ना ऊपनां, प्रभु ऋपभदेवजी जाण।
  गुरुपणेजे स्थापिया, तास वश नां माण।।
- ७० जिम उववाई में कह्यु, जाव महापुरुप घार। सर्व परिवारे वीटिया, आगल चाल्या सार।

- ७१ जाव शब्द में एह, राजन कुल ना ऊपना। क्षत्रिय कुल ना लेह, ऋषभ वंश ईक्ष्वाकु जे॥
- ७२. विल उपना कुल जात, ईक्ष्वाकुवश विशेष ए। कुरुवशी फुन स्यात, इत्यादिक अवधारवा।।
- ७३ \*जमाली क्षत्रियकुमार नै, आगल फुन विहुं पास। पूर्वे उग्रादिक कह्या, तिके अनुक्रम चाल्या तास।।
- ७४ जमाली क्षत्रियकुमार नो, जनक तिको चित चग। स्नान करी कीघो वलि, जाव विभूपित ग्रग।।
- ७५. वर गज खघ वैठो थको, कोरट तरु ना मूल। तसु माला सहित जे छत्र छै, ते घरते अनुकूल।।
- ७६ वर्वेत प्रवर चामर करी, वीजते छते जेह। हय गय रथ वर भट भला, तिण करि सहितज नेह।।
- ७७ चउरगणी सेन्या सभ करी, परिवरचो तेण सघात। महा भट चाकर वृद सू, जावत वीटचो विख्यान॥
- \*लय: म्हारी सासूजी रै पाच पुत्र

६२ 'सरसयवत्तीसतोणपरिमंडियाणं' ति शरशतप्रधाना ये द्वार्त्रिशत्तोणा भस्त्रकास्तै परिमण्डिता ये ते

(वृ० प० ४८१)

- ६३ 'सकंकडवडेंसगाणं' ति सह ककटै. कवचैरवतंसकैश्च-शेखरकै शिरस्त्राणैवां ये ते (यृ० प० ४८१)
- ६४. 'सचावसरपहरणावरणभारियजुद्धसज्जाण' ति सह चापै. शरैश्च यानि प्रहरणानि—कुन्तादीनि आवर-णानि च—स्फुरकादीनि तेपा भरिता युद्धसज्जाश्च युद्धप्रगुणा ये ते (वृ० प० ४८१)
- ६८. तदाणतर च णं वहवे उग्गा तत्र 'उग्ना.' आदिदेवेनारक्षकत्वे नियुक्तास्तद्वश्याश्च (वृ० प० ४८१)
- ६६. भोगा भोगास्तेनैव गुरुत्वेन व्यवहृतास्तद्वश्याश्च (वृ० प० ४८१)
- ७१. खत्तिया इक्खागा तत्र 'राजन्या' आदिदेवेनैव वयस्यतया व्यवह्तास्त-द्वंश्याश्च क्षत्रियाश्च प्रतीता. 'इक्ष्वाकव.' नाभेय-वंशजाः
- ७२ नाया कोरव्वा
  'ज्ञाता' इक्ष्वाकुवंशिवशेषभूता. 'कोरव्व' ति
  कुरव.—कुरुवंशजा. (वृ० प० ४८१)
- ७३. जमालिस्म खित्तयकुमारस्स पुरको य मग्गतो य पासको य अहाणुपुन्त्रीए सपट्टिया। (श० ६/२०४)
- ७४. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाए कयवलिकम्मे जाव विभूसिए (सं० पा०)
- ७५. हित्यक्बधवरगए सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्ज-माणेण
- ७६. सेयवरचामराहि उद्बुव्यमाणीहि-उद्बुव्यमाणीहि हय-गय रहपवरजोहकतियाए।
- ७७. चाउरिंगणीए सेणाए सिंद्ध मपरिवृढे महयाभटचड-गरिंवदपरिक्खित

७८ जमाली क्षत्रियकुमार नैं, इहिवच जनक सुजाण। पीठे पूठे चालतो, वारू कर मंडाण।। ७६ ते जमाली क्षत्रियकुमार नैं, आगल हय चालंत। तेह तुरगम केहवा, अश्व विषे वर मत।।

# सोरठा

- प्तः पाठातर आख्यात, आसवारा असवार जे। अक्वारूढ सुजात, पुरुप तिके आगल चलै।।
- ५१. \*विहु पासे नागा गजा, ते गज माहि प्रधान। पूठे रथ अति शोभता, रथ-समुदाय सुजान।।
- ५२ जमाली क्षत्रियकुंवर तदा, सन्मुख जेहने जोय।
  भृंगार कलग उपाडियो, ग्रह्यो वीजणो सोय॥
- द३. उर्द्ध श्वेत छत्र छै जसु, अतिहि वीजते जेह। श्वेत चामर वाल ना समूह करीने तेह।।
- दर सर्व ऋदि करि सहित छै, जावत वाजंत्र जान। तेह तणे शब्दे करी, अतिही शोभायजमान।।
- ८५. तदनंतर वहु चालिया, लाठीग्राहा कुतग्राह । जावत पुस्तकग्राहका, जाव वीणग्रहा ताय
- द्दः तदनंतर वहु चालिया, इकसी अठ मातग। तुरग एकसी अठ वली, इकसी अठ रथ चग।।
- प्तु तदनतर लकुट करे, इकसी आठ विख्यात। इकसी अठ असी कर विषे, इकसी अठ कुत हाथ।।
- प्रवहुला नर पाळा वली, आगल थी घर खत।
- चालता चित चूप सूं, मन मांहे हरप अत्यंत। मध्. तदनंतर वहु राजवी, ईश्वर तलवर मत।
- जाव सार्थवाह प्रमुख ही, आगल थी चालत।। ६०, क्षत्रिय कडग्राम नगर ने. मध्योमध्य थड न्हाल।
- ६०. क्षत्रिय कुडग्राम नगर नै, मध्योमध्य थइ न्हाल । जिहा माहणकुड ग्राम नगर छै, चैत्य जिहा बहुसाल ।।
- ६१ जिहा श्रमण भगवंत महावीर छै, तिणहिज स्थानक जोय।
  जावा नै उद्यत थया, सकल्प कीघो सोय।।
- ६२ जमाली क्षत्रिय-सुत ने तदा, क्षत्रियकुड ग्राम नगर विषेह। मध्योमध्य थई करी, नीकलता ने जेह।।
- ६३ त्रिक आकारे सघाट नै, चउक्क मिलै पथ च्यार। यावत महापथ नै विषे, वह घन अर्थी घार॥
- १४ जिम जनवाई ने विषे, जाव अभिनदताय। तू समृद्धि पाम चिर जीवजे, स्तवना कर कहै वाय।।

- ७६. जमालि खत्तियकुमारं पिट्टको अणुगच्छइ। (গ০ ६/२०५)
- ७६. तए णं तस्स जमालिस्म खत्तियकुमारस्स पुरलो मह आसा आसवरा
- ५०. 'आसवरा' अश्वानां मध्ये वराः 'आसवार' त्ति पाठान्तरं तत्र 'अश्ववारा' अश्वाहृ हपुरुपाः

(वृ० प० ४५१)

- ५१. उभओ पासि नागा नागवरा, पिटुओ रहा, रहसंगेल्ली। (श० ६।२०६) 'रहसंगेल्लि' ति रथसमुदाय.। (वृ० प० ४५१)
- द्र. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अव्मुग्गतिभगारे परिग्गहियतालियटे
- द ३. क्रसवियसेतछत्ते पवीइयसेतचामरवालवीयणीए उच्छित्रक्वेतच्छत्रः "प्रवीजिता क्ष्वेतचामरवालाना सत्का व्यजनिका (वृ० प० ४८१)
- ८४. सिन्बड्ढीए जाव दुदुहिणिग्घोसणादितरवेण
- ५४. तदाणंतरं च णं वहवे लिट्टिग्गाहा कृतग्गाहा जाव
   पुरथयग्गाहा जाव वीणग्गाहा
- ५६. तदाणतरं च ण अट्टमयं गयाण अट्टसयं तुरयाण, अट्टसयं रहाण
- ८७. तदाणतरं च णं लउडअसिकोतहत्थाण
- **८८. वहूण पायत्ताणीणं पुरक्षो संप**ट्टिय
- मह. तदाणतर च ण बहवे राईसरतलवर जाव सत्य-वाहप्पभियक्षो पुरक्षो सपट्टिया।
- ६०. खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेणं जेणेव माहण-कुडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए
- ६१. जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव पाहारेत्य गमणाए। (श० ६/२०७)
- ६२. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तिय-कुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छमाणस्स
- ६३. सिघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह जाव पहेसु वहवे अत्यत्थिया
- ६४. जहा ओववाइए (सू० ६८) जाव अभिनदता¹
- १. यह जोड सिक्षप्त पाठ के आधार पर की गई है। इससे आगे की गायाओं में सिक्षप्त पाठ में छोडे गए सब शब्दों की जोड है। अगसुत्ताणि भाग २ श ६।२०८ में पाठ पूरा किया हुआ है। आगे की गायाओं में वही पाठ उद्धृत किया गया है।

<sup>\*</sup>लप: म्हारी सासूजी रै पाच पुत्र

- ६५. जिम जववार्ड ताम, इण वचने इम जाणवू। युभ शब्द रूप ए काम, तेह तणां अर्थी जना।। ६६. भोग गघ रस फास, तेह तणा अर्थी वली। घनादि लाभ विमास, अर्थी ते फुन लाभ ना।। ६७ किल्विप ते भडादि, कारोडिया कापालिका। कारवाहिया वादि, राजदेय द्रव्य जे वहै।।
- ६८. वली सिखया घार, चदन गर्भज कर जसु। ते छै मगलकार, अथवा जे शखवादिका।।
- ६६ विल चिक्रिया जाण, चक्र प्रहरण छै, कर जसु।
  द्वितीय अर्थ फुन माण, कुभकारादिक चाक्रिका।।
- १०० नगलिका कहिवाय, सुवर्ण-गहणा हल सदृश। पहिरचा ते भट ताय, अथवा कहियै करसणी।।
- १०१ मुखमगलिया ताय, मुख वोलै मगलीक जे। वर्द्धमान कहिवाय, खघ आरोपित पुरुप जे॥
- १०२. पूसमाणया ताय, मागघ वदी जन जिके। इंज्जिसिया पिडिसिया य घटिका दीसै किहां।।
- १०३ पूजा वाछक पेख, अयवा जे पूजा प्रते। गवेपता सुविशेख, इज्जिसिया ते जाणवा।।
- १०४ भोजनवाछक भाल, अथवा जे भोजन प्रतै। गवेपता सुविशाल, पिडिसिया कहियै तसु।।
- १०५ घटा करि चालत, घटा प्रते वजाडता। तेह घटिका मत, ए त्रिहु पाठ दीसै किहा॥
- १०६ ते वाछित शब्देह, कहियै छै जे आगले। इष्ट वलभ वच जेह, वोलै छै शुभ शब्द जे॥
- १०७ इष्ट वचन पिण जोय, प्रयोजन तणाज वश थकी। किणही स्वरूप थी सोय, कमनीय तथा अकात ह्वै।।
- १०८ इण कारण थी आम, आगल कहियै छै हिवै। ते इष्ट किसो वच ताम, कात वाछा करियै जसु॥

- ६५ ६६. कामित्यया भोगित्यया लाभित्ययां जहा उववाइए' त्ति करणादिद दृश्य-कामी-शुभशब्दरूपे भोगा - शुभगन्धादय 'लाभ त्यिया' धनादिलाभायिन.। (वृ० प० ४८१)
- ६७. किन्विसिया कारोडिया कारवाहिया किल्विषिका भाण्डादय इत्यर्थः, ""कारोडिया' कापालिका. 'कारवाहिया' कार—राजदेय द्रव्यं वहन्तीत्येवणीलाः कारवाहिनस्त एव कारवाहिका (वृ० प० ४८१)
- ६८. सिखया 'सिखया' चन्दनगर्भशंखहस्ता मागल्यकारिण शखवादका वा (वृ० प० ४८१)
- ६६. चिक्कया
  'चिक्किया' चािकका चक प्रहरणा कुभकारादयो
  वा (वृ० प० ४८१)
- १००. नगिलया' गलावलिम्बतसुवर्णादिमयलाङ्गलप्रतिकृति-धारिणो भट्टविशेषा कर्षका वा
- (वृ० प० ४८१,४८२) १०१. मुहमगलिया वद्धमाणा 'मुहमगलिया' मुखे मगल येषामस्ति ते मुखमगलिका चाटुकारिण. 'वद्धमाणा' स्कन्धारोपितपुरुषा (वृ० प० ४८२)
- १०२ पूसमाणया

  'पूसमाणवा' मागधा 'इजिजसिया पिडिसिया घटिय'

  त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ० प० ४८२)
- १०३,१०४ तत्र च इज्या—पूजामिच्छेन्त्येषयन्ति वा ये ते इज्यैपास्त एव स्वार्थिके कप्रत्ययविद्यानाद् इज्यैपिका, एव पिण्डैपिका अपि, नवर पिण्डो—भोजन (वृ० प० ४८२)

१०५ घाण्टिकास्तु ये घण्टया चरन्ति ता वा वादयन्तीति (वृ० प० ४८२)

१०६,१०७ इट्टाहिं इष्यन्ते स्मेतीष्टास्ताभिः प्रयोजनवशादिष्टमिप किञ्चित्स्वरूपत कान्त स्यादकान्त चेत्यत आह— कमनीयशब्दाभिरित्यर्थे । (वृ० प० ४८२)

१०८. कताहि

अगसुत्ताणि भाग २ श० ६।२०० मे पूसमाणया के बाद 'खिडियगणा' पाठ है। जयाचार्य ने इसकी जोड नहीं की। वृत्ति में भी इस पाठ का सकेत नहीं है।

- १०६. प्रिय वचने करि पेख, मनोज्ञ सुदर भाव थी। मणाम ते सुविशेख, अतिही सुदर वचन करि॥
- ११० उदार तेह प्रघान, शब्द थकी फुन अर्थ थी। कल्याणकारी जान, कल्याण प्राप्ति-सूचक कह्यो॥
- १११. जिव उपद्रव-रहीत, शब्दार्थ दूपण रहित । घन ना लाभ सहीत, मगल अनर्थ घातक हुवै ॥
- ११२ सस्सिरीयाइ सोय, सोभायुक्तज वचन करि। हृदये गमती जोय, अर्थ गभीर सुवोध करि॥
- ११३ हृदय कोप शोकादि, तास विलयकारी जिका। हृदय विषे सवादि, अति अह्लादज वचन करि।।

### गीतकछंद

- ११४. मित अक्षरे करि परिमिता, परिमाण सहित सुवर्ण ही। फुन मधुर कोमल वच कह्या, गभीर ते महाध्विन कही।।
- ११५. जे दुख करीने घारिये, ते अर्थ पिण श्रोता भणी। वाणीजु ग्रहण करावता, तसु घनादिक आज्ञा घणी।।

वा०—िमयमहुरगभीरमिस्सरीयाहिं क्वचिद् दृश्यते । किहाइक दीसै छै। तिहा मिता ते अक्षर थकी, मधुरा गव्द थकी, गभीर ते अर्थ थकी विल ध्वित थकी स्व श्री ते आरम-सपत् जेहनी ते वाणी करिकै।

- ११६ अर्थ सैकडा न्हाल, छै ते वाणी नै विषे। वा स्मृति वह विशाल, अर्थ थकी छै जसु विषे॥
- ११७ अपुनरुक्त वच जास, एहवी वर वाणी करी। वा एकार्थ विमास, प्राये इष्टादी वचन।।
- ११८ वर्दै निरतर वाय, एह भलावण धुर-उपग । अभिनदता ताय, आदि देइ सूत्रे लिख्यो।।
- ११६ \*ढाल दोय सौ ऊपरै, द्वादशमी सुविचार ।। चरण लेवा नै संचरचो, जमाली क्षत्रियकुमार ।।

- १०६. पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि

  'मणुन्नाहि' मनसा ज्ञायन्ते सुन्दरतया यास्ता मनोज्ञा
  भावतः सुन्दरा इत्यर्थः ताभिः 'मणामाहि' मनसाऽम्यन्ते—गम्यन्ते पुनः पुनर्याः सुन्दरत्वातिशयात्ता
  मनोऽमास्ताभि (वृ० प० ४५२)
- ११०. 'ओरालाहि' उदाराभि शब्दतोऽर्थतम्च 'कल्लाणाहि' कल्याणप्राप्तिसूचिकाभि (वृ० प० ४८२)
- १११. 'सिवाहि' उपद्रवरहिताभि शब्दार्थंदूपणरहिताभि-रित्यर्थं 'धन्नाहि' धनलिम्भिकाभि. 'मगल्लाहि' मगले—अनर्थप्रतिधाते साध्वीभि. (वृ० प० ४८२)
- ११२ 'सिस्सरीयाहि' शोभायुक्ताभि. 'हिययगमणिज्जाहिं गम्भीरार्थतः सुवोद्याभिरित्यर्थ (वृ० प० ४८२)
- ११३. 'हिययपल्हायणिज्जाहि' हृदयगतकोपशोकादिग्रन्थि-विलयनकरीभिरित्यर्थं (वृ० प० ४८२)
- ११४,११५. 'भियमहुरगभीरगाहियाहि' मिता —परिमिता-क्षरा मधुरा कोमलशब्दा गम्भीरा—महाध्वनयो दुरवधार्यमप्यथं श्रोतृन् ग्राहयन्ति यास्ता ग्राहिकास्तत (वृ० प० ४८२)
- वा० 'मियमहुरगभीरसिसरीयाहि' ति कृचिद् दृश्यते तत्र च मिता अक्षरतो 'मधुरा शब्दतो' गम्भीरा - अर्थतो ध्वनितश्च स्वश्री — आत्मसम्पद् यासा तास्तथा ताभि (वृ० प० ४८२)
- ११६ 'अटुसइयाहि' अर्थेशतानि यासु सन्ति ता अर्थेशति-कास्ताभि., अथवा सइ—वहुफलत्व अर्थत (वृ० प० ४८२)
- ११७ 'ताहि अपुणरुत्ताहि वग्गूहि' वाग्भिगीभिरेकायिकानि
  - वा प्राय इष्टादीनि वाग्विशेषणानीति (वृ० प० ४८२)
- ११८. अणवरय अभिनदंता य
  'अणवरय' सन्ततम् 'अभिनदता ये' त्यादि छ लिखितमेवास्ते (वृ० प० ४८२)

<sup>\*</sup>लय : म्हारी सासूजी रें पांच पुत्र १. सोवाइय सु० ६८

दूहा

- जमाली रै मुख आगलै, वच मगलीक उदार।
   घनादि ना अर्थी वदै, ते सुणज्यो विस्तार॥
   \*हो म्हारा सौभागी वर लाल कुवरजी,
  - घन्य-धन्य थारो अवतार । (ध्रुपद)
- २. जय जय नदा धर्म करीनै, वर्धमान थावो गुणधार। जय-जय आशीर्वचन वखाण्यो, भक्ति अर्थे कह्यु वे वार।।
- ३ जय-जय नदा तपे करीने, द्वादश तप कर ताय। नदा कहिता तुम्है वृद्धि पामज्यो, उग्र तपे अधिकाय।।
- ४ अथवा जय-जय कहता जीपज्यो, हे नद । विपक्ष प्रतेह । विपक्ष जे अधर्म छै तेहनै, तुम्हे धर्म करी जीपेह ।।
- ५ जय-जय नदा भद्र ते तुभः, तू जय हे जगत नदिकार। तुभः भद्र कल्याण थावो अभिग्रह करि,

उत्तम ज्ञानादि चिहु करि सार ॥

- ६ इद्रिय वर्ग न जीत्या ज्यानै, तुम्है जीपेज्यो महाभाग। जीती नै तुम्हे शुद्ध पालज्यो, श्रमण धर्म शिव माग॥
- ७ विल जीपज्यो विघ्न प्रतै तुम्ह, टालज्यो धर्म अतराय। अहो देव<sup>ा</sup> तुम्ह वसज्यो सुखसू, वारू शिवगति माय।।
- द हणज्यो राग द्वेप विहु मल्ल प्रति तपसा करिकै ताम। धृती रूप गाढी वाधी नै, कच्छा कच्छोटी अभिराम॥

### सोरठा

- ६ वलवत मल्ल सुदक्ष, समर्थ अन्य मल्ल जीपवा। गाढो वाध्यो कक्ष, एहवू छत्ज तेह मल्ल।।
- १० \*मई्च्यो अष्ट कर्म शत्रु प्रति, ध्यान प्रवर उत्कृष्ट। तेह उत्तम जे शुक्ल ध्यान करि, अप्रमत्त' छतो सुइष्ट॥
- ११. ग्रहिज्यो आराधन रूप पताका, हे धीर । त्रिलोक रग मध्य। ते मल्ल युद्ध बहु जन अवलोकन, स्थान रग मध्य अनवद्य।।

वाo-आराधना ते ज्ञानादिक सम्यक्त्व पालना, तिकाहिज पताका शत्रु नै जीती ते नट नै ग्रहिवा योग्य ते आराधना पताका प्रतै ग्रहण कीजै।

- \*लय: हो म्हारा राजा रा गुरुदेव
- १. अगसुत्ताणि भाग २ श० ६।२०५ के सपादित पाठ तथा उसकी वृत्ति के अनुसार अप्पमत्ती शब्द का मम्बन्ध आराधना पताका के साथ है। जयाचार्य ने जीड मे कर्म शत्रुओ का मर्दन करने के सदर्भ मे इसका सम्बन्ध रखा है, इस दृष्टि से 'अप्पमत्ती' शब्द को इस गाथा के सामने उद्धृत किया गया है।

- २. जय-जय नदा ! धम्मेणं 'जय जये' त्याशीर्वंचन भिक्तसम्भ्रमे च द्विवचन 'नदा धम्मेणं' ति 'नन्द' वर्द्धस्व धर्मेण (वृ० प० ४८२)
- ३. जय-जय नदा तवेण
- ४. अथवा जय जय विपक्ष, केन ? धर्मेण हे नन्द ।
- अ जय जय नदा । भद्द ते अभगोहि नाण-दसण-चिरि-त्तेहिमुत्तमेहिं जय त्व हे जगन्निन्दिकर । भद्र ते भवतादिति गम्य (वृ०प०४८२)
- ६ अजियाइ जिणाहि इदियाइ जिय पालेहि समणधम्म (श० १।२०८)
- ७. जियविग्घो वि य वसाहि त देव । सिद्धि मज्झे
- न निहणाहि य रागदोसमल्ले तवेण धितिधणियवद्धकच्छे धृतिरेव धनिक अत्यर्थं वद्धा कक्षा (कच्छोटा) येन (वृ० प० ४८२)
- सन्लो हि मल्लान्तरजयसमर्थो भवति गाढबद्धकक्षः
   सन्नितिकृत्वोक्त (वृ० प० ४८२)
- १० महाहि य अट्ठ कम्मसत्तू झाणेण उत्तमेण सुक्केण अप्पमत्तो
- ११ हराहि आराहणपडाग च धीर । तेलोक्करगमज्झे त्रैलोक्यमेव रङ्गमध्यं—मल्लयुद्धद्रष्ट्महाजनमध्य तत्र (वृ० प० ४८२)
- बा॰ —आराधना—ज्ञानादिसम्यक्पालना सैव पताका जय-प्राप्तनटग्राह्या आराधनापताका (वृ॰ प॰ ४८२)

- १२. वितिमर निमल गयूं छै अंघारो, अनुत्तर सर्वेत्कृष्ट। प्रवर प्रधान ज्ञान जे केवल, पावज्यो अतिहि वरिष्ठ॥
- १३. मोक्ष परम पद प्रति फुन जायज्यो, देखाङ्घो जिनेद्र शिव पंथ। अकृटिल वक्तता रहित ते मारग, तिणे करीने गच्छ गुणवंत॥
- १४ परिषह रूप सेना प्रति हणीने, पांचू इंद्रिया ने कांटा समान। उपसर्ग प्रति जीपी तुभ धर्म मे विघ्न म थावी सुजान॥
- १५ इम कही घन अर्थी प्रमुख जे, वहु जन वृंद तिवार । अभिनदंता मंगल रव बोलें, विरुदावली स्तवना उदार ॥
- १६ तिण अवसर क्षति-सुतन जमाली, श्रेणीभूत जे नर ना शोभाय। नेत्रा नी माला सहस्रगमें करि, तेह देखीजतो छतो ताय।।
- १७ इम जिम उववाइ' में आख्यो प्रभु, वदन कोणिक घार। यावत तिमज जमाली निकलै, निकली नै तिहवार॥

- १८. वचन तणी सुखकार, माला जे पक्ती तणा'। सहस्रगमें करि सार, स्तवीजते स्तवीजते छते॥
- १६. हृदय-माल सहस्रे ह, जन-मन ना समूहे करी। समृद्धि पमाड़तो तेह, जय जीव नद इम चिंतवै॥
- २०. मनोरथ-माल सहस्रेह, वहु जन नां विकल्प करि। विशेष करिकै जेह, स्पृश्यमान हुंतो छतो॥

- २१ तनु काति फुन रूप, सौभाग्य योवन गुण करी। प्रार्थ्यमान अनूप, स्वामीपणे वहु जन करी।।
- २५ अगुली नहीं पहिछाण, माला जे पक्ती तणां'-सहस्रगर्में करि जाण, देखाडतो-देखाडतो ॥
- २३ दक्षिण हस्त करेह, बहु नर नारी सहस्र नी। अजलिमाल सहस्रेह, पडिच्छमाण ग्रहितो छतो॥

- १२. पाययवितिमिरमणुत्तरं केवलं च नाणं
- १३ गच्छ य मीवखं पर पद जिणवरीवदिट्ठेणं सिद्धि-मगोणं अकुहिलेणं
- १४. हता परीसहचम् अभिभविय गामकटकोवसगा ण धम्मे ते अविग्धमत्यु इन्द्रियग्रामश्रतिकृलोपसर्गानित्यर्थः (वृ० प० ४६२)
- १५. त्ति कट्टु अभिनंदति य अभियुणति य । (श० ६।२०८)
- १६. तए ण से जमानी घत्तियकुमारे नयणमालासहस्मेहिं पेच्छिज्जमाणे पेच्छिज्जमाणे 'नयणमालासहस्सेहि' ति नयनमाला. —श्रेणीभूतजननेत्रपंक्तयः (वृ० प० ४८२)
- १७. एव जहा ओववाइए कूणियो जाव [स॰ पा॰] निग्गच्छइ।
- १८. वयणमालासहस्सेहि अभियुव्यमाणे अभियुव्यमाणे (वृ० प० ४८२)
- १६. हिययमालामहस्सेहि अभिनंदिज्जमाणे-अभिनदिज्ज-माणे जनमन'-समूहै' समृद्धिमुपनीयमानो जय जीवनन्देत्या-दिपर्यालोचनादिति भावः । (वृ० प० ४८२, ८३)
- २०. मणोरहमालासहस्ते हिं विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे एतस्य पादमूले वत्स्याम इत्यादिभिर्जनविकल्पैविशेषेण स्पृथ्यमान इत्यर्थः (वृ० प० ४८३)
- २१. कितसोहग्गगुणेहिं पत्यिज्जमाणे-पत्यिज्जमाणे कान्त्यादिभिर्गुणैहेंतुभूतै प्रार्थ्यमानो भर्तृतया स्वामि-तया वा जनैरिति (वृ० प० ४८३)
- २२. अगुलिमालासहस्सेहि दाइज्जमाणे २ (वृ० प० ४५३)
- २३. दाहिणहत्येणं वहूण नरनारिसहस्साण अजिलमाला-सहस्साइ पडिच्छेमाणे पडिच्छेमाणे (वृ० प० ४५३)

१. बो॰ सू॰ ६५

२. अगसुत्ताणि भाग २ श० ६।२०६ में 'नयणमाला' के वाद हिययमाला और 'मणोरहमाला' वाला पाठ है। पर भगवती की वृत्ति में 'औपपातिक' का सकेत देकर जो पाठ उद्धृत किया है, उससे 'वयणमाला' को पहले रखा गया है। और उक्त दोनो पाठो को बाद मे। जोड इसी क्रम से की हुई है। इसलिए अगसुत्ताणि के पाठ को आगे पीछे करके उद्धृत किया गया है।

३. अगुलीमाला वाला पाठ अगसुत्ताणि मे नही है।

- २४ भवन महिल कहिवाय, तेह तणी जे भीत ना। सहस्रगमै करि ताय, उलघतो अतिक्रमतो।।
- २५ तती वीणा ताम, तल ते हस्त तणा तला। तालकासिका नाम, गीत वार्जित्र ना करी।।
- २६. मधुर मनोहर आम, जय एहवा वर शब्द नां। उद्घोपण अभिराम, तिण करिने जे मिश्र छै।।
- २७ अति कोमल ध्वनि करेह, स्तवनाकारक जन तणा। वा नूपुर प्रमुखेह, भूषण सवधी ध्वनि करी।।
- २८ अपिडवुद्धचमानेह, अन्य शब्द अणघारतो। तथा वैराग्यवशेह, ते रव चित्त हरतू न तसु।।
- २६. विवर भूमि रै माय, कदर तेह कहीजियै। गिरि नी गुफाज ताय, अथवा अतर गिरि तणा।
- ३०. प्रधान पर्वत सार, प्रासाद सप्तभूमि प्रमुख। उच्च अविरल आगार, ऊर्ध्वघण भवण तणो अरथ।।
- ३१ वली देवकुल ताम, प्रृंघाटक त्रिक चउक फुन। चच्चर ने आराम, वर पुष्प जाति वनखड जे।।
- ३२. तरु पुष्पादीमत, तेह उद्यान कहीजियै। कानन जे होभत, नगर दूरवर्ती तिको।।
- ३३. सभा अने पो स्थान, जसु प्रदेश लघु भाग जे। मोटा भाग पिछान, देश रूप कहियै तसु॥
- ३४. तेह विषे पडछद, शत सहस्र लक्ष सकुला। करतो छतो सोहद, नगर विचै थइ नीकलै।।
- ३५. हय नुरव हीसार, गुलगुलाट रव गज तणा। वर रथ ना भिणकार, घणघणाट रव मिश्र करि॥
- ३६ जन ना अति मधुरेण, महा कलकल शब्दे करी। अवर तल प्रति तेण, सर्व प्रकारे पूरतो॥
- ३७ सुगध फूल नी ताम, वली चूर्ण नी वास रज। ऊर्द्ध गई अभिराम, तिण करिनै नभ मलिन जे॥
- ३८ वर कृष्णागरु ताम, चीडा सिल्लक धूप फुन। तसु निवह करि आम, जीव लोक जिम वासतो।।

- २४. भवणभित्ती (पन्ती) सहस्साई समइन्छिमाण-सम-इन्छिमाणे' समतिकामन्नित्यर्थः (वृ० प० ४८३)
- २५. 'ततीतलतालगीयवाइयरवेण' तन्त्री—वीणा तला हस्ता ताला —कासिका. तलताला वा—हस्तताला. गीतवादिते—प्रतीते एपा यो रवः स तथा तेन । (वृ० प० ४८३)
- २६. 'महुरेण मणहरेण' 'जय जय सद्दुग्घोसमीसएण' जयेतिश्रव्दस्य यद् उद्घीपण तेन मिश्रो य स तथा तेन (वृ० प० ४८३)
- २७. 'मंजुमंजुणा घोसेण' अतिकोमलेन ध्वनिना स्ताव-कलोकसम्बन्धिना नूपुरादिभूसणसम्बन्धिना वा (वृ० प० ४८३)
- २८. 'अप्पडिवुज्झमाणे' ति अप्रतिवुद्धयमान —शव्दान्त-राण्यनवधारयन् अप्रत्युद्धमानो वा—अनपह्रियमाण-मानसो वैराग्यगतमानसत्वादिति (वृ० प० ४८३)
- २६ कन्दराणि भूमिविवराणि गिरीणा विवरकुहराणि गुहा पर्वतान्तराणि वा (वृ० प० ४८३)
- ३०. गिरिवरा.—प्रधानपर्वेता. प्रासादा —सप्तभूमिका-दय कद्वंघनभवनानि—उच्चाविरलगेहानि (वृ० प० ४८३)
- ३१. देवकुलानि—प्रतीतानि श्रृङ्गाटकत्रिकचंतुष्कचत्वराणि प्राग्वत् आरामा.—पुष्पजातिप्रधाना वनखण्डाः (वृ० प० ४८३)
- ३२ उद्यानानि —पुष्पादिमद्वृक्षयुक्तानि काननानि नगराद् दूरवर्त्तीनि (वृ० प० ४८३)
- ३३ सभा—आस्यायिका प्रपा—जलदानस्थानानि एतेपा ये प्रदेशदेशरूपा भागास्ते तथा तान्, तत्र प्रदेशा— लघुतरा भागा देशास्तु महत्तरा (वृ० प० ४८३)
- ३४ 'पडिमुयासयसहस्ससकुले करेमाणे' ति प्रतिश्रुच्छत-सहस्रसकुलान् प्रतिशब्दलक्षसङ्कुलानित्यर्थः कुर्वन् निर्गच्छतीति सम्बन्ध (वृ० प० ४८३)
- ३५. हयहेसियहित्यगुलुगुलाइयरहघणघणाइयसद्मीसएण (वृ० प० ४८३)
- ३६ महया कलकलरवेण य जणस्स सुमहुरेण पूरेंतोऽबर (वृ० प० ४८३)
- ३७. समता सुयद्यवरकुसुमचुन्नउव्विद्धवासरेणुमइलणभ करेंते' सुगन्धीना —वरकुसुमाना चूर्णाना च 'उव्विद्ध: कद्धवँगतो यो वासरेणु.—वासक रजस्तेन मिलन यत्तत्त्या (वृ० प० ४८३)
- ३८ कालागुरुपवरकुदुरुककतुरुमध्यनिवहेण जीवलोगिमव वासयते' कालागुरु गन्धद्रव्यविशेष. प्रवरकुन्दुरुकके —वरचीडा तुरुक —सित्हक पूप —तदन्य. एतरलक्षणो वा एपामेतस्य वा यो निवहः स तथा तेन जीवलोक वासयन्निवेति (वृ० प० ४८३)

- ३६. सर्वे थकी घोभात, जन-मंत्रन चक्रमान जे। तमु गमन विषे आस्यान, ते जिम ही तिम नीकरी।।
- ४०. पर जन पहिछाण, प्रनूर जना ना पुर जना। बात वृद्ध बहु जाण, जेट प्रमोदन पावता।।
- ४१ शीघ्र चालना साय. ते अनि स्यापृत नत्ना। जे बोल बहु जिरा होय, एहवू नभ गरेना हमा ॥
- ४२ क्षत्रियनाउँ जे याम, नगर मध्य-मध्य घट गरी। एह भलावण ताम, मृति थही आग्यो इहा॥
- ४३. \*जिहा मारण कुट ग्राम नगर छै, जिला नैत्य भन्ती यह साउ। तिण स्थान आवै निण स्थान आपी ने देगी,

जिन अनिशय ग्रिकाम ॥

- ४४. छनादिक जिन ना अनिशव देगी, पुरुष महस्य उपार्ध जाम । एहवी पवर सिव हा थी उतरे, सिविका थी उनरी हरतास ॥
- ४५ जमाली धात्रियकुमर प्रते तब, मात पिता क्षागत परि नाम । जिहा श्रमण भगवत महावीर प्रभु छै।

निहा आवै आवी गुणमाम ॥

४६. श्रमण भगवत महाबीर प्रभु ने, जाव नमण करि बदै नाम। इम निइनै प्रभुजी । ए एक पुण मुभ,

जमाली क्षात्रयसूत सुनदाव ॥

- ४७. इन्ट कात मुक्त बन्तम यावत. किमगपारणयाण् नीय । कवर फूल तणी पर एहनो, जाय दर्शण दोहिन् पोय।
- ४५ ते यथीनाम दृष्टात करीने, उत्पन चद्रविकामी करा। पद्म कमल ते सूर्यविकासी, जाव सहस्रपत्र सनर्या।

### सोरठा

- ुनुद नितन या गुभग फुन। ४६ जाव शब्द थी बाद, लोक रुढिथी भेद तसु॥ सीग्विक इत्याद,
- प्रo. \*ए कमल पक कादा विवे ऊपनी, जल कर विधयो नाय। न निपाइ पक रूप रजे करि, जल रज करिकैन निपाय ॥
- ५१. इण दृष्टाते क्षत्रियमुत जमाली, काम शब्दादि करि उत्पन्त । गर्य फर्म रम रप भोग करि, वृद्धिपणुज प्रपन्त ॥

\*लय: हो म्हारा राजा रा गुष्देव

- ३६. भगाती म्बियवसमार्व स्थिति प्रशासीत ----दन्यप्ट पनि यत्र गार्थ तृत्रया गायमा भवस्येवं निष्टिशीर महात्रः । (मृ० प० (८३)
- ४०,४१ भाउरण्यानपुर्वम्यविष्याम् विविद्याः इन्संवतहर्न नम बजेते' पीपनगहन स्थाप प्रमुप-जनारत संस बुद्धानम् वे प्रसृत्तिः स्थित प्रपर्धनता-इय-न्स्य मन्द्रनानेषां साम्यास्याम् निया-मताता यो योज म वहुनो यत्र मनया गरेममून मभः वर्गनिर्मात (40 44 KEZ)
- ४५, लिखक लगावि महारे महास्मानीय विगयनगढ
- ८३,८८ हेरोब महाचन्द्रमार्ग नगर देखेन महामाना भेडण नेतीर एताएएएड, एतार्या एका छनारीत् हिन्दर मनो राण पामद, पारित्या प्रियमण्यम सरिचि मीप कोड पुरिसम्बर्गमाधियो से मीवाची परयोग्य ॥ (50 (1702)
- ४४ प्रमुख में जनवीन घरिनारमान प्राप्तियों। प्राप्ति बाउ रेनो र नगरी भगा गराधिर मेनोत उपायकति, उपाधिता
- इ. मनर्च भगव महाबीर चित्रुणी जार (में जार) समिना एवं पराधी एवं गतु को ! जनगी गनिषमुमारे अस्य एरे पुने
- ४७ इट्डे मी लग (ग० गात) निमर पूर पामपवाए ?
- ४० में रहानामए उत्तरि इ या, पड़ने इ या जान महम्मपत्ते इ वा
- ४६ यापस्तरणादिद प्रयन्न'रुमुदेर वा ननिमेंद्र गा मुमगेद ना मोगिनिएइ या' इत्यादि, एमा प भेरी (यु प० ४८३)
- ५०, यो जात् कते मधुदे नी शतद्वति पणस्त्वं, मोज-ापनि जनरएण
- ४१. एवामेव जनाजी वि यनिगतुमारे कामेट् बाए, भागेति सपुर्हे 'कामेहि जाए' ति कामेष्-राज्यदिम्पेषु जात-'भोगेहि सबुद्वे' ति भोगा-गन्धरमन्दर्शास्तेषु मध्ये (युव्य ० ४८३) नवृद्धो—वृद्धिमुनगत

१. २५-४१ तक की जोड वृत्ति के आधार पर की गई है। अगसुत्ताणि मे यह पाठ नहीं है। फेबल २६ वी गाथा का सवादी पाठ वहा है, पर वह भी वृत्ति से मिलता नहीं है। वृत्ति मे पाठ लिया है-"मजुमजुणा घोसेण अपाउियुज्झ-माणे" जविक अगसुत्ताणि का पाठ है--- "मजुमजुणा घोमेण आपिउपुच्छ-माणे।

- ५२. काम रजे करिनै न लिपावै, अथवा काम रागे न लिपाय। विल भोग रूप रज करि न लिपावै, तेह विषे अनुरागता नाय।।
- ५३ मित्र प्रसिद्ध न्याती ते स्व जाति, निजक मामादि कहाय। स्व जन पिता पितरियादिक ते, सर्विघ ते सुसरादिक ताय।।
- ५४ परिजन ते दासी दास प्रमुख जे, एतला ने विषे घार। स्नेह करीने नाहि लिपावै, ए तो जमाली क्षत्रियकुमार॥
- ५५ अहो देवानुप्रिया । एह जमाली, पायो ससार भय थी उद्वेग । वीहनो है जन्म मरण ना दुखे करि, पायो है परम सवेग ।।
- ५६ हे देवानुप्रिया । तुम्हारे समीपे, मुड थइ सुखकार। ग्रहस्थावासपण् छाडीने, थास्य ए अणगार।।
- ५७ ते माटै हे देवानुप्रिया । तुम्हने, अम्है शिष्य-भिक्षा देवा एह । अहो देवानुप्रिया । ये वाछो, शिष्य रूपणी भिक्षा प्रतेह ।।
- ५८ वीर कहै जिम सुख होवै तिम करो, अहो देवानुप्रिया जी । मा प्रतिवध विलव न करिवू, इम दीक्षा री आज्ञा ताजी ।।
- ५६ जमाली क्षत्रियकुमर तिण अवसर, श्रमण भगवत महावीर। एम कह्ये थके हरप थयो अति, पायो सतोप सुघीर॥
- ६० श्रमण भगवत महावीर प्रतै जे, तीन वार घर खत। यावत नमण करी प्रभुजी ने, ओ तो कूण इशाणे जत।।
- ६१ उत्तर पूर्व दिशि भाग जईनै, स्वयमेव पोतै इज तेह। आभरण नै माला पुष्पादिक नी, अलकार प्रतै मुकेह।।
- ६२ जमाली क्षत्रिकुमर तणी जे, माता ते तिहवार। हस लक्षण पट-शाटक करिने, ग्रहै आभरण मल्लालकार।।
- ६३ आभरण मल्लालकार ग्रही नै, पवर मोत्या नो हार। जल नी घार यावत आंसू प्रति, न्हाखती-न्हाखती तिहवार।।

- ६४ जाव शब्द थी जोय, सिंदुवार जे वृक्ष ना। वा निर्गृन्डी सोय, तास कुसुम अति शुक्ल जे।।
- ६५ छिन्न-मुक्तावली जाण, प्रकाश ते सम ऊजला। आसू तास पिछाण, जाव शब्द मे ए कह्या।।
- ६६ \*जमाली क्षत्रियकुमर प्रतै कहै, हे जात । वल्लभ गुणगेह। अप्राप्त सजम योग तणी जे, प्राप्ति अर्थे तू घटना करेह।।
- ६७ पाम्या है सयम जोग प्रते तू, यत्न कीजे रूडी रीत । सजम ने विषे उद्यम कीजे, पराक्रम फोडवजे पुनीत ॥

- ५२ नोवलिप्पति कामरएणं नोवलिप्पति भोगरएणं 'नोवलिप्पइ कामरएण' त्ति कामलक्षणः, रज काम-रजस्तेन कामरजसा कामरतेन वा—कामानुरागेण (वृ० प० ४८३)
- ५३,५४ नोवलिप्पति मित्त-णाइ-णियग-सयण-सवधि-परि-जणेण
  'मित्तनाई' इत्यादि, मित्राणि—प्रतीतानि ज्ञातय. स्वजातीयाः निजका—मातुलादय स्वजना — पितृपितृव्यादय सम्वन्धिनः—श्वसुरादय परिजनो— दासादि इह समाहारद्वन्द्वस्ततस्तेन नोपलिप्यते— स्नेहत सम्बद्धो न भवतीत्यर्थः (वृ० प० ४५३)
- ५५. एस ण देवाणुष्पिया । ससारभयुव्विगो भीए जम्मण-मरणेण
- ५६. इच्छइ देवाणुष्पियाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए
- ५७ त एय ण देवाणुष्पियाण अम्हे सीसिभनख दलयामो, पिडच्छतु ण देवाणुष्पिया । सीसिभनख । (श० ६।२१०)
- ५८ तए ण समणे भगव महावीरे जमालि खत्तियकुमारे एव वयासी —अहासुह देवाणुष्पिया । मा पडिवध ॥ (श० ६।२११)
- ५६ तए ण से जमाली खित्यकुमारे समणेण भगवया महावीरेण एव वृत्ते समाणे हट्ट तुट्टे
- ६० समण भगव महावीर तिक्खुत्तो जाव (स० पा०) नमिसत्ता उत्तरपुरित्थम विसिभाग अवक्कमइ,
- ६१ अवक्किमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ। (श० ६।२१२)
- ६२ तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हस-लक्खणेण पडसाडएण आभरणमल्लालकार पडिच्छइ
- ६३ पडिच्छिता हारवारि जाव विणिम्पुयमाणी
- ६४,६५ सिंदुवारिछन्नमुत्ताविलप्पगासाइ असूणि विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी
- ६६,६७ जमार्लि खित्तयकुमार एव वयासी—'जइयव्य जाया । घडियव्य जाया । परक्किमयव्य जाया । 'जइयव्य' ति प्राप्तेषु सयमयोगेषु प्रयत्न कार्य 'जाया ।' हे पुत्र । 'घडियव्य' ति अप्राप्नाना सयम-योगाना प्राप्तये घटना कार्या 'परिक्किमयव्य' ति पराक्रम. कार्य पुरुपत्वाभिमान सिद्धफल. कर्त्तव्य इति भाव. (वृ० प० ४५४)

<sup>\*</sup>लय : हो म्हांरा राजा रा गुरुदेव

- ६७. इण अर्थ विषे प्रव्रज्या पालण में, प्रमाद न करिवूं लिगार। इम कही जमाली क्षत्रियकुमार नां, मात पिता तिहवार॥
- ६६. श्रमण भगवंत महावीर ने वांदै, नमस्कार करै करि ताय। जिण दिशि थी आया प्रगट हुआ था, तिण दिशि पाछा जाय।।
- ७० जमाली क्षत्रियकुमर तिण अवसर, स्वयमेव पोर्त निज हाथ। पंच मुज्टी लोच करै करीने, आयो जिहा जगनाथ॥
- ७१ इम जिम ऋपभदत्त दीक्षा लीघी, तिमज प्रव्रज्या लीघं। णवर पच सी पुरुप सघाते, तिमहिज सर्व' प्रसीध।।

- ७२. कह्यु ऋपभदत्त जिम जाण, उह वचने महावीर प्रति । तीन वार पहिछाण, दक्षिण ना पासा थकी ॥ ७३ करे प्रदक्षिण ताम, वदं नमण करे करी। इम वोले अभिराम, आलित्त लोक उत्यादि जे॥
- ७४ \*जाव सामायिक आदि देडनै, काड अग एकादय सार। भणे भणी यहु चीथ छठ तप, अठम भक्त उदार।।
- ७५ मास अने अर्द्धमास खमण वली, विचित्र तप कर्म करेह। आतम प्रति भावतो विचरै, वीर प्रभू समीपेह।।
- ७६ तिण अवसर अणगार जमाली, अन्य दिवस किणवार ।। जिहा श्रमण भगवत महावीर प्रभु, तिहां आवै आवीने घार ।।
- ७७ श्रमण भगवत महावीर प्रते जे, वार्दे करे नमस्कार। प्रभु वादी नमस्कार करीने, इम वोलै जिहवार॥
- ७८ वाछू छू हे प्रभु । तुभ आजा थी, पच सी सत सघात। वाहिर जनपद देश विषे जे, विहार करिवूं जगनाय।।
- ७६. श्रमण भगवत महावीर तदा, जमाली ना ए अर्थ प्रतेह। आदर न दियै तेह अर्थ विषे, अणआदर देता जेह।।
- द० विल चित्त में भलो पिण निहं जाणें, देख्यो दोप ऊपजवा नो भाव। ते मार्ट आज्ञा निहं दीवी, प्रभु मून रह्या ते प्रस्ताव।।
- दश तव जमाली अणगार श्रमण भगवत महावीर प्रते दूजी वार। तीजी वार पिण इहविव वोलें, हूं वाछू छू जगतार।।

- ६८. अस्ति च णं अट्ठे णो पमाएतव्यं ति कट्टु जमानिस्न गत्तियकुमारस्न अम्मापियरो 'अस्मि चे' त्यादि, अस्मिषचार्ये—प्रत्रज्यानुपालन-लक्षणे न प्रमादयितव्यमिति (यु० प० ४८४)
- ६८ समणं भगव महाबीर वर्दात नमंगति, बिहत्ता नमित्ता जामेव दिसं पाउय्मूया तामेव दिसं पिट-गया। (१० ६।२१३)
- ७०. तए णं से जमानी मत्तियकुमारे मयमेव पचमुहिय लीय करेड, करेता जेणेव ममणे भगव महावीरे तेणेव खवागन्छड
- ७१. एवं जहा उसभदत्तो तहेव पव्यद्भो नवरं पंचहि पुरिसमएहि मिद्ध तहेत जाव (म० पा०)
- ७२,७३. एव जहा उमभदत्तो उत्यनेन यत्सूचितं नदिद—
  (यृ० प० ४८४)
  उवागच्छिता नमण भगव महावीर निक्युत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, वरेता वंदह नममइ, वदित्ता
  नमित्ता एव वयागी—
  आतिते ए भंते !
- ७४,७५. जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारम लगाइ अहि-जजइ, अहिज्जित्ता बहाँह चउत्य-छट्टद्वम-दमम-दुवाल-मेहि मासद्धमासप्पमणेहि विचित्तेहि तबोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ। (१० ६।२१५)
- ७६ तए ण ने जमाली अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता
- ७७ नमणं भगवं महावीर वंदइ नमंनइ, वंदिता नमसिता एवं वयामी---
- ७८ इच्छामि णं भेते ! तुब्भेहि अवभणुण्णाए समाणे पर्चाह अणगारसएहि मद्धि बहिया जणवयिहार विहरित्तए। (भ० ६।२१६)
- ७६,८०. तए ण ममणे भगव महावीरे जगालिन्स अणगा-रस्म एयमट्टं नो आढाइ, नो परिजाणइ, तुर्सिणीए सचिट्टइ।। (घ० ६।२१७)
- ५१. तए णं से जमाली अणगारे ममण भगव महावीर दोच्चं पि तच्च पि एवं वयामी—इच्छामि ण भते!

<sup>\*</sup>लय: हो म्हारा राजा रा गुरुदेव

१. पा० टि० ७ मे सं० पा० दिया गया है। इस पाठ की जोड करने के बाद आगे की दो गायाओं में विस्तृत पाठ के आघार पर जोड लिएकर फिर दो गायाओं में सं० पा० को आघार बनाया गया है। इमलिए इन गायाओं के सामने कहीं पा० टि० का और कहीं मूल का पाठ उद्धृत है।

- दर आप तणी प्रभु । आज्ञा हुवा थी, पंचसौ श्रमण सघात । जाव विचरवू जनपद देशे, विहार करीने विख्यात ।।
- ५३ तव श्रमण भगवत महावीर प्रभुजी, जमाली अणगार ना जेह। वे त्रिण वार ही एह अर्थ प्रति, आदर न दियै तेह।। ५४ जाव पूर्ववत मौनपणे रहै, तव ते जमाली अणगार। श्रमण भगवंत महावीर प्रभु ने, वादै करै नमस्कार।।
- दर्भ वंदी नमण करी श्रमण भगवत महावीर तणा पासा थी। वहुसाल चैत्य थकी पाछो निकलै, निकली विण आज्ञा थी।
- द्र. पांच सौ अणगार साधु सघाते, वाहिर ते तिणकाल। जनपद देश विपे विचरतो, ए कही दोय सौ तेरमी ढाल।।

दर. तुन्भेहि अव्भणुष्णाए समाणे पंचहि अणगारसएहि सिद्धं विहया जणवयिवहार विहरित्तए।

(श० धार१म)

- द३ तए ण समणे भगव महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्च पि, तच्च पि एयमट्ट नो आढाइ,
- **८४** जाव (स॰ पा॰) तुसिणीए सचिट्ठइ।

(श० धार१६)

तए ण से जमाली अणगारे समण भगव महावीर वदइ नमसइ

- प्रवित्ता नमसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्य अतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पिडिनिक्खमइ, पिडिनिक्खिमत्ता
- न्दः पचिं अणगारसएिं सिद्धं विहया जणवयिवहार विहरदः । (श० ६।२२०)

#### ढाल: २१४

# दूहा १ तिण काले ने तिण समे, नगरी सावत्थी नाम।

- अति रलियामणी, वर्णक अभिराम ॥ तस्र हुती २ कोट्रग नामे वाग थो, जे वर्णववा वन-खड लग, कहिवू ते सुप्रयोग।। ३ तिण काले ने तिण समय, नगरी चपा अतिही शोभती, वर्णक तसु ४ पूर्णभद्र त्यां चैत्य थो, तसु वर्णक वहु पृथ्वी तणों जिला-पट्ट ५ तव जमाली अणगार ते, अन्य दिवस किण काल। श्रमण पच सय साथ थी, परवरियो थको न्हाल।। वलि ६ पूर्वानुपूर्वे ग्रामानुग्राम । चालतो,
- ७. जिहा कोट्टग नार्में चैत्य छै, तिहा आवै आवी ताम। यथायोग्य अवग्रह प्रते, ग्रहै ग्रही ने आम।।

विचरतो,

व्यतिक्रमतो

जिहा सावत्थी नाम।।

- स सजम ने फुन तप करी, आतम प्रति अवघार।
   भावतो ते वासितो, विचरे छै तिहवार।।
- ६. तव श्रमण भगवत महावीर जी, अन्य दिवस किण काल ।
   पूर्वानुपूर्वी प्रभु, चालता गुणमाल ।।
- १० यावत सुखे-सुखे करी, करता प्रभू विहार। जिहा चम्पा नामे भली, नगरी छै सुखकार।।

- १ तेण कालेण तेण समएण सावत्थी नाम नयरी होत्या—वण्णओ
- २ कोट्ठए चेइए--वण्णको जाव वणसडस्स
- ३ तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्या---वण्णओ
- ४ पुण्णभद्दे चेइए—वण्णको जाव पुढिविसिलापट्टको । (श० ६।२२१)
- ५ तए ण से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ पचिंह अणगारसएहिं सिद्ध सपिरवृडे
- ६ पुन्वाणुपुन्वि चरमाणे गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे जेणेव सावत्थी नयरी
- ७ जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता
- द. सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।

(श० ६।२२२)

- ह तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कथाइ पुव्वाणु-पुव्वि चरमाणे
- १०. जाव (स० पा०) सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव चम्पा नयरी

- ११. जिहां पूर्णभद्र चैत्य छै, तिहां आवे आवी ताय। यथायोग्य अवग्रह प्रते, ग्रहे ग्रही जिनराय।।
- १२. गजम ने फुन तप करी, आतम प्रति अवधार। भावता ते वासिता, विचर जिन जगतार॥ भवि! मांभलो रे,

साभनज्यो जमाली नु चरित्त, वीतराग ना वन अवितस्य ॥ (अपदं)

- १३ ते अणगार जमाली ने निह्वार, नेह अरम आहारे करि घार। भवि ! साभली रे। हीग प्रमुख नो नहिं सरकार, ते कहिये अरम रस-रित आहार। भवि ! साभली रे॥
- १४. पुराणपणां थी गयो रस जास, विरस आहार किंद्ये छै तास । अत ते अरसपणे किर तेह, सर्व घान्य मे अत वर्तेंट ॥
- १५ तेहिज अरस जीम्या पछै जोय, ऊवरियो ना वानी होय। ते प्रकर्षे करि अत वर्चेंह, प्रात आहार कहीजे जेट्।।
- १६ लुक्य अने तुच्छ अन्य आहारेह, कालातिकात करीने तेह । भूय तृपा लागी तिण राल, आहार-पाणी अणपाग्ये व्हाल ॥
- १७. प्रमाणातिकात करेह, मात्रा थी अधिक भोगविये जेह। ज्ञीतन जल भोजन करि न्हान, अन्यदा दियस किण कारा।।
- १८. गरीर विषे विस्तीणं जेह, रोग ते व्याघि करी पीउेह। तेहिज आतक रपष्ट दीमत, जीवितव्य ने कष्टकारी अत्यत।
- १६. उज्जल सुय-विंदु करि रहीत, तिउले कहिता त्रितुल संगीत। मन वच तनु ना अर्थ प्रतेह, तुले कहिता जीपै तेह।।
- २० किहांडक विपुल सकल तनु व्याप, प्रकर्षे करि गाट सताप। कर्कण द्रव्य जिम दृट कठोर, कटुक वस्तु जिम अनिष्ट जोर॥
- २१. चड रीद्र दुक्से दुख हेतु, दुर्गम तेह दुसाध्य कहेतु। तीव्र नीव नी पर अवलोय, दुक्ये करी अहियागता मोय।।

- ११. जेणेव पुण्यभद्दे भेदण गेणेय उत्तमन्छः, उयामन्छिना, आरापदिस्यं ओग्मह औगिष्टह जीगिष्टिसा
- १२. संजनेषं सयमा अप्याप भानेमाणे विहरद । (घ० १/२२३)
- १३. तम् ण यस्य जमानिस्य श्रणनायस्य तेति 'श्रयमेहि य' 
  'प्रयमेति य' ति तिपुष्याधिभन्यस्य स्वादिष्यमानप्रमे (यु० प० ४८६)
- १४. निस्मेरि य अनेति य 'विस्मेरि य' पि पुराणसाद्विमनवसैः 'अतिहि य' सि प्रसम्यमा मर्वधान्यान्त्यनिभित्रस्यनगराज्ञिमः

(वृत पर ४८६) १४. पतिहा म

'पनेति य' चि नैरेग भुक्ताबशेषम्बन पर्यापनत्वेन या प्रमुखेणान्यसित्यास्त्रानीः (यु० प० ४८६)

१६. मृहेहि य, तुन्धेहि य गानाइनरतेहि य 'मृहेहि य' सि गर्ध. 'तुन्देश्चि य' सि वर्ल्यः 'मालाइनरतेहि य' सि तृष्णानुभुक्षानालाप्राप्तैः (य० प० ४८६)

१७. पमाणाइनारतेहि य पाणभोगणेति अञ्चल कयाद 'पमाणाइनारतेहि य' शि गुभुक्षाविषासामाणानुनिनैः (य० प० ४८६)

१८ गरीरगित विडमें रोगानके पाउन्मूए के 'रोगायके' ति रोगो---व्याधि म चासापात दूरन कृष्टु जीवितकारीति रोगात दू (पृ० प० ४८६)

१६. उज्ज्ये विद्ये 'उज्जले' सि उज्ज्यनो—विषधनेदीनाप्यकनिद्धतत्वात् 'तिउते' नि त्रीनिष मन प्रभृतिकानर्यान् तुत्यति— जयतीति त्रितुन. (यु० प० ४८६)

२०. पगाडे फमाने फटुए
गरचिद्विपुल इत्युच्यते, तम विपुल. मकलकायग्यापमत्त्रात्, 'पगाडे' ति प्रकर्षवृत्ति 'कवकते' ति
गराग्यद्र्यमिय कवर्षगोऽनिष्ट इत्ययं. 'कटुए' ति
गटुक नागरादि तदिय य म नटुकोऽनिष्ट एवेति
(व० प० ४८६)

२१. चछे दुनसे दुन्मे तिन्त्रे दुरिह्यासे
'चडें' ति रौद्र 'दुन्से' ति दुन्महेतु 'दुन्मे' ति
कप्टमाध्य इत्ययं 'तिन्त्रे' ति तीन्न - तिन्तं निम्वादि
द्रन्य तदिव तीन्न किमुक्त भवति ? 'दुरिह्यासे' ति
दुरिधसहा. (वृ० प० ४८६)

<sup>\*</sup> लय: मेरी विण गई, लावीणी रे मेरी विण

१ अगसुत्ताणि भाग २ ग० ६।२२४ में तिउले के स्थान पर विउले पाठ है । वहा 'तिउले' पाठान्तर मे रसा गया है ।

- २२. पित्त ज्वर करी व्याप्त तसु देह, विल तनु ऊपनो दाह अछेह। एहवो थको जमाली अणगार, विचरै सावत्थी नगर मभार।।
- २३ अणगार जमाली ते तिणवार, पराभव्यो वेदन करि घार। श्रमण निर्ग्रंथ तेड़ावै ताय, तेडावी इम वोलै वाय॥ २४ तुम्है देवानुप्रिया । मुफ्त काज, सेज्जा सथारो सथरो आज। ते श्रमण निर्ग्रंथ तिण अवसर जेह, जमाली ना ए अर्थ प्रतेह॥ २५. विनय करीने करै अंगीकार, अगीकार करीने तिवार। जमाली अणगार ना जेह, सेज्जा सथारो सथरै तेह॥

२६ सेज्जा कहिता सोय, सूवा नै अर्थे जिको। सथारो अवलोय, तिण सू सेज्या-सथारो कह्यो।।

२७ \*तिण अवसर ते जमाली अणगार,

अतिगाढी वेदनाइ पराभव्यो तिवार। श्रगण निर्ग्रथ ने वीजी वार, तेडै तेडी इम वचन उचार।।

२८ अहो देवानुप्रिया ! मुभ काज, स्यू सेज्या-सथारो कीघो आज ? कै करिये छै सेज्या-सथार, स्यू नीपायो कै नीपाचो छो घार ?

२६ श्रमण निर्प्रथ तिके तिह वेर, जमाली अणगार ने इम कहै हेर। अहो देवानुप्रिया । सेज्जा-सथार, निश्चै न कीघो, करियै घार।।

#### सोरठा

सूवा ने ३० पूछचो जमाली एम, मुज कै करियै घर प्रेम, कीघो काल निर्देश करि। ३१ इण वचने करि न्हाल, अतीत देखाववू ॥ तेह काल, तणु वर्त्तमान भेद कह्यु ए तेह विषे। ने क्रियमाण, ३२ की घो इमहिज पिण कह्यो ॥ साघू उत्तरदायक जाण, अणकीघो आखियो। इम जास, ३३ करवा लागा तास, जमाली चितवै ॥ कारण थी इम मुनि नो वली। सथार, करणहार ३४ मुभ वच फुन नो वच अवघार, इम विचारणा करतो हुवो ॥ कीघो अगीकरयै । ३५ करवा लागो तास, पक्ष विमास, तेह वचन मिलतो नथी।। सम्यग प्रकार जिण नर एह अगीकर्यू। जे कीघ, ३६ क्रियमाण तिण विद्यमान नी सीघ, करण क्रिया थाय, जे कीधू ३७ तथा दोप वहु क्रियमाण नहि । चिरतन नी परे॥ विद्यमान ताय, घट \*लय: मेरी खिनगाई, लाखीणी रे मेरी खिण

- २२. पित्तज्जरपरिगतसरीरे, दाहवक्कंतिए या वि विहरइ। (श० ६/२२४)
  - दाहो व्युत्कान्तः—उत्पन्नो यस्यासी (वृ० प० ४८६)
- २३. तए ण से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे निग्गथे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एव वयासी—
- २४,२५ तुब्भे ण देवाणुष्पिया । मम सेज्जा-सथारग सथरह। (श० ६/२२५) तए ण से समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एतमट्ठ विणएण पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जा-संथारग सथरति।

(হা০ ৪/২২६)

- २६. 'सेज्जा-सथारग' ति शय्यायै—शयनाय संस्तारक शय्यासस्तारकः (वृ० प० ४८६)
- २७. तए ण से जमाली अणगारे विलयतर वेदणाए अभि-भूए समाणे दोच्च पि समणे निग्गथे सद्दावेद्द, सद्दावेत्ता एव वयासी—

'विलयतर' ति गाढतर (वृ० प० ४८६)

- २ मम णं देवाणुष्पिया ! सेज्जासथारए कि कडे ? कज्जइ ?
  - 'र्कि कडे कज्जइ' त्ति कि निष्पन्न उत निष्पाद्यते ? (वृ० प० ४८६)
- २६ तते ण ते समणा निग्गथा जमालि अणगार एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पियाण सेज्जा-सथारए कडे, कज्जइ। (४१० ६/२२७)
- ३१,३२ अनेनातीतकालनिर्देशेन वर्त्तमानकालनिर्देशेन च कृतिकियमाणयो भेंद उक्त उत्तरेऽप्येवमेव ((वृ० प० ४८६)
- ३३ तदेव सस्तारककर्तृसाधुभिरिप कियमाणस्याकृततोक्ता (वृ० प० ४८७)
- ३४. ततश्चासौ स्वकीयवचनसस्तारककर्तृसाघुवचनयोविम-र्शात् प्ररूपितवान् (वृ० प० ४८७)
- ३५ कियमाण कृत यदभ्युपगम्यते तन्न सङ्गच्छते (वृ० प० ४८७)
- ३६ यतो येन कियमाण कृतिमत्यभ्युपगत तेन विद्यमानस्य करणिकया प्रतिपन्ना (वृ० प० ४८७)
- ३७ तथा च बहवो दोषा , तथाहि—यत्कृत तिक्कयमाण न भवति विद्यमानत्वाच्चिरन्तनघटवत्

(वृ० प० ४५७)

### गीतक छंद

३८ अथ कर्यू पिण जो कीजियै तो नित्य ही करिवू वही। कीधापणां थी घुर समय जिम क्रिया-समाप्ती ह्वं नही॥

३६. सहु काल मे क्रियमाण थी जे आदि समया नी परे। करिवाज मांडचू करचू ह्वै तो क्रिया विफल हुवै तरे॥

४०. जे पूर्व अछतो हीज छै ते हुतो छतो दीसै वही।
प्रत्यक्ष एह विरोध छै विल जमाली चिन्ते सही।।
४१. तिम घट प्रमुख जे कार्य नी निष्पत्ति विषेज जाणियै।
जे क्रिया करिवा तणु कालज दीर्घ ही पहिछाणियै।।
४२. जे भणी प्रारम काल मे घट आदि कार्य न देखियै।
विवादि-पिंडादि अवस्था विषे पिण नहिं पेखियै।।
४३. क्रिया ना अवसान में घट आदि कारज सभवै।
तो क्रिया काले कार्य युक्त न क्रिया अवसाने हुवै।।

बाo—भाष्यकार कहै छै—इहलोक नै विषे जे पुरुषे क्रियमाण—करवा लागू ते कृत कहिता कीघू, इम अगीकार करघूं तिण पुरुषे विद्यमान नीज करण क्रिया अगीकार वीधी। वली तिण प्रकार छते वह दोष नी निष्पत्ति हवै।

इहा जे कीचू ते कियमाण न हुवै कस्मात्—िकण कारण यकी रेतिन्यावाओं ते सत्पणा थकी —वस्तु ना विद्यमानपणा थकी इत्ययं । केहनी परे ? चिरंतन घट नी परे । अथवा कृत अपि कियते किहता कीधा प्रते पिण कीजिये तो नित्य करिवू। वली किया समाप्ति न हुवै सदा काल कीधा नै हीज कियमाणपणा थकी।

जो कियमाण कहिता करवा लागा ते कृत कहिता की घो हुवै तिवार किया नो निर्फलपणो हुवै। तथा पूर्वे न थयु ते थातो दीसै तथा जे भणी घटादिक नीं निष्पत्ति नै विषे दीर्घ किया काल दीसै छै। ३८. कृतमपि कियते ततः क्रियता नित्यं कृतत्वात् प्रथम-समय इवेति, न च क्रियाममाप्तिभविति

(वृ० प० ४५७)

३६. सर्वेदा कियमाणत्वादादिममयवदिति, तथा यदि कियमाण कृत स्यात्तदा कियावैफल्य स्याद् (व० प० ४८७)

४०. तथा पूर्वंमसदेव भवद्दृण्यते इत्यध्यक्षविरोधण्च (वृ० प० ४६७)

४१. तथा घटादिकार्यनिष्पत्ती दीर्घ. क्रियाकाली दृश्यते (वृ० प० ४८७)

४२. यतो नारम्भकाल एव घटादिकार्यं दृश्यते नापि स्थासकादिकाले (वृ० प० ४८७)

४३. युवत तर्हि, तिस्त्रयात्र्वसाने, यतम्बैयं ततो न निया-कालेषु युवतं नार्यं किन्तु कियात्र्वमान एवेति (वृ० प० ४८७)

वाo — आह च भाष्यकारः —
जम्सेह कज्जमाण कयित तेणेह विज्जमाणस्स ।
करणिकिरिया पवन्ना तहा य बहुदोसपिहवत्ती ।।
कयिमह न कज्जमाणं तब्मावाकी चिरतणघडोव्य ।
अहवा कयिप कीरइ कीरउ निच्चं न य समत्ती ।।
किरियावेफल्लिप य पुष्वमभूय च दीसए हुंतं ।
दीसइ दीहो य जको किरियाकालो घडाईणं ॥

१. इहास्मिन् लोके येन नरेण कियमाणं कृतिमत्यम्युपगत तेन नरेण विद्यमानस्यैव करणिकियाप्रतिपन्नागीकृता तथा च सति वहृदोपनिष्पत्तिर्भवति ।

२. तथाहि कयिमहित्यादि इह यत् कृत तत् कियमाण न भवति कस्मात् तद्भावाओत्ति तत्सत्त्वाद् वस्तुनो विद्यमानत्वादित्यर्थः । किंवत् ? चिरतनघटवत् । अथवा कृतमिप कियते ततः नित्य कियता न च कियासमाप्तिभवति सर्वेदा कृतस्यैव कियमाणत्वात् ।

३ किरियेत्यादि यदि कियमाणं कृत स्यात्तदा किया-वैफल्यं स्यादिति । तथा पूर्वमभूत च भवद्दृश्यते । तथा यतः घटादीना निष्पत्तौ दीर्घः कियाकालो दृश्यते ।

आरंभ काल नै विषे पिण घटादि कार्य न दीसै शिवादि अद्धा नै विषे--पिंडादि अदस्था ने विषे पिण न दीसै ते भणी किया काल नै कार्य युक्त नही, किन्तु किया ना अस ने विषेहीज कार्य युक्त छै।

४४ ते अणगार जगाली नै तिह्वार, एहवू अध्यवसाय विचार।
यावत उपनो छै मन माय, आगल ते किह्यै छै ताय।।
४५ जे भणी श्रमण भगवत महावीर, ए विघ आखे छै जन तीर।
यावत एम परूपै वाय, इम निश्चै चलमान ते चल्यू कहाय।
४६. उदीरवा माड्यो छै ताम, तिणने उदीर्यू भाखे स्वाम।

जाव निर्जरवा माड्यू सघीक, तसु निर्जर्यू कहै ते भूठो अलीक ।। ४७ इम निश्चे दीसे छै एह, सयन अर्थ सथारो जेह । करिवा लागू ते कर्यू न कहाय,सथरिवा लागू ते सथर्यू नाय ।।

४८ जे भणी सूर्वा अर्थ संयार, करिवा माड्यू ते अणकर्यू घार । सथरवा माड्यू छै तेह, अणसथर्यू कहियै जेह ॥

४६. चलवा लागू छै पिण जेह, अणचालियू किहयै छैतेह। जाव निर्जरिवा माड्यू तास, अणनिर्जर्यू कहीजै जास।।

५०. एम विचारै विचारी जेह, श्रमण निर्ग्रंथ प्रतै तेडावेह। तेडावी इम बोलै वाय, अहो देवानुप्रिया । जे ताय।।

५१ श्रमण भगवत महावीर सुजेम, इम कहै जाव परूपै एम। इहिवध निश्चै करिने जेह, चलवा लगू ते चिलयु कहेह।। ५२ तिमहिज जाव सर्व पहिछाण,

निर्जरिवा माड्यू ते अनिर्जर्यू जाण।

तव जमाली अणगार नु तेह,

इम कहिता जाव परूपतां जेह।।

५३ केइ श्रमण निर्ग्रंथ ते अर्थ प्रतेह,

सद्हे प्रतीते फुन रोचवेह। केड श्रमण निग्रंथ ते अर्थ प्रति ताय,

न सद्दहै नही प्रतीते रुचै नाय।।

### सोरठा

५४ श्रमण निर्ग्रथ जमाली अणगार ताम, आम, सद्दहै नहिं तसु एह मत। एक अर्थ प्रति करिवू न ५५ क्रियमाण विद्यमान, वस्तु नु अविद्यमान पिछान, वस्तु नु करिवू ह्वै॥ पिण ५६. जिम विषेह, पुष्प कदापि हुवै नही। वस्तु हुवै जेह, पिण अछती वस्तु ह्वै नथी।। ५७ जो अछती वस्तू होय, तो खर-श्रुग किम निह हुवै। युक्ती जोय, विशेषावश्यक ग्रथ इम

नारभे च्चिय दीसइ न सिवादद्धाइ दीसइ तदंते। तो नहि किरियाकाले जुत्त कज्जं तदंतिम'॥ (वृ० प० ४५७)

४४. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयास्त्रे अज्झित्थिए जाव (स॰ पा॰) समुप्पिजित्था

४५. जण्णं समणे भगव महाबीरे एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ एव खलु चलमाणे चलिए

४६. उदीरिज्जमाणे उदीरिए जाव (स॰ पा॰) निज्ज-रिज्जमाणे निज्जिणे तण्णं मिच्छा।

४७. इमं च ण पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे सथरिज्जमाणे असंथरिए।

४८. जम्हा ण सेज्जा-सथारए कज्जमाणे अकडे, संथ-रिज्जमाणे असथरिए

४६. तम्हा चलमाणे वि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे —

५०. एव सपेहेइ, सपेहेत्ता समणे निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी---जण्ण देवाणुष्पिया ! (श० १/२२८)

५१. समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ— एव खलु चलमाणे चलिए

५२. त चेव जाव (स॰ पा॰) निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिणो । (श॰ ६/२२८) तए ण तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवमाइक्ख-माणस्स जाव परूवेमाणस्स

५३. अत्थेगतिया समणा निग्गथा एयमट्ठ सद्दृति पत्ति-यति रोयति अत्थेगतिया समणा निग्गथा एयमट्ठ नो सद्दृति नो पत्तियति नो रोयंति ।

५४ 'अत्थेगइया समणा णिग्गथा एयमट्ठं णो सद्दृहंति' ति ये च न श्रद्द्यति तेषा मतिमदं (वृ० ५० ४८७)

५५ नाकृत अभूतमविद्यमानिमत्यर्थं क्रियते अभावात् (वृ० प० ४८७)

५६. खपुष्पवत् (वृ० प० ४८७)

५७ यदि पुनरकृतमि असदपीत्यर्थः क्रियते तदा खर-विपाणमिप क्रियतामसत्त्वाविशेषात् (वृ० प० ४८७)

१. नारभे इत्यादि आरभकाले एव घटादिकायँ न दृश्यते शिवाद्यऽद्धायां पिडाद्यवस्थायामपि कायँ न दृश्यते किन्तु तदते स्थासादिकियावसाने कायँ दृश्यते स्रतः क्रियाकाले कायँ न युक्त किंतु तदते एवेति। ्रवा०—केयक श्रमण निर्ग्य जमाली नां ए अर्थ प्रति न श्रद्धै । तेहनुं मत— जे कडेमाणे कडे किहता करतो थको ते क्रियमाण—विद्यमान वस्तु, तेहनु करिवू ्-िषण अविद्यमान वस्तु नु करिवू न हुवै । जिम आकाश नै विषे फूल न हुवै । छती वस्तु हुवै, अछती न हुवै । जो अछती हुवै तो खरविसाण पिण हुवै । अछतापणा नां अविशेष थकी ।

वली जे की घा नु करिवू ते पक्ष नै विषे नित्यिकियादिक दोप कहा। छै, ते अछता नु करिवू ते पक्ष नै विषे पिण तुल्य वर्ते। तथा निश्चै अत्यत अछतो न करिये असद्भाव थकी, खर विसाण नी परे। अथ अत्यंत अछतो पिण करिये तिवारे नित्य ते अछतो करण प्रसग। वली अत्यत अछता करण कै विषे किया समाप्ति न हुवै। तथा अत्यन्त अछता ना करण कै विषे किया नो विफल पणो हुवै अछतापण। थकीज खरविसाण नी परे।

अथवा अविद्यमान नो करणो अगीकार कीघे छते नित्यिक्तियादिक दोप कप्टतरका हुवै अत्यत अभाव रूपपणा यकी। विद्यमान पक्ष ने विषे तो पर्याय विशेषण अपंण यकी किया व्यपदेश पिण हुवै यथा आकाश कुरु तथा वली नित्य कियादिक दोप न हुवै वली अत्यत अछता खरिषपाणादिक नै विषे ए न्याय न हुवै।

्र जि.वली कहा — पूर्व अछतो हीज ऊपजतो थको दीसै इति प्रत्यक्ष विरोध तेहने विषे कहिये छै — जो पूर्व न थयु छतो हुतो दीसै छै तो पूर्व न थयु छतो किण कारण थकी तुभ ने खरविषाण पिण न दीसै।

ं जे वली कह्यु—दीर्घ कियाकाल दीसे तेहने विषे कहिये छै—प्रति समय उत्पन्न होवा वाली परस्पर किंचिद भिन्न रूपवाली स्थाम कोशादिक प्रारम्भ - समय ने विषय पिण त्यार होवा वाली घणी कार्य कोटी नो पिण दीर्घ कियाकाल दीसे, तदा इहां घट नो स्यू ? जेणे करी किह्ये छै दीसे छै दीर्घ किया काल घटादिक नु इति।

वली जे कहां — नारभे एव दृश्यते इत्यादि, घट ना आरभ नै विषे घट न दीसै, तेहनु उत्तर कहै छैं — अनेरा कार्य ना आरभ नै विषे अनेरो कार्य किम दीसै, पट ना आरभ ने विषे जिम घट न दीसै तिम शिवक अने स्थासकादिक कार्य विशेष घट स्वरूप न हुवै तिण कारण थकी शिवकादिक काल नै विषे किम घट दीसै इति ।

ं - विल स्यू अंत समय ने विपेहीज घट प्रारम्यो, तिण काल ने विपेहीज ए घट दीस्रै, तिवारे काइ दोप ? इम कियमाण किहता करिवा लागो ते कीघू हुवै कियमाण समय निरशपणा थकी। अने जो वर्त्तमान समय किया काल ने विपे पिण अणकीधी वस्तु, तिवारे अतिक्रमे छते किम् करिवू ? अथवा किम आगामी काले ? किया ना उभय काल ने विपे पिण विनष्ट अने अनुत्पन्नपण करी असत- पणा यकी असवध्यमानपणा थकी। ते भणी किया कालहीज कियमाण कहिता किर्म लागो ते छत कहिता कीघू कहिये। आह च—

वा०—अपि च—ये कृतकरणपक्षे नित्यिक्रयादयो दोपा भणितास्ते च अमत्करणपक्षेऽपि तुल्या वर्त्तन्ते, तथाहि— नात्यन्तमसत् कियतेऽमद्भावात् खरिवपाणिमव, अथात्यन्ता-सदिपि कियते तदा नित्य तत्करणप्रमङ्गः, न चात्यन्तामत करणे कियासमाप्तिभवति, तथाऽत्यन्तासत करणे किया वैफल्य च स्यादसत्त्वादेव खरिवपाणवत्।

अय च अविद्यमानस्य करणाभ्युपगमे नित्यिक्रयादयो दोपा कष्टतरका भवन्ति, अत्यन्ताभावरूपत्वात् खरिब-पाण इवेति विद्यमानपक्षे तु पर्यायिवशेषेणापंणात् स्या-दिप क्रियाच्यपदेशो यथाऽऽकाण कुरु, तथा च नित्यिक्रया-दयो दोपा न भवन्ति, न पुनरयं न्यायोऽत्यन्तासित खर-विपाणादावस्तीति

यच्चीत्रत — 'पूर्वंममदेवोत्पद्यमान दृश्यत इति प्रत्यक्ष-विरोध', तत्रोच्यते, यदि पूर्वंमभूतं मद्भवद्दृश्यते तदा पूर्वंमभूतं सद्भवत् कस्मात्त्वया खरविषाणमि न दृश्यते ।

'यच्चोवत—दीर्घ कियाकालो दृश्यते, तत्रोच्यते प्रतिसमयमुत्पन्नाना परस्परेणेपद्विलक्षणाना सुबह्वीना स्यासकोमादीनामारम्भसमयेप्वेव निष्ठानुयायिनीना कार्यकोटीना दीर्घ. कियाकालो यदि दृश्यते तदा किमत्र घट-स्यायात ? येनोच्यते — दृश्यते दीर्घश्च कियाकालो घटा-दीनामिति

यच्चोक्त—'नारम्भ एव दृश्यते' इत्यादि तत्रोच्यते, कार्यान्तरारम्भे कार्यान्तर कथ दृश्यता पटारम्भे घटवत् ? शिवकस्थासकादयश्च कार्यविशेषा घटस्वरूपा न भवन्ति, तत शिवकादिकाले कथ घटो दृश्यतामिति ?

किच—अन्त्यसमय एव घट समारब्ध ? तन्नैव च यद्यसो दृश्यते तदा को दोप ? एव च क्रियमाण एव कृतो भवित क्रियमाणसमयस्य निरशत्वात्, यदि च सप्रतिसमये क्रियाकालेऽप्यकृत वस्तु तदाऽतिकान्ते कथ क्रियता कथ वा एप्यति ? क्रियाया उभयोरिप विनष्टत्वानुत्पन्नत्वेना-सत्त्वादसम्बध्यमानत्वात्, तस्मात् क्रियाकाल एव क्रियमाण कृतिमिति

१. यह वार्तिका टीका के आधार पर की हुई है। प्रथम पेराग्राफ की टीका ऊपर ुके चार सोरठो के सामने आ गई। इसलिए वार्तिका के सामने उसे नहीं रखा गया।

स्थिवरां नों ए पक्ष-अणकीधा प्रतै न करियै किण कारण थकी, अभाव थकी आकाश-पुष्प नी परे । अथवा अकृत ते अविद्यमान प्रते पिण करियै तो खर के श्रृग पिण करियै ।

ननु शब्द निश्चय अर्थं ने विषे । जे नित्य िक्रयादिक दोप कृत करण पक्ष ने विषे तुम्हे कह्या ते असत करण पक्ष ने विषे पिण तुल्य वा कष्टतरका हुवै । तथा तुम्हारे मते पूर्वे न थयु ते थातो दीसै, तिको नही । जो अणथयुं थातो दीसै तो खर-विसाण पिण किम न दीसै ।

समय-समय प्रति ऊपना परस्पर विलक्षण अति वहु स्थासकोसादिक कार्य कोटि नो दीर्घ क्रियाकाल जो दीसे तो इहा कुभ नो किसू कहिवू ?

अन्य कार्य ना प्रारभ नै विषे अन्य कार्य किम दीसै, जिम पट ना आरभ नै विषे घट नी परें। सिवक अने स्थासकादिक कार्य विशेष घट सरूप न हुवै, ते भणी सिवकादि काल नै विषे घट किम दीसै।

अत समय नै विपेहीज घट प्रारभ्यो तिणहिज समय नै विपे ए घट दीसै तिवारै काइ दोप एतले काइ पिण दोष नथी। अनै जो सप्रति— वर्त्तमान काल नै विषे अणकी घो हुनै तो गन—अतीत काल नै विषे किम कर्यु हुनै अनै अनागत काल नै विषे किम करिये इत्यादि वहु विस्तार ते विशेपावश्यक ग्रथ यकी जाणवो।

५८ \*तिहा जे तेह श्रमण निर्भय, जमाली अणगार नो वच सद्दृत । प्रतीते रुचे ते जमाली प्रतेह, अगीकार करी विचरेह ।।

५६ तिहा जे तेह श्रमण निर्म्य, जमाली ना ए अर्थ नै नही सद्हत। नही प्रतीते न रुचै लिगार,

ते जमाली अणगार नां कना थी तिवार ॥

आह च--

थेराण मय नाकयमभावओ कीरए खपुष्कं व । अहव अकयिप कीरइ कीरउ तो खरविसाणिप ।। निच्चिकिरियाइदोसा नणु तुल्ला असइकट्ठतरया वा । पुज्वमभूय च न ते दीसइ कि खरविसाणिप ?

पइसमज्प्पन्नाण परोप्परिवलक्खणाण सुबहूण। दीहो किरियाकालो जइ दीसइ कि च कुभस्स॥ अन्नारभे अन्न किह दीसज? जह घडो पडारभे। सिवगादको न कुंभो किह दीसज सो तदद्वाए?

अते च्चिय आरद्धो जइ दीसइ तिम चेव को दोसो ? अकय च सपइ गए किंहु कीरज किंह व एसिम ? र इत्यादि बहु वक्तव्य तच्च विशेपावश्यकादवगन्तव्य-मिति। (वृ० प०४६७, ४८६)

४०. तत्थ णं जे ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ सद्हति पत्तियति रोयति, ते ण जमालि चेव अणगार जवसपज्जिता ण विहरति ।

५६. तत्थ ण जे ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ नो सद्हति नो पत्तियति नो रोयति, ते ण जमालिस्स अणगारस्स अतियाओ

- स्थिवराणामय पक्ष. नाडकृत िक्रयते कस्मात् अभावात् खपुष्पवत् अथवा कृतमिप िक्रयते तदा खरिवपाणमिप क्रियताम् ।
- २. नच्चेत्यादि ननु इति निश्चये ये नित्यिक्तयादयो दोषाः कृतकरणपक्षे त्वया भणितास्ते सत्करणपक्षेपि तुल्याः कष्टतरका वा भवति । तथा तव मते पूर्वमभूत भवद् दृश्यते तन्न यदि दृश्यते तदा खरविपाणमपि कथं न दृश्यते ।
- ३. पद्समेत्यादि प्रतिसमयोत्पन्नाना परस्परविलक्षणाना सुबह्वीनां स्थासकोशादीना कार्यकोटीनां दीर्घं क्रिया-कालो यदि दृश्यते तदात्र कुभस्य किमायात न किम-पीति ।
- ४. अणारभेत्यादि अन्यारभेऽन्यत् कयं- दृश्यता यथा पटारभे टवत् शिवकादयश्च कार्यविशेषा घटस्वरूपा न ततः तदद्धाए शिवकादिकाले स घट. कथ दृश्यता- मिति ।
- ५. अन्तेच्चियेत्यादि अन्त्यसमये एव घट प्रारब्ध, तिम— तत्रैव ससये यदि दृश्यते घटे तदा को दोप. ? न को पीति । यदि च सप्रति वर्त्तमाकालेऽकृत तदागतेऽतीते काले कथं क्रियता कथ वा एप्यति काले चेति ।

<sup>\*</sup>दशकंघर राजा

- ६०. ते कोट्टग बाग थकी निकलंत, पूर्वानुपूर्वी गमन करंत । ग्रामानुग्राम विचरता सोय, जिहां चंपा नगरी अवलोय ।।
- ६१. जिहा पूर्णभद्र चैत्य सुमीर, जिहां श्रमण भगवत महावीर। तिहां आवै आवी गुणगेह, श्रमण भगवंत महावीर प्रतेह।।
- ६२ जीमणे पासा थी त्रिणवार, प्रदक्षिणा करता सुविचार। वादै स्तुति करत उदार, नमस्कार करै करीने तिवार।।
- ६३. श्रमण भगवंत महावीर प्रतेह, श्रगीकार करी विचरेह। जमाली ने छोड्यो खोटो जाण, प्रभु तणे पगे लागा आण।।
- ६४. तिवार ते जमाली अणगार, कदाचित् अन्य दिवस किणवार। ते रोगातक थकी विप्रमुक्त, हुष्ट थयुंगद रहित प्रयुक्त।।
- ६५ तनु वलवत थयु जिह वार, सावत्थी नगरी थी अवधार। कोट्टग वाग थकी निकलेह, वाग थकी निकली नै तेह।।
- ६६ पूर्वानुपूर्वी गमन करत, ग्रामानुग्राम प्रते विचरत। जिहा चपा नगरी अवधार, जिहा पूर्णभद्र चैत्य उदार।।
- ६७ श्रमण भगवत महावीर छै जेथ, तिहा आवै आवी नै तेथ। श्रमण भगवत महावीर नै जास, निह अति दूर नै निकट विमास ।।
- ६ इम रहि श्रमण भगवत प्रति ताय, महावीर ने वदै इम वाय। जिम देवानुप्रिया ना जाण, वहु शिष्य स्रतेवासी पिछाण।।
- ६६. श्रमण निर्मंथ छन्नस्य थका जेह, गुरुकुलवास थी नीकल्या तेह। तिम छन्नस्थ थको हुं ताय, निश्चे गण थी निकल्यो नाय।।
- ७०. हू उत्पन्न नाण दंसण धार, केवलज्ञान दर्शन छत् सार। जिन अरिहत रु केवली थाय, छते गण थी निकल्यू ताय।।

## यतनी

- ७१ः तब भगवंत गोतम जेह, जमाली अणगार प्रतेह। इम वोलै वचन विचार, अहो जमाली ! निश्चै तूं घार।। ७२. केवली रै दर्शण ज्ञान, गिरिथंभ थूभे करि जान। थोड़ो सो नही आवरै ताय, तथा विशेष आवरियै नाय।।
- ७३ जो तुम्है जमाली घार, उत्पन्न ज्ञान दर्शण घरणहार। जिन केवली अरिहत थाय, केवल छते निकलियु ताय।।
- ७४. तो ए दोय प्रश्न कही न्हाली, शाश्वतो छै लोक जमाली । कै लोक अशाश्वतो जाणी, ए प्रथम प्रश्न पहिछाणी।।
- ७५. शाश्वतो छै जीव जमाली ! कै जीव अशाश्वतो न्हाली। - ए द्वितीय प्रश्न नो जाव, तुम्है उत्तर देवो सताव।।
- ७६. जमाली अणगार तिवार, भगवत गोतम इम कहा सार। संकित काक्षित जेह, कलुपभाव सहित थयु तेह।।

- ६०. कोठुगाओ चेदयाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्खिमत्ता पुट्याणुपुट्यि चरमाणा गामाणुग्गाम दूइज्जमाणा जेणेव चंपा नयरी
- ६१. जेणेव पुज्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीर
- ६२. तिक्युत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वदंति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता
- ६३. समणं भगवं महावीरं उवसपिज्जित्ता णं विहरंति । (श० ६।२२६)
- ६४. तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ ताओ रोगायंकाओ विष्पमुक्के हट्ठे जाए, अरोए
- ६५. विलयसरीरे सावत्यीओ नयरीओ कोट्टगाओ चेइयाओ पिटिनिक्खमइ, पिटिनिक्खिमत्ता
- ६६. पुट्वाणुपुटिंव चरमाणे गामाणुग्गाम दूइङजमाणे जेणेव चपा नयरी, जेणेव पुण्णमहे चेइए,
- ६७. जेणेव समणे भगव महाबीरे तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छिता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते
- ६ द. ठिच्चा समण भगव महावीर एव वयासी—जहा ण देवाणुष्पियाण वहवे अतेवासी
- ६९. समणा निग्गथा छउमत्थावक्कमणेणं अवक्कता, नो खलु अह तहा छउमत्यावक्कमणेणं अवक्कंते 'छउमत्यावक्कमणेण' ति छद्मस्थानां सतामपक्रमण— गुरुकुलान्निगमन छद्मस्थापक्रमण तेन
- ७०. अह ण उप्पन्ननाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवनकमणेण अवनकते।

(श० ६।२३०)

- ७१,७२. तए णं भगव गोयमे जमालि अणगार एव वयासी—नो खलु जमाली । केवलिस्स नाणे वा दसणे वा सेलिस वा 'थभिस वा' थूभिस वा आव-रिज्जइ वा निवारिज्जइ वा 'आवरिज्जइ' ति ईषद्त्रियते 'निवारिज्जइ' ति नितरा वार्यते प्रतिहन्यत इत्यर्थ. (वृ० प० ४८८)
- ७३ जिंद ण तुमं जमाली । उप्पन्ननाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेण अवक्कते
- ७४. तो ण इमाई दो वागरणाई वागरेहि—सासए लोए जमाली । असासए लोए जमाली ?
- ७५. सासए जीवे जमाली । असासए जीवे जमाली ? (श० ६।२३१)
- ७६. तए ण से जमाली अणगारे भगवया गोयमेण एव वृत्ते समाणे सिकए किंखए जाव (स॰ पा॰) कलुस-समावण्णे जाए यावि होत्या।

७७. नहीं समर्थ गोतम प्रतेह, किचत पिण उत्तर देवो जेह।
मौनपणे रहै तिहवार, हिव भाखे श्री जगतार।।
७८. अहो जमाली इम आमत्रेह, श्रमण भगवत महावीर जेह।
जमाली अणगार प्रतेह, इम भाखे प्रभु गुणगेह।।
७६ अहो जमाली महारा जाण, वहु ग्रतेवासी पिछाण।
श्रमण निर्प्रथ छद्मस्थ ताय, तिके समर्थ छै अघिकाय।।
८०. ए प्रश्न ना उत्तर देवा, जिम हू कहू तिम स्वयमेवा।
नहि निश्चै एण प्रकार, भाषा वोलवा ने अववार।।
८१ जिम तू कहै हू सर्वज्ञानी, तिम कही न सके सुजानी।
इम कहि प्रभु उत्तर आखे, साक्षात देखे तिम दाखे।।
वा०—एतावता अम्हे जिम कहू छू प्रश्न ना उत्तर तिम प्रश्नोत्तर कहिवा
ने ते मुनि समर्थ छै। पिण जिम तू छ्यस्थ थको कहै छै हू केवली छू, एहवो
वचन ते श्रमण निर्प्रथ कही सके नही।

एम कही नै भगवान प्रश्ना नो उत्तर आखै-

#### यतनी

- द२. शाश्वतो छै लोक जमाली । जेन कदापि न हुवो न्हाली । अनादिपणा थी जाणी, कदे नहि हुओ तिम नहि ठाणी ।।
- द निह कदापि निहं हुवै जेह, सदैव भाव थी एह। निह कदापि निह लोग, अपर्यवसित भाव थी जोग।।
- दथ. तो स्यू ते भणी लोक ए जोय, हुवो हिवडा छै होस्यै ए सोय। तिण सूत्रिकाल भावीपणेह, ध्रुव अचल मेरु जिम एह।।
- ८५ णितिए कहिता नियताकार, तिको नियतपणा थी विचार। शाश्वतो ते खिण-खिण प्रति जोय, अछता ना अभाव थी होय।।
- द्ध अक्षय ते विनाश रहीत, अक्षयपणा थी सगीत। अव्यय ते प्रदेश अपेक्षाय, अवस्थित द्रव्य आश्रयी ताय।।
- ५७. नित्य ते विहु नी अपेक्षाय, द्रव्य प्रदेश आश्रयी ताय। अथवा कह्या ए पद सात, एकार्थवाची अवदात।।
- दत. अशाश्वतो ए लोक जमाली, तेहनों न्याय कहू सुविशाली। जे अवसीप्पणी थई ने अद्धा, उत्सीप्पणी थाय प्रसिद्धा।।
- दह उत्सिंपिणी थई पश्चात, अवसिंपिणी हुई विख्यात।
  कह्य लोक तणु ए न्याय, हिव जीव नु कहै जिनराय।।
  \* सुण रै जमाली ! प्रभूजी भाखें सुविशाली। (ध्रुपद)
- ह०. जीव शारवतो छै रे जमाली । जे न कदापि न हुआ निहाली । यावत नित्य कहीजै ताय, ए द्रव्य जीव नु अभिप्राय ।।

- ७७ नो सचाएति भगवओ गोयमस्स किंचि वि पमोक्ख-माइक्खित्तए तुसिणीए सचिद्रइ। (श० ६।२३२)
- ७८. जमालीति समणे भगव महावीरे जमालि अणगार एव वयासी-
- ७६ अत्यिणं जमाली । मम बहवे अतेवासी समणा निग्गया छजमत्या, जेण पभू।
- ५०,६१. एय वागरण वागरित्तए, जहा णं अह, नो चेव ण एतप्पगार भासं भासित्तए जहा ण तुम

- सासए लोए जमाली । ज न कयाइ नासि,
   'न कयाइ नासी' त्यादि तत्र न कदाचिन्नासीदना दित्वात् (वृ० प० ४८८)
- प्तः न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ— न कदाचिन्न भवति सर्दैव भावात् न कदाचिन्न भविष्यति अपर्यवसितत्वात् (वृ० प० ४८८)
- द४. भुवि च भवइ य, भवित्सइ य—घुवे कि तिहं ? 'भुवि चे' त्यादि ततरचाय त्रिकानभा-वित्वेनाचलत्वाद् ध्रुवो मेर्वादिवत् ध्रुवत्वादेव (वृ० प० ४८८)
- ५५. नितिए सासए 'नियतः नियताकारो नियतत्वादेव शाश्वतः प्रतिक्षण-मप्यसत्त्वस्याभावात् शाश्वतत्त्वादेव (वृ० प० ४८८)
- न्दः. अक्खए, अन्वए, अनिट्ठिए अक्षय निर्विनाशः, अक्षयत्नादेवान्यय प्रदेशापेक्षया अनस्थितो द्रन्यापेक्षया (वृ० प० ४८८)
- ८७ निच्चे नित्यस्तदुभयापेक्षया, एकार्या वैते शब्दा. (वृ० प० ४८८)
- दद. असासए लोए जमाली । ज ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिणी भवइ,
- ८६. उस्सप्पणी भवित्ता ओसप्पणी भवइ
- १०. सासए जीवे जमाली ! ज न कयाइ नामि जाव (स० पा०) निच्चे ।

- ११. अशाश्वतो जीव छै रे जमाली, नारिक थई तिर्यंच ह्वं न्हाली । तिर्यंच थड मनुष्यपणु पाय, मनुष्य थई देवता थाय।।
- ६२. तिण अवसर जमाली अणगार, श्रमण भगवंत महावीर सार। एम सामान्य थी कहितां सोय, जाव एम परूपता जोय।।
- ६३. एह अर्थ प्रति निह सद्देह, निह प्रतीते निह रोचवेह। एह अर्थ प्रति अणसद्दहतो, अणप्रतीततो अणरोचवंतो।।
- ६४- श्रमण भगवंत महावीर उदार, ज्यांरा समीप थी वीजी वार । स्वयमेव पोतै नीकलै जेह, दूजी वार पोतै निकली तेह ॥
- ६५ \*वहु असत्य अर्थ नो माण, प्रकट करिवै करि पहिछाण। मिथ्यात्व ना उदय थकी अववार,

अभिनिवेश कदाग्रह करिनै तिवार ॥

- ६६. आतम फुन पर उभय प्रतेह, विरुद्धपणु करतू अधिकेह। दुर्लभ वोधिपणु कहिवाय, दग्व वीज जिम करतो ताय।।
- ६७ वहु वर्ष चारित्र पर्याय, पालै पाली नै ते ताय। संलेखणा अर्घ मास नी जोय, आतम दुर्वल करै करी सोय।
- ६८ तीस भक्त अणसण करि ताम, छेदै छेदी अदगुण-घाम। ते स्थानक ने अणआलोयं, अणपडिकमिये जमाली जोय।।
- ६६. काल नै समय करीने काल, लंतक कल्प विषेज निहाल। सागर तेर तणे स्थितिकेह, उपनु सुर किल्विपिकपणेह।।
- १०० ते भगवत गोतम तिहवार, जमाली अणगार नै घार। काल गयो जाणी ने ताय, वीर प्रभु पे आवी चलाय।।
- १०१. श्रमण भगवत महावीर पै आय, वदै स्तुति करत सवाय। नमस्कार करै शीस नमाय, नमण करीने वदै इम वाय।
- १०२. इम निश्चै देवानुप्रिया नों देख, श्रतेवासी कुशिप्य विशेख। जमाली अणगार नीहाल, काल ने समय करीने काल।।
- १०३. किहां गयो ने ऊपनो केथ, गोतम प्रति आमंत्री तेथ। श्रमण भगवत महावीर सुहेम, भगवत गोतम ने भाखे एम।
- १०४. इम निञ्चे करि गोयम ! जगीस, म्हारो अतेवासी कुशीप। जमाली नाम अणगार, ते मुक्त कहिता थका तिवार।।

६१. अमामए जीवे जमानी । जण्णं नेरइए भिवत्ता तिरिक्खजोणिए भवड निरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्मे भवड, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ।

(ঘ০ ৪।২३३)

- ६२ तए ण से जमाली अणगारे ममणस्म भगवओ महा-वीरस्म एवमाइक्यमाणस्म जाव एव परवेमाणस्म
- ६३. एतमद्ठं नो सदृहड नो पत्तियड नो रोएड, एतमद्ठ असदृहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे
- ६४. दोच्च पि समणस्स भगवओ महावीरस्य अतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता
- ६५. वहूर्ति 'असन्मावुन्मावणाहि मिन्छत्ताभिणिवेसेहि य 'असन्मावुन्मावणाहि' ति असद्भावाना—वितयार्था-नामुद्भावना—उत्प्रेक्षणानि असद्भावोद्भावना-स्तामि. 'मिन्छत्ताभिनिवेमेहि य' ति मिथ्यात्वात्-मिथ्यादर्थनोदयाद् येऽभिनिवेशा—आग्रहास्ते तथा तै. (वृ० प० ४८६)
- ६६. अप्पाण च पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणे वुष्पाएमाणे 'वुग्गाहेमाणे' त्ति व्युद्ग्राहयन् विरुद्धग्रहवन्तं कुर्वेन्नि-त्ययं 'वुष्पाएमाणे' त्ति व्युत्पादयन् दुर्विदग्धीकुर्व-न्नित्यतं । (वृ० प० ४८६)
- ६७. वहूई वासाई सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता अद्यमानियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसेड, झूसेता
- ६८ तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोडयपडिक्कते
- हह. कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे तेरसमागरोव-मिटतीएमु देविकिन्विसिएसु देवेसु देविकिन्विसियत्ताए उववन्ते। (श० ह।२३४)
- १००. तए णं भगव गोयमे जमालि अणगार कालगय जाणिता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवा-गच्छइ,
- १०१ उवागच्छिता समणं भगव महावीर वदइ नमसङ, वंदिता नमसिता एवं वयासी—
- १०२ एव खलु देवाणुष्यियाण अतेवासी कुसिस्से जमाली नाम अणगारे से ण भते । जमाली अणगारे काल-मासे काल किच्चा
- १०३. किंह गए ? किंह उचवन्ने ? गोयमादी ! समणे भगव महावीरे भगवं गोयमं एव वयासी—
- १०४. एव खलु गोयमा । मम अतेवामी कुमिस्मे जमाली नामं अणगारे से ण तदा मम एवमाइक्लमाणस्स एव भासमाणस्स एव पण्णवेमाणस्स एव परूवेमाणस्स

<sup>\*</sup>लय: मेरी खिण गई, लाखीणी रे मेरी खिण

१०५. एह अर्थ प्रति नहिं सद्देह, अणसद्दहतो प्रतीततो नाय, १०६ मुभ पासा थी वीजी वार, वहु असत्य अर्थ नो माण, १०७ तिमहिज यावत ऊपनो जेह,

इम सूणनै गोयम गणधार,

नही प्रतीत करै न रुचेह। अणरोचवतो थकोज ताय।। पोतै निकलै निकली तिवार। प्रगट करिवै करी अयाण।। सुर किल्विपिकपणा नै विपेह। प्रक्त करै प्रभु नै तिहवार ॥

## यतनी

१०८ हे भगवत<sup>।</sup> कितै प्रकार, कह्या सुर किल्विपिक विचार । तव जिन भाखे अवदात, सुर किल्विपिक त्रिविव आख्यात ॥ १०६ जे जिम छै तिम हिव कहियै, त्रिण पल्योपम स्थितिका लहियै। वली तीन सागर स्थितिकेरा, तेरै सागर स्थितिका हेरा।।

११० तीन पल्योपम स्थितियुता, सुर किल्विपिक जेह । वसै भगवत जी ? हिव जिन सौधर्म ऊपरै, ज्योतिपि १११ अमर पल्योपम स्थितियुता, वसं इहा

सागरोपम स्थितिका, किल्विपिका देव। जे किहा वसे भगवत जी? प्रभु कहै सुण शिष्य । भेव ।। तृतीय तुर्य ईशाण ऊपरै,

सागरोपम स्थितिका, ड**हा** वसै

किल्विपिका नी स्थितिका, सुर ११४ तेर सागर हे प्रभु जिन भाखै वसै छै ऊपरै, लतक कल्प कल्प ११५ ब्रह्मलोक नी स्थितियुता, इहा वसै ते नेठ।।

## यतनो

कुण कर्म हेतु करि जान। किल्विपिका भगवान, ११६ सुर हुवै किल्विपकाजपणेह, अवतार तस् सुर

प्रत्यनीक आचार्य ना नेह। ११७ जिन भाखै ए प्रत्यक्ष जेह, कुल ना प्रत्यनीक अलीक।। उपाध्याय तणा प्रत्यनीक, ११८ गण ना प्रत्यनीक पिछाण, सघ ना प्रत्यनीक अजाण। अयज ना करणहार विशेख।। आचार्य उपाध्याय ना पेख, वले अकीर्ति ना करणहार। ११६ अवर्णवाद ना वोलणहार, त्रिह पद ना अर्थ हिव हेरा।।

## सोरठा

अयश अवर्ण अकीर्ति केरा,

कहियै छै तेहने । दिशिगामी हीज, यश १२० सह थकोज, अयशकरा कहिये तसु ॥ निखेध तास

१०५ एतमट्ठं नो सद्दह नो पत्तियद नो रोएइ, एतमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे

१०६. दोच्च पि मम अतियाओ आयाए अवनकमइ, अवक्किमत्ता वहूँ हि असन्भावुन्भावणाहि

१०७. त चेव जाव देव (स० पा०) किन्त्रिमयत्ताए उववन्ने । (श० धार३४)

१०८. कतिविहा णं भते । देविकिव्विसिया पण्णता ? गोयमा । तिविहा देविकिन्विसिया पण्णत्ता

१०६. त जहा--तिपलिओवमट्टिइया, तिसागरोवमट्टिइया, तेरससागरोवमद्विद्या। (श० ६।२३६)

११० कर्हि ण भते । तिपलिओवमद्भिद्या देविकिन्विसिया परिवसति ?

१११ गोयमा । उप्पि जोइसियाण, हिट्ठि सोहम्मीमाणेसु कप्पेसु, एत्य ण तिपलिओवमटि्ठइया देविकिव्विसिया परिवसति। (হা০ ৪। ২३৬)

११२. किंह ण मते ! तिसागरोवमिट्टइया देविकिन्विसिया परिवसति ?

११३ गोयमा । उप्प सोहम्भीसाणाण कप्पाण, हिद्दि सणकुमार-माहिदेसु कप्पेमु एत्य ण तिसागरोवम-द्विइया देविकवियमिया परिवसति । (श॰ ६।२३८)

११४. किं ण भते । तेरससागरोवमिंद्रिया देविकिव्य-सिया परिवसति ?

११५ गोयमा । उप्पि वमलोगस्य कपास्म, हिद्धि लतए कप्पे एत्य ण तेरससागरोवमद्विइया देविकव्विसया देवा परिवसति । (श० ६।२३६)

११६. देविकिव्विसिया ण भते । केसु कम्मादाणेमु देव-किन्विसियत्ताए उववत्तारो भवति ? 'केसु कम्मादाणेसु' त्ति केपु कर्महेतुपु सित्स्वत्ययं. (वृ० प० ४८६)

११७ गोयमा । जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्ञा-यपडिणीया, कुलपडिणीया,

११८ गणपटिणीया, सघपडिणीया, आयरिय-उवज्ज्ञायाण अयसकारा

११६ अवण्णकारा अकित्तिकारा

१२० 'अजसकारगे' त्यादी सर्वेदिग्गामिनी प्रमिद्धिर्यशस्त-. त्त्रतिपेघादयशः (वृ० प० ४८६)

१२१. अवर्ण अप्रसिद्धि मात्र, तसु कारक अवर्णकरा। इक दिशगामी विमात्र, अप्रसिद्धि अकीर्ति ह्वै॥ १२२. \*वहु असत्य अर्थ नों माण,

प्रगट करिवे करि पहिछाण । मिथ्यात्व ना उदय थकी अवधार,

अभिनिवेश कदाग्रह करिनै तिवार।।

१२३. आतम फुन पर उभय प्रतेह, विरुद्धपणु करवू अधिकेह । दुर्लभ वोधिपणु कहिवाय, दग्ध वीज जिम करतो ताय।।

१२४. वहु वर्प चारित्र पर्याय, पालै पाली नै ते ताय। ते स्थानक ने अणआलोय, अणपडिकमियै पिण ते जोय।।

१२५ काल ने समय करीने काल, या त्रिहुं माहिलो एक निहाल। ते अन्यतर किल्विप सुर माय, किल्विप सुरपणे उपजै जाय।।

१२६. ते जिम छै तिम कहियै तेह, तीन पल्योपम स्थितिक विपेह। अथवा त्रिण सागर स्थितिकेह, तथा तेर सागर स्थितिक विपेह।।

१२७. सुर किल्विपिक हे भगवान ! ते सुरलोक थकी पहिछान । आयु क्षय भव क्षय करि आम, स्थिति क्षय करिनै ते सुर ताम।

१२८. अतर रहित चवी किहा जाय, किण स्थानक ते उपजै ताय ? जिन कहै जाव चत्तारि पच, नारक तिरि मनु सुर भव सच।।

१२६. संसार भ्रमण करीने जेह, तठा पछै सीभौ वुभेह। जावत अत करे अवलोय, के किल्विपिका एहवा होय।।

१३०. केयक आदि-रहित ते घार, अंत रहित पिण तेह विचार। दीर्घ अद्धा चिहु गति ससार-अटवी माहे भमै निराधार॥

१३१. हे प्रभुजी । जमाली अणगार, अरस आहार नो कारक धार। विरस आहार तणो करणहार, अताहारि पत-आहारि विचार।।

१३२. लुक्ख आहारी तुच्छ आहारी जेह, अरस आहार करिने जीवेह। यावृत तुच्छ आहार करि जाण, जीविवा नृतसु शील पिछाण।।

१३३. उपशांत अंतर्वृत्ति करेह, जीविवा नु तसु शील सुलेह। इमहिज प्रशांत-वृत्ति हुत, णवर वाहिर वृत्ति प्रशत।।

१३४. विवित्तजीवी ते स्त्रियादि रहीत, सेज्या सथार

सेज्या सथारा नों भोक्ता सगीत। जिन कहै हता गोयम ! घार,

अरस-आहारि जमाली अणगार॥

१३५ जाव विवक्तजीवी कहिवाय, विल पूछै गोयम ऋपिराय। जो प्रभुजी ! जमाली अणगार, अरस आहारी ते अवधार॥

१२१. अवर्णेस्त्वप्रसिद्धिमात्रम्, अमोत्ति. पुनरेकदिग्ग-मिन्यप्रसिद्धिरिति (वृ० प० ४८६,४६०)

१२२. बहूहि असन्भावुन्भावणाहि मिच्छत्ताभिनिवेमेहि य

१२३. अप्पाण पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणा वुष्पाएमाणा

१२४. बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणति, पाउणिता तस्स टाणस्स अणालोइयपडिक्कता

१२५ कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देविकिन्त्रिसिएसु देविकिन्त्रिसियत्ताए उववत्तारो भवति

१२६ त जहा—तिपिलओवमिट्ठितिएसु वा, तिसागरोवमिट्टि-तिएसु वा तेरससागरोवमिट्ठितिएसु वा।

(श० ६।२४०)

(बृ० प० ४६०)

१२७ देविकिन्त्रिसिया ण भते । ताओ देवलोगाओ आउ-क्सएण, भवक्खएण, ठितिक्खएण

१२८. अणतर चय चइता किंह गच्छित ? किंह उवव-ज्जित ? गोयमा । जाव चत्तारि पच नेरइय-तिरिक्खजो-णिय-मणुस्स-देवभवगाहणाइ

१२६. ससार अणुपरियद्विता तओ पच्छा सिज्झति बुज्झति जाव (स॰ पा॰) अत करेंति

१३० अत्येगतिया अणादीयं अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससार-कतार अणुपरियट्टति । (११० ६।२४१)

१३१ जमाली ण भते । अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अतग्हारे पताहारे

१३२ लूहाहारे तुच्छाहारे अरमजीवी जाव (स॰पा॰) तुच्छजीवी

१३३ उवसतजीवी पसतजीवी

'उवसतजीवि' ति उपशान्तोऽन्तर्वृत्त्या जीवतीत्येवशील उपशान्तजीवी एव प्रशान्तजीवी नवर प्रशान्तो
विह्यृत्या

(वृ० प० ४६०)

१३४. विवित्तजीवी ? हंता गोयमा ! जमाली ण अणगारे अरसाहारे विरसाहारे 'विवित्तजीवि' त्ति इह विविक्त स्त्र्यादिसंसक्तासना-

दिवर्जनत इति ।

१३५ जान निक्तिजीनी। (श० ६।२४२) जित ण भते ! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसा-हारे

\*लय: मेरी खिण गई, लाखीणी रे मेरी खिण

- १३६ जाव विविक्तजीवी सुविचार, तो किण कारण जमाली अणगार। काल नै समय करीने काल, लतक कल्प विषे ते न्हाल।।
- १३७ सागर तेर तणी स्थितिकेह, सुर किल्विपिका नैज विपेह। देवपणे ते ऊपनो जाय ? जिन कहै गोयम! सुण चित ल्याय।।
- १३८. जमाली अणगार अलीक, आचार्य नु ते प्रत्यनीक। उपाध्याय नुं विल ते जाण, प्रत्यनीक निदक पहिछाण।।
- १३६ आचार्य नै विल उपाध्याय, तेहनु अयशकारक अधिकाय। अवर्णकारक जावत जोय, दग्ध वीज करतो अवलोय।।
- १४०. बहु वर्ष चारित्र पर्याय, पाली अर्द्धमास नी ताय। सलेखणा करिने सवेद, तीस भक्त अणसण कर छेद।।
- १४१ तेह स्थानक ने अणआलोय, अणपिडकिमिये छते फुन जोय। काल ने समय काल कर जन्न, लतक कल्पे जाव उत्पन्न।।
- १४२ हे प्रभुजी । जमाली देव, ते सुरलोक थकी स्वयमेव। आउखो क्षय करिने ताम, जावत उपजस्यै किण ठाम?
- १४३ तव जिन कहै चत्तारि पच, तिरि मनु सुर भव ग्रहण सुसच। ससार भमण करीने तेह, तिवार पछै सीभस्यै जेह।।
- १४४. जावत करस्यै दुख नो अत, सेव भते । सेव भत। तहित्त भगवत । तहित्त भगवत ।आप तणा वच सत्य उदत ।।
- १४५. केइ जमाली ना भव पनर कहत, केई कहै भव वीसज हुत। केयक सप्तवीस कहै ताय, निश्चै जाणै श्री जिनराय।।

- १४६ अथ श्री महावीर भगवत, जे सर्वज्ञपणा थकी। सगलो ए वृत्तत, जमाली नो जाणता।।
- १४७. किम एहने अवधार, प्रव्रज्या दीघी प्रभु । इह विघ प्रश्न प्रकार, पूछ्ये तसु उत्तर हिवे।।
- १४८ अवरयभावी होणहार, महानुभाव पिण मेटवा। समर्थ नही लिगार, वा इहा गुण देखी प्रभु।।
- १४६ अमूढ-लक्ष भगवान, निष्प्रयोजन क्रिया विषे। प्रवर्त्ते नही सुजान, वृत्तिकार इम आखियो।।
- १५० वली जमाली लार, थया पच सय चरणघर।
  फुन जिनेद्र जगतार, भव घटता देखें सही।।
- १५१. इत्यादिक अवधार, बहु गुण जाणीने प्रभु। जमाली ने सार, दीक्षा दीघी दीपती।।
- १५२ \*एह दोयसौ ने चवदमी ढाल, नवसौ तेतीसमो अक निहाल। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसाद, 'जय-जश' सपित सुखअहलाद।।

नवमणते त्रयस्त्रिशोद्देशकार्थः ॥६।३३॥

- १३६. जाव विवित्तजीवी कम्हा णं भते । जमाली अण-गारे कालमासे काल किच्चा लंतए कप्पे
- १३७. तेरससागरोवमिट्ठितिएसु देविकिन्विसिएसु देवेसु देव-किन्विसियत्ताए उववन्ने ?
- १३८ गोयमा ! जमाली ण अणगारे आयरियपडिणीए, जवज्झायपडिणीए
- १३६. आयरियजनज्झायाण अयसकारए अवण्णकारए जाव (सं॰ पा॰) वुष्पाएमाणे
- १४० वहूइ वासाइ सामण्णपियाग पाउणित्ता, अद्धमासि-याए सलेहणाए तीसं भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता
- १४१ तस्स ठाणस्स अणालोइयपिडक्कते कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे जाव (स॰ पा॰) उववन्ते । (श॰ ६।२४३)
- १४२. जमाली ण मते । देवे ताओ देवलोगाओ आउक्ख-एण जाव (स॰ पा॰) किंह उवविज्जिहिति ?
- १४३. गोयमा । चत्तारि पच तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइ ससार अणुपरियट्टिता तओ पच्छा सिज्झिहिति
- १४४ जाव (स॰ पा॰) अत काहिति। (श॰ ६।२४४) सेव भते । सेव भते । ति।

(গ্ন০ ৪।२४५)

- १४६. अय भगवता श्रीमन्महावीरेण सर्वज्ञत्वादमु तद्द्यति-कर जानताऽपि (वृ० प० ४६०)
- १४७. किमिति प्रमाजितोऽसौ ? इति, उच्यते । (वृ० प० ४६०)
- १४८ अवश्यम्भाविभावाना महानुभावैरिप प्रायो लच्चिय-तुमशक्यत्वाद् इत्यमेव वा गुणविशेषदर्शनाद् । (वृ० प० ४६०)
- १४६ अमूढलक्षा हि भगवन्तोऽर्हन्तो न निष्प्रयोजन फ्रियासु प्रवर्त्तन्त इति (वृ० प० ४६०)

<sup>\*</sup>लय : धिण गई रे, लाखीणी रे मेरी खिण्

## दूहा

- १. तेतीसम उद्देश में, आख्या गुरु प्रत्यनीक। नाश तास निज गुण तणु, दाख्यो जिन तहतीक ।।
- २ चउतीसम उद्देश फुन, पुरिस नाश करि पेख। तेह थकी अन्य जीव ना, कहियै नाज विशेख ।।
- ३ तिण काले नै तिण समय, नगर राजगृह नाम। यावत गोतम वीर प्रति, प्रश्न करें छै ताम।।

# \*प्रक्त गोयम करै वीर प्रभु नै ॥ (ध्रुपद)

- ४. पुरुप प्रभुजी ! पुरुप प्रते जे, हणते छते इम भणिये रे लोय। पुरुप प्रते स्यू तेह हणे छै, कै पुरुप थकी अन्य हणिये रे लोय?
- ५ जिन कहै पुरुप प्रते पिण मारे, नोपुरुप प्रते पिण हणियै। किण अर्थे प्रभु । हणे विह ने, हिन जिन उत्तर भणियै।। [वीर प्रभु इम उत्तर देवै]
- ६ इम निश्चे हू एक पुरुष प्रति हुणू, एहवी मन आणी। एक पुरुप प्रति हणतो थको ते, हणै अनेकज प्राणी।।

## सोरठा

- ७. जीव अनेकज ख्यात, जूं कृमि गडोलक प्रमुख। तनु आश्रित घात, तिण अर्थे विहु नै हणै।। अथवा तेहनो रूद्र¹, पडतो बहु जीवा
  - हणे तिको नर क्षुद्र, इम वहु जीवा ने हणै।।
  - शरीर तास, सकोचवै प्रसारवे। वहु जीव विणास, तिण कारण वहु ने हणे।।
- १० अपुरुप प्रभुजी अरव प्रतै जे, हणतो थको इस भणियै।
- अर्रेन प्रते स्यू तेह हणें छै, के अरुव थकी अन्य हणिये ? ,११ जिन कहै अरुव प्रते पिण मारे, नोअरुव प्रते पिण हणिये। किण अर्थे प्रभु । हणे विहू नै ? हिव जिन उत्तर भणियै।।
- १२ इम निश्चै हू एक अश्व प्रति हणू एहवी मन आणी। एक अश्व प्रति हणतो थको ते, हणे अनेकज प्राणी।।
- १३ तिण अर्थे करिने इम भाख्यो, अश्व नोअश्व हणतो। छण्णइ पाठ किहा क्षण घातु, हिंसा अर्थे वर्त्ततो।।
- १४. इम गज सीह ने वाघ हणे ते, जाव चिल्ललग जाणी। अटवी जीव विशेष कह्य ए, पूर्व रीत पिछाणी।।

- १. अनन्तरोद्देशके गुरुप्रत्यनीयकतया स्वगुणव्याघात (वृ० प० ४६०)
- २. चतुस्त्रियत्तमे तु पुरुपव्याघातेन तदन्यजीवव्याघात उच्यते (वृ० प० ४६०)
- ३ तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे जाव एव वयामी-
- ४. पुरिसे णं भते ! पुरिस हणमाणे कि पुरिस हणइ? नोपुरिसे हणइ? 'नोपुरिस हणइ' ति पुरुपन्यतिरिक्त जीवान्तर हन्ति (वृ० प० ४६०)
- ५. गोयमा । पुरिस पि हणइ, नोपुरिमे वि हणइ। (ग० ६।२४६) से केणट्ठेण भते । एव वुच्चइ-पुरिस पि हणइ,

नोपुरिसे वि हणइ ?

- ६ गोयमा <sup>।</sup> तस्स ण एव भवइ—एव रालु अहं एग पुरिस हणामि से ण एग पुरिस हणमाणे 'अणेगे जीवे' हणइ। (হা০ হ। ২४७)
- ७,८. 'अणेगे जीवे हणइ' ति 'अनेकान् जीवान् यूकाश-तपदिकाकृमिगण्डोलकादीम् तदाश्रितान् तच्छरीरा-वष्टव्धास्तद्र्धिरप्लावितादीश्च हन्ति

(वृष् प० ४६०)

- ६. अथवा स्वकायस्याकुञ्चनप्रसरणादिनेति (वृ० प० ४६१)
- १० पुरिसे ण भते । आस हणमाणे कि आस हणइ? नोआसे हणइ?
- ११. गोयमा । आस पि हणइ नोआसे वि हणइ। से केणट्ठेण ?
- १२,१३ अड्डो तहेव। 'छणइ' त्ति क्वचित्पाठस्तत्रापि स एवार्थ , क्षणघातो-हिंसार्थत्वात् (वृ० प० ४६१)
- १४. एव हरिय, सीह वग्घ जाव चिल्ललग । (श० ६।२४८)

<sup>\*</sup>लय: देखो रे भोला चेते ना

१. रुधिर

- १५. पुरुप प्रभू । जे एकज त्रस प्रति, हणतो थको आख्यातो । स्यू एकज त्रस तेह हणे छै, कै तेहथी अनेरा त्रस घातो ?
- १६ जिन कहै इक त्रस पिण हणै छै, तेहथी अनेरा पिण हणियै। किण अर्थे प्रभु । हणै विहू नै, हिव जिन उत्तर भणियै॥
- १७ इम निश्चै हूँ एकज त्रस प्रति, हणू एहवी मन धारै। ते जीव इक जे त्रस हणतो. जीव अनेक सहारै।।
- १८ तिण अर्थे कह्यु इक त्रस हणता, जीव अनेक हणीजे। ए गज प्रमुख नां सर्व अलावा, एक सरीखा कहीजें।।।
- १६ पुरुप प्रभूजी । ऋषि साधु प्रति, हणते छते इम भणियै। स्यु ऋषि मुनि प्रति तेह हणे छै, कै ऋषि थी अनेरा हणियै॥
- २० जिन कहै ऋषि प्रत तेह हणे छै, ऋषि थी अन्य पिण हणियै। किण अर्थे प्रभु हणे विहू ने, हिव जिन उत्तर भणियै।।
- २१ इम निश्चै हू एक साधु प्रति, हणू एहवी मन धारै। एक साधु प्रति हणतो छतो ते, जीव अनत सहारै॥

- २२ ते ऋषि कीघा काल, घातक अनत नु हुवै। हुवै अविरती न्हाल, घातक अनत नु तिको।।
- २३ अथवा ऋषि वहु जीव, प्रतिवोधै ते अनुक्रमे। शिव सुख लहै अतीव, सिद्ध अघातक अनन्त ना।।
- २४ ते ऋषि नो वघ कीघ, प्रतिवोघादि हुवै नही। तिण अर्थेज प्रसीघ, ऋषि हणिवै जिय अनत वघ।।
- २५ \*तिण अर्थे करने इस किहयै, ऋषि प्रति पिण हणे सोइ। साध्र विना अन्य नो पिण घातक, एह निक्खेवो होइ।।
- २६ पुरु प्रभु ! पुरु प्रते हणतो, स्यू पुरुप वैर करि फर्शे । अथवा पुरुप थकी जीव अनेरा, तास वैर आकर्षे?
- २७ श्री जिन भाखे पुरुष हण्या थी, निश्चै थी पहिछाणी।
  पुरुष वध पापे करि फर्जे, ए धुर भगो जाणी।
- २८ अथवा एक पुरुष ने हणतो, डक जीव अन्य हणीजे। एक पुरुष इक नोपुरिस वचतसु, द्वितीय भग इम तीजे।।
- \*लय : देखो रे भोला चेर्त ना
- १. पन्द्रह से अठारह गाया के सामने जो पाठ उद्धृत किया गया है, वह कई आदर्शों मे नही है। अगमुत्ताणि मे उसे पाठान्तर के रूप मे स्वीकृत किया है। यहा पाठान्तर का पाठ उद्धृत किया गया है।

- १५. 'पुरिमें ण भते । अण्णयरं तस पाण हणमाणे कि अण्णयर तस पाणं हणइ, नोअण्णतरे तसे पाणे हणइ?
- १६. गोयमा । अण्णयर पि तस पाणं हणइ, नोअण्णतरे वि तसे पाणे हणड । मे केणट्टेण भते । एव युच्चइ
- १७ गोयमा । तस्स ण एव भवइ एव खलु अहं एग अण्णयर तस पाण हणामि, से ण एग अण्णयरं तमं पाणं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ।
- १८. से तेणट्ठेण गोयमा । त चेव । एए सब्बे वि
  एक्कगमा ।" (अ० सु० भाग २ पृ ४६३ टि ०४)
  'एते सब्बे एक्कगमा' 'एते' हस्त्यादय, 'एकगमा.'
  सदृशाभिलापाः (वृ० प० ४०१)
- १६. पुरिसे ण भते । इमि हणमाणे कि इसि हणइ ? नोइमि हणइ ?
- २०. गोयमा । इसि पि हणइ, नोइसि पि हणइ। (ग० ६।२४६) से केणडुण भते। एव वुच्चइ—इसि पि हणइ नोइसि पि हणइ?
- २१. गोयमा । तस्स ण एवं भवइ—एव खलु अह एग इसि हणामि, से ण एग इसि हणमाणे 'अणते जीवे' हणइ।
- २२. यतस्तद्धातेऽनन्ताना धातो भवति, मृतस्य तस्य विरतेरभावेनानन्तजीवधातकत्वभावात्

(बृ० प० ४६१)

- २३. अथवा ऋषिर्जीवन् वहून् प्राणिन प्रतिबोधयति, ते च प्रतिबुद्धा कमेण मोक्षमासादयन्ति, मुक्ताश्चानन्ता-नामपि ससारिणामधातका भवन्ति (वृ० प० ४६१)
- २४. तद्वधे चैतत्सर्वं न भवत्यतस्तद्वधेऽनन्तजीववधो भव-तीति (वृ० प० ४६१)
- २५ से तेणट्ठेण गोयमा । एव वुच्चइ—इसि पि हणइ, नोइसि पि हणइ। (श० ६।२५०)
- २६ पुरिसे ण भते । पुरिस हणमाणे कि पुरिसवेरेण पुटु ? 'नोपुरिसवेरेण पुट्ठे ?'
- २७ गोयमा ! नियम—ताव पुरिसवेरेण पृष्टे पुरुषस्य हतत्वान्नियमात्पुरुपयद्यपापेन स्पृष्ट इत्येको भङ्ग (यू० प० ४६१)
- २८ अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिमवेरेण य पुट्टे तत्र च यदि प्राण्यन्तरमि हत तदा पुरुपवैरेण नोपुरुपवैरेण चेति द्वितीय । (वृ० प० ४६१)

- े २६ अयता एक पुरुप नै हणतो, वहु जीव अन्य हणीजै। एक पुरुप वहु नोपुरुप वद्य तमु, नृतीय भग इम लीजै।।
- ३०. एम तुरगम यावत इमहिज, चिल्ललग वन जीवो। त्रिण-त्रिण भागा सहु ना करिवा, जिन वचनामृत पीवो।।
- ३१. पुरुष प्रभु । ऋषि प्रतै हणतो, स्यू साघु वैर करि फर्जे । अथवा ऋषि थकी जीव अनेरा, तास वैर करि दर्जे ?
- ३२. श्री जिन भाखे साघु हण्या थी, निश्चे प्रथमज जोइ। इक ऋषि ने ऋषि विन अन्य वहु ने वैर फश्यों होइ।।

३३. ऋषि पक्षे सुविचार, इक ऋषि ऋषि विन अन्य वहु। घार, एकहीज होवे ए तीजो भग ३४ अनत जीव ऋषिपाल, ते मुनि ने हणिया थका। तेह मुनी करि काल, सुर ह्वं घाति अनत नो।। जीव नों जाण, वेरे फर्स्यो इह विधे। ह्व सत सयाण, ते आश्री कह्य वर्मसी॥ ३६. वृत्ति विषे इम वाय, जो जे मुनि मर सिद्ध हुस्यै। ऋषि वचवे करि ताय, ऋषि नो वैरज प्रथम भंग।। निरुपक्रम ३७. अथ फुन चरम गरीर, आयुष्क जे। शिवगामी गुणहीर, नहिं सभवै। तास हनन ३८ घुर भग ते किम होय, तिण सु अचरम-तनु मुनि। जोय, तृतीय भग ए सभवै।। अपेक्षा अवलोय, यद्यपि चरमशरीरिक। थकी सोय, छै आयू जे मुनि तणो।। निरुपक्रमज अर्थ, प्रवत्त्यों तिण कारणै। नसु वघ वध भावेज तदर्थ, धुर भग सभव सत्य इम।। ४१. फुन जे ऋपि नु जोय, सोपक्रम आयुप पुरुप कृत वघ होय, ते ऋषि आश्री सूत्र ए॥ ऋपि नो संहार, मुख्यवृत्ति स्यू पुरुपकृत। अववार, वृत्तिकार इह विघ कह्यु॥ ४३. "नवम जतक चउतीसम देशज, वेसी पनरमी ढालो।

भिक्षु भारीमाल ऋपिराय, प्रसादे, 'जय-जश' मगलमालो ।।

- २६. अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य
  यदि तु वहव. प्राणिनो हतास्तत्र तदा पुरुपवैरेण
  नोपुरुपवैरेण्चेति तृतीयः (वृ० प० ४६१)
- ३०. एव आस जाव चिल्ललग। (श० ६/२५१) एवं सर्वेत्र त्रयम् (वृ० प० ४६१)
- ३१. पुरिसे णं भते । इसि हणमाणे कि इमिवेरेण पुट्ठे ? नोइसिवेरेण पुट्ठे ?
- ३२. गोयमा । नियम इसिवेरेण य नोइसिवेरेहि य पुट्ठे। (श० ६/२५२)
- ३३ ऋषिपक्षे तु ऋषिवैरेण नोऋषिवैरेण्चेत्येवमेक एव (वृ० प० ४६१)
- ३४ ननु यो मृतो मोक्ष यास्यत्यविरतो न भविष्यति तस्यर्पेर्वेधे ऋपिवैरमेव भवत्यतः प्रथमविकल्पसम्भव. (वृ० प० ४६१)
- ३७,३८. अथ चरमशरीरस्य निरुपक्रमायुष्कत्वान्न हनन-सम्भवस्ततोऽचरमणरीरापेक्षया यथोक्तमञ्जकसम्भवः (वृ० प० ४९१)
- ३६. यतो यद्यपि चरमशरीरो निरुपक्रमायुष्क.

(वृ० प० ४६१)

- ४०. तथाऽपि तद्वधाय प्रवृत्तस्य यमुनराजस्येव वैरमस्त्ये-वेति प्रथमभङ्गकसम्भव इति सत्य (वृ० प० ४६१)
- ४१ किन्तु यस्य ऋषे सोपक्रमायुष्कत्वात् पुरुपकृतो वधो भवति तमाश्रित्येद सूत्र प्रवृत्त (वृ० प० ४६१)
- ४२ तस्यैव हननस्य मुख्यवृत्त्या पुरुपकृतस्वादिति (वृ० प० ४६१)

 पूर्वे वध आख्यात, उश्वासादि वियोग ते । तिण सूं हिव अवदात, उस्वासादिक नो कहू ।!

\*प्रभुवच प्यारा जी,

हे देव जिनेन्द्र दयाल विश्व उजारा जी ।। (घ्रुपदं)

२. पृथ्वीकाय प्रभु ! पृथ्वीकाय प्रति, आणपाण ते लेवै। उस्वास ने नि'स्वास लेवै छै ? जिन कहै हता वेवै।।

## सोरठा

- ३ इहा व्याख्या पूज्य कथित, जिण प्रकार कर वणस्सई। अन्य ऊपर अन्य स्थित, तेज खाचलै तेहनो॥
- ४. पृथ्वी प्रमुख एम, अन्योऽन्य सवद्ध थी। पृथ्वी प्रतैज तेम, करैं उस्सासादिक तिको।।
- ५ तिहा इक पृथ्वी काय, स्व सबद्ध अन्य पृथ्वी प्रति। करै उस्सासज ताय, तिण ऊपर दृष्टात ए॥
- ६. पुरुष उदर घनसार, तेह कपूर स्वभाव प्रति। करैं उम्सास तिवार, इम अपकायिक प्रमुख पिण।।
- ७. \*पृथ्वीकाय प्रभु आउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास नैं निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हता वेवै ॥
- द. पृथ्वीकाय प्रभु । तेजकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? जस्वास ने निःस्वास लेवे छै, जिन कहै हता वेवै ॥
- ह. पृथ्वीकाय प्रभु । वाउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि.स्वास लेवै छै, जिन कहै हता वेवै ॥
- १०. पृथ्वीकाय प्रभु ! वनस्पति प्रति, आणपाण ते लेवे ? उस्वास ने निःस्वास लेवे छै ? जिन कहै हता वेवे ॥
- ११, आउकाय प्रभु । पृथ्वीकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि स्वास लेवै छै ? जिन कहै हता वेवै ।।
- १२ आउकाय प्रभु ! आउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि स्वास लेवै छै ? जिन कहै हता वेवै ॥
- १३ आउकाय प्रभु ! तेउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि स्वास लेवै छै ? जिन कहै हता वेवै ॥
- १४ आउकाय प्रभु । वाउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हता वेवै ॥

- १ प्राग् हननमुन्त, हनन चोच्छ्वासादिवियोगोऽत उच्छ्वासादिवक्तव्यतामाह— (वृ० प० ४६१)
- २ पुढिविक्काइए ण भते ! पुढिविक्काय चेव आणमइ वा ? पाणमइ वा ? कससइ वा ? नीससइ वा ? हता गोयमा ! ...... (श० ६/२५३)
- ३ इह पूज्यव्याख्या यथा वनस्पतिरन्यस्योपर्यन्य स्थित-स्तत्तेजोग्रहण करोति । (वृ० प० ४६२)
- ४. एव पृथिवीकायिकादयोऽप्यन्योऽन्यसवद्धत्वात्तत्तद्रूप प्राणापानादि कुर्वन्तीति (वृ० प० ४६२)
- ५. तत्रैकः पृथिवीकायिकोऽन्य स्वसवद्ध पृथिवीकायिकम् अनिति—तद्रूपमुच्छ्वास करोति (वृ० प० ४६२)
- ६. यथोदरस्थितकर्प्यः पुरुषः कर्पूरस्वभावमुच्छ्वास करोति, एवमप्कायादिकानिति (वृ० प० ४६२)
- ७ पुढविक्काइए ण भते । आउक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा ? हता गोयमा । पुढविक्काइए ण आउक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा ।
- प्त-१०. एव तेजनकाइय, वाजनकाइय, एव वणस्सइकाइय (श० १/२४४)
- ११ आउक्काइए ण भते ! पुढिविक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा हता गोयमा ! ....... (श० ६/२५५)
- १२-१५ वाजक्काइए ण भते । वाजक्काइय चेव आणमइ वा ? एव चेव । एव तेज-वाज-वणस्सइकाइय । (श० ६।२५६)

<sup>\*</sup>लय: साचू बोलोजी

१५. आउकाय प्रभु ! वनस्पति प्रति, आणपाण ते लेवे ? उस्वास ने निर्वास लेवे छै <sup>?</sup> जिन कहै हता वेवे ॥ १६ तेलकाय प्रभु ! पृथ्वीकाय प्रति आणपाण ते लेवे ? उस्वास ने नि स्वास लेवे छै ? जिन कही होना वेवे ॥ १७ तेजकाय प्रभु । आजकाय पति, आणपाण ते नेवी? उस्वास ने निं स्वास लेवे छैं? जिन कहै हता वेवें।। १८. तेलकाल प्रभ् । तेलकाय प्रति, आणपाण ते लेवी? चस्त्रास ने नि स्वास लेवे छै ? जिन कहे हता येवे ॥ १६ तेडकाय प्रभु! वाडकाय प्रति, आणपाण ते लेवै? उस्वास नै नि.श्वास लेवें छै ? जिन कहे हता वेवे ॥ २०. तेडकाय प्रभु वनस्पति प्रति, आणपाण ते लेव<sup>ै ?</sup> उस्वास ने नि.स्वास लेवे छै ? जिन कहै हता वेदे ।। २१ वाउकाय प्रभु ! पृथ्वीकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास नै नि स्वास लेवै छै ? जिन कहे हता वेवै ।। २२ वाउकाय प्रभा आउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास नै निःस्वास लेवे छै? जिन कहै हंता वेवै॥ २३. वाउकाय प्रभु ! तेउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि स्वास लेवे है ? जिन कहै हता वेवे।। २४. वाडकाय प्रभु । वाडकाय प्रति, आणपाण ते लेवे ? उस्वास ने नि स्वास नेवे छै ? जिन कही हता वेवे ॥ २५. वाउकाय प्रभु । वनस्पति प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि स्वास लेवे छै ? जिन कहै हता वेवे॥ २६ वनस्पति प्रभु । पृथ्वीकाय प्रति, आणपाण ते लेवे ? उस्वास ने नि स्वास लेवे छै ? जिन कहै हता वेवे।। २७. वनस्पति प्रभु ! आउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास नै नि स्वास लेवें छैं? जिन कहै हता वेवे।। २८. वनस्पति प्रभु । तेउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि.स्वास लेवे छै ? जिन कहे हता वेवे।। २६. वनस्पति प्रभु ! वाउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास नै नि.स्वास लेवै छै<sup>7</sup> जिन कही हता वेवै।। ३०. वनस्पति प्रभु ! वनस्पति नो, आणपाण ते लेवै ?

१६-३०. तेजक्काइए ण भते ! पृष्टविषकाद्य आणम्य वा ? एवं जाय वणस्मइकाइए ण भते ! वणस्मड-काइयं चेव आणम्ह वा ? तहेव । (श० ६।२५७)

## सोरठा

उस्सास ने नि.स्वास लेवे छै? जिन कहै हता वेवे ॥

- ३१ कह्या सूत्र पणवीस, क्रिया सूत्र पिण हिव कहूं। ते पणवीस जगीस, चित्त लगाई साभलो।।
- ३२ \*पृथ्वीकाय प्रभु । पृथ्वीकाय प्रति, भ्यतर ते आणपाण । वाह्य उस्वास-निस्सास लेवता, किती क्रिया तसु जाण?
- ३३ श्री जिन भाखें कदाचि क्रिया त्रिण, कटा चिउ क्रियावत । कदाचित पंच क्रियावंत ह्वे, हिव तमु न्याय कथत ।।

३१. पञ्चिवशति. सूत्राण्येतानीति । क्रियासूत्राण्यपि पञ्च-विशति. । (वृ० प० ४६२)

३२ पुढविक्काइए ण भते ! पुढविक्काइय चेव आणममाणे वा, पाणममाणे वा क्यसमाणे वा नीससमाणे वा कतिकिरिए ?

३३ गोयमा । सिय तिकिरिए, सिय चर्जकिरिए, सिय पचिकिरिए। (श॰ ६/२४८)

<sup>\*</sup>लय: साचू वोलोजी

३०४ भगवती-जोह

- ३४. पृथ्वीकाय जिवार, उस्वास पृथ्वी नो लियै। न करं पीड तिवार, तसु काइयादिक त्रिण क्रिया।।
- ३५ यदा पीड उपजाय, तदा क्रिया तसु च्यार ह्वै। जीव घात जो थाय, पच क्रिया तेहने हुवै॥
- ३६ \*पृथ्वी प्रभु । अपकाय प्रतै जे, आणपाण लेवत । एव चेव इमज यावत ही, वनस्पति प्रति हुत ॥
- ३७ इम अप पिण मही अप तेउ प्रति, वाउ वनस्पति नो जाणी। आणपाणादि ले तो तसु किरिया, त्रिण चउ पच पिछाणी।।
- ३८ तेउकाय इम पृथ्वी अप तेउ प्रति, वाउ वनस्पति नो जोय। आणपाणादि ले तो तसु क्रिया, त्रिण चउ पचज होय।।
- ३६ वाउकाय इम पृथ्वी अप तेउ प्रति, वाउ वनस्पति नु घार । आणपाणादि ले तो तसु किरिया, त्रिण चउ पच विचार ॥
- ४० वनस्पति इम पृथ्वी अप तेज प्रति, वाज वनस्पति नो शरीर। आणपाणादि ले तो तसु किरिया, त्रिण चज पच समीर॥

#### सोरठा

४१ कह्या सूत्र पणवीस, अन्योन्ये उश्वास ना। वली कह्या सुजगीस, पचवीस क्रिया तणा।।

वा० — अथ इहा कह्यो — पृथ्वीकाय पृथ्वीकाय नो उश्वास लेवै यावत वनस्पति वनस्पति नो उश्वास लेवै अने तेहथी तेहनै तीन, च्मार, पाच किया लागै। इहा पाच थावर ना मूकेलगा वायु रूप छै, तेहनो उश्वासादिक लेवै इम सम्भव छै। भगवती शतक २।३ मे कह्यो — चउवीस दडक ना जीव उश्वास निश्वास लेवै द्रव्य थकी तो अनतप्रदेशिक खद्य नो, क्षेत्र थकी असख्यात प्रदेशावगाढ नो, काल थकी अन्यतर्थितिया नो, भाव थकी वर्णमतादिक नो अने तेहथी आगला पाठ नी टीका मे कह्यो — उश्वास ना पुद्गल वायु रूप छै अने वायु पिण ते अचित्त छै।

- ४२ ''तेहथी इहा प्रतिपत्ति, पृथ्वीकाय पृथ्वी उदक।
  तेउ वाउ वनस्पत्ति, उश्वासादिकपणे लियै।।
- ४३ इमज वनस्पति जाव, पृथ्वी अप तेउ वाउ तणो। वनस्पति नणो सुभाव, उश्वासादि लिये सदा।।
- ४४ ए पच थावर ना जाण, मूकेलगा पुद्गल सहु। वायु रूप पिछाण, तेहनो उश्वासादि लहै।।
- ४५ हिव आजका विल थाय, मूकेलगा पुद्गल तणो। उश्वासादि लिराय, तो क्रिया तीन चिहु पच किम।।

- ३४ यदा पृथिनीकायिकादिः पृथिनीकायिकादिरूपमुच्छ्वासं कुर्वन्नपि न तस्य पीडामुत्पादयति स्वभाविकेपात्त-दाऽसौ कायिक्यादित्रिक्तिय स्यात् । (वृ० प० ४६२)
- ३५ यदा तु तस्य पीडामुत्पादयित तदा पारितापिनकी-क्रियाभावाच्चतुष्क्रिय प्राणातिपातसद्भावे तु पञ्च-क्रिय इति । (वृ० प० ४६२)
- ३६. पुढविक्काइए ण भते ! आउक्काइय आणममाणे वा ?

एव चेव । एव जाव वणस्सइकाइय।

- ३७ एव आउनकाएण वि सन्वे भाणियन्वा ।
- २८,३६ एव तेउक्काइएण वि, एव वाउक्काइएण वि जाव— (श० ६/२५६)
- ४० वणस्सइकाइए ण भते । वणस्सइकाइय चेव आणम-माणे वा—पुच्छा ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचिकिरिए। (श० १/२६०)

<sup>\*</sup>लय: साचू वोलो जी १. भगवई १७/१५

- ४६. तेहनो उत्तर एम, शतक भगवती सतरभैं। प्रथम उदेशे तेम, कहियो छै ते सांभलो।।
- ४७. मन वचन रा जोग, निपजावता क्रिया किती? त्रिहुं चिहुं पच सुयोग, निमल चित्त आलोचियै।।
- ४८. मन वचन रा जाण, पुद्गल चउफर्शी कह्या। भगवती वारम' माण, पंचमुद्देशे पाठ ए॥
- ४६. चउफर्शी थी जाण, जीव-घात किम संभवे ? जीव-घात विण ताण, पच क्रिया किम ह्वं तदा।।
- ५०. मन अरु वचन प्रयोग, निपजाव तिण अवसरे । वर्त्ते अग्रुभज जोग, तिणसु पच क्रिया कही ।।
- ४१. तिमहिज श्वासोश्वास, वायु नो लेता थका। अशुभ योग सुविमास, तिणसू तसु क्रिया कही।।" [ज० स०]

वा॰—इहाँ कह्यो पाच थावर ना मूकेलगा वायु रूप छै, ते उश्वासपणें लेता अथवा लिया पछै अधुभ कार्य मे प्रवर्ते । तेहथी क्रिया लागे अने क्रिया लागवा रा अन्य पिण कारण घणा छै ते शास्त्र थी जाणवा ।

- ५२. कह्यो क्रिया अधिकार, हिवै तेहिज क्रिया तणो। कहियै छै विस्तार, चित्त लगाई साभलो॥
- ५३. <sup>१</sup>वाउकाय प्रभु । वृक्ष तणा जे, मूल प्रति हलावतो । अथवा मूल प्रतै पाडतो, तेह किती क्रियावतो ? ५४. श्री जिन भाखै कदाचि क्रिया त्रिण,
  - कदा च्यार पच किरिया। न्याय तास पूर्ववत किह्यै, पवर बुद्धे उच्चरिया॥

## सोरठा

- ५५ नदी भितादिक मांय, तरू-मूल होवै तदा।
  पृथ्वी मे न टिकाय, कंपावै पाड़ै पवन।।
- ५६. पाडतो तरु मूल, तीन क्रिया किम तेहनै। परितापादिक स्थूल, ते वायू ने संभवै॥
- ५७. उत्तर किह्यै जास, सूक गई जड तरु तणी। मूल अचेतन तास, तेह अपेक्षा इम वृत्तौ॥
- ५८. \*एव तरु नो कद चालवतो, इम जाव बीज चालत। त्रिण चड पच क्रिया पूर्ववत, सेव भते । सेव भंत।।
- प्र नवम शतक चउतीसमुदेशक, वे सौ सोलमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, 'जय-जश' हरप विशाल।।

नवमशते चतुस्त्रिशोद्देशकार्थः ॥६।३४॥

लय: साचू बोलो जी १. भगवई १२।११७

५२. क्त्यिधकारादेवेदमाह— (वृ० प० ४६२)

५३ वाउवकाइए ण भते ! रुवयस्स मूलं 'पचालेमाणे वा' पवाटेमाणे वा कतिकिरिए ?

५४ गोयमा । सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचिकिरिए।

५५,५६ इह च वायुना वृक्षमूलस्य प्रचलन प्रपातनं वा तदा सभवति यथा नदीभित्त्यादिपु पृथिव्या अनावृत तत्स्यादिति । अय कय प्रपातेन विकियत्व परितापादे. सम्भवात् ?

(वृ० प० ४६२)

५७. उच्यते, अचेत नमूलापेक्षयेति । (वृ० प० ४६२)

५८ एव कंद एव जाव— वीयं पचालेमाणे वा—पुच्छा ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चडिकिरिए, सिय पचिकिरिए। सेव भते ! सेव भते ! त्ति। (श० ६/२६१-२६३)

२. मन से मत्र पढ़कर, वचन से मत्र का जाप कर हिंसा करे, उससे पाच किया लगती है।

## गीतकछंद

सम मन गगन तल ने प्रचारी पार्श्व तरणी तेज थी।
 अति क्रूर मोह तम दूर कर भरपूर हर्षित हेज थी।
 वर रीति नवमा शतक नी कर जोड रचना मनरली।
 गुरुदेव ने प्रसाद करि मुक्त प्रवर ही आशा फली।

१,२. अस्मन्मनोव्योमतलप्रचारिणाः श्रीपार्श्वसूर्यस्य विसप्पितेजसा । दुर्घृष्यसंमोहतमोऽपसारणाद् विभक्तमेव नवमं शत मया ॥ (वृ० प० ४६२)

दशम शतक

,			
	,		

## दशम शतक

ढाल: २१७

## दूहा

१. व्याख्यात नवम शत, अथ दशम कहिवाय।
पुन. तास संबंध ए, निसुणो चित्त लगाय।।
२ शतक अनतर आखिया, जीवादिक ना अर्थ।
प्रकारातरे करि हिवै, कहियै तेह तदर्थ।।
३. उद्देशक चउतीस तसु, दिशि आश्रित धुर देख।
सवुडा अणगार नो, द्वितीय उद्देशक लेख।।
४ आत्म ऋद्धि करि सुर सुरी, सुर वासतर सोय।
उल्लंधियै इत्यादि जे, तृतीय उद्देशे होय।।
५. श्याम हस्ति महाबीर शिष्य, प्रश्न तुर्यं उद्देश।
पचम चमरादिक तणी, अग्रमहेषि विशेष।।
६ सुधमं सभा तणु छठु, उत्तर दिशि अठवीस।
अतरद्वीप उद्देशका, दशम शते चउतीस।।

७ नगर राजगृह ने विषे, यावत गोतम स्वाम। प्रश्न करै प्रभुजी प्रतै, कर जोडी शिर नाम।।

\*स्वाम थारा वचनामृत सुखकारी । वारी हो नाथ । आप शिवमग ना नेतारी ॥ (ध्रुपद) द पूरव दिशि ए स्यू प्रभु । कहियै ? जिन कहै घर अहलादो । जीव एकेद्रियादिक कहियै, अजीव धर्मास्ति आदो रा ॥

- इमहिज पिंचम विशि पिण किह्यै, दक्षिण उत्तर इम लिह्यै। एव ऊर्द्ध विशि एव अधो विशि, जीव अजीव ने किह्यै रा।।
- १० केतली भगवत । दिशा परूपी ? जिन कहै दश दिशि भाखी । पूर्व दिशि पूर्व दक्षिण विच, अग्निकूण मे दाखी रा ।। (हो प्रभुजी । धिन-धिन आपरो ज्ञान । सशयितिमिर हरण वर केवल जाणक ऊग्यो भान ।।)

- १. न्याख्यातं नवम शतम् अथ दशम न्याख्यायते, अस्य चायमभिसम्बन्धः (वृ० प० ४६२)
- २. अनन्तरशते जीवादयोऽर्था प्रतिपादिता इहापि त एव प्रकारान्तरेण प्रतिपाद्यन्ते (वृ० प० ४६२) ३-६. १ दिस २ सवुडअणगारे

३ आइड्ढी ४ सामहित्य ५ देवि ६ सभा । ७ उत्तरअतरदीवा दसमिम्म सयम्मि चउत्तीसा ॥ (श० १० संगहणी-गाहा)

'विसे' त्यादि, 'विस' ति दिशमाश्रित्य प्रथम उद्देशक । 'सवुडअणगारे' ति सवृतानगारविषयो द्वितीय । 'आइड्ढि' ति आत्मद्ध्या देवो देवी वा वासान्तराणि व्यतिकामेदित्याद्यर्थाभिद्यायकस्तृतीय । 'सामहित्य' ति श्यामहस्त्यभिद्यानश्रीमन्महावीरशिष्यप्रश्नप्रति-बद्धश्चतुर्थं । 'देवि' ति चमराद्यग्रमहिपीप्ररूपणार्थं पञ्चम. । 'सभ' ति सुद्यमंसभाप्रतिपादनार्थं पष्ठ । 'उत्तर अतरदीवि' ति उत्तरस्या दिशि येऽन्तरद्वीपा स्तस्प्रतिपादनार्था अष्टाविश्वति हिंशका, एव चादितो दशमे शते चतुस्त्रिशदुद्देशका भवन्तीति ।

(वृ० प० ४१२)

७. रायगिहे जाव एव वयासी--

- किमियं भते । 'पाईणा ति' पबुच्चइ ? गोयमा ! जीवा चेव अजीवा चेव । (श० १०।१) तत्र जीवा—एकेन्द्रियादय. अजीवास्तु— धर्मास्तिकाया-दिदेशादय. । (वृ० प० ४६३)
- ह. किमिय भते । पडीणा ति पवुच्चइ ? गोयमा । एव चेव । एव दाहिणा, एव उदीणा, एव उड्ढा एव अहो वि । (भ० १०१२)
- १०. कित ण भते । दिसाओ पण्णत्ताओ ?
  गोयमा । दस दिसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—
  पुरित्यमा, पुरित्यमदाहिणा

**\*लय : भिरमिर-झिरमिर मेहा वरसे, आगण होय गयो आलो ।** 

- ११. दक्षिण दिशि दक्षिण पश्चिम विच, नैर्ऋत कूण निहारी। पश्चिम दिशि पश्चिम उत्तर विच, वायव्य कूण विचारी रा॥
- १२. उत्तर दिशि उत्तर पूरव विच, कहिये कूण ईशान। ऊर्द ऊची दिशि अधो नीची दिशि, ए दश दिशि पहिछानं रा॥
- १३ ए दश दिशि ना नाम किता प्रभु । जिन भाखे दश नाम ॥ इद्र देवता जेहने अछै ते, इंद्रा पूर्व छै ताम रा॥
- १४. अग्नि देवता जेहनें अर्छ ते, आग्नेयी ए कूण। यम देवता जेहने अर्छ ते, यमा दक्षिण दिशि ऊण रा॥
- १४. निर्ऋति देवता जेहनैं अछै ते, नेर्ऋत कूण कहाई। वरुण देवता जेहने अछै ते, वारुणी पश्चिम थाई रा॥
- १६. वायु देवता जेहने अछै ते, वायव्य कूण विशेखी। सोम्य देवता जेहने अछै ते, सोम्या उत्तर सपेखी रा॥
- १७. ईशान देवता जेहने अछै ते, कहियै कूण ऐयानी। विमलपणे करि विमल ऊर्द्ध दिशि, तमा अघो दिशि जानी रा॥

- १८. सकट ओवि आकार, पूर्वादिक चिहुं दिशि हुवै। धूर विहं प्रदेश घार, क्रम वृद्धि असख अनन्त लग।।
- १६ विदिशि चिऊ सुविचार, आखी एक प्रदेश नी।
  मुक्ताविल आकार, तेहनी वृद्धि हुवै नही।।
- २०. ऊर्द्ध अघो दिशि दोय, रुचक प्रदेशाकार है। समय वचन करि जोय, च्यार-च्यार प्रदेश नी।।
- २१. \*इदा पूर्व दिशि स्यू प्रभुजी ! जीवां तणा खघ कहियै। कै जीव तणां जे देश कहीजै, कै, जीव-प्रदेशा लहियै ?
- २२ अथवा अजीव कै देश अजीव ना, अजीव-प्रदेश कहेसा। जिन कहै जीवा पिण छै तिमहिज, जाव अजीव-प्रदेशा॥
- २३. जे जीवा ते निश्चै एगिंदिया, जाव पचेंद्रिया जाणी। अणिंदिया ते केवलज्ञानी, पूरव दिशि पहिछाणी।।
- २४. जीव तणा जे देश हुवै ते, नियमा एगेदिय-देसा। जाव अणिदिया केवलज्ञानी, तसु वहु देश कहेसा।। २५. जे जीव-प्रदेशा ते नियमा एगेदिय तणा प्रदेश कहेसा। वेइदिया ना प्रदेश घणा छै, जाव अणिदिया नां प्रदेश।।

- ११. दाहिणा दाहिणपच्चत्यिमा पच्चत्यिमा पच्चत्यिमुत्तरा
- १२. उत्तरा उत्तरपुरित्यमा उट्हा वही । (१० १०।३)
- १३. एयामि ण भते ! दमण्ह दिमाण किन नामयेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा ! दस नामयेज्जा पण्णत्ता, त जहा—देवा 'इदे' त्यादि, इन्द्रो देवता यस्या. सैन्द्री (वृ० प० ४६३)
- १४. अगोयी जम्मा य 'अग्निर्देवता यस्याः साऽऽग्नेयी, एव यमो देवना याम्या (वृ० प० ४६३)
- १५. नेरई वारणी य निऋंतिदेवता नैऋंती वरणो देवता वारणी (वृ० प० ४६३)
- १६. वायव्या सोमा वायुर्देवता वायव्या मोमदेवता सौम्या (वृ० प० ४६३)
- १७. ईसाणी य, विमला य तमा य वोद्धव्वा ।
  (श० १०।४)
  ईणानदेवता ऐशानी विमलतया विमला .......विमला
  सूद्ध्वा तमा पुनरघोदिगिति । (बृ० प० ४६३)
  १८. इह च दिश. शकटोद्धिसस्थिता: ((व० प० ४६३)
- १६. विदिशस्तु मुक्तावल्याकारा. (वृ० प० ४६३)
- २०. कर्घ्वाधोदिशो च रुचकाकारे, (वृ० प० ४६३, ४६४)
- २१. इदा णं भते ! दिसा कि जीवा, जीवदेमा, जीवपदेमा
- २२. अजीवा अजीवदेसा अजीवपदेसा ?, गोयमा ! जीवा वि त चेव जाव (स० पा०) अजीवपदेसा वि ।
- २३. जे जीवा ते नियमा एगिदिया वेइदिया जाव (स॰ पा॰) पिचिदिया अणिदिया । तत्र ये जीवास्त एकेन्द्रियादयोऽनिन्द्रियाश्च केवितन (वृ॰ प॰ ४६४)
- २४ जे जीवदेसा ते नियमा एगिदियदेसा जाव अणिदिय-देसा।
- २५. जे जीवपदेसा ते नियमा एगिदियपदेसा वेइदियपदेसा जाव अगिदियपदेसा ।

- २६ जे अजीवा छै पूरव दिशि, द्विविध तेह कहीवा। रूपी अजीवा कह्या पूर्व दिशि, वलि अरूपी अजीवा।। २७ जे रूपी अजीवा ते च्यार प्रकारे, खघ, खघ ना देशा। खध तणा प्रदेश कह्या विल, परमाणु-पुद्गल कहेसा।। २८. अजीव अरूपी ते सप्त प्रकारे, निंह धर्मास्तीकाय। पूर्व दिशि मे खघ नहिं तस्, सह धर्मास्ती नाय।।
- २६. धर्मास्ती नो देश कहीजै, तास न्याय इम जाणी। एक देश भागरूप पूर्व दिशि, धर्मास्ती पहिछाणी।।
- ३० धर्मास्तिकाय तणाज प्रदेशा, तिका पूर्व दिशि होय। प्रदेश प्रमाणै, पूरव दिशि अवलोय।।
- ३१ अधर्मास्तिकाय नही खघ सपूरण छै, अधर्मास्ति तणो देश वलि, प्रदेश बहु तसु पाय।।
- ३२. आगासित्यकाय नहीं खघ आश्री, आगासित्य नो देश। आगासित्थ प्रदेश वहू छै, अद्धा समय सुविशेष।।
- ३३ ते इम सप्त प्रकार अरूपी, अजीव रूप ए इदा। पूरव दिशि ए प्रगटपणै छै, सुण गोयम । सुखकदा ॥
- ३४ अग्नेयी कूण दिशा स्यू प्रभुजी । जीवा जीव ना देसा। जीव तणा प्रदेश पूर्ववत, प्रश्न गोयम सुविशेषा।।
- ३५ जिन कहै नोजीवा खघ आश्री, विदिशि प्रदेशिक एक। एक प्रदेश विपेज जीव नी, अवगाहना नहि लेख।।
- ३६- जीव तणी अवगाहना आखी, असख्यात प्रदेश। ते माटे अग्नेयी कूण में, जीव नथी वच
- ३७ जीव तणा तिहा देश अछै वलि, जीव तणाज प्रदेशा। अजीवा अजीव ना देश अछै वलि, अजीव नाज पएसा।।
- ३८ जेह जीव ना देश कह्या ते, निश्चै करि अवलोई। वहु एकेद्री ना देश घणा त्या, वेइद्री आदि न होई।।

- ३६ एकेद्रिया अनंत, सकल लोक व्यापकपणै। निश्चै देश एकेदिया। अग्नेयी कूणे हुत,
- ख्यात, द्विकयोगिक त्रिण भग हिव। ४० इकयोगिक अवदात, श्रोता चित देई सुणो।। आगल तसु
- ४१. अथवा एकेद्रिय ना देश वहुला, एक वेइद्री नो अग। एक देश पावै तिण कूणे, द्विकयोगिक धुर भग।।

- २६. जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-रूविअजीवा य अरूविअजीवा य।
- २७ जे रूविअजीवा ते चउवित्रहा पण्णत्ता, त जहा-खघा, खबदेसा, खधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।
- २८. जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, त जहा-नोधम्मत्यिकाए अयमर्थं - धर्मास्तिकाय समस्त एवोच्यते, स च प्राचीदिग् न भवति तदेकदेशभूतत्वात्तस्या (वृ० प० ४६४)
- २६. धम्मित्यकायस्स देसे धर्मास्तिकायस्य देश, सा तदेकदेशभागरूपेति (वृ० प० ४६४)
- ३०. धम्मित्यकायस्स पदेसा तथा तस्यैव प्रदेशा सा भवति असख्येयप्रदेशात्मकत्वा-(वृ० प० ४६४)
- ३१. नोअधम्मित्यकाए अधम्मित्यकायस्स देसे अधम्मित्य-कायस्स पदेसा
- ३२. नोआगासित्यकाए आगामित्यकायस्स देसे आगास-त्यिकायस्स पदेसा अद्धासमए। (श० १०१५)
- ३३. तदेव सप्तप्रकारारूप्यजीवरूपा ऐन्द्री दिगिति। (वृ० प० ४६४)
- ३४ अगोयी ण भते । दिसा कि जीवा, जीवदेसा, जीव-पदेसा--पुच्छा ।
- ३५ गोयमा । नोजीवा विदिशामेकप्रदेशिकत्वादेकप्रदेशे च जीवानामवगाहा-(वृ० प० ४६४) ३६ असल्यातप्रदेशावगाहित्वात्तेषा

(वृ० प० ४६४)

- ३७. जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि अजीवदेसा वि अजीवपदेसा वि ।
- ३८. जे जीवदेसा ते नियमा एगिदियदेसा
- ३६ एकेन्द्रियाणा सकललोकव्यापकत्वादाग्नेय्या नियमादे-केन्द्रियदेशा. सन्तीति (वृ० प० ४६४)
- ४१,४२ अहवा एगिदियदेसा य वेइदियस्स य देसे 'अहवे' त्यादि, एकेन्द्रियाणा मकललोकव्यापकत्वादेव द्वीन्द्रियाणा चाल्पत्वेन क्वचिदेकस्यापि तस्य समभवा-

<sup>\*</sup>लय: झिरमिर-झिरमिर मेहा वरसे

४२. एकेद्री बहु देश, वेइंदिय अल्पपणें करी। किहा लहे सुविशेष, एक वेइंदिय देश इक ॥

४३. \*अथवा एकेंद्रिय नां देश वहुला, इक वेइद्रि नां जाण। देश वहु पार्वे तिण कृणे, द्वितिय भग इम माण।।

## सोरठा

४४. यदा वेइंदिय एक, दोय आदि देश करी। फर्को विदिशि विशेख, द्वितिय भग होवे तदा॥

४५. \*अथवा एकेदिय ना देश यहुला, वहु वेडंद्रिय नां जाण। देश वहु पार्व तिण कूणे, तृतिय भग इम माण।।

## सोरठा

४६. वहु वेइदिय घार, दोय आदि देशे करी। फर्शे विदिशि तिवार, तृतियो भंग हुवै तदा।। ४७. देश तणा सुविशेष, द्विकयोगिक भंग एह में। एगेदिया वहु देश, कहिवा त्रिहु भागा मके।।

४८. \*अयवा एकेद्री तेइद्री संघाते, इमहिज त्रिण भंग कहिया। जाव एकेंद्री अणिदिया साथे, तीन भागा इम लहिया॥

४६. जे जीव नां प्रदेश कह्या ते, निरचे करिनें त्याही। वहु एकेद्री नां प्रदेश वहु छै, वेंदियादिक ना नाही॥

## सोरठा

५०. इकयोगिक ए स्यात, द्विकयोगिक भंग वे हिवै। प्रथम भंग निह पात, न्याय सहित निसुणो सह ॥ ५१. \*अथवा एकेद्री ना प्रदेश वहुला, इक वेइंद्री नों ताय। एक प्रदेश ए पहिलो भागो, अग्नेयी कूण न पाय॥

## सोरठा

५२. तेद्री जाव अणिद, प्रदेश तणी अपेक्षया। वहु वचनात कथिद, इक वचनात हुवै नही।।

५३. लोक व्यापक अवस्थान, अणिद्रिय विण जीव ना।
एक प्रदेशे जान, असंस्थात प्रदेश ह्वं॥
५४. अणिद्रिय सुविशेष, सर्व लोक व्यापक यदा।
इक आकाश प्रदेश, एक ईज प्रदेश तसु॥
५५. तो पिण अणिदिय जोय, तमु प्रदेश पद ने विषे।
वहु वच निश्चे होय, अग्नि आदि चिउ विदिश में॥

मुच्यते एकेन्द्रियाणां देशादन द्वीन्द्रियन्य देशमंति हिस्त्योगे प्रथमः (वृ० ५० ४६४)

४३. अह्वा एगिदियरेगा य वेद्रवियम्म य देसा अध्ययेकेन्द्रियपद तथैय द्वीन्द्रियपदे स्वेषयचन देशादे पुनर्यहुवननमिति द्वितीयः (यू॰ प॰ ४६४)

४४. अय च यदा द्वीन्द्रियो द्वपादिनिवर्शेन्नां गृगति तदा स्यादिति (यु० प० ४६४)

४५. अहमा एगिदिगरेमा य वेरदिवाण य हेगा। अयवैगेन्द्रियपर्व तथैन द्वीन्द्रियपद देगपद च बहु-वचनान्यमिति तृतीय. (यू० प० ४६४)

४८. अत्वा एगिदियदेमा य तेइदियस्य य देसे । एव चेन तियभगो भागियक्यो । एव जाव अगिदियाणं तिय-भगो ।

४६. जे जीवपदेशा ते नियमा एगिदिवपदेशा।

५२. एव 'त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियपञ्चेन्द्रियानिन्द्रियै. नह प्रत्येक भाष्ट्रक्षययं दृश्यम् एव प्रदेशपक्षोऽपि बाच्यो, नवरिमह द्वीन्द्रियादिषु प्रदेशपदं बहुवचनान्तमेव । (व० प० ४९४)

५३. यतो लोकन्यापकावस्यानिन्द्रियवर्जजीवाना यत्रैक प्रदेशस्तत्रासस्यातास्ते भवन्ति (वृ० प० ४६४)

५४. लोकन्यापकावस्यानिन्द्रियस्य पुनर्येषप्येकन क्षेत्रप्रदेशे एक एव प्रदेश. (पृ० प० ४६४)

५५,५६. तथाऽपि तत्प्रदेशपदे बहुवचनमेवाग्नेय्या तत्प्रदेशा-नामसरुयातानामवगाढत्वाद् (वृ० प० ४९४)

\*लय: झिरमिर-झिरमिर मेहा वरसे

विख्यात, असंख्यात प्रदेश ५६. विदिश तणा प्रदेश वहु वच ते भणी।। अणिदिय थात, तिहा ५७ तिण सू विदिशे जोय, इक वेइदिय जीव एक प्रदेश न होय, प्रथम वरजियो ॥ भग इम वेद्री अणिदिय। जाव प्रद्र. वीजो तीजो भग, पावै ते आश्री कह जूजुआ ॥ चग, प्रदेश ५६. \*अथवा एकेद्री ना प्रदेश वहुला, एक वेइदिय तणां जे। प्रदेश वहु पावै तिण कूणे, द्वितीय भग इम छाजे।।

## सोरठा

६०. यदा वेइदिय एक, असख्यात प्रदेश करि।
फर्के विदिश विशेख, द्वितियो भग हुवै तदा।।
६१. \*अथवा एकेद्रिय प्रदेश वहुला, वहुवेइद्रिय तणा जे।
प्रदेश वहु पावै तिण कूणे, नृतीय भग इम साजे।।

## सोरठा

- ६२. वहु वेइदिय जिवार, असंख्यात प्रदेश करि।
  फर्जे विदिशि तिवार, तृतीयो भग हुवै तदा।।
  ६३. प्रदेश ना सुविशेष, द्विकयोगिक भग एह मे।
  एगेदि वहु प्रदेश, ए पिण कहिवा भग विहुं।।
- ६४. \*प्रदेश आश्री प्रथम भग विण, दोय भग पहिछाणी। जाव अणिदिया ने इम कहिवो, जीव विस्तार ए जाणी।।
- ६५. अग्नेयी कूण में जेह अजीवा, तेहना दोय प्रकार। रूपी अजीव ते वर्ण सहित छै, अरूपी अजीव विचार।।
- ६६ जे रूपी अजीव ते च्यार प्रकारे, खध खघ नो देश। खघ तणो प्रदेश कह्यो वली, परमाणु-पोग्गल विशेष।।
- ६७. जेह अरूपी अजीव कह्या ते, सात प्रकारे ज्याही। धर्मास्तिकाय नहीं तिण कूणे, खंघ सपूरण नांही।।
- ६८ देश धर्मास्तिकाय तणो छै, विल वहु तास प्रदेशा। अधर्मास्तिकाय तणा इम, देश प्रदेश विशेषा।।
- ६६ इमज आकास्तिकाय तणा वे, देश प्रदेश कहाया। अद्धा समय ए भेद सातमो, अरूपी अजीव ना पाया।।
- ७०. वली विशेष थकीज कहै छै, विदिश विपे निह जीवा। जीव तणो देश एह भग ह्वै, सर्व विदिश मे कहीवा।।
- ७१ जम्मा दक्षिण दिशि स्यूं प्रभु । जीवा, जिम पूर्व दिशि भाखी। तिमहिज सर्व दक्षिण दिशि कहिवी, श्री जिन वच ए साखी।।
- ७२ नैऋतकूण जे अग्निकूण तिम, पश्चिम दिशि पहिछाणी । पूर्व दिशि जिम समस्त कहिनू, नायन्य अग्नि जिम जाणी ॥
- ७३ उत्तर दिशि जिम पूर्व दिशि कही, अग्नेयी जेम ईशाणी। ऊर्द्ध दिशा जीवा अग्निकूण जिम, अजीवा पूर्व जिम जाणी।।
- •लय : झिरमिर-शिरमिर मेहा वरसे

- ५७,५८. अतः सर्वेषु द्विकयोगेष्वाद्यविरहित भगकद्वयमेव भवतीत्येतदेवाह— (वृ० प० ४९४)
- ५६. अहवा एगिदियपदेसा य वेइदियस्स पदेसा

६१. अहवा एगिदियपदेसा य वेइदियाण य पदेसा

- ६४. एव आइल्लविरहिओ जाव अणिदियाण ।
- ६४. जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—रूविअजीवा य अरूविअजीवा य ।
- ६६. जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा— खघा जाव परमाणुपोग्गला ।
- ६७. जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, त जहा— नोधम्मत्थिकाए
- ६८,६६ धम्मित्यकायस्स देसे, धम्मित्यकायस्स पदेसा, एव अधम्मित्यकायस्स वि जाव आगासित्यकायस्स पदेमा, अद्धासमए। (श० १०।६)
- ७१. जम्मा ण भते । दिसा कि जीवा ? जहा इदा 'तहेच निरचसेस'
- ७२. नेरती य जहा अगोयी । वारुणी जहा इदा । वायव्वा जहा अगोयी
- ७३. सोमा जहा इन्दा । ईसाणी जहा अग्गेयी । विमलाए जीवा जहा अग्गेयीए, अजीवा जहा इदाए

- ७४. ऊर्दं च्यार प्रदेग, खघ आश्री नहिं जीव त्यां । अग्नी जिम कही।। कहेस, तिण सू प्रदेश भेद डग्यार, पावै दिशा विषे। ७५ अजीव ऊर्द मही ॥ अरूपी ना रूपी तणाज च्यार, सप्त
- ७६ \*ऊर्द्ध दिशा विमला जिम भाग्वी, तिमज तमा पिण कहियै। णवर अरूपी ना भेद तिहा छह, अद्धा समय नहिं लहियै।।

## सोरठा

- ७७. ऊर्द्ध दिशे सिद्ध वास, तिण सू अणिदिया तणा । विमास, सिद्ध स्थान तमा नथी।। ना देश, वील प्रदेश तसु किम हुवै। ७८. अणिदिया कहेस, चित्त लगाई साभलो ॥ उत्तर तास फर्शत, केवल समय। ७६. सर्वे लोक समुद्घात हुत, तेह प्रतै जे आश्रयी ॥ तिहा देग देश, तथा हुवै वहु ८०. हवे तास इक युक्तहीज तिण मू तिहां।। वह पएस, रवि-सचरण प्रकाश कृत। **८१. विल समय व्यवहार,** नही रिव चार, अदा समय निह ते भणी।।
- दर तो विमला दिशि जोय, मदर मध्य हुवै तिहा। रवि प्रकाश किम होय, कथ समय व्यवहार त्यां।। तसु इम जाण, मेरू पवत नो तिहां। **म३** उत्तर पिछाण, फटिक काड छै तेह विपे। अवयवभूत चंदादि प्रकाश, किरण काति द्वारे करी । रवि तास, प्रकाश कर्द्व दिशे सचरता **८**५. विमला दिशि इण न्याय, समय तणो व्यवहार है। तमा विषे नहिं पाय, वृत्ति विषे इम आखियो॥ जीवादी पूर्वे ८६. दिशि तेह परूपिया। रूप, चूप, शरीर नो अघिकार हिव ॥ जीव शरीरी
- द७. \*िकता प्रभुजी ! शरीर परूप्या ? जिन कहै पच गरीर। ओदारिक ने जाव कार्मण, जूजुआ भेद समीर॥
- दद औदारिक प्रभु । कितिविध भाख्यो ? इम ओगाहण सठाण ।
  पन्नवण पद इकवीसमें आख्यो, भणवो सर्व पिछाण ।।
  चा०—वृत्तिकार रै कथनानुमार एक सग्रहगाथा इहा लाभ छै । तेहनों अर्थ—कित केतला शरीर ? एहवो किहवो ओदारिकादि पंच । सठाण— ओदारिक ना सस्थान ते आकार किहवा । ते जिम अनेक प्रकार ने सस्थान औदारिक । पमाणित तेहनोज प्रमाण किहवो, जिम औदारिक शरीर जधन्य थकी अगुल नो असबेय भाग मात्र, उत्कृष्ट थी साधिक योजन सहस्र मान । पोग्गल-

७६. एव तमाए वि, नवरं—अस्वी छिव्वहा, अद्वासमयो न भण्णति । (श० १०।७) 'एव तमावि' ति विमलावत्तमाऽपि वाच्येत्ययं: (वृ० प० ४६४)

७७,७८. अय विमलायामिनिन्द्रयमम्भवात्तद्देशादयो युक्ता-स्तमायां तु तस्यामम्भवात्कय त ? इति, उच्यते (वृ० प० ४६४)

७६,८०. दण्डाद्यवस्यं तमाश्रित्य तस्य देशो देशाः प्रदेशाश्च विवक्षाया तत्रापि युक्ता एवेति । (वृ० प० ४६४)

५१. 'अद्धासमयो न भन्नइ' त्ति समयव्यवहारो हि मञ्चरिष्णुसूर्यादिप्रकागकृतः, स च तमाया नास्तीति तत्राद्धासमयो न भण्यत इत्यर्थः । (वृ० प० ४६४)

प्तरः अय विमलायामिप नास्त्यमाविति कयं तत्र समय-व्यवहारः ? इति । (वृ० प० ४६४)

६३,६४. उच्यते, मन्दरावयवसूतस्फटिककाण्डे सूर्यादिप्रभास-क्रान्तिद्वारेण तत्र सञ्चरिष्णुसूर्योदिप्रकाशभावादिति। (वृ० प० ४९४)

८६. अनन्तरं जीवादिरूपा दिश. प्ररूपिता, जीवाश्च शरीरिणोऽपि भवन्तीति शरीरप्ररूपणायाह— (वृ० प० ४९४)

न७. कित ण भते ! सरीरा पण्णत्ता ?
गीयमा ! पच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए
जाव (सं० पा०) कम्मए। (श० १०।८)

प्त ओरालियसरीरे ण भते ! कतिविहे पण्णते ? एव ओगाहणासठाण निरवसेस भाणियव्य

वा० — कइ सठाण पमाण, पोगगलिचणणा सरीरसजोगो ।
द्यापसप्पवहु, मरीरओगाहणाए या ।।
तत्र च कंतीति कित शरीराणीति वाच्यं, तानि
पुनरौदारिकादीनि पञ्च, तथा 'सठाण' ति औदारिकादीनां सस्यानं वाच्यं, यथा नानासस्थानमौदारिक,
तथा 'पमाण' ति एपामेव प्रमाणं वाच्यं, यथा—

\*लय: क्षिरिमर-क्षिरिमर मेहा वरसे

चिणणा—पुद्गल चय किहवो । सरीर-औदारिक नो निर्व्याघाते छ दिशि नै विषे व्याघात प्रते आश्रयी ने किंवारैंक तीन दिशि ने विषे इत्यादिक । सयोग एहनो सयोग किहवो । यथा ओदारिक शरीर हुवै तेहनै, वै किय हुवै इत्यादि । दव्वप्पएस —एहनो द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणै करी अत्पवहुत्व किहवो, यथा सव्वत्थोवा आहारग-सरीरदव्बद्धयाए इत्यादि । सरीरोगाहणा—अवगाहना नो अत्पवहुत्व किहवो, यथा सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहन्निया ओगाहणा इत्यादि ।

दश् यावत अल्पावहुत्व लग इम, सेव भते ! सेव भत । दशम शते ए प्रथम उदेशे, जिन वच महा जयवत ॥ ६० ढाल दो सौ सत्तरमी ए, भिक्षु भारीमाल ऋषिराया । उगणीसे वीसे जेष्ठ जोघाणे, 'जय-जश' हरप सवाया ॥ दशमशते प्रथमोद्देशकार्थं ॥१०।१॥

बोदारिक जघन्यतोऽड्गुलासंक्येयभागमात्रमुत्कृष्टतस्तु सातिरेकयोजनसहस्रमान, तथैपामेव पुद्गलचयो वाच्यो, यथौदारिकस्य निर्व्याघातेन पट्सु दिक्षु व्याधात प्रतीत्य स्यात् त्रिदिशीत्यादि, तथैपामेव सयोगो वाच्यो, यथा यस्यौदारिकशरीर तस्य वैक्रिय स्यादस्तीत्यादि, तथैपामेव द्रव्यार्थप्रदेशार्थतयाऽल्प वहुत्व वाच्य, यथा 'सव्वत्थोवा आहारगसरीरा दव्यद्वयाए' इत्यादि, तथैपामेवावगाहनाया अल्पवहुत्व वाच्य, यथा 'सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहन्निया ओगाहणा' इत्यादि। (वृ० प० ४६५)

दह. जाव अप्पावहुगं ति । (श० १०।६) सेवं भते । सेव भते । ति । (श० १०।१०)

## ढाल: २१८

#### दूहा

- १ पूर्व शरीर परूपिया, जीव शरीरी जाण। करणहार क्रिया तणो, हुवै तिको पहिछाण।। २ ते माटै कहियै हिवै, क्रिया परूपण अर्थ। द्वितीय उद्देशक नै विषे, वर जिन वयण तदर्थ।।
  - \*जय-जय ज्ञान जिनेन्द्र तणो रे, जयवता जिन जाणी जी । जयवता गोयम गणधरजी, पूछ्या प्रश्न पिछाणी जी ॥ (ध्रुपद)
- राजगृह जाव गोतम इम वोल्या, प्रभु सबुड अणगारो रे।
   वीयी पाठ ते कपायवत ने, तसु अशुभ जोग व्यापारो रे।।

## सोरठा

- ४ सामान्य करिकै मत, प्राणातिपातादि जे। आश्रव द्वार रूधत, सवर सहितज सवृत।। ५ वीचि शब्द आख्यात, कहियै ते सयोग मे। तिको विहूनो थात, इहा कपाय रुजीव नो।।
- ६ तथा विचिर् ए घातु, पृयक् भाव जुदै अरथ। ए वच थी कहिवातु, यथाख्यात थी ए जुदो।।

१,२. अनन्तरोहेशकान्ते शरीराण्युक्तानि शरीरी च कियाकारी भवतीति कियाप्ररूपणाय द्वितीय उहेशक.। (वृ० प० ४६५)

- ३ रायगिहे जाव एव वयासी---सबुडस्स ण भते ! अणगारस्स वीयीपथे
- ४ सवृतस्य सामान्येन प्राणातिपाताद्याश्रवद्वारसवरो-पेतस्य । (मृ० प० ४६५)
- ४. वीचिशव्द सम्प्रयोगे, स च सम्प्रयोगोर्द्धयोर्भवति, ततश्चेह कपायाणा जीवस्य च सम्बन्धो वीचिशव्द-वाच्य ततश्च वीचिमत कपायवत (वृ० ५० ४६५)
- ६. अथवा 'विचिर् पृथग्भावे' इति वचनात् विविच्य-पृथग्भ्य यथाऽऽख्यातसयमात् कपायोदयमनपवार्येत्यर्थः (वृ० प० ४९५)

<sup>\*</sup>लय: कुंकुवर्णी हुंती रे देही

- ७. अथवा विचित्य घार, राग तणोंज विकार तसु। तथा विरूपाकार, क्रिया सरागपणे करि॥
- द्र. जे अवस्थाने जेह, राग विकारज जिम हुवै। क्रिया सरागपणेह, अर्थ कह्यो ए वृत्ति थी।।
- ह. \*पंथ मारग ने विषे रही ने, उपलक्षण थी जेहो। अन्य आघारे रही मुख आगल रूप जोवे वर नेहो।
- १०. पूठै रूप अर्छे त्यारी पिण, देखण इच्छा धरतो। विहु पस वाडे रूप्रते पिण, अति अवलोकन करतो॥
- ११ ऊर्ढ़ रह्या ते रूप विलोकत, अघो रूप पिण जोवै। स्यूं प्रभु ! तसु इरियावहि किरिया, कै सपरायिकी होवै?
- १२. श्री जिन भाखै सुण गोतम शिप । संवृत जे अणगारो । कपायवत पथ रहि मारग, जोवै रूप जिवारो ॥
- १३ यावत जेहने इरियावहिया किरिया मूल न थाई। सपरायिकी किरिया जेहने, उपजे अधुभ वधाई।।
- १४ किण अर्थे करिने हे प्रभुजी । आखी एहवी वायो। सब्त ने यावत संपरायिकी किरिया अञ्चभ वधायो॥
- १५. जिन कहै जेहनै क्रोघ मान विल, माया लोभ पिछाणी। जिम सप्तम शत प्रथम उद्देशक', यावत उत्मुत्रे ठाणी।।
- १६. वृत्तिकार<sup>ग</sup> कह्यो जाव शब्द मे, वोच्छिण्णा जास कपायो । तहनै इरियार्वाह्या किरिया, चोकड़ी उदय न ताह्यो ॥
- १७. क्रोव मान अरु माय लोभ जमु, अवीच्छिण्णा कहिवायो । उदय कपाय नही क्षय उपजम, किरिया सपरायिकी ताह्यो ॥
- १८ अहासुत्त जिम सूत्रे कहा , तिम चाले न चूकै लिगारो । वीतराग मुनि आश्री वचन ए, तसु इरियावहि सुविचारो ॥
- १६. उत्सूत्र ते आगम अनिक्रम नै, चालै जिनाज्ञा बारो। संपरायिकी क्रिया तेहनै, अञ्चभ जोग व्यापारो॥
- २०. जाव शब्द में एह कहाा छै, जे पथ रही रूप जोवै। तेह उत्सूत्रपणैज प्रवर्तों, अशुभ जोगी इस होवै॥

(वृ० प० ४६५)

८. यस्मिन्नवस्थाने तद्विकृति येथा भवतीत्येवं (वृ० प० ४६५)

- ह. ठिच्चा पुरक्षो व्यवाइ निज्झायमाणस्म
   (पथे' त्ति मार्गे 'अवयक्त्यमाणस्म' त्ति अवकांक्षतोऽपेक्ष माणस्य वा, पियग्रहणस्य चोपलक्षणत्वादन्यत्राप्या धारे स्थित्वेति द्रष्टव्यं (वृ० प० ४६६)
- १०. मग्गवो रूवाइं अवयक्यमाणम्स, पामबो रूवाइं अवलोएमाणस्स
- ११. उड्ढ रूवाइ ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइ आलोए-माणस्स तस्स ण भते ! कि इरियावहिया किरिया कज्जइ ? सपराइया किरिया कज्जड ?
- १२. गोयमा ! मबुहम्स णं अणगारस्त वीयीपंथे ठिच्चा
- १३. जाव (स॰ पा॰) तस्म णं नो इरियावहिया किरिया कज्जड सपराइया किरिया कज्जड । (श॰ १०।११)
- १४. से केणट्ठेणं भंते । एव वुच्चड—संवुडस्स णं जाव सपराइया किरिया कज्जइ ?
- १५. गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा एवं जहा सत्तमसए पढमजद्देसए (सू० २१) जाव (स० पा०)
- १६. से वोच्छिण्णा भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया फजजइ
- १७. जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवति तस्म ण संपराइया किरिया कज्जइ
- १न. अहासुत्त रीयमाणस्स इरियाविहया किरिया कज्जइ
- १६ उस्सुत्त रीयमाणस्स सपराइया किरिया कज्जइ।
  'से ण उस्सुत्तमेव' ति स पुनरुत्सूत्रमेवागमातिक्रमणत एव। (वृ० प० ४६६)
- २०. से णं उस्सुत्तमेव रीयति ।

७. अथवा विचिन्त्य रागादिविकल्पादित्यर्थः, अथवा विरूपा कृति.—क्रिया सरागत्वात् ।

<sup>&</sup>quot;लय : कुंकुवर्णी हुंती रे देही

१ यह जोड सिक्षप्त पाठ के आधार पर की गई है, इसलिए इसके सामने पाद-टिप्पण का पाठ उद्धृत किया है।

२. जयाचार्य ने जोड की रचना सिक्षप्त पाठ के आधार पर की । उसके बाद वृत्ति के आधार पर जाव की पूर्ति कर छूटे हुए पाठ की जोड लिख दी। अंगसुत्ताणि में सिक्षप्त पाठ को पाद टिप्पण में रखा गया है और मूल में पाठ पूरा लिया है। इसलिए यहा वृत्तिकार का उल्लेख होने पर भी अंगसुत्ताणि का पाठ उद्धृत किया गया है।

२१. ते तिण अर्थ करीने गोतम ! जावतः ससंपरायो । संपराइया किरिया होवै, प्रमादी एह कहिवायो ॥

## सोरठा

- २२. कह्यो संवृत अणगार, सकषाई प्रमत्त है। तास विपर्यय सार, अकषाइ नो प्रश्न हिव।।
- २३. \* हे प्रभु ! संवुड़ा मुनिवर ने, अकषाई वीतरागो। पथ मारग रहिने मुख आगल, रूप जोवे तिज रागो॥

#### सोरठा

- २४. अवीचि अकषाय, संवघ नहीं कषाय नों। तथा अविचिर् कहाय, यथाख्यात थी नहि जुदो।।
- २५. तथा अविचित्य सार, राग विकार न मन तसु। तथा विरूपाकार, ते पिण नहिं छैं तेहनो।।
- २६. \*यावत स्यू इरियावहि पूछा ? भाखे तव जिनरायो। सवृत जाव तास इरियावहि, सपराय नहिं थायो॥
- २७. किण अर्थे प्रभु ! जिम सप्तम शत, भाख्यो सप्तमुदेशे । यावत ते जिम सूत्रे आख्यो, तिमहिज चालै विशेपे ।।
- २८. तिण अर्थे गोतम ! इम भाख्यो, सवृत जे अकषाई। जाव तास इरियावहि किरिया, संपराय निंह थाई।।

#### सोरठा

- २६. पूर्वे किरियावंत उक्त, तेहनें बहुलपणें किर। योनि पामवं हुत, हिव ते योनि-परूपणा।
- ३०. \*िकते प्रकारे हे भगवत जी ! योनि कही जिनरायो। जीव ूं उत्पत्तिस्थानक तेहने, योनि कहीजे ताह्यो॥

बा॰ — यु धातु मिश्र अर्थं ने विषे। इण वचन थकी तैजस कार्मण शरीरवत यको ओदारिकादिक शरीर योग्य खध समुदाये करी मिश्र हुनै जीव जेहने विषे, ते योनि कहिये।

- ३१. जिन कहै त्रिविधा योनि परूपी, शीत योनि घुर जाणी। उत्पत्ति स्थानक शीत फर्श-करि, परिणत तेह पिछाणी।।
- ३२ उष्ण योनि ते उष्ण फर्शवत, तीजी शीतोष्णा जानो। शीत-उष्ण ए विहु फर्शकरि, परिणत उत्पत्ति स्थानो।

- २१. से तेणट्ठेणं जाव संपराइया किरिया कर्ज्जइ। (श॰ १०।१२)
- २२. 'संवुडस्से' त्याद्युक्तविपर्ययसूत्रं (वृ० प० ४६६)
- २३. सवुडस्स ण भते । अणगारस्स अवीयीपथे ठिच्चा पुरको ख्वाइ निज्ज्ञायमाणस्स
- २४ तत्र च 'अवीइ' त्ति 'अवीचिमतः' अकपायसम्बन्धवतः 'अविविच्य' वा अपृथग्भूय यथाऽऽख्यातसयमात् (वृ० प० ४६६)
- २५. अविचिन्त्य वा रागविकत्पाभावेनेत्यर्थे अविकृति वा यथा भवतीति । (वृ० प० ४६६)
- २६. जाव तस्स ण भते ! कि इरियाविह्या किरिया कज्जइ — पुच्छा। गोयमा ! सबुहस्स '\*\*\*जाव तस्स ण इरियाविह्या किरिया कज्जइ, नो सपराइया किरिया कज्जइ। (श० १०।१३)
- २७. से केणट्ठेण भते । ......जहां सत्तमसए सत्तमुद्देसए (सू० १२६) जाव (सं० गा०) से .....

(श० १०।१४)

- २८. तेणट्ठेण जाव नो सपराइया किरिया कज्जइ। (श० १०।१४)
- २१. अनन्तर क्रियोक्ता, कियावतां च प्रायो योनिप्राप्ति-र्भवतीति योनिप्ररूपणायाह— (वृ० प० ४१६)
- ३०. कतिविहा णं भते ! जोणी पण्णत्ता ?

वार — 'यु मिश्रणे' इतिवचनात् युवन्ति — तैजस-कार्म्मणशरीरवन्त भौदारिकादिशरीरयोग्यस्कन्धसमु-दायेन मिश्रीभवन्ति जीवा यस्या सा योनि.

(वृ० प० ४६६)

- ३१. गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, त जहा—सीया 'सीय' ति शीतस्पर्शा (वृ० प० ४६६)
- ३२. उसिणा सीतोसिणा
  'उमिण' त्ति उष्णस्पर्णा 'सीओसिण' त्ति द्विस्वभावा
  (वृ० प० ४९६)

<sup>&</sup>quot;लय: कुंकुवणीं हुंती रे देही

३३. योनी पद इम सर्वज भणिवो, सूत्र पन्नवणा मांह्यो।
नवम पद ए भाव कह्या छै, ते सगला कहिवायो।।
वा०—रत्नप्रभा सकैरप्रभा वालुकप्रभा पृथ्वी में नारक नां जे उपजवाना

क्षेत्र कुभी छै, ते सर्व शीतस्पर्ण परिणत छै अने कुभी विना अन्यत्र सर्व उपण स्पर्ध परिणत छै। तिणै करि तिहा नारक शीतयोनिया छै अने उपण वेदना भोगवै छै।

पकप्रभा पृथ्वी मे घणा उपपात-सेंत्र कूंभी शीत-स्पर्ध परिणत छै अने थोडा उपपात-क्षेत्र कुभी उप्ण-स्पर्ध परिणत छै। जिण पाथछे, नरकावासे उपपात-क्षेत्र शीत-स्पर्ध परिणत छै, तिहा अन्यत्र सर्व उप्ण-स्पर्ध परिणत छै। ते पायछा नां नरकावासा ना नारक घणा शीतयोनिया उप्ण वेदना वेदै छै अने जे पायछे नरकावासा उपपात-क्षेत्र उप्ण-स्पर्ध परिणत छै, तिहा अन्यत्र सर्व क्षेत्र शीत-स्पर्ध परिणते। ते पाथछा नां नरकावासा ना नारक उप्णयोनिया शीत वेदना वेदै छै। ते माटे पंकप्रभा मे घणा नारकी शीत योनिया छै।

तथा धूमप्रभा मे घणा उपपातक्षेत्र उष्ण-स्पर्ग परिणत छै, तिहा नारक घणा उष्णयोनिया णीत वेदना वेदै छैं। अनै जे पायहे नरकावासे थोटा उपूपात-क्षेत्र शीत-स्पर्श परिणत छै—ितहा अन्य क्षेत्र मयं उष्ण स्पर्श परिणत छै। तिहा ना थोटा नारक शीतयोनिया उष्ण वेदना वेदै छै। ते माटै धूमप्रभा मे घणा नारक उष्ण-योनिया जीत वेदना वेदै छै अनै थोड़ा नारक शीत-योनिया ते उष्ण वेदना वेदै छै।

अने छठी सातगी नारकी मे सर्व उष्णयोनिया धीत वेदना वेदै छै, ते मार्ट नारकी मे शीत योनि छै, उष्ण योनि छै, पिण शीतोष्णा योनि नयी।

शीतादि योनि प्रकरणार्थं संग्रह बिल बहुलपण करी— सबं देवता अने गर्भेज नी गीतोष्णा योनि । अने तेउकाय नी उष्ण योनि । अने नरक ने विषे शीत अने उष्ण ए वे योनि । क्षेप ने विषे तीन् योनि ।

भते ! योनि केतला प्रकार नी कहिये ? गोतमा ! योनि नीन प्रकार नी कहिये —सचित्त, अचित्त और मिश्र ।

जेह उपपात क्षेत्र ममग्रपण जीव-परिगृहीत हुवै, ते सचित्त योनि किह्यै। जे उपपात क्षेत्र सर्वथा जीव रिहत हुवै ते अचित्त योनि किह्यै। उपपात क्षेत्र ना पृद्गल केतलाइक जीव-परिगृहीत हुवै अने केतलाइक जीव-रिहत हुवै ते मिश्र योनि किह्यै।

विल सिचतादि योनि प्रकरणार्थं सग्रह बहुलपणै इम—नारकी देवता नी अचित्त योनि अने गर्भेज नी मिश्र, धेप नै विषे तीन् ।

३३. एव जोणीपर्व निरवसेगं भाणियव्यं । (म० १०११)
योनिपर्वं च प्रज्ञापनाया नवमं पर्वं (वृ० प० ४६६)
वा०—रत्नप्रभाया णकंराप्रभायां वानुकाप्रभाया च
यानि नैरियकाणामुपपानक्षेत्राणि तानि सर्वाण्यपि शीतस्पर्वंपरिणामपरिणतानि, उपपातक्षेत्रव्यतिरेकेण चान्यत्सर्वमपि तिमृष्यिष पृथियीपूष्णस्पर्वंपरिणामपरिणत
तेन तत्रत्या नैरियका. शीतयोनिका उष्णा वेदनां
वेदयन्ते ।

पकप्रभावा वहृत्युपपातक्षेत्राणि शीतस्यर्णपरिणामपरिणनानि स्तोकान्युण्णस्यर्शपरिणामपरिणनानि वेषु
च प्रस्तटेषु वेषु च नरकावामेषु शीतस्यर्शपरिणामान्युपपातक्षेत्राणि तेषु तद्व्यतिरेकेणान्यत्मर्वमुण्णस्यर्णपरिणामं वेषु च प्रस्तटेषु वेषु च नरकावामेषु उण्णस्यर्शपरिणामानि उपपातक्षेत्राणि तेषु तद्व्यतिरेकेणान्यत्सर्वं धीतस्यर्शपरिणामं तेन तत्रत्या वहवो नैरियकाः
शीतयोनिका उप्णा वेदना वेदयन्ते स्तोका उण्णयोनिकाः धीतवेदनामिति ।

धूमप्रमायां वहून्युपपातक्षेत्राणि उप्णस्पर्धंपरिणामपरिणतानि स्तोकानि शीतस्पर्धंपरिणामानि, येषु च
प्रस्तटेषु वेषु च नरकावामेषु चोप्णस्पर्धंपरिणामपरिणतानि उपपातक्षेत्राणि तेषु तद्व्यतिरेकेणान्यरसर्वं शीतपरिणाम येषु च शीतस्पर्धंपरिणामान्युपपातक्षेत्राणि
तेष्वन्यदुष्णस्पर्धंपरिणामं, तेन तत्रत्या वहवो नारका
उष्णयोनिकाः शीतवेदना वेदयन्ते स्तोकाः शीतयोनिका
उष्णवेदनामिति ।

तम-प्रभाया तमस्तम-प्रभायां च : ... तत्रत्या नारका उप्णयोनिका शीतवेदना वेदियतार इति । (प्रज्ञापना, वृ० प० २२४)

धीतादियोनिप्रकरणार्थं संग्रहस्तु प्रायेणैयं — सिस्रोसिणजोणीया सब्वे देवा य गटमवनकती। उसिणा य तेउकाए दुह निरए तिविह सेसेसु। (वृ० प० ४६६)

'कितिविहा ण भंते ! जोणी पन्नता ? गोयमा !
तिविहा जोणी पन्नता, तं जहा—सिच्चिता अचिता
मीसिया' (वृ० प० ४६६)
सिचता जीवप्रदेशसंबद्धा, अचिता सर्वथा जीविवप्रमुक्ता, मिश्रा जीविविप्रमुक्ताविप्रमुक्तस्वरूपा ।
(प्रज्ञापना वृ० प० २२६)

सिचत्तादियोनिप्रकरणार्थसग्रहस्तु प्रायेणैवम्— अचित्ता खलु जोणी नेरइयाण तहेव देवाण मीसा य गब्भवासे तिविहा पुण होई सेसेसु। (वृ० प० ४६६) जे नारक देवता रे उपपात क्षेत्र सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव नो संभव छै, तथा -पोलाड़ मे वादर वायुकाय नो संभव छै, तो पिण नारक देवता ना उपपात क्षेत्र ना पुद्गल समूह किणही जीवे करि परिगृहीत निह ते भणी देवता नारक नै अचित्त योनि किंदर्य ।

अनै गर्भवास योनि मिश्र—शुक्र शोणित पुद्गल तो अचित्त अनै गर्भ नो ठिकाणो सचित्त ना भाव थी। शेष पृथ्वीन्यादि सम्मुन्छिम तियँच मनुष्य नो जीव ग्रहण कीधा क्षेत्र ने विषे उत्पत्ति ते सचित्त । जीव ग्रहण अणकीधा क्षेत्र ने विषे उपजवो ते अचित्त । अने उभय रूप क्षेत्र ने विषे उपजवो, ते मिश्र । इम त्रिविधापि योनि इत्यर्थः।

मते । योनि केतला प्रकार नी कहिये ?

गोतम । योनि तीन प्रकार नी कहियै—सबुडा जोणी, वियडा जोणी, संबुड-वियडा जोणी।

उत्पत्ति स्थानक सवृत—आच्छादित हुवै ते सवृत योनि कहियै। उत्पत्ति स्थानक विवृत—उघाडो हुवै ते विवृता योनि । काइक सवृत काइक विवृत हुवै, ते सवृत-विवृता योनि ।

संवृतादि योनि प्रकरणार्थं सग्रह बहुलपणे इम—एकेंद्रिय ने सवृता योनि । तथा सभाव थकी एकेंद्रिय ने उत्पत्ति-स्थानक स्पष्टपणे ओलखाये नहीं, ते माटै संवृता योनि ।

नारक नै पिण संवृता योनि हीज जे कारण थकी नरक निष्कुटा ते कुभी सवृत ते ढक्या गवाक्ष सरीखी छै। एतलै नारकी ने उत्पत्ति-स्थानक कुभी- ढाक्या गोखै ने आकार छै। तेहने विषे ऊपना ते देह वध्या छता तेह थकी पडै शीत निष्कुट थकी उष्ण क्षेत्र ने विषे पडै अने उष्ण निष्कुट थकी शीत क्षेत्र ने विषे पडैं।

अने देवता नी पिण सवृत हीज योनि कहिये। जे भणी देव-सेज्या नै विषे देवता ऊपजे, देव-दूष्य वस्त्रे करी ते सेज्या ढाकी। ते सेज्या ने विषे ऊपजता आगुल ने असख्यातमे भाग अवगाहना देवता नी जाणवी।

विकलेंद्री वियडा योनि छै। तेहना उत्पत्ति-स्थानक जलाशयादि प्रत्यक्ष दीसँ छै। समुन्छिम पर्चेद्रिय तियँच ने अने समुन्छिम मनुष्य ने इमज़ विवृता योनि कहिवी। विवृता योनि विशेषणपणे उत्पत्ति-स्थानक जलाश्रय प्रमुख प्रगट योनि दीसँ छै। शेप वे योनि नथी।

अनै गर्भज तिर्यञ्च अनै मनुष्य नै सवृता योनि नथी, विवृता योनि पिण नथी। सवृत-विवृता योनि छै। गर्भ अभ्यतर सरूप जणाए नही, वाह्य रूपै उदरवृद्ध्यादिक प्रत्यक्ष दीसै छै ते माटै गर्भज नै सवृत— विवृता योनि छै।

भते ! योनि केतला प्रकार नी किह्यै ? गोतम ! योनि तीन प्रकार नी किह्यै — कुर्मोन्नता, शखावर्त्ता, वशीपत्रा ।

त्रिण भेदे योनि परूपी ते कहै छै—काछवा नी पीठ नी पर उन्नत हुनै ते कुर्मीन्नता योनि । तिण मे तीर्थंकर, चक्रवर्ती, वासुदेव, वलदेव उत्तम पुरुप गर्भे अपने । उदर-वृद्धि न हुनै गूढगर्भपणे करी ।

सद्य नी परे आवर्त्त हुवै जिहा ते शखावर्त्त योनि । स्त्री रत्न ने घणा जीव संबद्ध पुद्गल आवै, गर्भपणे उपजे पुष्ट हुवै, विशेष थी पुष्ट हुवै, पिण नीपजे सत्यप्येकेन्द्रियसूक्ष्मजीविनकायसम्भवे नारकदेवानां यदुपपातक्षेत्र तन्न केनिचज्जीवेन परिगृहीतिमत्य-चित्ता तेपा योनि (वृ० प० ४९६)

गर्भवासयोनिस्तु मिश्रा शुक्रशोणितपुद्गलानामित्ताना गर्भाशयस्य सन्तेनस्य भावादिति, शेपाणा पृथिन्या-दीना संमून्छंनजाना च मनुष्यादीनामुपपानक्षेत्रे जीवेन पिरगृहीतेऽपिरगृहीते उभयरूपे चोत्पत्तिरिति त्रिविधाऽ-पि योनिरिति । (वृ० प० ४६७) 'कितिविहा ण भते ! जोणी पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पन्नत्ता, त जहा—सवुडा जोणी वियडाजोणी संवुडवियडाजोणी' (वृ० प० ४६७)

संवृत्तावियोनिप्रकरणार्थसंग्रहस्तु प्राय एवम्—
एकेन्द्रिया अपि संवृतयोनिका तेपामिष योने. स्पष्टमनुपलक्ष्यमानत्वात् (प्रज्ञापना वृ० प० २२७)
नारकाणामिष सवृत्तैव यतो नरकिनष्कुटा सवृतगवाक्षकल्पास्तेषु च जातास्ते वर्द्धमानमूर्त्त्यस्तेम्य पनित्त शीतेभ्यो निष्कुटेभ्य उष्णेषु नरकेषु उष्णेभ्यस्तु शीतेष्विति (वृ० प० ४६७)

देवानामिप सवृत्तैव यतो देवशयनीये दूष्यान्तरितोऽ-गुलासख्यातभागमात्रावगाहनो देव उत्पद्यत इति । (वृ० प० ४९७)

द्वीन्द्रियादीना चतुरिन्द्रियपर्यन्ताना समून्छिमितयँक्-पञ्चेन्द्रियसंमून्छिममनुष्याणा च विवृता योनि. तेपा-मुत्पत्तिस्थानस्य जलारायादे स्पष्टमुपलभ्यमानत्वात् । (प्रज्ञापना वृ० प० २२७)

गर्भव्युत्कान्तिकतिर्यं क्यञ्चे निद्रयगर्भव्युत्कान्तिकमनुष्याणा च सवृतिववृता योनि , गर्भस्य सवृतिववृत- रूपत्वात्, गभी ह्यन्त स्वरूपतो नोपलभ्यते वहिस्तूदर- वृद्ध्यादिनोपलक्ष्यते इति । (प्रज्ञापना वृ० प० २२७) कतिविहा ण भते ! जोणी पन्नता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पन्नता, त जहा— कुम्मुन्नया सपा- वत्ता वंसीपत्ता

कूर्मपृष्ठिमिवोन्नता कूर्मोन्नता (प्रज्ञापना वृ० प० २२८) ""कुम्मुण्णयाए ण जोणीए उत्तमपुरिमा गटभे वनक-मति त जहा — अरहता चनकवट्टी वलदेवा वासुदेवा (पण्ण० ६।२६)

शंखस्येवावर्तो यस्या. सा शयावर्ता

(प्रज्ञापना वृ० पर्व २२८)

ते योनि माहि जे जीव ठपजै ते मर्रज। नीकलिवा ने मार्ग मिलै नही अने वृद्धि पामी न मकै ते भणी हत-गर्म योनि कहियै। ते स्त्री रत्न नै बीजो पुरुष भोगवी न सकै। चकवर्ती नै इज भोग में आवै।

यंशी नां पत्र नै आकारै हुवै ते वणीपत्रा योनि । घणी मनुष्यणी स्त्री नै हुवै । ते वंणीपत्रा योनि ने विषे घणा गर्भ अपत्रमै, सक्रमै, गर्भपणै कपजै । पृथग-जना प्राकृतजना इत्ययं: ।

## सोरठा

- ३४. पूर्वे योनी उक्त, योनिवंत जीवां तणै। वेदन जिन-वच युक्त, कहियै छै हिव वेदना।।
- ३५. \*हे प्रभु । वेदना किने प्रकारे ? जिन कहै तीन प्रकारो । शीत वेदना उप्ण वेदना, शीतोष्णा वेदना धारो ॥
- ३६ पन्नवण वेदन पद पैतीसम, जाव नारक स्यूं भदंतो ! दुख-वेदन कै सुख नी वेदन, कै अदुख असुख वेदंतो ?
- ३७. जिन कहै दुख-वेदन पिण वेदै, सुख-वेदन पिण वेदै ॥ अदुख असुख वेदन पिण वेदै, भाखी ए त्रिहं भेदै ॥

#### सोरठा

- ३८. केवल दुख निंह होय, विन केवल पिण सुख नहीं। अदुख असुख अवलोय, अर्थ पन्नवणा मे इसो।। वा०—वेदना-पद ते पन्नवणा नां पैतीसमा पद नै विपे कह्यों छै ते देखाई है—
- ३६. नारक हे भगवंत । स्यू वेदै जीत वेदना। तथा उप्ण वेदंत, कै जीत उप्ण वेदैति कै ?
- ४०. जिन कहै शीत वेदंत, एम उष्ण पिण वेदियै। पिण ते नारक जंत, शीतोष्णा वेदै नथी।।
- ४१. असुरकुमार सुजोय, वेदै ए त्रिहुं वेदना। एवं जावत सोय, कहिवुं वैमानिक लगै।।

षा० — इहां वृत्ति में कह्यो — नारक ने शीत वेदना अने उष्ण वेदना, पिण शीतोष्णा वेदना नथी। एहनो पाठ लिस्यो ते तो शुद्ध। एवं वेदना पद भणवो। अने आगल कह्यो — एवमसुरादयो वैमानिकाता: असुरकुमार थी वैमानिक तक इमज जाणवो, एहवो कह् घुं। "पन्नवणा सूत्रे नारक मे प्रथम दोय वेदना कही

संखावत्ता णं जोणी इत्यिरयणस्म मधावत्ताए णं जोणीए बहवे जीवा य पोग्गता य ववकमंति विउवक-मंति चयंति, उवचयंति नी चेव ण णिप्फञ्जति। (पण्ण ६।२६)

शसावतायां योनो वहवो जीवा जीवसंवद्धापुद्गलाण्-चावकमन्ते—आगच्छति, व्युत्मामन्ति—गर्मनयांत्रधन्ते तथा चीयन्ते—मामान्यतप्रचयमागच्छन्ति, उपचीयंते —विशेषत उपचयमायान्ति परं न निष्यद्यन्ते अति-प्रवकामाग्निपरितापतो ध्वंसगमनादिति

(प्रज्ञापना वृ० प० २२८)

मंयुक्तवंशीपत्रद्वयाकारत्वाद् वंशीपत्रा

(प्रज्ञा० वृ० प० २२८)

वसीपत्ता ण जोणी पिहुजणन्स, वंभीपत्ताए णं जोणीए पिहुजणा गन्भे वक्कमति । (पण्य ६।२६)

- ३४. अनन्तरं योनियस्ता, योनिमतां च वेदना भवन्तीति तत्प्ररूपणायाह— (वृ० प० ४६७)
- ३५. कतिविहा णं भंते ! वेयणा पण्णता ? गोयमा ! तिविहा वेयणा पण्णता, तं जहा—मीया, उमिणा, सीबोसिणा ।
- ३६. एवं वेयणापदं (प० ३४।११) भाणियव्य जाव— (ग० १०।१६) नेरइया णं भते ! किं दुक्यं वेयणं वेदेंति ? सुहं वेयण वेदेंति ? अदुक्यममुहं वेयणं वेदेंति ?
- ३७. गोयमा ! दुक्खं पि वेयणं वेदेंति, सुहं पि वेयण वेदेंति, अदुक्खमसुहं पि वेयणं वेदेंति ।

(श० १०।१७)

वा॰—'वेयणापयं भाणियव्वं' ति वेदनापदं च प्रज्ञापनायां पञ्चित्रशत्तमं तच्च लेशतो दश्यंते। (वृ० प० ४६७)

बाo—नेरइयाणं भंते ! कि मीय वेयण वेयति ? गोयमा ! सीयंपि वेयण वेयति एव उत्तिणपि णो मीओमिण एव मुरादयो वैमानिकान्ता.

(बृ० प० ४६७)

<sup>\*</sup>लय: कुंकुवर्णी हुंती रे देही

असुरकुमार मे तीन कही। एवं जाव वेमाणिया इम कहा । ते माटे सूत्रे कह्य ते सत्य अने सूत्र थी न मिले ते वृत्ति विरुद्ध जाणवी।" (ज० स०)

४२. इम वेदन च्यार प्रकार, द्रव्य खेत्र काल भाव थी। ए चिहु नो विस्तार, कहियै छै ते साभलो।। ४३ नारक आदिक तास, पुद्गल द्रव्य सवघ थी।

वेदन द्रव्य विमास, चुउवीसू दडक विषे।।

४४ नारक आदि विचार, क्षेत्र तणाज संवध थी। क्षेत्र वेदना घार, चउनीसू दडक विपे॥

४५ नारक आदि कहेह, तसु भव काल सवघ थी। काल वेदना लेह, दडक चउवीसू विपे॥

४६ कर्म वेदना जेह, तेहनों उदय थकी जिके। वेदन प्रति वेदेह, भाव वेदन सहु दडके॥

४७ तथा वेदना तीन, प्रथम शरीरी वेदना। मानसिक फून चीन, तीजी शरीर-मानसिक।।

४८. नारक में त्रिहुं पाय, एव जाव वेमाणिया। णवरं विशेष ताय, एकेद्री विकलेन्द्रिये।।

४६ पाच थावर में पेख, फुन तीनू विकलेन्द्रिया। वेदन वेदे एक, शारीरिक वेदन तसु॥

५० तथा वेदना तीन, घुर साता नी वेदना। द्वितिय असाता चीन, तीजी सात-असात नी।।

५१. सहु ससारी मांय, आखी ए त्रिण वेदना। निमल विचारो न्याय, श्री जिन वचन प्रमाण छै।।

५२ तथा वेदना तीन, प्रथम दुख नी वेदना। द्वितीय सुख नी चीन, तृतिय अदुख-असुख तणी।।

५३. सर्व ससारिक जात, वेदै ए त्रिहु वेदना। सुख-दुख सात-असात, तिणमें एह विशेष छै।।

५४. अनुक्रमें करि जेह, कर्म वेदनीनांज दल। उदय पामिया तेह, अनुभव सात असात ही।।

५५ फुन सुख-दु ख कहाय, अन्य जन उदीरतां छता। कर्म वेदनी ताय, अनुभवरूपज जाणवृ॥

५६. तथा वेदना सोय, दाखी दोय प्रकार नी। आभ्पुपगिमकी होय, औपक्रमिकी दूसरी।।

५७ आम्युपगिमकी होय, अगीकार पोते करी। वेदन वेदै सोय, आतापन लोचादि जिम।।

५६. औपक्रमिकी ताम, स्वय उदय आव्यां प्रतै।

वा उदीरणा पाम, उदय आण वेदै तिको।। ५६. पचेद्रिय तिर्यच, विल मनुष्य में ए विहु। शेष दडके सच, औपक्रमिकी वेदना।।

६० फुन वेदन द्विविध, निदा कहिये चित्तवती।

द्वितीय अनिदा सिघ, तेह अचित्तवती भणी।। ६१ नारक दश-असुरादि, पचेद्री तियँच फुन। मनुष्य व्यतरा वादि, वेदै ए विहुं वेदना।। ४२. 'एवं चउन्त्रिहा वेयणा दन्त्रको क्षेत्तको कालको भावको' (वृ० प० ४६७)

४३. तत्र पुद्गलद्रव्यसम्बन्धात्द्रव्यवेदना (वृ० प० ४९७)

४४. नारकादिक्षेत्रसम्बन्धात्क्षेत्रवेदना (वृ० प० ४६७)

४५. नारकादिकालसम्बन्धात्कालवेदना (वृ० प० ४६७)

४६. शोककोद्यादिभावसम्बन्धाद्भाववेदना, सर्वे संसारिण-श्चतुर्विद्यामिप (वृ० प० ४९७)

४७. तथा 'तिविहा वेयणा-सारीरा माणसा सारीरमाणसा। (वृ० प० ४६७)

४८,४१. समनस्कास्त्रिविधामपि असञ्ज्ञिनस्तु शारीरीमेव (वृ० प० ४९७)

५०. तथा 'तिविहा वेयणा साया असाया सायासाया । (वृ० प० ४६७)

५१. सर्वे ससारिणस्त्रिविद्यामिप (वृ० प० ४९७)

५२. तथा तिविहा वेयणा—दुनला सुहा अदुनलमसुहा (वृ० प० ४९७)

५३ सर्वे त्रिविधामिप, सातासातसुखदु.सयोश्चाय विशेषः (वृ० प० ४६७)

५४ सातासाते अनुक्रमेणोदयप्राप्ताना वेदनीयकर्मेपुद्गला-नामनुभवरूपे (वृ० प० ४६७)

५५ सुखदु वे तु परोदीयँमाणवेदनीयानुभवरूपे (वृ० प० ४६७)

५६. तथा 'दुविहा वेयणा—अञ्मुवगिमया उवक्किमया (वृ० प० ४६७)

५७ आभ्युपगिमकी या स्वयमध्युपगम्य वेद्यते यथा साधव केशोल्जुञ्चनातापनादिभिर्वेदयन्ति (वृ० प० ४६७)

५८ औपक्रमिको तु स्वयमुदीर्णस्योदीरणाकरणेन चोदयमुपनीतस्य वेद्यस्यानुभवात् (वृ० प० ४६७)

५६. द्विविधामपि पञ्चेन्द्रियतियंञ्चो मनुष्याश्च शेपास्त्वीप-क्रमिकीमेवेति (वृ० प० ४६७)

६० तथा 'दुविहा वेयणा—निदा य अनिदा य' निदा— चित्तवती विपरीता त्वनिदेति (वृ० प० ४६७)

६१-६४ सजिनो द्विविधामसज्ञिनस्त्विनदामेवेति

(वृ० प० ४६७)

६२ ए जे सन्नीभूत, निदा वेदना तेहने। असन्नीभूत सजूत, वेदै अनिदा वेदना।। ६३ सगला पृथ्वीकाय, असन्नी तसु निदा नथी। अनिदा वेदै ताय, इम जावत चर्डारिद्रया।। ६४. अमर जोतिपी जोय, फुन मानिक देवता। तसु पिण वेदन दोय, न्याय तास निसुणो हिवै॥ ६५. माई मिथ्यावत, वेदै अनिदा वेदना। जेह निदा वेदत, अमाई समदृष्टि ते।।

वा०—इहा निदा ते नितरा—अतिही तथा निश्चय सम्यक् प्रकारे दियें चित्त जे बेदना ने विषे ते निदा सम्यक् विवेकवती इत्यथं। एह थी अनेरी ते अनिदा। चित्त विकला चित्त रहित सम्यक् विवेकवती इत्यथं। एह थी अनेरी ते अनिदा। चित्त विकला चित्त रहित सम्यक् विवेक रहित। नेरउया सन्नीभूत ते निदा बेदना वेदें। १० भवनपित, व्यंतर पिण इमहिज कहिवा। पाच थावर, तीन विकलेंद्री अनिदा वेदना वेदें। तियेंच पचेंद्री ने सन्नी मनुष्य ते निदा बेदना वेदें, असन्नी ते अनिदा वेदणा वेदें। जोतिपी, वैमानिक तिहा जे मायावंत मिथ्यादृष्टि ऊपना छैं, ते मिथ्यादृष्टि माटे तत्त्व विराधना थकी अज्ञान तप थकी अनेहे इहा ऊपना छा इम सम्यक् प्रकारे न जाणें ते माटे अनिदा वेदना वेदें। अने जे माया रहित सम्यक् दृष्टि ऊपना छै ते सम्यग् दृष्टिपणें करी यथावस्थित स्वरूप जाणें ते माटे निदा वेदना वेदे छै—विल इहा पननवणा ने विषे द्वार गाथा छै तिका इम—

सीता य दन्त्र सारीरा सात तह वेदणा हवति दुक्खा। अञ्मुवगमोवककिमया निदा य अनिदा य णायन्त्रा ।।

अधिकृत वाचना ने विषे गाथा पूर्वार्द्धे मे कह्यो तिकोहीज दुख पर्यंत द्वार नो कथन कियो—वेयणापय भाणियव्वं जाव नेरडयाण भते । कि दुक्खिमत्यादि । एतो ए अधिकृत वाचना ने विषे भाख्यो ते कह्युं। अने अन्य वाचना ने विषे संपूर्ण गाथा कही । ते भणी तिहां अन्य वाचना ने विषे पिण कह्यो निदा य अनिदा य वज्ज ।

६६ वेद्रन कर्म प्रसूत, तेह तणां प्रस्ताव थी। वेदन हेतूभूत, प्रतिमा प्रति कहियै हिवै॥ ६७ <sup>१</sup>हे भगवत <sup>।</sup> मासिकी प्रतिमा-प्रतिपन्न जे अणगारो रे।। स्नानादिक परिकर्म वर्जवै, छाडघो तनु-श्रुगारो रे॥

६८. त्यक्तदेह उपसर्ग सहतो, जिम दगाश्रुतखंघ माह्यो रे। यावत आजा करि आराधक, सहु विस्तार कहायो रे॥

#### सोरठा

६१. आराधना इम होय, जिन आज्ञा करिने कह्यो। ते माटे अवलोय, आराधन कहिये हिने।। ७०. \*भिक्षु अन्यतर एक अकारजसेवी विण आलोयो रे। काल कियां नहिं तास आराधन, आलोया सुध होयो रे।।

- ६७. मासियण्ण भिक्खुपिडमं पिडवन्तस्स अणगारस्स, निच्चं वोसटुकाए। 'वोसट्ठे काए' सि व्युत्सृष्टे स्नानादिपरिकर्म्मवर्जनात्। (वृ० प० ४६८)
- ६८. चियत्तदेहे जे केइ परीसहोवसग्गा उप्पज्जिति जहा दसाहि (७।२६-३४) जाव (७) साराहिया भवइ। (घ० १०।१८)
- ६१. आराहिया भवतीत्युक्तमथाराधना. यथा न स्याद्यथा च स्यात्तद्श्येयन्नाह— (वृ० प० ४६=)
- ७०. भिक्खू य अण्णयर अिकच्चहाण पिडसेवित्ता से ण तस्स ठाणस्स अणानोइय-पिडक्कते काल करेइ नित्य तस्स आराहणा, से ण तस्स ठाणस्स आलोइयपिड-क्कते काल करेइ अत्यि तस्स आराहणा।

(स० १०।१६)

<sup>\*</sup>लय: कुंकुवर्णी हुंती रे देही

१ पन्नवणा ३५।१

६६. वेदनाप्रस्तावाद्वेदनाहेतुभूता प्रतिमां निरूपयन्ताह— (वृ० प० ४६७)

- ७१. पडिसेवित्ता सोय, वाचनातरे इम कह्या। करी ॥ प्रतिसेव्य सेवी पडिसेविज्जा होय,
- ७२. \*भिक्षु अन्यतर एक अकारजसेवी इम मन घारै रे। मरण अवसरे ए स्थानक नै, आलोवीस जिवारै रे॥
- ७३ तेह अकरवा जोग स्थानक नै, आलोया विण कालो रे। कीघो तास आराधन नाही, दाखै दीनदयालो रे॥
- ७४ तेह अकरवा जोग स्थानक नै, अत समय आलोई रे। काल किया तेहने आराधना, ए जिन वच अवलोई रे॥
- ७५ भिक्षु अन्यतर एक अकारजसेवी एम विचार रे। जे श्रावक पिण काल करीने, सुरलोके संचार रे॥
- ७६. तो हूं स्यू व्यतर नहीं होइस, इम चिंतव ते स्थानो रे। आलोया विण काल कियो तो, आराधक मति जानो रे।।
- ७७. ते स्थानक आलोइ पडिकमी, काल कियो ते सतो रे। आराधक कहिये छै तेहने, सेव भते । सेव भतो । रे॥ ७८ दशम शते ए द्वितीय उद्देशक, वे सौ अठारमी ढालो रे। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, 'जय-जश' मंगलमालो रे।। दशमशते द्वितीयोद्देशकार्थ ॥१०।२॥

- ७१. 'पिंडसेवित्त' ति अकृत्यस्थान प्रतिपेविता भवतीति गम्य वाचनान्तरे त्वस्य स्थाने 'पडिसेविज्ज' त्ति (वृ० प० ४६८)
- ७२. भिक्खू य अण्णयरं अकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता तस्स ण एव भवइ--पच्छा वि ण अहं चरिमकालसमयिस एयस्स ठाणस्स आलोएस्सामि
- ७३. से ण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिनकते काल करेइ नित्य तस्स आराहणा
- ७४. से ण तस्स ठाणस्स आलोइयपिडक्कते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा। (হাত १০।२०)
- ७५ भिक्खू य अण्णयर अकिच्चद्राण पडिसेवित्ता तस्स ण एवं भवइ--जइ ताव समणोवासगा वि कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवलाए उववतारो भवति।
- ७६. किमंग ! पुण अह अणपन्नियदेवत्तणि नो लिभ-स्सामि ति कट्टु से ण तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कते काल करेइ नित्य तस्स आराहणा,
- ७७ से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा। (श० १०।२१) सेव भते ! सेव भते ! ति । (श० १०।२२)

## ढाल: २१६

## दूहा

- १. द्वितीय उद्देशक अत मे, देवपणी आख्यात। हिव कहूं, अमर तणो अवदात।। तृतीय उद्देशक
- २. नगर राजगृह जाव इम, गौतम एम आत्म-ऋद्धि स्त्र शक्ति करी, सुर सामान्य भदत!
- ३ जाव च्यार अरु पच जे, सामान्य सुर ना ताय! वासतर प्रति लघ नै, वीतिक्कते ते जाय?
- ४. च्यार पच वासा थकी, उपरत सुर सामान। जावै पर शक्ती करी ? जिन कहै हता जान।।

- १. द्वितीयोद्देशकान्ते देवत्वमुक्तम्, अय तृतीये देवस्वरूप-मभिधीयते (वृ० प० ४६८)
- २. रायगिहे जाव एव वयासी-आइड्ढीए ण भते ! देवे 'आइड्ढीए ण' ति आत्मद्धर्चा स्वकीयशक्त्या (वृ० प० ४६६)
- ३. जाव चत्तारि, पंच देवावासतराइ वीतिकते 'देवे' ति सामान्य.'''' लिघतवान्

(वृ० प० ४६६)

४. तेण पर परिड्ढीए ? हता गोयमा !

लयः कुंकुवणी हुंतीं रे देही

- ५. एव असुरकुमार पिण, णवरं इतो विशेख।
   लघे वासा असुर नां, शेप तिमज सपेख।।
   ६. इम इण अनुक्रमे करी, यावत थणियकुमार।
   इम व्यतर ने जोतिपी, वैमानिक सुविचार।।
   \*प्रश्न गोतम तणां ए। (ध्रुपद)
- ७. प्रभु दिव अल्प ऋदि नो घणी ए, मर्होद्धक सुर विच होय। जावै ? तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थ नींह कोय।।
- द. प्रभु । देव सरीखी-ऋद्धि नों घणी ए, सम ऋद्धि सुर विच होय। जावै ? तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थ निंह कोय।। १. ते देव प्रमादी हुवै वली ए, तो सरिखी ऋद्धिवत देव। तास विच में थई ए, जावै छै स्वयमेव।।
- १०. ते देव विमोह उपजायने ए, जावा समर्थ भगवत। धूअर प्रमुख करी ए, ग्रधकार करि जत?

वा॰—धूथर प्रमुख अन्धकार करिने करी मोह प्रति उपजानी ने ते अण-देखता छता ईज देव प्रते उल्लंधी ने जाय।

- ११. अथवा धूअर प्रमुखे करी ए, अधकार विण कीघ। तास विमोह्या विना ए, जावा समर्थं सीघ?
- १२. जिन भाखै विमोह्यां विना ए, जावा समर्थं न कोय। विमोह उपजाय ने ए, जावा समर्थं होय।।
- १३. ते प्रभु । स्यू पहिलां थको ए, विमोह उपजाई जाय। कै पहिला उल्लंघ ने ए, पछै विमोह उपाय?
- १४ जिन कहै पहिला विमोह ने ए, पछ उलघी जाय। पिण पहिला उल्लघ ने ए, पछ विमोह नांय।।
- १५. प्रभु ! महाऋदिवत देवता ए, अल्पऋदिवत सुर वीच। जायै मध्योमध्य थई ए ? जिन कहै हत समीच।।
- १६ ते प्रभु । स्यू विमोही करी ए, जावा समर्थ जेह। तथा विमोह्या विना ए, महद्धिकगमन करेह?
- १७ जिन भार्षे विमोही करी ए, जावा समर्थ जाण। वर्लि विमोह्या विना ए, समर्थ तेह पिछाण।।
- १८. ते स्यू प्रथम विमोह नै ए, पछै उलघी जाय। तथा पहिला जई ए, पछै विमोह उपाय?
- १६. जिन कहै प्रथम विमोह नै ए, पछै उलघी जाय। तथा पहिला जई ए, पछै विमोह उपाय।।
- २०. अल्प ऋदिवत असुर प्रभु ! ए, असुर महऋदिक विच होय-जावे ? तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थ नहिं कोय ।।
- \*लय: छट्ठो व्रत रयणी तणो ए

- एवं असुरकुमारे वि, नवर— असुरकुमारावासंतराइं, सेस त चेव
- ६. एव एएण कमेणं जाव थणियकुमारे, एव वाणमंतरे जोइसिए वेमाणिए जाव तेण पर परिड्ढीए। (श० १०।२३)
- ७. अप्पिड्ढीए णं भते <sup>1</sup> देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा <sup>?</sup> नो इणट्टे समट्टे । (श॰ १०।२४)

प्त. समिड्ढीए ण भते ! देवे समिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? नो इणट्टे समट्टे ।

६. पमत्तं पुण वीइवएज्जा । (श० १०।२५)

१०. से भते । कि विमोहित्ता पभू ?

महिकाद्यन्यकारकरणेन मोहमुत्पाद्य अपश्यन्तमेव त

व्यितिकामेदिति भावः (वृ० प० ४६६)

११. अविमोहित्ता पभू ?

१२ गोयमा ! विमोहित्ता पभू, नो अविमोहित्ता पभू।
(श. १०।२६)

१३. से भते ! किं पुन्ति विमोहिता, पच्छा वीइवएज्जा ? पुन्ति वीइवहत्ता पुच्छा विमोहेज्जा ?

१४. गोयमा । पुन्ति विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुन्ति वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ।

(হা০ १০।२७)

१५ महिड्ढीए णं भते । देवे अप्पिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? हता वीइवएज्जा । (श० १०।२८)

१६. से भते ! ार्क विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?

१७. गोयमा विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू। (श॰ १०।२६)

१८. से भते ! कि पुन्वि विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुन्वि वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?

१६. गोयमा ! पुर्वित वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा,
पुर्विव वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ।

(গ⊓ १०।३०)

२०. अप्पिड्डिए ण भते । असुरकुमारे महिड्डियस्स असुरकुमारस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ? नो इणहे समहे । २१ समचे देव तणा कह्या ए, तीन आलावा तेह। असुर ना तिम इहा ए, आलावा तीन कहेह'।।
२२. अल्पऋद्विक महाऋद्विक नो ए, प्रथम आलावो पेख। समिद्धिक समऋद्वि नो ए, दूजो आलावो देख।।
२३ महद्धिक अल्पऋद्विक तणो ए, तीजो आलावो ताय। समुच्चय सुर तणा ए, तेम असुर ना थाय।।
२४ वाणव्यतरा जोतिषो ए, वैमानिक इम जाण। अगृलावा एहना ए, तीन-तीन पहिछाण।।
२५ प्रभु । देव अल्पऋद्वि नो घणी ए, महद्धिकसुरी विच होय-जावे ? तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थ नहि कोय।।

२६ प्रभु<sup>।</sup> देव सरीखी ऋदिनो घणी ए, समऋदि सुरी विच होय-जावै <sup>२</sup> तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थ निह कोय।। २७ जो प्रमादी ते देवी हुवै ए, तो तसु विच होय जाय। आलावो दूसरो ए, पूर्व कह्यो ज्यू कहाय।। २८ प्रभुं । देवता महाऋदि नो घणी ए,

दूसरो ए, पूर्व कह्यो ज्यू कहाय।। अल्प ऋद्धि सुरी विच होय-जावै ? तव जिन कहै ए, हता समर्थ जोय।। २६ इम असुर व्यत्तर जोतिपी तणा ए, तीन-तीन आलाव। वैमानिक ना वली ए, सुर सुरी वीच कहाव ।। ३० प्रभु देवी अल्प ऋद्विवत छै ए, महद्धिक सुर विच होय-जावै ? तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थे नहि कोय।। ३१ प्रभु । देवी सरीखी ऋद्धिवत छै ए, समऋद्धिसुर विच होय। पूर्ववत अवलोय ॥ दूसरो आलावो ए, ३२ प्रभु । देवी महाऋदिवत छै ए, अल्प-ऋदि सुर विच होय-जावे ? तव जिन कहै ए, हता समर्थ जोय।। ३३. इम असुर व्यतर जोतियी तणा ए, तीन-तीन आलाव। वैमानिक ना वली ए, देवी देव-विच ३४ प्रमु! देवी अल्प-ऋद्विवत छै ए, महद्विक देवी विच होय-जावै ? तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थ निह कोय।। ३५ इम सम ऋद्धि देवी समऋद्धि विचै ए, जावा समर्थ नाय। प्रमत्तपणै जो हुवै ए, तो पूर्ववत विच जाय।। ३६ स्यू देवी महाऋदिवत छै ए, अल्पऋदि देवी विच होय-जावै ? तव जिन कहै ए, हता समर्थ जोय।। ३७ इमहिज असुरकुमार ना ए, कहिवा तीन आलाव। व्यतर जोतियी तणा ए, तीन आलाव कहाव।।

है। पर इसकी जोड नहीं है।

२१-२३. एवं असुरकुमारेण वि तिण्णि आलावगा भाणि-यव्वा जहा ओहिएण देवेण भणिया । 'एव असुरकुमारेण वि तिन्ति आलावग' ति अल्पिंडिकमहिंडिकयोरेक. समिंडिकयोरन्य महिंडिकाल्प-द्विकयोरपर इत्येव त्रय । (वृ० प० ४६६)

३०-३३ अप्पिड्ढिया ण भते । देवी महिड्ढियस्स देवस्स मण्झमण्झेण वीइवएज्जा ?
एव एसो वि तितओ दडओ भाणियव्वो जाव—
महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्ढियस्स वेमाणियस्स मण्झमण्झेण वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा । (श० १०।३४,३५)

३४ अप्पिड्ढिया ण भते ! देवी महिड्ढियाए देवीए मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

३५ एव समिड्ढिया देवी सिमिड्ढियाए देवीए तहेव।

३६ महिड्ढिया वि देवी अप्पिड्ढियाए देवीए तहेव।

३७. एव एक्केक्के तिष्णि-तिष्णि आलावगा भाणियव्वा जाव— (श० १०।३६)

२. इस ढाल की गाथा २६ से २६ तक की जोड विस्तृत पाठ के आघार पर की हुई है। उसका सकेत न अगसुत्ताणि मे है और न वृत्ति मे है। इसलिए इन गाथाओं के सामने अगसुत्ताणि का सक्षिप्त पाठ ही उद्भृत किया गया है।

- ३८ वैमानिक ना पिण वली ए, तीन आलावा एम। कहूं हिव तीसरो ए, साभलज्यो घर प्रेम।। ३९. महिंद्धिक सुरी वेमानिक तणी ए, अल्पऋदि नी ताय। वैमानिक नी सुरी ए, तास विचै होय जाय।।
- ४०. ते प्रमु । स्यू विमोही करी ए, जावा समर्थ तेह। तिमज कहिवो सहू ए, पूर्वली परे जेह।।
- ४१. यावत प्रथम जलघ नै ए, पछै विमोह जपजाय।
  सुरी ते सुरी विचै ए, तुर्य दडक ए थाय।।
  ४२. दशम शते देश तीसरो ए, वे सौ गुनीसमी ढाल।
  भिक्षु दीर्घ राय थी ए, 'जय-जश' हरप विशाल।।

## ढाल: २२०

#### दुहा

- १. पूर्वे देव क्रिया कही, विस्मयकारिणी तेह। विस्मय करि अन्य वस्तु नो, गोतम प्रश्न करेह।
- २. अश्व दोडतो हे प्रभु । 'खु खु' शब्द करत।
  ए किण कारण स्वाम जी ! भाखै तव भगवत।।
  ३ अश्व दोडता ने तदा, हृदय कालजा वीच।
  कर्कट नामें वायू ते, उपजै कर्म कलीच।।
- ४. ते कर्कट वायू करी, अश्व दोडतो एह।
  'खु खु' शब्द करै अछै, भाखै जिन गुणगेह।।
  ५ पूर्व 'खु खु' रव कह्यो, ते भाषारूपेह।
  तिणसू हिव भाषा कहू, विल भाषणीयपणेह।।
  \*चतुर नर गोयम प्रश्न उदार।। (ध्रुपद)
- ६. गोतम पूछै वीर नै रे, अथ हिव हे भगवान । आश्रयणीय पदार्थ नै रे, अम्है आश्रयस्यू जान ।
- ७. अम्है सुयस्यू विल अम्है ऊभो रहिस्यू घार। अम्हे विल इहा वैसस्यू, आडो होयस्यू सथार।।
- द. इत्यादिक भाषा तिका, प्रज्ञापनी पिछान । भाषा परूपण जोग छैं ते प्रज्ञापनी जान ॥

१. अनन्तर देविक्रयोक्ता, सा चातिविस्मयकारिणीति विस्मयकरं वस्तवन्तरं प्रश्नयन्ताह—

३६ महिड्डिया ण भते । वेमाणिणी अप्पिड्डियाए

४०. सा भते ! कि विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?

४१. जाव पुन्ति वा वीइवइत्ता पन्छा विमोहेन्जा। एए

विमोहित्ता वि पभू, अविमोहिता वि

वेमाणिणीए मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?

ह्ता वीइवएनजा।

गोयमा । पभू । तहेव

चतारि दंहगा।

(बृ० प० ४६६)

(মৃ০ १০।३७)

(হা০ १০।३८)

- २. आसस्म ण भते । धावमाणस्स कि 'खु-खु' ति करेति ?
- ३. गोयमा । आसस्त ण धावमाणस्त हिययस्त य जगस्त य अतरा एत्य ण 'कक्कडए नाम' वाए समुच्छइ । 'हिययस्म य जगयस्त य' त्ति हृदयस्य यक्ततश्च — दक्षिणकुक्षिगतोदरावयविकोपस्य (वृ० प० ५००)
- ४. जेण आसस्स धावमाणस्स 'खु-खु' त्ति करेति । (श० १०।३६)
- ४ 'खु-खु' ति प्ररूपित तच्च शब्द, स च भापारूपोऽपि स्यादिति भापाविशेपान् भापणीयत्वेन प्रदर्शयितुमाह-(वृ० प० ४००)
- ६ अह भते <sup>।</sup> आसइस्सामो 'आसइस्सामो' त्ति आश्रयिष्यामो वयमाश्रयणीय वस्तु (वृ० प० ५००)
- ७. सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो तुयिह्स्सामो 'सइस्सामो' ति शिवण्याम 'चिट्ठिस्सामो' ति उर्ध्व-स्थानेन स्थास्याम.""'तुयिह्स्सामो' ति सस्तारके भविष्याम (वृ० प० ५००)
- द्र. पण्णवणी ण एस भासा ? इत्यादिका भाषा कि प्रज्ञापनी ? (वृ० प० ५००)

लय: राम पूछै सुग्रीव

३२८ भगवती जोड़

बा० — "इहा वैसस्यू, सूवस्यू इत्यादिक अनागत काल आश्रयी कहै, जद तो निश्चयकारणी हुवै। पिण ए वर्त्तमान काल मे वैसण, सूवण का भाव, तिवारै कहै — हिवडा वेसू, शयन करू छू अथवा ए आश्रयवा जोग वस्तु हिवडा आश्रू छू, इत्यादि कह्या निश्चयकारिणी नहीं, ए वोलवा जोग छै ते माटै। ए भाषा ने प्रज्ञापनी कहियै, पिण मृषा न कहियै। वर्तमान रै समीप ए अनागत काल छै, ते माटैवर्तमान कार्य ने विषे आसइस्सामो ए अनागत नो पाठ कह्यु जणाय छै।" (ज० स०)

- ह. उपलक्षण पर वचन ए, ते कारण थी जाण।एहवी भापाजात नो, पूछचो प्रक्न पिछाण।
- १० विल भाषा नी जात नै, परूपवा योग जेह।
  पूछै वे गाथा करी, आमंत्रणी आदेह ।।
- ११ हे देवदत्त ! आमत्रणी, इत्यादिक अवधार। सत्य असत्य मिश्र नही, व्यवहार वृत्ति मभार।
- १२ आज्ञापनी कारज विषे, प्रवर्त्तावणहार। कहै अमुको कारज करो, घट कर इत्यादि विचार।।
- १३ याचणी मागे वस्तु नै, पूछणी अर्थ पूछेह। जेह अर्थ जाण्यो नही, जाणवा अर्थे जेह।।
- १४ प्रज्ञापनी सुविनीत ने, उपदेशरूप प्रयोग। निवर्त्त प्राणी-वब थकी, ते दीर्घायु अरोग।।
- १५. प्रत्याख्यानी जे हुवै, मागे तास निपेध। देण तणी इच्छा नहीं, मित मागो इम भेद।।
- १६ इच्छा-अनुलोमा इसी, वोलै इच्छा लार। किण कह्यो—ए कारज करा ?हा, मुक्त पिण रुचिकार।।
- १ आमतणी आणवणी, जायणी तह पुच्छणी य पण्णवणी।
  पच्चक्खाणी भासा, भासा इच्छाणुलोमा य।।
  अणभिग्गहिया भासा, भासा य अभिग्गहिम बोद्धव्वा।
  ससयकरणी भासा, बोयडमञ्बोयडा चेव।।

इन दो सग्रह गाथाओं में असत्यामृषा—व्यवहारभाषा के वारह प्रकार निरूपित है। प्रज्ञापना के भाषापद में इनका निरूपण इसी प्रकार हुआ है। प्रज्ञापनी भाषा के प्रस्तुत प्रकरण में प्रासणिक रूप से ये सग्रहगाथाएं लिखी हुई थी। किसी प्रतिलिपिकार ने इनका मूलपाठ में समावेश कर दिया। उत्तरकाल में भी यह परम्परा इसी रूप में चलती रही। वृत्तिकार ने भी मूल के साथ ही इनकी व्याख्या कर दी।

अगसुत्ताणि भाग २ पृ० ४७३ मे इनको पा० टि० (४) मे उद्घृत किया है। उसी के आधार पर इनको जोड के साथ न रखकर टिप्पण मे रखा गया है।

- १०. अनेन चोपलक्षणपरवचनेन भाषाविशेषाणामेवजाती याना प्रज्ञापनीयत्व पृष्टमथ भाषाजातीना तत्पृच्छति
   —'आमंतिण' गाहा (वृ० प० ५००)
- ११. तत्र आमन्त्रणी' हे देवदत्त । इत्यादिका, एपा च किल वस्तुनोऽविद्यायकत्वादिनिपेधकत्वाच्च सत्यादिभाषा- त्रयलक्षणवियोगतश्चासत्यामृपेति प्रज्ञापनादावृक्ता (वृ० प० ५००)
- १२. 'आणवणि' त्ति आज्ञापनी कार्ये परस्य प्रवत्तंनी यया घट कुरु (वृ० प० ५००)
- १३ 'जायणि' त्ति याचनी—वस्तुविशेषस्य देहीत्येवमार्गण-रूपा 'पुच्छणी य' त्ति प्रच्छनी—अविज्ञातस्य सदिग्धस्य वाऽर्थस्य ज्ञानार्थं तदिभयुक्तप्रेरणरूपा (वृ० प० ५००)
- १४ पण्णवणि' त्ति प्रज्ञापनी—विनेयस्योपदेशदानरूपा
  यथा—
  पाणवडाओ नियत्ता भवति दीवाज्या अयोगा म
- पाणवहाओ नियत्ता भवति दीहाउया अरोगा य (वृ० प० ५००) १५ 'पच्चक्खाणीभास' त्ति प्रत्याह्यानी याचमानस्या-
- १२ 'पच्चवेखाणामास' ति प्रत्याख्यानी याचमानस्या-दित्सा मे अतो मा मा याचस्वेत्यादि प्रत्याख्यानरूपा भाषा (वृ०प०५००)
- १६ 'इच्छाणुलोम' त्ति प्रतिपादियतुर्या इच्छा तदनुलोमा
  —तदनुकूला इच्छानुलोमा यथा कार्ये प्रेरितस्य एवमस्तु ममाप्यभिष्रेतमेतदिति वच (वृ० प० ५००)

- १७. अनिभग्रहिता जेहनों, अर्थ न होवे कोय। डित्थ डिवत्थवत शब्द नो, अर्थ नही छै सोय।। १८. अभिग्रहिता भाषा इसी, अर्थ सहित छै एह। घट वस्त्रादिक नी परे, तास अर्थ समभेह।।
- १६. ससयकरणी इक तणा, अर्थ वहू अवलोय। सैंघव शब्द कह्या छता, पुरुप लवण हय होय।।
- २० वीयड व्याकृत स्पष्ट जे, लोक प्रसिद्ध पिछाण। भाषा तणो प्रयोग ह्वै, गज अश्वादिक जाण॥
- २१ अवोयड ते प्रगट नहीं, शब्द अर्थ गम्भीर। अथवा मन्मन अक्षरे, अर्थ न समभै तीर।।
- २२. ए भापा भगवतजी । प्रज्ञापनी कहाय? स्पष्ट अर्थ प्रकटनपरा, मृपा न कहियै ताय?
- २३ जिन कहै हता गोयमा । आश्रयस्यू ए आदि। जाव मृपा भाषा नहीं, सेव भते । सेव भंते। साधि।।

#### सोरठा

- २४. निरर्थक वच ओलखाय, किह्यै डित्य डिवित्य भणी । एम वतावा ताय, योग्य परूपण इम हुवै ॥ २५. इहा पृच्छा अभिप्राय, आश्रयस्यू ए आदि दे । काल अनागत माय, कार्य न थया असत्य हुवै ॥ २६ उत्तर तेहनो आर्य, निरुचयकारणी ए नही । वर्त्तमान जे कार्य-काल मभ्दे वोल्या छता ॥
- वर्त्तमान जे कार्य-काल मक्ते बोल्या छता।। २७ वर्त्तमान रै जोग, बेसू सोबू इम कह्या।
- असत्य तणो न प्रयोग, इम निहं निश्चयकारणी ॥ २८. तथा पाठ मे जाण, आसइस्सामो बहु वचन ।
- इक वच विषय पिछाण, ए बहु वच किण कारणे।। २६ उत्तर तेहनों एह, आत्म विषे विल गुरु विषे।
- रह उत्तर तहना एह, आत्म विष वील गुरु विष ।
  एकार्थ विषयेह, आज्ञा छै वहु वचन नी।।
- ३०. तिण स्यू भाषा एह, किहयै किहवा योग्य ए। तेहनु नाम कहेह, प्रज्ञापनीज जाणवू॥

वा० — तथा आमत्रणी आदि पिण वस्तु विषे विधि ते कार्यं नो करिवो अनै प्रतिषेद्य ते कार्यं करिवा नो निषेध करिवो ए विद्वु नी कहिणहारी नही । पिण जे निरवद्य पुरुषार्थं साधनी प्रज्ञापनीज कहिये। प्रज्ञापनी कहिता ए भाषा वोलवा योग्य जाणवी।

३१. \*दशम शते तीजो कह्यो, दोयसौ वीसमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी, 'जय-जश' हरप विशाल।।

- १७. वर्णभग्गहिया भासा' अनिभगृहीता—अर्थानिभ-ग्रहेण योच्यते टित्यादिवत् (यृ० प० ५००)
- १८. 'भासा य अभिग्गहमि वोद्धव्वा' भाषा चाभिग्रहे वोद्धव्या—अर्थमभिगृद्य योच्यते घटादिवत्

(बृ० प० ५००)

- १६. 'ससयकरणी भास' त्ति याऽनेकार्यप्रतिपत्तिकरी सा सशयकरणी यथा सैन्धवशब्द. पुरुपलवणवाजिपु वर्त्तमान इति (वृ० प० ५००)
- २०. 'वोयड' त्ति व्याकृता लोकप्रतीतशव्दार्था (वृ० प० ५००)
- २१. 'अन्वोयड' त्ति अन्याकृता—गम्भीरणन्दार्था मनमना-क्षरप्रयुक्ता वाडनाविभीवितार्था (वृ० प० ५००)
- २२. 'पन्नवणी ण' ति प्रज्ञाप्यतेऽर्थोऽनयेति प्रज्ञापनी— वर्थकथनी वक्तव्येत्ययःं: (वृ० प० ५००) न एसा भासा मीसा ?
- २३. हता गोयमा । आसइस्सामो त चेव जाव (स॰ पा॰) न एसा भासा मोसा। सेव भते ! सेव भते ! ति । (श० १०।४०,४१)
- २४. पृच्छतोऽयमभिप्राय —आश्रियप्याम इत्यादिका भाषा भविष्यत्कालविषया सा चान्तरायसम्भवेन व्यभि-चारिष्यपि स्यात् (वृ० प० ५००)
- २६,२७ उत्तर तु 'हता' इत्यादि इदमत्र हृदयम् आश्रियिप्याम इत्यादिकाऽनवद्यारणत्याद्वर्त्तमानयोगे- नेत्येतद्विकत्पगर्भत्वात् (मृ० प० ५००)
- २६,३०. गुरौ चैकार्थत्वेऽपि बहुवचनस्यानुमतत्वात्प्रज्ञा-पन्येव (वृ० प० ५००)

वा० — तथाऽऽमन्त्रण्यादिकाऽिप वस्तुनो विधिप्रतिपेधा-विधायकत्वेऽिप या निरवद्यपुरुपार्थसाधनी सा प्रज्ञा-पन्येवेति । (वृ० प० ५००)

३१. दशमशते तृतीयोद्देशक. (वृ० प० ५००)

<sup>&</sup>lt;sup>\*</sup>लय: राम पूछे सुग्रीव

#### दूहा

तृतीय उद्देशक देव नी, वक्तव्यता आख्यात।
 तुर्य उदेशे पिण वली, अमर तणो अवदात।।
 तिण काले ने तिण समय, वाणिय ग्राम पिछाण।
 नाम नगर तस वण्णओ, दूतिपलास उद्यान।।
 त्या श्री वीर समोसर्या, यावत परषद जान।
 सुण वाणी स्वामी तणी, पोंहती निज-निज स्थान।।
 तिण काले ने तिण समय, वीरप्रभु नों सार।
 अतेवासी ज्येष्ठ वर, इद्रभूति अणगार।।
 प्यावत जानू ऊर्द्ध किर, अघो सीस वर घ्यान।
 सजम तप किर आतमा भावत विचरै जान।।

६. तिण काले ने तिण समय, स्वाम तणो सुखकार।

अतेवासी गुणनिलो, सामहित्थ

७ प्रकृति स्वभावे भद्र वर, जिम रोहो गुणवत।
यावत जानू ऊर्द्ध करि, यावत मुनि विचरत।।

द. \*सामहित्य ने तिण समय गुणघारी रे, कांइ जात—प्रवर्त्ती जाण।

मुनि सुखकारी रे।
श्रद्धा ते इच्छा कही गुणघारी रे, प्रश्न तणी पहिछाण।

मुनि सुखकारी रे।

अणगार ॥

- ह. यावत ऊठी आवियो गुणधारी रे, भगवत गोतम पास। तीन प्रदक्षिणा दे वदै गुणधारी रे, जाव करी पर्युपास।।
- १० छै भगवत <sup>।</sup> चमर तणै गुणघारी रे, काइ असुर इद्र नै एव। असुर तणै राजा तणै गुणघारी रे, तायित्रसगा देव।।

## सोरठा

- ११ त्रायस्त्रित्रशा जाण, सुर तेतीस सुहामणा।
  मत्री तुल्य पिछाण, एहत् आख्यो वृत्ति मे।।
- १२ \*गोतम कहै हता अत्थि गुणधारी रे, ते किण अर्थे स्वाम। त्रायित्रसगा चमर नै गुणधारी रे, आप कह्या अभिराम?
- १३. इम निश्चै गोयम । कहै गुणघारी रे, हे सामहित्थ अणगार ॥ तिण कालै नै तिण समय गुणघारी रे, इण जबूद्वीप मफार ॥
- १४. भरत क्षेत्र माहे भली गुणधारी रे, काकदी अभिधान। नगरी ऋद्ध समृद्ध छै गुणधारी रे, तसु वर्णन पहिछान।।
- \*लय : मोजी तुररा रे १. अगसुत्ताणि भार २ श० १०।४६ मे यहा 'तावत्तीसगा' पाठ है । 'तायत्तीसगा' को पाठान्तन मे लिया गया है ।

- १. तृतीयोद्देशके देववक्तव्यतोक्ता, चतुर्थेप्यसावेबोच्यते (वृ० प० ५०१)
- २. तेण कालेण तेण समएण वाणियग्गामे नयरे होत्या— वण्णओ । दूतिपलासए चेइए ।
- ३. सामी समोसढे जाव परिसा पिंडगया । (श० १०१४२)
- ४. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावी-रस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूई नाम अणगारे
- जाव उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। (श० १०१४३)
- ६. तेण कालेण तेणं समएणं समणस्स भगवशो महावी-रस्स अंतेवासी सामहत्यी नामं अणगारे
- ७ पगइभद्दए जहा रोहे जाव (सं० पा०) उड्ढजाणू जाव विहरइ। (श० १०।४४)
- तए ण से सामहत्थी अणगारे जायसङ्ढे
- शाव उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेता जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता भगव गोयम तिक्खुत्तो जाव पञ्जुवासमाणे एव वयासी—

(হা০ १০।४५)

- १० अत्थिण भते । चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा । तावत्तीसगा देवा ?
- ११ 'तायत्तीसग' ति त्रायस्त्रिशा-मन्त्रिविकल्पा.

(वृ० प० ५०२)

- १२. हता अस्य । (श० १०।४६) से केणट्ठेण भते । चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार-रण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा?
- १३. एव खलु सामहत्यी । तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुद्दीचे दीवे
- १४. भारहे वासे कायदी नाम नयरी होत्या-वणाओ।

- १५. तिण काकंदी नगरी विषे गुणधारी रे, मित्र हुंना नेतीस। मांहोमाहि सखाडया गुणधारी रे, करण सहाय सरीस।।
- १६. गाथापित कुट्व तणा गुणघारी रे, कांड नायक ते तेतीस । मुनी मृसकारी रे । श्रमणोपासक छै सहू मुनिराया रे, महा ऋद्वियत जगीस ॥

श्रमणीपासक छ सह मुनिराया र, महा ऋ।द्वयत जगीस ॥ सुण मुनिराया रे ॥

सुण मुनिराया रे॥

- १७. यावत अपरिभूत छै मुनिराया रे, कांड घन करिनें अवलोय। सुण मुनिराया रे। पराभवि कोई ना सकै मुनिराया रे, कांड गज सकै नहिं कोय।।
- १८. जाण्या जीव अजीव ने मुनिराया रे, काङ पुन्य पाप पहिद्धान । वर्णव तास वखाणवो मुनिराया रे, यावत विचरै जान ॥
- १६. तेतीस सहाया तिण समय मुनिराया रे, काइ गाथापती गिणाय। कुटव तणा नायक तिके मुनिराया रे, काइ समणोपासक ताय।।
- २०. पहिला उत्कृष्ट भाव थी मुनिराया रे, उग्र कह्या सुपकार। विल भला अनुष्ठान थी मुनिराया रे, काइ उग्र विहार आचार॥
- २१. सविग्गा शिवगमन नी मुनिराया रे, कांइ उच्छा तसु अभिलाप। तथा डरे ससार थी मुनिराया रे, भ्रमण तणी भय भास।।
- २२. सविग्गविहारी ते बली मुनिराया रे, काइ सविग्ग तमु अनुष्ठाण । रूडे अनुष्ठाने रता मुनिराया रे, काइ पूरव काल पिछाण ॥
- २३ पर्छ पासत्था ते थया मुनिराया रे, काड ज्ञान दर्शन थी बार। बाहिर देश चारित्र थकी मुनिराया रे,
- काड सम्यन्तव विरित निवार ॥ २४ पासत्थिवहारी ते थया मुनिराया रे, काइ छेहडा लग पिण जाण । पासत्थिपणो मूक्यो नहीं मुनिराया रे, काइ एहवा मूढ अयाण ॥
- २५ ओसन्ना थाका नी परं मुनिराया रे, काड खेदातुर जिम जेह। पवर भला अनुष्ठान थी मुनिराया रे, काइ थया आलसू तेह।।
- २६. वले ओसन्नविहारिका मुनिराया रे, कांड छेहडा ताइ ताय। शिथिलाचारी ते थया मुनिराया रे, काइ पाछा मडिया नाय।।
- २७ वले कुशीला ते थया मुनिराया रे, काइ ज्ञानादिक गुण मार। तेह तणा आचार ने मुनिराया रे, विराधना अधिकार॥
- २८ वले कुगीलविहारिका मुनिराया रे, काइ छेहटा लग पहिछाण। ज्ञानादिक आचार ना मुनिराया रे, अधिक विराधक जाण।।

- १५, तत्य ण कार्यथीए नयगिए नायशीमं महाया
  त्रयस्त्रिशत्परिमाणाः 'महायाः' परम्परेण माहायककारिणः (बृ० प० ५०२)
- १६. गाहायर् ममणोयामया पर्यिमति—अङ्हा 'गृहपतय.' कुटुम्बनायका (यृ० प० ५०२)
- १७. जाय बहुजणस्य अपरिभूता
- १८. अभिगयजीवाजीवा, उवलद्भपुण्यपावा जात ... विहरति । (म० १०४७)
- १६ तए णंते तायतीय महाया गाहावई ममणोतानया
- २०. पुट्चि चगा, उगानिहारी 'उगा' ति उग्रा उदात्ता भावत. 'उगाविहारि' नि उप्रात्ताचारा: गरनुष्ठानस्वात् (यु० प०-५०२)
- २१. मविग्गा (सविग्गा —मोसं प्रति प्रचित्ता. गमार-भीरयो वा (यू० प० ५०२)
- २२. सविगाधिहारी भवित्ता
  'मविगाधिहारि' ति मंबिगाधिहार.—ग्रविगानुष्ठानमस्ति येपा ते तथा (वृ० प० ५०२)
- २३. तत्रो पच्छा पासत्या 'पासित्य' त्ति ज्ञानादिवहिर्देत्तिनः (वृ० प० ५०२)
- २४. पासत्यविहारी पानत्यविहारी' ति आफाल पाव्यं स्थममाचारा (यृ० प० ४०२)
- २४. ओसन्ना 'नोसण्णि' त्ति अयसन्ना इय—श्रान्ता इयायसन्ना आतस्यादनुष्ठानासम्यनकरणात् (वृ० ५० ५०२)
- २६. ओसन्नविहारी 'ओसन्नविहार' ति आजन्मदियिलाचारा इत्यर्थे (वृ० प० ५०२)
- २७. गुसीला 'कुसील' ति ज्ञानाद्याचारविराघनात् (वृ० प० ५०२)
- २८. कुसीलविहारी
  'कुसीलविहारि' ति बाजन्मापि ज्ञानाद्याचारविराधनात्
  (वृ० प० ५०२)

- २६. विल अपछदाते थया मुनिराया रे, निहं आगम तणो विचार। स्व-इच्छाचारी सहू मुनिराया रे, कांइ थाप जिनाज्ञा वार।
- ३०. अपच्छदविहारी ते थया मुनिराया रे, काइ छेहडा ताई घार । अपछदपणो नही छोडियो मुनिराया रे, काइ थाप करें अविचार ॥
- ३१. वहु वर्षे श्रावकपणो मुनिराया रे, कांइ पाली ने पर्याय। सलेखणा अर्द्धमास नी मुनिरायारे, कांइ तीस भक्त छेदाय।।
- ३२. ते स्थानक विण पडिकम्यां मुनिराया रे, आलोयां विण आम । मरण तणे अवसर सह मुनिराया रे, कांइ काल करीने ताम ॥
- ३३. चमर असुर ना इद्र ना मुनिराया रे, असुरराय नां जेह। तीवतीसगा सुरपण मुनिराया रे, कांइ मित्रपण उपजेह।।
- ३४. सामहित्य तिण अवसरे मुनिराया रे, कांइ गोयम प्रति पूछत । हे भदत । जे दिवस थी मुनिराया रे, ए तावतीसगा हुंत ।
- ३५. तेतीस सहाया गाहावई मुनिराया रे, कांइ काकंदी नां जाण। मित्रपणे ए ऊपनां मुनिराया रे, कांइ चमर तणे ए आण॥
- ३६. ते दिन थी कहिये अछै मुनिराया रे, असुरेद्र ने ताय। तीवत्तीसगा देवता मुनिराया रे, पिण पहिला कहिये नाय॥
- ३७ भगवत! गोतम नै तदा मुनिराया रे, काइ सामहित्य अणगार। कह्ये छते सकित थया मुनिराया रे, काखित थया तिवार।।
- ३८ मन वितिगिच्छा ऊपनी मुनिराया रे, काइ ऊठी ऊभा थाय। सामहित्य साथे तदा मुनिराया रे, वीर समीपे आय॥
- ३६ भगवत श्री महावीर नै मुनिराया रे, वदै वच स्तुति ताय। नमस्कार शिर नाम नै मुनिराया रे, कांइ वोलै एहवी वाय॥
- ४० छै भगवत । चमर तण मुनिराया रे, काइ तावत्तीसगा देव ? जिन भाखे हता अत्थि मुनिराया रे, किण अर्थे प्रभु । भेव ?
- ४१. इम तिम हीज कह्यो सह मुनिराया रे, काइ विण आलोया दीस। देवपणे ए ऊपना मुनिराया रे, काइ चमर तणे तेतीस।।
- ४२ जे दिन थी ए ऊपना मुनिराया रे, काइ तावत्तीसगा आय। ते दिन थी कहियै अर्छ मुनिराया रे, तिण पहिला कहियै नाय।।
- ४३ जिन कहै अर्थ समर्थ नही मुनिराया रे, इम निश्चै करि ताम। तावत्तीसगा चमर नै मुनिराया रे, कह्या शाश्वता नाम।।
- ् ४४. नहीं कदापि निंह हुआ मुनिराया रे, काड नहीं हुवै इस नाय। नहीं हुसै इस पिण नहीं मुनिराया रे, काइ छता काल त्रिहु माय।।

- २६. अहाच्छेदा
  - 'अहाछद' त्ति यथाकथञ्चिन्नागमपरतन्त्रतया छन्दः अभिप्रायो बोध. प्रवचनार्थेषु येषां ते यथाच्छन्दाः (वृ० प० ५०२)
- ३०. अहाच्छदिवहारी
  'अहाच्छदिवहारि' त्ति आजन्मापि यथाच्छन्दा एवेति
  (वृ० प० ५०२)
- ३१. वहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, अद्ध-मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेत्ता, तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेता
- ३२. तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिनर्कता कालमासे काल किच्चा
- ३४,३५. जप्पभिइ च ण भते ! ते कायदगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ता,
- ३६. तप्पभिद्य च ण भंते ! एव वृच्चइ—चमरस्स असुरि-दस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्ती-सगा देवा ?
- ३७ तए ण भगव गोयमे सामहत्थिणा अणगारेण एवं वृत्ते समाणे सिकए किखए
- ३ प्तः वितिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेता सामहित्यणा अणगारेण सिंद्ध जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,
- ३६. उवागिकळता समण भगव महावीर वदइ, नमसइ विदत्ता नमसित्ता एवं वयासी— (श० १०।४६)
- ४०. अस्थि ण भते । चमरस्म असुरिदस्स असुरकुमार-रण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ? हता अस्थि । (श० १०।५०) से केणट्ठेण भते । एव वुच्चइ—
- ४१. एव त चेव सन्व भाणियन्व जाव
- ४३ नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा । चमरस्स ण असुर्रि-दस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगाण देवाण सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—
- ४४ ज न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ

४५ हुवा हुवै होस्यै वली मुनिराया रे, काइ यात्रत नित्य पिछाण। अन्वोच्छित्त नय आश्रयी मुनिराया रे, काइ देव शास्वता जाण।।

४६. चवे अनेरा देवता मुनिराया रे, कांइ अन्य अमर उपजाय। पिण स्थानक ने नाम थी मुनिराया रे, कांड एहनों विच्छेद नाय।।

४७ विल वेरोचन इद्र ने गुणवारी रे,

छै तावत्तीसगा भत ! महागुणघारी रे।

जिन भाग्वे हंता अतिथ गुणघारी रे,

काङ किण अर्थे प्रभु । हुत । महागुणवारी रे ॥

४८ जिन भाखें सुण गोयमा । मुनिराया रे,

इम निश्चै अवलोय । मुण मुनिराया रे ।

तिण कालै ने तिण समें मुनिराया रे,

इण जंबू भरत मे जोय। सुण मुनिराया रे॥

- ४६. विभेल एहवै नाम थो मुनिराया रे, सन्निवेस मुखदाय। वर्णन तास वयाणवो मुनिराया रे, तिहा वसै तेतीस सहाय।।
- ५०. जेम चमर ना आलिया मुनिराया रे, तिम विन ने कहिवाय। जाव तेतीस् ऊपना मुनिराया रे, मित्रपण मुर आय।
- ५१. हे भदंत । जे दिवस थी मुनिराया रे, विभेलगा तेतीस। विभेल ना वासी तिक मुनिराया रे, काइ सखाइया सुजगीस।
- ५२ विल वैरोचनराय नै मुनिराया रे, शेप तिमज कहिवेह ॥ जाव नित्य ते आखिया मुनिराया रे, अब्बोच्छित्त नय एह ॥
- ५३. चवै अनेरा देवता मुनिराया रे, काइ वली अनेरा देव। तिहा ऊपजै आयने मुनिराया रे, काइ भारवै जिन ए भेव।। ५४ प्रभु! नागकुमार ना इद्र ने गुणवारी रे,

काइ नागराय ने ताम । महागुण घारी रे ।

घरण तणै छै देवता गुणघारी रे,

काइ तावत्तीसगा नाम ? महागुणधारी रे॥

- प्र् जिन भार्ज हता अत्य गुणवारी रे, किण अर्थे ए वाय ? जिन कहै नागकुमार ना गुणवारी रे, काड इंद्र तणे कहिवाय।।
- ४६ नागकुमार ना राय ने गुणघारी रे. काड घरण तणे अभिराम । तावत्तीसगा देवता गुणघारी रे, काइ कह्या शास्त्रता नाम ॥
- पूछ. जे नहीं कदापि निंह हुआ गुणवारी रे, काड यावत अन्य चवत।

  वले अनेरा ऊपजे गुणवारी रे, काड पूरवली पर हुत।

५८ इमितिज भूतानद ने मुनिराया रे,

काइ एव जाव जगीस । सुण मुनिराया रे । महाघोप ने पिण कह्यो मुनिराया रे,

ए वीस इद्र ने दीस ।। सुण मुनिराया रे ॥

५६ छै प्रभु । शक्र सुरिद्र ने गुणवारी रे,

काइ देवराय ने जोय। महागुणवारी रे।

तावत्तीसर्गां देवता गुणवारी रे,

काइ जिन कहै हता होय।। महागुणवारी रे।।

- ४५. भवितु य, भवित य, भविरमद य घुवे नियए मानए अनुदाए अन्यए अवद्विए निच्चे, अञ्जोन्छित्तिनयहुयाए ४६. अण्णे चयति, अण्णे उवपञ्जनि । (१० १०।५१)
- ४७. अस्यि णं भते । वितस्य वहरोयणियम्य वहरोयण-रण्यो तावतीसमा देवा-तावतीममा देवा ? हंता अस्य । (घ० १०१५२) मे केणट्ठेण भते । एवं युच्चट—
- ४८. एव चलु गोयमा । तेण कालेण तेण गमएण इहेन जबुद्दीवे दीवे भारहे वागे
- ४६ वेभेने नाम मिण्यवेने होत्या--यण्यश्री । तत्य णं येभेले मिण्यवेने तायत्तीम सहाया गाहावई समणो-यामया परिवमति
- ५०. जहा चमरस्म जाव तावत्तीसगदेवत्ताए उववण्या । (१०१०।५३)
- ४१. जप्पभिष्ठ च णं भते ! ते वेभेनगा तायत्तीमं महाया गाहावई ममणीवासगा
- ५२. बिलस्म वहरोयणिवस्म वहरोयणरण्यो नावसीमग-देवसाए उववन्ना, मेम त चेव जाव निच्चे, अव्योचिष्ट-सिनयद्वयाए
- ५३. अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति । (१० १०।५४)
- ५४. अत्य ण भते <sup>1</sup> घरणस्य नागकुमारिदस्त नागकुमार-रण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीमगा देवा ?
- ५५,५६. हंता थित्य । (१० १०।५५) मे केणट्ठेण जाव तावत्तीमगा देवा-तावत्तीसगा देवा? गोयमा ! धरणस्म नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगाणं देवाणं सामए नामघेज्जे पण्णत्ते—
- ५७. जं न कया६ नासी जाव अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति
- ४८. एवं भूयाणदस्स वि, एव जाव महाघोसस्स । (श॰ १०।४६)
- ५६ अत्य णं भते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो तावत्ती-सगा देवा-तावत्तीसगा देवा ? -हता अत्य । (श० १०।५७)

- ६० किण अर्थे प्रभु । इम कह्यो गुणघारी रे, काइ तव भाखें जिनराय। महागुणघारी रे। तिण काले ने तिण समै मुनिराया रे,
  - इण जबू भरत रै माय ! सुण मुनिराया रे ॥
- ६१. पालए नामें हुंतो मुनिराया रे, काड सन्निवेस सुखदाय। वर्णन तास वखाणवो मुनिराया रे, तिहा वसै तेतीस सहाय।।
- ६२. कुटव तणा नायक सहू मुनिराया रे, काङ श्रमणोपासक हुंत। जेम चमर नां तिम इहा मुनिराया रे, काइ जावत ते विचरत।।
- ६३. तेतीस सहाया गाहावई मुनिराया रे, काइ श्रमणोपासक साव। पहिला पिण गुद्ध भाव था मुनिराया रे, काइ पाछै पिण गुद्ध भाव।।
- ६४. उग्रा उत्कृष्ट भाव थी मुनिराया रे, उग्रविहार आचार। सविग्गा इच्छा शिव तणी मुनिराया रे, विल सविग्गाविहार।।
- ६५ वहु वरसा श्रावकपणो मुनिराया रे, पाली नै पर्याय। मास तणी सलेखणा मुनिराया रे, साठ भक्त छेदाय।।
- ६६ सह आलोई पडिकमी मुनिराया रे, काङ पाम्या समाघी तेह। काल समय करि काल ने मुनिराया रे, जाव ऊपना जेह।। ६७ हे भदत! जे दिवस थी गुणधारी रे,

काइ पाला ना वसवान । महागुणधारी रे । तेतीस सहाया गाहावई मुनिराया रे,

कांइ श्रमणोपासक जान ॥ सुण मुनिराया रे ॥

- ६न. शेप कह्यो जिम चमर नै मुिराया रे, तिम सगलो कहिवाय। चवै अनेरा देवता मुनिराया रे, काइ अन्य ऊपजै आय।।
- इह छै भदत ! ईशाण ने मुनिराया रे, जेम शक्र तिम एह। णवर चपा ने विषे मुनिराया रे, काइ यावत उपना जेह।।
- ७०. जे दिन थी प्रभु चिपज्जा' मुनिराया रे, तेतीस सहाया हुत। शेष्वात तिमहीज सहु मुनिराया रे, काइ जाव अन्य उपजत।।
- ७१ छै प्रभु । सनतकुमार ने मुनिराया रे, देव इद्र ने देख। देव तणा राजा तणे मुनिराया रे, काइ तावत्तीसगा पेख?
- ७२ जिन भार्ष हता अत्य मुनिराया रे, ते किण अर्थे स्वाम ! जैम कह्यो छै घरण ने मुनिराया रे, काइ निमहिज कहिवू ताम ॥

#### सोरठा

- ७३ घरण तणे अधिकार, पूरव भव चाल्यो नथी। तेम इहा सुनिचार, निह पूर्वभव वारता॥ -७४ \*इम यावत पाणत तणे मुनिराया रे, काइ अच्युत ने पिण एम। जाव अन्य सुर ऊपजे मुनिराया रे, काइ सेव भते ! तेम॥
- \* लव: मोजी तुररा रे
- १. चपा नगरी के वासी।

- ६०. से केणट्ठेणं जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ? एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे ]
- ६१. पालए नाम सिण्णवेसे होत्या—वण्णओ । तत्य ण पालए सिण्णवेसे तायत्तीस सहाया
- ६२. गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव विहरति। (श० १०।५५)
- ६३. तए ण ते तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया पुर्विव पि पच्छा वि
- ६४ उग्गा उग्गविहारी संविग्गा सविग्गविहारी
- ६५. वहूई वासाई समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, मासि-याए सलेहणाए अत्ताण झूसेत्ता, सिंटु भत्ताई अण-सणाए छेदेता
- ६६. आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा जाव (स० पा०) उववन्ता।
- ६७ जप्पभिइ च ण भते । ते पालगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा,
- ६८. सेस जहा चमरस्स जाव अण्णे उववज्जिति। (श० १०।५६)
- ६६. अत्थि ण भते । ईसाणस्स देविवस्स देवरण्णो ताव-त्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ? एवं जहा सक्कस्स, नवर—चपाए नयरीए जाव उववण्णा
- ७०. जप्पभिइ च ण भते !

  ते चिपिज्जा तायत्तीस सहाया, सेस त चेव जाव अण्णे

  उववज्जति । (श० १०।६०)
- ७१ अस्य ण भते । सणकुमारस्स देविदस्स देवरण्गो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
- ७२ हता अत्यि। (श० १०।६१) से केणट्ठेण <sup>२</sup> जहा धरणस्स तहेव
- ७४. एव जाव पाणयस्स, एव अच्चुयस्स जाव अण्णे उवज्जति। सेव भते । सेव भते त्ति। (श० १०।६२,६३)

## सोरठा

७५. तीजा थकी विचार, स्वर्ग वारमा इद्र नें। घरण जेम अवघार, पूरव भव न कहाा प्रभु॥ ७६. चमर वली ना जाण, सोघर्म ने ईशाण नां। तावत्तीसगा माण, पाछिल भव जिन आगियो॥

७७. \*दशमे शत चोथो कह्यो गुण्यारी रे,

वेसी इकवीसमी ढाल। महा गुणघारी रे।

भिवसु भारीमाल ऋपिराय थी गुणघारी रे,

कांड 'जय-जर्श' मंगलमाल ॥ महागुणघारी रे ॥ दशमशते चतुर्थोद्देशकार्थः ॥१०।४॥

## हाल: २२२

#### दूहा

- १. तुर्य उदेशे सुर तणी, वक्तव्यता दायंत। पचमुदेश सुरी तणी, ते निसुणो घर यत।।
- २. तिण काले ने तिण समय, नगर राजगृह जान। यावत परिषद वंदने, पहुंती अपणे स्थान॥
- ३ तिण काले नै तिण समय, वीर तणा वहु शीस। भगवत स्थविर गुणे भला, गणहितकार गणीस।।
- ४. जातिवंत इत्यादि गुण, जिम अप्टम जतकेह। सप्तमुदेश विषे कह्यो, यावत विचरे जेह।।
- ५ ते भगवंत स्थविर तदा, जात—प्रवर्ती जास। श्रद्धा इच्छा प्रश्न नी, जातससया तास।।
- ६ जिम गोतम स्वामी तिमज, यावत वारू सेव। करता थकाज इम कहै, अलगो करि अहमेव।।

†अव सुणले प्राणी! ऋद्वि चमरादि नी जी ॥ (घ्रुपदं)

- ७. हे भदंत । असुरिंद्र नै काइ, असुरकुमार नो राय। चमर तणे छै केतली जी, अग्रमहेणी ताय॥
- इ. हे आर्यो । इम जिन कहै, तसु अग्रमहेपी पच।
   काली राई रयणी कही जी, विज्जुमेघा सच।।
- एक-एक देवी तिहा कार्ड, अठ-अठ सहस्र उदार।
   देवी ना परिवार ने जी, इम भाख्यो जगतार।।
- १०. समर्थ ते इक-इक सुरी, अन्य अठ-आठ हजार। सुरी रूप परिवार छै जी, विकुर्वण ने सार?

- पनुर्थोद्देशके देववक्तव्यतोक्ना, पञ्चमे सु देवीवक्त-व्यतोच्यते (यू० प० ५०२)
- २. तेणं कालेण तेण नमएण रायगिहे नामं नयरे । गुण-मिलए चेदए जाय परिमा पटिगया ।
- ३. तेण कानेण तेण ममएणं ममणस्य भगवनो महाबीरस्य बहुवे अंतेवासी घेरा भगवंतो
- ४. जाइसंपन्ना जहा अट्टमे सए सत्तमुद्देमए (सू० २७२) जाय संजमेणं तयसा अध्याणं भावेमाणा विहरति ।
- ४. तए ण ते घेरा भगवंती जायमब्दा जायसंमया
- ६. जहा गोयमसामी जाव पञ्जुवासमाणा एवं वयासी— (६१० १०।६४)
- ७. चमरस्त ण भंते असुरिदस्त असुरकुमाररण्णो करि अग्गमहिसीओ पण्णताओ ?
- ब. अज्जो । पंच अग्गमिहसीको पण्णत्ताओ, त जहा—
   काली, रायी, रयणी, विज्जू, मेहा ।
- स्तर्य ण एगमेगाए देवीए अट्टट्ट देवीमहस्स परिवारो पण्णतो । (श० १०।६४)
- १०. पमू णं भते ! ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ अट्टट्ट देवी-सहस्साइ परियारं विज्ञित्तए ?

\*लय: मोजी तुररा रे

†लय: अब लगज्या प्राणी ! चरणे प्रमु तणे जी

३३६ भगवती-जोड़

- ११. पूर्व सहित ए पार्छली कांइ, सुरी सहस्र चालीस। तुटित इसे नामे करी जी, काइ वर्ग कह्यो जगदीश।।
- १२ हे भदत ! समर्थ अछै काइ, चमर असुर नों इद। राजा असुरकुमार नो जी कांइ, महापुन्यवत सोहद।।
- १३ चमरचंचा नामे भली काइ, राजधानी रै माय। सभा सुधर्मा ने विषे जी काइ, चमर सिंघासण ताय॥
- १४ तुटित वर्ग साथे तिहा काइ, देव संवधी भोग। भोगवतो थको विचरवा जी काइ, समर्थ चमर प्रयोग?
- १४ जिन कहै अर्थ समर्थ नहीं काइ, प्रभु । किण अर्थे ए वाय। चमर सुघर्मा भोग ने जी काइ, भोगविवा समर्थ नाय?
- १६. हे आर्यो <sup>।</sup> इम जिन कहै काइ, चमर असुर नों राय । चमरचचा नामे भली जी काइ, राजघानी रै मांय ।।
- १७ सभा सुघर्मा ने विषे काइ, माणवक इण नाम। चैत्य स्तभ छै तिण विषे जी काइ, डावा वहु अभिराम।।
- १८. वष्त्र माहि ते डावडा काइ, वृत्त गोलकाकार। रहै तिहा जिन नी वहू जी काइ, दाढा प्रमुख उदार।।

#### सोरठा

- १६ 'जिन नी दाढा होय, तो छै एह अशाश्वती। असख काल अवलोय, तेहनी स्थिती कही नथी॥
- २० जिन-दाढा आकार, पुद्गल स्थित्या तेहनै। कहि जिन-दाढा सार, तो तसु कहियै शाश्वती।।
- २१ सुरियाभादिक सार, तसु पिण जिन-दाढा कही। ए दाढा आकार, पुद्गल-स्थित्या तेह छै।।
- २२ जिन-दाढा तो जोय, इंद्र विना अन्य सुर तणे। कर नहिं आवे कोय, प्रवर न्याय अवलोकियै।।
- २३. सौधर्म नै ईशाण, चमर वली चिहुं इद्र ने। जिन-दाढा पिण जाण, पिण छै तेह अशाश्वती।।' [ज० स०]
- २४. \*चमर असुर ना राय ने काइ, अन्य वहु असुरकुमार। देव अने देवी वली जी काइ, ए जिन-दाढा विचार॥
- २५. चदन आदि सुगध थी काइ, अर्छ अरचवा जोग। वदन वच स्तुति जोग छै जी काइ, नमण करेवा जोग।।
- २६ वलै पूजवा जोग छै काइ, पुष्पादिक थी एह। विल सत्कारण जोग छै जी काइ, विल सन्मान करेह।।
- \*लय: अब लगज्या प्राणी ! चरणे प्रमु तणे जी
- १ एणी पर सपूर्वापर समाते चालीस सहस्र देवी आठ सहस्रगुणां करियै तिवारे बत्तीस कोड देवागना थावै तेहनै तुटित वर्ग कहियै।

११. एवामेव सपुन्वावरेण चत्तालीसं देवीसहस्सा । सेत्तं तुडिए । (श० १०१६६) 'से तं तुडिए' ति तुडिकं नाम वर्गः

(वृ० प० ५०५)

- १२. पभू ण भते । चमरे असुरिदे असुरकुमारराया
- चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरिस सीहासणिस
- १४. तुडिएणं सिद्धं दिव्वाइं भोगभोगाइ भुजमाणे विहरि-त्तए ?
- १५ नो इणट्ठे समट्ठे। (श० १०।६७) से केणट्ठेण भते । एवं वुच्चइ — नो पभू चमरे असुरिदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए जाव विहरित्तए ?
- १६. अज्जो ! चमरस्स ण असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचचाए रायहाणीए
- १७. सभाए सुहम्माए, माणवए चेइयखभे
- १८. वइरामएसु गोल-वट्ट-समुग्गएसु बहुओ जिणसकहाओ सन्निक्खिताओ चिट्ठति, गोलकाकारा वृत्तसमुद्गकाः गोलवृत्तसमुद्गकास्तेपु (वृ० प० ५०५)

२४,२५. जाओ ण चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो अण्णेंसि च वहूण असुरकुमाराण देवाण य देवीण य अच्चिणिज्जाओ वदिणिज्जाओ नमसिणिज्जाओ 'अच्चिणिज्जाओ' ति चन्दनादिना 'वदिणिज्जाओ' ति स्तुतिभि 'नमसिणिज्जाओ' प्रणामत (वृ० प० ५०५)

२६. पूर्याणज्जाओ सक्काराणज्जाओ सम्माणाणज्जाओ 'पूर्याणज्जाओ' पुष्पै: (वृ० प० ५०५)

२७. कत्याणकारी जाणने कांइ, विल जाणी मंगलीक। दैवत जाणी तेहने जी काइ, चित्त प्रसन्नकारीक।। २८ इम जाणी वहु असुर ने काइ, देव देवी ने जाण। सेवा करिवा जोग छै जी कांइ, ए मग लोकिक पिछाण।। २९. तास पूज्य जाणी करी काइ, भोग भोगविवा तेह। चमर तिको समर्थ नही जी काइ, रीत अनादी एह।।

## सोरठा

३०. पिण रायप्रश्रेणी' माय, राज वेसवा अवसरे। प्रतिमा दाढा ताय, पूजै छै सुरियाभ सुर।। ३१. पहिला पछै पिछाण, पाठ हियाए आदि दे। ए मग लौकिक जाण, पिण पेच्चा परभव नही।। ३२ निस्सेसाए पहिछाण, विघ्न तणी ए मोक्ष है। पच्छा शब्दे जाण, इह भव द्रव्य मगलीक ए ।। ३३. वाद्या श्री वर्द्धमान, ते सुरियाभे देवता। पेच्चा पाठ पिछान, परभव हियाए प्रमुख।। ३४. निस्सेसाए पहिछाण, ए परभव नी मोक्ष है। पेच्चा शब्दे जाण, लोकोत्तर मारग कह्यो।। ३५. खघक ने अधिकार, सूत्र भगवती भें कह्यो। लाय थकी वन वार, काढै जे गाथापती।। ३६. पहिला पछैज होय, हियाए प्रमुख कह्या। प्रतिमा पूजै सोय, तेह सरीखो पाठँ त्या।। ३७. निस्सेसाए सुविचार, दालिद्र नी ए मोक्ष है। पच्छा रव अनुसार, इह भव हित सुख मोक्ष है।। ३८. खघक दीक्षा लीघ, परलोके हित सुख प्रभु। ए लोकोत्तर सीघ, निस्सेसाए परलोक शिव।। ३६. लाय थकी घन वार, प्रतिमा दाढा पूजता। पच्छा पाठ विचार, ए खाते लोकीक रै।। ४० खघक दीक्षा लीघ, सुरियाभे जिन वादिया। पेच्चा परभव सीघ, लोकोत्तर खाते इहां।। ४१ वलि वहु ठामे जोय, जिन-वादण दीक्षा समय। पेच्चा परभव होय, पच्छा शब्द किहा नथी।। ४२. प्रतिमा नै पूजत, पेच्चा वा परलोक नो। किहाइक पाठ न हुंत, न्याय विचारी लीजियै॥ ४३. तिण सूं यां पिण ताय, दाढा ना कारण थकी। भोग भोगवै नांय, कल्पस्थिति लोकीक मग।। ४४ त्रायतिस गुरु-स्थान, इन्द्र विनय तेहनों करै। अम्युत्थान पिछान, ते मग लोकिक तेम ए॥ ४५ मेघ-जमाली-माय, चरण लियां सुत केश ले। ए मुभ दर्शण थाय, मोह कर्म नो उदय ए॥ २८. पञ्जुवासणिज्जाओ भवंति ।

२६. से तेणट्ठेणं अज्जो । एवं वृच्चइ—नो पमू चमरे असुरिदे असुरकुमारराया जाव (म० पा०) विहरि- त्तए। (स० १०।६८)

२७. कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं

१. सु० २६१

२. श० २।५२

४६. तिम ए पिण छै जेह, जीत आचार भणीज इन्द। दाढा ल्ये पूजेह, पिण ते धर्म खाते नथी।। ४७ श्रावक सरिखा जाण, जिन दाढा लेता नथी। एह 'जीत व्यवहार' छ।। इन्द्र तणाज पिछाण, ४८. अभव्य सुर पूजत, जिन-प्रतिमा दाढा सभा सुधर्मा छै तस्।। इन्द्र सामानिक हुत, ४६ आवश्यक नी वृत्ति, गथाग्र वावीस हजार तसु। कह्यो सामायक वृत्ति मे।। सूरि हरिभद्र प्रवृत्ति, सामानिक ते जक्र नो। मुधर्म ५० सगम वास, प्रशसतो ॥ यू ही चलाव् तास, इन्द्र

वा० — विल सामानिक देवपणे जो अभव्य मिथ्यादृष्टि जीव न ऊपजें तो तुम्हारे मतेज आवश्यक नी वृत्ति वावीस हजारी हरिभद्र सूरि नी कीधी, ते मध्ये मामायक नामा अध्ययन नी टीका मे अभव्य सगम देवता नो अधिकार छै। तिहा महावीर ना उपसर्ग ने अधिकारे शकेंद्र वोल्यो—महावीर ने चलावी न सकें। तिवारे शकेंद्र नो सामानिक अभव्य देवता सगम वोल्यो—इओ य सगमओ नाम सोहम्मकप्पवासी देवो सक्कसामाणिओ अभवसिद्धिओ सो भणित—देवराया अहो रागेण उल्लवेइ, को माणुसो देवेण न चालिज्जइ? अह चालेमि, ताहे सक्को त न वारेइ। मा जाणिहिइ—परणिस्साए भगव तवोकम्मं करेति, एव सो आगओ -- इहा सगमो देवता शकेन्द्र ने सामानिक देवता नै कहा।

वली 'सदेहदोलावलि' प्रथ छै तेहनी वृत्ति मध्ये कह्यो—नन्येव तर्हि सगमक-प्रायो महामिण्यादृष्टि देविनातस्याम् सिद्धायतनप्रतिमा अपि सनातनिमिति चेत् न, नित्यचैत्येषु हि सगमवत् अभव्या अपि देवा मदीयमदीयमिति बहुमानात् कल्पस्थितिव्यवस्थानुरोधात् तद्भूतप्रभावाद् वा न कदाचित् असयमिकया आरभन्ते।

एस सगमो देवता अभव्य कहाो, इद्र नो सामानिक कहाो सामानिक देवता इंद्र सिरखा विमान नो धणी ऊपजती वेला सुरियाभ नी परें प्रतिमा दाढा पूजें पोता नी कल्पस्थिति माटें। अने सुधर्मा सभा ने विषे दाढा ने मुरातवपणें करी काम भोग न भोगवें ते पिण कल्पस्थिति जीत आचार माटें पिण धर्म खाते नथी, तिमहिज अनेरा इन्द्र सुरियाभादिक ने जाणवू।

५१ सूत्र उनवाई माय, पूर्णभद्र वहु लोक नै। अर्चन जोग कहाय, वन्दन पूजन योग्य विला।

- ५२ सतकार सनमान जोग, कल्लाण मगल वली। दैवत चैत्य प्रयोग. जाणी सेवा योग्य छै।।
- दैवत चैत्य प्रयोग, जाणी सेवा योग्य छै।। ५३ वहु जन ने ए ताय, कह्या पूजवा जोग ए।
- आख्या जन-अभिप्राय, पिण निह अरिहत आगन्या।। ४४ सुर नर ने अवधार, भोग वछवा योग्य ए।
- चीथे आश्रव द्वार, इहा पिण जिन आज्ञा नही।। ५५ तिम सर नै कहिवाय, दादा प्रजण योग्य प्रा
- ४४. तिम सुर ने कहिवाय, दाढा पूजण योग्य ए। कह्या तास अभिप्राय, पिण आज्ञा जिन नी नथी।।

१. महत्त्व

२. सू० २

- ५६. कृष्णादिक घर प्रेम, सभा सुघर्मा नै विषे। भोग भोगवै कंम, तो सुर किण विघ भोगवै।। ५७ दाढा नो सुविशेख, अधिक मुरातव आखियो। जीत आचार सपेख, कल्प-स्थिति लौकीक मग।।
- ५८ भव्य अभव्य सुर ताय, समदृष्टी ने मिच्छिदिष्टि। सभा सुवर्मा माय, काम भोग निर्हि भोगवै॥
- ५६. ए च्यारूं अवघार, विमाण ना स्वामी हुवै। राखे जीत आचार, चमर सुरियाभ तणी परै॥
- ६०. चमर सुघर्मा तेम, काम भोग नहिं भोगवै। जीत आचारे एम, पिण ते घर्म खाते नही।।" (ज० स०)
- ६१. \*हे आर्यो ! समर्थ अछै कांइ, चमर असुर नो राय। चमरचंचा नामे भली जी कांड, राजधानी रै मांय।।
- ६२ सभा सुवर्मा नै विषे काड, चमर सिंघासण ताय। चउसठ सहस्र अछै भला जी काइ, सामानिक सुखदाय।।
- ६३ तावत्तीसग यावत वली काइ, अन्य वहु असुरकुमार। अमर सुरी सग परिवर्यो जी काइ, महाऽहत जाव विचार।।

वा०—इहा जाव शब्द थकी इम जाणवो 'नट्टगीयवाइयततीतलतालघण मुयगपहुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइति । तिहां महता नाम मोटा, अहत नाम अच्छिन्न निरन्तर अथवा कथा स्यू वध्या जे गीत, नाट्य वाजय तेहने शब्दे करी अने तश्री तल ताल ना शब्द करी अने तुडिय कहिता बेप वाजा वली घन-मृदंग ते मेघ समान ध्वनि वालो मादंल तेहने पटू कहिता चतुर पुरुपे वजायो तेहनो जे शब्द तेणे करी दिव्य भोग प्रतं भोगवतो विचरवा समर्थ इम कहा ।

तेहने विपेहीज विशेष कहैं छैं—'केवल परियारिड्ढीए'—केवलं नवर परिचार ते परिचारणा, ते इहा स्त्री शब्द श्रवणरूप देखवादिरूप, तेहिज ऋढि— सपदा ते परिचारणाऋढि । तेणे करी कलत्रादि परिजन परिचार मात्र करिकै इत्यर्थं.।

- ६४. भोगवतोज छतो तिहा काइ, विचरण समरथ तेह। केवल ऋदि परिचारणा जी काइ, शब्द रूप आदेह।। ६५. स्त्री रव सुणवा नी विपे काइ, रूप देखवो आदि। तेहिज ऋदिनी सपदा जी काइ, तिण करि चित अहलादि'।। ६६. पिण निहं ते निश्चे करी काइ, मैथुन प्रत्यय पेख। भोग भोगवतो विचरवा जी काइ, समर्थ निहं छै विशेख।।
- ६७ चमर असुरिंद नो प्रभु । काइ, तास सोम महाराय। अग्रमहिंपी केतली जी काइ ? जिन कहै च्यार कहाय।।
- \*लय: अव लगज्या प्राणी ! चरणै प्रमु तणै जी
  - १ गाया ६४ एव ६५ की रचना पाठ और वृत्ति दोनो के आधार पर की हुई है। वृत्ति का अंश पूर्ववर्ती वार्तिका मे उद्धृत है, इसलिए उसे यहा नही रखा गया है।

- ६१. पभू ण अज्जो । चमरे अमुरिदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए
- ६२. सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहामणसि चउमट्ठीए सामाणियसाहस्सीहि
- ६३ तायत्तीसाए जाव (स० पा०) अण्णीह य वहूहि असुरकुमारेहि देवेहि य, देवीहि य सिंद सपिरवृढे महयाहय जाव (स० पा०)
- वा॰—इह यावत्करणादिद दृश्य 'नट्टगीयवाइयतनीतल-तालतुडियघणमुद्दगपडुप्पवाइयरवेण दिन्वाइ भोग-भोगाइ' ति तत्र च महता—वृहता अहतानि— अच्छिन्नानि आख्यानकप्रतिवद्धानि वा यानि नाट्य-गीतवादितानि तेपा तन्त्रीतलतालाना च 'तुडिय' ति चेप तूर्याणा च घनमृदगस्य च मेघसमानध्वनिमईं-लस्य पटुना पुरुपेण प्रवादितस्य यो रव स तथा तेन प्रभुभोगान् भूञ्जानो विहर्त्तुमित्युवत ।

तत्रैव विशेषमाह—'केवल परियारिङ्ढीए' ति केवल नवर परिवार'—परिचारणा स चेह स्त्रीशब्दश्रवण- रूपसवर्शनादिरूप स एव ऋदि:—सम्पत् परिवार- दिस्तया परिवारद्वर्था वा कलत्रादिपरिजनपरिचारणा- मात्रेणेत्यथै:। (वृ० प० ५०६)

६४. मुजमाणे विहरित्तए ? केवल परियारिड्ढीए

६६. नो चेव ण मेहुणवत्तिय । (श० १०।६६)
'नो चेव'''' ''' ति नैव च मैथुनप्रत्यय यथा भवति
एव भोगभोगान् मुञ्जानो विहर्तुं प्रभुरिति ।

(वृ० प० ५०६) ६७. चमरस्स णं भते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णताओ ? अज्जो । चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णताओ, त जहा—

- ६८. कनका कनकलता कही काइ, चित्तगुप्ता तन चंग। वसुघरा चउथी वली जी काइ, ए चिहु रूप सुरग।।
- ६९. एक-एक देवी तिहा काइ, सहस्र-सहस्र सुविघान। सुरी परिवार परूपियो जी काइ, इम भाखे भगवान।।
- ७०. समर्थ ते इक-इक सुरी काइ, अन्य एक-एक हजार। परिचारण अर्थे तिका जी काइ, रूप विकुर्वण सार॥
- ७१ इमहिज पूर्वापर सही काइ, देवी च्यार हजार। तुटित वर्ग' कहियै तसु जी काइ, इम भाखै जगतार।।
- ७२. लोकपाल प्रभु । चमर नों काइ, समर्थ सोम महाराय। सोमा राजधानी विषे जी काइ, सभा सुधर्मा माय।।
- ५३ सोम नाम सिघासणे काइ, तुटित वर्ग सघात। शेष चमर नी पर सहु जी काइ, वरणवियै अवदात॥
- ७४ णवर इतो विशेष छै काइ, सोम तणो परिवार। जिम सूर्याभ तणो कह्यो जी काइ, इम कहिवो सुविचार।।
- ७५. शेप तिमज चमरेद्र जिम काइ, जाव सौंघर्म माय। मिथुन भोग करिवा भणी जी काइ, निश्चै समरथ नाय।।
- ७६ लोकपाल प्रभु । चमर नो काइ, जम नामे महाराय। अग्रमहिषी तसु किती जी काइ? एव चेव कहिवाय।।
- ७७ णवर इतो विशेष छै काइ, जमा नाम पहिछाण। रजधानी रिलयामणी जी काइ, शेप सोम जिम जाण।।
- ७८. एम वरुण नै पिण कह्यु काइ, णवर इतो विशेख। वरुण नामे तेहनी जी काइ, रजघानी सपेख।।
- ७६ एम वेश्रमण नो अछै काइ, णवर इतो विशेख। वेश्रमणा नामे भली जी काइ, रजधानी वर रेख।।
- द०. शेप तिमज जावत तिके काइ, सभा सुधर्मा माय। मिथुन प्रत्यय भोगने जी काइ, सेवण समरथ नाय।।
- ६१. देश दशम पचम तणो कांइ, बेसौ वावीसमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी जी कांइ,

'जय-जश' मगलमाल ॥

- ६८. कणगा, कणगलता, चित्तगुत्ता, वसुंधरा ।
- ६६. तत्य णं एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परिवारे पण्णत्ते। (१०१०)
- ७० पभू ण ताओ 'एगामेगा देवी' अण्णं एगमेग देवी-सहस्स परिवार विजिब्बत्तए ?
- ७१. एवामेव सपुन्वावरेण चत्तारि देवीसहस्सा। सेत्तं तुडिए। (श० १०।७१)
- ७२. पभू ण भते ! चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए
- ७३. सोमिस सीहासणिस तुडिएण सिद्धः अवसेसं जहा चमरस्स
- ७४. नवर-परियारो जहा सूरियाभस्स ।
- ७५. सेस त चेव जाव नो चेव णं मेहुणवित्तय। (श० १०।७२)
- ७६. चमरस्स ण भते । असुरियस्स असुरकुमाररण्णो जमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ ? एव चेव,
- ७७. नवर-जमाए रायहाणीए, सेस जहा सोमस्स ।
- ७८. एव वरुणस्स वि नवर-वरुणाए रायहाणीए
- ७६. एव वेसमणस्स वि, नवर-वेसमणाए रायहाणीए।
- द०. सेसं त चेव जाव नो चेव णं भेहुणवित्तय । (श० १०।७३)

१. एणी पर सपूर्वापर संघाते ४००० सहस्र ने १००० सहस्र गुणा करिये तित्रारे ४००००० लाख एतला रूप थावे तेहने तुटित वर्ग कहिये।

## दूहा

- १ प्रमु ! विल वैरोचन इंद्र नै, प्रय्न महेपी संच । जिन कहै हे आयों । कही अग्रमहेपी पंच ॥ २ गुभा निगुभा ने रंभा, प्रवर निरभा पेल । मदना आखी पचमी, वर्ण रूप वर रेख ॥ ३ एक-एक देवी तणे, अठ-अठ सहस्र उदार । येप चमर नी पर सहु, कहिवू सर्व विचार ॥ ४. णवर विलचचा भली, रजवानी मुवियेष । तमु परिकर तीजे जतक, मोया घूर उद्देश ॥
- ५ इम परिकर कहिवू इहां, शेप सर्व त चेव। जाव मुघर्मा ने विषे, मिथुन न सेवे देव।। ६ प्रभु विल वेरोचन इद्र ने, सोम नाम महाराय। अग्रमहिषी तमु किती? जिन कहै च्यार कहिवाय।।
- ७. प्रथम मेनका नाम है, द्वितीय सुभद्रा घार।
  नृतीय विद्युता सुभग तनु, चउथी असनी सार।।

  द एक-एक देवी तिहा, गेप चमर महाराय।
  आस्यो तिम कहिवो इहा, जाव वेसमण ताय।।

  \*स्थिवर प्रश्न नो उत्तर जिन आहै। (श्रुपदं)
- ह नाग कुमारिंद्र घरण तणे प्रभु! केतली अग्रमहेपी उक्त? जिन कहे पट अला सक्का सतेरा,

सोदामनी इद्रा घनविद्युता प्रयुक्त ॥

- १०. इक-इक सुरी छ: -छ: सहस्र परिवारे समर्थ ने अन्य छ -छ: हजार। सर्व छत्तीस सहस्र रूप विकुर्वे, तुटित वर्ग' तसु कहिये उदार।।
- १ समर्थ हे भगवत । वरण छै, जेप त चेव पूर्ववत पेख। णवर वरणा नामे राजवानी है, घरण सिहासण विषे विजेख।।
- १२ वरण ने पोना नो परिवार कहिवो, सामानिक पट सहस्र है तास। इत्यादि परिवार छै तिको कहिवो, शेप तिमज पूर्व पाठ अम्यास।।

- विस्म णं भते ! वइरोयणिदस्स—पुच्छा । अज्जो ! पच अग्ममिह्मीओ पण्णताओ,
- २. मुमा, निसुभा, रंभा, निरभा, मदणा ।
- ३. तत्य ण एगमेगाए देवीए अट्टह देवीमहस्मं परिवारी, मेस जहा चमरस्म,
- ४. नवरं—वित्वचाए रायहाणीण, परियारो जहा मोउद्देगए। 'मोउद्देगए' ति तृतीयशतस्य प्रयमोद्देशके इत्यर्थः (वृ० प० ५०६)
- मेसं त चेव जाव नो चेव ण मेहुणवित्तयं।

(म॰ १०१७४) ६. बलिस्म णं मंते । वहरोयणिदस्म वहरोयणरण्णो

- ६. विलस्म ण भते । वहरीयणिदस्म वहरीयणरण्णी सोमस्म महारण्णो कति अग्गमहिमीओ पण्णताओ ? अज्जो । चत्तारि अग्गमहिमीओ पण्णताओ
- ७. मीणगा, सुमद्दा, विज्जुया, असणी
- इ. तत्थे णं एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परि-वारो, सेसं जहा चमरसोमस्स एव जाव वरुणस्म । (श० १०।७५)
- ६ घरणस्म णं भते ! नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो कित अग्गमिहसीओ पण्णताओ ? अज्जो ! छ अग्गमिहिमीओ पण्णताओ त जहा— अला, सक्का सतेरा सोदामिणी इदा घणविज्जुया।
- १०. तत्व ण एगमेगाए देवीए छ-छ देवीसहस्स परिवारो
  पण्णतो । पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ छ-छ
  देवीसहस्साइ परियार विजिवत्तए ?
  एवामेव सपुन्वावरेणं छत्तीसाइ देविसहस्साइं । सेतं
  तुहिए । (श० १०।७६,७७)
- ११. पमू णं भते ! घरणे ? सेसं तं चेव, नवर—धरणाए रायहाणीए, घरणिस सीहामणिस,
- १२. सओ परियारो। सेस तं चेव। (श० १०।७८)
  'सओ परिवारो' ति घरणस्य स्वक. परिवारो वाच्यः
  स चैवं— (वृ० प० ५०६)

१ अगसुत्ताणि भाग २, ण० ३।४

२. अगसुत्ताणि भाग २ श० १०।७५ में वेसमण के स्थान पर वरुण पाठ है। वहा वेममण को पाठान्तर में रखा गया है।

३ एणी प्रकारे मपूर्वापर सघाते छत्तीम सहस्र नै छ सहस्र गुणा करियै तिवारे २१ कोडि ६००००० लाख एतला रूप थावै, तेहनै तुटित वर्ग कहियै।

- १३. निज परिवार कहिवै षट सहस्र सामानिक, तावतीस तेतीस लोकपाल च्यार। अग्रमहिषी छ अणिय कटक सप्त,
  - सात अणिय कटक नां अघिपति घार।।
- १४ चउवीस सहस्र आत्मरक्षक सुर छै, अन्य विल वहु नागकुमार। 🔑 १४ चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीहि अन्नेहि य वहूहि देव देवी संघाते परवरियो, नृत्य गीत रव भोग उदार।।
- १५ नागकुमारिद घरण नों हे प्रभु<sup>ा</sup> कालवाल लोकपाल महाराय। केतली अग्रमहेथी तेहने ? जिन कहै च्यार सुभग सुखदाय।।
- १६. अशोगा विमला सुप्रभा सुदर्शना, इक-इक नो वैक्रिय परिवार। अवशेष चमर ना लोकपाल जिम,

विल त्रिण लोकपाल इम घार।।

- १७ भूतानद नी पूछा जिन उत्तर, छ अग्रमहिषी रूया ने रूयसा। सुरूवा रूपगावती रूपकता, रूपप्रभा परिवार घरण जिम वजा ॥
- १८ नागकुमारिंद भूतानन्द नो, लोकपाल चित्र प्रश्न सुजना। जिन कहै अग्रमहिषी च्यार है, सुनदा सुभद्रा सुजाता सुमना ॥
- १६ इक-इक देवो रूप विकुर्वे, चमर लोकपाल नी पर जाणी। शेप तीन लोकपाल तणो पिण, इमहिज कहिवो सर्व पिछाणी।।
- २०. दक्षिण दिश ना इद्र अखैतसु, घरण तणी पर कहिवू उदत। तेह तणा जे लोकपाल ने, भूतानद लोकपाल' ज्यू हुत।।
- २१ णवर सर्व राजधानी सिंहासण, इद्र ना नाम सरीखे नाम। परिवार मोया उद्देश विषे तिम, तीजै शतक घुर उद्देशे ताम।।
- २२ लोकपाल नी राजधानी ने सिंहासण, लोकपाल रै सरीखा नाम । परिवार चमर ना लोकपाल जिम, सर्व विचारी कहिव ताम ।।
- २३ काल पिसाच ना इद्र ने भगवन । अग्रमहियी केतली आखी। जिन कहै च्यार कमला कमलप्रभा, उत्पला चउथी सुदर्शना दाखी।।

२. अगसुत्ताणि भाग २, वा० ३/४

- १३. 'छींह' सामाणियसाहस्सीहि तायत्तीमाए तायत्तीसएहिं चउहि लोगपालेहि छहि अगगमहिसीहि सत्ति अणि-एहिं सत्तिहि अणियाहिवईहि (वृ० प० ५०६)
- नागकुमारेहि देवेहि य सद्धि सपरिवृडे' ति (वृ० प० ५०६)
- १५. घरणस्स ण भते । नागकुमारिवस्स नागकुमारन्ण्णो महारण्णो कति अगगमहिसीओ कालवालस्स पण्णत्ताओ ? अज्जो । चतारि अगमहिसीओ पण्णताओ,
- १६ असोगा, विमला, सुप्पभा सुदसणा। तत्य ण एग-मेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारो, अवसेस जहा चमरलोगपालाण । एव सेसाण तिण्ह वि । (হা০ १০।৬৪)
- १७. भूयाणदस्स भते । पुच्छा अज्जो । छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा - रूया, रूयसा सुरूया रूयगावती रूयकता रूपप्पमा। तत्य ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, अव-सेसं जहा धरणस्स । (হা০ १০।৮০)
- १८ भूयाणदस्स ण भते । नागकुमारिदस्स नागकुमार-रण्णो नागचित्तस्स पुच्छा । अज्जो । चत्तारि अग्ग-महिसीओ पण्णताओ, त जहा-सुणदा, सुभदा, सुजाया, सुमणा ।
- १६. तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे अवसेस जहा चमरलोगपालाण। एव सेसाण तिण्ह वि लोगपालाण।
- २० जे दाहिणिल्ला इदा तेमि जहा धरणिदस्स लोगपालाण वि तेसि जहा धरणस्स लोगपालाण
- २१ नवर-इदाण सव्वेसि रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा मोउद्देसए।
- २२. लोगपालाण सब्वेसि रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि परियारो जहा चमरस्स लोगपाताण । (श० १०।८१)
- २३ कालस्स ण भते । पिसायिदस्य पिसायरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णताओ ? अज्जो ! चतारि अग्ग-महिसीओ पण्णताओ, त जहा-कमला, कमलप्पभा, उपला, सुदसणा ।

१. अगसुत्ताणि भाग २ श० १०। दश में 'जहा धरणस्स लोगपालाण' के बाद उत्तरिल्लाण इदाण जहा भूयाणदस्स ""पाठ है। अन्य आदर्शों मे यह पाठ नहीं है। इमकी सूचना उक्त ग्रन्य के पृ० ४८० टिप्नण-सख्या ६ मे दी गई है। जयाचार्य ने उपर्युक्त पाठ की जोड नही की। जयाचार्य को प्राप्त प्रतियो मे यह पाठ नहीं रहा होगा। यही सम्भावना पुष्ट होती है।

- २४. एक-एक देवी रूप विकुर्वे, इक-इक सहस्र सुंदर सिणगार। शेप चमर लोकपाल तणी पर. परिवार पिण इमहीज विचार॥
- २५ णवर काला नामे राजवानी है, काल सिंहासण शेप त चेव। इमहिज महाकाल पिण कहिवो, वे इद्र एह पिसाच ना भेव।।
- २६ भूतेन्द्र नाम सुरूप दक्षिण नो, प्रश्न नो उत्तर महिपी च्यार। रूपवती वहुरूपा सुरूपा सुभगा, ए चिहु रूप उदार।।
- २७. एक-एक देवी नो कहियै, इक-इक देवी सहस्र परिवार। शेप ज्यू काल पिशाच इन्द्रवत, इम प्रतिरूप तणो विस्तार।।
- २८ पूर्णभद्र यक्षेन्द्र नी पूछा, उत्तर अग्रमहीपी च्यार। पूर्णा बहुपुत्रिका नै उत्तमा, तारका ए चिहु रूप उदार।।
- २६ एक एक देवी रूप विकुर्वे, इक-इक सहस्र शेप काल जेम। एव माणभद्र इद्र उत्तर नो, वे इद्र जक्ष तणा नित्य क्षेम।।
- ३० राक्षस इद्र दक्षिण ना भीम नै, प्रश्न नो उत्तर महिपी च्यार । पद्मा पदमावती कनका रत्नप्रभा, इक्र-इक देवी सहस्र परिवार ॥
- ३१. शेप काल जिम वर्णन किह्नवो, महाभीम उत्तर नो एम। च्यार सुरी सहस्र-सहस्र परिवारे, ए राक्षस ना दोय इद्र सुप्रेम।। ३२. किन्नर नी पूछा कीघा जिन भाखै, अग्रमहेपी च्यार सुलेवा। अवतसा केतुमती रितसेना, रितप्रिया शेप त चेव कहेवा।।
- ३३. सतपुरुप पूछा चिउ अग्रमहिपी, रोहणी नविमका ही पुष्फवती । इक-इक सहस्र परिवार शेप तिम, महापुरुप नै पिण इम हुती ।।
- ३४. अतिकाय नामे इद्र च्यार महिपी, भुजगा भुजगवती नै महाकच्छा।
  फुडा सहस्र परिवार शेप तिम, महाकाय नै पिण इम अच्छा।।

- २४. तत्य णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारो सेस जहा चमरलोगपालाण । परिवारो तहेव,
- २५. नवर कालाए रायहाणीए, कालिस सीहासणिस, सेस त चेव । एव महाकालस्स वि ।
- २६ सुरूवस्म ण भते । भूतिदस्स भूतरण्णो—पुच्छा अज्जो । चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा – रूववर्ड बहुरूवा सुरूवा सुभगा।
  - ७. तत्य ण एगभेगाए देवीए एगभेग देवीसहस्सं परिवारे सेस जहा कालस्स । एव पडिरूवस्स वि । (श० १०। ६३)
- २८ पुण्णभद्दस्य ण भते ! जिक्खदस्य-पुच्छा । अज्ञो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा --पुण्णा, बहुपुत्तिया, उत्तमा, तारया ।
- २६ तत्य ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परिवारे, सेसं जहा कालस्स । एव माणभद्दस वि । (॥० १०।८४)
- ३० भीमस्त ण भते । रक्खसिदस्त-पुच्छा अज्जो । चत्तारि अग्ममहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा ---पचमा वसुमती कणगा रयणप्पभा । तत्थ ण एगमे-गाए देवीए एगमेग देवीसहस्तं परिवारे,
- ३१ सेस जहा कालस्स । एव महाभीमस्स वि । (श० १०।८५)
- ३२. किन्नरस्स ण—पुच्छा अज्जो । चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णताओ, त जहा—वर्डेसा केतुमती रतिसेणा रइप्पिया। . . . परिवारे सेस त चेव। (श० १०।८६)
- ३३. सप्पुरिसस्स ण पुच्छा ।

  अज्जो । चत्तारि अग्गमिहसीओ पण्णत्ताओ, त

  जहा रोहिणी, नविमया, हिरी, पुष्पवती । तत्थ

  ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस

  त चेव । एव महापुरिसस्स वि । (श० १०। ५७)
- ३४. अतिकायस्स ण—पुच्छा
  अन्जो । चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त
  नहा—भुयगा, भुयगवती, महाकच्छा, फुडा । तत्य ण
  एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेस त
  चेव । एवं महाकायस्स वि । (श० १०।८८)

अगसुत्ताणि मे 'पउमावती' को पाठान्तर मे रखा गया है, वहा मूल मे 'वसुमती' शब्द है ।

२. इमके वाद अगसुत्ताणि भाग २ श० १७।८६ में एव किंपुरिसस्स वि'पाठ है। इस पाठ की जोड़ नहीं है। सम्भव है कुछ आदर्शों में यह पाठ नहीं रहा ' होगा।

- ३४. गीतरित इद्रच्यार मिहपी, सुघोपा विमला सुस्वरा जाणी। सरस्वती सहस्र परिवार शेप तिम, गीतजश नै पिण इम् माणी॥
- ३६ ए सर्व ने काल तणी पर किह्वो, णवर आप आपणो छै नाम । ते सरीखे नामे रजधानी सिहासण, किह्वो शेप तिमहिज तमाम ॥
- ३७ ज्योतिवी इद्र चद्र नी पूछा, जिन कहै अग्रमहेपी च्यार । चद्रप्रभा ने जोत्स्नाभा, अचिमाली ने प्रभकरा सार ॥
- ३८ इम जिम जीवाभिगम' सूत्र में, कह्यो ज्योतिपी उदेशा मभार। सर्व इहा पिण तिमहिज कहिनो, इक-इक चिहु-चिहुं सहस्र परिवार।।
- ३६ सूर्य ने पिण इमहिज किह्वू, अग्रमहेपी च्यार उदार। सूरप्रभाने दूजी आदित्या, अचिमाली ने प्रभकरा सार॥
- ४० शेष थाकतो तिमहिज कहिवो, जाव सुधर्मा सभा रै माय। मिथुन-प्रत्यय भोग भोगविवा, निश्चय करिनै समर्थ नाय।।
- ४१ महाग्रह अगार ने भगवत, केतली अग्रमहेपी कहाय ? जिन कहै च्यार विजया वेजयती, जयती ने अपराजिता ताय ।।
- ४२ इक-इक देवी रूप विकुर्वे, शेष त चेव चद्र जिम आख्यो। णवर विमान अगार अवतसक, प्रगार नाम सिहासण भाख्यो।
- ४३ इम व्याल नामे महाग्रह पिण कहिवो,

एव अठ्यासी महाग्रह भणवा। जावत भावकेतु पिण णवर, विमान सिहासण स्व नाम थुणवा।।

४४ प्रभु । शक ने अग्रमहेली नी पूछा, जिन कहै अष्ट महिपी जाणी। पद्मा शिवा सूची अजू ने अमला,

अप्सरा नविमका रोहिणी माणी।।

- ४५ इक-इक देवो ने प्रभु भाख्यो, सोलै-सोलै सहस्र नो परिवार। समर्थ इक-इक सुरी अनेरा, वैक्रिय करण सोल-सोल हजार।।
- ४६ एहींज पूर्व अपर कही सगली, इक लक्ष सहस्र अठावीस रूप। परिचारणा ने अर्थे विकुर्वे, तेह तुटित वर्ग कहियै अनूप।।
- १. जी० प० ३।६६८-१०३६
- २. अगसुत्ताणि (१०।६०) 'आयवा' पाठ है। आयच्चा को वहा पाठान्तर मे रखा गया है।
- ३. अगसुत्ताणि १०।६२ में सची पाठ है। वहा सेया और सुयी को पाठान्तर में रखा गया है।
- ४ एणी परें सपूर्वापर सवाते एक लाख अठावीस सहस्र ने सोलै सहस्र गुणा करियें तिवारें २०० दोय सौ कोडि ४८० लाख एतला रूप थाने तेहने तुटित वर्ग किह्यें।

- ३५. गीयरइस्स णं—पुच्छा अन्जो । चत्तारि अगमहिसीओ पण्णताओ, त जहा—संघोसा, विसला, सस्मरा सरस्मई । तत्य
  - जहा-सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सई। तत्य णं एगभेगाए देवीए एगभेग देवीसहस्सं परिवारे सेस त चेव। एव गीयजसस्स वि।
- ३६. सव्वेसि एएसि जहा कालस्स नवर—सिरसनामियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य, सेस त चेव । (श० १०।८६)
- ३७ चदस्स ण भते । जोइसिदस्म जोइसरण्णो पुच्छा । अज्जो । चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा चदप्पमा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभकरा ।
- ३८ एव जहा जीवाभिगमे जोडसियउद्देसए तहेव ।
- ३६ सूरस्स वि सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली पभकरा
- ४० सेस त चेव जाव नो चेव णं मेहुणवित्तय। (श० १०।६०)
- ४१. इगालस्स ण भते । महग्गहस्स कित अग्गमिहसीओ—
  पुच्छा ।
  अज्जो ! चत्तारि अग्गमिहसीओ पण्णत्ताओ, त जहा —
  विजया, वेजयती, जयती, अपराजिया ।
- ४२. तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे सेस जहा चदस्स नवर —इगालवडेंसए विमाणे इगाल-गसि सीहासणसि, सेस त चेव।
- ४३. एव वियालगस्स वि । एव अट्ठासीतिए वि महग्गहाण भाणियन्य जाव भावकेउस्स नवर—वर्डेसगा सीहास-णाणि य सरियनामगाणि सेस त चेव।(श० १०।६१)
- ४४ सक्कस्स ण भते । देविदरस देवरण्णो—पुच्छा । अज्जो । अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णताओ, त जहा— पउमा, सिवा, सची, अजू, अमला, अच्छरा, नविमया, रोहिणी
- ४५ तत्य ण एगमेगाए देवीए सोलस-सोलस देवीसहस्सा परिवारी पण्णत्तो। (ग्र०१०।६२) पभूण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ सोलस-सोलस देवीसहस्साइ परिवार विज्वित्तए?
- ४६. एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठावीसुत्तर देवीसयसहस्स । सेत्त तुडिए। (श० १०१६३)

- ४७ समर्थ छै प्रभु ! शक्र देवेद्रज, देवराजा सौवर्म देवलोक। विमान सौवर्म अवतसक नै विषे, सभा सुवर्मा नै विषे सयोग।।
- ४८ ब्रक्न सिंहासणे तुटिक वर्ग सग, शेप चमर नी परे सह कहिवो। णवर परिवार जे तीजा ब्रतक' नों, मोय उद्देशो पहिलु गहिवो।।
- ४६ शक्र देवेद्र नो सोम महाराजा, अग्रमिह्पी किती प्रभु । तास । जिन कहै च्यार रोहिणी, मदना चित्रा ने सोमा रूप गुणरास ।।
- ५०. तिहा एक-एक देवी शेप चमर ना, लोकपाल जिम नवर कहीजै। सयप्रभ विमाने सभा-सुवर्मा सोम सिहासन शेप तिमहीजै॥
- ५१. इम जाव वेसमण लोकपाल लग, णवरं ज्जुआ विमाण ना नाम । तीजा शतक<sup>र</sup> जिम संभव्पभ वरसिंह सयजल वग्गु ताम ॥
- ५२ ईगाण पूछा आठ महिपी, कृष्ण कृष्णराई रामा मुनाम। रामरक्षिता वसु वसुगुष्ता, वसुमित्ता ने वसुवरा ताम।।
- ५३. इक-इक देवी शक्त जिम सगल्, हिवै ईसाणेद्र नुलोकपाल। सोम महाराय नै किती पटराणी ?

जिन कहै च्यार कही मुविशाल ॥

- १४ पृथिवी रात्री रत्नी विद्युत चौथी, शक्र ना लोकपाल जेम शेप । इम जाव वरुण चौथा लग कहिवू, णवर विमाण नाम ए देख ॥
- ५५. चरुथा शतक' में कह्या तिम कहिवा, सुमन सर्वतोभद्र वग्गु नाम । सुवग्गु शेप तिम जाव सुवर्मा, मिथुन सेवन समर्थ निह ताम ॥
- ४६. सेव भते! सेव भते! कही नै, यावत विचरै स्थविर घ्यान-सुघारस । ए दशमा शतक नो पचमुद्देशो,

उगणीमें इकवीसे पोह सुदि ग्यारस ॥
५७ ढाल भली दोय सी तेवीसमी, शहर वालोतरे जोडी विद्याल ।
भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रतापे, 'जय-जश' सम्पति मगलमाल ॥
दशमशते पचमोद्देशकार्थः ॥१०।५॥

- १. अगसुत्ताणि भाग २, २० ३।४
- २. अगमुत्ताणि भाग २ श० ३।२४८
- ३. अगमुत्ताणि भाग २ श० ४।२

- ४७. पभू ण भते । मनके देविदे देवराया मोहम्मे कप्पे, मोहम्मवर्टेमण् विमाणे, मनाए मुहम्माए,
- ४८ मक्किम मीहानणिम तुष्टिएण मित्र दिखाइ भोग-भोगाउ भुजमाणे विहरिक्तए। मेम जहा चनरस्म नवर--परियाणे जहा मोडहेगए। (७० १०१६४)
- ४६. मनमस्य ण देविदरम दे । रण्णो मीमस्य महारण्णो कित अगमहिमीओ—पुच्छा । अजनो । चत्तारि अगमहिमीओ पण्णताओ, त जहा— रोहिणी, मदणा, नित्ता, सोमा
- ५०. नत्य ण एगमेगात् देशीत् एगमेग देशीमहस्स परिवारे, समं जहा चमन्त्रांगपालाण, नवर —सयपमे विमाणे, नभात् महस्मात्, सोमसि सीहासणीम सेस त चेत्र ।
- ५१ एवं जाय वेमनणन्म, नवर—विनाणाउं जहा निय-मए। (ण० १०१६५) 'त्रिमाणाइ जहा तदयमए' ति तत्र नीमस्योक्तमेव यमवरूणवैत्रमणाना तु ऋमेण वर्षमिट्ठे स्य नेते वस्मुत्ति विमाणा। (यु० प० ५०६)
- ५२. रिनाणस्म ण भते ! पुच्छा । अच्छो ! अह अग्गर्माहमीओ पण्णत्ताओ, त जहा — कप्हा, कप्हराई, रामा, रामरिक्सिया, वमू, वमुगुत्ता वसुमित्ता वसुधरा
- ५३ तत्य ण एगमगाए देवीए एगमेग देवीमहस्मं परिवारे मेग जहा गवकस्म । (श० १०१६६) ईशाणस्य ण भते । देविदस्म देवरण्णो मोमस्य महारण्णो कति अग्गमहिमीओ—पुच्छा । अण्जो । चत्तारि अग्गमहिमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—
- ५४ पुत्वी, रार्ट, रयणी, विज्जू । • नेम जहा मक्कम्म नोगपालाण एव जाय वकणस्म, नवर—विमाणा ।
- ५५ 'जहा चउत्यमए' सेस त चेय जाय नो चेत्र ण मेहुण-वित्तय। (श० १०१६७) जहा चउत्यमए' त्ति ऋषेण च तानीज्ञानलोकपाला-नामिमानि—'मुमणे सव्यक्षोभद्दे वन्गू सुवन्गू' इति । (य० प० ५०६)

४६ सेव भते । सेव भने । ति (श० १०१६८)

दूहा

- १ पचमुद्देशक देव नी, वक्तव्यता कही जेह। छट्ठै सुर नो आश्रय-विशेष कहियै तेह।। २ शक्र सुरिंद्र तणी प्रभु! सभा सुधर्मा नाम। किहा कही ? तव जिन कहै, सुण गौतम । गुणधाम।। ३. जवू मदर-गिर तणी, दक्षिण दिशि मे जेण। रत्नप्रभा पृथ्वी अछै, इम जिम रायप्रसेण।।
- ४. जाव पच अवतसका, जाव शब्द मे ठीक। घणु वरोवर सम अछै, भूमिभाग रमणीक।।
- ५ तेह भूमि थी ऊर्घ्व छै, चद्र सूर्य ग्रह गन्त। नक्षत्र तारारूप थी, ऊचो वहु योजन्त।।
- ६ योजन वहुसय वहु सहस्र, वहु लक्ष ने वहु कोड । योजन कोडाकोड वहु, ऊर्द्ध दूर इम जोड ॥
- ७. सोधर्म कल्प तिहा कह्यो, इत्यादिक अवधार। रायप्रसेणी मे कह्यु, तिम कहिवू सुविचार।।
- द पच अवतसक में प्रथम, वर असोग अवतस। जावत मध्ये सौधरम-भ्रवतसक सुप्रशस।।

#### सोरठा

ह. जाव शब्द थी जाण, सप्तपर्ण-अवतस फुन। चपकवतस माण, तुर्य चूय-अवतस ही।।

दूहा

- १० सौधर्म-अवतसक तिको, महाविमाण पिछाण। योजन साढा वार लक्ष, लावो चोडो जाण॥
- ११. एव इण अनुक्रम करि, जिम सुरियाभ-विमाण। रायप्रश्रेणी सूत्र में, आख्यो तास प्रमाण॥
- १२. सुधर्म-अवतसक विषे, तिमहिज कहिवू ताम। त्रिगुणी जाभी परिधि है, अतिही मन अभिराम।।

वार — लावपण चोडापण पूर्वे कह्यो हीज। शेप परिधि रही, ते इम—
गुणचालीस लक्ष, वावन हजार, आठसै अडतालीस योजन — ए सौधर्मावतसक नामै
महाविमाण नी परिधि जाणवी।

- १३ जिम सुरियाभ तणो कह्यो, देवपणे उपपात। तिम उपपातज शक्र नु, कहिव् सहु अवदात।।
- १४. अभिपेक फुन शक्र नो. तिमहिज कहिव् जाण। जिम सुरियाभ तणु कह्यु, तिणहिज रीत पिछाण।।
- १५ अलकार ने अर्चनिका, जिम सुरियाभ सुरेव। तिमहिज कहिवू इद्र नो, जाव आयरवख देव।।

- १ पञ्चमोद्देशके देववक्तन्यतोक्ता, पष्ठे तु देवाश्रयविशेष प्रतिपादयन्नाह— (वृ० प० ५०६)
- २. किं ण भते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सभा ंसुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा !
- ३. जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पन्वयस्स दाहिणे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एव जहा रायप्पसेणइज्जे (सू० १२४)
- ४,५ जाव पच वर्डेसगा पण्णत्ता,

  'पुढवीए वहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढ चित्रससूरियगहगणनक्खत्तताराक्ष्वाण वहूइ जोयण।इ

  (वृ०प०५०६)
- ६ वहूद जोयणसयाइ एव सहस्साइ एव सयसहस्साइं बहूओ जोयणकोडीओ वहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढ दूर वीइवइत्ता (वृ० प० ५०६)
- ७. एत्य ण सोहम्मे नाम कप्पे पन्नत्ते इत्यादि

(वृ० प० ५०६)

- द. त जहा—असोगवडेंसए जाव (स॰ पा॰) मज्झे सोहम्मवडेंसए।
- ६. इह यावत्करणादिद दृश्य—'सत्तवन्नवडेसए चपग-वर्डेसए चूयवर्डेसए' ति (वृ० प० ५०७)
- १०. से ण सोहम्मवर्डेसए महाविमाणे अद्धतेरस-जोयणसय-सहस्साइ आयामविक्खभेण
- ११,१२ एव जह सूरियाभे तहेव माण 'एव' अनेन कमेण यथा सूरिकाभे विमाने राज-प्रश्नकृताख्यग्रन्थोक्ते प्रमाणमुक्त तथैवास्मिन् वाच्य

(वृ० प० ५०७) वा० —तत्र प्रमाण —आयामिविष्कम्भसम्बन्धि दिशित, शेष पुनिरदम् — 'कयालीस च सयसहस्साइ वावन्न सहस्साइ अद्व य अडयाले जोयणसए परिक्सेवेण' ति । (वृ०प० ५०७)

१३,१४. तहेव खववाओ सक्कस्स य अभिसेओ तहेव जह सूरियामस्स यथा सूरिकाभाभिधानदेवस्य देवत्वेन तत्रोपपात उक्तस्तयैवोपपात शक्स्येह वाच्योऽभिपेक्श्चेति, (वृ० प० ५०७)

१५ अलकारअच्चणिया तहेव जाव आयरेक्ख ति । (मृ० १०।६६)

१. सू० १२५

२. सू ० १२६

- १६ हिव वर्णेक अभिषेक नु, इंद्र तणी अवघार। रायप्रश्रेणी सूत्र थी, कहिये इहा उदार।। \*शक्र सुर राजा, तिणरा चढता है सुजग दिवाजा॥(श्रुपदं)
- १७. तिण अवसर गक्र देविंद, ओ तो देवराजा सुम्बकद। ऊपजवारी सभा थी ताह्यो, ओ तो नीकल द्रह में न्हायो॥
- १८ द्रह थी नीकल सुररायो, अभिषेक सभा मे आयो। वेठो सिंहासण तेहो, मुख पूरव साहमो करेहो।।
- १६. सामानिक परपद ना देवा, सेवग सुर प्रति कहै स्वयमेवा। इद्राभिषेक थापवा काजो, स्नान करिवा पाणी आणो साजो।।
- २०. सेवग सुण हरव्या तिण वारो, वचन विनय सहित अगीकारो। आया ईशाणकूण मकारो, वैक्रिय समुद्घात दोय वारो॥
- २१ एक सहस्र विल आठो, ए तो सोना राकनश मुघाटो। एक सहस्र आठ सुजाणी, एतो रूपा रा कलग पिछाणी।।
- २२. एक सहस्र अठ मणि रत्ना नां, एक सहस्र अठ सुवर्णरूपा नां। एक सहस्र आठ सुवर्ण मणी नां, इमहिज रूपमणिमय सुचीना।।
- २३ सुवर्ण-रूप-मणिमय सुघाटो, ए तो कलग एक सहस्र आठो। एक सहस्र नै आठ माटी नां, आठ सहस्र नै चउसठ सुविवाना।।
- २४ इम भृगार आरिसा ने थालो, ए तो एक सहस्र ने आठ विशालो । पात्री एक सहस्र ने आठो, इतरा सुप्रतिष्ठिया वर घाटो ।
- २५ चित्र-रत्न-करिंडया' विचारी, एतो एक सहस्र ने अप्ट उदारी। सहस्र अठ फूल चगेरी, इतरी फूल-माल चगेरी फेरी॥

१७. तए ण मे' : ...... खबबायमभावी पुरित्यमिल्तेण दारेण निग्गच्छः, जेणेव हरा, तेणेव .... जनमञ्जण करेइ, (राय मू० २७७)

१८. हरयाओ ""पञ्चोत्तरिता जेणेव विभिन्नयममा तेणेव उवागच्छति "मीहामणवरगए पुरत्वामिमुहे मण्णिसण्णे। (राय० सू० २७७)

- १६. •••सामाणियपरिसोववण्णगा देवा आभिजोगिए देवे महावेति, सहावेत्ता एवं वयामी—धिष्पामेव भो ! ••• •••• इंदाभिमेय उवहुवेह । (राय० सू० २७८)
- २०. तए ण ते आभिओगिआ देवा "एव बुत्ता नमाणा हट्ट "विणएण वयण पित्मुणित, पिटमुणित्ता उत्तर- पुरित्यम दिमीभाग अवन्त्रमित, वेटव्यियममुग्याएण नमोहण्णित "दोच्चं पि वेटव्यियममुग्याएणं ममोह- ण्णित (राय० मू० २७६)
- २१. · · अट्टमहम्मं मोविष्णयाण कलमाण, अट्टमहस्स रुप्पमयाण कलसाण (राय० सू० २७६)
- २२. अट्ठसहस्स मणिमयाण कलमाण, अट्ठमहस्म मुवण्ण-रुप्पामयाण कलसाण, अट्ठमहस्म सुवण्णमणिमयाण कलमाण, अट्ठमहम्स रुप्पमणिमयाण कलमाण (राय० सू० २७६)
- २३. अट्ठसहस्स सुवण्णरूपमणिमयाण कतसाण अट्टमहम्म भोमिज्जाण कलसाण (राय० सू० २७६)
- २४. एवं भिगाराण आयमाण थानाण पाईण सुपतिद्वाण (राय० सू० २७६)
- २५. रयणकरडगाण (चित्ररत्न करण्डक (वृ० प० २४२) पुष्पचगेरीण महनचगेरीणं (राय० सू० २७६)
- १. भगवती सूत्रकार ने शक देवेन्द्र के मौधर्मावतमक महाविमान के वर्णन प्रसग (ग० १०।६६) में 'राय-पसेणइय' सूत्र का सकेत देते हुए लिखा है — 'शक देवेन्द्र के विमान का प्रमाण, उपपात सभा, अभियेक सभा, अलंकार ममा तथा अचंनिका से लेकर आतम-रक्षक देवो तक पूरा प्रसग सूर्याभ देव की तरह समझना चामिए। यह बात 'भगवती जोड' (ढाल २२४, गा० १५ तक आ गई है। इसके बाद जयांचार्य ने जोट मे राजप्रश्नीय सूत्र के अनुमार कही विस्तार के साय और कही सक्षेप मे पूरा वर्णन किया है। इसी ढाल की १७ वी गाया मे प्रारभ हुआ यह वर्णन ३१२ वी गाया तक च नता है। सूर्याम देव और शक देवेन्द्र के वर्णन में थोड़ा अन्तर है। प्रस्तुत क्रम में सूर्याम देव के नाम, राजधानी, परिवार आदि के स्थान की खाली छोडते हुए जोट के सामने 'रायपसेणइय' का पाठ उद्धत किया गया है।

इस पाठ की जोड में केवल एक ही मान्द है—'चित्र रत्नकरिण्डया' जो वृत्तिकार द्वारा किए गए अर्थ का सवादी लगता है। इससे निष्कर्ष यह निकलता है कि जयाचार्य को प्राप्त आदर्श में वायकरगाण और चित्ताण पाठ नहीं थे। ये पाठ कई प्रतियों में उपलब्ध नहीं है। यह सूचना रायपसेणइय पृ० १०७ की टिप्पण संख्या २ में दी गई है।

<sup>\*</sup>लय: सुण चरिताली । थारा लक्षण

१. 'रायपसेणइय' सूत्र २७६ में सपितट्ठाण के बाद वायकरगाण चित्ताण रयण-करढगाण पाठ है। इसकी मुद्रित वृत्ति में वायकरगाण और रयणकरडगाण ये दो पाठ हैं। वृत्ति के अनुसार रयणकरडग शब्द का अर्थ है—चित्र रत्न करडग (वृ० प० २४२)।

- २६. आभरण चगेरी चगी, एक सहस्र ने आठ सुरगी। मयूरपिच्छ पूजणी नी चगेरी, एक सहस्र ने आठ भलेरी।।
- २७ पुष्पपडल पिण एता, जाव लोमहत्थ पडल समेता। एक सहस्र ने आठ सुछत्रो, चामर सहस्र ने आठ पवित्रो॥
- २८ सुगध तेल ना डावडा इतरा, जाव अजन डावडा जितरा। एता कुडछा धूप उखेवा, सहु विकुर्वे सेवग देवा॥ ः
- २६. स्वभाविक वैक्रिय ना तेही, कलशा यावत घूप कुडछा लेई। सौधर्मावतसक थी चाल्या, ए तो उत्कृष्ट गति थी हाल्या।।
- ३०. ग्रहै क्षीरसमुद्र नो पाणी, तेहना उत्पल कमल पिछाणी। जाव लक्षपत्र' कमल लेई, आया पुष्करोदक दिघ तेही।।
- ३१ ग्रहै पुक्लरदिघ जल सारो, कमल सहस्रपत्रादि उदारो। आया समय-क्षेत्र रै माह्यो, क्षेत्र भरत एरवत ताह्यो॥
- ३२. तीर्थ मागध वर दाम प्रभास, सुर उदक माटी लै तास। ए लौकिक तीरथ होई, पिण धर्म तीर्थ नहि कोई।।
- ३३ ग्रहै गगा सिधु नो पाणी, वली रत्ता रत्तवती नो जाणी। विहु तट नी माटी उदारो, ते पिण देव ग्रहै तिणवारो॥
- ३४ भरत सीमा चूल हेमवतो, एरवत सीमा सिखरी सोह्तो। तिहा आया देव हुलासो, सर्व तूवर रस ले तासो।
- ३५ सर्व फूल सर्व गधो, ग्रहै सर्व माल्य सुखकदो। ओपिंघ सर्व उदारो, विल ग्रहै सरिसव सुविचारो।।
- ३६. हेमवते पद्म द्रह ठीक, सिखरी पर्वत द्रहे पुडरीक। विहु द्रह ना उदक ग्रहै आछा, जाव कमल सहस्रपत्र जाचा।।
- ३७ युगल क्षेत्र हेमवत वासो, तिहा नदी रोहिया रोहितासो। क्षेत्र एरणवत मे पिछाणी, सुवर्णकूला रूपकूला जाणी।।
- ३८. ए पिण महानदी नो सारो, ग्रहै उदक धरी अति प्यारो। विहुतट नी माटी आछी, ते पिण देव ग्रहै अति जाची।।
- ३६. वृत्तं वैताढ्य ते विहु खेतो, सद्दावई वियडावई तेथो। सर्व तुवर रस पुष्फ गघ माला, ओपिं सरिसव ग्रहै स्विशाला।।
- ४०. गिरि महाहेमवत ने रूपी, ग्रहै खाटो रस पुष्पादि अनूपी। महापद्म द्रह महापुडरीक, तेहनो उदक कमल लै सधीक॥
- १ 'रायपसेणइय' मूल पाठ मे यहा 'सहस्सपत्ताइ' पाठ है। इस पाठ के पाठातर का यहा उल्लेख नहीं है। इस ढाल की अनेक गायाओं मे इसी प्रकार लक्षपत्र या लाख पाखुडिया शब्द प्रयुक्त है।

- २६. आभरणचीरीणं "लोमहत्यचीरीणं
  - , (राय० सू० २७६)
- २७. पुष्फपडलगाण जाव (स॰ पा॰) लोमहत्यपडलगाण ""छत्ताण चामराणं (राय॰ सृ० २७६)
- २८ तेल्लसमुग्गाण जाव (स० पा०) अजणसमुग्गाण · · · अट्ठसहस्स घूवकडुच्छुयाण विज्ञव्वति (राय० सू० २७६)
- २६. विउन्वित्ता ते साभाविए य वेउन्विए य कलसे य जाव कहुच्छुए य गिण्हति, गिण्हिता (सोहम्मवर्डेसाओ) विमाणाओ पिंडिनिक्खमिति, पिंडिनिक्खिमित्ता ताए उक्किट्ठाए "देवगईए ""वीतिवयमाणा (राय० स्० २७६)
- ३०. "खीरोयग गिण्हति, गिण्हिता जाइ तत्युप्पलाइ जाव (स० पा०) सहस्सपत्ताइ ताइ गिण्हिता गिण्हित जेणेव पुनखरोदए समुद्दे तेणेव उनागच्छिति (राय० स० २७६)
- ३१ उवागिन्छत्ता पुक्खरोदय गेण्हित, गेण्हिता जाइ तत्युप्पनाइं सहस्सपत्ताइ ताइ गिण्हित, गिण्हित्ता जेणेव समयखेते जेणेव भरहेरवयाइ वासाइ
- (राय० सू० २७६) ३२. जेणेव मागहवरदामपभासाइ तित्याइ तेणेव उवा-गच्छति, उवागच्छित्ता तित्योदग गेण्हति, गेण्हित्ता तित्यमट्टिय गेण्हति (राय० सू० २७६)
- ३३ जेणेव गग-सिंधू-रत्ता-रत्तवईओ महानईओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सिललोदग गेण्हति, गेण्हित्ता उभओकूलमिट्टय गेण्हति, (राय० सू० २७९)
- ३४. जेणेव चुल्लिहिमवतिसहिरिवासहरपव्वया तेणेव जवा-गच्छिति, तेणेव जवागिच्छित्ता सव्वतूयरे
- (राय० स० २७६) ३५ सन्त्रपुष्फे सन्वगधे सन्वमल्ले सन्त्रोसहिसिद्धत्थए गिण्हति, (राय० स० २७६)
- ३६. जेणेव पउमपुडरीयदहा तेणेव उवागच्छति, उवाग-च्छिता दहोदग गेण्हति, गेण्हित्ता जाइ तत्य उप्पलाइ (जाव) सहस्सपताइ ताइ गेण्हित (राय० सू० २७६)
- ३७,३८ जेणेव हेमवयएरण्णवयाइ वासाइ जेणेव रोहिय-रोहियससुवण्णकूल-रुप्पकूलाओ महाणईओ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सिललोदग गेण्हति, गेण्डित्ता उभओकूलमट्टिय गिण्हति (राय० सू० २७६)
- ३६ जेणेव सद्दावाति-वियडावाति वट्टवेयब्द्धपन्वया तेणेव जवागच्छति, जवागच्छिता सन्वतूयरे सन्वपुष्फे सन्व-गधे सन्वमल्ले सन्वोसिहिसिद्धत्यए गिण्हति
- ४० जेणेव महाहिमवत-रुप्पि-वासहरपव्यया सव्वतूयरे सव्वपुष्फे " जेणेव महापडम-पुडरीयद्दा दहोदग ... सहस्सपत्ताइ ताइ गेण्हति (राय० सू० २७६)

- ४१. क्षेत्र हरिवास सोहता, नदी हरिसलिला हरिकंता। रम्यकक्षेत्र नरकता नारीकता, ग्रहै उदक माटी घर खता॥
- ४२. तिणे विहुं क्षेत्रे अवलोय, वृत्त वैताढ्य गिरि है दोय। गवावई मालवत, तूवर रस पुष्पादि ग्रहत।।
- ४३. निपव नीलवत गिरि केरो, तूवर पुष्पादि लेवै भलेरो। द्रह तिगिच्छ केसरी ना जाचा, लियै उदक कमल अति आछा।।
- ४४. पछै क्षेत्र विदेह तिहा आया, नदी सीता सीतोदा सुखदाया। तेहनो निर्मल पाणी लेवै, विहुं तट नी माटी ग्रहेवै॥
- ४५ विजय सर्व चक्री नी तास, तीर्थ मागघ वर दाम प्रभास। तेह तीर्थ नु उदक ग्रहता, विल माटी ग्रहै घर खता॥
- ४६. विदेह क्षेत्रे अंतर नदी वार, तसु उदकादिक लिये उदार। विल वक्खारा पर्वत सोल, लिये तूवर पुष्पादि सुचोल।।
- ४७. हिवे मदरगिरि गुणमाल, भूमि ऊपर वन भद्रसाल।
  ग्रहै सब तूबर सर्व फूल, सर्व माल्य प्रमुख जे अमूल।।
- ४८ ऊर्द्व पाच सी योजन सुहाया, नंदन वन छै तिहां सुर आया। सर्व तुवर आदि ग्रहता, सरस गोशीर्प चंदन लेवता।।
- ४६ तीजो वन सोमनस उदार, ऊची योजन वासठ हजार। ग्रहै सर्व तूवर रस जाव, सर्व ओपिंघ सरिसव साव।।
- ५० विल चदन सरस गोसीस, दिव्य फूलमाला सुजगीस। गाल्यो तथा पचायो श्रीखड, जेहनो गय सुगय सुमड।।
- ५१ तेहथी छत्तीस सहस्र योजन्न, ओ तो ऊचो पडग वन्न। सर्व तूवर रस अमद, श्रीखड गच सरीखो सुगव।।
- ५२. सेवग सर्व वस्तु लेई सघीक, जिहा अभिपेक-सभा रमणीक। जिहा इद्र तिहा शीघ्र आय, सिर आवर्त्त करि अधिकाय॥
- ५३ अर्जाल विहु कर जोड़ी नै, जय विजय कर वद्यावी नै। ते महाअर्थ महामूल्य, वर मोटा योग्य अतुल्य।।
- ५४ विपुल विस्तीर्ण आरोग्य, इन्द्राभिपेक करिवा योग्य। उदक प्रमुख अवलोय, थापे सर्व सामग्री सोय।।

- ४१. जेणेव हरिवासरम्मगवामाइ जेणेव हरि' हरिकंत-नरनारिकंताओ महाणईओ तेणेव उवागच्छति, उवा-गच्छिता सिललोदग गेण्हित गेण्हित्ता उमओकूल-मिट्टयं गेण्हिति। (राय० सू० २७६)
- ४२. जेणेव गंधावाति-मालवत-परियागा वट्टवेयट्डपव्यया 
  ....मब्बतूयरे सब्बपुष्फे .....गिण्हति

(राय० सू० २७६)

- ४४. जेणेव महाविदेहे वासे जेणेव मीता-मीनोदाओ महाण-दीओ "मलीलोदगं गेण्हति गेण्हित्ता उमओकूल-मट्टिय गेण्हति (राय० सू० २७६)
- ४५ जेणेव मञ्चचन्कविट्ट-विजया जेणेव मञ्चमागहवर-दाम-पभामाइ तित्याइ तेणेव उवागच्छति, उवा-गच्छिता तित्योदग गेण्हित गेण्हिता तित्यमिट्ट्यं गेण्हिति। (राय० सू० २७६)
- ४६ जेणेव सञ्वतरणईक्षोः सनिलोवग गेण्हति, गेण्हिता उभक्षोकूलमट्टिय गेण्हतिः जेणेव मञ्जवक्वारपञ्चया . सञ्चतूयरे सञ्चपुष्फे य गेण्हति

(राय० सू० २७६)

- ४७. जेणेव मदरे पन्वते जेणेव भद्गालवणे " सन्वत्यरे सन्वपुष्फे "मन्त्रमल्ले " गेण्हति
- (राय० सू० २७६) ४८. जेणेव णंदणवणे तेणेव उवागच्छतिः सन्वतूयरेः । सरस गोमीसचंदण गिण्हति (राय० सू० २७६)
- ४६ जेणेव सोमणसवणे तेणेव उवागच्छित, उवागच्छिता सब्बतूयरे जाव (स॰ पा॰) सब्बोमहिमिद्धत्यए य (राय॰ स॰ २७६)
- ५०. सरस गोमीमचदण च दिव्व च सुमणदाम गिण्हति (राय० सूर्ः २७६)
- ४१. जेणेव पडगवणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता सव्वतूयरे " दह्रमलयमुगधियगद्ये गिण्हति । (राय० स० २७६)
- ५२ जेणेव अभिनेयसभा जेणेव सक्के देविदे देवराया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता सूरियाभं देव करयल-परिगाहिय सिरसावत्तं मत्यए (राय० सू० २७६)
- ५३. अर्जील कट्टु जएण विजएण वद्धार्वेति, वद्धावेत्ता त महत्य महत्य महारह (राय० सू० २७६)
- ५४ विजल इदाभिसेय जवहुर्वेति (राय० सू० २७६)
- १ जोड मे इसके स्थान पर हरिसलिला है। रायपसेण-इय मे हरिसलिला को पाठान्तर मे रखा गया है।

- ४४. हिवै इन्द्र तणां तिण वार, सामानिक चउरासी हजार। विल अग्रमहिपी अठ, परिवार सहित सुघट।। ४६ परिषद तीन सुजात, विल अणिय कटकािषप सात। जाव अन्य वहु सुवर्मवासी, वर अमर सुरी सुखरासी।।
- ५७. अप्ट सहस्र ने चउसठ उदार, कलश सुवर्णादिक नां सार। स्वभाविक वैक्रिय ना वारु, ते कलश किसायक चारु।।

#### गोतक-छंद

प्रद वर कमल नू वैसणू जेहने, सुगघ वर जल करि भर्या। विल चदने करि चिंतता, अतिही मनोहर उच्चर्या।। प्रश् आरोपिता जसु कलश कठे, रक्त सूत्र सुहामणा। प्रुन पद्म उत्पल कमल ना, तसु ढाकणा रिलयामणा।। ६० सुकुमाल कोमल कर तले करि, अमर कलशा सग्रह्मा। सह सुगघ जल करि सर्व, तीरथ-मृत्तिका कर शोभिया।। ६१ सह तूवर रस करि जाव सघली, ओषधी सिरसव करी। सह ऋदि करिके जाव सघली, पवर वार्जित्रे वरी।। ६२ इह रीत अति मोटैज मोटै, इद्र अभिषेके करी। अभिपेक करता चित्त हरता, हरण घरता सुर सुरी।। ६३ तव शक्र ने सामानिकादिक, राज वैसाणे तदा। वर पूर्व कृत तप तसु प्रभावे, लही उत्तम संपदा।।

## दूहा

- ६४. अमर वहूँ तिण अवसरे, सुघर्मावतस विमान। तेह विषे कोतुक करे, सुणो सुरत दे कान।। ६४. \*इन्द्राभिषेक उदारो रे, वर्त्तते छते सुर केइ सारो। रज रेणु मिटावण भावै रे, ए तो सुरिभ उदक वरसावै।।
- ६६ केइ विशेष रज उपशमायो, उदक छाटी ने ताह्यो। जिम कचवर सोधन लीपेहो, मार्ग पवित्र करें तिम एहो।।
  - ६७ केइ मच ऊँपर करैं मचो, केइ अनेक रगे रगी सचो।
    एहवी ध्वजा पताका जानो, मिंडत ऊर्द्ध करैं असमानो।।
    †पुरन्दर सुर प्यारे, शक्र सुर इन्द्र प्यारे।
    ए तो सुकृत ना फल सारो, मधवन सुर प्यारे।। (ध्रुपद)

- ४५. तए णं चित्रासीइ सामाणियसाहस्सिओ अट्ठ अग्ग-महिसीओ सपरिवारातो, (राय० सू० २८०)
- ५६. तिण्णि परिसाओ सत्त अणियाहिवइणो जाव (सं० पा०)अण्णेवि वहवे सोहम्मविमाणवासिणो देवा य देवीओ य (राय० सू० २८०)
- ५७-६२. तेहि साभाविएहि य वेजिव्वएहि य वरकमल-पइट्ठाणेहि सुरिभवरवारिपिडपुण्णेहि चंदणकयचच्चा-एहि आविद्धकंठगुणेहि पउमुप्पलिपहाणेहि सुकुमाल-करयलपिरग्गहिएहि अट्ठसहस्सेण सोविण्ण्याण कल-साणं "जाव (स० पा०) "सव्वोदएहि सव्वमिट्ट्याहि सव्वतूयरेहि जाव (स० पा०) सव्वोसिहिसिद्धत्य-एहि य सिव्वड्डीए (जाव स० १३) 'नाइयरवेण' महया-महया ।इदाभिसेएणं अभिस्चिति

(राय० सू० २८०)

- ६५. तए ण तस्स .... महया महया इदाभिसेए वट्टमाणे .... अप्पेगतिया देवा .... रय-रेणु-विणासण दिव्व सुरिभगधोदगवास वासित । [(राय० सू० २८१)
- ६६ अप्पेगितया देवा ......पसत्य करेंति । अप्पेगितिया देवा .....असियसंमिज्जिओविलत्त सित्तसुइ ...... करेंति । (राय० सू० २८१) आसिकम्—उदकच्छटकेन सम्माजित—संभाव्यमान-कचवरमोधनेन उपलिप्तिमव गोमयादिना उपलिप्त तथा सिक्तानि जलेन अत एव शुचीनि—पवित्राणि (राय० वृ० प० २४७)
- ६७. अप्पेगितिया देवा ""मचाइमचकलिय करेंति अप्पे-गतिया देवा ""णाणाविहरागोसियझयपडागाइ-पडागमडिय करेंति। (राय० सू० २८१)

\*लय: थे तो चतुर सीखो सुघ चरचा †लय: ज्यारे शोभे केसरिया साड़ी

- ६८ केइ लीपै घवल विमानं, गोसीस सरस मुविघान्। पुरन्दर। रक्त चन्दन करि सीघा, पचांगुनि हाथा दीघा।। जक्र०।
- ६६. केड द्वार ने देश भागेह, चदन' चिंत घट स्थापेह। वले शोभन तोरण सार, एहवा कीवा अधिक उदार॥
- ७०. केइ नीचली भूमि थी ताह्यो, ऊपर चदवा लग अधिकायो। वांदी वर्तुल वहु पुष्पमाला, वारू लवायमान विशाला।।
- ७१. केड पच वर्ण नां सुगव, मूर्क पुष्प-प्ज सुखकद। नेहिज पूजा उपचार सहीत, एहवो करै विमाण सुरीतं॥
- ७२. केड मुवर्मावतंस विमाणं, वर कृष्णागर कुंदरुक जाणं। सेल्हा रस ना धूप करि जेह, मधमघायमान करेह।।
- ७३. केंड मुगंघ पवर गथ युक्त, गंघ नी वातीभूत प्रयुक्तं। मुर एहवो विमाण करेह, अति उचरग हरप घरेह।।
- ७४ \*केड हिरण्य मुवर्ण वर्षायो, वले रत्न-वर्षा करै ताह्यो। वलि फूल नी वृष्टि करेह्रो, फल वृष्टि करै घर नेहो॥
- ७५. विल फूलमाल वर्पायो, आभरण नी वृष्टि सुहायो। करे गव कपूरादिक वृष्टि, चूर्ण वृष्टि अवीरादि इष्टि।।
- ७६ केड रूपा नी विव मगलभूतो, अन्य मृर भणी दै शुभ मूतो। इम मुवर्ण रत्न प्रकारो, मुर दिये फूलादिक सारो॥

७७. केडक सुर विल ताह्यो, चिउंविव वाजत्र वजायो। ततं कहिता मृदग पडहादि, विततं कहितां वीणादि।। ७८. घन कहितां कंसादि, भुसिर शंख काहलादि। ए वार्जित्र च्यार प्रकारो, ए तो देव वजावे उदारो।।

•लय: थे तो चतुर सीखो सुघ चरचा

- रायपसेणइयं सूत्र २८१ में वदण कलमा और वंदणघड इन दो शब्दो का उल्लेख हैं। जोड में चन्दनचित घट लिखा हुआ है। यहा दो विन्दु चिन्तनीय हैं—
- कुछ प्रतियों में चदन कलम और चंदन घड दोनो पाठ हो और कुछ प्रतियों में केवल चंदण घड पाठ ही हो ।
- कुछ प्रतियों में वंदणकलस और वदणघड पाठ है जहा वदणकलस पाठ है वहाँ पाठान्तर की कोई सूचना नहीं है। ऐसी स्थिति में यह अनुमान किया जा सकता है कि निपि दोप के कारण चंदण का वदण अथवा वन्दन का चदण हो गया हो। जोट में चंदण होने पर भी 'रायपसेणड्य' में स्वीकृत पाठ वंदण को ही उसके सामने उद्धृत किया गया है। आगे की गाथाओं के सामने भी यही पाठ उद्घृत है।
- २. रायपसेणइयं में मल्लवासं के बाद गंधवास चुण्णवास पाठ है। उसके बाद बाभरणवास है। जोड़ में कम का व्यत्यय है। सभव है कुछ बादर्जी में पाठ का कम यह रहा होगा।

- ६८. अप्पेगतिया देवा सोहम्मवर्डेसयं विमाण लाउल्लोइय-महियं गोसीस-सरस-रत्तवदण-दह्र-दिण्ण-पचंगुलितल करेंति । (राय० सू० २८१)
- ६६, अप्पेगतिया देवा : उविचय: वदणघड-सुकय तोरण-पडिदुवार-देसभागं करेंति ।

(राय० सू० २८१)

- ७०. अप्पेगितया देवा .... आसत्तोसत्त-विज्ञल-बट्टवग्या्रिय-मल्ल-दाम-कलावं करेंति (राय० सू० २८१)
- ७१. अप्पेगतिया देवा "पंचवण्ण-मुरिभ-मुक्कपुप्फपूंजोव-यारकलिय करेंति । (राय० सू० २८१)
- ७२. अप्पेगतिया देवा सोहम्मवर्डेसयं विमाणं कालागर-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-चूव-मघमघत - गंद्रुद्ध्याभिराम करेंति। (राय० सू० २८१)
- ७३. व्यपेगडया देवा "सुगधगधियं गधवट्टि भूतं करेंति। (राय० सू० २५१)
- ७४. अप्पेगतिया देवा हिरण्णवासं वासंति, सुवण्णवास वासंति रयणवासं वासंति .... .. पुष्फवास वामित फलवास वामिति । (रा य० मू० २८१)
- ७५. मल्लवाम वासति, गधवास वासति चुण्णवासं वासति आभरणवास वासति । (राय० सू० २८१)
- ७६. अप्पेगतिया देवा हिरण्णविहि भाएंति एवं मुवण्ण-विहि रयणविहि पुष्फविहि भाएंति ।

(राय० सू० २८१)

हिरण्यविधिहिरण्यरूप मगलभूतं प्रकारं (राय० वृ० प० २४७)

- ७७. अप्पेगतिया देवा चरुन्त्रिहं वाइत्तं वाएति--ततं विततं (राय० सू० २८१)
- ७८. घणं सुसिरं (राय० सू० २८१)

- ७६ केइ चछिवघ गावै गीतं, छिवखत्त पायताय पुनीतं। तृतीय मदाय सुजानं, तूर्य रोइय ते अवसान।। वा० कोइक देवता चिहुं प्रकारे गीत गावै, ते कहै छै उक्खिताय प्रथम गीत प्रारभ्यो छै। पायत्ताय चिहु चरणे वाघ्यो। मदाय मध्य भागे मूच्छेनापूरय गुण करी। छेहडे रोइयावसाण चोरिवा योग्य थया। द०. केइ शीघ्र नाटक विधि देखाडै, केइ नाटक विलवित पाड़ै। केइ द्रुत-विलवित विद्ध, एहवा नाटक देखाडै प्रसिद्ध।।
  - दर केइ अचित नाटक देखाडै, केइ आरिभत नाटक पाडै। केइ अचित-आरिभत विद्धि, नाटक उभय देखाड़ै समृद्धि।।
  - द२ केइ आरभड नाटक देखाडै, केइ भसोल नाटक पाडै। केइ आरभड-भसोल पिछाणी, नाटक देखाडै उचरग आणी।।

#### गीतक-छंद

द अचोज उत्पत्त करी फुन, अघो पडवु व्यापवु।
सकोचवू ज पसारवु, गमनागमन फुन थापवु।।
द विल भ्रत भाव सभ्रत भाव ज, नाम दिव्य प्रधान ही।
ए नृत्यविधि आरभड भसोलज, सुर दिखाड जान ही।।
द उत्पात पूर्व निपात, जेह में ने उत्पात-निपात ही।
पहिलू पडी ने ते पछै, उत्पात अचो जात ही।।
द निपात पूर्व उत्पात जेह में, ते निपात-उत्पात ही।
उत्पत्य अचो जई पहिला, पछै नीचो आत ही।।
द७. सकुचित पूर्व प्रसारित जे, ते सकुचित-प्रसारित।
पहिला पसारी ने पछै सकोचिवू इम कारित।।
दद इम गमन ने आगमन आख्यू, अर्थ पूरववत वही।
इम भ्रत ने सभ्रत नामे दिव्य नाटक विध कही।।

चा०—उत्पात ते कचो जायवू, पिण पूर्व निपात—नीचु पड़वू छै जेहने विषे, एतलै पहिला नीचो जई पछै कचो जाय ते उत्पात-निपात कहियै। इम निपात ते नीचू पड़वू, पिण पूर्व उत्पात—कचो जायवू छै जेहने विषे एतलै पहिला कचो ज़ई पछै नीचो पडै ते निपात-उत्पात कहियै। इम सकुचित-प्रसारित ना वे भेद। इम गमन ते जायवू अनै आगमन ते आयवू, तेहना वे भेद। इम भ्रत सम्रत कहिवू। ए सर्व भेद 'आरभड-भसोल' नाटक ना छै। ते आरभड-भसोल एहवै नाने दिच्य नाटक विध देखाडै।

५६ †केइ पट-भाषा' च्यार प्रकारो, वोली देखाडै सुर घर प्यारो। ते दाष्टाँतादिक घारो, नाटक ग्रथ माहि अधिकारो।

- ७१. अप्पेगइया देवा चउन्विह गेयं गायंति, तं जहा— उक्खित्ताय पायंताय मदायं रोइयावसाणं । (राय० सू० २८१)
- द्य नट्टविहि उवदसेंति । अप्पेगतिया देवा विलविय णट्टविहि उवदसेंति । अप्पेगतिया देवा दुय-विलविय णट्टविहि उवदसेंति । (राय० सू० २८१)
- =१. अप्पेगितया देवा अचिय नट्टिविह उवदसेति । अप्पेगितया देवा रिभिय नट्टिविह उवदसेति । अप्पेगइया देवा अचिय-रिभिय नट्टिविह उवदसेति । (राय० सू० २०१)
- प्रिकाशिया देवा आरभड नट्टविहि उवदसेंति । अप्पेगइया देवा भसोल नट्टविहि उवदसेंति । अप्पेगइया देवा आरभड-भसोल नट्टविहि उवदसेंति (राय० सू० ३०१)
- दत्रः अप्पेगइया देवा उप्पायनिवायपसत्त संकुचिय-पसारियं रियारिय (राय० सू० २८१)
- द४ भत-सभत णाम दिव्व णट्टविहि उवदसेंति । (राय० स० २५१)

बा० — उत्पातपूर्वो निपातो यस्मिन् स उत्पातनिपा-तस्त एव निपातोत्पातं संकुचितप्रसारितं श्रान्त-सश्रान्त नाम आरभटभमोल दिव्य नाट्यविधिमुपदर्श-यन्ति । (राय० वृ० प० २४६)

<sup>\*</sup>ज्यार शोभ केसरिया साड़ी †लय: थे तो चतुर सीखो सुध चरचा

१ पट्भाषा मूल पाठ मे नही है। जयाचार्य ने अपनी दृष्टि से व्याख्या दी है। शायद टव्वे आदि के आधार पर यह पद्य लिखा गया है।

- वा०—केतलायक देवता च्यार प्रकारे पट भाषा बोली देखाडै, ते च्यार प्रकार कहै छै—१. दार्ग्टीतिक, २. प्रात्यितक, ३. सामतोषपातिक, ४. लोक-मध्यावसान—ए चिहु पद नी व्याख्या नाटक ग्रथ थकी जाणवी।
- ६०. केयक देव बुक्कारे, म्हासू युद्ध कर तू इहवारे।केइ प्रीणे घरी अहकारो, आतम स्थूल करें तिहवारो।।
- हश. केड लास्य रूप नाटक पाडै, केड ताण्डव नाटक देखाडै। केड च्यारू साथ सुवासो, इम कर रह्या देव तमासो।।
- १२ केइ देव आस्फोटन करता, मही प्रमुख कर स्यूं हणता। केइ देव विलगे माहोमाह्यो, केइ त्रिपदी छेद करै ताह्यो॥
- ६३. केइ आस्फोटन पिण ताह्यो, वले वल्गावु ते माहोमाह्यो । वित त्रिपदी छेद साकल तोडे, एह तीनूई विघ प्रति जोडे ।।
- ६४. केइ हय जिम करै होसारो, केइ गज जिम गुलगुलाटकारो। केइ रथ जिम करै घणघणाटो, केइ तीनू करै सुर थाटो।।
- १५ \*केइ सुर उछले स्वयमेवा, केइ विशेष ऊछले देवा। केइ पेला नी कूटि काढंता, केइ देव तीनूई करता।।
- ६६ केड उड जाय ऊचा आकाशो, केइ देव नीचा पडै तासो। केइ कूदी-कूदी तिरछा पडता, केइ देव तीनूई घरता॥
- ह७. केइ सुर सिंहनाद करता, केइ पग करि भूमि कूटता। केइ भूमि चपेटा देवै, केइ देव तीनूई करेवै॥
- ६ द केइक देव गाजता, केइ विजल जिम चमकता। केयक मेह वर्षाय, केड देव तीनू करें ताय।।
- हर केड ज्वलै छै देवा, केइ तपै ततखेवा। केइ तपै छै विशेख, केइ कार्य तीनू उवेख।।

ह०. अप्पेगतिया देवा वुक्कारेंति, अप्पेगतिया देवा पीणेंति। (राय० सू० २५१) अप्पेकका देवा बुक्काणव्द कुर्वन्ति, पीनयन्ति—पीन-मात्मान कुर्वन्ति—स्यूला भवन्तीत्यर्थ.

(राय० वृ० प० २४८)

६१. अप्पेगतिया लासेंति । अप्पेगतिया तडवेंति । अप्पेगतिया बुवकारेंति, पीणेंति, लासेंति, तडवेंति । (राय० स्०२६१)

लासयन्ति लास्यरूप नृत्य कुर्वन्ति, ताण्डवयन्ति— ताण्डवरूप नृत्य कुर्वन्ति । (राय० वृ० प० २४६)

हर. अप्पेगतिया अप्फोर्डेति । अप्पेगतिया वग्गति । अप्पे-गतिया तिवइ छिदति । (राय० सू० २५१) आस्फोटयन्ति भूम्यादिकमिति गम्यते । (राय० वृ० प० २४६,२४६)

१३. अप्पेगतिया अप्फोर्डेति वग्गति, तिवइ छिदति । (राय० सू० २८१)

६४ अप्पेगतिया हयहेसिय करेंति । अप्पेगतिया हित्यगुलगुलाइयं करेंति । अप्पेगतिया रहघणघणाइय करेंति । अप्पेगतिया हयहेमियं करेंति, हित्यगुलगुलाइय करेंति, रहघणघणाइय करेंति । (राय० सू० २८१)

६५ अप्पेगतिया उच्छलेंति, अप्पेगतिया पोच्छलेंति, अप्पेगतिया उक्किट्टिय करेंति । अप्पेगतिया उच्छलेंति, पोच्छलेंति, उक्किट्टिय करेंति । (राय० सू० २८१)

६६. अप्पेगतिया ओवयति, अप्पेगतिया उप्पयति, अप्पे-गतिया परिवयति, अप्पेगइया तिण्णि वि । (राय० स्०२५१)

परिपतन्ति—तिर्यक् निपतन्तीत्यर्थः

(राय० वृ० प० २४६)

८७ अप्पेगइया सीहनायं नयित, अप्पेगितया पाददद्रय करेंति ।
 अप्पेगितया भूमिचवेड दलयित, अप्पेगितया तिण्णि वि । (राय० सू० २५१)

६८. अप्पेगतिया गज्जंति, अप्पेगतिया विज्जुयायति, अप्पेगइया वास वासति, अप्पेगतिया तिण्णि वि करेंति। (राय० सू० २८१)

६६. अप्पेगतिया जलित, अप्पेगितया तवित, अप्पेगितया पतवेति, अप्पेगितया तिण्णि वि ।

(राय० सू० २८१)

<sup>\*</sup>लय: ज्यारे शोम केसरिया साड़ी

१०० केइ हववारे वेइ पुबकारे', केइक पर ने थुक्कारे। केइ पोता नो नाम सभलावै, केइ च्यारूई कर हुलसावै ॥ वा०- हवकारेंति ते पर नै दिनय करि कला देखाडै, फुनकारेंति ते फुत्कार

करै, युक्कारेंति ते यू-यू करै।

१०१ केइ सुर करै सुर-सन्निपातो, सुर एकठा मिले विख्यातो । सुर उद्योत करै केइ देवा, केड सुर उत्कलिका करेवा।।

- १०२ केइ देव कहकह करता, प्रकृत देव हर्ष अति घरता। स्वेच्छा वचन कर जेहो, कोलाहल वाल जेम करेहो।।
- १०३ केइ दुहदुहक्क शब्द करता, केइ चेलुक्खेव विकरता। इम एक-एक आदरता, केइ कार्य छहु आचरता।।
- १०४. केड ऊभा उत्पल हस्त लेई, जाव लक्ष पाखडिया कहेई। विल कलश ग्रही ऊभा केई, जाव धूप-कडुच्छ कर लेई।।
- १०५ हष्ट तुष्ट थका जाव जेहो, हृदय विकसायमान करेहो। चिहु दिशि सर्व थकी दोडता, फुन परिघावति आवंता ॥
- १०६ \*हिवै इद्र तणा तिणवार, सामानिक चउरासी हजार। जाव आत्मरक्षक देवा, त्रिणलख सहस्र छतीस सुलेवा ।।
- १०७. अन्य वहु सुर सुरी जाणो, एतो सुघर्मवासी पिछाणो। महाइद्राभिषेक करता, सिर आवर्त्तन करिने वदता।। †हो म्हारा दक्षिण अर्घ लोक ना स्वामी !

चिर जीव चिर नद ॥ (ध्रुपद)

१०८ जय जय नदा । जय जय भदा । जय जय तू हे नद। भुवन समृद्धिकारी आनन्द थावो, भद्रकल्याण थावो अमद ॥ १०६ जय जय नद । भद्रतुभ थावो, अणजीत्या शत्रु जीतीज्यो। जीत्या पोता ना वर्ग पालीज्यो, जीत्या वर्ग मे वसीज्यो ॥

११० सुर-गण महेन्द्र तणी पर, तारा-गण मे जिम चद। असुर-समूह विषे जिम चमरेद्र, जिम नाग विषे घरणेद्र।।

१११ मनुष्य विषे जिम भरत चक्री फुन, वहु पल्योपम लगेह। वह सागरोपम लग स्वामी, सुखे-सुखे विचरेह।।

\*लय : सुण चिरताली थारा लक्षण

†लय: हो म्हारा राजा रा गुरुदेव वावाजी

- १ फुनकारे और युनकारे के स्थान पर रायपसेणइय मे क्रमण थुनकारेंति और थक्कारेंति पाठ है।
- २ यहा रायपसेणइय की वृत्ति मे 'बोलकोलाहल' पाठ है।

१००. अप्पेगतिया हक्कारेंति, अप्पेगतिया थुक्कारेंति, अप्पेगतिया थक्कारेंति, अप्पेगतिया 'साइ साइ नामाइ साहेति' अप्पेगतिया चत्तारि वि ।

(राय० सू० २८१)

१०१. अप्पेगइया देवसण्णिवाय करेंति, अप्पेगितया देवु-ज्जोयं करेंति, अप्पेगइया देनुक्कलिय करेंति।

(राय० सू० २८१)

१०२ अप्पेगइया देवकहकहग करेंति। (राय० सू० २८१) प्राकृताना देवाना प्रमोदभरवशत. स्वेच्छावचनैवॉल-<u>कोलाहलो देवकहकहस्त कुर्वन्ति ।</u>

(राय० वृ० प० २४६)

१०३. अप्पेगतिया देवदुहदुहग करेति । अप्पेगतिया चेलु-क्सेव करेंति। अप्पेगइया देवसण्णिवाय, देवुज्जीय, देवुक्कलिय, देवकहकहग, देवदुहदुहग, चेलुक्खेव करेंति। (राय० सू० २८१)

१०४. अप्पेगतिया उप्पलहत्थगया जाव सहस्सपत्तहत्थगया । अप्पेगतिया वदणकलसहत्यगया जाव अप्पेगतिया घूवकडुच्छुयहत्यगया । (राय० सू० २८१)

१०५ हट्टतुट्ठ जाव (स० पा०) हियया सन्वको समता आहावति परिधावति । (राय० सू० २८१)

१०६,१०७ तए ण त ः अण्णे य वहवे ः ः देवा य देवीओ य महया महया इदाभिसेगेण अभिसिचति, अभिसिचित्ता पत्तेय-पत्तेय करयलपरिग्गहिय सिरसा-वत्त मत्यए अर्जील कट्टु एव वयासी-

(राय० सू० २८२)

१०८ जय जय नदा ! जय जय भद्दा !

(राय० सू० २८२)

१०६. जय जय नदा । भद्द ते अजिय जिणाहि, जिय च पालेहि जियमज्झे वसाहि- (राय० सू० २८२)

११० इदो इव देवाण, चदो इव ताराण, चमरो इव असुराण, धरणो इव नागाण, (राय० सू० २८२)

१११. भरहो इव मणुयाण-वहूइ पिलओवमाइ वहूइ सागरोवमाइ (राय० सू० २८२)

११२ सहंस चउरासी सामानिक सुरवर, जाव आत्मरक्ष जाणी। त्रि लख सहंस छतीस तुम्हारी, सेव करें सुखदाणी।। ११३ अन्य वहु सृधमं करप ना वासी, देव देवी नों ताम। अधिपतिपणु मालिकपणु करता, आप विचरज्यो स्वाम।।

११४ जावत तुम्हे मोटे आडवर करता, पालता विचरज्यो ताह्यो।

इम कही जय-जय शब्द प्रजुजे, देव देवी सुखदायो।। ११५ \*शक्र सुरिंद्र तिवार,मोटे मोटे आडवरे सार। आछेलाल।

इद्राभिषेक कीधे छते ॥ ११६. अभिषेक सभा ने सोय, पूर्व ने बारणे होय । नीकेलाल ।

निकले निकली निज मते ॥ अक्टार निवा आर्व आयी घर प्यार ।

११७ जिहा सभा अलकार, तिहा आवै आवी घर प्यार। सभा प्रदक्षिणा देती छतो।।

११८. अलकार सभा नै जोय, पूरव वारणे होय। जिहां सिहासण तिहा आवनो।।

११६. सीहासण ने विपेह, पूरव साहमों जेह। मुख करने वेठो तिहा।।

१२०. इद्र तणा सामानीक, विल परपद देव सधीक। भड शृगार जोग स्थाप जिहा।।

१२१ †शक्र देवेन्द्र तिवारो, लूहे वस्त्र करी तनु सारो। ते पसम सहित सुकमालो, रक्त वर्ण सुगंघ रसालो।। १२२. एहवे इक पट वस्त्रे उदारू, अग लूहै लूही ने वारू। सरस गोशीर्प चदन करीनें, गात्र प्रते लीपें लीपों ने।।

# दोहा

१२३ चदन तनु चरची करी, युगल देवदूष्य जाण। तेह वस्त्र पहिरै तदा, केहवी वस्त्र पिछाण?

१२४. †नासिका नी निःस्वासे कपायो, तिके देख्या नयन ठरायो। वर्ण फर्श युक्त सुखकारी, एहवो वस्त्र अधिक उदारी।।

१२५ कोमल हय नी लाला, तेहथी अधिक घवल मृदु न्हाला। सुवर्ण तारे वारू, छेहडा खचित अधिक उदारू।।

१२६. निर्मल आकाश स्फटिक सरीखो, दिव्य देवदूष्य सुपरीखो । एहवो वस्त्र-युगल सुखकदो, ओ तो पहिरे पहिरी शक-इदो ॥ ११२. ••• ••जाव (मं० पा०) आयरवय-देवमाहस्मीण••• (राय० मृ० २८२)

११२,११४ अण्णेमि च बहुणं च देवाण य देवीण य आहे-यच्च पोरेवच्च कारेमाणे पानेमाणे विहराहि ति कट्टु महया मह्या महेणं जय-जय मह पटजित । (राय० मू० २८२)

११५ तए ण से... महया-महया उन्दामिनेगेण अभिनित्ते नमाणे (राय० मू० २५३)

११६. अभिमेयसभाओ पुरित्यमिल्लेण दारेण निग्गन्छित, निग्गन्छिता (राय० मू० २८३)

११७ जेणेव अनंकारियमभा तेणेव उवागच्छित, उवा-गच्छित्ता अलकारियमभ अणुपयाहिणीकरेमाणे-अणुपयाहिणीकरेमाणे (राय० मू० २८३)

११८. अलकारियसम पुरित्यमिल्नेण दानेण अणुपियनित, अणुपियमित्ता जेणेव सीहामणे तेणेव उवागच्छति (राय० सू० २८३)

११६. सीहासणयरगते पुरस्याभिमुहे मण्णिमण्णे।

(राय० सू० २५३)

१२०. तए ण तस्म " "मामाणियपरिमोववण्णगा देवा अनकारियमढ उबहुवेति। (राय० मू० २६४)

१२१,१२२. तए ण मे .... तप्पढमयाए पम्हनसूमानाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइ लूहेति लूहेता, सरसेण गोसीमचदणेण गायाइ अणुनिपति, अणुनिपत्ता

(राय० सु० २८४)

पक्ष्मला च मा सुकुमारा च पक्ष्मलसुकुमारा तया
सुरम्या गन्धकापायिक्या सुरिभगन्धकपायद्रव्यपरिकमितया लघुशाटिकया गाथाणि रुक्षयति ।
(राय० वृ० प० २४१)

१२४. नासा-नीसास-वाय-वोज्झ चक्युहर वण्णफरिसजुत्त (राय० सू० २५४)

'नासिकानि:श्वासवाद्यम्' (राय० वृ० प० २५१)

१२४. हयलालापेलवातिरेगं घेवल कणग-खियतकम्मं (राय० सू० २८४)

हयलाना—अध्वलाला तस्या अपि पेलवमितरेकेण हयलानापेलवातिरेकम्— अतिविशिष्टमृदुत्तलघुत्व-गुणोपेतिमिति भाव, धवल घ्वेतं तथा कनकेन खिन-तानि—विच्छुरितानि अन्तकर्माणि—अचलयोवनि-लक्षणानि यस्य तत् कनकल्वितान्तकर्म

(राय० वृ० प० २५१)

१२६,१२७. आगासफालियममप्पम दिव्व देवदूस-जुयलं नियसेति, नियंसेत्ता (राय० सू० २०५) आकाशस्फटिक नामातिस्वच्छ स्फटिकविशेषस्तत्सम- प्रभ दिव्यं देवदूष्ययुगल परिधत्ते परिधाय हारावीन्या- भरणानि पिनह्यति । (राय० वृ० प० २५१)

<sup>&</sup>lt;sup>\*</sup>लय : आछेलाल

<sup>†</sup>लय: ज्यांरे शोभ केसरिया साड़ी

१२७. देवदूष्य पहिरी करी, पेहरै गेहणा कहिये ते अधिकार हिव, साभलज्यो घर प्यार॥ १२८. \*पहिरै अण्टादशसर हारो, ए पूर्ण हार श्रीकारो।

अर्द्ध हार पहिरत, ते नवसरियो द्युतिमत्।।

१२६ वली एकावली पहिरतो, विचित्र मणी मोती नो सोहतो। पछै पहिरै मुक्तावली हारो, वली रत्नावली सुविचारो ।।

१३० अगद वहिरखा एमो, केऊर कडग त्रुटित पिण तेमो। कटिसूत्र कणदोरो एहो, मुद्रिका दश अगुली विषेहो।।

१३१ वक्षसूत्र हिया नो वारू, ओ तो पहिरै अधिक उदारू। मरवि मादल ने आकारो, गेहणो पहिरै अति घर प्यारो ।। १३२. विल कठमुरवी पहिरंत, ते तो कंठ विषे भलकत। विल भूवणा अति लहकंत, पहिरै उद्योतकारी अत्यत ।। १३३. कर्ण कुडल अति भलकै, चूडामणी ते सेहरो चलकै। ओ तो सर्व रतन में सारो, शोभ डंद्र ने शिर श्रीकारो।। वा०-- चूडामणि नाम सकल पायिव रत्न सर्व सार, देवेंद्र ने मस्तके कीधो है निवास, सर्व अमगल ने शाति नो करणहार, रोग-प्रमुख दोष ने नाश नो करण-हार, अतिही श्रेष्ठ लक्षणे करी सहित परम मंगलभूत आभरण विशेष।

१३४. नाना प्रकार ना जेह, रत्ने करि युक्त सुलेह। एहवो मुकुट अनूप, इम गेहणा पहिरचा घर चूप।।

१३५ गथिम वेढिम पूरिम सघात, चउविघ माल्य करीने सुजात। सुरतरु जिम आत्म प्रतेह, अलकृत विभूषित करेह।।

१३६ कुडिका भाजन विपेह, गाल्यो श्रीखंड जेहवु एह। परम सुगध करेह, चारू उज्जल की घी

१३७ प्रवर पुष्प नी माला, तिका पहिरै अधिक विशाला। हिव शक्र सुरेद्र तिवार, कीघा चउविघ अलकार।।

१३८ केशालकार मल्लालकार, वलि वस्त्रालकार विचार। आभरणालकार' सुजोय, प्रतिपूर्ण अलकार कर सोय।।

\*लय: ज्यांरे शोभ केसरिया साड़ी

१२८. हार पिणिखेतिः " अद्वहारं पिणिखेइ (राय० सू० २८५)

हार:-अष्टादशसरिक, अर्द्धहारो-नवसरिक:

(राय० वृ० प० २५१)

१२६. एगावर्लि पिणिद्धेति पिणिद्धेता मुत्तावर्लि पिणिद्धेति ······रयणाविल पिणिद्धेह (राय० सू० २८४) एकावली-विचित्रमणिका मुक्तावली-मुक्ताफलमयी (राय० वृ० प० २५१)

१३०. पिणिद्धेत्ता एव —अगयाइ केयूराइ कडगाइ तुडियाइ कडिसुत्तग दसमुद्दाणतग (राय० सू० १८४) अंगदानि—वाह्याभरणविशेषा । दशमुद्रिकानन्तक हस्तागुलिसम्बन्धिमुद्रिकादशकं ।

(राय० वृ० प० २५२)

१३१. विकच्छसुत्तग मुरवि (राय० सू० २८५)

१३२. कठमुरवि पालव (राय० सू० २८५)

१३३ कुडलाइ चूडामणि (राय० सू 🛚 २८५) कुण्डले--कर्णाभरणे (राय० वृ० प० २५२) वा० - चूडामणिनीम सकलपाधिवरत्नसर्वसारो देवेन्द्र-मनुष्येन्द्रमूर्ङंकृतनिवासो नि शेषामगलाशान्तिरोग-प्रमुखदोषापहारकारी प्रवरलक्षणोपेत परममगलभूत-आभरणविशेप । (राय० वृ० प० २४२)

१३४. • • मजडं पिणिद्धेइ (राय० सू० २८४) चित्राणि--नानाप्रकाराणि यानि रत्नानि तै सकट-श्चित्ररत्नसकटः—प्रभूतरत्ननिचयोपेत.

(राय० वृ० प० २५२)

१३५ गथिम-वेढिम-पूरिम-सघाइमेण चउन्विहेण मल्लेण कप्परुक्खग पिव अप्पाण अलिकयविभूसिय करेइ।

(राय० सू० २५५)

१३६. दह्र-मलय-सुगध-गधएहि गायाइ भुकुडेति (राय० सू० २८४)

१३७,१३८. दिव्वं च सुमणदाम पिणिद्धेइ।

(राय० सू० २८४)

तए ण से ""केसालकारेण मल्लालकारेण वत्थालकारेण —चउव्विहेण आभरणालकारेण अलकारेण अलकियविभूसिए समाणे पडिपुण्णालकारे

(राय० सू० २८६)

१. 'रायपसेणइय' मे पहले आभरणलकार और उसके बाद वस्त्रालकार है।

- १३६. सिहासण थी ऊठी नै तिवार, अलंकार सभा नै पूर्व द्वार। नीसरी जिहा सभा व्यवसाय, तिहा आवै आवी नै ताय।।
- १४० व्यवसाय सभा न तेथ, प्रदक्षिणा करतो जेय। पेठो पूर्व वारणे ताय, जिहा सिहासण तिहा आय।।
- १४१ मिहासण ने विगेह, पूर्व मुख कर बेठो जेह। गक्र तणा तिह वार, सुर सामानिक हितकार॥

१४२ विल त्रिण परपद सुर जाणी,

पुस्तक रत्न आपै तिहा आणी।
हिनै शक्र सुरिंद्र तिनार, ग्रहै पुस्तक रत्न उदार।।
१४३ विल पुस्तक रत्न मूकत, खोला निपे थापत।
पुस्तक रत्न प्रतै उघाउत, पछै पुस्तक रतन वाचत।।

#### सोरठा

१४४. 'शक सुरेद्र प्रसीघ, पुस्तक रत्नज वांचता।
तिहा ते जयणा कीघ, एहवू न कह्यूं सूत्र में।।
१४५ तिण सू ए अवघार, मुख उघाडे पिण तिके।
सावज जोग व्यापार, कुल घम शास्त्रज ते भणी।।' [ज० स०]
१४६ ग्रहै धार्मिक व्यवसाय, पुस्तक रत्न निक्षेपे ताय।
पुस्तक रत्न प्रतै स्थापी ठाम, सिंहासण सू ऊठी नै ताम।।

१४७ व्यवसाय सभा थी सचरियो, पूर्व वारणे होय नीसरियो। पछै नदा पुष्करणी आय, पूर्व तोरण पावड़ियै पेठो मांय।।

१४८. †एक मोटो कलक भिगारो, श्वेत रूपा नो अधिक उदारो।

ते निर्मल जल भर लीधो, वली उत्पलादिक ग्रही सीधो।।

[सुरेद्र सघीको, ओ तो करैं द्रव्य मगलीको।]

१४६ पछै नदा पोक्खरणी थी सारो. ओ तो नीसरियो तिहवारो

१४६ पछै नदा पोक्खरणी थी सारो, ओ तो नीसरियो तिहवारो। जिहा सिद्धायतन जाणी, चाल्यो तिण दिश कानी पिछाणी।।

१५० शक तणा तिहवारो, सामानिक चल्रासी हजारो। जाव आत्मरक्ष देवा, त्रि लख सहरा छ्तीस सुलेवा।। १५१ अन्य वहु सुघर्मवासी, ए तो देव देवी सुखरासी। केड देव उत्पन कर लेई, जाव लक्षपाखड़िया ग्रहेई।।

्लय : ज्यारे शोम कैसरिया साड़ी †लय : सुण चिरताली थारा लक्षण १३६. मीहामणाओ अन्मुट्ठेति, अन्भुट्ठेत्ता अनंकारिय-मभाओ पुरित्यमिल्नेण दारेणं पटिणिक्समइ, पिट-णिक्यमित्ता जेणेव वयमायमभा तेणेव उवागच्छिति, (राय० सू० २८६)

१४०. वयमायमभं अणुषयाहिणीय रेमाणे-अणुषयाहिणी-करेमाणे पुरन्त्यिमिरजेण दारेण अणुषियमति, अणुषिय-मित्ता जेणेय मीहामणे तेणेय उद्यागन्छनि

(राय० मू० २८६)

१४१ सीहासणवरगते पुरत्याभिमुहे मण्णिमण्णे । (राय० सू० २८६)

तए ण नस्स "मामाणियपरिमोववण्णगा देवा

(राय० मू० २८७)

१४२. पोत्ययरयणं उवर्णेति । (नाय० मू० २८७) तते ण मे पोत्ययरयण गिण्हति,

(राय० सू० २८८)

१४३. पोत्ययरयण मुग्ज, मुदत्ता पोत्ययरयण विहादेद, विहादिता पोत्ययरयण वाएति, (राय० सू० २८८)

१४६. धम्मिय ववसाय ववसः, ववसङ्क्ता पोत्यवरयण पिंडणिविखवः, पिंडणिविखविक्ता सीहासणातो अब्सु-ट्ठेति, अब्सुट्ठेक्ता (राय० सू० २८८)

१४७ ववमायमभातो पुरित्यमिल्लेण दारेणं पिडणिक्ख-मइ, पिडणिक्यिमत्ता जेणेव नदा पुक्यिरणी तेणेव जवागच्छति, जव।गिच्छत्ता णदं पुक्यिरिणि पुरित्य-मिल्लेणं तोरणेण तिमोवाणपिडक्ष्विएणं पच्चोरुहइ (राय० सू॰ २८८)

१४८. ••••एग मह सेयं रययामयं विमल सिललपुण्ण ••••
भिगारं पगेण्हति •••उप्पलाइ • गेण्हति
(राया० स्० २८८)

१४६ णंदातो पुक्यरिणीतो पच्चोतरित, पच्चोतरित्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्य गमणाए ।

(राय० सू० २८८)

१५० तए णं जाव अगरमखदेवसाहस्सीओ

(राय० सू० २८६)

१५१. अण्णे य वहवे चिमाणिया देवा य देवीओ य अप्पे-गतिया उप्पलहत्यगया जावसहस्सपत्तहत्यगया (राय० सू० २८६)

३५८ भगवती-जोड्

- १५२ शक्र तणे सुविचारो, पूठे पूठे चाले घर प्यारो। हिन आभियोगिक अधिकारो, ते साभलज्यो विस्तारो।। १५३ शक्र तणा निहवारो, आभियोगिक सुर सुरी सारो। केइ कलश हाथ में लेइ, जाव धूप कडुच्छा ग्रहै केइ।।
- १५४ हर्ष सतोप पामता, शक्र पूठै पूठै चालता। इम देव देवो परिवारो, बहु वाजत्र ने भिणकारो॥
- १५५ हिवै सिदायतन सुविशेषो, पूर्व वारणे कीव प्रवेशो। जिहा छुँ देत्रच्छद गूभारो, तिहा जिन-प्रतिमा अवघारो॥
- १४६ तिहा आवे आवे। ने तामो, देखी जिन प्रतिमा ने परणामो। पूजै लोम हस्त कर ताय, सुगध जल करिने न्हवराय।।
  - ११७ सरस गोशीर्प चदन करेह, गात्र लीपै लीपी नै जेह।
    पर्छ जिन-प्रतिमा नै ताय, देवदूष्य महामूल्य पहिराय।।
  - १५८. पछै फूल चडावै तिण कालो, चढावै फूला नी मालो।
    गय कपूरादि चढाय, विल वर्ण चढावै ताय।।
    १५६ चूर्ण चडावै चगो, विल वस्त्र चढावै सुरगो।
    आभरण गहणा अमद, ओ तो चढावै शक सुरिद।।
    १६०. नीचली भूम थी ताह्यो, ऊपर चदवा लग अधिकायो।
    वाधै वर्तुल वहु पुष्पमाला, वाक् लवायमान विशाला।।
    १६१ पछै पच वर्ण श्रेकार, मूकै पुष्प-पुज उपचार।
    तिण ऊपर दियो दृष्टा, स्त्री नां शिर केश ग्रहो ने मूकत।।

## दूहा

१६२. नर स्त्री ना शिर केश ग्रह चुवन कामवसेण।
मूक्या पसरं चिहु दिशे, तिम पुष्फवृद करेण।।
१६३. \*जिन प्रतिमा ने आगै, निर्मल श्वेत रूपामय सागै।
अच्छरस कहिता ताह्यो, काइ अतिही निर्मल करिवायो।।

- १५२. ' पिट्ठतो-पिट्ठतो समणुगच्छेति । (गय० सू० २८६)
- १५३. तए ण " आभिओगिया देवा य देवीओ य अप्पेगतिया कलसहत्थगया वदण जाव अप्पेगतिया धूवकडुच्छुयहत्थगया (रया० सू० २६०)
- १५४ हटुतुटुः पट्ठतो-पिट्ठतो समण्गच्छति । (राय० सू० २६०)
  - तए · · · देवेहि य देवीहि य सिंद सपरिवृडे · · · णातियरवेणं (राय० सू० २६१)
- १४४. जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागच्छित, उवागच्छिता सिद्धायतण पुरित्यिमिल्लेण दारेण अणुविमिति अणु-पविसित्ता जेणेव देवच्छदए जेणेव जिणपिंडमाओ (राय० सू० २६१)
- १५६ तेणेव जनागच्छति, जनागच्छिता जिणपडिमाण आलोए पणाम करेति, करेता लोमहत्यग गिण्हति, गिण्हित्ता जिणपडिमाण लोमहत्यएण पमज्जद, पमज्जित्ता जिणपडिमाओ मुरिभणा गधोदएण ण्हाएइ (राय० सू० २६१)
- १५७. सरसेण गोसीसचवणेण गायाइ अणुनिपइ, अणु-लिपइत्ता जिणपिडमाण अहयाइ देवदूमजुयलाइ नियसेइ, नियसेत्ता (राय० सू० २६१)
- १५८,१५६. पुष्फारुहण मल्लारुहण वण्णारुहण चुण्णा-रुहण गद्यारुहण आभरणारुहण करेइ

(राय० सू० २६१)

- १६० आसत्तोसत्त-विउल-वट्ट- वग्वारिय-मन्त्र-दाम-कलाव करेद, (राय० सू० २६१)
- १६१ कयग्गह-गहिय-करयल-पब्गट्ट-विष्पमुक्केण दमद्ध-वण्णेण कुसुभेण पुष्फपुजोवयारकलिय करेइ (राय० सू० २६१)
- १६२,१६४ जिणपिडमाण पुरतो अच्छेहि मण्हेहि रयया-मएहि अच्छरसा-तदुलेहि अट्टरु मगले आलिहइ,
  - १. रायपसेणइय (सू० २६१) में पुष्प, माला, वर्ण, चूर्ण, गद्य और आभरण यह कम है। जोट की गाया रूप, १४८,१४६ में गंद्य को वर्ण से पहले लिया गया है। यह अन्तर पाठभेद के कारण हो सकता है।
  - २. सेएिंह के स्थान पर सण्हेहि पाठ है। सेएिंह को पाठा-तर में लिया है।

<sup>\*</sup>लय: सुण चिरताली थारा लक्षण

१६४ एहवा तंदुल करेह, अष्ट अष्ट मंगल आलिखेह। स्वस्तिक साथियो जाणी, जाव दर्पण आरिसो पिछाणी।।

१६५ तदनतर तहतीक, रत्न चद्रप्रभ वज्रमय सघीक। वली वेडूर्य रत्न रैमाय, निर्मल दड कडुच्छा नो दीपाय।। १६६ सुवर्ण मणि रत्न तेह, भात चित्रित दड विषेह। हिवै धूप नी जाति सुजान, कृष्णागर अधिक प्रधान।। १६७ कुदुक्क ते गूद चीड कहाय,

तुरुक्त कहिता सेल्हा रस ताय।
तेह तणो जे घूप, मघमघायमान अनूप।।
१६८ उत्तम गघ करेह, तिको व्याप्त छै अधिकेह।
धूप नी वाटी सोहतो, गघ प्रति विशेष मूकतो।।
१६९ रत्न वैडूर्य माय, कडुछो यत्न करी ग्रही ताय।
धूप दियो जिनवर ने जेह, किहयै स्थापना जिनवर एह।।
१७० नवा काव्य एकसी अट्ठ, छद-दोप रहित सृषट्ट।
सार अर्थ करीने सहीत, तिके पुनरुक्त दोप रहीत।।
१७१ मोटा छद जे पद ना वघ, देव लिंघ प्रभाव सुसघ।
एहवा काव्य करीने स्तवेह, राज रीत लोकिक मग एह।।

- १७२. सात आठ पग पाछो उसरी नै,डावो ढीचण ऊचो करीने। गोडो जीमणो भूमितल घार,मही लगावै शिर त्रिण वार।।
- १७३ मस्तक कायक ऊचो करेह, कायक ऊचो करीनै जेह। शिर आवर्त्त करी विहु हाथ, अजली करी वदै सुरनाथ।।
- १७४. नमोत्युण अरिहताण, जाव सपत्ताण लग जाण। वादै नमस्कार करि सोय, ए पिण द्रव्य मगलीक स्जोय।।
- १७५ जिहा सिद्धायतन नो जाणी, वहु मक्त देश भाग पिछाणी। तिहा आवै आवी ने, मोरपिच्छ नी पूजणी ग्रही ने।।
- १७६ सिद्धायतन नो जेह, वहु मध्य देश भाग प्रतेह। मयूरपिच्छ करी पूजेह, दिव्य उदक-धारा सीचेह'।।
- १७७ आला गोशीर्प चदन करेह, पचागुलि करि हाथा देह। मडल प्रति आलिखेह, ए पिण राज नी रीत करेह।।
- १७८ पछै केश नै दृष्टातेह, जाव पुष्प विखेरेह। फूल-फगर सहित करेह, धूप दियै देई नै तेह।।
- १७६ जिंहा सिद्धायतन नो विचार, दक्षिण नो छे द्वार। तिहा आवै आवी नै, मयूर पिच्छ नी पूजणी ग्रही नै।।

त जहा—सोत्थिय जाव (स॰ पा॰) दप्पणे । (राय॰ सू॰ २६१)

अच्छो रसो येपु ते .... अतिनिर्मला इत्यर्थ. (राय० वृ० प० २४५)

१६४. तयाणतर च ण चदप्पभ-वइर-वेरुलिय-विमलदड (राय० सू० २६२)

१६६. कचणमणिरयणभत्तिचित्त कालागरुपवर (राय० सू० २६२)

१६७. कुदुरुक्क-तुरुक्क-धूवमधमधेत (राय० सू० २६२)

१६८. गधुत्तमाणुविद्धं च धूवविट्टं विणिम्मुयत (राय० सू० २६२)

१६६ वेरुलियमय कडुच्छुय पग्गहिय पयत्तेण धूव दाऊण जिणवराण (राय० सू० २६२)

१७०,१७१ ः अट्ठसय-विसुद्धगधजुत्ते हिं अत्यजुत्ते हिं अपुण-क्ते हिं महावित्ते हिं सथुण इ (राय० सू० २६२) विशुद्धो—निर्मेलो लक्षणदोपरहित ः ः अर्थयुक्तै — अर्थसारैरपुनक्क्तैर्महावृत्ते , तथाविधदेवलव्धिप्रभाव (राय० वृ० प० २५५)

१७२. सत्तद्वपयाइ पच्चोमक्कइ, पच्चोसिक्कत्ता (पा॰ टि॰ १२) वाम जाणु अचेइ, अचित्ता दाहिण जाणु धरणीतलिस निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणितलिस निवाडेइ (राय॰ सू॰ २६२)

१७३. ईसि पच्चुण्णमइ पच्चुण्णिमत्ता करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजिं कट्टु एव वयासी— (राय० सू० २६२)

१७४ नमोत्युण अरहताण स्वताण वदइ नमसइ (राय० सू० २६२)

१७५,१७६ जेणेव सिद्धायतणस्स वहुमज्झदेसभाए तेणेव जवागच्छइ, जवागच्छित्ता दिव्ताए दगधाराए अव्भु-क्खेइ (राय० सू० २६३)

१७७. सरसेण गोसीसचदणेण पचगुलितल दलयइ, मडलग आलिहइ (पा० टि० २) (राय० सू० २६३) १७८ कयग्गहगहिय जाव (स० पा०) पुजोवयारकलिय करेइ, करेत्ता घूव दलयइ (राय० सू० २६३) १७६ जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्ले तेणेव दारे उवा-गच्छति, उवागच्छित्ता लोमहत्थग परामुसइ, परामु-सित्ता (राय० सू० २६४)

१. इन गाथाओं में पाठ की तुलना में जोड अधिक है। जिस पाठ के आधार पर यह अतिरिक्त जोड की गई है वह 'रायपसेणइय' में पाठान्तर के रूप में स्वीकृत है। जयाचार्य के प्राप्त आदर्श में यह पाठ मूल में रहा होगा।

२. प्रकर - समूह

- १८० वार शाखा जे अनूप, वली पूर्तालया नां रूप। वली रूप सर्प ना तेह, मयूर पिच्छ करी पूजेह।।
- १८१ दिव्य उदक धारा सीचेह, सरस गोशीर्ष चदन चर्चेह। फूल चढावै ताय, जाव आभरण गेहणा चढाय।।
- १८२ मांडी वार शाखा थी जेह, नीचली भूमि लगेह। वाधै लवायमान पुष्पमालाः जाव धूप दियै सुविशाला।।
- १८३. जिहा दक्षिण द्वार नो देख, मुख मडप छै सुविशेख। जिहा दक्षिण ना मुख मडप नो चग, वहु मक्त देश भाग सुरग।।
- १८४ तिहा आवै आवी नै, मोर पिच्छ नी पूजणी ग्रही नै। वहु मज्भ देश भाग प्रतेह, मयूर पिच्छ करी पूजेह।।
- १८५ दिव्य उदक घारा सीचेह, आले गोशीर्प चदन करेह ।। पचांगुलि तल हाथा देह, विल मडल प्रति आलिखेह ।
- १८६ केश ग्रही छोडै दृष्टत, फूल-फगर करै घर खत। जावत धृप उखेव, त्या लग पाठ कहेव।।
- १८७ जिहा दक्षिण ना मुख मडप नो विचार, पश्चिम नो छै द्वार। तिहा आवै आवी ने, मयूरपिच्छ नी पूजणी ग्रही ने ॥
- १८८. वार शाखा जे अनूप, वली पुर्तालया ना रूप। वली रूप सर्प ना तेह, मयूरिपच्छ करि पूजेह।।
- १८६ दिव्य उदक घारा सीचेह, सरस गोशीर्प चदन चर्चेह । फूल चढावै ताय, जाव आभरण गेहणा चढाय।।
- १६०. माडी वार-शाखा थी जेह, नीचली भूम लगेह। वाधै लवायमान पुष्पमाला, जाव घूप दियै सुविशाला।।

  \*ए स्वर्ग-स्थिति कोइ विरला ही जाणै।।
- १६१ जिहा दक्षिण ना मुख मडप नै, उत्तर ना थाभा नी पती। तिहा आवै आवी मयूरपिच्छ नी, पूजणी ग्रहै शोभती।।
- १६२ थभ अनै विल पूतिलया नै, सर्प ना रूप प्रतेह।
  मयूरिपच्छ नी पूजणी करनै, पूजी पूजी नैतेह।।
- १६३. तिमहिज जिम कहाँ, पश्चिम दिशिना द्वार तणी पर जाणी। जावत धृप उखेवै सुरपति, त्या लग पाठ पिछाणी।।
- १६४ जिहा दक्षिण ना मुख मडप ने, पूर्व दिशि ने द्वार। तिहा आवे आवी मयूर पिच्छ नी, पूजणी ग्रहै तिहवार।।

- १८०. दारचेडाओ य सालभिजयाओ य वालरूवेए घ लोमहत्यएण पमज्जइ (राय० वृ० प० २६०) दारचेडाओ—द्वारशासे (राय० सू० २६४)
- १८१. दिव्वाए दगधाराए अव्भुक्खेइ, अव्भुक्खेत्ता सरसेण गोसीसचदणेण चन्चए दलयइ, दलइत्ता पुष्फारुहण जाव आभरणारुहण करेइ। (राय० मू० २९४)
- १८२ आसत्तोसत्तविजल-बट्ट-वग्घारिय-मल्ल-दाम-कलाव करेइ, जाव (स॰ पा॰) धूव दलयइ।

(राय० सू० २६४)

१५३ जेणेव दाहिणिल्ले दारे मुहमडवे जेणेव दाहिणि-ल्लस्स मुहमडवस्स बहुमज्झदेसभाए

(राय० सू० २६४)

- १६४. तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थग परा-मुसइ, परामुसित्ता बहुमज्झदेसभाग लोमहत्थेण पमज्जइ, (राय० सू० २६५)
- १८५ दिव्वाए दगघाराए अन्भुक्खेइ, अन्भुक्खेता मरमेण गोसीसचदणेण पचगुलितल मड तग आलिहइ

(राय० सू० २६५)

- १-६ कयग्गह-गहिय जाव (स० पा०) धूव दलयइ। (राय० सू० २६४)
- १८७. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमडवस्स पच्चित्यिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्यग परा-मुसइ, परामुसित्ता (राय० सू० २६६)
- १८८. दारचेडाओ य सालभिजयाओ य वालरूवए य लोमहत्येण पमज्जइ, (राय० सू० २६६)
- १८६. दिव्वाए दगधाराए अञ्मुक्खेइ, अञ्मुक्खेता सरसेण गोसीसचदणेण चन्चए दलयइ, दलयित्ता पुष्फारुहण जाव आभरणारुहण करेइ। (राय० सू० २९६)
- १६०. आसत्तोसत्त जाव (स॰ पा॰) धूव दलयह । (राय० सू० २६६)
- १६१ जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमडवस्स उत्तरिल्ला खभपती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्य परामुसइ, (राय० स्० २६७)
- १६२. खभे य सालभजियाओ य वालरूवए य लोमहत्य-एण पमज्जइ, पमज्जित्ता (राय सू० २६७)
- १६३ जहा चेव पञ्चित्यिमिल्लस्स दारस्स जाव घूव दलयइ, (राय० सू० २९७)
- १९४. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमडवस्स पुरित्यमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्वग परामुस्ति, (राय० सू० २९८)

<sup>\*</sup>लय: पर नारी नो संग न कीजै

- १९५ वार-शाखा पूतलिया पन्नग, तिमहिज सर्व कहेह। पूजे जल सीचे चदन चर्चे, पूरववत सहु जेह।।
- १६६ जिहा दक्षिण ना मुख मडप ने, दक्षिण दिशि ने द्वार। तिहा अ।वे आवी द्वार-शाखा ने, तिमहिज सर्व विचार।।

वा०—इहा दक्षिण दिणि ना मुख मडप नै तीन द्वारहीज छै, ते माटै तीन द्वारहीज पूजै। अनै उत्तर दिणि थाभा नी पंक्ति पूजै। हिवै दक्षिण ना मुख मडप नै द्वारे करी नीकली प्रेक्षा गृह मडपे आवै, पूजै ते अधिकार कहै छै—

\*ओ तो इन्द्र अभिपेक सधीको रे, की धै सुरपित नीको। ओ तो करै द्रव्य मंगलीको रे, ते कारज लोकीको॥ (घ्रुपद)

- १६७ जिहा दक्षिण नो प्रेक्षा घर मडप, प्रेक्षा घर मडप नो जेह। वहु मज्भ देश भाग जिहा छै, तिहा अक्लाड कहेह।।
- १६८. तेह अलाडो अछै वज्रमय, जिहा मणिपीठिका ताह्यो। जिहा सीहासण छै तिहा आवै, आवी नै सुररायो॥
- १६६ मोरपिच्छ नी पूजणी ग्रही नै, वच्च अखाड प्रतेहो। मणिपीठिका सिहासन प्रति, मयूरपिच्छे पूजेहो।।
- २०० दिव्य उदक घारा कर सीचै, गोशीर्प चदन वर्चेहो। वली पुष्पादिक प्रतै चढ़ावै, ससारिक खाते हो।।
- २०१ ऊपर थी माडी महितल लग, माला प्रति वाधेहो। जावत धूप उखेबै सुरपति, पाठ इहा लग जेहो।
- २०२ जिहा दक्षिण ना प्रेक्षा घर मडप नै पश्चिम द्वारे। तिमहिज कहिवो पूरववत जे, द्वार-शाखादि प्रकारे।।
- २०३ उत्तर दिशि थाभा नी पक्ति, पूरववत पूजेहो। पूर्व द्वारे आवी तिमहिज, द्वार-शाखादि विपेहो॥
- २०४. दक्षिण नो जे द्वार तिहा पिण, तिमहिज कहिवू जेहो। द्वार-शाखा नै पूतलिया फुन, पन्नग रूप अर्चेहो।।

वा०—'दक्षिण ना प्रेक्षा-घर-मडण ने घणी परता मे पश्चिम पूर्व द्वार देख्या। किणही परत मे पश्चिम, पूर्व,दिक्षण द्वार देख्या, पिण उत्तर दिशे थभा नी पिनत नो पाठ नथी देख्यू। पिण इहा तीन द्वार ने उत्तर दिशे थभ-पिनत जणाय छै। जे दक्षिण ना मुख मडप ने पश्चिम पूर्व दक्षिण द्वार कह्या। अने उत्तर यभ नी पिनत कही तिम इहा प्रेक्षा-घर मडप ने विषे तीन द्वार ने उत्तर दिशे यभ-पिनत सभवै। विल आगल उत्तर ने प्रेक्षा-घर मडपे दिश्वण दिशे यभ-पिनत पाठ मे कही छै। तिम इहा दक्षिण ने प्रेक्षा-घर-मडपे उत्तर दिशे यभ पिनत सभवै।

१६६. जेणेव दाहिणित्लस्स मुहमटवरस दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दारचेटाओ यः " त चेव सब्व। (राय० मू० २६६)

१६७,१६८. जेणेव दाहिणित्ते पेच्छाघर-मंडवे जेणेव दाहि-णिल्लस्स-पेच्छाघर-मटवस्स बहुमज्जदेसभागे जेणेव वज्यामए अवसाटए जेणेव गणियेढिया जेणेव मीहामणे तेणेव जवागच्छइ, जवागच्छिता (राय० सू० ३००)

१६६. लोमहत्यगं परामुमद, परामुसित्ता अवसाडग च मणिपेढिय च मीहासण च लोमहत्यएण पमज्जद,

(राय० सू ३००)

२०० दिव्याए दगधाराए अवमुक्सेइ, अवमुक्सेता मरमेण गोसीमचदणेण चन्चए दलयइ, दलियत्ता पुष्कारुहण ""करेइ (राय० सू० ३००)

२०१ आसत्तोसत्त-विउल-वट्ट-त्रग्घारिय-मल्त-दाम- कलाव करेइ जाव (स० पा०) ध्व दलयइ।

(राय० सू० ३००)

२०२ जेणेव दातिणिल्लस्स पेच्छाघर-महवस्स पच्चित्य-मिल्ले दारे ..........त चेव।

(राय० सू० ३०१)

२०३ [उत्तरित्ना सभवती ?] त चेव। जेणेव पुरित्यमिल्ले दारे तेणेव जवागच्छइ, जवागच्छिता त चेव (राय० सू० ३०२,३०३)

२०४ जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघर-मडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता त चेव। (राय॰ सू० ३०४)

१६५. दारचेडाओ य मालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेण पमज्जद पमज्जित्ता न चेव सच्च । (राय० सू० २६८)

<sup>\*</sup>लय: ए तो जिन मार्ग ना राजा

वली वृत्तिकार पिण उत्तर ने प्रेक्षा-घर-मडपे दक्षिण दिशे यभ पंक्ति कही। अने पूर्व ने प्रेक्षा-घर-मंडप ने तीन दिशि द्वार ने पश्चिम दिशे यंभ पक्ति कही। ते मार्ट इहा दक्षिण ने प्रेक्षा-घर-मडपे पिण तीन दिश द्वार ने उत्तर दिश यभ-पित समवै। वली इहा सूत्रे हीज प्रथम अधिकार कह्यो, तिहा सुधर्मा सभा ना तीन द्वार कह्या। अने मुखमडप ने सभा नी भलावण दीधी। अने प्रेक्षा-घर मडप ने मुख-मडप नी भोलावण दीधी। इण न्याय पिण मुखमडप प्रेक्षा-घर-मडप ना पिण तीन दिशे तीन-तीन द्वार अने एक दिशे याभा नी पक्ति हुवै। (ज०स०)

हिनै दक्षिण नां प्रेक्षा-घर-मंडप नै दक्षिण द्वारे करि नीकली चैत्य थूभ

आवी पूजे तेहनो अधिकार कहै छै-

२०५ जिहां दक्षिण नां चैत्य थूंभ छै, त्या सुरपित आवेहो। थूभ अने फुन मणिपीठिका, पूजै जल सीचेहो।। बा०—इहां मणिपीठिका ऊपरै चैत्य थूभ छै ते माटै बिहु ने पूजै।

२०६. आले गोशीर्प चदन करि, दियै छाटणा तास।
फूल च्ढावै माला वांघे, जाव घूप दै जास।।

२०७ जिहा पश्चिम नी मणिपीठिका, जिहा पश्चिम नी तामो। जिन प्रतिमा त्या आवै आवी, देखी करै प्रणामो।

२०८. जिम सिद्धायतने जिन प्रतिमा, पूजी कही तिवारो। तिमहिज इहा जिन प्रतिमा, पूजै जाव करी नमस्कारो।।

२०६. जिहा उत्तर नी जिन-प्रतिमा छै, तिमहिज सर्व कहोजै। जिम सिद्धायतने कहि पूजा, तेम इहा पभणीजै।।

२१०. जिहा पूर्व दिश मणिपीठिका, ज्या पूर्व दिशि पेखो। जिन-प्रतिमा तिहा आवै आवी, तिमहिज पाठ अशेखो।।

२११ पर्छ दक्षिण नी मणिपीठिका, फुन दक्षिण नी जेहो। जिन प्रतिमा पूजै पूरववत, सगला पाठ कहेहो।।

२१२. जिहा दक्षिण नो चैत्य रूख छै, तिहा आवी मुररायो। तिमहिज पूर्ज जल सू सीचै, इत्यादिक कहिवायो॥

२१३. जिहा दक्षिण नी महेन्द्र व्वजा छै, तिहा आवी नै ताह्यो। तिमहिज पूजै जल सू सीचै, चदनादि विधि वायो।।

२१४ दक्षिण नी नंदा पुनखरणी, त्या आवे आवी ने। मोरपिच्छ नी जेह पूजणी, ते प्रते ग्रहै ग्रही ने।।

२१५. तोरण पावडिया पूतिलया, सर्प रूप फुन नेहो। मयूरपिच्छ करि पूजै पूंजी, जलघारा सीचेहो।। २०५. जेणेव दाहिणिल्ले वेड्ययूभे तेणेव उवागच्छ इ :

थूभ च मणिपेढियं च लोमहत्यएणं पमज्जइ,

पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अव्भुक्तेइ ।

(राय० सू० ३०५)

२०६ सरसेण गोसीमचदणेण चच्चए दलयइ, दलयित्ता-पुष्फारुहण जाव (स० पा०) धूव दलयइ।

(राय० सू० ३०५)

उदक्धारयाऽभ्युक्ष्य

(वृ० प० २६१)

२०७ जेणेव पच्चित्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चित्थ-मिल्जा जिणपिडमा तेणेव उवाग्च्छइ, उवागिच्छत्ता जिणपिडमाए आलोए पणाम करेइ।

(राय० सू० ३०६)

२०८ (जहा जिणपंडिमाण तहेव जाव नमसित्ता सु० २६१,२६२)

२०६ चेगोव उत्तरिल्ला जिणपडिमा" ""त चेव सन्व। (राय० सू० ३०७)

२१० जेणेव पुरित्यमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरित्य-मिल्ला जिणपिडमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता त चेव। (राय० सू० ३०८)

२११ जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपिडिमा ' ... ' त चेव सन्व ।

(राय० सू० ३०६)

२१२ जेणेव दाहिणित्ले चेइय-हक्ते तेणेव उवागच्छइ ... लोमहत्यएण पमज्जइ, पमज्जिता त चेव

(राय० सू० ३१०)

२१३ जेणेव दाहिणिल्ले महिदज्झए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता " 'लोमहत्यएण पमज्जड, पमिजिता त चेव सव्व । (राय० सू० ३११)

२ (४. जेणेव दाहिणिल्ला नदापुक्परिणी तेणेव उवागच्छः उवागच्छिता लोमहत्यग परामुसति, परामुमित्ता

(राय० सू० ३१२)

२१५ तोरणे य तिसोवाणपडिरूवए य सालमजियाओ य वालरूवए य लोमहत्यएण पमञ्जइ, पमज्जिता दिन्वाए दगधाराए अब्मुबसेइ, (राय० सू० ३१२) २१६. आले गोशीर्प चंदन करि, तास छाटणा देही। फूल चढावे माला वाधे, वली धूप खेवेही।।

वा०—ए सिद्धायतन ने दक्षिण ने विषे दक्षिण द्वार मुख-मंडप, प्रेक्षागृह-मडप, चैत्य-यूभ, जिन-प्रतिमा, चैत्य-रूख, महेंद्र-ध्वज, नदा-पुष्करणी—ए सर्व दक्षिण दिशे छै। तेहनी पूजा करीने हिवै प्रथम जे सिद्धायतन कह्यं छै, तिहा आवी तेहने प्रदक्षिणा देई उत्तर दिशे मुखमंडपादिक जे छै, तेहने पूजै। ते अधिकार कहै छै—

२१७ प्रदक्षिणा सिद्धायतन प्रति, करतो शक्र जिवारे। जिहां उत्तर नी नदा पुक्खरिणी, आवे तिहा तिवारे।

वा०—सिद्धायतन ने प्रदक्षिणा करतो उत्तर दिशे जिहा छेहडे नदा पोक्खरणी छै, तिहा आयो ।

२१८. तिमहिज सर्व काय पूजा ने, मयूरिपच्छ पूजेहो । उदक सीचवै चदन चर्चे, कार्य इत्यादि करेहो।।

२१६ जिहा उत्तर नी महेन्द्र ध्वजा छै, तिहा जक्र आवेह। तिमहिज पूजै जल सू सीचै, पूवरवत अर्चेह।। २२०. जिहा उत्तर नो चैत्य रूख छै, तिहा आवे आवी ने।

२२०. जिहा उत्तर नो चैत्य रूख छै, तिहा आवे आवी ने। तिमहिज पूर्ज जल सू सीचै, कार्य इत्यादि करीने।।

२२१. जिहा उत्तर नों चैत्य थूभ छै, तिहा आवे घर खंतो। तिमहिज पूजै जल सू सीचै, कार्य इत्यादि करतो।।

२२२ जिहा पश्चिम नी मणिपीठिका, जिहा पश्चिम नी जेहो। जिन प्रतिमा त्या आवै आवी पूजा तिमज करेहो।।

२२३ जिहा उत्तर नी जिन-प्रतिमा छै, त्या आवै आवी नै। तिमहिज पूजा सगली जाणो, अर्ची सर्व करीनै।

२२४. ज्या पूरव नी जिन-प्रतिमा छै, तिमहिज अर्चा जाण । ज्या दक्षिण नी जिन-प्रतिमा छै, पूजा तिमज पिछाण ।।

२२५ जिहा उत्तर नों प्रेक्षा घर मडप छै महासुखदायो। तिहा शक्र सुर इन्द्र सुराधिप, आवै आवी ताह्यो॥

२२६ वक्तव्यता जे कही दक्षिण नी, तेहिज सर्व विचार।
पूरव ने द्वारे पिण कहिवी, विल उत्तर ने द्वार।।
बा॰—इहा घणी परता देखी। तिहा पश्चिम ना द्वार नो अधिकार नथी

कहो, पिण समिवियै छैं'— २२७ दक्षिण खभ पक्ति फुन पूजै, उत्तर प्रेक्षा गेहो।

२२७ दक्षिण खभ पोक्त फुन पूज, उत्तर प्रक्षा गेही। जिम दक्षिण प्रेक्षा-गृह उत्तर खभ पक्ति तिम एहो।। २१६. सरसेणं गोमीसचदणेण चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुष्काठहण जाव धूव दलयति ।

(राय० सू० ३१२)

२१७. सिद्धायतण अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिस्ता णदापुक्यरिणी तेणेव उवागच्छति

(राय० सू० ३१३)

२१८. त चेव ।

(राय० सू० ३१३)

२१६ जेणेय उत्तरिल्ले महिंदज्झए तेणेय उवागच्छइ, उवागच्छिता। (राय० सू० ३१४)

२२० जेणेव उत्तरिल्ले चेइयरुवस्ते तेणेव उवागच्छड, उवागच्छिता। (राय० सू० ३१५)

२२१. जेणेव उत्तरिल्ले चेडययूमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता (राय० सू० ३१६)

२२२. जेणेव पञ्चित्यिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पञ्चित्य-मिल्ला जिणपिडमा तेणेव उवागच्छइ, उवागिच्छत्ता त चेव। (राय० सू० ३१७)

२२३ "जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता त चेव। (राय० सू० ३१८)

२२४ जेणेव पुरित्यमिल्ला जिणपडिमा तेणेव जवागच्छद्द, जवागच्छित्ता

जेणेव दाहिणिल्ला जिणपिटमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त चेव । (राय० सू० ३१६,३२०)

२२५ जेणेय उत्तरिल्ले पेन्छाघर-मडवे'"(सू० ३००) तेणेय उवागच्छइ उवागच्छिता (राय० सू० ३२१)

२२६ जा चेव दाहिणिल्ले वत्तव्यया सा चेव सव्या। (राय० सू० ३२१)

२२७ जेणेव उत्तरित्लस्स पेन्छाघर-मडवस्स दाहिणित्ला खभपती तेणेव उवागन्छइ, उवागन्छिता— (राय० सू० ३२५)

१. जोड जिस प्रति के आधार पर की गई है उसमे पिश्चम द्वार का उल्लेख नहीं मिला। जयाचार्य ने यह सभावना प्रकट की है कि पिश्चम द्वार का वर्णन भी होना चाहिए। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित 'रायपसेणइय' मे ऐसा पाठ है। (देखें सू० ३२२)

वा॰—जिम दक्षिण प्रेक्षा गृह मडपे पिश्चम पूर्व दक्षिण हार पूज्या अने उत्तर दिशे खभ-पित पूजी। तिम इहा उत्तर प्रेक्षा-गृह-मडपे पिश्चम उत्तर पूर्व हार पूज्या अने दिश्वण खभ-पित पूजी। जे दक्षिण प्रेक्षा-गृह-मडप ने विषे तो उत्तर दिशे खभ-पित छै अने वाकी तीन दिशे हार छै। अने उत्तर प्रेक्षा-गृह-मडप ने विषे दक्षिण दिशे खभ-पित छै अने अनेरी दिशे हार छै, ते माटै। २२८ जिहा उत्तर नो मुखमडप छै, वली जिहा छै जेहो। उत्तर ना मुख-मडप ने वहु मध्य देश भागेहो।। २२६ जिम दक्षिण मुखमडप ना, वहु मध्य देश भागेहो।। पूजा नी विधि आखी तिमहिज, सगली इहा कहेहो।। २३०. जिहा पित्वम ने हार तिहा आवी, फुन उत्तर ने हारो। पूर्व हार दक्षिण खंभ पित्त, तिमहिज कहिवू सारो।।

२३१ आवी जिहा सिद्धायतन ना, उत्तर द्वार विमेहो।
पूरवली पर अर्चा करि, हिव पूर्व द्वार आवेहो।।
वा०—इहा सिद्धायतन थकी उत्तर दिशे छेहडै नदा-पुष्करणी छै, तेहनी
प्रथम पूजा करी। महेन्द्र-ध्वज, चैत्य-यूभ, जिन-प्रतिमा, प्रेक्षा-घर-मडपे, सिद्धायतन
ने उत्तर द्वारे इम पश्चानुपूर्वी पूजा करतो आयो। हिवै सिद्धायतन ना पूर्व द्वार
पूर्व मुख-मडप जाव पूर्व नदा-पुष्करणी इम पूर्वानुपूर्वी स्यू पूर्ज, तेहनो अधिकार
कहै छै—

२३२ जिहा सिद्धायतन नो पूरव-द्वार तिहा चल आवै। तिमहिज पूर्ज जल सू सीचै, दक्षिण द्वार तिम भावे।। २३३ जिहा पूर्व नो मुख-मडप छै, जिहा पूर्व नो जेहो। मुख मडप ना वहु मज्भ देशज भाग तिमज कहेहो।।

२३४ पूर्व दिशि ना मुखमडप नै, दक्षिण द्वार विचार। पश्चिम दिशि थाभा नी पक्ति, तिमहिज उत्तर द्वार।।

२३५. पूर्व द्वार विये पिण पूजा, तिमहिज करिनै तामी।
जिहा पूर्व प्रेक्षा घर मडप, आर्व सुरपित आमी।।
बाo—पूर्व प्रेक्षा घर मडप ने वहु मध्य देश भाग पूजी, पश्चिम यभ-पित पूजी, उत्तर द्वारे पूर्व द्वारे पिण तिमज पूजा जाणवी। जिम दक्षिण मुस्य मडप नो वहु मध्य देश पूज्यो, पश्चिम द्वार पूज्यो, उत्तर थभ-पित पूजी, पूर्व द्वार पूज्यो, उत्तर द्वार पूज्यो, तिम इहा पूजा जाणवी।

२३६. एव थूभ अने जिन-प्रतिमा, चैत्य रूख फुन जेहो। महिद्र घ्वजा ने नन्दा पुष्करणी, तिमज जाव धूपेहो॥

चा०—सिद्धायतन नै विषे जिन-प्रतिमा पूजी, नमोत्युण गुणी नमस्कार कियो। तठा पछली वारता वृत्ति थकी लिखिय छै - अत ऊर्ध्व सूत्र मुगम, केवल पणी विध विषय प्रतै वाचना भेद, इति ययावस्थित वाचना देखाडिवा नै अर्थे विधि मात्र देखाविय छै—तिवारे पछै देवच्छदक प्रतै पूजी, जल-धारा करी मीचै, तिवार पछै चदन करी पचागुली हाथा दिया, पछै फूल चढावादिक, धूप दहन

२२८,२२६ जेणेव उत्तरिल्लस्स दारे मुहमडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता । (राय० सू० ३२६)

२३०. जेणेव" पच्चित्यिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागिच्छता।
जेणेव" "उत्तरिल्ले दारे ।
जेणेव पुरित्यिमिल्ले दारे "'।
जेणेव 'दाहिणिल्ला खभपती तेणेव उवागच्छइ, उवागिच्छत्ता। (राय० सू० ३२७-३३०)
२३१ जेणेव सिद्धायतणस्य उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागिच्छत्ता त चेव।
(राय० सू० ३३१)

२३२. जेणेव सिद्धायतणस्स पुरित्यमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता। (राय० सू० ३३२)
२३३ जेणेव पुरित्यमिल्ले दारे मुहमडवे जेणेव पुरित्यम्वित्ति दारे मुहमडवे जेणेव पुरित्यम्वित्ति दारे मुहमडवे जेणेव पुरित्यम्वित्ति वहारे महमज्वदेसभागे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता। (राय० सू० ३३३)
२३४ जेणेव पुरित्यमिल्लस्म मुहमडवस्स दाहिणिल्ले दारे पच्चित्यमिल्ला खंभपंती उत्तरिल्ले दारे त चेव।
(पा० टि० ६ पृ १५४)
२३४ पुरित्यमिल्ले दारे त चेव।(पा० टि० ६ पृ० १५४)

२३६ एव थूमे जिणपिडिमाओ चेइयहमखा महिदज्झया नदापुम्खरिणीत चेव जाव धूव दलइ। (पा० टि० १० पृ० १५४) करैं सिद्धायतन ना वहु मध्य देश भाग नै विषे पूजणी करी पूजी, उदक-धारा मीचै, चदन करी पचागुली हाथा दिये, पुष्पपूज उपचार, धूप-दान करैं।

तिवार पर्छ मिद्धायतन ना दक्षिण द्वार विषे आवी पूजणी ग्रही नै तिण पूजणी करिक द्वार-शाखा, पूतत्या अने सर्प ना रूप प्रते पूजी। तिवार पर्छ उदक-धारा सीचे, गोशीर्प चदन चर्चे, पुष्पादि चढावे, धूप देवे।

तिवार पछ दिक्षण द्वारे किर नीकली ने दिक्षण ना मुख-मडप ने बहु मध्य देश भाग विषे पूजणी करी पूजी ने उदक-धारा सीचे, चदन किर पचागुली हाथा दिये, पुष्प-पुज उपचार, धूप-दान करें, किरने पिश्चम द्वारे आवी ने पूर्ववत पूजा करें। उत्तर दिशे थभपिक पूजें। पछ पूर्वे द्वारे आवी दिक्षण द्वार नीं परें पूजा करें। पछ दिक्षण द्वारे तिमहिज पूजा करें। तिण द्वार करी नीकली प्रेक्षा गृह मडप ने बहु मध्य देश भागे आवी ने आपाढक, मणिपीठिका अने सिहासन प्रते पूजणी करी पूजी, उदक-धारा मीचें, चदन-चर्चा, पुष्प-पूजा, धूप-दान करी तेहिज प्रेक्षा-गृह-मडप ने अनुक्रमें किरके पिष्चम द्वार उत्तर थभ-पक्ति पूर्व दक्षिण द्वार नी अच्चों करीने दिक्षण द्वार किर नीकली ने चैत्य थूभ अने मणिपीठिका प्रते पूजणी करी पूजी उदक-धारा मीचें, सरस गोशीप चदने करी पचागुली हाथा देइने अने पूष्पिदिक चढावी ने धूप देवें।

तिवार पर्छ जिहा पश्चिम दिथि नी मणिपीठिका तिहा आवै। तिहा आवी ने जिन-प्रतिमा देखी ने प्रणाम करें, करीने पूज्णी करी पूजे, सुगध जले करी स्नान करावे, मरम गोशीप चदन करी गात्र लीपे, देवदूष्य युगल पिहरावे, पुष्पादिक चढावे, प्रतिमा आगे पुष्प-पुज उपचार, धूप दिये, दिव्य तदुले करी आठ मगलीक आलेखे, एकसी आठ छद करिके स्तुति करें, प्रणिपात दडक पाठ करिने वादे, नमस्कार करें, तेहिज अनुक्रम करिके उत्तर पूर्व दक्षिण प्रतिमा नी पिण अर्चनिका करीने दक्षिण द्वारे करी नीकली ने दक्षिण दिशि ने विषे जिहा चैत्य वृक्ष छै, तिहा आवी ने चैत्य वृक्ष नी द्वार नी परें अर्चनिका करें।

तिवार पछ महेद्र ध्वजा नी, तिवार पछ जिहा दक्षिण दिशि नी नदा पुष्करणी, तिहा आव । आवी ने तोरण पावडिया ने विषे रही शालभजिका अने मर्प ना यह रूप ने पूजणी करी पूज, उदक-धारा सीच, चदन-चर्चा पुष्पादि चढावै धूप दान करिने सिद्धायतन ने प्रदक्षिणा करीने उत्तर दिशे नदा पुष्करणी ने विषे आवी ने पूर्वेनी परे तेहनी अर्चा करें।

तिवार पर्छ उत्तर ना चैत्य वृक्ष विषे, तिवार पर्छ उत्तर ना चैत्य थूभ नै, तिवार पर्छ पिश्चम उत्तर पूर्व दक्षिण जिन प्रतिमा नी पूर्वेली पर्र पूजा करीनै उत्तरा ना प्रेक्षा-गृह-मडप विषे आवै। तिहा दक्षिण ना प्रेक्षा-गृह-मडप नी पर्रे सर्व वक्तव्यता कहिणी।

तिवार पर्छ दिक्षण स्तभ पिन करिक नीकली नै उत्तर नै मुख मंडपे आवै। तिहा पिण दिक्षण ना मुख मडण नी पर सर्व पिष्चम उत्तर पूर्व द्वार विषे अनुक्रम किंग्के पूजा करीने दिक्षण स्तभ-पिन किरक नीकली ने सिद्धायतन नै उत्तर द्वारे आवी ने पूर्ववत अर्चा करीने पूर्व द्वारे आवै। तिहा पिण अर्चा पूर्ववत करीने पूर्व ना मुख-मटप ने दिक्षण द्वार पिष्चम यभ-पिन उत्तर पूर्व द्वार ने विषे अनुक्रम करिक पूर्व कही तिम पूजा करीने पूर्व द्वारे करी विल अनुक्रम करिक नीकिनी ने प्रेक्षा-चर-मटप ने विषे आवै। पूर्ववत मध्य भाग दिक्षण द्वार पिष्चम यभ पिनत उत्तर पूर्व द्वारे पूर्ववत पूजा करै।

तिवार पर्छ पूर्व प्रकार करिक हीज अनुकप करिक चैत्य-पूप, जिन-प्रतिमा,

चैत्य-वृक्ष, महेद्र-घ्वज, नदा-पुष्करणी नै पूजें, तिवार पर्छं सुघर्मा सभा ने विषे पूर्वं द्वार किरकें प्रवेश करें। ए रायपश्रेणी नी वृत्ति मे कहा तिम लिख्यु।

\*शक्र सुरेन्द्र सघीको
ओ तो करें द्रव्य मगलीको जी, कारज छैं ए लोकीको जी।

ओ तो करै द्रव्य मगलीको जी, कारज छै ए लोकीको जी। ओ तो सुरनायक जश टीको जी, त्रक्र सुरेन्द्र सधीको जी।। (ध्रुपद)

- २३७ जिहा सभा सुघर्मा ताह्यो, तिहा आवै गक्र सुररायोजी। सुघर्मा सभा ने विशेषे, पूर्व द्वारे करि पेसे जी।।
- २३६ जिहा माणवक इह नामो, छै चैत्य थूभ अभिरामो। जिहा वज्र रत्न रै माह्यो, गोल वृत्त डावडा ताह्यो॥
- २३६. तिहा आवै आवी ने, मयूर पिच्छ पूजणी ग्रहीनै। गोल वृत्त डावा वज्र माह्यो, पूजणीड पूजै ताह्यो।।
- २४० गोल वृत्त डावा वज्र माह्यो, सुरराय उघाडै ताह्यो। जिन नी दाढा प्रति, तेहो, पूजणी करी पूजेहो।।
- २४१. पूजी नै विल तिह काले, सुगध जल करीने पखाले। मुख्य प्रवर गध माल्य कर, दाढा प्रति पूजै सुरवर।।
- २४२. धूप खेवी दाढा ने ताह्यो, घालै ते डावा माह्यो। खभ चैत्य माणवक जासो, पूजणीइ पूजै तासो॥
- २४३. दिव्य जल घारा करि जेहो, आभोखै सीचै तेहो। आले गोशीर्प चदण कर, चर्चे छाटा दै सुरवर।।
- २४४. पुष्पादि चढावै इदो, जावत दै घूप सुरिदो। फुन जिहा सिंहासण जाणी, पूजा तिमहिज पहिछाणी।।
- २४५ सुर सेज्या आवी सुरवर, पूजा ते द्वार तणी पर। जिहा झुल्लक महिंद्र ध्वज आयो, ध्वज ज्यू पूजै सुररायो।।
- २४६ जिहा प्रहरण कोश चोप्फाल, तिहा आवं आयुघशाल । लोमहस्त पूजणी ग्रही ने, आयुघशाला पूजी ने।।
- २४७. दिव्य जल घारा करि जोइ, आभोज सीच सोइ। गोशीर्प सरस चदन कर, दियै छाटणा सुरवर।।
- २४८. पुष्पादि चढावै सारो, जावत दै धूप उदारो। जिहा सभा सुधर्मा केरो, वहु मध्य देश भाग सुमेरो।।
- २४६ जिहा मणिपीठिका आछी, जिहा सुर संज्या अति जाची। तिहा आय पूजणी ग्रही नै, ते उभय प्रतै पूजी नै।।

\*लय: चरित्र निर्मल पालीजै जी

२३७ जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति, उवाग-च्छित्ता सभ सुहम्म पुरित्यमित्लेण दारेण अणु-पविसदः। (राय० सू० ३५१) २३८ जेणेव माणवए चेइयखभे जेणेव वहरामया गोलवट्ट-समुग्गाः। (राय० सू० ३५१)

२३६ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता लोमहत्यग परामुमइ। (राय० सू ३५१)

२४० वहरामए गोलवट्टसमुग्गए लोमहत्थेणं पमज्जई, पमज्जित्ता वहरामए गोलवट्टसमुग्गए विहाडेह, विहाडेत्ता जिणसकहाओ लोमहत्थेण पमज्जह। (राय० सू० ३४१)

२४१ पमिष्जित्ता सुरिक्षणा गद्योदएण पक्खालेइ, पक्खा-नेत्ता अगोहि वरेहि गद्योहि य मल्लेहि य अच्चेइ। (राय० सू० ३५१)

२४२ अच्चेत्ता धूव दलयइ, दलियत्ता जिणसकहाओ वहरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु " माणवग चेइय- खभ लोमहत्यएण पमज्जह। (राय० सू० ३५१)

२४३. दिन्वाए दंगधाराए अन्भुक्खेइ, अन्भुक्खेता मरसेण गोसीमचदणेण चन्चए दलयइ। (राय० सू० ३५१)

२४४. पुष्फारुहण जाव घूव दलयइ। (राय० सू० ३५१) जेणेव सीहासणे ' (राय० सू० ३५२)

२४५ जेणेव देवसयणिज्जे ··· ।
- जेणेव खुडुागमहिंदज्झए 'त चेव ।

(राय० सू० ३५३,३५४)

२४६. जेणेव पहरणकोसे चोप्पालए तेणेव उवागच्छड, उवागच्छिता लोमहत्यग परामुसइ, परामुसित्ता.... (राय० सू० ३५५)

२४७ दिव्वाए दगधाराए अन्भुक्सेइ, अन्भुक्सेता सरहेण गोसीसचदणेण चच्चए दलयइ (राय० सू० ३५५)

२४८ पुष्फारुहण जाव (स॰ पा॰) धूव दलयड । (राय० सू० ३४४)

जेणेव सभाए सुहम्माए वहुमज्झदेसभाए। (राय० सू० ३५६)

१. गाया २४६ की जोड़ जिस पाठ के आधार पर की गई है वह पाठ (वृ० प० २६५) मे मिलता है किन्तु यहा जीवाभिगम (प्रतिपत्ति ३) के विवरणानुसार पाठ स्वीकृत किया है। इसलिए 'मणिपेढिया' और 'देवसयणिज्ज' की जोड के सामने कोई पाठ उद्धृत नहीं किया गया है।

वा॰— इहा वृत्तिकार कहा — सुधर्मा सभा ना वहु मध्य देश भाग नी पूर्ववत पूजा करी नै, सुधर्मा सभा ने दक्षिण द्वारे आवी ने, ते द्वार नी पूजा पूर्ववत करै, तिवारे पर्छ दक्षिण द्वार करिक नीकले, एह थकी आगल जिण प्रकार करिक ही जिस हायतन थकी नीकलतो छतो दक्षिण द्वारादिक दक्षिण नदा-पुष्करणी पर्यवसान वली प्रवेश यकी उत्तर तदा-पुष्करण्यादिक थकी उत्तरद्वारात पूज्यो। तिवार पर्छ दितीय द्वार प्रते पूजी पूजी नीकलतो पूर्व द्वारादिक पूर्व नंदा-पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका नही, तिकाही ज सुधर्मा सभा ने विषे पिण कहिवी। पिण कणी अधिकी नही।

तिवार पर्छ पूर्व नदा-पोक्खरणी नी अर्चिनिका करीने उपपात सभा ने पूर्व हारे करी पेसे, पेसी ने मणिपीठका की अने देव-सेज्या नी पूजा करी तदनतर बहु मध्य देश भाग नी पूर्ववत अर्चिनिका करी। तिवार पर्छ उपपात सभा ने दिक्षण हारे आयो।

ए अधिकार वृत्ति में कह्यों अने सूत्रे सुधर्मा सभा ने तीनू दिशे द्वार मुख-महपादिक पुष्करणी ताइ पूर्जे— इम नथीं कह्यु। अने उपपात सभा ने विषे पिण पूर्वं द्वारे पेमी मणिपीटिका देवसेज्या वहु मध्य देश भाग पूर्जे—ए पिण नथीं कह्यो। पिण ए मर्वं पूज्या सभवें छै। सिद्धायतन ने तीनू द्वारादिक नदा पुष्करणी ताइ पूर्वं कह्यूज छै, तिम इहा पिण जाणवू। इण सूत्रे हीज प्रथम विस्तार कह्यो, तिहा सिद्धायतन ने तीनू दिशे मुख महपादिक कह्या। अने सुधर्मा सभा ने पिण तीनू दिशे मुख मंडपादिक नदा पोक्खरणी लगें छै, ते माटै ए पूजा सभवें वली आगल उपपान सभा ने तीनू दिशे मुख महपादिक पूर्जं। तिहा नी भलावण दीधी, ते माटै सुधर्मा सभा ने तीनू दिशे द्वार अने मुखमडपादिक पूजा सभवें।

### अत्र चरचा लिखिये छै-

'कोई कहै—ए सिद्धायतन ने चैत्य यूभे जिन प्रतिमा पूजी नमोत्युण गुण्यो, ते धमं हेते छैं। तेहनो उत्तर—ए जिन प्रतिमा नी द्रव्य पूजा आरम्भ सहित छै। ए पूजा नी तीर्थंकर आज्ञा देवें नहीं। साधु दीक्षा लीधी तिवारें सावज जोग ना पचखाण किया। तिण में द्रव्य पूजा ना त्रिविधे-त्रिविधे पचखाण आया। ते द्रव्य पूजा करें नहीं, करावें नहीं, करता ने अनुमोदें पिण नहीं। जो ए धमंं नो कायं छै तो साधु अनुमोदना किम न करें अने ए द्रव्य पूजा नी अनुमोदना किया साधु ने पाप लागें, वर्त भागें तो द्रव्य पूजा करण वाला ने धमंं किम हुवें? जो द्रव्य पूजा में धमंं छै तो धमंं अनुमोदना किया पाप किम ह्वें ? अने वर्त भागें ते

श्रावक सामायक पोसा करैं तिहा 'सावज्जं जोग पच्चक्खामि' पाठ कहै— तिण में ए द्रव्य पूजा ने मावज जाणने त्यागी छै। ते सावज कार्य सामायक पोसा विना खुलो करें, तिणने पिण धर्म नथी। तिण ने पिण केवली नी आज्ञा नथी। अने आज्ञा वारे धर्म पुन्य रो अश नही। ते भणी ए द्रव्य पूजा सावज जाणवी। इद्रे कीधी ते लोकिक खाते, ससार नां द्रव्य मगलीक हेते, पिण धर्म हेते नही।

तुगिया नगरी प्रमुख नां श्रावक स्थिवर प्रमुख नै वदवा गया। तिहा दिध ससत, द्रोवादिक द्रव्य मंगलीक संमार हेते साचव्या, ते लोकिक खाते छै। तिम ए पिण द्रव्य पूजा लोकिक खाते जाणवी अनै नमोत्युण गुण्यो ते पिण लोकिक

वा०—सभायाः सुधर्माया बहुमध्यदेशभागेऽर्चेनिका पूर्ववत् करोति, कृत्वा सुधर्माया सभाया दक्षिणद्वारे समागत्य तस्य अर्चेनिका पूर्ववत् कुरुते, ततो दक्षिणद्वारेण विनिर्गच्छति, इत ऊध्वं यथैव सिद्धायतनान्तिष्कामतो दक्षिणद्वारादिका दक्षिणनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना पुनरिष प्रविशत उत्तरनन्दापुष्करिण्यादिका उत्तरद्वारान्ता ततो द्वितीयद्वारान्निष्कामत. पुर्वेद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणी-पर्यवसाना अर्चेनिकावक्तव्यता सैव सुधर्माया सभाया-

२५०. जाव धूव दलयइ।

मप्यन्यूनातिरिक्ता वक्तव्या ।

तत पूर्वनन्दापुष्करिण्या अर्चनिकां कृत्वा उपपातसभा पूर्वद्वारेण प्रविश्वति प्रविश्य च मणिपीढिकाया देवशयनीय-स्य तदनन्तर वहुमध्येदेशभागे प्राग्वदर्चनिका विद्याति, ततो दक्षिणद्वारे समागत्य तस्यार्चनिका कुरुते।

(वृ० प० २६५,२६६)

खाते छै, ते भणी उघाड मुखे गुण्यो पिण मुख आडो हस्त वस्त्रादिक देइ गुण्यो— इम नथी कहाो, ते माट ए नमोत्युण उघाड मुख गुण्यो सभव । अने ए उघाडे मुख गुण्यो, ते माट ते ससार ना द्रव्य मगलीक ने अर्थे लोकिक खाते छै, पिण धर्म हेते नही।

जे भगवती शतक १६वे दूजे उद्देश (सूत्र ३६) कह्यो—जिवार शत उघाड मुख भाषा बोलें, तिवार ते सावज भाषा, अने जिवार शत हस्तादिक तथा वस्त्रादिक मुख आडो देइ बोलें, तिवारे निरवद्य भाषा हुवै। तिहा वृत्तिकार कह्युं जीव ना सरक्षण थकी निरवद्य भाषा हुवै। पिण इम नयी कह्युं जे मुख आडो वस्त्रादिक देइ बोलें ते विनय छै। इम विनय थी निरवद्य भाषा नथी कही। अने जे देवलोक ने विषे वेइद्रियादिक प्रज्याप्ता ना स्थान नथी अने मनुष्य लोक ने विषे इद्रादिक, तेहना मुख ने विषे माखी माछरादिक प्रवेश नो उपद्रव न सभवें, ते भणी इद्र मुख आडो वस्त्रादिक देइ बोलें ते वायुकाय ना जीव नी रक्षा अने उपाई मुख बोलें तिहा वायुकाय ना जीव नी हिंसा जाणवी। ए सूत्रे इद्र नी सावद्य निरवद्य भाषा कही, ते वचन देखता जिवार शत्र शत्र धर्म रूप वचन कहै तिवार उघाड मुख नयी बोलें। अने जिवारे धर्म बार्सा विण अन्य वारता लोकिक सवधी कहै, तिवार उघाड मुख बोलें, एहवू दीसे छै। अने छद, नमोत्युण गुण्यो तिहा मुख आडो हस्त वस्त्रादिक नो पाठ नथी कह्यो। ते भणी उघाड मुख गुण्या माट ए सावज भाषा ससार ना मगनीक हेते जाणवी पिण धर्म हेते नथी।

विल कह्य ु-जिन प्रतिमा ने लोम हस्त नी पूजणी करी पूजै, जले करी स्नान करावै, चदने किर गात्र लीपै, वस्त्र युगल पहिरावै, पुष्पादिक चढावै, मुख आगल मूकै जाव धूप खेवै —एतला बोल कह्या, पिण मुख आडी जयणा नथी कही। बिल नमोत्थुण गुण्यो त्या पिण कह्यो —एक सौ आठ छद ना दोष रहित ग्रथे करी युक्त वली पुनरुक्त दोष रहित मोटा पदे करी युक्त एहवा छदे करी स्तवना करै। विल सात-आठ पग पाछो ओसरी, डावो गोडो कचो राखी, जीमणो गोडो धरती ना तला विषे स्थापी तीन वार मस्तक धरणी तल ने विषे लगाडी नै कायक धरती सू कचो मस्तक राखी नै हाथ जोडी शिर आवर्त्तं करीने नमोत्थुण गुणै, एतली विधि आखी। पिण इम न कह्यो —मुख आडी जयणा करीने नमोत्थुण गुणै, ते माटै ए छद ने नमोत्थुण उघाडै मुख गुण्या सभवै। जिम पूजणी सूं प्रतिमा नै पूजै, स्नानादिक जाव धूप खेवै तिम ससार ना मगल हेते प्रतिमा नै नमोत्थुण गुण्यो ते पिण सावज जाणवो।

इहा प्रथम शक्त इद्राभिषेक करी अलकार सभा मे आवै, आवी वस्त्र-गहणा पहिरचा, व्यवसाय सभा मे आवै, आवी पुस्तक-रत्न वाची 'धिम्मय ववसाइय गिण्हइ' (सू० २८८) एहवो पाठ कह्यो। पछै सिद्धायतन आवै, आवी ने जिन-प्रतिमा पूजी, द्वार शाखा, पूतल्या, सर्प ना रूप, मुख-मडपादिक, तोरण, वावडी, दाढा, हथियार प्रमुख पूज्या।

इहा कोइ कहै — प्रतिमा पूजी ते धर्म-व्यवसाय मध्ये कही छै, तेहनी उत्तर—ए धर्म-व्यवसायपद कह्यो, ते निकेवल प्रतिमा पूजवा आश्रयी ने नथी कह्यो। ए धर्म-व्यवसाय ग्रह्यो तिवार पछै जिन प्रतिमा, द्वार शाखा, पूतल्या, सर्प ना रूप, मुख-मडपादिक जे-जे वस्तु पूजी, पोता ना जीन आचार नी विध करी, ते सर्व धर्म व्यवसाय मध्य आवी।

ठाणागे दशमे ठाणें दश धर्म कह्या, तिणमे कुलधर्म कह्यो ते मार्ट ए कुलधर्म जाणवो।

विमाण रा धणी सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, भव्य, अभव्य ऊपजतां राज्य वेसे छै तिवारे सगलाइ प्रतिमादिक पूजे छै। ते वल्प-स्थिति माटै, पिण धर्म हेते नहीं। तिमिह्ज इद्र पिण कुल स्थिति राखवा माटै ए सर्व वाना पूज्या छै। जिम मनुष्य लोक ने विषे जैन, वैष्णव, मुसलमान ना देहरा, ठाकुर द्वारा, मिस्जिद जूजुआ छै, तिम देवलोक मे मम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि नी श्रद्धा तो जूई-जुई छै, पिण पूजवा ना स्थानक जूआ-जूआ नथी कह्या। जूआ-जूआ किहाहि कह्या ह्वै तो देखायो। पाच सभा अने शिद्धायतन — ए छह वाना अने मुख-महपादिक सर्व विमाण रा धणी रै हुवै, ते तिण विमाण नै विषे सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि जे ऊपजता राज-अभिषेक करचे छते एहिज प्रतिमा, द्वार-णाखा, पूतल्या प्रमुख सगलाइ विमाना-धिप पूजे छै। ते माटै ए समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि सर्व नो कल्प-स्थिति जीत व्यवहार एक हीज जाणवो।

आवश्यक नी वृत्ति वावीस हजारी हरिभद्र सूरि नी कीघी, ते मध्ये सामायिक नामा अध्ययन नी टीका, ते मध्ये अभव्य संगम देवता नो अधिकार छै। महावीर ने उपसर्ग ने अधिकारे जिवार शकेंद्र वोल्यो—'महावीर ने चलावी न सकै।' तिवार शकेंद्र नो सामानिक अभव्य सगम देवता वोल्यो, ते पाठ लिखियें छैं—

सगमो नाम सोहम्मकप्पवामी देवो सनकसामाणिओ अभवसिद्धिओ मो भणित—देवराया अहो रागेण उल्लेबेड, को माणुमो देवेण न चालिङजइ? अह चालेमि, ताहे मक्को त न वारेइ। मा जाणिहिइ—परणिस्साए भगव तवोकम्मं करेति, एव सो आगओ। '

इहा मगमी देवता शकेन्द्र नो सामानिक देवता कह्यो। विल सदेह दोलावली ग्रंथ छै, तेहनी वृत्ति मध्ये कह्यो छै ते लिखिये छै—नन्देव तिह सगमकप्रायो महामिथ्यादृष्टि देविवमानस्या मिद्धायतनप्रतिमा अपि सनातनामिति चेत्, न नित्यचैरयेपु हि सगमवद् अभव्या अपि देवा मदीयमदीयमिति बहुमानात् कल्यस्थितिव्यवस्थानुरोधात् तद्भूतप्रभावाद् वा न कदाचित् असंयमित्रयां आरभन्ते ।

इहा ए सगम नै अभव्य कह्यो अनै इन्द्र नो सामानिक आवश्यक नी वृत्ति में पूर्वे कह्यो छै। सामानिक देवता इन्द्र सरीखा अने विमान ना घणी उपजती वेला सूरियाभ नी परे प्रतिमा दाढा पूर्ज पोता नी कल्प स्थिति माटे। इहा कह्यो मगम महामिध्यादृष्टि देव विमान कै विषे सिद्धायतन प्रतिमा ने ते अभव्य पिण देवता ए 'माहरी माहरी' इम वहु मान थकी कल्प स्थिति व्यवस्था नां वश थकी पूर्ज ते माटे।

जद कोई कहै —द्रोपदी सम्यक्त्व-धारणी प्रतिमा क्यू पूजी ? तेहनो उत्तर— कोघनिर्युक्ति ग्रंथ ने अभिप्राये द्रोपदी प्रतिमा पूजी ते वेला सम्यक्त्वधारणी नही ते देखाई छै —

'दब्बिम जिणहरा' इति क्षोवनिर्युक्ति व्याख्या—द्रव्यिनिगिपिरगृहीतानि चैत्यानि कि मम्यग्दृष्टिना न सभावितानि इति, कस्मात् ? यस्मात् द्रव्यिनिगि-मिथ्यादृष्टित्वात् । यद्येवं तर्हि दिगम्बरसंवंधिचैत्यानि कि सम्यग्दृष्टिना न सभावितानि ? एनत्मत्यम् । यद्येतत् मत्य तर्हि स्वगंलोकेषु शाश्वतानि चैत्यानि मूर्याभादिभि देवै मम्यग्दृष्टिभि प्रपूज्यन्ते, तत् चैत्यानि संगमकवत् अभव्यदेवा

१. आव. निर्युक्ति गाथा ५०१ की हारिभद्रीया व्याख्या

२ मदेहदोलावली की वृत्ति का जो अंश यहा उद्धृत किया गया है, वह सस्कृत की दृष्टि से कुछ स्थलो पर अशुद्ध प्रतीत होता है।

मदीयमदीयमिति बहुमानात् प्रपूजयन्ति, किमेतत् पूर्वापर विरुद्ध न स्यात् ? ननु सूर्याभादयो देवाः स्वर्गलोकेषु शाश्वतानि चैत्यानि प्रपूजयन्ति तत्कल्पस्थिति-व्यवस्थानुरोधात्, अत एव विरुद्ध न सभवति ।

यद्येवं, तर्हि द्रोपद्या सम्यक्त्वधारिण्या यानि चैत्यानि नमस्कृतानि कि द्रव्य-लिगिपरिगृहीतानि न सभवतीत्याह—द्रोपदी न सम्यक्त्वधारिणी स्यात्, ओघ-निर्युक्तौ इत्युक्तम्—

'इत्यिजणसघट्ट तिविहेण तिविह वज्जए साहू' इति वचनात् । स्त्रीजनस्पर्शस्त्रिविध-त्रिविधेन साधूनां वर्जनीय. । साधोश्च अकल्पनीयकर्माचरत
सम्यवत्वाभावात् । आगमेषु श्रूयते—द्रोपदी 'लोमहत्यय परामुसड' लोमहस्तेन
परामुश्रति परिमार्जयतीत्यथं । तत्परिमार्जनेन जिनस्पर्शो जात , जिनस्य स्त्रीजनस्पर्शेन आगातना स्यात् । आशातनात सम्यवत्वाभाव , अत एव द्रौपदी न
सम्यवत्वधारिणी सभाव्यते । पुन ओघनिर्युक्तेश्चिरन्तन्दीकायां गन्धहस्त्याचार्येण
उक्तम् — द्रौपद्या नृपपुत्रिकया निदान कृत, भर्तृपचकस्येच्छन्ती निदानभोजितवती
जातेकपुत्रा पुन पश्चात् साधो पाश्चे शका निवार्य प्रवरसम्यक्त्वमार्गं धरते स्मः ।

इहा कह्यो—द्रव्यालगी परिग्रहीत चैत्य स्यू सम्यग्दृष्टि सभावित नहीं, ते किण कारण थकी ? द्रव्यालगी मिथ्यादृष्टि छै, ते भणी। जो इम छै तो दिगम्बर सवधी चैत्य स्यू सम्यग्दृष्टि सभावित नहीं ? ए सत्य। जो ए सत्य तो स्वगं लोक ने विषे शाष्ट्रवता चैत्य सूर्याभादि देवता सम्यग्दृष्टि पूजै, ते चैत्य संगमवत् अभव्य देव 'माहरी मांहरी' इम बहुमान थकी पूजै, ए पूर्वापर विरुद्ध नहीं हुवै काइ ? सुर्याभादि देव स्वगंलोक ने विषे शाष्ट्रवता चैत्य पूजै ते कल्पस्थित वस अमुरोध थकी, इण कारण थकीज विरुद्ध नहीं हुवै।

जो इस छै तो द्रोपदी सम्यक्त्वधारणी जे चैत्य ने नमस्कार कियो, ते स्यू द्रव्यिलिंगी परिगृहीत न हुवै काइ ? द्रोपदी सम्यक्त्वधारणी न हुवै बोधिनर्युक्ति ने विषे इम कह्यो—स्त्री जन नो स्पर्श साधु ने त्रिविधे त्रिविधे वर्जंव । साधु ने अकल्पनीय आगम ने विषे साभिलियै छै— "लोमहत्य परामुसइ" लोमहस्त करिकै फर्शे—पूजे इत्यर्थः । ते पूजवै करी जिन नो स्पर्श हुवै । जिन ने स्त्री जन स्पर्शंव करी आशातना हुवै, आशातना करवै करी सम्यक्त्व नो अभाव । इण कारण थकी द्रोपदी सम्यक्त्वधारणी न सभवियै ।

विल ओषनिर्युक्ति नी चिरतन टीका नै विषे गधहस्ति आचार्यं कह्यो— द्रोपदी नृपपुत्री नीयाणा नी करणहारी, तिणे भर्तार पच ने वरी सो नियाणो भोगवी, एक पुत्र थया पछे साधु समीपे सम्यक्तव पामी—एहवो ओघ निर्युक्ति नी टीका ने विषे गधहस्ति आचार्यं कह्यो। ते निथ्यात्व ना वश थकी पुष्पादिक करीके प्रतिमा पूजी। इहा ओघ-निर्युक्ति नी टीका तेहने विषे द्रोपदी प्रतिमा पूजी, ते वेला सम्यक्तव धारणी नथी अने एक पुत्र थया पछे साधु समीपे सम्यक्तव पामी एहवु कहाु।

वली सूर्याभादिक देवता देवलोक नै विषे शास्त्रता चैत्य पूजै। ते कल्प देवलोक नी स्थिति राखवा माटै कह्यो, पिण धर्म हेते पूजै, इम नथी कह्यो। अने शक देवेंद्र नी अर्चनिका सूर्याभ नै भलाई। ते माटे शक देवेंद्र प्रतिमादिक पूजी, नमीत्थुण गुण्यो, ते पिण कल्प—देवलोक नी स्थिति राखवा माटै जाणवो। विल

१. बोघनिर्युक्ति की व्याख्या का यह अश कुछ स्थलो पर अशुद्ध प्रतीत होता है। सस्कृत की दृष्टि से कुछ शब्दो एव कियाओ मे परिवर्तन करने पर भी कुछ स्थल सदिग्ध रह गए है। व्याख्या की प्रति उपलब्ध न होने के कारण इसे पूरी तरह से शुद्ध नहीं किया जा सका।

संगमादिक अभव्य ते पिण कल्प-स्थिति राखवा माटे सूर्याभ ृंनी पर प्रतिमादिक पूजै, नमोत्थुणं गुणै छै, ते भणी शक देवेंद्र जिन प्रतिमा पूजी, जिन दाढा पूजी, जिनप्रतिमा आगै नमोत्थुण गुण्यो, द्वार-शाखा, पूतल्यां, सर्प नां रूप, मुखमडपादिक अनेक वस्तु पूजी, ते सर्व लोकिक खाते जाणवा पिण लोकोत्तर हेते नथी। कल्पस्थिति राखवा माटे पूज्या, ए सावज पूजा नी केवली नी आज्ञा नथी।

ए जिन प्रतिमा तो स्थापना निक्षेपो छै। पिण साक्षात भाव निक्षेपे महावीर आगे सूर्याभ सावज भितत करी, नाटक पाट्यो, भगवान नै कह्यो—गोतमादिक नै म्हारी भितत ना वण थकी वत्तीस विध नाटक देखाढू । तिहा एहवो पाठ छै— 'तए ण समणे भगव महावीरे…'—सूरियाभस्स देवस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परियाणड तुमिणीए सिचट्टित (सू० ६४)।' एहनो अयं वृत्तिकार कियो ते लिखिये छै—तत श्रमणो भगवान् महावीर. सूर्याभेण देवेन एवमुनत सन् मूर्याभस्य देवस्य एनम्—अनतरोदितम् अयं न आद्रियते—न तदर्यंकरणाय आदरपरो भवित, नापि परिजानाति अनुमन्यते स्वतो वीतरागत्वात् गौतमादीना च नाटयिष्ठोः स्वाध्यायादिविधातकारित्वात् केवल तूष्णीक. अवतिष्ठते।

एहनो अर्थ—तिवारै श्रमण भगवान् महावीर सूर्याम देवताइ इम कहाँ छते सूर्याम देवता ना ए पूर्वोनत अर्थ प्रतै नो आढाइ किहता आदर न दियो ते नाटक ना कार्य माटे आदरपरायण न हुवै। नो परिजाणाइ किहना अनुमोदै पिण नहो, पोतै वीतरागपणा थकी अनै गोतमादिक नै माटै नाटक स्वाध्यायादिक मे विघातकारी, ते विघ्नकारीपणा थकी 'तुसिणीए सचिट्ठति' किहता निकेयल मीन करीनै रहै।

इहा ए नाटक ने भगवान् आदर न दियो । अनुमोदना पिण न की घी । ते माटै ए सावज भक्ति छै, जिन आज्ञा बारे छै । जे कार्य ने माधु करै नहीं, कराव नहीं, करता प्रति अनुमोदै पिण नहीं, ते कार्य सावज पाप कमं बद्य नो हेतु जाणवो ।

तिवार कोड कहै—ए सूर्याभ न नाटक करणो माड्घो ते वेला वर्ज्यों क्यू नथी ? तेहनो उत्तर—णतक ६ उद्देशे ३३ मे जमाली विहार करण री आज्ञा भगवत कन मागी तिहा पिण एहिज पाठ कह्यो—

तए ण समणे भगव महावीरे जमालिस्स अणगारस्य एयमट्टं नो आढाइ, नो परिजाणड, तुसिणीए सचिट्ठइ । (सू० २१७)

इहा पिण विहार करण री आज्ञा मागी। तिवार ते जमाली ना अर्थ ने आदर न दियो, अनुमोदना पिण न कीधी, मौन राखी। तिवार जमाली आज्ञा विना विहार कीधो। सावत्यी नगरी गयो। तिहा वचन उत्थापी श्रष्ट थयो। ते भणी भगवान आज्ञा न दीधी, मौन राखी, तेहने पिण वर्ज्यों नथी। ते केवली त्रिलोकीनाथ ए निश्च विहार करसीज इम जाण्यो, ते भणी वर्ज्यों नही।

प्रभु निर्थंक भाषा बोलै नहीं । तिम इहा पिण प्रभु जाण्यो — ए सूर्याभ निश्चै नाटक पाडसीज, ते भणी बर्ज्यों नथी । अथवा ते नाटक पाडवा नो तेहनो तीव्र मन जाण्यों अनै वर्जे तो ते जबरदसती रो धर्म बीतराग रो नथी। अथवा हा कह्या हिंसा लागै, ना कह्या भोगी रा भोग भागै। ते हजारा लोका रै नाटक देखवा री वाछा ते वर्त्तमान काले वर्ज्या तेहने अन्तराय नो सभव इत्यादिक अनेक कारण जाणी ने वर्ज्यों नथी। पिण आज्ञा न दीधी, अनुमोदना न कीधी, ते माटै सावर्ज छै।

जे खंधकादिक' तपसा री आज्ञा मांगी, गोतमादिके गोचरी नी आज्ञा मांगी तिहा एहवुं पाठ—"अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबंध करेह" इहां ए तपस्या अथवा साधु री गोचरी निरवद्य कार्य छै, ते भणी कह्यो—जिम सुख हुवै तिम करो, हे देवानुप्रिय! विलव करो मती। इम शीघ्र आज्ञा दीधी। अने सूर्याभ ना नाटक ने आदर न दियो, अनुमोदना पिण न करी, मून राखी, ते भणी ए सावज छै। आज्ञा वारै छै। अने सूर्याभ नां आभियोग देवता अथवा सूर्याभ पोतै वदणा कीधी तिहां भगवान् सूत्र मे छह पाठ कह्या, तिहा "अब्भणुणायमेयं" एहवु पाठ छै, ए वंदणा करवा री माहरी आज्ञा छै। ए वदणा रूप कार्य निरवद्य छै, ते भणी आज्ञा दीधी। अने नाटक नु कार्य सावज छै, ते भणी अनुमोदना न कीधी, मून राखी। ए प्रत्यक्ष भाव निक्षेपा आगे नाटक पाड्यो, ते पिण सावज आज्ञा वाहिर छै तो थापना निक्षेपा री पूजा, ते जिन आज्ञा मे किम हुवै ? ज्ञान नेत्रे करी निरपेक्षपणे विचारी जोइज्यो।' (ज० स०)

हिनै सुघर्मा सभा नै विषे पूजा करी तेहनै त्रिहु दिशे द्वार मुख-मडपादिक पूजी, उपपात सभा तिहा आवी, उपपात सभा नै विषे मणिपीठिका, सिहासन, वहु मध्य देश भाग पूजी, ते उपपात सभा नै विषे त्रिहु दिशे द्वार मुख-मडपा-दिक पूजे ते अधिकार कहै छैं —

२४६. \*जिहां उपपात सभा नों जाण, काइ दक्षिण द्वार पिछाण। तिमहिज सभा सरीस उच्चरणी, जाव पूवनदा पोक्खरणी।।

वा॰—जिम सुधर्मा सभा नै तीनू विशे द्वार मुख-मडपादिक पूज्या, तिम उपपात सभा नै दक्षिण द्वार मुख मडपादिक नदा पुष्करणी ताइ पूजी। विल उत्तर नी नदा पुष्करणी थी लेइ उत्तर द्वार लगै पूजी। पछै पूर्व द्वार थी लेइ पूर्व नदा पुष्करणी लगै पूजा करें, करीने द्वह नै विषे आवै ते कहै छै—

२५० पछै द्रह तिहा आवै आवी, द्रह नां तोरण पावडिया सुहावी। पूतिलिया ने सर्पं ना रूप, तिमहिज पूजै घर चूप।।

२५१ पछै सभा जिहा अभिषेक, तिहा आवै आवी नै सपेख। सिंहासण मणिपीठिका सार, तेहनी पूजा करै घर प्यार।।

वा॰—इहा वृत्तिकार कह्यो—पूर्व द्वार करी अभिषेक सभा मे प्रवेश करें, प्रवेश करोने मणिपीठिका नी अने सिंहासण नी वली अभिषेक-भाड नी अने वहुं मध्य देश भाग नी पूर्ववत अर्चनिका अनुक्रम करिके करें।

२५२ शेप तिमहिज कहिवु उदत, आयतन सरीखो वृतत। जाव पूर्व नदा पुष्करणी, तिहा आवी पूजा विधि वरणी।।

बाo—अभिषेक सभा नो बहु मध्य देश भाग पूजी ने तिवार पछ इहा पिण सिद्धायतन नी पर दिक्षण द्वार दिक्षण मुख्यमडपादिक थकी दिक्षण नदा पुष्करणी लगे पूजी ने जत्तर नदा पुष्करणी लेइ उत्तर द्वारांत पूजी ने पूर्व द्वारादिक थकी लेइ पूर्व नदा पुष्करणी लगे पूजी, पूजी ने हिने अलकार सभा मे आने, ते कहै छै—

२५३. जिहां सभा अलकार, तिहां आवै आवी ने तिहवार। जिम अभिषेक सभा विस्तार, तिमज सर्व कहिवू अलकार।।

लय: म्हारी सासू रो नाम छै फूली १. भ० २।६१ २४६. जेणेव उववायसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छद्द, उवागच्छित्ता— (जहा २६४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि)। (राय० सू० ४१६-४३४)

२५० जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता

तोरणे य तिसोवाण-पिडरूवए य सालभजियाओ य
वालरूवए य लोमहत्यएण पमज्जइ, पमिज्जिता।

(राय० सू० ४७३)
२५१ जेणेव अभिसेय सभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता

"मणिपेढिय च सीहासण च लोमहत्यएण पमज्जइ,
पमिज्जत्ता।

(राय० सू० ४७४)
वा०—पूर्वद्वारेणाभिषेकसभा प्रविश्ति, प्रविश्य मणिपीठिकाया सिहासनस्याभिषेकसभा प्रविश्ति, प्रविश्य मणिपीठिकाया सिहासनस्याभिषेकभाण्डस्य बहुमध्यदेशभागस्य
च क्रमेण पूर्ववदर्चनिका करोति।

(यृ० प० २६६)
२५३ जेणेव अलकारियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

वा० — अभिषेक सभा नी पूर्व नंदा पुष्करणी थकी नीकली, पूर्व द्वार करी अलकारिक सभा में पैसी ने मिणगीठिका अने मिहामन नी विल असकारिक भाट नी अने बहु मध्य देण भाग नी अनुक्रम करिकै पूर्ववत अर्चनिका करे, करीने तिहा पिण अनुक्रम करिकै सिद्धायतन नी पर दक्षिण द्वार थी नेष्ठ पूर्व नंदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिंवी। हिंदै व्यवसाय सभा में आवै, ते कहै है—

२५४. पछे जिहा सभा व्यवसाय, तिहा आवे आवी मुरराय। तिमहिज पूजणी हस्त ग्रही नें, पुस्तक रत्न प्रते पूजी ने।।

२५५ दिव्य उदक घारा कर सोय, आभोर्व सीर्च अवलोय। मुत्य पवर गंघ पुष्पमाल, तिण करि अर्चे तिण काल।।

२५६. मणिपीठिका प्रति पूजेह, वली मिहासण अर्चेह । केप तिमहिज सर्व कहेव, पूर्व नंदा पोवखरणी त चेव ॥

या०—तिवार पछ अलकार सभा नी पूर्व नदा पुष्करणी यकी पूर्व द्वार करिक व्यवसाय सभा मे पेठो, पैसी ने पुस्तक रत्न ने सपूरिषच्छ नी पूजणी करी पूजी ने उदक धारा करिक सीची ने वर गध माल्य करि अर्ची ने तदनतर मिणपीठिका नी अर्न सिंहामन नी वली बहु मध्य देश भाग नी अनुक्रम करिक पूर्ववत अर्चनिका करें। तदनतर तिहां पिण सिद्धायतन नी परं दक्षिण द्वार थी लेई पूर्व नदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिवी।

२५७ पूर्व नदा पुष्करणी थी ताय, जिहां विलिपीठ छै तिहा आय। विलि विसर्जन करें तिवार, उगर्या ते वाना मूकै सार।। वा०—पूर्वोक्त बत्तीस वाना कह्या ते पूजता पूजतां जे कोई वस्तु चदण फूलादिक उगर्या हुवै, ते विलिपीठ ने विषे विसर्जन करें—मूकै।

२५८. पछे आभियोगिक देव, तसु तेटावी ततसेव। इह विव बोले सुरराय, हे देवानुप्रिय शिघ्र जाय।। २५६ सुवर्मावतस विमान, तेह विमान विपे पहिछान। जे सिंघाडा ने आकार, त्रिकोण स्थान जे उदार।।

२६०. त्रिक ज्या तीन वाट मिलंत, चउनक ते ज्या मिलै चिहु पंथ। वली चच्चर जे कहिवाय, वहु वाट मिलै जिहा आय।।

२६१. विल जिहां यकी अवलोय, चिहु दिश ने विषे पिण सोय। नीसरे चिहु पथ उदार, तसु कहिये चतुर्मुख सार॥

२६२, महापथ राजपथ विपेह, शेप सामान्य पथ कहेह । प्राकार तिको गढ जोय, अट्टालग बुरजा अवलोय।। या—तनः पूर्वनस्यापुष्परिणीतः पूर्वद्वारेणानद्वारिक-गभां प्रविणानं, प्रविषयं मणिपीठिताया निहासनस्य अल-कारभाण्डस्य बहुमध्यदेशभागस्य च श्रमेण पूर्ववदर्गनिका करोनि, नश्रापि श्रमेण सिद्धायनन्यत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनस्यापुष्करिणीपर्यवसाना असैनिका वसाध्या ।

(वृ० प० २६६)

२४४. वेणेव वत्रमायमधा तेणेत्र उवागन्छ्य, उवागन्छिता .......सोमहत्वग परामुगद्य परामुमित्ता पोत्यवरयण लोमहत्वएणं पमञ्जय । (राय० मृ० ५६४)

२४४. दिव्याए वगधाराए अस्मुगोद, अस्मुगोता ..... अमेरि यरेटि म गधेरि मत्त्रेहि म अस्मेड, अस्मेता पुष्फारहण । (सम० मृ० ५६४)

२४६. .....मणियेटिय च मीहामण च लोनहत्यएग पमञ्जद, पमज्जिता ।

(गय० मृ० ५६५)

या० — तत. पूर्वनन्दापुष्परिणीत. पूर्वद्वारेण व्यवसाय-सभा प्रविधित, प्रविषय पुन्नकरन्त सोमहन्तवेन प्रमुख्य उदम्प्राया अम्युथ्य चन्द्रनेन चर्चिद्रन्या वरमन्ध्रमात्येरचं-यित्या पुष्पाचारोपण दाध्रपनं च स्रोति, तदनन्तर मिष-पीढिकाया मिहामनम्य बहुमध्यदेशभागम्य च क्रमेण पूर्व-वदचंनिका करोति, तदनन्तरमन्नापि मिद्धायतन्त्रत् दक्षिण-द्वारादिका पूर्वनन्दापुष्परिणीययंवसाना अर्चेनिका वस्तव्या। (वृ० प० २६७)

२५७. जेणेव बिलपीडे तेणेव चवागच्छा, चवागच्छता यनिविगज्जण करेण। (राय० मू० ६५४)

२४८. आभिनोगिए देवे गहावेह, गहावेत्ता एव वयासी— रिष्पामेव भो देवाणुष्पया । (राय० सू० ६४४) २४६. \*\*\*\*\* विमाणे सिंघाटएसु

(राय० सू० ६५४)

म्यंगाटकः -- भ्रंगाटकाऽऽकृतिपययुक्तं त्रिकोण स्यानम् (राय० वृ० प० २६७)

२६०. तिएसु चजनकेसु चच्चरेसु (राय० सू० ६५४) शिक—यत्र रथ्यात्रय मिलति चतुरक—चतुष्पययुगत चत्वर—चहुरथ्यापातम्यानं (राय० वृ० प० २६७)

२६१. चलम्मुहेसु (राय॰ सू॰ ६४४) चतुर्मुख-यस्मान्चतसृष्विपिदिक्षु पन्थानो निस्सरित (राय॰ वृ॰ प॰ २६७)

२६२ महापहपहेसु पगारेसु अट्टालएसु (राय० स० ६५४) महापद्यः — राजपद्य दोषः सामान्यः पन्या प्राकार प्रतीतः अट्टालकाः — प्राकारस्योपरिभृत्याश्रयविद्येषाः (राय० दृ० प० २६७) २६३. चरिका ते अष्ट हस्त प्रमाण, गढ नगर विषे मग जाण। वली महल तणा जे द्वार, गोपुर गढ नी पोल उदार।।

२६४ तोरण द्वार सबधी जान, माधवी लतादि गृह-स्थान। जिहा आवी पुरुष स्त्री ताम, रमै कहियै तास आराम।।

२६५ उत्सवादिक विषे आरोग्य, वहु जन नै भोगविवा जोग्य। वारू उद्यान ते सुलकद, ढुकडु ते कानन तरु वृन्द।। २६६. वेगलु तिको वन कहिवाय, एक जाति तणा सुलदाय। उत्तम वृक्ष समूह सुचारू, वनराई कहियै वारू ।।

२६७ एक अनेक जात ना उदार, तरु-समूह वनखड विचार। ए सहु नी अर्च्च करि ताय, शीघ्र आज्ञा सूपो आय।।

२६८ आभियोगिया देवा तिवार, इद्र वचन कियो अगीकार। सहु नी अर्चा कर स्वयमेव, पाछी आज्ञा सूपी ततखेव।।

२६६ शक्र इन्द्र हिवै सुखदाय, जिहा नदा-पुष्करणी त्यां आय। नदा पोक्खरणी ने सुचग, प्रदक्षिणा करतो उमग॥ २७० पूर्व ने पावडिये कर ताहि, पेठो नदा-पोक्खरणी माहि। हस्त पाय पखाली सार, आयो नदा-पोक्खरणी वार॥

२७१ जिहा सभा सुधर्मा उदार, तिहा गमन भणी सुविचार। प्रवत्यों सुराधिप इद, साथै देव देव्या रा वृद।। २७२ सामानिक चउरासी हजार, जाव तीन लाख अवधार। ऊपर सहस छत्तीस सगीत, आत्मरक्षक देव सहीत।। २७३. विल अन्य वहु सुधर्मवासी, वैमानिक देव देवी हुलासी। परवरघो इन्द्र तेह सघात, सर्व ऋद्धि करि सुविख्यात।

२७४. जाव वाजित्र ना भिणकार, सुर दुदुभि घोष उदार। जिहा सभा सुधर्मा सुचग, तिहा आयो घर उचरग।! २७५. हिवै सभा सुधर्मा तेह, विषे प्रवेश करैं गुणगेह। जिहा सिहासण तिहा आय, वैठो पूर्व मुख सुरराय।।

२६३. चरियासु दारेसु गोपुरेसु (राय० सू० ६५४)
चरिका—अष्टहस्तप्रमाणो नगरप्राकारान्तरालमार्ग
द्वाराणि—प्रासादादीना गोपुराणि—प्राकारद्वाराणि
(राय० वृ० प० २६८)

२६४. तोरणेसु आरामेसु (राय० सू० ६५४) तोरणानि—द्वारादिसम्बधीनि आरमते यत्र माधवी-लतागृहादिषु दम्पत्यादीनि इत्यसावाराम.

(राय० वृ० प० २६८)

२६४,२६६. उज्जाणेसु वणेसु वणराईसु काणणेसु (राय० सू० ६४४) पुष्पादिमयवृक्षसकुलमुत्सवादौ वहुजनोपभोग्यमुद्यान, एकजातीयोत्तमवृक्षसमूहो वनराजी ।

(राय० वृ० प० २६७)

२६७. वणसडेसु अञ्चणिय करेह करेत्ता एयमाणित्यं खिप्पामेन पञ्चिप्पाह । (राय० सू० ६५४) एकाऽनेकजातीयोत्तमनृक्षसमूहो ननखण्डः

(राय० वृ० प० २६८)

२६८. तए ण ते आभिओगिया देवा " ' एव वृत्ता समाणा""तमाणत्तियं पच्चिप्पित ।

(राय० सू० ६५५)

२६६. तए ण से ......... जेणेव णदा पुक्खरिणी तेणेव उनागच्छइ उनागच्छित्ता (राय० सू० ६५६)

२७०. नद पुनलिर्णि पुरित्यमित्लेण तिसोमाणपिडल्न-एण पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता हत्यपाए पन्खालेइ, पन्खालेत्ता णदाओ पुनलिरिणीओ पच्चुत्तरेइ,

(राय० सू० ६५६)

२७१. जेणेव .....तेणेव पहारेत्य गमणाए । (राय० सू० ६५६)

२७२. तए ण से · · · · श्वायरक्खदेवसाहस्सीहिं (राय० सू० ६५७)

२७३. अण्णेहि य बहूहि ......विमाणवासीहि वेमाणिएहि देवेहि य देवीहि य सिंद्ध सपरिवुडे सिव्वड्ढीए (राय० सू० ६५७)

२७४. जाव (स॰ पा॰) नाइयरवेण जेणेव · · तेणेव उवागच्छइ

२७५ · · · · · · पुरित्यिमिल्लेण दारेणं अणुपिवसिति अणुपिविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छद्द उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्याभिमुहे सिण्ण-सण्णे। (राय० सू० ६५७)

१. रायपसेणइयं मे उज्जाणेसु के वाद पाठ का कम इस प्रकार है—वणेसु वणराईसु काणणेसु "" । जोड मे उद्यान के बाद कानन की व्याख्या है । उसके बाद वन और वनराजि की । वृत्ति मे उद्यान के बाद कानन है । उसके बाद वन, वनखण्ड और वनराजि है ।

२७६. \*हिवै शक्र तणां मृविचार, मामानिक सुपकारी।
सुर महंस चउरासी सार, वटा है जशवारी।
जशवारी जी, अति हितकारी, वायव्य ईशाण वैठा मारी।
ओ तो सखर सुराधिय शक्र, परम मुद्रा प्यारी॥

सोरठा

२७७. सहस चजरामी जाण, भद्रासण अति ओपता। वायव्य ने ईंशाण, वैठा तिहा सामानिका।।

२७८ \*हिवे पूर्व दिश रै माय, भट्रासण अन्ट भला। तिहा अग्रमहेंगी आठ, रूप करि अधिक भिला॥ अधिक भिलाजी, आभरण उजना,

अतिही चुनि कातिकरी अमला। स्रो तो सवल शक्क सहस्राक्ष, मुजन करता नगला॥

#### सोरठा

२७६. सील सील सहस सार, रूप वैक्रिय करण नी। शक्ति ताम परिवार, अग्रमहेषी नी असी॥

२६०. \*हिवै आग्नेयी कूण मुजाण, सहस्र फुन द्वादगही।
ए तो पवर भद्रामण जाण, तिहा वैठा उमही।
वैठा उमही जी, प्रकृति शुभही, बार सहस्र अम्यतर परिपद ही।
ओ तो प्रयल पुरदर पेन्न, ताम अति कीन्ति कही॥
२६१. दक्षिण चवद हजार, मिम्म ही परिपद ना।
नैरुत कूण मभार, परिपदा वाहिर ना।
वाहिर नां जी, देवाविप नां, मुर पट दश सहस्र अधिक सुमना।

# सोरठा

क्षो तो मणिवारी मघवान, अमर पान अपना।।

२६२. दक्षिण दिशि में देख, चउद सहस्र भद्रासणे।
त्या वैठा मुविशेख, मिक्सिम परिपद ना मुरा॥
२५३. नेस्त कूण मकार, सोल सहस्र भद्रासणे।
त्या वैठा मुविचार, वाहिर परिपद नां मुरा॥

२६४ \*पश्चिम दिशि मे पेख, सप्त शोभैज अति।
भद्रासण सुविशेख, तिहां अनिकाधिपति।
अनिकाधिपति जी, तसु सम्बर द्युति, वर परम पीत देवाधिप थी।
ओ तो वज्रपाणि विद्युधेश, तास सिर अधिक रती।।
२५५. फुन चिहुं दिश रे माय, आत्मरक्षक मिणिया।
इक-इक दिश में सहंस चोरासी मुर गिणिया।
मुर गिणिया जी, सूत्रे भणिया, कर विविध आयुध जोधा विणया।
ओ तो अपछरपति अमरेश, पुष्व जिन वच सुणिया।।

२७७. \*\*\* \*\*\* भहामणमाहम्मीम् निर्मायति (राय० मृ० ६४८)

२७८. तए ण तस्म …… पुर्मत्यमेषा……यगमहिनीयी …. भहागपेम् निमीयनि । (राय० मू० ६४६)

२=०. तए णं तम्म """दाहिणपुरस्यिमेणं अन्मितरियाए परिसाए ""देवनाहम्मीक्षे "" भद्दानणनाहस्मीमु निमीयति । (राय० सू० ६६०)

२=१. तए ण तस्म · · · · दाहिणेण मिन्समाए पिन्माए · देवनाहम्नीओ भद्दासणमाहम्मीहि निमीयति (राय० सू० ६६१) तए ण तस्स · · · · दाहिणपच्चित्यमणं वाहिरियाए पिरमाए · · · देवनाहस्मीतो · · · · · भद्दामणमाहस्मीहि निसीयति । (राय० सू० ६६२)

२८४. तए ण तस्त .....पच्चित्यमेणं मत्त अणियाह्वियणो सत्तीहं भद्दासणीहं णिसीयंति (राय० सू० ६६३)

२८४. तए ण तस्य \*\*\*\*\* चर्डाद्द्रींस \*\*\*\*\*\* कायरवस-देव-साहस्मीओ भद्दामणसाहस्तीहि णिसीयति (राय० सू० ६६४)

२७६. तत् णं तम्म · · · · ः उत्तरपुरियमित्रेण · · · · · मामाणिय-माहस्मीत्रो (राय० मू० ६५०)

र् लय: महै तो जास्यां जास्यां बंदन वीर

[[सोरठी

२८६ पूरव दिश रैमाय, भद्रासण शोभै भला । सहस चलरासी ताय, इम दक्षिण पश्चिम उत्तर।।

२८७ आत्मरक्षक अभिराम, ते भद्रासण नै विपे चिहूं दिश माहे ताम, वैठा शोभ रहा तदा।

सन्नद्ध वद्ध कवच भला। २८८. \*ते सुर आतमरक्ष, भलकता अधिक भिला।। वगतर पहिरचा सार, अधिक भिला जो, दीसै उजला, अगरक्षक काज अमर अमला। ओ तो जशधारी सुरनाथ, तास वस है कमला।। करी, शरासण तीर २८६. वाध्या गाढा पट्टिका तेण, तिहा शर अतिहि घणा। तरकश अतिहि घणा जी, सुरवर सुमणा, पहिरचा फुन ग्रीवा आभरणा। आतमरक्षक देव, शक्र किंकर नमणां।।

२६०. आरोप्या शिर विषे, विमल चिह्न-पट्ट वारू। छोगा विशेप एह, चमकता अति चारू। अति चारू जी, सुरहित कारू आयुध प्रहरण ग्रह्मा सारू। ए तो आतमरक्षक देव, अधिप आज्ञाकारू॥

२६१. आदि मध्य अवसान, विपे सुरवर नमता।
एहिज तीनू स्थान, सिंघ छै अति जमता।
अति जमता जी, मन मे गमता, देवाधिप ना अरि नै दमता।
ए तो आतम रक्षक देव, शक्र आणा रमता।।

२६२. वज्र रत्न रै माय, कोटि ते अग्र अणी।
एहवा धनुप उदार, ग्रही तसु शंक्ति घणी।
शक्ति घणी जी, सूत्रे पभणी, शर-वृद तिहा सम्पूर्ण थुणी।
ए तो आतम रक्षक देव, सेव सहस्राक्ष तणी।।

२६३. केयक सुर ने हाथ, नील वर्णेज ग्रह्मा। शर नां वृद कलाप, नील-पाणीज कह्या। पाणीज कह्या जी, अतिही उमह्या, इम पीत रक्त पाणीज लह्या। ए तो आतम रक्षक देव, सुराधिप आण रह्या।।

२६४. घनुष हाथ छै जास, चाप-पाणी कहिये। चारू-पाणी केय, चारू प्रहरण लहिये। प्राप्तरण लहिये। प्राप्तरण लहिये जी, अति हर्प हिये, के चर्मपाणीज चर्म गहिये। ए तो आतम रक्षक देव, अधिप आणा रहिये।

# सोरठा

२६५. अंगुष्ठ अगुली सीय, तसु आच्छादन चर्म ते। जेह तणे कर जोय, चर्म-पाणी कहियै तसु।।

१८६. पुरित्यमिल्लेणं साहस्मीओ, दाहिणेण ......ं साहस्सीओ, पच्चित्यमेण साहस्सीओ, उत्तरेण .. .. साहस्सीओ,

(राय० सू० ६६४)

२८७. ते ण आयरक्खा सण्णद्ध-त्रद्ध-विम्मय-कवया (राय० सू० ६६४)

२८६. उप्पीलियसरामणपट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा (राय० सू० ६६४)

उत्पीडितशरासनपट्टिका पिनद्धग्रैवेया — पिनद्ध-ग्रैवेयकाभरणाः (राय० वृ० प० २७०)

२६०. आविद्ध-विमल-वरिचधपट्टा गहियाज्हपहरणा (राय० सू० ६६४)

२६१ ति-णयाणि ति-सधीणि (राय० सू० ६६४) त्रिनतानि आदिमध्यावसानेषु नमनभावात् त्रिसन्धीनि आदिमध्यावसानेषु सिधभावात्

(राय० वृ० प० २७०)

२६२. वयरामयकोडीणि धणूइ पगिज्झ परियाइय-कडकलावा (राय० सू० ६६४)

२६३. णीलपाणिणो पीतपाणिणो रत्तपाणिणो (राय० मू० ६६४)

२६४ चावपाणिणो चाहपाणिणो चम्मपाणिणो (राय० सू० ६६४) चाह —प्रहरणिवशेष. पाणौ येषा ते चाहपाणय (राय० वृ० प० २७०)

२९५. चर्म अगुब्ठागुल्योराच्छादनरूप येपा ते चर्मपाणय (राय० वृ० प० २७०)

<sup>\*</sup> लयः महै तो जास्या जास्या वंदन वीर

सद्ग-पाणी देवा । २१६ वंड-पाणि इम देस, रज्जु नी ए पिण केवा । पाथ-पाणि एम, अधिकेवा, सुर सामधीम मेवग जेवा। एकेवा जी काइ सुराधिप सेवा ॥ ए तो आतम रक्षक देव, जाणी। २६७. नील पीत फ़्न चाप चारः रक्त. ने माणी ॥ खड्ग, चर्म पाग धारक घारक माणी जी, इक चित आणी, आतमरख भाव प्रतं ठाणी। ए तो आतमरक्षक देव, पहिछाणी ॥ शक्र ना जेह, २६८ निज स्वामी गोपवी ने रहिया। प्रति कहिया। तेह, वीटी वंठा गृप्त पालक पालक कहिया जी, चित गहगहिया,

जिम पालि तेम चिद्व दिश रहिया। वहिया ॥ देव, सेव तत्पर आतमरक्षक करि कहियै। २६६ सेवग गुण जुक्त जुत्ता पानि रहित, जेहनी नहिये। विच आतरा जेहनी लहिये जी, अति हरप हिये,

तम् युक्तपालिका उच्चरियं । देव, शक्र वहिये ॥ आणा ए तो आतमरक्षक ३००. प्रत्येक-प्रत्येक भणी । पेख, समय आचार कर लेख, करवैज विनय थणी । आचरवै करवैज थुणी जी, तसु कीर्त्त घणी, किंकर नी पर तिप्ठेंज गुणी । ए तो आतमरक्षक देव, सवल तस

सुधर्मा सभा ने विषे पूर्व द्वारे प्रवेश करीने जिहा गणिपीठिका छै तिहा आवे अने देखे छते जिन दाढा ने प्रणाम कर करीने जिहा गाणपक चैत्य म्तभ, जिहा वज्यमय गोल वृत्त ढावडा, तिहां आवी ने ढावडा प्रते ग्रहे, ग्रही ने उपाढे, उघाडी ने लोमहस्त पूजणी करिके पूजी ने, उदक घारा करिके सीची ने, गोशीय चदने करी लीपे, तिवार पछे प्रधान गध माल्य करिके अर्चे, धूप देवे, तदनतर वली वज्यमय गोल ढावडा ने विषे प्रक्षेपे, निक्षेपी ने तेहने विषे पुष्प, गध, माल्य, वस्य, आभरण आरोपे। तिवार पछे लोमहस्त करिके माणवक चैत्य स्तभ पूजी ने, उदक घारा करिके सीची ने, चंदन-चर्चा पुष्पादि आरोपे—चढावे अने धूपदान करे, करीने जिहा देव-लिहासन प्रदेश छै तिहा आवी ने मणिपीठिका अने सिहासन ने लोमहस्त करिके प्रमार्जनादि रूप पूर्ववत् अर्चनिका करे, करीने जिहा मणिपीठिका अने जिहा देव-सेज्या तिहा आवी ने मणिपीठिका अने देवसेज्या नी द्वारवत अर्चनिका करे। तिवार पछे पूर्वे कही तिण प्रकार करिकेहीज क्षुल्लक इद्रव्य विषे पूजा करे। तिवार पछे जे जिहा चोप्पालक नाम प्रहरण कोश तिहा आवी ने लोमहस्त करिके परिघ रत्न प्रमुख प्रहरण रत्न प्रते पूर्जे, पूजी ने जदक घारा करिके सीचे, चदन-चर्चा पुष्पादि-आरोपण धूप-दान करे।

तिवार पर्छ सुधर्मा सभा ने वहू मध्य देश भागे अर्चेनिका पूर्ववत् करै, करीने सुधर्मा सभा ने दक्षिण द्वारे करी आबी ने तेहनी अर्चेनिका पूर्ववत् करै। तिवार पर्छ दक्षिण द्वार करिकै नीकलै। इहा थकी आगै जिमहिज सिद्धायतन थकी नीकलतो दक्षिण द्वारादिक दक्षिण नदा पुष्करणी पर्यवसान पुनर्रिष प्रवेश

२६६. दंदपाणिको सम्माणिको पामपाणिको (राय० सू० ६६४)

२६७. नीलवीय-रत्त-पाय-पाय-पाय-प्रम्म-दर-प्रग्न-पागप्यरा आयरनया (राय० सू० ६६४)

२६८. रमयोवमा गुत्ता गुत्तगालिया (राय० मू० ६६४)

२६६. जुत्ता जुत्तपालिया (राय० मू० ६६४) मुक्ता.—भेवकगुणोपेतनया जिन्नतास्तया मुक्ता. परम्परामबद्धा न तु वृहदन्तरा पातिर्येषा ते मुक्त-पालिका (राय० वृ० प० २७०)

३००. पत्तेय-पत्तेय समयओ विषयओ किंगरमूया इव विट्ठनि (राय० मू० ६६४)

मभाषा मुधर्माया पूर्वहारेण प्रविधाति, प्रविषय यमैव मणिपीठिका तथाऽऽगच्छति आनोके च जिनमवया प्रणामं करोति, कृत्वा यत्र माणयकचैत्यस्तमभो यत्र वच्यमयाः गोलवृत्ता समुद्गका तत्रागत्य समुद्गकान् गृह्मानि, गृहीरमा विघाटयति विघाटय च लोमहन्तक परामृश्य तेन प्रमाज्यं उदक्धारया अध्युक्त्य गोशीपं-चन्दनेनानुलिम्पति, तत. प्रधानैगंन्धमाल्यैरचंयति ध्य दहति, तदनन्तर भूयोऽपि वच्चमयेषु गोलवृत्त-समुद्गेषु प्रतिनिक्षिपति, प्रतिनिक्षिप्य तेषु पुष्पगन्ध-माल्यवस्त्राभरणानि चारोपयति, ततो लोमहस्तकेन माणवकचैत्यस्तम्भ प्रमार्ज्यं उदक्धार्याऽन्युक्षणचन्दन-चर्चापुष्पाद्यारीपण धूपदानं च करोति, कृत्वा च सिहासनप्रदेशमागत्य मणिपीठिकाया सिहासनस्य च लोमहस्तकेन प्रमाजनादिरूपा पूर्ववदर्चनिकां करोति, फ़ुत्वा यत्र मणिपीठिका यत्र च देवशयनीय तत्रोपा-गत्य मणिपीठिकाया देवशयनीयस्य च द्वारवदर्चनिका करोति, तत उक्तप्रकारेणैव क्षुल्लकेन्द्रध्यजे पूजा करोति, ततो यत्र चोप्पालको नाम प्रहरणकोशस्तत्र समागत्य लोमहस्तकेन परिघरत्नप्रमुखाणि प्रहरण-रत्नानि प्रमार्जयति प्रमार्ज्यं उदक्धार्याऽम्युक्षण चन्दनचर्नाम् पुष्पाद्यारोपण धूपदान च करोति ।

अलय: महै तो जास्या जास्या वंदन वीर

यको उत्तर नंदा पुष्करणोआदिक उत्तर द्वारात। तिवार पर्छ द्वितीय वार नीकलतो छतो पूर्व द्वारादिक पूर्व नदा-पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका नी वक्तव्यता तिकाहीज वक्तव्यता सुधर्मा सभा ने विषे, पिण ऊणी अधिकी न कहिवी। तिवार पर्छ पूर्व नदा पुष्करणी नी अर्चनिका करीने उपपात सभा ने विषे पूर्व द्वार करिके प्रवेश करे। प्रवेश करीने मणिपीठिका अने देव-सेज्या नी तदनतर वहु मध्य देश भागे पूर्ववत अर्चनिका करे। तिवार पर्छ दक्षिण द्वारे आवी ने तेहनी अर्चनिका करे। तिवार पर्छ कहै छै—

अठा थी आगे इहां पिण सिद्धायतनवत दक्षिण द्वारादिक पूर्व नदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चेनिका कहिवी। तिवार पछ पूर्व नदा पुष्करणी थकी नीकली ने द्रह ने विषे आवी ने पूर्ववत तोरणादिक नी अर्चेनिका करें, करीने पूर्व द्वारे करि अभिषेक सभा ने विषे प्रवेश करें। प्रवेश करीने मणिपीठिका अने सिहासन नी वली अभिषेक भाड नी अने वहु मध्य देश भाग नी पूर्ववत अर्चेनिका अनुक्रम करिक करें। तिवार पछ इहा पिण सिद्धायतनवत दक्षिण द्वारादिक पूर्व नदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चेनिका कहिवी। तिवार पछ पूर्व नदा पुष्करणी यकी पूर्व द्वार करीने अलकारिक सभा प्रति प्रवेश करीने मणिपीठिका अने सिहासन नी वली अलंकारिक भाड नी अने वहु मध्य देश भाग नी अनुक्रम करिक पूर्ववत् अर्चेनिका करें। तिवार पछ इहा पिण अनुक्रम करी सिद्धायतनवत दक्षिण द्वारादिक पूर्व नदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चेनिका कहिवी।

तिवार पछ पूर्व नदा पुष्करणी थकी पूर्व द्वार करी व्यवसाय सभा प्रति प्रवेश करें। प्रवेश करीने पुस्तक रत्न प्रते लोमहस्त करिक पूजीने उदक धारा करिक सीची ने चदने करी चर्ची ने वर गध माल्य करी अर्ची ने पुष्पादि-आरोपण अने धूप-दान करें। तदनतर मणिपीठिका नी अने सिहासन नी अने बहु मध्य देश भाग नी अनुक्रम करिक अर्चनिका करें। तदनतर तिहा पिण सिद्धाय-तनवत दक्षिण द्वारादिक पूर्व नंदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिवी।

तिवार पछी पूर्व नदा पुष्करणी थकी विल्पीठ विषे आवी नै बहु मध्य देश-भागवत अर्चेनिका करैं, करीने आभियोगिक देवता प्रति वोलावी नै कहै— खिप्पामेव इत्यादिक सुगम । जिहा लगे आभियोगिक देवता शक सुरेद्र कह्यो तिम सुधर्मावतसक विमान कै विषे सर्व स्थानक पूजी नै आज्ञा पाछी सूपै । णवर इहा ऋषाटकादिक शब्द नो वृत्तिकार जूओ-जूओ अर्थ कियो छै।

तिवार पर्छ शक्र विल-पीठे विल-विसर्जन करै, पूजता जे वाना ऊगरचा, ते विल-पीठ ने विषे स्थापे । तिवार पर्छ ईशाण कूणे नदा पुष्करणी प्रति प्रदक्षिणा देइ पूर्व तोरणे करी नदा पोखरणी मे पैसी हाथ पग पखाली नदा पुष्करणी थी नीकली सामानिकादि परिवार सहित सर्व ऋद्धि करिक यावत दुर्डुभि ना निर्धोप नाद शब्दे करी सुधर्मावतसक विमान ने मध्योमध्य थइ सुधर्मा सभा तिहा आवी ते सभा ने पूर्व हारे करी प्रवेश करैं । मणिपीठिका ने ऊपर सिहासन ने विषे पूर्व साम्हो मुख करी वेसे । तिवार पर्छ पूर्व कह्यो तिण प्रकार करि सिहासन ने विविस पूर्वीद दिशे सामानिकादिक वेसे ।

'ए वृत्ति थी वारता लिखी तिणमे सुधर्मा सभा नै तीन दिशे द्वार मुख मडपादिक पूज्या कह्या अने घणी परता मे सुधर्मा सभा ने त्रिहु दिशे द्वार मुख मडपादिक पूजवा नो पाठ नथी कह्यो। ते ए वाचना भेद दीसे छैं। विल सुधर्मा सभा थी उपपात सभा ने विषे आवी मणिपीठिका, देवसेज्या, वहु मध्य देश भाग नी पूजा वृत्ति मे तो कही अने घणी परता मे ए पाठ दीसतो नथी। ए पिण ततः सभाया सुधमीया बहुमध्यदेशभागेऽचंिनको पूर्ववत् करोति, कृत्वा सुधमीया सभाया दक्षिणद्वारे समागत्य तस्य अचंिनका पूर्ववत् कुरुते, ततो दक्षिणद्वारे समागत्य तस्य अचंिनका पूर्ववत् कुरुते, ततो दक्षिणद्वारेण विनिगंच्छिति, इत ऊठवं यथंव सिद्धायतना- क्लिष्कामतो दक्षिणद्वारादिका दक्षिणनन्दापुष्करिणी- पर्यवसाना पुनरिप प्रविशत. उत्तरनन्दापुष्करिण्या- दिका उत्तरद्वारान्ता ततो द्वितीयद्वारान्निष्कामत पूर्वद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका- वक्तव्यता सैव सुधमीयां सभायामप्यन्यूनातिरिक्ता वक्तव्या, तत. पूर्वनन्दापुष्करिण्या अर्चनिका कृत्वा उपपातसभां पूर्वद्वारेण प्रविशति, प्रविशय च मणि- पीठिकाया देवशयनीयस्य तदनन्तर बहुमध्यदेशभागे प्राग्वदर्चनिका विद्याति, ततो दक्षिणद्वारे समागत्य तस्यार्चनिका कृरुते।

अत ऊर्ध्वमत्रापि सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्किरणीपर्यवसानाऽचंनिका वक्तव्या, तत पूर्वनन्दापुष्किरणीतोऽपक्रम्य ह्रदे समागत्य पूर्ववत् तोरणाचंनिका करोति, कृत्वा पूर्वद्वारेणाभिषेकसभा प्रविक्षति, प्रविष्य मणिपीठिकाया सिहासनस्या-भिषेकभाण्डस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्ववदर्चनिका करोति, ततोऽत्रापि सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारा-दिका पूर्वनन्दापुष्किरणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्या ततः पूर्वनन्दापुष्किरणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्या ततः पूर्वनन्दापुष्किरणीत पूर्वद्वारेणालङ्कारिकसभा प्रविक्षति, प्रविक्षय मणिपीठिकायाः सिहासनस्य अलकारभाण्डस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्व-वद्वंनिका करोति, तत्रापि क्रमेण सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्किरणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्या।

तत पूर्वनन्दापुष्करिणीत पूर्वद्वारेण व्यवसायसभा प्रविश्वति, प्रविश्य पुस्तकरत्न लोमहस्तकेन प्रमुख्य उदक्ष्वारया अभ्युक्ष्य चन्दनेन चर्चियत्वा वरगन्ध्व-माल्येरचंियत्वा पुष्पाद्यारोपण धूपदान च करोति, तदनन्तर मणिपीठिकाया सिहासनस्य वहुमध्यदेश-भागस्य च क्रमेण पूर्ववदचंनिका करोति, तदनन्तर-मत्रापि सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दा-पुष्करिणीपर्यवसाना अचंनिका वक्तव्या, तत पूर्वनन्दा-पुष्करिणीपर्यवसाना अचंनिका वक्तव्या, तत पूर्वनन्दा-पुष्करिणीपर्यवसाना अचंनिका वक्तव्या, तत पूर्वनन्दा-पुष्करिणीतो बलिपीठे समागत्य तस्य वहुमध्यदेश-भागवत् अचंनिका करोति, कृत्वा च आभियोगिक-देवान् शब्दापयति, शब्दापयित्वा एवमवादीत् 'खिप्पामेव' इत्यादि सुगमं यावत् 'तमाणित्य पच्चिप्पति'।

तत शकेन्द्र बलिपीठे विलिविसर्जन करोति, कृत्वा चोत्तरपूर्वा नन्दापुष्करिणीमनुप्रदक्षिणीकुर्वन् पूर्वतीरणे -नानुप्रविशति, अनुप्रविश्य च हस्ती पादी प्रकालयति वार्चना भेद दीसे छै। अने वृत्तिकार सुधर्मा मभा नै त्रिहुं दिशे द्वार मुख भटणा-दिक नी पूजा कही अने उपपात सभा नै विषे पिण मणिपीठिका, देव सेज्या ने वहु मध्य देश भाग नी पूजा इत्यादिक वारता कही ते किणही वाचना मे देखी दीसे छै। तिण अनुसारे कही जणाय छै। ते वात मिलती मभवै। वली शके पूजा करी विलिपीठिका ने विषे विल विसर्जन कियो, घणी परता मे तो एहवु कह्यु अने वृत्तिकार आभियोगिक देवता सुधर्मावतसक विमान नी पूजा करी तठा पर्छ विल पीठिका ने विषे विल विसर्जन कियो कह्यो, ए पिण वाचना भेद हुवै तो ते पिण केवली जाणे। ' [ज० स०]

३०१. \*एहवो शक्र तणो परिवार, तिणरा पुन्य तणो नहि पार। स्थित दोय सागर नी हुत, विल गोयम प्रश्न करत।।

३०२. प्रभु । शक्र सुरिद्र सुरराय, केहवो महाऋद्विवान कहाय। जाव केहवो महा ईश्वर सुखवत ? हिवै वीर कहै सुण सत।। ३०३. शक्र सुरिद्र महाऋद्विवान, जाव महाईस्वर सुविधान। तिणरै वतीस लाख विमाण, सहस चउरासी सामानिक जान।। ३०४ तावत्तीसग तेतीस, आठ अग्रमहिषी जगीस। जाव अन्य वहु सुर सुरी जेह, तसु अधिपतिपणे विचरेह।।

३०५. एहवो शक्र महाऋद्विवान, जाव महाईस्वरवत जान। मेवं भते । सेव भत । प्रभु तहत्ति वचन तुम तत।।

३०६. शतक दशमा नो सोय, ओ तो छट्टो उद्देशो जोय। अर्थ यकी आख्यात, वहु अन्तर ढाल साख्यात।। ३०७ ढाल वेसी चउवीसमी ताह्यो, भिक्षु भारीमाल ऋपिरायो। सुख सपति तास पमायो, हद 'जय-जश' हरप सवायो।।

दशमगते पष्ठोद्देशकार्थः ॥१०।६॥

### दूहा

३०८ पष्टमुदेशे सुघर्मा सभा कही सुखकार।
ते आश्रय तिण कारणे, हिव आश्रय अघिकार।।
३०६ अन्तरद्वीपा मेरु थी, उत्तर दिशि वृत्ति माय।
सिखरी गिरि दाढा लवण-दिव अतर किहवाय।।
३१० कह्यो घर्मसी इहिवधे, लवणोदिव जल मांय।
ग्रंतर छै तिण कारणे, ग्रंतरद्वीप कहाय।।
३११. प्रभु । उत्तर ना मनुष्य नो, एकोरुक अभिघान।
तास द्वीप पिण एगुरुक, किहा कह्यो भगवान?
३१२ इम जिम जीवाभिगम मे, तिमज सर्व सुविशेप।
जाव शुद्धदत द्वीप लग, ए अठवीस उद्देश।।

प्रक्षारंय नन्दापुरकरिण्या. प्रत्यवतीयं मामानिकादि-परिवारमहितः सर्वेद्धंचा यावद् दुन्दुमिनिषीपनादित-रवेण सूर्यामविमाने मध्यमध्येन समागच्छन् पत्र सुधर्मा समा तत्रागत्य तां पूर्वेद्वारेण प्रविगति, प्रविषय मणिपीठिकाया उपरि सिहामने पूर्वाभिमुसो निपीदति।

[१४०] तत. (पृ० १०२ प० ३) प्रागुपर्यागतिमहा-सनक्षेण १ मामानिकादय उपविमन्ति ।

(वृ० प० २६४-२६६)

३०१. · · · · ण भंते ! · · · केवइयं कालं ठिई पण्यत्ता ? गोयमा ! · · · · · · ठिई पण्यत्ता ।

(राय० मू० ६६४)

३०२,३०३. मक्के णं भंते ! देविदे देवराया केमहिद्दिए जाव केमहामोत्ते ? गोयमा ! महिद्दिए जाव गहासोउते । से णंतत्य बत्तीमाए विमाणावामगय- सहस्साणं जाव

३०४. तायत्तीसाए तायत्तीगगाणं अट्टण्ह अगमहिमीण जाव अन्तेति च बहुणं जाव देवाण देवीण य आहेवच्चं जाव कारेमाणे पातेमाणे ति ।

(बु० प० ५०७)

२०५ एमहिट्डिए जाव एमहासोक्छे सक्के देविदे देवराया। सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति

(स० १०।१००,१०१)

३०६. दशमशते पष्ठोद्देशक. (वृ० प० ५०७)

३०८,३०६. पष्ठोद्देशके सुष्ठम्मंसभोक्ता, सा चाश्रय इत्याश्रयाधिकारादाश्रयविशेषानन्तरद्वीपाभिधानान् मेरोक्तरदिग्वत्तिशिखरिपवंतदंष्ट्रागतान् सवण-समुद्रान्तवंत्तिन. । (वृ० प० ५०७)

३११. किह ण भंते । उत्तरित्लाणं एगू ह्यमणुस्साणं एगू ह्यमणुस्साणं एगू ह्यमणुस्साणं

३१२. एव जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव सुद्धदंत-दीवो त्ति एए अट्टावीस उद्देसगा भाणियव्वा ।

(घ० १०।१०२)

<sup>\*</sup>लय: सुण चरिताली थारा लक्षण

३१३. दक्षिण दिशि ना दाखिया, पूरव ग्रतरद्वीप । तिण अनुसारे जाणवा, सेव भत । समीप।। ३१४. दशमा गतक नणां कह्या, च्यार तीस उद्देश। दशमो शतक कह्यो हिवै, एकादशम कहेस।।

दशमशते सप्तमोद्देशकादारम्य चतुरित्रशत्तमोद्देशकार्थ ।।१०।७-३४।।

#### गीतक छंद

 इह रीत गुरु जन सीख अरु प्रभु पार्श्वनाथ प्रसादमय, सुविस्तृत द्वय पख नो सामर्थ्य पा थइ नै अभय।
 शतक दशम विचाररूपज भूघराग्र चढ्यो सही। शकुनि-शिशु निभ तुच्छ ज्ञानज तनु छतो पिण हू वही।।

- ३१३. पूर्वोक्तवाक्षिणात्यान्तं रद्वीप-वंक्तव्यताऽनु-सारेणांवग-न्तव्यः । (वृ० प० ५०८) ३१४. दशमशते चतुस्त्रिशत्तम उद्देशक. समाप्त. (वृ० प० ५०८)
- १,२. इति गुरुजनिशक्षापार्श्वनाथप्रसादप्रसृततरपतत्रद्वन्द्वसामर्थ्यमाप्य ।
  दशमशतिवचारक्षमाधराष्र्येऽधिरूढः,
  शकुनिशिशुरिवाह तुच्छवोधागकोऽपि ॥
  (वृ० प० ५०८)

,	,	

# एकादश शतक

ढाल : २२५

### दूहा

- १ छेहडै दशमा शतक रै, अतरद्वीपा ख्यात। वनस्पति वहु छै तिहा, तेहथी हिव अवदात।। २. इहां वनस्पति प्रमुख जे, घणा पदार्थ कहिवाय। द्वादश उद्देशा तसु, एकादशमा माय।। ३. उत्पल अर्थ प्रथम कह्यो, द्वितीय उत्पल-कद। पलास-केसु नो तृतीय, कुभी वणस्सइ मद।।
- ४. नाडी सदृश फल तसु, वनस्पति नाडीक। पद्म करणिका नै नलिण, तसु अधिकार सघीक।।
- ५ यद्यपि पद्मोत्पल निलण, नाम कोश एकार्थ। तो पिण रूढि यकी ेइहा, जुदा-जुदा तत्त्वार्थ।। ६. शिव नामा ते राजऋपि, दशम लोक अधिकार। एकादशमुद्देशके, कह्यो काल विस्तार।।
- ७. आलभिका नगरी विषे, अर्थ परूप्या स्वाम। ते उद्देशो वारमो, आलभिका तसु नाम।।
- प्रथम उद्देशक द्वार नी, सग्रह गाथा जेह। वाचनांतर' देखने, आगल लिखियै एह।।
- है. तिण काले नै तिण समय, नगर राजगृह नाम।
   यावत गोतम वीर नै, प्रश्न करै गुणधाम।।
- १०. \*हे प्रभु ! उत्पल पेख, एक पत्रे जीव स्यू एक । अथवा है जीव अनेक ? जिन कहै जीव इक लेख ।।
- \* लय । विना रा भाव सुण-सुण गूंजी

- १,२. अनन्तरशतस्यान्तेऽन्तरद्वीपा उन्तास्ते च वनस्पति-बहुला इति वनस्पतिविशेषप्रभृतिपदार्थस्वरूपप्रतिपाद-नायैकादश शत भवि । (वृ०प० ५०८)
- ३. उप्पल सालु पलासे कृभी
  'उप्पले' त्यादि उत्पलार्थं प्रथमोद्देशक 'सालु' ति
  शालूक—उत्पलकन्दस्तदर्थों द्वितीय 'पलासे' ति
  पलाशः—किंशुकस्तदर्थंस्तृतीयः 'कृभी' ति वनस्पतिविशेषस्तदर्थंश्चतुर्थं.।
  (वृ० प० ५११)
- ४. नालि य पडम कण्णी य निलण नाडीवद्यस्य फलानि स नाडीको—वनस्पतिविशेप एव तदर्थं पञ्चम.। (वृ०प० ५११)
- प्र यद्यपि चोत्पलपद्मनिलनाना नामकोशे एकार्यतोच्यते तथाऽपीह रूढेविशेपोऽवसेयः। (वृ०प० ५११)
- ६. सिव लोग काल 'सिव' ति शिवराजर्षिवक्तव्यतार्थो नवमः । 'लोग' ति लोकार्थो दशम., •••कालार्थं एकादश । (वृ०प० ५११)
- ७ आलभिय दस दो य एक्कारे ॥ आलभिकाया नगर्या यत्प्ररूपित तत्प्रतिपादक उद्देशको ज्यालभिक इत्युच्यते ततोऽसौ द्वादशः ।

(वृ० प० ५११)

- न तत्र प्रथमोद्देशकद्वारसग्रहगाया वाचनान्तरे दृष्टास्ता-श्चेमाः। (वृ०प० ५११)
- तेण कालेण तेणं समएण रायिगहे जाव पञ्जुवासमाणे एव वयासी—
- १०. उप्पले ण भते । एगपत्तए कि एगजीवे ? अणग∎ जीवे ? गोयमा ! एगजीवे

1 1 1 1: 1

- ११. ए किसलय नव अक्र, ते अवस्था थी ऊपर भूर। किसलय सूओ' तो छै अनतकाय, सूआ पछै एक पत्र थाय।।
- १२ एक पत्रपणा थी विशेष, एक जीव पिण नहिं छै अनेक। उत्पल शब्दे ताय, नीलोत्पलां कहाय।।
- १३ एक पत्र थकी उपरत, शेप पत्रादि विषे कहत।। तिणमे एक जीव नहिं हुत, तिहा जीव घणां उपजत।।

बा॰ — 'तेण पर' ते प्रथम पत्र थकी पछै 'जे अन्ने जीवा उववज्जंति' जे अनेरा घणा जीव ऊपजै, अनेक जीव नां आश्रयपणां थकी पत्रादि अवयव कहियै। ते एक जीव नहीं, एक जीव नै आश्रयी नहीं, किंतु अनेक जीव छैं। अथवा 'तेण इत्यादि' ते एक पत्र थी पछैं शेप पत्रादिक नै विषे जे अनेरा जीव ऊपजैं ते एक जीव नहीं, अनै एक नै विषे ऊपजैं पिण नहीं, किंतु अनेक जीव छैं, अनैक नै विषे ऊपजैं छैं। इहा ए मावार्य — एक पान थकी शेप पत्र आदि नै विषे अनेक जीव छैं तहने विषे अनेक जीव ऊपजैं छैं।

### उपपात द्वार (१)

- १४. हे भगवत । ते जीवा, किहा थकी ऊपजै अतीवा। स्यू नरक थकी उपजत, तिरि मनुष्य देव थी हुत?
- १५ जिन भाषे उत्पल माय, नरक थकी ऊपजै नांय। तिरि मनुष्य देव थी जाण, उत्पल मे ऊपजै आण।।
- १६. पद छठै पनवणा मांय, ऊपजवो तिम कहिवाय। जाव ईशान नां देव, उत्पल मे ऊपजै भेव।।

### परिमाण द्वार (२)

- १७. जीव तिके भगवंत ! एक समय किता उपजंत ? जिन कहै जघन्य एक दोय, तीन ऊपजें छै अवलोय ॥
- १८. उत्कृष्टा संख्याता हुत, तथा असंख्याता उपजत । ए परिमाण द्वार कह्यो बीजो, अपहरण द्वार हिव तीजो ॥

# अपहरण द्वार (३)

- १६. प्रभु ! समय-समय प्रति जेह, अपहरतां काढतां तेह । अपहरियं केतले काल ? इम गोयम प्रव्न विशाल ॥
- २०. जिन कहै असख्याता जत, ते समय-समय अपहरत । असख अव-उत्सिपिणी ताय, निज्नै अपहरिया निंह जाय ॥

# **उ**च्चत्व द्वार (४)

२१ तनु अवगाहना प्रभु <sup>1</sup>केती ? जघन्य आंगुल असंख भाग एती । उत्कृष्टी हुवै घणेरी, इक सहस्र योजन जामेरी ।।

१. उगता हुआ अंकुर

- ११. एकपत्रकं चेह किंशलयावस्थाया उपरि द्रष्टव्यम् । (वृ०प० ५११)
- १२. नो अणेगजीवे । 'उरपल' नीलोरपलादि । (वृ०प० ५११)
- १२. तेण पर जे अण्णे जीवा चववज्जंति ते ण नो एग-जीवा। अणेगजीवा (य० ११११) यदा तु द्वितीय।दि पत्र तेन समारब्ध भवति तदा नैक पत्रावस्या तस्येति वहवो जीवास्तत्रोत्पद्यन्त इति (वृ० प० ५१२)
- वाo—'तेण पर' ति तत'—प्रथमपत्रात् परत. 'जे अने जीवा जववज्जंति' त्ति येऽन्ये—प्रथमपत्रव्यतिरिक्ता जीवा जीवाश्रयत्वात् पत्रादयोऽत्रयवा उत्पद्यन्ते ते 'नैकजीवा.' नैकजीवाश्रया. किन्त्वनेकजीवाश्रया इति ।

सथवा 'तेणे' त्यादि, ततः एकपत्रात्परतः शेपपत्रा-दिष्वित्यर्थं. येऽन्ये जीवा उत्पद्यन्ते ते 'नैकजीवा' नैकका किन्त्वनेकजीवा अनेके इत्यर्थः। (वृ०प० ५१२)

- १४. ते ण भते । जीवा कतोहितो उववज्जित—िक नेर-इएहितो उववज्जित ? तिरिक्खजोणिएहितो उवव-ज्जित ? मणुस्सेहितो उववज्जिति ? देवेहितो उवव-ज्जित ?
- १५. गोयमा<sup>।</sup> नो नेरइएहितो उववज्जति, तिरिक्खजोणिए-हितो उववज्जति, मणुस्सेहितो उववज्जति, देवेहितो वि उववज्जति ।
- १६. एव उववाओ भाणियन्वो जहा वक्कतीए (प० ६।८) वणस्सङ्काङ्याण जाव ईसाणिति। (म० ११।२) जहा वक्कंतीए' ति प्रज्ञापनाया. पष्ठपदे। (वृ०प० ५१२)
- १७. ते ण भते ! जीवा एगसमए ण केवइया उववज्जिति? गोयमा । जहण्णेण एकको वा दो वा तिण्णि वा,
- १८ उक्कोसेणं सक्षेज्जा वा असक्षेज्जा वा उववज्जति । (श० ११।३)
- १६. ते ण भते ! जीवा समए-समए अवहीरमाणा-अवहीर-माणा केवतिकालेण अवहीरति ?
- २०. गीयमा । ते णं असंखेज्जा समए-समए 'अवहीरमाणा-अवहीरमाणा' असखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहीर्रात, नो चेव ण अवहिया सिया। (श० १११४)
- २१. तेसि ण भंते । जीवाण केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अगुलस्स असखेज्जइ- भाग, उनकोसेण सातिरंग जोयणसहस्स । (॥० ११।५)

#### सोरठा

२२. तथाविघ सुविचार, दिघ' गोतीर्थादिक विपे। उच्चपणे अवघार, साधिक योजन सहस्र जे।।

### वध द्वार (४)

२३. \*ज्ञानावरणी कर्म नां भदंत । वघगा कै अबधगा हुत ? जिन कहै अवधगा नांय, वघगे वा वघगा वा थाय।।

#### सोरठा

- २४ एक पत्र अवस्थाय, वंघग इक वचने कह्यो। द्वादिक पत्रे पाय, वहु वचने छै वघगा।
- २५ \*एव जाव श्रतराय सग, णवरं आयु कर्म अठ भग। इकसयोगिक भग च्यार, द्विकयोगिक चिहु घार॥

#### इकसयोगिक भागा च्यार

- २६ एक पत्र अवस्थाए न्हाल, आखखो वाघै तिण काल। वघए इक वचने कहियै, ए प्रथम भग इम लहियै।।
- २७ इक पत्र तणै अवस्थाय, आयु वध काल विण ताय। अवधए इक वचनेह, भग दूजो कह्यो छै एह।।
- २६ दोय आदि पत्र अवस्थाय, आउखा नै वध-काल ताय। बघगा वहु वचने कहाय, ए तीजो भागो इण न्याय।।
- २६ दोय आदि पत्र अवस्थाय, आयु वध-काल विण ताय। अवधगा वहु वचनेह, भग चज्यो कह्यो छै एह।।

#### द्विकसयोगिक भागा च्यार

३०. वधक इक वचनेह, अवधक इक वच तेह। वधक इक वच जेह, अवधगा वहु वचनेह।। ३१ वधगा वहु वच जेह, अवंधग इक वच एह। वधगा वहु वचनेह, अवंधगा वहु वच तेह।।

# वेद द्वार (३)

- ३२. हे भगवत । ते जीवा, ज्ञानावरणी कर्म ना अतीवा। वेदक ने वेदन्त, अथवा अवेदक हुत ?

  बा॰—वेदवो ते अनुक्रम उदै आया नै तथा उदीरणा करिकै उदय आण्या
- कर्म नो अनुभव-भोगविव् ।
  - ३३. जिन कहै अवेदका नाय, वेदक प्रथम पत्र अपेक्षाय। तथा वेदगा वहु वचनेह, दोय आदि पत्र आश्री एहु।।

- २२. 'साइरेगं जोयणसहस्सं' ति तथाविधसमुद्रगोतीर्थंकादा-विदमुच्चत्वमुत्पलस्यावसेयम् । (वृ०प० ५१२)
- २३. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वंद्यगा ? अवधगा ? गोयमा ! नो अवधगा, वद्यए वा, वद्यगा वा । (श० १११६)
- २४ एकपत्रावस्थाया वन्धक एकत्वात् द्वचादिपत्रावस्थाया च वन्धका बहुत्वादिति । (वृ०प० ५१२)
- २६. वधए वा,
- २७. अवधए वा,
- २८. वधगा वा,
- २६. अवधगा वा
- ३०. अहवा चंध्रप्य अवधर्य अहवा वधर्य अवधगा
- ३१. अहवा वंघगाय अवघएय अहवा वघगाय अवघगा य। (श०११।७)
- ३२ ते ण भंते । जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेदगा ? अवेदगा ?
- बा०—वेदन अनुक्रमोदितस्योदीरणोदीरितस्य वा कर्मणोऽनु-भव.। (वृ०प० ५१२)
- ३३. गोयमा ! नो अवेदगा, वेदए वा, वेदगा वा । अत्रापि एक पत्रतायामेकवचनान्तता अन्यत्र तु बहुवचनान्तता । (वृ० प० ५१२)

१. समुद्र

<sup>\*</sup>विना रा भाव सुण-सुण गूंजे

३४ एवं जाव कर्म अतराय, विल गोतम पूर्छ वाय। सातावेदगा ते प्रभू ! जीवा, के असातावेदगा कहीवा ? ३५ जिन कहै साता ने असात, वेदग वेदगा नो अवदात। आठ भागा पूर्ववत जाणी, साता असाता ना सुपिछाणी ॥

# वदय द्वार (७)

३६ हे भगवत ! ते जीवा, ज्ञानावरणी कर्म ना सदीवा। टदयवन के अणडदयवत<sup>7</sup> जिन कहै अणडदय न हुत ॥ वा०- उदय ते अनुक्रम उदय आया नी ईज। इण हेतु यकी वेदकपणां नी परूपणा कीधे छते पिण भेद करिके उदयपणां नो परूपवी। ३७ उदर्ह इक वच घुर पत्र एह, तथा उदडणो वहु वच जेह। दोय आदि पत्र अपेक्षाय, एव जाव कर्म अतराय।।

## उदीरणा द्वार (=)

३८. हे भगवत । ते जीवा, ज्ञानावरणी नां अतीवा। उदीरणावत कहाय, कै उदीरणावत छै नाय? ३६. जिन कहै अनुदीरक नाय, एतले ते उदीरक थाय। उदीरक इक वच घुर पत्र, वह वच उदीरगा वह पत्र ॥ ४०. एव जाव अतराय पेख, णवरं एतलो छै विशेख। वेटनी आयु विषे विख्यात, आठ भांगा पूर्ववत यात ॥ ४१. वेदनी कर्म साता असात, नेह अपेक्षाय अवदात। आयु विषे वलि कहिवाय, उदीरक अनुदीरक पेक्षाय।।

#### इकसजोगिया ४ भांगा

१. साता उदीरए

३. साताचदीरगा

२. असाता उदीरए

४. असाता उदीरगा

# हिवै द्विकसजोगिक ४ भागा

५. साता उदीरए अमाता उदीरए ७. माता उदीरगा अमाता उदीरए ६. साता उदीरए वसाता उदीरगा साता उदीरगा असाता उदीरगा

एतलै सर्व मिली ५ भांगा वेदनी कर्म ना हुआ।

# हिवै आउला आश्री कहै छै-

इनसनोगिया ४ भांगा

१. वाड उदीरए वा

३. वाड उदीरगा वा

२. बाउ बण्दीरए वा

४. थाउ अणुदीरगा वा

द्विकसंजीगिक ४ भागा

५ आंच चदीरए आंच अणूदीरए ७. आंच चदीरगा आंच अणुदीरए

६. आड उदीरए आड अणुदीरमा 🕒 ८. आड उदीरमा आउ अणुदीरमा

ए ४ भागा एक वचन, ए ४ भागा वह वचन, एव = ।

वा०-ए वारखा नो अनुदीरकपणो किम हुवै ? आउखा नै उदीरणा करिकै उदीरवी कदाचितपणा थकी।

लेश्या द्वार (६)

४२. उत्पल जीवा भदन्त । स्यूं किहये कृष्ण लेक्यावंत । अथवा नील तथा कापोत, तथा तेजु लेश्यावत होत?

३४ एवं जाव अंतराइयस्स । (२० ११।८) ते ण भते ! जीवा कि मायावेदगा ? असायावेदगा ३५. गीयमा ! सायावेदए वा असायावेदगा वा-अह (লo ११IE)

३६. तेण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्म कम्मस्स कि उदई ? अणुदई ? गोयमा <sup>!</sup> नो अणुदई ।

वा०-उदयण्वानुक्रमोदिनस्यैवेति वेदकत्वप्ररूपणेऽपि भेदेनोद-यित्वप्ररूपणिमति । (वृ० प० ५१२)

३७. उदई वा, उदइणो वा । एव जाव अतराइयस्म । (গাত ११।१০)

३५. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्म कम्मस्स कि उदीरगा? अणुदीरगा?

३६. गोयमा ! नो अणुदीरगा, उदीरए वा, उदीरगा वा।

४०. एव जाव अतराइयस्स, नवर-वैदणिज्जाउएसु अट्ट भगा । (श० ११।११)

४१. वेदनीये — सातामातापेक्षया आयुपि पुनहदीरकत्वानु-दीरकत्वापेक्षयाच्टी भगा.। (बु०प० ५१२)

वा०-अनुदीरकत्व चायुप उदीरणायाः कादाचित त्वा-(वु० ५० ५१२)

४२ ते ण भते ! जीवा कि कण्हलेसा ? नीललेसा ? काउलेसा ? तेउलेसा ?

- ४३. जिन कहै इकयोगिक अठ, कृष्ण लेस्मे इक वच प्रगट ॥ तथा नील तथा काउ घार, तथा तेजु ए इक वच च्यार ॥
- ४४. तथा कृष्ण लेस्सा सुविशेषा, अथवा जाव तेजु लेस्सा। ए वहु वच भग चिहु दीस, हिवै द्विकयोगिक चउवीस।।
- ४५ त्रिकयोगिक भग बत्तीस, चउक्कयोगिक सोल कहीस। इम असी भागा अवलोय, तिके कहिवा विचारी जोय।।

इकसजोगिया भागा = ए च्यार भागा एक वचन						
१	कु	१				
2	नी	१				
æ	का	१				
8	ते	१				
	ए च्यार भागा बहुवचन					
¥	ন্তু.	цv				
Ę	नी	US/				
ی	का.	bt.				
5	ते.	ll)				
	द्विकसजीगिया भागा २४					
	कृ	नी				
१	१	१				
7	१	ą				
Ą	n	१				
8	3	3				

	कु	का.
¥	2	<b>१</b>
ų	१	₹
ø	77	\$
4	3	₹
	कृ	ते.
w	१	१
१०	१	ą
११	ux	१
१२	17	ą
	नी	का.
१३	१	१
१४	8	ą
१प्र	æ	१
१६	ą	ą

- ४३ गोयमा ! कण्हलेसे वा नीललेसे वा काउलेसे वा तेउ-लेसे वा।
- एककयोगे एकवचनेन चत्वार.। (वृ० प० ५१२) ४४. कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा
- ४४. कण्हलस्सा वा नाललस्सा वा काउलस्सा वा तेउलेस्सा वा अहवा कण्हलेसे य नीललेसे य। एव एए दुयासंजोगतियासजोगच उक्कसजोगेण असीति भगा भवंति। (श० ११।१२)
- ४५. बहुवचनेनापि चत्वार एव, द्विकयोगे तु यथायोगमेक-वचनबहुवचनाभ्या चतुर्भंगी, चतुर्णा च पदानां पड् द्विकयोगास्ते च चतुर्गुणाश्चतुर्विशति त्रिकयोगे तु त्रयाणा पदानामप्टो भगा. चतुर्णां च पदाना चत्वारस्त्रिकसयोगास्ते चाष्टाभिर्गुणिता द्वात्रिशत्, चतुष्कसयोगे तु पोडश भगा, सर्वमीलने चाशीतिरिति (वृ०प० ५१२)

where the same of		
	नीं.	ते.
१७	१	१
१८	१	Ą
38	₹	१
२०	3	\$
	<b>年</b> [.	ते.
२१	<b>१</b>	8
२२	8	34
२३	3	8
28	₹	n

त्रिकसजोगिया भागा ३२ कृ. मी. का. १ १ १ १ २ १ १ ३ ३ १ ३ १ ४ १ ३ ३	-			
\$     \$     \$     \$       \$ <td>त्रिक</td> <td>सजोगि</td> <td>या भाग</td> <td>ा ३२</td>	त्रिक	सजोगि	या भाग	ा ३२
2     8     3       3     8     3     8       4     8     3     8       8     8     3     3		कु.	नी.	का.
A     S     B     B       B     S     B     B       B     S     B     S	१	१	१	१
8 8 3 3	२	8	१	n2·
	ą	१	ą	१
प्र ३ १ १	٧	8	Ą	ą
	ሂ	¥	१	१
ह्म वि १ व	Ę	₹	१	134
७ ३ ३ १	b	₹	34	2
म व व व	5	34	ą	ą

	कु	नी	ते.
3	2	१	१
१०	१	१	ą
११	8	R	१
१२	8	3	R
१३	ą	8	१
१४	ą	१	ą
१४	व	ħ	१
१६	734	æ	Ŋ
	কু. *	का ते	Ť.
१७	१	१	8
१५	१	₹	ą
38	8	PP*	१
२०	8	nr	3
२१	3	8	8
२२	₹	8	3
२३	ą	ą	1
58	3	а	3

	नी.	का.	ते.	
२५	t	१	१	
<sup>-</sup> २६	१	8	3	
२७	१	ą	१	
२८	१	ą	ş	
२६	₹	1	१	
Ŋ.o	₹	१	3	
३१	₹	ą	१	
३२	¥	m	3	
एव त्रिक सजीगिया ३२ भग्गा कह्या				

		56		
ı			या १३ छै—	
,	कृ.	नी	का.	ते.
8	1	1	8	8
२	1	8	1	734
25	1	1	3	1
¥	8	1	₹	3
. પ્ર	1	Ę	1	1
Ę	१	, ₹	. ?	7
હ	१	ny.	3	1
-	१	ą	३	3
3	¥	₹'	1	1
7₹0	3	₹	१	₹
११	3	१	a	1
<b>१</b> २	₹	8	34	n
<b>8</b> 3	á	₹	१	१
१४	₹	Ą	١	æ
* <b>१</b> ५	R	<b>3</b> ,	₹	8
१६	ą	3	37	ą
	वउनकस सर्वे द			भागा ।

दृष्टि द्वार (१०)

४६. उत्पल जीव सुजीय, प्रभु । स्यू समदृष्टि होय। के मिथ्यादृष्टि कहिवाय, के समामिथ्यादृष्ट थाय?

४७ जिन कहै समदृष्टि न पाय, समामिथ्यादृष्टि पिण नाय। इक वच मिथ्यादृष्टि उदिष्ट, तथा वहु वच मिथ्यादृष्ट।। नाणी-अनाणी द्वार (११)

नाणी-अनाणी द्वार (११) ४८ ते प्रभु । जीव पिछानी, स्यूजानी कै कहिये अज्ञानी ? जिन कहै ज्ञानी नहि होय, अज्ञानी इक बहु वच जोय।। ४६ ते ण भते । जीवा कि सम्मिह्डि ? मिच्छादिही ? सम्मामिच्छादिही ?

४७ गोयमा <sup>।</sup> नो सम्मिद्दिही, नो सम्मामिच्छाविद्दी, मिच्छाविद्दी वा मिच्छाविद्दिणो वा । (श० ११।१३)

४८. ते ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ? गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी वा, अण्णाणिणी वा। (श० ११।१४) जोग द्वार (१२)

४६. स्यूप्रभु । ते मन जोगी, के वच जोगी काय प्रयोगी? जिन कहै मन वच नाय, काय जोग इक वहु वच पाय।।

उपयोग द्वार (१३)

प्र प्रभु ! स्यू ते सागारोवउत्ता, कै अणागारोवउत्ता उक्ता ? जिन कहै सागारोवउत्ते, इक वचन करीने प्रयुक्ते ॥

५१ अथवा अणागारोवउत्ते, ए पिण एक वचन करि उक्ते । इम अठ भंगा अवघार, इक द्विक योगिक च्यार-च्यार'॥ वर्णाद द्वार (१४)

५२. प्रभु ! उत्पल शरीर में तास, केता वर्ण गध रस फास ? उत्तर—वर्ण पच गघ दोय, रस पच फर्श अठ होय।।

५३. ते पिण आत्म स्वरूपे जाण, अवर्ण अगघ पिछाण। विल फर्श अने रस नाय, जीव ते अरूपी कहिवाय।।

उस्सास द्वार (१५)

१४. प्रभु । उस्सासगा ते जीवा, कै निस्सासगाज कहीवा। कै उस्सास-निस्सास नाय ? ए छै अपर्याप्त अवस्थाय।।

५५. जिन उत्तर दिये सुचग, इकसयोगिक पट भग।
एक वचन उस्सासए तास, अथवा एक वचन ए निस्सास।।
५६. अथवा नो उस्सास-निस्सास, ए पिण एक वचन सुविमास।
एव वहु वचने त्रिहुं जाण, इकयोगिक पट ए पिछाण।।
५७. द्विकयोगिक भांगा वार, त्रिकयोगिक आठ विचार।
एव सर्व भांगा छुव्योस, तिके यत्र थकी सुजगीस।।

५० तेण मते । जीवा कि सागारोवउत्ता ? अणागारोव-उत्ता ?

गोयमा ! सागारोवउत्ते वा।

५१ अणागारोवउत्ते वा-अट्ट भगा। (श० ११।१६)

५२. तेसि ण भते । जीवाणं सरीरगा कतिवण्णा, कितगधा, कितरसा, कितप्तासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचवण्णा दुगधा पचरसा अट्ठकासा पण्णत्ता।

५३. ते पुण अप्पणा अवण्णा, अगद्या 'अरसा, अफासा''
पण्णत्ता ! (श० ११।१७)
'अप्पण' त्ति स्वरूपेण 'अवर्णा' वर्णादिवींजता. असूत्तंत्वात्तेपामिति । (वृ० प० ५१२)

५४. ते ण भते । जीवा कि उस्सासगा ? निस्सासगा ? नो उस्सासनिस्सासगा ? 'नो उस्सासनिस्सामए' ति अपर्याप्तावस्थायाम् । (वृ० प० ५१२)

४४. गोयमा ! उस्मासए वा, निस्सासए वा

४६. नो उस्सासनिस्सासए वा, उस्सासगा वा, निस्सासगा वा, नो उस्सासनिस्सासगा वा,

५७. अहवा उस्मासए य, निस्सासए य " " एते छव्वीसं भगा भवंति । (श० ११।१८) हिकयोगे तु यथायोगमेकत्वबहुत्वाभ्या तिस्रश्चतुर्भीगका इति द्वादग, त्रिकयोगे त्वष्टाविति अत एवाह—"एए छव्वीस भंगा भवंति' ति । (वृ० प० ५१२)

१. सागारोवडते १

३. सागारोवउत्ता ३

२ अणागारोवडते २

४ अणागारोवउत्ता ३

द्विकमंजीिक ४ भागा-

प्रमागारोव उत्ते १ अणागारोव उत्ते १ ७ सागारोव उत्ता ३, अणागारोव उत्ते १

६ सागारोवडते १ अणागारोवडता ३ ८. मागारोवडता ३, अणागारोवडता ३ एव सर्व ८ भागा ।

४६. ते ण भते ! जीवा कि मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ? गीयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी वा, कायजोगिणो वा। (श० ११।१४)

१ इकमजोगिक ४ भांगा--

जयाचार्य ने पहले अफासा और उसके बाद अर्म।
 की जोड़ की है।

	सयोगि गगा ६		1		,
उ	नि	नो		११	
१	१	१		१२	
ą	ą	æ		१३	
	कसजोि गगा १			१४	
	ख	नो			f
૭	8	1 8		१५	
5	8	₹		१६	
3	3	8		१७	
१०	ą	३		१८	
			_		

_		
	उ	नो.
११	8	१
१२	१	¥
१३	ą	१
१४	₹	भ
	नि	नो
१५	१	१
१६	१	३
१७	m <sup>*</sup>	१
१८	ą	gy.

त्रिक	त्रिकसजोगिक भागा ८						
	च नि						
38	१	१	१				
२०	१	१	₹				
२१	१	77	१				
२२	१	3	nv.				
२३	ą	१	8				
२४	3	8	Ŋ				
२५	37	lls.	१				
२६	3	34	3,				
	एव सर्व २६						

# बाहारक द्वार (१६)

- प्त. आहारक अनाहारक प्रभु । तेह ? उत्तर आहारक इक वच लेह । तथा अनाहारक वच एक, एहना भागा आठ उवेख ॥ विरती द्वार (१७)
- ५६. प्रभु । विरती अविरती ते जीवा, अथवा विरताविरती कहीवा ? उत्तर—विरती विरताविरती नांय, अविरती इक वहु वच ताय ॥ किया द्वार (१५)
- ६०. प्रभु । सिक्रिया अक्रिया तेह ? उत्तर—िक्रिया रिहत न कहेह । क्रिया सिहत वच एक, तथा सिक्रिया वहु वच पेल ॥ वध द्वार (१६)
- ६१. प्रभु ! सप्त वधगा ते जीवा, के अष्ट वधगा अतीवा ? उत्तर—सप्त तथा अठ एक, इहा आठ भागा सुविशेख ।। संज्ञा द्वार (२०)
- ६२. आहारसज्ञोपयुक्त ने जीवा, भय मिथुन परिग्रह कहीवा ? जिन कहै असी भग होय, पूर्व लेश्या कही तिम जोय।।
  - कपाय द्वार (२१)
- ६३. प्रभु । उत्पल क्रोध-कवाई, जाव लोभ-कवाई कहाई? जिन कहै पूर्ववत जाण, लेक्या ज्यू असी भगा पिछाण।।

- प्र ते ण भते । जीवा कि आहारगा ? अणाहारगा ? गोयमा । आहारए वा अणाहारए वा —अट्ट भगा। (श० ११।१६)
- ५६ ते ण भते । जीवा कि विरया ? अविरया ? गोयमा ! नो विरया, नो विरयाविरया, अविरए वा अविरया वा । (श० ११।२०)
- ६०. ते ण भते । जीवा कि सिकरिया ? अकिरिया ? गोयमा ! नो अकिरिया, सिकरिए वा सिकरिया वा । (श० ११।२१)
- ६१ ते णं भते िजीवा कि सत्तविहयधगा ? गोयमा । सत्तविहवधए वा, अटुविहवधए वा -- अटु भगा। (श० ११।२२)
- ६२. ते ण भते । जीवा कि आहारसण्णोवउत्ता ? भय-सण्णोवउत्ता ? मेहुणसण्णोवउत्ता ? परिग्गहमण्णो-वउत्ता ?
  - गोयमा । आहारसण्णोवचत्ता---असीति भगा । (श० ११।२३)
- ६३. ते ण भते । जीवा कि कोहरुसाई ? माणकम ई? मायाकसाई? लोभकसाई? अमीति भगा। (श० ११।२४)
  - ·· लेक्याद्वारवद्व्याख्येया. (वृ० प० ५१३)

१. विग्रहगतिका.।

वेद द्वार (२२)

६४. हे प्रभु ! उत्पल जीवा, इत्थी पुरुप नपुसक कहीवा ? जिन कहै इत्थी पुरुष न होय, नपुसक इक बहु वच जोय।।

वेद वध द्वार (२३)

- ६५ प्रभु ! स्त्री-वेद वघग जीवा, पु नपुस वघगा कहीता ? जिन कहै भागा छन्त्रीस, सास-उस्सास जेम जगीस ।। सन्ती असन्ती द्वार (२४)
- ६६ प्रभु । सन्नी असन्नी ते जीवा ? जिन कहै सन्नी न कहीवा। एक वचन असन्नी कहिवाय, बहु वच असन्नी पिण थाय।। इन्द्रिय द्वार (२५)
- ६७. प्रभ । उत्पल जीव स्यू किह्या, सइन्द्रिया के अणिदिया ? जिन कहै अणिदिया न तेह, सइदिय इक वहु वचनेह ॥ अनुवध द्वार (२६)
- ६८. प्रभु । उत्पल जीव निहाल, रहे काल थी केतलो काल ? उत्तर—जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त थात, उत्कृष्ट काल असख्यात।। सबेध द्वार (२७)
- ६९ प्रभु । उत्पल जीव मरीने, पृथ्वी जीवपणे उपजी ने । विल उत्पलपणे उपजंत, कितो काल गतागत हुत ?
- ७०. जिन कहै भव आश्री सोय, जघन्य थकी करै भव दोय।
  एक पृथ्वी उत्पल भव वीजो, उत्कृष्ट असल भव लीजो।।
  ७१. हिवै काल थकी अवलोय, जघन्य अन्तर्भुहूर्त दोय।
  उत्कृष्ट काल असल्यात, इतो काल गतागत थात।।

बा०—भव आश्रयी जघन्य वे भव, उत्पंत जीव मरी प्रथम भव पृथ्वीपणे, द्वितीय भव उत्पलपणे । तिवारै पछै मनुष्यादि गति प्रति गमन करै ।

काल आश्रयी जघन्य वे अन्तर्मुहूर्त्तं, ते किम ? उत्पल को जीव मरी एक पृथ्वीपणे अन्तर्मुहूर्त्तं वली उत्पलपणे वीजो अन्तर्मुहूर्त्तं, इम काल आश्रयी जघन्य थी दोय अन्तर्मुहूर्त्तं ।

- ७२. प्रभु । उत्पल जीव मरीने, अपकायपणे उपजी नै। एव चेव पृथ्वीवत भणवा, जाव वाउकाय लग गुणवा।।
- ७३. प्रमु ! उत्पल जीव मरीने, वनस्पतिपणे उपजी ने। विल उत्पलपणे उपजत, कितो काल गतागत हुत ?
- ७४ जिन कहै भव आश्री सोय, जघन्य थकी करै भव दीय। एवं वणस्सइ उत्पल बीजो, उत्कृष्ट अनत भव लीजो।। ७५. हिवै काल थकी अवलोय, जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त दोय। उत्कृष्टो अनतो काल, इतो काल गतागति न्हाल।।

- ६४. ते ण भते । जीवा कि इत्यिवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुसगवेदगा ? गोयमा । नो इत्यिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुमग-वेदए वा नपुसगवेदगा वा । (श० ११।२४)
- ६५. तेण भते! जीवा कि इत्थिवेदवद्यगा? पुरिसवेद-वद्यगा? नपुसगवेदवद्यगा? गोयमा! : .... छन्वीस भगा। (श० ११।२६)
- ६६. ते ण भते <sup>1</sup> जीवा कि सण्णी ? असण्णी ? गोयमा <sup>1</sup> नो सण्णी, असण्णी वा असण्णिणो वा । (श॰ ११।२७)
- ६७. ते ण भते । जीवा कि सइदिया ? अणिदिया ? गोयमां ! णो अणिदिया, सइदिए वा सइदिया वा । (श० ११।२=)
- ६ प्र. से ण भते । उप्पलजीवेत्ति कालओ केविच्चर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण असखेज्ज काल। (श० ११।२६)
- ६१. से ण भते ! उप्पलजीवे 'पुढिवजीवे पुणरिव उप्पल-जीवित्ति केवितय काल सेवेज्जा ? केवितय काल गतिरागित करेज्जा ?
- ७०. गीयमा । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण असखेज्जाइ भवग्गहणाइ।
- ७१ कालादेक्षेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण असखेज्ज काल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागींत करेज्जा। (श० ११।३०)
- वा०—'भवादेसेण' ति भवप्रकारेण भवमाश्रित्येत्यर्थं. 'जहन्नेण दो भवग्गहणाइ ति एक पृथिवीकायित्वे ततो द्वितीय- मृत्पलत्वे तत पर मनुष्यादिगति गच्छेदिति । काला- देसेण जहन्नेण दो अतोमुहुत्त' ति पृथ्वीत्वेनान्तर्मूहूर्त्तं पुनरुत्पलत्वेनान्तर्मूहूर्त्तं मृत्येव कालादेशेन जघन्यतो द्वे अन्तर्मुहुर्त्ते इति । (वृ० प० ५१३)
- ७२. सेण भते । उप्पलजीवे, आउजीवे : "एव चेव।
  एव जहा पुढविजीवे भणिए तहा जाव वाउजीवे
  भाणियन्वे। (श० ११।३१)
- ७३. से ण भते । उप्पलजीवे सेसवणस्सइजीवे से पुणरिव उप्पलजीवेत्ति केवितय काल सेवेज्जा ? केवितय काल गितरागित करेज्जा ?
- ७४. गोयमा । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ उक्कोसेण अणताइ भवग्गहणाइ,
- ७५. कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहत्ता, उक्कोसेण अणत काल तरुकाल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। (श० ११।३२)

- ७६. प्रभु । उत्पल जीव मरी ने, बेइन्द्रिपणे उपजी ने। विल 'उत्पलपण उपजत, कितो काल गतागति हुत?
- ७७. जिन कहै भव आश्री सीय, जघन्य थकी करै भव दोय। इक वेइन्द्रि उत्पल वीजो, उत्कृष्ट सख भन लीजो।।
- ७८. हिवै काल थकी अवलोय, जघन्य अन्तर्मुहर्त्त दोय। उत्कृष्टो सख्यातो काल, इतो काल गतागति न्हाल।।
- ७६. इमहिज जीव तेइन्द्री कह्यु, इमहिज जीव चर्छरिद्री। तियँच पचेद्री नी पृच्छा, हिव साभलजो घर इच्छा।। द०. प्रभु । उत्पल जीव मरी ने, पचेद्री-तिर्यच थई ने।
- विल उत्पलपणे उपजत, कितो काल गतागित हुत?
- ८१. जिन कहै भव आश्री सोय, जघन्य थकी करै भव दाय। उत्कृष्ट आठ भव जाण, बिहु ना चिहु-चिहु पहिछाण।।
- ६२ हिवै काल थकी अवलोय, जघन्य अन्तर्म्हर्त्त दोय। उत्कृष्ट पृथक पूर्व कोड, उत्पल भव अद्धा अधिको जोड़।।
- ६३. इम मनुष्य सघाने पिण किह्न्, इतो काल तेववू लिह्न्। इतो काल गतागति तास, करै मनुष्य उत्पल सुविमास।। आहार द्वार (२८)
- म्४. हे भगवंत! ने जीवा, स्यू आहार कर छै अतीवा? जिन कहै द्रव्य थकी जाण, अनतप्रदेशि द्रव्य पिछाण।।
- ६५. इम पन्नवण पद अठवीस, कह्यो आहार उद्देश जगीस। आहार कह्यो वणस्सइ नो ताय, जाव सर्वात्म लग कहिवाय ॥
- द्भः णवर लोक तणै अन्त ताय, ते उत्पल कहियै नाय। तिणस् निश्चे छ दिशि नो ले आहार, शेप त चेव सर्व विचार ॥

स्थिति द्वार (२६)

- प्रत्मल जीव तणी स्थिति केती ? हिवै वीर कहै हुवै जेती। जघन्य अन्तर्मुहूर्त्तं दृष्ट, दश सहस्र वर्ष उत्कृष्ट ॥ समुद्घात द्वार (३०)
- प्द तिणमे किती प्रभु । समुद्घात रेजिन भाखे तीन विख्यात। वेदनी ने कषाय है बीजी, मारणातिक कहियै तीजी।।
- =१ मारणातिक करि भगवत । ते समोहया मरण मरन्त। के असमोहया मरण होई? जिन कहै मरण ह्वै दोई॥

- ७६. से णं भंते 1 उप्पलजीवे वेइदियजीवे, पुणरिव उप्पल-जीवेत्ति केवतिय काल सेवेज्जा ? केवितय काल गतिरागति करेज्जा ?
- ७७ गोयमा । भवादेसेण जहण्णेण दो भवगगहणाइ, उनकोसेण सखेज्जाइ भवग्गहणाइ,
- ७८ कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण सखेज्ज काल, एवितय काल' सेवेज्जा, एवितय काल गतिरागति करेज्जा।
- ७६. एव तेइदियजीवे, एवं चउरिदियजीवे वि । (श० ११।३३)
- प्त से ण भते । उप्पलजीवे पर्विदियतिरिक्खजोणिय-जीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति -पुच्छा।
- गीयमा । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ट भवग्गहणाइ चत्वारि पचेन्द्रियतिरश्चश्चत्वारि चोत्पलस्येत्येवमध्टौ भवग्रहणान्युत्कर्षत इति । (वृ० प० ५१३)
- ५२ कालादेमेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता उक्कोसेण पुव्वकोडिपुहत्त, उत्पलजीवित त्वेतास्वाधिकमित्येवमुत्कृष्टत पूर्वकोटी-पृथक्तव भवतीति । (बृ० प० ५१३)
- ८३ एवं मणुस्सेण वि सम जाव एवतिय काल गतिरा-गति करेज्जा। (शि ११।३४)
- द४ ते ण भते । जीवा किमाहारमाहारेंति ? गोयमा । दञ्वओ अणतपदेसियाइ दञ्वाइ,
- ५५ एव जहा आहारुद्देसए (प० २८।२८-३६) वणस्स-इकाइयाण आहारो तहेव जाव सन्वप्पणयाए आहार-माहारेति।
- ६६ नवर-नियमा छिहिसि, मेस त चेव। (श० ११।३५) उत्पलजीवास्तु बादरत्वेन तथाविधनिष्कुटेष्वभावा-न्नियमात् पट्सु दिक्ष्वाहारयन्तीति ।

(वृ० प० ५१३)

- द७ तेसि ण भते <sup>।</sup> जीवाण केवतिय काल ठिई पण्णता? गोयमा । जहंण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दस वास-(श० ११।३६) सहस्साइ।
- दद तेसि ण भते । जीवाण कति समुखाया पण्णता ? गोयमा । तओ समुग्घाया पण्णत्ता त जहा---वेदणासमुगए कसायसमुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए । (ঘা০ ११।३७)
- द्ध ते ण भते । जीवा मारणतियसमुग्घाएण समोहता मरित ? असमोहता मरित ? गोयमा। समोहता वि मरति, असमोहता वि मरति। (श० ११।३८)

## चयण द्वार (३१)

ह०. प्रभु । अन्तर-रहित ते जंत, नीकली किण गति उपजंत ? जिन कहै पन्नवणा मांहि, पद छठै कह्यो छै ताहि ॥ ह१. वनस्पतिकाय नो विचार, उद्वर्त्तन कह्यो तिवार । तिमहिज सर्व ए भणवो, उत्पन्त नो नीकलवो थुणवो ॥

मूलादिक ने विषे सर्व जीव नो उपपात द्वार (३२)

- ६२. अथ सर्वे प्राण भगवान । सर्व भूत जीव सत्व जान। उत्पल मूल-जीवपण जोय, पूर्वे ऊपना ने सोय।।
- ६३. उत्पल कदपणेज उपना, उत्पल नालपणेज प्रमना । उत्पल पत्रपणे सहु जीवा, पूर्वे ऊपना छै अतीवा ।।
- हथ. उत्पल ना केंसरपणे, कांणका पासै अवयव जेह। उत्पल कांणकापणे कहाय, मध्य भाग वीज कोस ताय।।
- हथ. उत्पल थिबुकपणे करि जेह, जिहां पत्र ऊपजै तेह। पूर्व काल विषे सर्व जीवा, ऊपना छै प्रभुजी। अतीवा?
- ६६. तव हता कहै जगतार, सहू ऊपनां बारवार। अथवा ते वार अनत, सेव भते। सेव भत।
- ६७. कह्यो उत्पल उद्देशो एह, एकादशमा शतक नो कहेह।
  प्रथम उद्देशे जगीस, उगणीसै वर्ष इकवीस।।
- ६८. दोयसौ ने पंच्चीसमी ढाल, भिक्षु भारीमाल गुणमाल। ऋपिराय तणे सुपसाय, सुख सपति 'जय-जश' पाय।।

एकावशशते प्रथमोद्देशकार्थः ॥११।१॥

ढाल: २२६

### दूहा

- १. अष्ट उद्देशा नें विषे, नानापणुज भेद। संग्रह अर्थे छै इहा, गाथा तीन उमेद॥
- २. \*पृथक घनुप सालु नी तास, पृथक गाउ कहियै पलास। शेप छहूं नी इम अवगान, योजन सहस्र अधिक पहिछान।।
- ३. कुभी नालिका पलास माय, तीन लेक्या सुर उपजै नाय। शेष पच मे लेक्या च्यार, उपजै देव वणस्सङ सार॥
- ४. कुभी नालिका नी सुविमास, पृथक वर्ष कही स्थिति तास। भेप छहु वर्ष दश हजार, अर्थ त्रिह्र गाथा नो सार॥
- \*लय : इण पुर कंवल कोइय न लेसी

- ह०, ६१ ते ण भते । जीवा अणतर उव्बद्धित्ता किंह्
  गच्छिति ? किंह् उववज्जिति....एव जहा वक्कतीए
  (प० ६।१०३,१०४) उव्बद्धणाए वणस्सडकाइयाण
  तहा भाणियव्वं।
  (श० ११।३६)
  'वक्कतीए' ति प्रज्ञापनाया. पष्ठपदे।
- ६२ अह भते । सञ्वपाणा, सञ्वभूता, सञ्वजीवा, सञ्वसत्ता उप्पलमूलताए,

(वृ० प० ५१३)

- ६३ उप्पलकदत्ताए, उप्पलनालत्ताए, उप्पलपत्तताए,
- १४ उप्पलकेसरत्ताए, उप्पलकण्णियत्ताए,
  'उप्पलकेसरत्ताए' ति इह केसराणि—कण्णिकाया
  परितोऽवयवा 'उप्पलकन्नियत्ताए' ति इह तु कणिका
  —वीजकोश (वृ० प० ४१३)
- ६५ उप्पलिथभगत्ताए उनवन्तपुक्ता ?
   'उप्पलिथभुगत्ताए' ति थिभुगा च यतः पत्राणि
   प्रभवन्ति ।
   (वृ० प० ५१३)
- ६६ हता गोयमा । असित अदुवा अणतखुत्तो । (श० १११४०) सेव भते ! सेव भते ! त्ति । (श० ११।४१)

- १ एतेपु चोद्देशकेपु नानात्वसग्रहार्थास्तिस्रो गाथा (वृ० प० ५१४)
- २ सालिम धणुपुहत्त होइ पलासे च गाउयपुहत्त । जोयणसहस्समहिय अवसेसाण तु छण्हिप ।। (वृ० प० ५१४)
- ३ कुभीए नालियाए होति पलासे य तिन्नि लेसाओ। चतारि उ लेसाओ अवसेसाण तु पचण्ह।। (वृ० प० ५१४)
- ४ कुभीए नालियाए वासपुहत्त ठिई उ बोद्धव्वा । दसवाससहस्साइ अवसेसाण तु छण्हिप ॥ (वृ० प० ५१४)

- प्र. हे भदत । सालु इक पत्र, एक जीव के अनेक तत्र ? जिन कहै एक जीव छै एम, कहिये उत्पन उद्देश जेम।।
- ६. जाव अनतखुत्तो पहिछाण, णवरं विशेष तनु अवगाण। जघन्य अगुल ने भाग असख, उत्कृष्ट घनुष पृथक नो अक।।
- ७. शेप तिमहिज सेव भंत । सेव भत । गोयम वच तत । एकादशम शतक गुणगेह, द्वितीय उद्देश अर्थ वर एह ।।

# एकादशकाते द्वितीयोद्देशकार्थः ॥११।२॥

- द. हे भदत । इक पत्र पलास, एक जीव के अनेक तास ? एव उत्पल उद्देश जेम, वक्तव्यता कहिये सह तेम ॥
- एवर तनु अवगाहन माग, जघन्य आगुल नो असख भाग।
   उत्कृष्ट पृथक गाउ किह्वाय, पलास मे सुर उपजै नांय।।
- १०. पलाश मे प्रभु । केती लेश ? जिन कहै घुर त्रिह लेश कहेस ।
  भग छव्वीस शेप तिम हुंत, सेव भते । सेव भत !
  एकादशशते तृतीयोहेशकार्थः ॥११।३॥
- ११ वनस्पति प्रभु । कुभी विशेख, एक पत्र जीव इक कै अनेक ? कह्यो पलास उद्देशक जेह, तिम कहिवू पिण णवर एह ॥
- १२. स्थिति अन्तर्मुहूर्त्तं जघन्य, उत्कृष्ट पृथक वर्षज मन्य। शेप तिमज प्रभु । सेव भत । तुर्य उद्देशक एह कहत।। एकादशशते चतुर्थोद्देशकार्थः ।।११।४।।
- १३. वनस्पति प्रभु ! नालिका देख, एक पत्रजीव इक के अनेक ? कुभी उद्देश विपेज वृतत, तिम सहु कहिं सेव भत । एकादशक्ते पंचमोद्देशकार्यः ॥११।४॥
- १४. पद्म तिको प्रभु । कमल विशेख, एक पत्र जीव इक कै अनेक ? जत्पल प्रथम उद्देश वृतत, तिम सहु कहिव् सेव भत । एकादशक्षते पष्ठोद्देशकार्यः ॥११।६॥
- १५ कॉणका जाति कमल नी पेख, एक पत्र जीव इक कै अनेक ? उत्पल प्रथम उद्देश वृतत, तिम सहु कहिवू सेव भत । एकादशक्षते सप्तमोद्देशकार्थः ॥१२।७॥
- १६. निलण—कमल नी जाति विशेख, एक पत्र जीव इक के अनेक ? उत्पन प्रथम उद्देश वृतंत, तिम सहु कहिवू सेव भत ! एकादशशते अष्टमोद्देशकार्थः ॥११।८॥

- प्र. सालुए ण भंते । एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ? गोयमा । एगजीवे । एवं उप्पलुद्देमगवत्तव्यया अपरिनेमा भाणियव्या ।
- ६ जाव अणतयुत्तो, नवर--मरीरोगाहणा जहण्णेणं अगुलम्म अमंशेज्जइभाग उक्तोमेण धणुपुहत्त,
- ७ मेम त चेव। (ग० ११।४२) भेव भते । नेव भते ! ति। (ग० ११।४३)
- द पलामे ण भते । एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ? एव उप्पलुद्देमगवत्तव्वया अपरिसेमा भाणियव्वा,
- ह नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलम्स अससेज्जह-भाग, उक्कोमेण गाउयपुहत्ता । देवेहितो न उववज्जिति । (म० ११।४४)
- १० लेसासु—ते ण भते । जीवा कि कण्हलेम्सा? नीललेग्सा? काउलेग्सा? गोयमा । कण्हलेस्से वा, नीललेग्से वा, काउलेग्मे वा —छन्वीस भगा, सेस त चेव। (श० ११।४६) सेव भते । सेव भते । त्ति (श० ११।४६)
- ११ कुभिए ण भते । एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
  - एव जहा पलामुद्देसए तहा भाणियव्ये, नवर—
- १२ ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वासपुहत्त, सेस त चेव। (श० ११।४७) सेव भते ! सेवं भते ! ति। (श० ११।४८)
- १३ नालिए ण भते । एगपत्तए कि एकजीवे ? अणेगजीवे ? एव कुभिउद्देमगवत्तव्वया निरवसेस भाणियव्वा । (श० ११।४६) सेव भते । सेव भते ति । (श० ११।४०)
- १४ पत्रमेण भते । एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे? एव उप्प नुदेगगवत्तव्वया निरवमेमा भाणियव्वा । (भ० ११।४१) मेव भते । सेव भते । ति । (भ० ११।४२)
- १५ कण्णिए ण भते । एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ? एव चेव निरवगेम माणियच्यं। (श० ११।५३) भेव भते । सेव भते नि । (श० ११।५४)
- १६ निलणे ण भते <sup>1</sup>एगपत्तए कि एगजीवे <sup>2</sup>अजेगजीवे <sup>2</sup> एव चेव निरवसेस जाव अपतःगृत्ती। (श० ११।४५) सेत्र भते ! सेत्र भते <sup>1</sup> ति । (श० ११।४६)

- १७. सालु उत्पल कद ते, आदि देइने सात। वहुलपणें उत्पल तणा, उद्देशक सम ज्ञात।। १८. विल विशेष जे जिण विषे, आख्या आगम माहि। णवरं पलास नै तिपे, देव ऊपजे नाहि।।
- **उद्देशक विषे, मुरं** उत्पल उपजंत । १६. उत्पल नहि उपजे इहा पलासे देवता, ए मत ॥ प्रमुख वनस्पति, प्रशस्त में सुर आय। २०. उत्पल भणी, देव ऊपजै अप्रगस्त ते नांय ॥ उत्पत्ति भणी, तेजूलेश्या २१. उत्पल सूर पाय। नहिं ऊपजै, तेजूलेश्या नाय ॥ सुर पलास
- २२ं. तेजू तणा अभाव थी. पलास मे त्रिहु लेश। पद त्रिहुं नां पटवीस भग, सभव तास विशेष।। २३ \*ग्यारमा शत नो अप्टम न्हाल, दोयसौ ने छवीसमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय पसाय, 'जय-जश' संपति हरप सवाय।।

ढांल : २२७

#### दूहा

१ कह्या अर्थ उत्पल प्रमुख, एहवा अर्थ प्रतेह। यथातथ्य जे जाणवा, समर्थ सर्वज्ञ जेह।। २. पिण अन्य समर्थ छै नही, ्द्रोप समुद्र प्रतेह। शिव ऋपिराज तणी परे, हिव कहिये छै जेह।। ३. तिण काले ने तिण समय, हत्यिणापुर वर नाम। नगर हुंतो रलियामणो, वर्णक अति अभिराम।। ४. तिण हित्यणापुर नगर रै, वाहिर कूण ईशान। सहस्रंव वन नाम जे, हतो वर उद्यान।। ५ ते वन सब ऋतु ने विषे, फूलै फलै समृद्ध। नंदन वन सम अति सुखद, मन रमणीक सुऋद्ध ॥ ६ मुखदायक शीतल घणी, छाया तरु नी इष्ट। मन रमणीक इसा अर्छ, स्वादू फल अति मिष्ट।। ७ कटाला तरु करि रहित, पासादिए पिछान। प्रतिरूप छै, जाव तिको एहवो वर उद्यान ॥

- १७ शालूकोहेशकादय सन्तोहेशका प्राय. उत्पलोहेशक-समानगमा । (वृ० प० ५१४)
- १८ विशेषः पुनर्यो यत्र स तत्र सूत्रसिद्ध एव, नवर पलाणोद्देणके यदुक्त 'देवेसु न उववज्जित' ति । (वृ० प० ५१४)
- १६,२० जत्मलोद्देशके हि देवेभ्य उद्वृत्ता उत्पले जत्मद्यन्त इत्युक्तिमह तु पलाशे नोत्मद्यन्त इति वाच्यम्, अप्रशस्तत्वात्तस्य, यतस्ते प्रशस्तेष्वेवोत्पलादिवनस्पति-पूत्मद्यन्त इति । (वृ० प० ५१४)
- २१ यदा किल तेजोलेश्यायुतो देवो देवभवादुद्वृत्य वनस्पतिपूत्पद्यते तदा तेषु तेजोलेश्या लभ्यते, न च पलाशे देवत्वोद्वृत्त उत्पद्यते पूर्वोक्तयुक्ते, एव चेह तेजोलेश्या न सभवति । (वृ० पं० ५१४)
- २२ तदभावादाद्या एव तिस्रो लेश्या इह भवन्ति, एतासु च पड्विंशतिभगका, त्रयाणा पदानामेतावतामेव भावादिति । (वृ० प० ५१४)

- १,२ अनन्तरमुत्पलादयोऽर्था निरूपिता, एवभूताण्चा-र्थान् मर्वज्ञ एव यथावज्ज्ञातु समर्थो न पुनरन्यो, द्वीप-ममुद्रानिव शिवराजिप, इति सम्बन्धेन शिवराजिप-मविधानक नवमोद्देशक प्राह — (वृ० प० ५१४)
- ३ तेण कालेण तेण समएण हित्यणापुरे नाम नगरे होत्या—वण्यको ।
- ४. तस्स ण हित्यणापुरस्स नगरस्स विहया उत्तरपुरित्यमे दिसीभागे, एत्य ण सहसववणे नाम उज्जाणं होत्या-
- ५ सन्वोजय-पुष्फ-फलसिमद्धे रम्मे णदणवणसिन्नभप्प-गासे
- ६ सुहसीतलच्छाए मणोरमे सादुष्फले
- ७ अकटए पासादीए जाव (स० पा०) पडिरूवे । (श० ११।५७)

<sup>\*</sup>लय: इण पुर फंबल कोइय न लेसी

\*सरस वृतका सुणो, शिवराज ऋषि नीं रे ॥ (घ्रुपदं)

प्त. तिण हित्यणापुर नगरी तणो, हुंतो शिव नार्मे राजान। मोटो हेमवंत नी परे जी, वर्णक अति सुविधान॥

### सोरठा

- १. राज-वर्णक इम दीस, महाहिमवत तणी परै।
   मोटो शिव अवनीस, शेप घराधिप पेक्षया।
- १०. पर्वत मलय संवादि, मदर ते मेरू गिरि। महेंद्र ते शकादि, तदवृत सार प्रधान जे।।
- ११. \*शिव वसुघाघिप ने हुंती ज़ी, राणी घारणी नाम। अति सुकुमाल सुहामणी जी, वर्णक अति अभिराम।।

#### सोरठा

- १२. वर कर पग सुकुमाल, इत्यादिक राणी तणो। वर्णक अधिक विशाल, अन्य स्थान थी जाणवू॥
- १३. \*पवर पुत्र शिवराय नो जी, घारणी नो अगजात। शिवभद्र नामें कुमार थो जी, अति सुकुमाल आख्यात।।
- १४. जिम सूर्यंकत कुमार नो जी, आख्यो छै अधिकार। जाव चिंता करतो राज नी जी, विचरै एह कुमार॥

### सोरठा

- १५. कर पग तसु सुकुमाल, लक्षण व्यजन गुण सहित। इत्यादिक सुविशाल, रायपसेणी' थी इहा॥
- १६. विचरै करतो चिंत, सूर्यकत तणी परै। इण वचने इम तत, इहां कहिवो शिवभद्र ने।।
- १७. ते शिवभद्र कुमार, हुंतो वर युवराज पद। शिव राजा ने सार, राज-चित करतो थको।।
- १म. राष्ट्र देश नी जाण, वल वाहन भडार नी। कोठागार पिछाण, पुर अतेउर नी वली।।
- १६. जनपद नी स्वयमेव, चितवना करतो छतो। विच्रे अहनिशिहेव, शिवभद्र नाम कुमार ते॥
- २०. \*तिण अवसर शिवराय नै जी, अन्य दिवस किणवार। मध्य निशि काल सुमय विषे, राज घुरा चितवता घार।।
- २१. एहवे रूपे आतम ने विषे, जाव उपनो मन मे विचार। छै मुक्त जूना तप तणां जी, दान ना फल विल सार।

- द. तत्थ ण हित्थणापुरे नगरे सिवे नाम राया होत्या— महयाहिमवत ''' वण्णको ।
- राजवर्णको वाच्य इति सूचित, तत्र महाह्मिवानिव
   महान् शेपराजापेक्षया (वृ० प० ५१६)
- १० मलय —पर्वतिविशेषो मन्दरो—मेरु महेन्द्र शकादिर्देवराजस्तद्वत्सार प्रधानो य. स तथा, (वृ० प० ५१६)
- ११, तस्स ण सिवस्स रण्णो धारिणो नाम देवी होत्या— मुकुमालपाणिपाया वण्णको ।
- १२ 'सुकुमाल० वन्नओ' त्ति अनेन च 'सुकुमालपाणिपाए' त्यादी राज्ञीवर्णको वाच्य इति सूचित । (वृ० प० ५१६)
- १३ तस्स ण मिवस्स रण्णो पुत्ते घारिणीए अत्तए सिवभद्दे नाम कुमारे होत्था—मुकुमानपाणिपाए
- १४ जहा सूरियकते जाव
- १५ 'मुकुमालपाणिपाए लक्ष्यणवजणगुणोववेए' इत्यादिना यथा राजप्रश्नकृताभिधाने ग्रन्थे सूर्यकान्तो राज-कुमार (वृ० प० ५१६)
- १६ 'पच्चुवेक्यमाणे पच्चुवेक्खमाणे विहरइ' इत्येतदन्तेन वर्णेकेन वर्णितस्तथाऽय वर्णीयतच्य.।
  - (वृ० प० ५१६)
- १७, से ण सिवभट्दे कुमारे जुवराया यावि होत्या सिवस्स रन्तो ... (वृ० प० ५१६)
- १८,१६ रज्ज च रट्ठ च बल च वाहण च कोम च कोट्ठार च पुर च अतेजर च सयमेव पच्चुवेक्समाणे-पच्चुवेक्समाणे विहरइ। (श० ११।५८)
- २० तए ण तस्स सिवस्स रण्णो अण्णया कयाइ पुन्वरत्ता-वरत्तकालसमयसि रज्जधुर चितेमाणस्म
- २१ अयमेयास्वे अज्झित्विए जाच (स० पा०) ममुष्प-जिल्ला—अत्यि ता मे पुरा पोराणाण कत्लाणफल-वित्तिविसेसे

<sup>\*</sup>लय: अमड़ भड़ रावणा

१. सू. ६७३,६७४

२ मगसुत्ताणि मे 'जनपद' शब्द नहीं है।

२२. जेम तामली चिंतव्युं जी, तिम चितव्यूं शिवराज। जाव पुत्रे करि हूं वच्यो, पशु करि वाघ्यो समाज।। २३. राज करि वाध्यो वली जी, रथ करकै पिण एम। वल-कटके करि वाधियो जी, वाहन करकै तेम।। २४ कोप भडार करी वध्यो जी, कोट्टागार करेह। पुर अतेजर करि वली जी, हू वाध्यो अधिकेह।। २५ विस्तीर्ण घन कनके करीजी, रतन करीने जाव। छता सार द्रव्ये करी जी, घणु घणु वाघ्यो साव।! २६. ते भणी हूं स्यू पूर्व भवे जी, तप दानादिक की घ। जाव एकंत ते पुन्य ने, क्षय करतो विचरू प्रसीघ। २७. ते माटे हूं ज्या लगे जी, प्रथम वाघ्यो हिरण्येण। त चेव जाव घणु-घणु जी, वाध्यो सार द्रव्येण।। २८. ज्या लगे सामत राजवी जी, मुभ वश वर्त्ते विशेख। त्या लग मुभनें श्रेय भलो जी, काल प्रभात सपेख।। २६. पवर प्रभा प्रगट्ये छते जी, जाव जलते जान। जाज्वलमान सूरज जिको जी, उदय थयो असमान।। ३०. अति वहु लोही लोह नां जी, कडाहा कुडछी जेह। रोटी पचावा ना वली जी, अन्न हलावा नां एह।। ३१. ते पिण योग्य तापस तणे जी, भंड घडावी तेह ॥ शिवभद्र नामें कुमार ने जी, स्थापी राज्य प्रतेह।। ३२. ते अति वहु लोही लोह ना जी, कडाहा कुडछी जोय। ते पिण योग्य तापस तणे जी, भड ग्रही नै सोय।। ३३. जे ए गगा तट ने विषे जी, वानप्रस्थ विख्यात ।। तापस छै तप मे रता जी, होत्तियादिक आख्यात।।

### सोरठा

३४. वन ने विषे वसंत, वानप्रस्थ कहियै तसु । तीजो च्यारू आश्रम नै विषे॥ मत, अथवा ३५. ब्रह्मचारी नै गृहस्थ, जती । वानप्रस्थ चउथो होत्तियादि तीजो ए वानप्रस्थ, गगा तटे ॥

# गीतक-छंद

३६. नित्य अग्निहोमज जे करैं, ते कह्या तापस होत्तिया।
फुन वस्त्र ना घारक जिके छैं, तेह तापस पोत्तिया।।
३७. फुन क्वचित पाठज सोत्तिया, ते सूत्र घार लहीजियै।
भगवती पाठ विपे कह्या, तिणहीज रीत कहीजियै।।
वा॰—इहा भगवती नी वृत्ति विषे इम कह्यु—होत्तिया पोत्तिया...
सोतियत्ति क्वचित् पाठ.। जहा उववाइए (सू ६४) इति इण वितदेश यकी इम
जाणवो—कोत्तिया जन्नई सड्दइ हुवउट्टा दतुक्खिलया उम्मज्जगा समज्जगा

निमज्जगा इत्यादि उववाई मे पाठ कह्या, ने जाणवा ।'

१ भगवती सूत्र के कुछ आदर्शों में विस्तृत पाठ देने के वाद औपपातिक सूत्र का समर्पण किया गया है। सिक्ष प्त और विस्तृत दो वाचनाओं के मिश्रण में ऐसा होना सभव प्रतीत होता है। 'व' संकेतित आदर्श में केवल एक विस्तृत वाचना

- २२ जहा तामिलस्स जाव (सं० पा०) पुत्तेहि वड्ढामि पसुहि वड्ढामि
- २३. रज्जेणं वड्ढामि एव रट्ठेण वलेण वाहणेण
- २४. कोसेण कोट्ठागारेण पुरेण अते उरेण वड्ढामि
- २५ विपुलधण-कणग-रयण जाव (स॰ पा॰) सतसार-सावएज्जेण अतीव-अतीव अभिवड्ढामि
- २६ ण कि ण अह पुरा पोराणाण सुचिण्णाण सुपरकक-ताण 'एगतसो खय उवेहमाणे विहरामि ?
- २७. त जावताव अह हिरण्णेण वड्ढामि जाव अतीव-अतीव अभिवड्ढामि ।
- २८ जाव में सामतरायाणों वि वसे वट्टति, तावता में सेय कल्ल
- २१ पाउप्पभायाए रयणीए जाव उद्वियम्मि सूरे सहस्सर-स्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते
- २०,३१. सुवहु लोही-लोहकडाह-कडच्छुय तिवय ताव सभडग घडावेत्ता सिवभद्द कुमार रज्जे ठावेत्ता
- २२ त सुवहु लोही-लोहकडाह-कडच्छुय तविय ताव सभडग गहाय
- ३३ जे इमे गगाकुले वाणपत्या तावसा भवति त जहा— होत्तिया
- ३४ 'वाणपत्य' त्ति वने भवा \*\*\*\*\* (वृ० प० ५१६)
- ३५ 'ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तया' · · · · एतेपा च तृतीयाश्रमवित्तनो वानप्रस्था.। (वृ० प० ५१६)
- ३६. 'होत्तिय' ति अग्निहोत्रिका 'पोत्तिय' ति वस्त्र-धारिण
- ३७ 'सोत्तिय' ति क्वचित्पाठस्तत्राप्ययमेवार्थ.।
  (वृ० प० ५१६)
  बा०—'जहा जववाइए' इंत्येतस्मादितदेशादिद
  दृश्य— (वृ० प० ५१६)

- ३८. कोत्तिया सूर्व महि विषे, फुन यज्ञकारक जण्णई।
  फुन जेह श्रद्धावत तेहने, कह्या प्रभुजी सद्धई।।
  ३६ उपगरण लीधे जे रहै, ते शालड पहिछाणियै।
  जे श्रमण कूंडी प्रति ग्रहै, ते हुवउट्टा जाणियै।।
  ४०. फल भोगवे ते दंतुखलिया, फुन उम्मजग इह परे।
  इक वार जल मे पेसने, तत्काल ही जे नीसरे।।
  ४१. वह वार जल मे पेस निकले, कह्या तेह समज्जगा।
- फुन स्नान अर्थे जल विषे, खिण रहै तेह निमज्जगा।।

  ४२. फुन प्रथम मट्टी प्रमुख घस, तनु-अग क्षालण जे करें।

  इह रीत स्नान करेंज तेहने सपखालणगा वरें।।

  ४३. गगा तणे दक्षिण तटे, वसनार दक्षिणकूलगा।

  वास्तव्य जे उत्तर तटे, किह्वाय उत्तरकूलगा॥

  ४४. फुन सखघमगा करें भोजन, आय तसु जीमाय ने।

  निहं आय तो फुन तेह जीमें, सख प्रति सुवजाय ने॥

  ४५ जे नदी तट ऊभा रही ने, शब्द कर जीमें सही।

  ते कूलघमगा कह्या फुन मृगलुट्यगा जु प्रसिद्ध ही॥

  ४६. जे गज हणी तिणहीज करि, वहु काल भोजन आचरे।

  ते हस्तितापस' आखिया, पाखंड वृत्ति समाचरें॥

  ४७ फुन स्नान अणकीचे न जीमे, कठिन गात्रज जेहनां।

  वृद्धा कहै स्नाने करी, पाडुरा गात्रज तेहना।।

वा०—किण हि प्रते 'जलाभिसेयकढिणगायभूय' ति पाठ है। तिहा जल ना अभिषेके करी ने कठिन गात्र थयो है जेहनो, एहवू कछा छै।

४८. जल हि स्थानक वास जेहनु, अम्बुवासिज दाखिया।
फुन पवन छै जेह स्थान रहिवै, वायुवासी भाखिया।।
४६. जल विषे बूडा रहै, जलवासिणो तापस कह्या।
फुन वेलनेज समीप वसवै, वेलवासी जे लह्या।।

३८ 'कोत्तिय' ति भूमिणायिन 'जन्नउ' ति यज्ञयाजिनः 'सड्ढड' ति श्राद्धा (वृ० प० ५१६)

·३६ 'थालइ' ति गृहीतभाण्डा 'हृवउट्ठ' ति कृण्टिका-श्रमणा (वृ० प० ५१६)

४० 'दतुक्खिलिय' ति फलभोजिन 'उम्मज्जम' ति उन्मज्जनमात्रेण ये स्नान्ति (वृ० प० ५१६)

४१ 'ममज्जग' ति उन्मज्जनस्यैवामकृत्करणेन ये म्नान्ति 'निमज्जग' ति स्नानार्यं निमग्ना एव ये क्षण तिष्ठन्ति । (वृ० प० ५१६)

४२. 'सपक्याल' ति मृत्तिकादिघर्षणपूर्वक येऽद्ग क्षाल-यन्ति । (वृ० प० ५१६)

४३ 'दक्षिणकूलग' ति यैगंगाया दक्षिणकूल एव वास्तव्यम् 'उत्तरकूलग' ति उक्तविपरीता । (वृ० प० ५१६)

४४ 'मयधमग' ति णख ध्मात्वा ये जेमन्ति यसन्यः कोऽपि नागच्छतीति (वृ० प० ५१६)

४५ 'कूलधमन' ति ये कूर्ने म्थित्वा शब्द फुन्या भुञ्जते 'मियलुदय' ति प्रतीता एव (वृ० प० ५१६)

४६ 'हित्यतावस' ति ये हिन्तिन मारियत्वा तेनैव बहुकाल भोजनतो यापयन्ति । (यृ० प० ५१६)

४७ 'जलाभिमेयिकिहिणगाय' त्ति येऽम्नात्वा न भुजते म्नानाद् वा पाण्डुरीभूतगात्रा इति वृद्धाः,

(वृ० प० ५१६)

बाः - अविचत् 'जलाभिमेयकटिणगायभूय' ति दृश्यते तत्र जलाभिषेककठिन गात्र भूता - प्राप्ता ये ते तथा (वृ० प० ५१६)

४८. अवुवासिणो वाउवासिणो

४६. 'वेलवानिणो' ति ममुद्रवेलामनिधिवामिन 'जल-वामिणो' ति ये जलनिमग्ना एवासते । (यु० प० ५१६)

है, उसे अंगसुत्ताणि पृ. ४६४ के पाद टिप्पण (१२) मे ज्यों का त्यों ले लिया गया है। उसके बाद औपपातिक सूत्र (६४) का पाठ भी दिया गया है। १ 'होत्तिया' से लेकर हित्यतावसा' तक अगसुत्ताणि के पाद-टिप्पण और भगवती की वृत्ति का पाठ समान है। इसलिए जोड के सामने वृत्ति का पाठ उद्घृत किया गया है। 'हित्यतावसा' के बाद वृत्ति मे कुछ णव्द अधिक हैं, और कुछ आगे पिछे हैं। इसका कारण यह है कि वृत्ति मे औपपातिक सूत्र वाला पाठ लिया गया है। जब कि जयाचार्य ने भगवती के मूल आदर्श मे प्राप्त पाठ के अनुसार जोड की है। व्यवस्थित पाठ उपलब्ध न होने के कारण तथा यत्र तत्र वृत्तिगत व्याख्या के आधार पर जोउ होने के कारण जोड के गामने गही वृत्ति की, कही अगमुत्ताणि और कही दोनो को उद्घृत किया गया है।

२ वेलवासिणो और जलवामिणो पाठ वृत्ति में है, अगसुत्ताणि' में नहीं है। जोड़ में पाठ का व्यत्यय है।

- ५०. जलहीज पीवी नें रहे, ने अंतुमधी जाणवा।
  फुन पवनहीज भरों जु तापस, पवनभक्षी माणवा।।
- ५१. फुन भरों जे मेवाल प्रति, मेवालभक्षी आगियै। तह मूल नों हिज आ'र करिवै, मूलाऽक्तारा वाणियै॥
- ४२. फुन नंदाऽऽहारा पत्राऽऽहारा, स्वेचाऽऽहारा जाणियै। विन पुष्पाऽऽहारा फलाहारा, घीजाऽऽहारा आणियै॥
- ५३. अतिही सङ्या जे कद मूनज, त्वना पत्रज आहारियं।
  फल फूल जे पंडुर थया, तेहनोज आ'र विनारियं।।
- ४४. फुन देंड ऊंची करी हीडै, यहा तास उद्गा। तस्मुलिया तरु-मूल यसिवै, कहा ए पागंउना।।
- ४५. मडलाकारे एकठा रहै, तास मठलिया कहा। विल रूप विल ने विषे जेहन्, वास विलवासी लहा।।

  बा॰—वृक्ष नी छाति रूप यस्त्र धरै ते 'यगक्रपानियो' ए पाठ विणारि परत
- में छै, किणहि परत में नहीं।
- ५६. दिशि जले छाटी नै फलादिक, दिशापोगी' छं जिके। आतापना पचारिन तापे करीनै तापस तिके।।
- ५७. कोयला सदृश पच्यो तनु, फुन कंदुभाजन जिम पच्यु। फुन जल्या काष्ठ सरीरा तन, तमु स्याम वर्णे कर रच्यु।।
- ४८. इम आत्म प्रति करता थका, विचरेज तापस ए कहा। शिवराज नै मक रात्रि समये, अव्यवसाय इसा थया।।
- ५६. \*तिहा दिशापोची तापस जेह छै जी, तसु पासे मुट हाँग । दिशापोसी तापसपणेजी, लेसू प्रयण्या सोय ॥
- ६०. प्रवरण्या लीधे छते जी, एहर्वु अभिग्रह सार। आदरवु श्रेय मां भणी जी, कहिये ते अधिकार॥
- ६१. कल्पे मुक्त जीवू ज्या लगे जी, छठ-छठ अतर रहीत। दिशाचक्रवाले करी जी, तप करिवै विधि रीत।।

- ६२. घुर छठ पारण पेख, पूर्व विपे जल छाटतो। फलादि ग्रही विशेख, आ'र करें इह रोत सू॥
- ६३. इम वीजे दिन जाण, दक्षिण दिशि छाटी उदय । इम फिरती दिशि माण, कही दिशा-चक्रवाल ते ।।
- ६४. \*ऊची वे वाहू करी जी, जाव विचरवु श्रेय। इम निशि करि विचारणा जी, शिवराजा चित देय।।
- ६५. शत ग्यारम देश नवम नं जी, ढाल वेसी सतावीस। भिन्नु भारीमाल ऋपिराय थी जी, 'जय-जश' हरप जगीस।।

- ४० समुमनियाणी वा मिनियाणी
- **५६ मेलानभिक्ताः। मूलाताम**
- ५२ वदाहारा पनाहारा संयोगारा पुरुपतारा पनाहारा भीवातारा
- ४३, परिमारिय-पत्र-पत्रपुत्रस्यातारा
- ४४. उर्देश राज्यम्भिया 'उर्देश' ति उद्गरित्रकारी ये मंत्रान्ति (यु० यु० ४१६)
- ४५. महतिया विजवासिको
- या०--'वनाजवानियो' ति गाजनवागम (वृत्यव ४१६)
- ४६. दिमापोत्तिया जानावर्षेति पत्तिमानांगेत पीरमापोत्यिषो नि वद्दोन दिश ब्रीस्य य पत्त-गुप्पादि समुचित्राना । (युक्च ४१३)
- ४० हेगापनीन्तिय कपुनीन्तिय पहुनीन्तिय 'ध्रमाननीन्तिय' ति अंगारीत्य पना 'कपुनीन्तिय' ति कपुण्यामिथेति । (यु० प० ४१६)
- ४८ पित्र अप्यान करेमाचा विहरति। (अल मुल पृक्ष ४६४ पाल दिल १२)
- प्रह. तरा ण ते ति विभाषीत्वया तायमा नीम अतियं मुटे भविता विभाषीतित्रमतात्रमत्ताए पय्यन्नत्
- ६० परमदत्ते वि य ण ममाने अयमेगान्य अभिगान् अभिगान्य अभिगान्त
- ६१ क्ष्मड मे जायज्जीवाए छट्ठंछट्ठेण अणिक्यितीण दिशानकायानेण सर्वोक्तमेण
- ६२,६३ दिमानकावानएण 'तवोक्तम्मेण' ति एकत पारणके पूर्वन्या दिशि यानि फाविनि तान्याहृत्य भुक्ते दितीये तु दक्षिणस्यामित्वेय दिक्षत्रप्रातेन यत्र तप.कर्मण पारणककरण तत्तप मम्में दिक्षप्रवान- मूज्यते तेन तप.कम्मेंणेति । (यु० प० ५१६,५२०)
- ६४ उद्द बाहाओ पणिज्यिय-पणिज्यिय जाव (मे॰पा॰) विहिन्तिए, ति फट्टु एव सपेहेड ।

<sup>\*</sup>लय: अमड़ भड़ रावणा

१ उववाई में 'दिसापोक्खी' के स्थान पर 'दिसापोविखणो' पाठ है।

#### दूहा

- १ निशि इम करी विचारणा, कल्ले जाव जलत।
  अति वहु लोही लोहमय, जाव घडावी तत।।
  २. आज्ञाकारी नर प्रते, तेडावी कहै राय।
  शीघ्र अहो देवानुप्रिये काम करो ए जाय।।
  ३ हित्यणापुर ए नगर ने, भ्यतर सहितज वार।
  आसित्त कहिता अल्प जे, उदके छिडको सार।।
  ४ जावत सेवग काम करि, आज्ञा सूपी आय।
  दितिय वार शिव नृप विल, सेवग ने कहै वाय।।
- ५ शीघ्र देवानुप्रिय । तुम्हे, शिवभद्र नाम कुमार ।
  महाअर्थ महामूल्य जे, मोटा योग्य उदार ॥
  ६ निस्तीरण जे राज ने, अभिषेक नी सार ।
  सामग्री ने सफ करो, म करो ढील लिगार ॥
  ७ सेवग सुण तिमहीज ते, जाव उवस्थापत ।
  राज वेसाणे किणविधे, ते सुणजो धर खत ॥

# \*चतुर नर पुन्य तणा फल देख ।। (ध्रुपद)

- जी हो जिवराजा तिण अवसरे काई, वहु गणनायक साथ।
   जी हो दडनायक जावत विल, परिवरचो सिंधपाल सघात।।
   श् जी हो वर सिंघासण ऊपरै काइ, शिवभद्र नाम कुमार।
   जी हो पूर्व मुख वैसाण नै काइ, स्नान करावै सार।।
- १० जी हो एक सौ आठ सोना तणा काइ, जाय एकसौ आठ। जी हो माटी नै कलशे करी, सर्व ऋद्धि करी गहघाट।।
- ११ जी हो जावत वाजित्र वाजते काइ, शब्द मोटा मगलीक। जी हो महाराज्य अभिषेके करी, अभिषेक करावै सधीक।
- १२ जी हो पसम सहित कोमल घणो, काइ सुरिभ ग्घ सहीत। जी हो एहवै रक्त वस्त्रे करी, काइ अग लूहे रूडी रीत।।
- १३ जी हो चदन सरस गोसीस थी काइ, गात्र लेपन करै सार। जी हो जेम जमाली नी परै काइ, कीघा सर्व अलकार॥
- १४ जी हो जाव कल्पतरु नी पर, अलकृत विभूषित अग। जी हो कर जोडी जावत करी काई, वोलै वचन सुचग।।
- १५ जी हो शिवभद्र नाम कुमार ने, जय-विजय करीने बंघाय। जी हो इष्ट मनोज्ञ वचने करी, प्रीतिकार वचन करि ताय।।
- १६ जी हो जेम उववाइ ने विषे, कह्यु कोणिक नो अधिकार। जी हो जाव परम आयु पालज्यो काइ, होज्यो चिरजीव सुखकार।

- सपेहेत्ता कल्ल 'जाव ''जलते सुवहुं लोहीलोह जाव (सं०पा०) घडावेत्ता
- २ कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी---खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया !
- ३ हित्यणापुरं नगर सिंग्भितरवाहिरिय आसिय "
- ४ जाव'''ते वि तमाणत्तिय पच्चिष्पणित । (श० ११।५६) तए ण से सिवे राया दोच्च पि कोडवियपुरिसे सद्दावेद्द, सद्दावेत्ता एव वयासी----
- ४ खिप्पामेव भो <sup>1</sup> देवाणुप्पिया <sup>1</sup> सिवभइस्स कुमारस्स महत्य महत्य महरिह
- ६ विजल रायाभिसेय जवट्टवेह।
- ७ तए ण ते कोडवियपुरिसा तहेव उवट्ठवेति । (श० ११।६०)
- न तए ण से सिवे राय अणेगगणनायग दडनायग जाव (स॰पा॰) सिधपालसिंद सपरिवृडे
- स्वभद् कुमार सीहासणवरिस पुरत्थाभिमुह निसियावेद, निसियावेत्ता
- १० अट्ठसएण सोवण्णियाण कलसाण जाव अट्ठसएण भोमेज्जाण कलसाण सिव्वड्ढीए
- ११ जाव दुर्दुहि-णिग्घोसणाइयरवेण महया महया रायाभि-सेगेण अभिस्चिइ,
- १२ पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गधकासाईए गायाइ लूहेति,
- १३ सरसेण गोसीसचदणेण गायाइ अणुलिपति एव जहेव जमालिस्स (भ० ६।१६०) अलकारो तहेव
- १४ जाव कप्परुक्खग पिव अलिकय-विभूसिय करेइ, करेता करयल जाव (स॰पा॰) कट्टु
- १५ सिवभद्द कुमार जएण विजएण वद्धावेद, वद्धावेता ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि
- १६ जाव (स॰ पा॰) जहा ओववाइए (सू० ६८) कूणियस्स जाव परमाउ पालयाहि

<sup>\*</sup>लय: चतुर नर पोषो पात्र विशेष्

- १७ जी हो जाव शब्द माहे कह्या कांड, उववाड' में पाठ अनेक । जी हो मनगमती वाणी करी, वोलें स्तवन करता विशेरा ॥
  १८ जी हो जय जय नदा आपरें कांड, जय जय भद्दा जाण ।
  १६ जी हो अणजीता नै जीतज्यों कांड, जीता नी प्रतिपान ।
- ह जी हो अणजीता न जीतज्यों कोंड, जीता नी प्रतिपान । जी हो जीता मज्फ बगज्यों तुम्हें, हिंचे एहनो अर्थ निहान ॥
- २० जो हो शत्रु पक्ष अणजीतिया काइ त्यानै जीतेज्यो गुणमाल। जी हो मित्र पक्ष जीता प्रते, त्यांरी कीज्यो घणी प्रतिपाल।।।
- २१. जी हो विघन सर्व जीती करी, वसो स्वजन मध्य हे देव । जी हो सुरवृद मे इद्र नी परें, तुम्हें राज की ग्या स्वयमेव ॥
- २२. जी हो तारा में जिम चद्रमा काई, धरण नाग रै माय। जी हो नरा में भरत तणी परे, आप राज करो सुखदाय॥
- २३. जी हो आप घणा वर्षी लगै, विल घणा सैकटा वास। जी हो वह लाखा वर्षी लगै, पालो नृप-पद सुख नी राज।।
- २४ जी हो पाप रहित सपूर्ण छतो, काई हरप गताप सहीत। जी हो परम आउखो पालज्यो, जाव शब्द मे अर्थ संगीत।। २५ जी हो इच्ट बल्लभजन आपरा काई, परिवार तेह संघात।
- जी हा राज हित्थणपुर नगर नो, पालज्यो रूडी रीत विख्यात।।
- २६. जी हो अन्य वहु ग्रामागर नगर नो काइ, जावत ही ए राज। जी हो करता विचरा इम कही, उच्चरे जय शब्द आवाज!!
- २७ जी हो शिवभद्र कुमर राजा थयो, मोटो हेमवंत जिम जाण। जी हो वर्णन तिणरो अति घणो, जाव विचर पुन्य प्रमाण।।
- २८ जी हो दोयसी ने अठावीसमी, आखी ढाल रसाल अपार। भिनन्तु भारीमाल ऋपिराय थी काइ, 'जय-जदा' मंपति सार॥

- १७. मणुण्णाहि भणामाहि "अभित्युणतो य एव वयानी-
- १८. जय-जय नदा । जय-जय भद्दा । भद्दे ते
- १६ अजिय जिणाहि, जियं पालयाहि, जियमञ्जे बमाहि
- २०. अजियं च जिणाहि सत्तुपत्रय जिय च पानेहि मिन-पत्रय (वृ० प० ५२०)
- २१. जियविग्योऽविय यगाहि त देव । मयणमण्झे इंदो इय देवाण (वृ० ५० ५२०)
- २२. चदो ह्य ताराण धरणो ह्य नागाण मरहो द्व मणुयाणं (वृ० प० ४२०)
- २३ बहुई वासार बहुइ वाममयाड बहुड वामनहुम्माड बहुई वामसयमहुम्माई
- २४. अणहसमग्गो हट्टतुट्टो परमाउ पानवाहि
- २४. इहुजणसंपरिवृष्टे हित्यणापुरम्म नगरस्म
- २६ अण्णेसि च बहुण गामागर-नगर जाव (म॰पा॰) विह्रराहि ति मद्दु जयजयसह पर्वजित (श ११।६१)
- २७. तए ण से निवभट्टे गुमारे राया जाते महया हिमवत \*\*\*वण्णको जाव रज्ज पमासेमाणे विहरङ ।

(म ११।६२)

ढाल: २२६

#### दूहा

- तिण अवसर ते शिव नृपति, कदा अन्यदा पेख ।
   गोभनीक तिथि करण दिन, नक्षत्र मुहूर्त्त देख ।।
- २. विस्तीर्ण असणादि चिहु, रंघावी नैं सार। मित्र ज्ञाति वलि निजग प्रति, परिजन नै परिवार।।
- ३ राजा क्षत्रिय प्रति विल, न्हैत-आमत्र स्वजन्न । तदनंतर मज्जन कियो, जाव विभूषित तन्न ॥

- १ तए ण मे सिचे राया अण्णया कयाइ सोभणिस तिहि-करण-दिवस-मुहुत-नक्यत्तिस
- २. विपुलं अमण-पाण-खाइम-साइमं उवक्यडावेति, उवक्यडावेता मित-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परिजण
- ३. रायाणो य पत्तिए य आमतेति, आमतेत्ता तओ पच्छा न्हाए जाव (सं० पा०) सरीरे

१ सू० ६८

२ अगसुत्ताणि ११।६१ में ऐसा पाठ नहीं है। वृत्ति में यह पाठ है। जयाचार्य को प्राप्त आदर्श में यह पाठ रहा होगा, पर अगसुत्ताणि में यह पाठ न होने के कारण यहा वृत्ति का पाठ उद्धृत किया गया है।

- ४. भोजन मंडप ने विषे, बैठी सुख आसन्न। ते मित्री ज्ञाती निजग, सयण जाव परिजन्न॥
- प्र राजा क्षत्रिय साथ फुन, विस्तीर्ण असणादि। एव जिम ने तामली, तेहनी पर सवादि॥
- इ. भोजन जीम्या जाव ही, वस्त्रादि सत्कार।सन्माने आदर दियो, सन्मानी ने सार।।
- ७ ते मित्र न्याति निजग प्रति, जाव नफर राजान । क्षत्रिय शिवभद्र नृपति प्रति, पृष्ठै पूछी जान ॥
- प्रकार के अपित बहुलोही लोह ना, कडाहा कुडेछा जेह। जावत तापस योग्य जे, भड पात्र ग्रही तेह।।
- ह जे तापस गगा तटे, वानप्रस्य वनवास। तिमहिज होत्तिया प्रमुख जे, जाव पूर्ववत तास।।
- १० तास समीपे मुड थई, दिसापोखी कहिवाय। तापसपणुज आदरे, लिये प्रव्रज्या नाय॥
- ११ प्रव्रज्या लीघे छते, अभिग्रह इसी ग्रहत। जावजीय करपे मुभे, छठ-छठ तप घर खत।।
- १२ तिमज जाव अभिग्रहे प्रते, ग्रहे ग्रही ने ताय। प्रथम छट्ठ अगीकरी, विचरे हरप सवाय॥

# \*रायऋषी शिव करैं रे पारणो ॥ (ध्रुपद)

- १३ तिण अवसर शिवराज ऋषी श्वर, धुर छठ पारण घाम जी । आतापना लेवा नी भूमि थी, पाछो विलयो ताम जी ॥
- १४ वल्कल वस्त्र पहिर निज ओरै, आयो छै निज स्थान जी। किढिण-वशमय तापस भाजन, विल कावड ग्रही जान जी।।
- १५ पूरव दिशि पोखी जल छाटै, पूरव दिशि में पेख जी। सोम नामे महाराय इद्र नो, लोकपाल ए देख जी।।
- १६ पत्थाणे परलोग साधन मग, तेह विषे प्रस्थित जी। तथा फलादिक ग्रहिवा अर्थे, गमन विषे प्रवृत्त जी।।
- १७ रक्षा करो शिवराज ऋषि प्रति, जे तिहा कद नै मूल जी। छाल पत्र फल-पुष्प वीज हरि, तसु आज्ञा अनुकूल जी।।
- १८. इम कही पूरव दिशि प्रति पसरै, कद जाव हरि लेय जी । वश भाजन कावड़ प्रति भरि ने, विल ग्रहि डाभ कुशेय जी ॥

- ४. भोयणमंडवसि सुहासणवरगए तेण मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि परिजणेण
- ४,६. राएहि य खत्तिएहि सिंद्ध विपुल असण-पाण-खाडम साडम एव जहा तामली (भ० २।३३) जाव (स० पा०) सक्कारेड, सम्माणेइ।
- ७ त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण रायाणो य खत्तिए य सिवभद्द च रायाण अपुच्छः, आपुच्छित्ता
- स. सुवहुं लोही-लोहकटाह-कडच्छुय तिवय तावसभडग गहाय
- ६ जे इमे गगाकूलगा वाणपत्या तावसा भवति, त चेव जाव
- १० तेसि अतिय मुडे भवित्ता दिमापोनिश्वयतावसत्ताए पन्वइए,
- ११. पञ्चइए वि य ण समाणे अयमेयात्त्व अभिगाह अभिगिण्हति—अप्पड मे जावज्जीवाए छट्ठ छट्ठेण
- १२ त चेव जाव अभिग्गह अभिगिण्हित्ता पढम छट्ट-क्खमण अवसपिज्जित्ताण विहरइ। (श० ११।६३)
- १३. तए ण से सिवे रायरिमी पढमछहुक्यमणपारणगिस आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ,
- १४ वागलवत्यिनयत्ये जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-सकाइयग गिण्हइ 'किढिण' ति वशमयस्तापसभाजनविशेपस्ततश्च तयो साकायिक—भारोद्वहनयत्र किढिणमाकायिक

(बृ० प० ५२०)

१५ पुरित्यम दिस पोक्सेड, पुरित्यमाए दिसाए मोमे महाराया 'महाराय' ति लोकपाल.। (वृ० प० ५२०)

१६ पत्थाणे पत्थिय 'पत्थाणे पत्थिय' ति 'प्रस्थाने' परलोकमाधनमार्गे 'प्रस्थित' प्रवृत्त फलाद्याहरणार्थं गमने वा प्रवृत्त (यु० प० ५२०)

- १७ अभिरवखा सिव रायरिसि अभिरव्या निव राय-रिसि, जाणि य तत्थ कदाणि य मूलाणि य तथाणि य पत्ताणि य पुष्फाणि य फलाणि य चीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणाउ
- १६ ति कट्टू पुरित्यम दिस पमरङ, पमरिता जाणि य तत्य कदाणि य जाव हरियाणि य ताङ गेण्ट्र, गेण्हिता किढिण-सकाइयगं भरेड, भरेता दब्भे य कुमे य

<sup>\*</sup>लय: पुज भीखणजी रो समरण

१ श० ११।५६

२. पाठ मे पुष्फ पहले है और फल बाद में है।

- १६. मूल सहित ते दर्भ कहीजै, मूल रहित कुश जान जी। सिमध इधन विल शाखा मोड़ी, ग्रहण करै छैपान जी।।
- २० जिहा निज ओरे तिहां आयने, भाजन कावड थाप जी। स्थान देवार्चन प्रति पूजी नें, लीपे शुद्ध करि आप जी।।
- २१ दर्भ अने विल कलश ग्रही कर, गगा महानदी आय जी। जल मज्जन ते जल करिने तनु, शुद्ध मात्र कर ताय जी।।
- २२ जलकीड तनु शुद्ध की घे पिण, जल किर अभिरत प्रीत जी। जल अभिषेक पाणी नो भरवो, साचवतो वर रीत जी।।
- २३ आयंते जल फर्श करण थी, चोखे असुनि करि दूर जी। परम सुचि थइ देव पितर नै, जलाजली कृत भूर जी।।
- २४ कलश माहै जे दर्भ गिंभत छै, तेह ग्रही निज हाथ जी। पाठातर नों अर्थ कह्यो ए, दर्भ कलग किहा आत जी।।
- २५. महानदी गगा थी उतरै, निज ओरे आवेह जी। दर्भ कुगे वालु करि वेदी, देवार्चन स्थान रचेह जी।।
- २६ सरए निर्मेथन काष्ठे करि, अरणि काष्ठ घसेय जी। अग्नि पाड़ वलि अग्नि संघुकी, ईंधन काष्ठ घालेय जी।।
- २७. अग्नि उजाली विल अग्नि नै, दक्षिण पासे देख जी।
  सप्त अंग स्थापै ते आगल, किह्यै नाम विशेख जी।।
  २८. सकथा वानप्रस्थ नै आगम, उपिष प्रसिद्ध ए जान जी।
  वल्कल स्थानक ज्योति-स्थान ए, अथवा पात्र नो स्थान जी।।
  २६ सय्या भड ने सय्या उपकरण, विल कमडल जेह जी।
  दड दीह ते दड कहीजै, जीव सहित निज देह जी।।
- ३० मधु घृत तदूल करीने, अग्नि प्रतै होमत जी। चरू चढावे विल द्रव्य रांघी, ए निज मत नो पंथ जी।।

- १६ सिमहाओ य पत्तामीट च गिण्हड़ 'दब्भे य' त्ति समूलान् 'कुमे य' त्ति दर्भानेव निर्मूलान् 'सिमहाओ य' त्ति सिमध —काष्टिकाः 'पत्तामोड च' तरुणाखामोटितपत्राणि । (वृ० प० ५२०)
- २० जेणेच मए उडए तेणेव उवागच्छड, उवागच्छता किढिण-सकाइयग ठवेड, ठवेत्ता वेदि वड्ढेई वड्ढेता उवलेवणसमज्जण करेड 'वेदिवड्ढेइ' ति वेदिका—देवाचंनस्थानं वर्द्धनी— बहुकरिका ता प्रयुक्त इति वर्द्धयति—प्रमार्जयतीत्यर्थ (वृ० प० ५२०)
- २१ दब्मकलसाहत्यगए जेणेव गगा महानदी तेणेव जवागुच्छड, जवागच्छिता गग महानदि स्रोगाहेड, स्रोगाहेता जलमञ्जण करेड्

'जलमज्जण' ति जलेन देहगुद्धिमात्र (वृ० प० ५२०)

२२ जलकीड करेड, करेता जलाभिमेयं करेड 'जलकीड' ति देहगुद्वाविष जलेनाभिरत 'जलाभिमेय' ति जलक्षरणम् (वृ० प० ५२०)

- २३. आयते चोक्खे परममुङभूए देवय-पिति-कयकज्जे 'कायते' त्ति जलस्पर्शात् 'चोक्खे' त्ति अशुचिद्रव्यापग-मात्, किमुक्त भवति ?— 'परमसूङभूए' ति 'देवयपिइ-कयकज्जे' ति देवताना पितृणा च कृत कार्य—जलाजलिदानादिक येन म तथा (वृ० प० ५२०)
- २४ दन्मकलसाहत्थगए

  'दन्मसगन्भकलसगहत्थगए' ति ववचित्

  (वृ० प० ५२०)
- २५ गगाओ महानदीओ पच्चुत्तरङ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाएहि य वेदि रएति,
- २६. सरएण अर्राण महेइ, महेत्ता अग्गि पाँडेइ, पाँडेता अग्गि संधुक्केइ, सधुक्केता सिमहाकट्ठाइ पिक्खवइ 'सरएण अरिण महेइ' ति 'शरकेन' निर्मन्यनकाष्ठेन 'अरिण' निर्मन्यनीयकाष्ठ 'मथ्नाति' घर्षयति (वृ० प० ४२०)
- २७ अग्गि उज्जालेइ, उज्जालेता अग्गिस्स दाहिणे पासे सत्तगाइ समादहे, त जहा---
- २८,२६. सकह वक्कल ठाण, सिज्जाभड कमडलु ।
  दंडदारु तहप्पाण, अहे ताइ समादहे ॥
  तत्र सकथा—तत्समयप्रसिद्ध उपकरणविशेष स्थान—
  ज्योति स्थानं पात्रस्थान वा शय्याभाण्ड—शय्योपकरण दण्डदारु—दण्डक. आत्मा—प्रतीत इति

(वृ० ५० ५२०) ३० महुणा य घएण य तदुलेहि य अग्गि हुणइ, हुणित्ता चरु साहेइ

'चर्ष साहेति' ति चरु —भाजनविशेषस्तत्र पच्यमानद्रव्यमपि चरुरेव त चरु विल मित्यर्थ. 'साधयति' रन्धयित (वृ० प० ५२०)

- ३१ विल करिने विश्वानर पूजै, पूजी अग्नि उदार जी। आया अतिथि तणी कर पूजा, पछै करै निज आहार जी।
- ३२ तिण अवसर शिवराज ऋषी ते, दूजो छठ सुविचार जी। अगीकार करीने विचरे, द्वितीय पारण अधिकार जी।।
- ३३ भूमि आतापन थकी वली नै, वल्कल पहिरी तेह जी। इम जिम प्रथम पारणे भाख्यो, तिम इहा सर्व कहेह जी।।
- ३४ णवर दक्षिण दिशि जल छाटै, जम नामे महाराय जी। शेप तिमज जाव अतिथि पूजनै, करै पारणो ताय जी।।
- ३५ तिण अवसर शिवराज ऋषी ते, तृतीय छठ सुविचार जी। अगीकार करीने विचरे, हिव पारण अधिकार जी।।
- ३६ भूमि आतापन थकी वली नै, वल्कल पहिरी तेह जी। इम जिम प्रथम पारणे भाख्यो, तिम इहा सर्व कहेह जी।।
- ३७ णवर पश्चिम दिशि जल छाटै, वरुण नामे महाराय जी। शेष तिमज जाव अतिथि पूजने, करै पारणो ताय जी।।
- ३८ 'तिण अवसर शिवराज ऋपी ते, तुर्य छठ घर प्यार जी। अगीकार करीने विचरे, हिव पारण अधिकार जी॥
- ३६ भूमि आतापन थकी वली ने, वल्कल पहिरी तेह जी। इम जिम प्रथम पारणे भाख्यो, तिम इहा सर्व कहेह जी।।
- ४० णवर उत्तर दिशि जल छाटै, वेसमण महाराय जी। शेप तिमज जाव अतिथि पूजने, करै पारणो ताय जी।।
- ४१ ढाल भनी दोयसौ गुणतीसमी, भिक्षु भारीमाल ऋपिराय जी। सपति दोय सौ बीस अज्जा मुनि, 'जय-जश' हरण सवाय जी।।

- ३१ विलवइस्सदेवं करेइ, करेता अतिहिपूयं करेइ, करेता तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेति ।
  - (श० ११।६४)
    'विलवइस्सदेव करेइ' त्ति विलना वैश्वानरं पूजयती,त्यर्थ. 'अतिहिपूय करेइ' त्ति अतिथे.—आगन्तुकस्य
    पूजा करोतीति । (वृ० प० ५२०)
- ३२ तए ण से सिवे रायरिसी दोच्च छट्टुक्खमण उव-सपज्जित्ताण विहरइ। (श० ११।६५) तए ण से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्टक्खमणपारणगसि
- ३३ आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता एव जहा - पढमपारणग
- ३४ नवर (स॰ पा॰) दाहिणग दिस पोक्खेइ, दाहिणाए दिसाए जमे महाराया ' सेस त चेव जाव तक्षो पच्छा अप्पणा आहारमाहारेड। (श॰ ११।६६)
- ३५ तए ण से सिवे रायरिसी तच्चे छ्टुक्खमण उव-सपिन्जित्ताण विहरड । (श० ११।६७) तए ण से सिवे रायरिसी तच्च छ्टुक्खमणपारणगिस
- ३६,३७ आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता वाग-लवत्यिनयत्थे '—सेस त चेव नवर (स० पा०) पच्चित्यम दिस पोक्खेइ, पच्चित्यमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्याणे पित्यय अभिरक्खड सिव रायिरिसि सेस त चेव जाव तओ पच्छा अप्पणा आहार-माहारेइ।
- ३८ तए ण से सिवे रायरिसी चउत्य छट्टुक्खमण उव-सपिज्जत्ताणं विहरइ। (श० ११।६६) तए ण से सिवे रायरिसी चउत्थे छट्टुक्खमणपारण-गसि
- ३६,४० आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागल-वत्यित्यत्थे एव त चेव नवर (स० पा०) उत्तरिद्यस पोक्खेइ, उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्याणे पत्थिय अभिरक्खे सिव रायिरिस, सेस त चेव जाव तको पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ।

(भा० ११।७०)

#### दूहा

- १. तिण अवसर गिवराज ऋषि, छठ-छठ अतर रहित । दिशा चक्रवाले करी, जाव आतापन सहित॥
- २ इम तपसा करता छता, प्रकृति भद्र करि ताय।
  प्रकृत स्वभावे विनय करि, पतली च्यार कपाय।।
- ३ विल मृदु मार्दव गुण करि, विनय करीने जान।
  प्रतिपत्व वचन अर्छ इहा, तज्या मच्छर ने मान।।
- ४ कदाचित ते अन्यदा, तदावरणी कर्म। तेहने क्षय उपशम करी, थई आतमा नर्म॥
- प्रभला अर्थ ने जाणवा, विचारवाज तदर्थ। सन्मुख चेप्टावत ने, ए ईहा नो अर्थ।।
- ६. अर्थ अपोह तणो इसो, घर्म घ्यान चितवत। वीजा पक्ष रहित ते, निर्णय करिवो तत॥
- ७ मग्गण समुच्चय घर्म नी, आलोचना करंत। अधिक घर्म आलोचना, तेह गवेपण द्वत॥
- द. इम करता नै ऊपनो, विभग नाम अज्ञान'। ते विभंग उपना छता, देखें इह विघ जान॥
- सप्त द्वीप इहलोक में, सप्त समुद्र सुतंत।
   जाणे नहि देखें नहि, सात समुद्र उपरत।।

\*िव-अभिलापी राजऋषी विव ॥ (श्रुपद)

- १०. तिण अवसर जिवराजऋपी ने, उपनां एहवा अध्यवसाय। अतिशेप ज्ञान दर्शन मुभ उपनो, अतिशेप समस्त कहाय॥
- ११ इम निम्चे इण लोक विषे छै, द्वीप समुद्र सात-सात। इण उपरत विच्छेद गया छै, अधिक नही आख्यात॥
- १२ इम चितव आताप भूमि थी, पाछो वली नै ताह्यो। वल्कल छाल ना वस्त्र पहिरी नै, पोता नै और आयो।।
- १३. वहु लोह पात्र कडाही ने कुडछा, यावत भंड कहायो। वंशमय भाजन कावड ग्रही ने,

आयो नगर हत्यिणापुर माह्यो ॥

१४ तापस नो मठ छै तिहा, आवे भड स्थापन कर ताय। नगर हित्यणापुर त्रिक सिंघाडक, जाव महापथ माय।।

- तए ण तम्म मिवम्म रायरिमिस्म छ्ट्ठछ्ट्ठेण अणिक्यित्तंणं दिमाचक्कवानेण जाव (म० पा०) अ।यावेमाणस्म
- २ पगद्रभद्दयाएः "पगद्रपयणुकोहमाणमायान्तीभयाए
- ३ मिजमह्वसपन्नयाए'''विणीययाए
- ४ अण्णया कयाद तयावरणिज्जाण कम्माण ग्रंकोवसमेण
- ५-८ ईहापूहमग्गणगवेमण करेमाणस्य विव्भगे नाम नाणे समुप्यन्ते । मे ण तेण विव्भगनाणेण समुप्यन्तेण पामति ।

- श्वस्सि लोए मत्त दीवे सत्त ममुद्दं, तेण पर न जाणइ न पासइ। (म ११।७१)
- १०. तए ण तस्म सिवस्म रायरिमिस्स अयमेयारूवे अज्मत्यिए "समुप्पिज्जत्या—अत्यि ण ममं अतिमेसे नाणदंमणे ममुप्पन्ने
- ११ एव खलु अम्मि लोए मत्त दीवा मत समुद्दा, तेण पर बोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य—
- १२ एव सपेहेइ, सपेहेता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्यिनयत्ये जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ।
- १३ सुबहु लोही-लोहकडाह-कडच्छुय जाव (स॰ पा०) भडग किढिण सकाइयग च गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेंव हत्यिणापुरे नगरे
- १४ जेणेव तावसावसहे तेणेव जवागच्छइ, जवागच्छिता भंडनिक्सेव करेइ, करेता हित्यणापुरे नगरे सिंघाडग तिग जाव (स०पा०) पहेसु

<sup>\*</sup>लय: मंदोदरी मांदो पति पेखी

१ अंगसुत्ताणि भाग २ ण० ११।७१ मे मूल पाठ 'नाणे' है। 'अण्णाणे' पाठान्तर मे रखा गया है।

४०८ भगवती-जोड़

- १५. वहु जन आगल एम परूपै, अहो देवानुप्रिया । जी। अतिशेष ज्ञान दर्शन मुफ उपनो, लिह पूर्ण संपति ताजी।। १६. इम निश्चै इण लोक विषे छै, द्वीपोदिघ सात-सात। इण उपरत विच्छेद गया छ, अधिक नही आख्यात।। १७. शिवं राजऋषि पे वचन ए सुणने, नगर हत्थिणापुर माहि। सिंघाडक यावत महा पथे, वहु लोक वदै माहोमाहि।।
- १८. इम निश्चै हे देवानुप्रिया ! शिव राजऋषि इम भाखै। पूर्ण ज्ञान दर्शन मुक्त उपनो, सात-सात द्वीपोदिघ दाखै॥
- १६ सात द्वीप ने सात समुद्र थी, अधिक नहीं लोक माहि। किण रीते इस एह वारता, मन्ये वितर्के ताहि।।
- २० तिण काले तिण समय विषे, हिवे समवसरचा वर्द्धमान । परषद वीर वदी सुण वाणी, पहुती निज-निज स्थान ।।
- २१. तिण काले तिण समय विषे, जे भगवत श्री महावीर! तास जेष्ठ शिष्य अंतेवासी, इद्रभूती गुण-हीर!।
- २२ दूजा शतक नैं पचमुदेशे, जेम कह्यों तिम कें'णो। आज्ञा लेगोचरी फिरता नगर मे, साभलिया जन वेणो।।
- २३. बहु जन इम कहै जाव परूप, शिवराजऋषी इम भाख। अपनो पूर्ण ज्ञान दर्शण मुक्त, त चेव पूर्ववत दाखे॥ २४. जाव सप्त-सप्त द्वीप समुद्र थी, अधिका नही लोक मांय। किण रीते ए बात वितर्के, ए लोक तणी सुण वाय॥
- २५ गोतम ने मन श्रद्धा प्रवर्ती, जेम निर्भय उद्देश। द्वितीय शतक ने पचमुद्देशे, आख्यो तेम कहेस।। २६. वीर कनै आय प्रश्न पूछे, इम, जन करै पुर में वात। शिव राजऋषि कहै पूर्ण ज्ञान मुक्त, लोक में द्वीपोदिंघ सात-सात।।
- २७. ते किम हे भगवत । वात ए ? दोय सौ ने तीसमी ढाल । भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' मगलमाल ॥

- १५ बहुजणस्स एवमाइनखइ जाव एवं परूवेइ—अत्थि ण देवाणुष्पिया । मम अतिसेस नाणदंसणे समुप्पन्ने
- १६ एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। (११।७२)
- १७ तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हित्यणापुरे नगरे सिघाडगितग जाव (स० पा०) पहेसु वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खड जाव परूवेइ—
- १८ एव खलु देवाणुप्पिया । सिवे रायरिसी एवमाइनखइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया । मम अतिसेमे नाणदसणे समुप्पन्ने एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा
- १६ तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य । से कहमेय मन्ते एव ? (श० ११।७३) अत्र मन्येशव्दो वितर्कार्थ (वृ० प० ५२०)
- २० तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढं परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ परिसा पडिगया। (ग० ११।७४)
- २१ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई नाम अणगारे
- २२ जहा वितियसए नियठुद्देसए (भ० २।१०६-१०६) जाव घरसमुदाणस्स भिनखायरियाण अडमाणे बहुजण सद्द निसामेइ 'वितियसए नियठुद्देसए' ति -द्वितीयशते पञ्चमोद्देशक इत्यर्थ (वृ० प० ५२०)
- २३,२४ वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—एव खलु देवाणुष्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुष्पिया ! त चेव जाव (स० पा०) वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य । में कहमेय मन्ने एव ? (श० ११।७५)
- २५,२६ तए ण भगव गोयमे वहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म जायसङ्ढे जहा नियठुदेसए (भ० २।११०) जाव (स० पा०) समण भगव महावीर एव वदासी वहुजणमद्द निसामेमि—एव खलु देवाणुष्पिया । सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव पख्वेड अत्थि ण देवाणुष्पिया । मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने एव खलु अस्सि लोए सत्तदीवा सत्त समुद्दा, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। (श० ११।७६)

२७ से कहमेय भते । एव ?

### दूहा

- १. इंद्रभूति डम पूछिया, तत्र वोर्जे जगनाथ। बहु जन माहोमाही कहै, तिमज सर्वे अवदात।।
- २. छठ-छठ आतापन छना, उपनी विभंग अज्ञान। सप्त द्वीप देखें अछें, सप्त उदिघ पिण जान॥
- ३. तिणसू ते जाणै अछै, मुभ सपूरण ज्ञान । द्वीप समुद्र अधिका नहीं, लोक इतोज पिछान ॥
- ४ जाव भट निक्षेप करि, ह्थिणापुरे सिंघाट। तिमज द्विपोदिय सप्त थी, उपरत विच्छेद घार॥
- ५. तिण अवसर बहु जन तदा, शिव राजऋषि रै पास। ए अर्थ निसुणी करी, दिल मे घारी तास।।
- ६ तिमज मप्त-सप्त उपरत जे, द्वीपोदिघ विच्छेद। इम जन भाखें ते मिथ्या, ए जिन वचन सवेद।।
- ७. हू पिण गोयम । इस कहू, इस निज्वै करिताय। जंबूद्वीपज आदि दे, द्वीप असम्ब कहाय॥
- लवण आदि दे समुद्र छै, ते सहु ना सस्थान ।
   एक सरीखा बाटला, सर्व वृत्त पहिछान ।
- ह. विधि अनेक विस्तार थी, दुगुण-दुगुण विस्तार।इम जिम जीवाभिगम मे, आख्यो ए अधिकार।।
- १०. जाव स्वयभूरमण दिंघ, तिरिछे लोके जान। असत्यात द्वीपोदिंघ, हे श्रमण आयुष्मान!

चा०—एव जहां जीवाभिगमे उम एणे वचने करी जे कह्यु ते इम— दुगुणादुगुणं पङ्प्पाएमाणा पिवत्यरमाणा श्रीभाममाण-वीड्या कहिता अवभास-मान वीची ते शोभायमान तरगा, समुद्र अपेक्षाय ए विशेषण । ब्रहुउष्पलकुमुद निल्णमुभगमोगिष्वयपुटरीयमहापुटरीयमयपत्तसहस्सपत्तमयसहस्मपत्तपफुल्लकेसरोय-विया—घणा निकमित उत्पलादिक ना जे केशरा तिण करिके मयुक्त । जे तिहा उत्पल ते नीलोत्पलादिक, कुमुद ते चंद्रविकाशी, पुटरीक ते धवला, बली रोप पद ते लोक रिंह थी जाणवा । पत्तय-पत्तय परमवरवेडया परिविधत्ता पत्तय-पत्तेयं वणसटपरिक्षित्तत्ति ।

११. छै प्रभु ! जंबूद्वीप में, द्रव्य तिके पहिछाण। वर्णे करी सहीत पिण, वर्णे रहित पिण जाण?

- १-3 गोयमादि । समणे भगव महावीरे भगव गोयम गृव वयागी—जण्ण गोयमा ! गृव यनु गृयम्म गिवम्म रायरिमिम्म छट्ठछट्ठेणं अणिनियन्तेण… आयावेमाणम्म…विकागे नाम नाणे ममुष्यन्ते, त नेव सक्व भाणियव्य ।
- ४ जाव भंडिनिक्सेय करेड, करेत्ता हित्यणापुरे नगरे मिघाटग एव खलु अस्मि नोए मत्त दीवा मत्त ममुद्दा तेण पर योच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य।
- ५ तए णं तस्य निवन्स रायरिनिस्स अतिए एयमद्ठ सोच्चा निसम्मः
- ६ एव खलु अन्मि लोए मत्त दीवा मत्त ममुद्दा तेण पर बोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य तण्ण मिच्छा ।
- ७ अह पुण गोयमा ! एवमाइन्यामि जाव पस्त्रेमि— एव पत्तु जंबुद्दीवादीया दीवा।
- द नवणादीया समुद्दा मठाणओ एगविहिविहाणा 'ग्गविहिविहाण' त्ति एकेन विधिना—प्रकारेण विधान व्यवस्थान येषा ते तथा मर्वेषां वृत्तत्वात् (वृ० प० ५२०)
- श्वित्यारको अणेगविहिविहाणा एव जहा जीवाभिगमे
   (३।२५६)
   'वित्यारको अणेगविहिविहाण' ति द्विगुर्णद्विगुण
   विन्तारत्वात्तेपामिति। (वृ० प० ५२०)
- १० जाव सयभूरमणपञ्जवमाणा अस्सि तिरियलोए असन्येज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो ! (श० ११।७७)
- वा०—एव जहा जीवाभिगमे उत्यनेन यदिह सूचित तदिव—
  'दुगुणादुगुण पडुप्पाएमाणा पितत्यरमाणा अभिभातमाणवीडया' अवमाममानिवचय गोभमानतरगा,
  ममुद्रापेक्षमिद विद्येषण, बहुप्पलकुमुदनिलणमुभगसोगिधयपुडरीयमहापुडरीयसयपत्तमहस्सपत्तसयसहस्सपत्तपफुत्लकेमरोववेया' वहूनामुत्पलादीना प्रफुल्लाना—
  विकमिताना यानि केणराणि तैष्पचिता.—मयुक्ता
  ये ते तथा, तत्रोत्पलानि—नीलोत्पलादीनि कुमुदानि—
  चन्द्रवोध्यानि पुण्डरीकाणि—सितानि शेपपदानि तु
  रुखिगम्यानि 'पत्तेय पत्तेय पडमवरवेइयापरिक्यित्ता
  पत्तेय पत्तेय वणसढपरिक्यित्त' ति।

् (वृ० प० ५२०,५२१)

११. अत्य ण भते । जबुद्दीवे दीवे दव्वाइ—सवण्णाइ पि अवण्णाइ पि

४१० भगवती-जोड

- १२ गंचे करी सहीत पिण, गंच रहित पिण ताय। फुन रस करी सहीत पिण, विल रस रहित कहाय? १३ फर्शे करी सहीत पिण, फर्ज रहित पिण होय।
- अन्नमन्न माहो माहि ते, गाढा वध्या सोय ?
- १४. फर्श्या माहोमाहि ते, जावत माहोमाहि। रहै जुसमभर घटपणे, प्रश्न गोयम ए ताहि?
- १५ हंता अत्थि जिन कहै, पुद्गल वर्ण सहीत। धर्म अधर्मास्ति प्रमुख, वर्णादिके रहीत॥
- १६ छै प्रभु ! लवण समुद्र मे, द्रव्य वर्णादि सहीत ? एव पूरवली परै, इमज घातकी रीत ॥
- १७. इम यावत सयभूरमण, समुद्र लग कहिवाय। हता अत्थि जिन कहै, पूरवली पर न्याय॥

\*वाणी प्रभु नी वारू हो ॥ (घ्रुपद)

- १८ तिण अवसर महा परपदा, साभल जिन वाणी हो। हिये घार हरखी घणी, विल सतोपाणी हो।।
- १६ वीर प्रभुप्रति वदनै, किर नमण सुखोती हो। जे दिशि थी आवी हुती, तेहिज दिशि प्होती हो।।
- २० तिण अवसर हित्थणापुरे, सिघाडग आखै हो। यावत मोटा पथ में, वहु जन इम भाखै हो।।
- २१ जे भणी अहो देवानुप्रिया ! शिव राजऋषि इम वोलै हो। पूरण दरजण ज्ञान ते, मुभ थयो अतोलै हो।।
- २२. सप्त द्वीप इह लोक मे, दिघ सातज होई हो। एहथी अधिका की नही, ए अर्थ समर्थ न कोई हो।।
- २३ भगवत श्री महावीर जी, इम भाखे वाणी हो। छठ-छठ तप शिवराजऋषि, करता पहिछाणी हो।।
- २४. आतापन लेता छता, भद्र विनीत स्वभावे हो। पतला क्रोधादिक चिज, मृदु मार्दव भावे हो॥
- २५ कदा अन्यदा तेहनै, तदावरणी कर्मी हो। तेहनै क्षयोपशम करी, आतम थई नर्मो हो॥
- २६ ईहापोह मग्गणा, गवेपणा करतो हो। विभंग अज्ञान समुप्पनो, द्वीप सप्त देखतो हो।।
- २७ देखें सप्तोदिध वली, निह अधिक विनाणो हो।
- तिण मन माहै जाणियो, मुभ पूरण नाणो हो।।
  २८ इम चितव आतापना भूमि थकी विल ताहि हो।
  वल्कल वस्त्र पहीर नै, निज ओर आई हो।।

- १२ सगंधाङ पि लगधाउँ पि, मरमाङ पि अरसाइ पि,
- १३ मफासाइं पि अफासाइ पि, अण्णमण्णवद्धाडं 'अन्नमन्नवद्धाड' ति परम्परेण गाटाघ्लेपाणि

(वृ० प० ५२१)

- १४ अण्णमण्णपुट्टाङ जाव (मं० पा०) घडताए चिट्ठति ?
- १५ हता अस्य । (१०० ११।७८) 'सवन्नाइपि' त्ति पुद्गलद्रव्याणि 'अवन्नाइपि' त्ति धर्मास्तिकायादीनि (वृ० प० ५२१)
- १६,१७ अस्य ण भते । लवणसमुद्दे द्व्वाइ—मवण्णाउ पि (ण० ११।७६) अस्य ण भते । धायडमडे दीवे द्व्वाइ—मवण्णाइ पि (ग० ११।८०) अस्य ण भते । सयभूरमणसमुद्दे द्व्वाड : 'ह्ता अस्य । (ण० ११।८१)
- १८ तए ण मा महितमहाितया महस्वपिरमा समणस्स भगवओ महावीरम्म अतिए एयमद्ठ मोच्चा निसम्म हट्टतुट्टा
- १६. समण भगव महावीर वदः नमसः, वदिता नम-सित्ता जामेव दिम पाउन्भूया तामेव दिम पटिगया। (श. ११।८२)
- २०. तए ण हत्यिणापुरे नगरे मिघाटग-तिग जाव (म० पा०) पहेमु बहुजणो अण्णमण्णम्म एवमाटाग्यङ ।
- २१ जण्ण देवाणुष्पिया ! सिवे रायरिमी एवमाङाग्रङ जाव परुवेइ—अत्थि ण देवाणुष्पिया ! ममं अतिमेने नाणदसणे समुष्पन्ने ।
- २२. एव खलु अम्सि लोए सत्त दीवा गत्त ममुद्दा तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य । त नो एणट्ठे समट्ठे।
- २३-२६ समणे भगव महावीरे एवमाडक्यः जाव परचेः-एव छलु एयम्स सिवस्म रायरिनिस्म छट्ठछट्ठेण त चेव जाव भडनिक्सेवं करेः ।

- २६ लोह पात्रादिक भंड प्रति, कावड़ नैं लेई हो। हित्थणापुर तापस मठे, भंड निक्षेप करेई हो।।
- ३० हित्थणापुर श्रुगाटके, यावत महापथो हो। पूर्ण दशण ज्ञान मुभ, उपनो है ततो हो॥
- ३१. सप्त-सप्त द्वीपोदिंघ, अधिका नहिं कोई हो। शिव वच मुण जन पिण कहै, ते मिण्या जोई हो।।
- ३२ भगवत श्री महावीर जी, भाग्वै डम वाणी हो। जंबुद्दीप लवणोदिंघ, आदि देई पहिछाणी हो।।
- ३३. तिमज जाव पूरव परै, द्वीप असंख कहतो हो। विल असल्याता उदिघ, हे श्रमण आउखावतो हो।।
- ३४. तिण अवसर शिव राजऋषि, वहु जन पे ताह्यो हो। एह अर्थ निसुणी करी, घारी हिय माह्यो हो॥
- ३५ एहनों उत्तर स्यू हुई ? ए उपनी शका हो। कोई पे उत्तर मिले, ए वांछा कखा हो।।
- ३६. उत्तर ए दीघां थका, पर अन्य पिछाणी हो। मानै कै मानै नहीं, ए वितिगिच्छा जाणी हो॥
- ३७ मित भेद पाम्यो विलि, ते विश्रम कहियै हो। हं क्यू ही जाणू नहीं, कलूप भाव इम लहिये हो।।
- ३८. राजऋपि शिव नो तदा, सिकत काक्षित किण हो। जाव कलुप पाम्यां तणो, गयो विभंग ततिखण हो।।
- ३६ शिव राजऋपि ने ऊपनां, एहवा अध्यवसायो हो। भगवत श्री महावीर जी, तपधारी ताह्यो हो॥
- ४० आदि करण जिन धर्म नी, तीरथ तेह करता हो। जाव सर्व जानी प्रभु, सर्व वस्तु देखता हो।।
- ४१. धर्म चक्र आकाश गत, जाव महस्राव माही हो। नियम अभिग्रह सहित जिन, यावत विचरै त्याही हो।।
- ४२ महाफल निश्चे ते भणी, तथा नाम अरिहतो हो । नाम गोत्र भगवत नो, सुणिया लाभ अत्यतो हो ।।
- ४३ जिम जववाड में कहां, तेम इहा पिण कहिये हो। जाव अर्थ ग्रहिवा तणो, फल अधिकेरो लहिये हो।।
- ४४. हू जावू तिण कारणे, वीर प्रमु ने वदु हो। जावत हू सेवा करू, भाव पाप निकदु हो॥
- ४५ ए सेवा मुफ इह भवे, परभव हित सुख नै हो। क्षम शिव ने अनुगामिका, होस्यै प्रत्यख नै हो।।
- ४६ एम विचारी आवियो, तापस मठ तामो हो। घणा लोह पात्रादिके, जाव कावड ग्रही आमो हो।।
- ४७. तापस नां स्थानक थकी, वाहिर नीकरियो हो। विभग अज्ञाने रहित ने, पुर मध्य थइसचरियो हो।।

- ३०. हित्यणापुरे नगरे निघाटम जाव (म० पा०)पहेमु \*\*\*
  मम अतिसेमे नाणदमणे ममुप्यन्ते
- ३१. एव खलु अस्ति लोग् मत्त दीवा मत्त ममुद्दा, तेण पर वोच्छित्ना दीवा य ममुद्दा या तए ण तस्म मिवग्म रायरिसिम्म अतिय एयमट्ठ मोच्चा निमम्म जाव तेण पर वोच्छित्ना दीवा य समुद्दा य तण्ण मिच्छा,
- ३२. समणे भगव महावीरे एवमाउक्यड—एव खलु जंबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा
- ३३. त चेव जाय अमरीज्ञा दीयममुद्दा पण्णत्ता समणा-उसी । (ण ११।८३)
- ३४ तए ण में सिवे रायिन्मी बहुजणम्म अतियं एयमट्ठ मोच्चा निसम्म
- ३५. सकिए कथिए
- ३६. वितिगिच्छिए
- ३७. भेदसमावन्ने कलुमसमावन्ने जाए यावि होत्या
- ३८. तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्म सिकयस्स किय-यस्स जाव (स० पा०) कलुमसमावन्नस्म से विद्माग नाणे खिप्पामेव परिवटिए। (ण ११।८४)
- ३६ तए णं तस्स सिवम्म रायरिनिम्म अयमेयारुवे अज्झत्विए ""समुप्पिज्जत्या—एव खलु ममणे भगव महावीरे
- ४०. तित्यगरे आदिगरे जाव मन्वण्णू मन्वदरिसी
- ४१. अ।गासगएण चक्केण जाव सहस्रववणे उज्जाणे अहापडिस्व जाव (म. पा) विहरइ।
- ४२ त महप्फल खलु तहारूवाण अरहंताण भगवताण नामगीयस्स वि सवणयाए
- ४३ जहा ओववाइए (सू॰ ५२) जाव गहणयाए (पा॰ टि॰)
- ४४ तं गच्छामि ण समण भगव महावीर वदामि जाव पज्जुवासामि
- ४५ एय णे इहभवे य परभवे य हियाए मुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ
- ४६. ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छड 'सुवहु लोही-लोहकडाह जाव (स॰ पा॰) किंडिण-सकाइयग च गेण्हड ।
- ४७ तावसावसहाओ पिंडनिक्खमइ, पिंडनिक्खिमत्ता पिंड-वृडियिविञ्भगे हृत्यिणापुर नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छ ।

- ४८ जिहां सहस्रांय वन अछै, जिहां प्रभु तिहां आवे हो। तीन वार वंदना करै, विल शीस नमावे हो।।
- ४६ निहं अति नेडो हूकडो, यावत वे कर जोड़ी हो। सेव कर स्वामी तणी, निज मान मरोडी हो।।
- ५०. वीर प्रभू तिण अवसरे, शिव नामा नृप ऋप ने हो। धर्म देशना धुन करी, दाखै महा परपद ने हो।।
- ५१. दोय घर्म देखाविया, शिवपुर ना सावक हो। यावत वेह आराधिया, आज्ञा तणो आराघक हो।।
- ५२ रायऋपि जिव तिण समे, वीर प्रभु नी वाणी हो। धर्म मुणी हरस्यो घणो, खघक जिम जाणी हो।।
- ५३. जाव ईंगाणे आयने, नोह पात्र प्रमुख नै हो। एकाते न्हाखै सह, यावत विल कावड नै हो।।
- ५४. पच मुण्टि नोचन कियो, पोतैहीज पिछाणी हां। वीर प्रभुप्रति वंदनै, वोनै वर वाणी हो।।
- ४५ ऋपभदत्तं सजम लियो, तिमहिज चारित्र नीघो हो। अग इग्यार भणे मुनि, तिमहिज प्रसीघो हो।।
- प्रदः तिणहिज विध कहिवो सहु, जाव सर्व दुख अतो हो। महामुनी मुक्ते गया, जिव ऋषिराय महंतो हो।।

### द्रहा

- ५७ राजऋपी शिव ने इहा, सिद्धि परूपी सोय। ते सघयणादिक करी, आगल हिव अवलोय।।
- प्रः \*हे भगवत ! इसो कही, गोतम भगवतो हो। वीर प्रत वदन करी, शिर नाम वदतो हो।।
- ५६ प्रभृ । जीव बहु सीभता, किसे सघयण सीभै हो ? वच्चऋपभ नाराच ते, जिन कहै मुक्ति लही जे हो।।
- ६० इम जिम जनवाइ विषे, आख्यो जिम कहियै हो। धुर सघयण संठाण पट, शिव पद ते लहियै हो।।
- ६१ जघन्य सात कर ऊचपणै, धनुष्य पाचसै जाणी हो। उत्कृष्टी अवगाहना, सीफै भन्य प्राणी हो।।
  - ६२. अष्ट वर्ष जाको सही, जघन्य आयु सिद्ध थावै हो। कोड पूर्व उत्कृष्ट ही, शिव सुख विलसावै हो।।
  - ६३. रत्नप्रभा प्रमुख पृथ्वी, सौधर्मादि विमान हो। सिद्धिशला हेठे विल, न वसे निद्ध सुज्ञान हो॥

- ४८. जेणेव महमववणे उज्जाणे जेणेव ममणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छः, उवागच्छिता ममण भगव महावीर तिक्युत्तो वदः नमंगः
- ४६. नच्चासन्ने नातिदूरे जाव (स॰ पा॰) पजलिकडे पज्जुवासङ। (श॰ ११। ६५)
- ५० तए ण समणे भगव महावीरे निवन्स रायरिनिन्म तीमे य महतिमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेट
- ५१ जाव आणाए बाराहए भवड । (ण० ११। ६६)
- ५२ तए ण में मिवे रायरिगी ममणम्स भगवओ महावीर-स्म अतिय धम्म मोच्चा निमम्म जहा खदओ (भ० २।५२)
- ५३ जाव उत्तरपुरित्यम दिनीभाग अवक्कमङ, अवक्कम-मित्ता सुबहु लोही लोहकडाह जाव (स० पा०) किढिण-मकाइयगं च एगते एडड
- ५४ सयमेव पचमुद्विय लोय करेड, करेत्ता ममण भगव महावीर व्यापन व्याप
- ४४,४६ एव जहेव उसभदत्तो (भ० ६।१५१) तहेव पव्वडको तहेव एक्कारम अगाङ अहिज्जङ तहेव सव्व जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। (ग० ११।८७)
- ५७. अनन्तर शिवराजर्षे मिद्धिक्ताः ता न महनना-दिभिनिरूपयन्निदमाह— (वृ० प० ५२१)
- ५८ भतेति। भगव गोयमे ममण भगव महावीर वदः नमंमइ, वदिता नमसित्ता एव वयामी—
- ५६ जीवा ण भते । निज्ज्ञमाणा क्यरिम्म सघयणे सिज्ज्ञति ? गोयमा ! वररोमभणारायसघयणे सिज्ज्ञति ।
- ६० एव जहेव भोववाइए (सू० १८५-१६५) तहेव । सघयणं संठाण तत्र सस्याने पण्णा सस्थानानामन्यतरस्मिन् निद्ध-यन्ति । (वृ० प० ५२१)
- ६१. उच्चत उच्चत्वे तु जपन्यतः सप्तरित्तप्रमाणे उत्कृप्टतम्तु पंचधनु शतके (यु० प० ५२१)
- ६२. ब्राउय च वायुपि पुनर्जंपन्यतः मातिरेकाण्टवपंप्रमाणे उत्गुष्ट-न्तु पूर्वंकोटोमाने (यु.० प० ५२१)
- ६३. परिवमणा
  परिवमना पुनरेवं—रत्नप्रमादिपृथिवीना गौधर्मादीना
  नेपत्प्राग्मारान्ताना धेनविदेषाणामधो न परिव-सन्ति सिद्धाः (यु० प० ५२१)

रेलम् : सीता रामे राची हो

- ६४ सर्वार्थसिद्ध ऊपरे, शिखर अग्र थी जाणी हो। बार योजन ऊची अछै, सिद्धिंगला पहिछाणी हो।।
- ६५ लाख पैताली योजनु, लावी चौडी कहियै हो। ऊपर इक योजन तिहा, लोकातज लहिये हो।।
- ६६ ते योजन नो ऊर्ध्व जे, गाऊ एक कहै छै हो। तेहना छठा भाग मे, सह सिद्ध रहै छै हो।।
- ६७. इम पूर्व जे आखिया, संघयणादिक द्वार हो। सिद्धिगडिया अनुक्रमे, सिद्ध तणो अधिकार हो।।
- ६८. सिद्ध वसै त्या लग इहां, कह्यो लेश थी सागै हो। पडिहया सिद्धा कहिं, इत्यादिक आगै हो।।
- ६६ जावत वाधा रहित ते, सिद्धा सुख अनुभवै हो। सेव भते । इह विधे, गोतमजी कहवै हो।।
- ७०. वेसी ने इकतीसमी, आखी ढाल अमदा हो। भिक्ष भारीमाल ऋपिराय थी,

'जय-जश' सुख आनंदा हो ॥ एकादशकते नवमोद्देशकार्थः ॥११॥६॥

ढाल : २३२

## दूहा

१ नवम उद्देशक अत में, लोकांते सिद्धवास।
ते माटै दगमें हिवे, लोक स्वरूप अभ्यास।।
२ नगर राजगृह ने विपे, यावत गोतम स्वाम।
वीर प्रते वंदी करी, इम वोलै शिर नाम।।
\*हिये घर रे, श्री प्रभुजी ना वचन अगीकर रे। (श्रुपट)
३ कतिविध लोक कह्यो भगवते । जिन कहै च्यार प्रकार।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव ए, विल शिष्य पूछे सार।।

वा०—'दव्बओ लोए' ति द्रव्य थकी लोक वे प्रकारे—आगम थकी अने नोआगम थकी । तिहा आगम थकी द्रव्य लोक ते लोक शब्द ना अर्थ नों जाण, ते लोक शब्द ना अर्थ ने विषे उपयोग रहित हुवै इत्यर्थ । अनुपयोगो द्रव्य इति वचनात्। उपयोग-रहित द्रव्य, एहवु कह्यु छै। ते वचन थकी लोक शब्द ना अर्थ नो जाण छै, पिण तेहने विषे उपयोग नहीं, ते माटै तेहने द्रव्य लोक

- ६४ किन्तु सर्वार्थसिद्धमहाविमानग्योपरितनारस्तूपिकाग्रा-दूर्ध्व द्वादश योजनानि व्यतिक्रम्येपस्त्राग्भारा नाम पृथिवी। (वृ० प० ५२१)
- ६५ पचनत्वारिशद्योजनलक्षप्रमाणाऽऽयामविष्कम्भाभ्या .... योजने लोकान्तो भवति (वृ० प० ५२१)
- ६६ तस्य च योजनस्योपरितनगव्यूतोपरितनपड्भागे सिद्धा परिवसन्तीति (वृ० प० ५२१)
- ६७ एव सिद्धिगडिया निरवसेसा भाणियव्वा एवमिति— पूर्वोक्तमहननादिद्वारनिरूपणक्रमेण 'सिद्धि-गण्डिका' सिद्धिस्वरूपप्रतिपादनपरा ।

(वृ०प० ५२१)

- ६८ इयं च परिवसनद्वार यावदर्थलेशतो दिशाता, तत्पर-तस्त्वेच 'किह् पिंडहया सिद्धा' : इत्यादिका..... (वृ० प० ५२१)
- ६६ जाव— अञ्चाबाह सोवख अणुहोति सामय सिद्धा। (श० ११।८८) ७०. मेव भते <sup>1</sup> सेव भते <sup>1</sup> ति। (श० ११।८६)

- १ नवमोद्देशकस्यान्ते लोकान्ते सिद्धपरिवसनोक्तेत्यतो लोकस्वरूपमेव दशमे प्राह— (वृ० प० ५२१)
- २ रायगिहे जाव एव वयासी-
- ३ कितिबिहे ण भते । लोए पण्णत्ते ?
  गोयमा । चउव्विहे लोए पण्णत्ते, त जहा—दव्वलोए
  खेत्तलोए काललोए भावलोए। (श० १११६०)
  वा०—'दव्वलोए' ति द्रव्यलोक आगमतो नोआगमतश्च
  तत्रागमतो द्रव्यलोको लोकशब्दार्थं जरतत्रानुपयुक्त
  'अनुपयोगो द्रव्य' मिति वचनात्

<sup>\*</sup>लय: तू चामड़ा री पुतली! भजन कर हे

मगल शब्द आश्रयी द्रव्य नु लक्षण भाष्यकार कहै छै-

अनुपयुक्त कहिता मगल शब्द ना अर्थ नै विषे उपयोग रहित । मगल शब्द नो अनुवासित—भावित एहवो वक्ता आगम थकी द्रव्य मगल किह्यै । ज्ञान लब्धि युक्त मगल शब्द नै विषे अनुपयुक्त, इण हेतु थकी आगम थकी द्रव्य मगल कह्यो ।

अने नोआगम थकी द्रव्य तीन प्रकारे—जाणक शरीर, भव्य शरीर, जाणक शरीर भव्य शरीर थकी व्यतिरक्त—एव त्रिविध। तिहा लोक शब्द ना अर्थ नौ जाण, तेहनो शरीर मृत अवस्था मे ज्ञान अपेक्षा करिक भूत—अतीत काले लोक शब्द ना अर्थ नो जाण हुतो तेण करी। जिम ए घृत नो घडो हुतो ते घृत काढ्या पछ पिण घृत नो घडो कहै। तिम लोक शब्द ना अर्थ नो जाण हुतो, तेहनो ए शरीर छै, ते जाणवावाला नो शरीर द्रव्य रूप। ते भणी जाणक शरीर द्रव्य लोक कहियै। नोआगम थकी द्रव्य लोक नो ए प्रथम भेद। इहा नो शब्द सर्व निर्पेध नै विषे।

तथा लोक शब्द नो अर्थ जाणस्यै जे जीव, ते जीव नो शरीर चेतन सहित भावि लोकपर्यायपणे करी, मबु घटवत । ए मधु घडो थास्यै । तेहनी परै ए लोक शब्द ना अर्थ नो जाणणहार थास्यै ए भव्यशरीर द्रव्य लोक । नो शब्द इहा पिण सर्व निपेधहीज ।

हिनै जाणक शरीर भिवक शरीर थी व्यतिरिक्त द्रव्य लोक किह्यै छै— जीव-अजीव, रूपी-अरूपी, सप्रदेश-अप्रदेश वली नित्य-अनित्य जे द्रव्य छै, ए द्रव्य प्रतै हे शिष्य । तू जाण । इहा पिण नो शब्द सर्व निपेध ने विषे आगम शब्दवाची जान ने सर्वथा निपेध थकी । इति द्रव्य लोक ।

'खेत्तलोए' त्ति क्षेत्र रूप लोक क्षेत्र लोक । आकाश ना प्रदेश ऊर्द्ध अध अने तिरहा लोक ने विषे अने ज्ञानी जिन सम्यक प्रकारे देखाड्चो ते क्षेत्र प्रते हे शिष्य । तू जाण । इति क्षेत्र लोक ।

'काललोए' ति काल समयादि ते रूप लोक—काल लोक। समय, आव-लिका, मुहूर्त्त, दिवस, अहोरात्र, पख, मास, सवत्सर, जुग, पल्य, सागर, उत्सर्पिणी, पुद्गल परावर्त्तन ए काल लोक।

'भाव लोए' ति भाव लोक वे प्रकार—आगम थकी अने नोआगम थकी। तिहा आगम थकी लोक भव्द ना अर्थ ने विषे उपयोग सहित। भाव रूप लोक भाव लोक इति। अने नोआगम थकी भाव औदियकादि, ते रूप लोक भाव लोक।

इहा नो शब्द सर्व निपेध ने विषे अथवा मिश्र वचन । आगम ने ज्ञानपणा थकी क्षायिक क्षायोपशमिक ज्ञान स्वरूप भाव विशेष करिकै वली मिश्रपणा थकी औदयिकादि भाव लोक ने इति ।

४ क्षेत्रलोक प्रभु । किते प्रकारे ? जिन कहै तीन प्रकार। नीचो तिरछो ने विल ऊची, क्षेत्रलोक त्रिहु धार।। शाह च मगल प्रतीत्य द्रव्यलक्षणम् -
आगमओऽणुवउत्तो मगलसद्दाणुवासिओ वत्ता ।

तन्नाणलद्धिजुत्तो उ नोवउनोत्ति द्रव्य ।।

ते नोआगमतस्तु ज्ञशरीर-भव्यशरीर-तद्व्यतिरिक्तभेदात् त्रिविध , तत्र लोकशव्दार्थज्ञस्य शरीर मृतावस्य ज्ञानापेक्षया भूतलोकपर्यायतया घृतकुम्भवल्लोक
स च ज्ञशरीररूपो द्रव्यभूतो लोको ज्ञशरीरद्रव्यलोक ,
नोशव्दश्चेह सर्वनियेधे

तथा लोकशब्दार्थ ज्ञास्यित यस्तस्य शरीर मचेतन भाविलोकभावत्वेन मधुषटवद् भन्यशरीरद्रव्यलोक नोशब्द इहापि सर्वेनिपेध एव

- ज्ञागरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तश्च द्रव्यलोको द्रव्याण्येव धर्मास्तिकायादीनि, आह च— जीवमजीवे रूविमरूवि सपएसअप्पएसे य । जाणाहि दव्वलोय निच्चमणिच्च च ज दव्व ।। इहापि नोशब्द सर्वनिपेधे आगमशब्दवाच्यस्य ज्ञानस्य सर्वथा निषेधात्
- 'खेत्तलोए' ति क्षेत्ररूपो लोक' स च क्षेत्रलोक आह च—

  आगासस्स पएसा उड्ढ च अहे य तिरियलोए य ।

  जाणाहि खेत्तलोय अणतिजणदेसिय सम्म ।।

  'काललोए' ति काल समयादि तद्रूपो लोक काललोक आह च—

  समयावली मुहुत्ता दिवसअहोरत्तपक्खमासा य ।

  सवच्छर जुगपिलया सागरउस्सिप्पिपिरयट्टा ।।

  'भावलोए' ति भावलोको द्वेद्या —आगमतो नोआगमतश्च तत्रागमतो लोकगच्दार्यज्ञस्तत्र चोपयुक्त भाव
  रूपो लोको भावलोक इति नोआगमतस्तु भावा—

  औदियकादयस्तद्रूपो लोको भावलोक ,

  इह नोशव्द सर्वनिपेधे मिश्रवचनो वा आगमस्य

  ज्ञानत्वात् क्षायिकक्षायोपगमिक ज्ञानस्वरूपभाविव

  जैपेण च मिश्रत्वादौदियकादिभावलोकस्येति ।

(वृ० प० ४२३)
४ खेत्तलोए ण भते । कितिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा । तिविहे पण्णत्ते, त जहा —अहेलोयखेत्तलोए तिरियलोयखेत्तलोए, उड्ढलोयखेत्तलोए।
(भ० ११।६१)

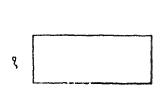
'वा०—इहा अप्ट प्रदेश रूचक, तेहनों हेठलो प्रतर, तेह नीचै नवसौ योजन लगै तिर्थंग लोक छै। तिवार पछी नीचै रह्या माटै नीचलो क्षेत्र लोक कहियै, ते साधिक मात राज प्रमाण छै।

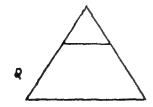
तथा 'तिरिय' ति—हचक नी अपेक्षाए नवसी योजन ऊंची तेह्यी नीचै पिण नवसी योजन—ए अठारैमी योजन मान तिर्यगरूपपणा थकी तिर्यंग लोक क्षेत्र लोक कहियै।

तथा 'उद्ढत्ति'—ितियंग लोक नै ऊपर देमोन सात राज प्रमाण ऊर्द्ध भागे वर्तें ते माटै ऊर्द्धलोक क्षेत्रलोक कहियै।

अथवा जिण लोक नै विषे क्षेत्र नां म्बभाव थकीज द्वव्या नो अशुभ परिणाम छै तेहथी—अधोलोक क्षेत्र लोक । तथा मध्यम अनुभाव क्षेत्र अति शुभ नहीं, अति अशुभ नहीं, तदूप लोक ते तियंक् लोक क्षेत्र लोक । तथा द्रव्य नो शुभ परिणाम घणो जिहा ते ऊर्द्धलोक क्षेत्र लोक कहिये ।

- ४. प्रभु । अयोलोक खित्तलोक कतिविच ? जिन कहै सप्त प्रकार । रत्नप्रभा पृथ्वी यावत तल, सप्तम पृथ्वी घार ॥
- ६. प्रभु ! तिरियलोक खित्तलोक कतिविध ? जिन कहै असम्ब प्रकार । जंबू द्वीप ने जाव, स्वयंभूरमण समुद्र विचार ॥
- ७ प्रभु । ऊर्द्वलोक नित्तलोक कतिविध ? जिन कहै पनर प्रकार । वार कल्प ग्रैवेयक अनुत्तर, सिद्ध जिला मुविचार ॥
- द्र. अघोलोक प्रभृ । किण संठाणे ? जिन कहै तप्राकार'। अघोमुख जे सरावला ने, सठाणे सुविचार।।
- ह. तिरियलोक प्रभु । किण सठाणे ? जिन कहै भल्लिरि आकार।
   ऊंचपणा थी अल्प कहीजै, तिरछो महाविस्तार।।





वा॰ — इह किलाप्टप्रदेशो रुचकम्तस्य ! वाधस्तनप्रत-रम्याधो नवयोजनशतानि यावत्तिर्यग्लोकम्तत. परे-णाधः ग्यितत्वादधोलोक साधिकमप्तरज्जुप्रमाणः 'तिरियलोयसेनलोए' त्ति रुचकापेक्षयाऽध उपरि च नव नव योजनशतमानम्तिर्यग्रूपत्वात्तिर्यग्लोक स्तदूपः क्षेत्रलोकम्तिर्यग्लोकक्षेत्रलोकः,

'उट्ढलोयमेत्तलोए' नि तिर्यग्लोकस्योपरि देणोनमप्त-रज्जुप्रमाण कद्ध्वंभागवत्तित्वादृध्वं लोकस्तद्रूप क्षेत्र-लोक कद्ध्वंलोकक्षेत्रलोकः,

अथवाऽघ —अगुम परिणामो बाहुत्येन क्षेत्रानुभावाद् यत्र लोके द्रव्याणामगावधोलोक., तथा तिर्यट्— मध्यमानुभाव क्षेत्र नातिशुभ नाग्यत्यशुभ तदूर्मा लोक-स्तियंग्लोक तथा ऊद्ध्यं—शुभ परिणामो बाहुत्येन द्रव्याणा यत्रामावूद्ध्यंनोकः,

(वृ० प० ५२३, ५२४)

५ अहेलोयसेत्तलोए ण भते । कितिबिहे पण्णते ? गोयमा । सत्तिबिहे पण्णत्ते, त जहा—रयणप्पभापुड-विअहेलोयसेत्तलोए जाव अहेयत्तमापुढविअहेलोय-ग्रेत्तलोए। (ग० ११।६२)

६ तिरियलायक्षेत्रलाए ण भते । कितिविहे पण्णत्ते ? गोयमा । अमखेज्जिविहे पण्णत्ते, त जहा—जबुद्दीवे दीवे तिरियलायक्षेत्रलाए जाव मयभूरमणसमुद्दे तिरि-यलायक्षेत्रलाए । (श० १११६३)

७. उड्ढलीयखेत्तनीए ण भते । कितिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पन्नरमिविहे पण्णत्ते, त जहा —मोहम्म-कप्पउड्ढलीयवेत्तनीए जाव (म० पा०) अच्चय-कप्पउड्ढलीयवेत्तनीए गेवेज्जविमाणउड्ढलीयखेत्त-नोए अणुत्तरिवमाणउड्ढलीयवेत्तनीए ईमिप०भार-पुढविउड्ढनीयखेत्तनीए। (श० १११६४)

 अहेलोयखेतलोए ण भने ' किंसिटिए पण्णते ?
 गोयमा! तप्पागारमिटिए पण्णते । (ग० ११।६५)
 'तप्पागारसिटए' ति तप्र — उडुपक अधोलोक सेंत्र-लोकोऽधोमुखशरावाकारसस्यान इत्ययं.

(वृ० प० ५२४)

६ तिरयलोयखेत्तनोए ण भते । किसठिए पण्णत्ते ? गोयमा <sup>1</sup> झल्लरिसठिए पण्णत्ते ।

(श० ११।६६)

'झरलरिसठिए' त्ति अल्पोच्छ्रायत्वान्महाविस्तारत्वाच्च तिर्यग्लोकक्षेत्रलोको झल्लरीसस्थित.

(वृ० प० ५२४)

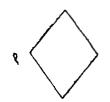
- १०. ऊर्द्धलोक प्रभु । किण सठाणे ? तब भाखें जगतार। ऊर्द्ध मुखे जे मृदग होवै, कहियै ते आकार।।
- ११ हे प्रभु । लोक किसे सठाणे १ हिव जिन उत्तर एह। सुप्रतिष्ठक सठाणे है, न्याय विचारी लेह।।

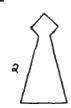
बाo—सुप्रतिष्ठित स्थापनक, ते इहा आरोपित वारकादि ग्रहण करियै तथा विध करिकै हीज लोक सरीखापणा नी उपपत्ति यकी इति वृत्तौ। ऊधा सरावला ऊपर कलशादिक स्थापन करैं, ते आकारे जाणवू। अनै टवा मे कह्यो आखला नै आकारे।

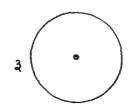
१२ हेठै तो विस्तारवत छै, मध्य साकडो जाण। जिम सप्तम जत प्रथम उद्देशक, जाव अत कर आण।।

बा० — जहा सत्तमसए इत्यादि जाव शब्द थकी इम जाणवु — उप्पि विसाले अहे पिलयकसिठए, मज्से वरवइरिवगिहिय उप्पि उद्धमुइगाकारसिठए तिस च ण सासयिस लोगिस हेट्टा विचिठण्णिस जाव उप्पि उद्धमुइगाकारसिठयिस उप्पण्ण-नाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ इत्यादीति ।

- १३ हे भगवत । अलोक छैते, कह्यो किसे सठाण ? जिन कहै पोलागोला ने, आकारे तेह पिछाण।।
- १४. अघोलोक नै विशे प्रभुजी ! स्यू जीवा सुविशेप ? तथा जीव ना देश कहीजै, जीवा तणा प्रदेश ?
- १५. इम जिम दशमा शतक तणें जे, प्रथम उद्देशे न्हाल। जिम पूर्व दिशि कही तिम कहिनू, यावत अद्धाकाल।।
- १६ तिरछे लोक प्रभु । स्यू जीवा ? एव चेव अशेप। इमज उर्द्ध लोक क्षेत्र लोके पिण, णवर इतो विशेप।। १७ अरूपी ना भेद हैं षट. अद्धा समयो नाहि।
- १७ अरूपी ना भेद छै षट, अद्धा समयो नाहि। रिव प्रकाश थकी उपनो ते, काल नहीं छै ताहि।।







४. भ० १०।५

- ११ लोए ण भते । किंसठिए पण्णत्ते ? गोयमा । सुपइट्ठगसठिए पण्णत्ते ।
- १२ हेट्ठा विच्छिण्णे मज्झे सखित्त (स० पा०) जहा सत्तमसए (७।३) पढमुद्देसए जाव अत करेद्र। (श० ११।६८)
- १३ अलोए ण भते । किसठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! झुसिरगोलसठिए पण्णत्ते । (श० ११।६६) 'झुसिरगोलसठिए' त्ति अन्त शुपिरगोलकाकारो

(वृ० प० ५२४) १४. अहेलोयखेत्तलोए ण भते ! कि जीवा जीवदेसा जीवपदेसा

- १५ एव जहा इदा दिसा तहेव निरवसेस भाणियव्व जाव अद्धासमए। (श० ११।१००) दशमशतेप्रथमोद्देशके यथा ऐन्द्री दिगुक्ता तयैव निरवशेषमधोलोकस्वरूप भणितव्य (वृ० प० ५२४)
- १६ तिरियलोयक्षेत्तलोए ण भते । कि जीवा एव चेव । उड्ढलोयक्षेत्तलोए वि, नवर
- १७ अरूवी छिव्विहा, अद्धासमयो नित्य ।
  (श० ११।१०१)
  ऊद्ध्वंलोके तु रिवप्रकाशाभिन्य ग्यकालो नास्ति
  तिर्यगद्योलोकयोरेव रिवप्रकाशस्य भावाद् अतः
  पडेव त इति । (वृ० प० ५२४)

- १८. लोक विषे स्यू जीव प्रभुजी ! बीजे शतक तास। उद्देश दशमें तिण ठामे, पूछ्घो लोकाकाश।।
- १६. णवर सात प्रकार अरूपी, राघ धर्मास्तिकाय। धर्मास्ती नो देश नही छै, लोक पूर्ण पूछाय।। २० धर्मास्ती ना विल प्रदेशक, अधर्मास्तिकाय। तेहनो देश नही छे तेहना प्रदेश वहु कहिवाय।। २१. आगासित्थ नो खघ नही छै, आगासित्थ नो देश। तास प्रदेश काल ए सातूं, शेप तिमज मुचिशेप।।

२२ द्वितीय जतके तास, दगमा उद्देश मभे ।
पूछ्घो लोकाकाग, तिहा अरूपी पर्चावय ।।
२३ लोकाकाग आधार, तिण ठामे वाछ्घो निहा ।
अपर भेद सुविचार, पच कह्या उण कारणे ।।
२४ पूर्ण लोक मभार, इहा आकाग आधेय छै ।
सप्त भेद सुविचार, वे भेद आकाग तणा गिण्या ।।

वाo—तिहा दूजा शतक ना १० उद्देशा मे आकाश रूप नोक मे धर्मास्ति-कायादिक नी पूछा करी। तिण कारणे आकाशास्ति ना व भेद नहीं लिया। अनै इहा पचास्तिकाय समुदाय रूप लोक ने विषे पूछा करी तिणम् आकाशास्ति ना पिण वे भेद लिया। इण हेते वीजे शतक ५ भेद अनै इहा सात भेद निया।

२५ १ हे भगवत । अलोक विषे स्यू जीवा इम जिम जाण। दुने गतक उद्देश दशमे, कह्यो तेम पहिछाण।। २६. नी जीवा नो देश जीव ना, तिमहिज जावत उक्त। अगुरुलघुते अनत अगुरुलघु, गुण करने सयुक्त।। २७ सर्वाकाश नो भाग अनतम्, कहियै लोक आकाश। तेह लोकाकाश करिने ऊणो, ए जिन वचन प्रकाश ।। २८ अघोलोक ना एक आकाश, प्रदेश विपे भगवान। स्यू जीवा कै देश जीव ना, जीव प्रदेश पिछान।। २६ तिहां अजीव कहीजै कै विल, अजीव देश प्रदेश ? गोतम ए पट प्रश्न पूछ्चा, उत्तर दियै जिनेश।। ३० नो जीवा ते खघ आश्रयी, आस्तो जीव न पाय। वह जीव तणा वह देश अने वलि, वह प्रदेश पिण थाय।। ३१ वह अजीव पिण ह्वं तिण ठामें, अजीव ना वह देग। अजीव ना वह प्रदेश ह्वं, ए पाचूइ लहेस।। चा०-एक प्रदेश ने निपे जीव नी अनगाहना नथी ते माटै खघ आश्री जीव न कह्या। अने जीव-देश ते घणा जीव ना एकेक देश ने अवगाहन थकी १८ लीए ण भते । कि जीवा · · · · जहा वितियसए अन्यिउद्देसए (४० २।१३६), लीयागामे यथा द्वितीयणते दणमोद्देणक उत्यर्थ.।

(वृ० प० ४२४)

- १६,२० नवर—अरुवि अजीवा गत्तविहा पण्णत्ता, त जहा--धम्मित्वकाण् नीधम्मित्वकायस्यदेगे, धम्मित्व-कायस्य पदेगा, अधम्मित्वकाणः नीअधम्मित्वकायस्य देगे, अधम्मित्वकायस्य पटेगाः
- २१ नोजागामित्यकाए आगामित्यकायस्य देसे, आगाम-त्यिकायस्य पदेसा अदान्समा सेम त चेय । (श० ११।१०२)
- २२-२४ यथा द्वितीयणते दणमंदिणक उत्यर्थ. 'लोयागामे' ति लोकाकां विषयभूते जीवादय उक्ता एविमहा-पीत्यर्थ, 'नवर' मिति केवलमय विशेष तत्रारूपिण पचिवधा उक्ता उह तु मप्नविधा वाच्या तत्र हि लोकाकाणमाधारतया विविधतमत आकाण-भेदास्तत्र नोच्यन्ते इह तु लोकाऽस्तिकायममुदायरूप आधारतया विविधतोऽत आकाणभेदा अप्याधेया भवन्तीति सप्त । (वृ० प० ५२४)
- २५-२७ अलोए ण भते <sup>1</sup> िं जीवा .... प् एव जहा अत्यिकायउद्देगए (भ० २।१४०) अलोया-गामे, तहेव निरवमेन जाव मन्वागासे अणतभागूणे । (भ० ण० ११।१०३)
- २८ अहेलोगक्षेत्तलोगस्स ण भते । एगम्मि आगासपदेमे कि जीवा जीवदेमा जीवपदेसा ?
- २६. अजीवा अजीवदेसा अजीवपदेसा ?
- ३० गोयमा । नो जीवा जीवदेसा वि जीवपदेसा वि
- ३१. अजीवा वि अजीवदेसा वि अजीवपदेसा वि

वा॰ —नो जीवा एकप्रदेशे तेपामनवगाहनात्, वहूना पुनर्जीवाना देशस्य प्रदेशस्य चावगाहनात् उच्यते,

<sup>\*</sup> लय: तू चामड़ा नी पूतली । भजन कर हे

१ भ० २।१३६

जीव ना घणा देश पिण कहियै।

अने एक आकाण प्रदेश मे अजीवावि कहियै ते मपूर्ण धर्मास्तिकायादि अजीव द्रव्य एक आकाश प्रदेश में न अवगाहै तो पिण परमाणु द्विप्रदेशिकादि घणा सपूर्ण द्रव्य नो अवगाहक एक आकाण प्रदेश छै ते माटै अजीवावि कहियै।

अने अजीवदेसावि ते घणा द्विप्रदेशादि खघ आप आपरा देशना अव-गाहन थकी अजीव ना घणा देश कह्या।

अजीवप्पदेसावि कह्या ते धर्मास्ति अनै अधर्मास्ति ए विहु नो एकेक प्रदेश अवगाहै। अनै पुद्गल द्रव्य नै घणा प्रदेश अवगाहन थकी एक आकाश प्रदेश में अजीव ना घणा प्रदेश पिण कहियै।

३२. जीव देश ते निश्चे किर वहु, एकेद्रिय वहु देश। इक सयोगिक ए इक भागो, हिव द्विकयोग कहेस।। ३३. अथवा वहु एकेद्रिय केरा, वहु देश कहिवाय। एकवेइद्री जीव केरो, एक देश तिहा पाय।।

वा॰—इहा प्रश्नोत्तर इम कहिवू—अलोके हे भगवन् । स्यू जीव इत्यादि एवं जहा—इत्यादि अतिदेश थी इम कहिवू—

अलीयागासे ण भते । किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?

गोयमा । नो जीवा, नो जीवदेसा, नो जीवप्पदेसा, नो अजीवा, नो अजीवदेसा, नो अजीवप्पदेसा, एगे अजीवदन्त्रदेसे अगस्यलहुए अणते हि अगस्यल-हुयगुणेहि सजुत्ते सन्वागासे अणतभागूणे ति ।

तिहा सर्व आकाश अनत भाग ऊणो। एहनो ए अर्थ — लोक लक्षण समस्त आकाश ने अनतवे भागे करी न्यून सर्व आकाश अलोक इति।

३४ अथवा घणां एकेद्रिय केरा, घणा देश तिम ठाम। घणा वेइद्री जीव केरा, घणा देश छै ताम।। ३५ इम जिम दशमें शतक' देखाल्या, तीन भागा र माहि। विचलो भागो जे नहिं पाव, तेह सभव नाहि।।

# सोरठा

३६. वहु एकेद्री वहु देश, एक वेइद्री जीव ना। घणा देश सुविशेष, ए मध्यम भागो नथी॥

३७ एक आकाश प्रदेश, एक वेइद्री जीव ना। देश वहु न कहेस, ते माटै निव सभवै॥ ३८. एक प्रदेश जीय, एक वेइंद्री जीव ना, इक देशज अवलोय, तिण सु ए भागो नथी॥

इक देशज अवलीय, तिण सू ए भागो नथी।। चा॰—एक आकाण प्रदेश ने विषे एक वेडद्री ना घणा प्रदेश छै। पिण एक आकाण एक प्रदेश अवगाद्या मार्ट तेहने वेडद्रिय नो एक देशहीज कहियै।

३६. <sup>५</sup>जावत अथवा घणा एकद्रिय घणा देश छै तास । घणा अणिदिया ना वह देशज, इहा लग सर्व अम्यास ॥ जीवदेसावि जीवपएसावि' ति ।

- यद्यपि धर्मास्तिकायाद्यजीवद्रव्य नैकत्राकाशप्रदेशेऽच-गाहते तथापि परमाणुकादिद्रव्याणा कालद्रव्यस्य चावगाहनादुच्यते—'अजीवावि' ति
- द्वय्णुकादिस्कन्धदेशाना त्ववगाहनादुक्तम् —'अजीव-देसावि' त्ति
- धर्माधर्मास्तिकायप्रदेशयो पुद्गलद्रव्यप्रदेशाना चाव-गाहनादुच्यते—'अजीवपएसावि' ति ।
- ३२. जे जीवदेसा ते नियमं एगिदियदेसा
- ३३ अहवा एगिदियदेसा य वेइदियस्स देसे

३४. अहवा एगिदियदेसा य वेइदियाण य देसा

३५ एव मज्ज्ञिल्लविरहिओं 'एव मज्ज्ञिरलविरहिओं' त्ति दशमशतप्रदशितिवक-भगे। (वृ० प० ५२५)

३६ 'अहवा एगिदियदेसा य वेडिवयदेसा य' इत्येवरुपो यो मध्यमभगस्तिद्विरहितोऽसौ त्रिकभग ।

(वृ० प० ५२५) ३७,३८ द्वीन्द्रियस्यैकस्यैकत्राकाशप्रदेशे बहुवो देशा न सन्ति, देशस्यैय भावात् (वृ० प० ५२५)

३६ जाव अहवा एगिदियदेमा य अणिदियाण य देमा

<sup>\*</sup>लयः तुचामड़ानी पूतली! भजन कर हे १. भ०१०।६

- ४० जे जीव प्रदेशा ते निब्चै करि, घणां एकेंद्रिय तास । बहु प्रदेश ए इक्स्योगिक, हिवै द्विक्योग अभ्यास॥
- ४१. अथवा घणा एकेंद्रिय केरा, घणां प्रदेश तहंत। एक वेडिटिय जीव कैरा, घणा प्रदेश कहंत ॥
- ४२. अयवा चर्णा एकंद्रिय केरा, घणा प्रदेशज पाय। धणा वेइद्रिय जीव केरा, घणा प्रदेश कहाय।।
- ४३. दशम शतक' ने प्रथम उद्देश, तीन भागा अख्यात। तेह माहिलो पहिलो भागो, पावै निह् विग्यात ॥
- ४४ घणा एकेंद्रिय जीव केरा, घणा प्रदेश कहत। इक प्रदेश इक वेउद्री नो, ए धूर भंग न हत ॥

- ४५ एक आकाश प्रदेश, समुद्धात केवल विना। इक जतु नो विशेष. एक प्रदेश न सभवे॥
- ४६ एक प्रदेश मभार, केवल विण अन्य जीव नों। असंख्यात अववार, तिण सू ए घुर भग नहीं।।
- ८७. \*जाव पचेद्रां लग इम कहिवो, इक्रयोगिक भंग एक । द्विकसयोगिक वे भांगा पिण, घुर भागो नहि पेख ॥
- ४८. अणिदिया में उक्तयोगिक इक, द्विकयोगिक भग तीन। तीन् इ भागा नी सभव, केवलि इहा सुचीन।
- ४२. जेह अजोवा ते द्विविव कै, रूपी अजीव हेव। अरूपी अजीव र्छ वली, रूपी ना चिह भेव।।
- ५० अरुपी अजीव केरा, पच भेद कहिवाय। नो धमह्यिकाए भान्यो, ते खंब आश्री नाय।। ५१ घर्मास्ति नो देश पावै, ताम प्रदेश निहाल। अवर्मान्ति नां पिण वेह, पंचम अहा

वा॰—'नो बमित्यकाए' ति एक आकाण प्रदेश नै विषे संपूर्ण धर्मान्तिकाय न मंगवी। ते धर्मारित ने असङ्यात प्रदेण अवगाहीपणा थकी।

'धम्मित्यकायस्म देने' ति यद्यपि एक आकाण प्रदेण में धर्मास्ति नो प्रदेण हीज हम तो पिण देण नाम अवयव नो छै-'देशोवयव इति वचनात्' इण कारणे देण प्रदेण ना अभेदीपचार अभी अवयवमात्र नी विवक्षा करी नै अने निरणना तेहमें है तो पिण तेहती अविवक्षा करी ने धर्मास्ति नो देश डम कह्यो । एतले खंध ना अवयव नै देश कहिये अने जेहनी बीजो अग नहीं ने निरण नै प्रदेश कहिये। उहा अवयव नी अपेआये देश कहा, अने निरणपण पिण तेहने विषे छै, पिण तेहने वंछ्यो नयी। इण कारण धर्मास्ति नु देण कह्यूं।

४०. जे जीवपदेसा ने नियम एगिटियपदेसा

४१. बहुवा एगिटियपदेगा व वेटदियम्सपदेगा

४२. अहवा एगिदियपदेसा य वेऽदियाण य पदेसा

४३. एव आइल्निवरहिआं

४४ 'अहवा एनिदियम्स पएसा य वैदियम्स पएसा य' उत्येवस्पाद्यभगकविरहितस्त्रिमगः।

(व्० प० ५२५)

४५,४६ नाम्त्येवैकत्राकाणप्रदेशे केवलिसमुद्धातं विनैकस्य जीवस्यैकप्रदेशसम्बोऽसङ्यानानामेव भावादिति ।

४७ जाव पनिदिएम्

४=. अगिदिएमु तियमगी 'अणिदिएमु तियमगो' ति अनिन्द्रियेपुक्तभगकत्रयमपि सभवनीतिष्टत्वा तेषु तद्वाच्यमिति ।

(वृ० प० ५२५)

- ४६. जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा-रूपी अजीवा य अरुवी अजीवा य रुवी तहेव। 'स्वी तहेव' ति स्कन्धा. देणा. प्रदेणा अणवण्य-(बृ० प० ५२५)
- ५० जे अरुवी अजीवा ते पचिवहा पणाता त जहा-नोधम्मस्यिकाए
- ५१ धम्मत्यिकायस्य देने धम्मत्यिकायस्य पदेसे एव अधम्मत्यिकायस्म वि (म० पा०) अद्वासमए। (ग० ११।१०४)

बा०--'नी धम्मत्यिकाये' ति नो धर्मान्तिकाय एकत्राकाशप्रदेशे मभवत्यमस्यातप्रदेशावगाहित्वात-स्येति ।

'धम्मत्यिकायस्म' देमे त्ति यद्यपि धर्मास्तिकायस्य-कत्राकाणप्रदेशे प्रदेण एवास्ति तयापि देणोऽवयव इत्यनर्थान्तर्व्वेनावयवमात्रम्यैव विव क्षितत्वात् निरणतायाण्य तत्र मत्या अपि अविवक्षितत्वा-द्धर्मास्तिकायस्य देश इत्युक्त

<sup>\*</sup>लय: तू चामड़ा नी पूतली! भजन कर है १. भ० १०१६

'धम्मित्यकायस्स पदेस' ति धर्मास्तिकाय नो प्रदेश छै। इहां खध नां अवयव ने नथी वछ्घो, अश रहितपणु ते प्रदेश, ते निरशपणु वछवे करी प्रदेश कह्युं।

५२. तिरछा लोक तर्णे हे प्रभुजी । एक आकाश प्रदेश। स्यू जीवा ? जिम अघोलोक मे, आख्यो तेम कहेस।।

५३ इमहिज ऊचा लोक विषे पिण, णवर निह छै काल। सूर्य चार प्रतिविव नही त्या, अन्य चिज भेद निहाल।।

५४ लोक तणा इक गगन-प्रदेश विपे स्यू जीवा स्वाम । अधोलोक नै एक आकाश-प्रदेश विपे तिम ताम ॥

५५. अलोक नै प्रभु । एक आकाश, प्रदेश जीवा आदि।
श्री जिन भाखै नो जीवा विल, जीव देश निह लाघि॥
५६ तिमहिज जाव अनंत अगुरुलघु गुण करि सयुक्त तास।
सर्व आकाश तणेज अनतम भाग ऊण आकाश ॥

बा०-अलोक ना एक आकाश-प्रदेश ने विषे स्यू जीवा इत्यादि पूछा-हे गोतम । नो जीवा नो जीवदेसा त चेव जाव-जिम लोक ना प्रश्न नो उत्तर तिमहिज उत्तर। किहा लगै कहिवु? नो जीवप्पदेसा नो अजीवा नो अजीवदेसा नो अजीवप्पदेसा एगे अजीवदव्यदेसे इहा लगै उत्तर जाव शब्द मे जाणवो । जाव शब्द आगै एहवो पाठ -अगुरुयलहुए अणतेहि अगुरुयलहुयगुणेहि सजुत्ते सन्वागासे अणतभागूणं —अगुरुयलहुए त्ति प्रदेश अगुरुलघु छै अनत अगुरुलघु गुणे करी सयुक्त एहवू एक आकाश प्रदेश छै। वले ते सर्व आकाश अनत भाग-रूपपणे ऊण एक प्रदेश छै। इहा सन्त्रागामःस छडी विमिक्त कही, ते भणी सर्व आकाश नै अनत भागरूपपणे कण ते एक प्रदेश कह्यु। अनै इण उद्देशहीज पूर्वे अलोकाकाश नो प्रश्न इम पूछयो -अलोकाकाश नै निपे हे भगवत । स्यू जीवा ? इम जिम अस्तिकाय उद्देशो बीजा शतक नु दशमा नै भलायो तिहा नो जीवा इत्यादि छह बोल नु निपंध कह्य ,-एगे अजीवद व्वदेमे अगुरुयलहए अणतेहि अगुरुयलहुयगुणेहि सजुत्तं सन्वागासे अणतभागूणे। एहन् अर्थ-ते अलोकाकाश केहनु ? एक आगासित्यकाय अजीव द्रव्य नु देश छै। विल अलोका-काश केहवु छै ? अगुरुलघु छै पिण गुरुलवु नयी। अने अनता स्वपयीय पर-पर्याय रूप गुण अगुरुलघु स्वभाव करिकै सयुक्त । सन्वागासे अणतभागूणे अणत भाग ऊण सर्व आकाश छै एतलै सर्व आकाश नै अणतवे भाग लोक छै ते माटै अणतवे भाग ऊण सर्व आकाश अलोकाकाश नै कह्यु। इहा सव्वागासे प्रयम विभक्ति कही ते भणी ए अलोकाकाश लोक जितरो ऊण सर्व आकाश छै अने एक प्रदेश री पूछा मे सन्वागासस्स इहा छठी विभक्ति कही ते सर्वाकाश नै अणतभागरूपपणे ऊण ते एक प्रदेश छै इति तत्व ।

५७. द्रव्य थकी जे अघोलोक मे, अनत जीव द्रव्य हुत। विल अनंत अजीव द्रव्य छै, जीवाजीव अनत।।

प्रम. इमहिज तिरा क्षेत्र लोक मे, ऊर्द्ध लोक इम हुंत। जीव अनत अजीव अनता, जीवाजीव अनत।।

५६. द्रव्य थकीज अलोक विषे जे, जीव द्रव्य छै नाय। विल अजीव द्रव्य पिण निहं छै, जीवाजीव न पाय।। प्रदेशस्तु निरूपचरित एवास्तीत्यत उच्यते — 'धम्मित्यकायस्स पएसे' ति । (वृ० प० ५२५)

५२ तिरियलोगक्षेत्तलोगस्स ण भते । एगम्मि आगास-पदेसे कि जीवा ? एव जहा अहेलोगक्षेत्तलोगस्स तहेव

५३ एव उड्ढलोगलेत्तलोगस्स वि नवर—अद्धासमयो नित्य ।

अरुवि चउन्विहा। (श० ११।१०५)

५४ लोगस्स ण भते । एगम्मि आगासपदेसे कि जीवा ? जहा अहेलोगक्षेत्तलोगस्स एगम्मि आगासपदेसे। (श० ११।१०६)

४५ अलोगस्स ण भते । एगम्मि आगासपदेसे—पुच्छा । गोयमा । नो जीवा नो जीवदेसा

४६ त चेव जाव (स॰ पा॰) अणतेहि अगस्यलहुयगुणेहि संजुत्ते सञ्वागासस्स अणतभागूणे

(श० ११।१०७)

- ५७ दन्वओ ण अहेलोगखेत्तलोए अर्णता जीवदन्वा अणता अजीवदन्वा अणता जीवाजीवदन्वा
- **५** एव तिरियलोयखेत्तलोए वि एव उड्ढलोयखेत्तलोए
- ४६ दन्त्रको ण अलोए नेवत्यि जीवदन्त्रा नेवत्यि अजीवदन्त्रा नेवत्यि जीवाजीवदन्त्रा

- ६० एक आकाश अजीव द्रव्य नुं, देश तिहा जिन ब्रूण। जाव सर्व आकाश नु ए, भाग अनंतमे ऊण।।
- ६१ काल थकी जे अघोलोक ते, जाव न हवो किवार। न हवै न हरये ए नहिं तीन्, जाव नित्य गुविचार।।
- ६२ एवं जाव अलोक लगे जे, जाव शब्द रे माय। तिरिय लोक ने ऊर्द्ध लोक ए, काल थकी कहिवाय।।
- ६३ भाव थकी जे अधोलोक में, अनत वर्ण पर्याय। जिम वधक अधिकारे आख्यो, तेम इहा कहिवाय।।
- ६४ जाव अनत अगुरुलघु पजवा, एव जावत लोय। जाव शब्द मे तिरिय ऊर्द्ध है, भाव थकी ए जोय।।
- ६५ भाव थकीज अलोक विषे जे, नही वर्ण पर्याय। जावत नही अगुरुलघु पजवा, पुद्गलादिक ए नाय।।
- ६६. एक आकाम अजीव इन्य नु, देश तिहा जिन सूण। जाव सर्व आकाश अर्छ ए, भाग अनतमें ऊण।।
- ६७ शत इग्यारम वगम दोयसी, वत्तीसमी ए ढाल। भिनल भारीमाल ऋपिराय प्रसादे,

'जय-जश' मंगलमाल ॥

### ढाल: २३३

### दूहा

१ मोटो लोक कितो प्रभु । जिन कहै जवू एह। भ्यतर सगला द्वीप ने, यावत परिवि कहेह।।

इहा जावत शब्द थकी उम जाणवो---

समुद्दाण सन्बन्भतराइए मन्बखुड्डाए, बट्टे—तेल्लापूयमठाणसिंठए, बट्टे—रह्चक्कवालसठाणसिंठए, बट्टे—पुक्यरकिण्णयासठाणसिंठए, बट्टे—पिंटपुण्णचद-सठाणसिंठए, एग जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साड सोलससहस्साड दोण्णि य सत्तावीमे जोयणसए तिण्णि य कोस अट्टावीम च धणु-सय तेरस अगुलाइ अद्धगुल च किंचि विमेसाहियति।

\*गोयमजी । साभलजै चित ह्याय ॥ (ध्रुपद)

२. तिण काले ने तिण सम जी, पट सुर महाऋद्धिवत । यावत महासुख ना घणी जी, विल महाईश्वरवत'।

- \*लय: वधविया ! ए कुण आया रे आज
  - १ 'महासोक्ये' के बाद मूलपाठ में कोई शब्द नहीं है। किन्तु इसमें पहलें 'जाव' शब्द है। 'जाव' की पूर्ति इसी ग्रंथ के ३।४ से की गई है। वहां महामोक्खें के बाद 'महाणुभागे' पाठ है। यह जोड उसी के आधार पर होनी चाहिए।

- ६० एगे अजीवदन्त्रदेसे जाव (स० पा०) सन्त्रागासम्स अणसमागूणे।
- ६१ कालको ण अहेतीयगेसलोग् न कयाउ नासि, न कयाउन भवड, न कयाइन भविस्मड
- ६२ एव तिरियलोयपेत्तलोए, एव उड्ढलोयपेत्तलोए एव अलोए ।
- ६३ भावयां ण अहेलोयसेत्तलाए अणता वण्णपज्जवा (म० पा०) जहा खदए (भ० २१४५)
- ६४ जाव (ग॰ गा॰) अणता अगरयलहुयपण्जवा एव तिरियलोयसेत्तलोए, एव स्ट्टलोयरोत्तलोए एव लीए।
- ६५ भावओ ण अलीए नेवरिय वण्णपञ्जवा जाव (म॰ पा॰) नेवरिय गरुयलद्वयपञ्जवा
- ६६. एगे अजीवदन्वदेगे जाय (म० पा०) अणतभागूणे । (म० ११।१०८)

१ लोए ण भते ! केमहालए पण्णत्ते ? गोयमा । लयण्ण जबुद्दीवे दीवे सन्वदीवसमुद्दाण सन्वन्भतराए जाव 'परिक्सेवेण।

- २ तेण कालेण तेण समएण छ देवा महिड्ढीया जाव महासोक्या
- १ अलोक मे वर्णपर्यंव यावत् गुरुलघुपर्यंव नहीं होते, किन्तु अगुरुलघु पर्यंव होते हैं। इसलिए 'नेवित्य गरुयलहुयपज्जवा' यही तक पाठ होना चाहिए। किन्तु अगसुत्ताणि भाग २ पृ० ५०० पा० टि० ० के अनुसार वृत्तिकार को 'नेवित्य अगरुयलहुयपज्जवा' पाठ उपलब्ध हुआ। उसके अर्थ की मंगति विठाने के लिए वृत्तिकार ने उसकी ब्याख्या इस प्रकार की है—'अलोक मे अगुरुलघु पर्यंवो से युक्त द्रव्य पुद्गलो का अभाव है।' यदि वृत्तिकार को सुद्ध पाठ उपलब्ध होता तो इस व्याख्या की आवश्यकता ही नहीं होती।

- ३ जंबूद्वीप मेरू तणी जी, प्रवर चूलिका एह। सर्व थकी वीटी रह्या जी, सर्व प्रकारे जेह।।
- ४ हिव चिहु दिशाकुमारिका जी, महत्तरिका महाऋदि। धरणहार नेहनी तिके जी, चिहु विलिपड कर लिद्ध।।
- ५ जवूद्दीप चिहु दिशि विषेजी, वाहिर मुख कर तेह। ने च्यारू ऊभी रही जी, चिहु बलि पिंडी लेह।।
- ६ सम काले बलिपिडिका जी, बाहिरली दिशि माय। न्हाखे दिशाकुमारिका जी, बलि प्रभु भाखे वाय।।
- ७. एक एक ने देवता जी, चिहु विल-पिड तदर्थ। धरणि पड्चा पहिला तिके जी, जीव्र ग्रहण समर्थ।।
- द. हे गोतम ने देवताजी, पूर्वे भाखी जेह। तिण उत्कृष्ट जावत विल जी, सुर गित करने तेह।।

वा॰—इहा जाव शब्द कहिवा थी इम जाणवो—तुरियाए आकुलपणे करी, चवलाए—काया नै चापलपणे करि, चडाए—गित ना उत्कर्प योग यकी चड ते रोद्र गित करी, सीहाए— दृढ रिथरपणे करी, उद्धयाए— उद्धत ते अतिही दर्प गित करी, जडणाए—विपक्ष गित नै जीतवै करी, छेयाए—छेक ते निपुण गित करी, दिव्वाए—स्वर्ग नै विषे थइ एतलै प्रधान गित करी।

- ह जबू ना मेरू थकी जी, पूरव स्हामो पेख। एक देवता चालियो जी, तिण गित करिने देख।।
- १० इमहिज दक्षिण सामुहो जी, इक सुर चाल्यो तेम। इक सुर पश्चिम सामुहो जी, उत्तर साहमो एम।।
- ११. अची दिशि इक देवता जी, तिण गति चाल्यो ताम। इक सुर नीचो चालियो जी, तिणहिज गति कर आम!।
- १२ तिण काले ने तिण समे जी, किणहिक जायो वाल। सहस्र वर्ष तस आउखो जी, सुर चाल्यो तिण काल।।
- १३ वालक ना माता-पिता जी, पाम्या मरण तिवार। तो पिण ते सुर ना लहै जी, लोक तणो अत पार॥
- १४ ते वालक नो आउखो जी, क्षीण थयो तिणवार। नो पिण सुर पामें नहीं जी, लोक तणो अत पार।।
- १५ क्षीण हुवै बालक तणी जी, हाड हाड नी मीज। तो पिण ते सुर चालतो जी, लोक अत न लहीज।।
- १६ तिम क्षीण हुवा ते वाल ना जी, आसप्तम कुल वश । तो पिण ते सुर ना लहै जी, लोक अत नुअश।।
- १७ नाम गोत ते वाल ना जी, हुवा विछेद तिवार। तो पिण ते सुर ना लहै जी, लोक तणो अत पार।।
- १ प्रवित गोतम पूछै तदा जी, ते सुर हे भगवान। स्यूजे क्षेत्र गयो घणो जी, कै वहु रह्यो सुजान? [प्रभुजी । कृपा करो जिनराज]

- ३ जबुद्दीवे दीवे मदरे पव्वए मंदरचूलिय सव्वओ समता सपरिक्खिताण चिट्ठेज्जा
- ४ अहे ण चतारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चतारि विलिपिडे गहाय
- ५ जबुद्दीवस्स दीवस्म चउसु वि दिसासु विह्याभिमु-हीओ ठिच्चा ।
- ६ ते चत्तारि विलिपिङे जमगसमग विह्याभिमुहे पिक्खवेज्जा
- ७ पभू ण गोयमा । तओ एगमेगे देवे ते चतारि विल-पिडे धरणितलमसपत्ते खिप्पामेव पिडसाहरित्तए।
- द ते ण गोयमा । देवा ताए उक्किहाए जाव (स॰ पा॰) देवगईए
- बाo—तत्र 'त्वरितया' आकुलया 'चपलया कायचापल्येन 'चण्डया' रीद्रया गत्युत्कर्पयोगात् 'सिह्या' दाढ्यं-स्थिरतया 'उद्धुतया' दप्पीतिशयेन 'जियन्या' विपक्ष-जेतृत्वेन 'छेकया' निपुणया 'दिन्यया' दिवि भवयेति । (वृ० प० ५२७)
  - एगे देवे पुरत्याभिमुहे पयाते'पुरत्याभिमुहे' ति मेर्वपेक्षया। (वृ० प० ५२७)
- १० एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्याभि-मुहे पयाते, एगे देवे उत्तराभिमुहे पयाते,
- ११ एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते, एगे देवे अहोभिमुहे पयाते।
- १२ तेण कालेण तेण समएण वाससहस्साउए दारए पयाते।
- १३ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणति ।
- १४ तए ण तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणति ।
- १५ तए ण तस्स दारगस्स अहिमिजा पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणति ।
- १६ तए ण तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवसे पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणति ।
- १७ तए ण तस्स दारगम्स नामगोए वि पहीणे भवति नो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणति ।
- १८ तेसि ण भते । देवाण कि गए बहुए  $^{7}$  अगए बहुए  $^{7}$

१ यह वार्तिका वृत्त्यनुसारी पाठ के आधार पर की गई है। अगसुत्ताणि भाग २ ण० ११।११० में चडाए के वाद 'जइणाए छेबाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए' पाठ है।

१६. वीर कहै मुण गोयमा जी ! गयो क्षेत्र बहु होय।
रह्यो क्षेत्र बहुलो नही जी, ताम मान तू जोय॥
२०. गयो क्षेत्र की तेहथी जी, रह्यो क्षेत्र जी एय।
असंस्थातमो भाग की जी, न गयो इतरो नेत॥
२१. रह्यो क्षेत्र की तेहथी जी, गयो क्षेत्र मुविचार।
असक्यातगुणो आखियो जी, अदल न्याय अवचार॥

#### सोरठा

- २२. पूर्व बादि दिशि च्यार, अर्द्ध रज्जु गिरि मेरु थी। ऊर्द्ध अवो अवघार, सप्त रज्जु न्यूनाविके॥
- २३. पट दिशि मे सुर माग, अगत क्षेत्र गत क्षेत्र थी। असस्यातमे भाग, न्याय तास किम एहनो॥
- २४ तया अगत थी जाण, असरयात गुण क्षेत्र गत। एहनो पिण पहिछाण, किण विघ न्याय कहीजियै॥
- २५ घन कृत कित्पत लोग, लाबो चोटो मप्त रज्जु। इतरो जाहो जोग, विच मदर मुर अवतरण।।
- २६ इण गति करि लोकत, बहु काले पावै न सुर। तो ऋट किम आवत, अच्युत जिन जन्मादिके?
- २७ बहुत क्षेत्र ए जीय, अल्प काल अवतरण को। तम् उत्तर अवलोय, वृत्तिकार इम आखियो॥
- २६ आसी मट गिन एह, जिन जनमादिक अवसरे। सूर अवतरण करेह, अति गित शीझ करी इहा॥

बा॰—इहा णिप्य प्रशन करैं जो पूर्वें कही तिण गति करिकै जाता यका पिण देवता वह काल करिकै पिण लोक नो अत न पामै तो वारमा देवलोंक ना इद्रादि जिन जन्मादि नै विषे णीझ किम अवतरे, क्षेत्र नां बहुपणा यकी अने अवतरण काल ना अल्पपणा थकी। इम णिप्य पूछ्ये थके गुरु कहै—ए मत्य, पिण पूर्वे ए मुर नी गति कही ते मद छै। अनै जिन जन्मादि काले मुर आबै ते गति अतिही णीझ छैं।

- २६. लोक इतो मोटो कह्यों जी, कहै गोतम नै जिनेश। एकादशमा शतक नो जी, दशम उद्देशक देश।।
- एकादयमा यतक ना जा, दशम उद्देशक दश ।। ३० दायसी नैं तेतीसमीजी, आसी दान उदार । भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी जी, 'जय-जग' हरप अपार ॥

- १६. गोयमा ! गए बहुए, नी अगए बहुए,
- २० गयाओं ने अगए असमेज्जरभागे
- २१ अगवाओं में गए असमेज्जगुण
- २२ ननु पूर्वादिषु प्रत्येकमद्धंरज्जुप्रमाणन्वारलोक्स्योद्वी-धम्च किञ्चिन्स्यनाधिकमप्तरज्जुप्रमाणन्वात्तुत्यया गत्या गच्छता देवाना (यु० प० ४२७)
- २३ कथ पट्स्विप दिश्च गतादगत क्षेत्रमसञ्जानभागमात्र (वृ० प० ४२७)
- २४ अगनाच्च गनममस्यातगुणिमिति (यू० प० ५२७)
- २५ घनचनुरस्रीतृतस्य लोगस्यैव रित्यतत्वान्न दोप । (य० प० ४२७)
- २६ ननु यद्यक्तस्वरूपयाऽपि गत्या गच्छन्तो देवा नोरान्त बहुनापि वालेन न लभन्ते तदा कथमच्युताज्जिन-जन्मादिषु द्रागवतर्गन्त (वृ० प० ५२७)
- २७ बहुत्वात्क्षेत्रम्याल्यत्वादवतरणगालम्येति । (वृ० प० ५२७)
- २६ सत्य, किन्तु मन्देय गतिः जिनजन्माद्यवतरणगति-रनु शीव्रतमिति । (वृ० प० ५२७)

२६ लोए ण गोयमा ! एमहानए पण्णत्ते । (ण० ११।१०६)

१ टम वानिका का निर्माण जिम वृत्ति के आधार पर किया गया है, वह पूर्ववर्ती गाया २६-२८ के सामने उद्धृत है। इमिलए यहां वार्तिका के सामने उसे नहीं रखा गया है।

### दूहा

- १ अलोक प्रभु<sup>।</sup> मोटो कितो <sup>२</sup> दाखै ताम दयाल । समयक्षेत्र मनुक्षेत्र ए, जोजन लख पैताल ॥
- २. खंघक ने अधिकार जिम, जाव परिघि लग जोय। आख्यो तिम कहिवूं इहा, सगलोई अवलोय।। \*प्रभुइम भाखै रे।। (ध्रुपद)
- ३ तिण काले ने तिण समे हो, दश सुर महाऋद्धवत। तिमज जाव मदर-चूलिका हो, वीट रह्या घर खत॥
- ४ अथ अठ दिशाकुमारिका हो, महत्तरिका महाऋद । घरणहार तेहनी सही हो, अठ विल-पिड कर लिद्ध ॥
- ५ मानुसुत्तर गिरि विषे हो, च्यारूई दिशि माहि। च्यारूई विदिशि विषे वली हो,

रहि वाहिर मुख कर ताहि॥

- ६ तेह अष्ट विल-पिंड ने हो, जमगसमग समकाल। न्हाखे वाहिर सनमुखी हो, विल कहै दीनदयाल।।
- ७ इकड्क सुर अठ पिंड प्रतै हो, घरण पड्चा पहिलाह। ग्रहिवा ने समर्थ होवै हो, शीघ्रपणे जे ओछाह।।
- म हे गीतम । ते देवता हो, रहि लोकाते ताय। तिण उत्कृष्टी गति करी हो, चाल्यो अलोक रैमाय।।
- असन्भावपट्टवणा करी हो, अलोक मे सुर गित नाय।
   तिणसू अणहुंती कल्पना हो, तिण करि ए कहिनाय।
- १० इक सुर पूरव सामुहो हो, अग्निकूण इक पेख। यावत एक ईशाण में हो, एक ऊर्द्ध अघो एक।
- ११. तिण काले ने तिण समे हो, जायो किणहि रै पूत ।। लक्ष वर्ष रो आउखो हो, निज घर राखण सूत ।।
- १२ ए वालक ना माता पिता हो, काल कियो तिणवार ।। तो पिण सुर ने अलोक ना हो, निश्चैन पामै पार ।
- १३. लोक तणों जिम आखियो हो, तिणहिज रीते ताम। अलोक नो कहिवू इहा हो, सव पाठ अभिराम।।
- १४ जावत ते सुरवर तणे हो, स्यूगयो क्षेत्र वहु होय? के अणगयो क्षेत्र रह्यो तिको हो, वहुलो कहिये सोय?
- १५. जिन भाल सुण गोयमा । हो, गयो क्षेत्र बहु नांय। अणगयो क्षेत्र रह्यो घणु हो, विन कहै आगल न्याय॥

- १ अलोए ण भते । केमहालए पण्णत्ते ? गोयमा । अयण्ण समयखेत्ते पणयालीस जोयणसय-सहस्साइ
- २. जहा खदए (भ० २।४७) जाव परिक्लेवेण ।
- ३ तेण कालेण तेण समएण दस देवा महिङ्ढिया जाव महासोक्खा जबुद्दीवे दीवे मदरे पव्वए मदरचूलिय सव्वक्षो समता मपरिक्खिताण सचिट्ठेज्जा
- ४ अहे ण अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ विल-पिंडे गहाय
- प्र. माणुसुत्तरस्स पन्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु वि विदिसासु विह्याभिमुहीनो ठिच्चा
- ६. ते अट्ठ विलिपिडे जमगसमग विह्याभिमुहे पिनव-वेज्जा।
- ७ पभू ण गोयमा । तओ एगमेगे देवे ते अहु विलिपिडे धरणितलमसपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए।
- म ते ण गोयमा । देवा ताए उनिकट्ठाए जाव (स० पा०) देवगईए लोगते ठिच्चा
- असन्भावपट्ठवणाएं ति असद्भूतार्थकल्पनयेत्यर्थं
   (वृ० प० ५२७)
- १० एगे देवे पुरत्याभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपुरत्या-भिमुहे पयाते जाव (स० पा०) उत्तरपुरत्याभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते, एगे देवे अहोभि-मुहे पयाते।
- ११ तेण कालेण तेण समएण वाससयसहस्साउए दारए पयाते।
- १२ तए ण तस्स दारगम्स अम्मापियरो पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा अलोयत सपाउणति ।
- १३. त चेव जाव (सं० पा०)
- १४ तेसि ण भते ! देवाण कि गए बहुए ? अगए बहुए ?
- १५ गोयमा । नो गए बहुए, अगए बहुए

<sup>\*</sup>लय: राम को सुजश घणो

- १६, गयो क्षेत्र थी अनंतगुणो हो, अणगयो क्षेत्र पिछाण।
  अणगया क्षेत्र थकी गगो हो, भाग अनतमें जाण।।
  १७ इतरो मोटो अलोक छैहां, कहै गोतम ने जिनेश।
  एकादशमा शतक नों हो, दशम उद्देशम देश।।
  १८ हाल दोयसी चोतीसमी हो, भिक्षु ने भारीमाल।
  ऋषिराय तणा प्रसाद थी हो, 'जय-जश' मगलमाल।।
- १६. गयाओं में अगए अणतगुणे, अगयाओं में गए अणत-भागे।
- १७. अलोए ण गोयमा । एमहालए पण्णत्ते । (श० ११।११०)

ढाल: २३४

#### दूहा

- १ पूर्वे लोकालोक नी, वक्तव्यता पहिछाण। लोक एक प्रदेश गत, एकेद्रियादिक जाण।। \* प्रभूजो । आप तणी चिलहारी (श्रुपद) २ लोक तणा मुविशेषे, काउ एक आकाश प्रदेशे हो, प्र। जे एकद्री ना प्रदेशा, जाव पिचिंद अणिदि नां कहेमा हो, प्र।।
- वध्या ते माहोमाय, विल माहोमाहि फर्ञाय हो, प्र ।
   जाव अन्योअन्य जेह, घटपणे करी रहै तेह हा, प्र ।।
- ४ प्रभृ ते जीवा रा प्रदेश, त्यारै माहोमाहि मुविशेष हो, प्र.। किचित पीडा कहियै, अथवा बहु वाघा लहियै हो, प्र.॥
- ५ छेद त्वचा नो करेह ? जिन कहै अर्थ समर्थ न एह हो, प्र.। विल गोतम पूछत, किण अर्थे पीड न हुंत ? हो, प्र.॥
- ६ जिन भाने जिनराय, दृष्टान देड कहै वाय हो, गोयमजी। नाटकणी डक होय, श्रुगार तणो घर मोय हो।। (गोयमजी! माभल तू चिन ल्याय।।
- ७. मनोहर वेश सुरीत, जावत ते युक्त सगीत हो, गो । जाव शब्द में जाण, रायप्रश्लेणी रा पाठपिछाण हो, गो ॥
- द ते कहिवा इह रीत, सगत प्राप्ति करि सहीत हो, गो। तास गमन गति कडी, मृत्र हास करोने सनूरी हो, गो।।
- मृदु मजुल वर वाणी, तनु चेष्टा तास वखाणी हो, गो.।
   वारू वात विलास, लीला सहित वोलणो तास हो, गो.।
- १०. निपुणपणें करि जुक्त, उपचार करिने सयुक्त हो, गो. । एहवी नाटकणी ताहि, ते रग स्थानक रै माहि हो, गो. ॥

- १ पूर्व लोकालोकवक्तव्यतोक्ता, अय लौकैकप्रदेशगत वक्तव्यविशेष दर्शयन्ताह— (वृ० प० ५२७)
- २. लोगम्स ण मते । एगम्मि आगासपदेसे जे एगिदिय-पदेसा जाव पीचिदयपदेसा अणिदियपदेसा
- अण्णमण्यवद्वा अण्णमण्णपुट्टा जाव (म० पा०) अण्णमण्यवद्वाए चिट्ठति ?
- ४ अस्यिण भते । अण्णमण्णस्म किचि आवाह वा वाबाह वा उप्पायति ?
- ५. छिवच्छेदं वा करेंति ? णो उणट्ठे समट्ठे। (ग० ११।१११) मे केणट्ठेण मते । एव बुच्चडः ''आवाह वा ' करेंति
- ६,७ गोयमा <sup>1</sup> मे जहानामए नट्टिया सिया—सिंगारा-गारचारुवेमा जाव (म० पा०) कलिया । 'जाव कलिय' ति इह यावत्करणादेव दृश्य (वृ० प० ५ २७)
- ८,६ सगय-गय-हमिय भणिय-चेट्टिय विलास-सलिय-सलाव
- १०. निरुणजुत्तोवयारकुमला ... रगट्ठाणिस

<sup>\*</sup>लय: स्वामीजी ! थांरा दर्शन

१. सू० ७०

- ११. जन सय वा सहंस सहीत, जन तक्ष सहित वर रीत हो, गो.।
  एह्यो मउप रमणीक, तिहा नाटकणी तहतीक हो, गो.।
  १२. नाटक बतीस प्रकारे, तेह विषे इक नाटक देलाडे हो, गो.।
- ने निश्चे गोतम ! जाणी, इम पूछे जिन गुणखाणी हो, गो ॥

  बाल—'यत्तीसः विहरम नट्टरम' नि ३२ भेद हे जे नाटक ना, ते द्वात्रिणत्विद्य नाटक कहिये। ईहा-मृग-ऋषभ-नुरग-नर-महर-विहग-व्यान-रिन्नरादिभक्तिचियो नाम एको नाट्यविधि एतःचरिना जिनयनमिति चेप्टा मूचकः
  मभाविये छै। इम अनेरा पिण एकतीन निध रायप्रश्रेणि सूच (७६-११३) मे
  कह्या, तिम कहिया।
  - १३ ए नटणी ना देखणहारा, अणिमिस नेत्रे करि सारा हो, गा । नटणी प्रति देखता, सह दिशि थी पास पेसता हो, गो. ॥
  - १४. गोतम कहै जियारे, हा भगवत । देखें निवारे हो, गो । विन गोतम नै स्वाम, पूछे उहविध गुण, धाम हो, गो ॥
  - १४ सह जन नी दृष्टि तियारे, पड नटणी विषे जिवारे हो, गो ? हा प्रभ् ! दृष्टि पडत, यनि पूछ त्री भगवत हो, गो ॥
  - १६. ते सहु दृष्टी ताय, नटणी ने पोड उपाय हो, गो.। त्यना छेद ह्यं सोय, गोतम यह पीड न होय हो, गो.॥
  - १७. अथवा नाटकणी ताय, दृष्टि प्रते पीछ उपजाय हो, गो. । स्वचा छेद पिण धाय ? गोतम कहै ए पिण नांय हो, गो. ॥
  - १८. अथवा ते बहु दृष्टि, माहोमाहि दृष्टि करि स्पृष्टि हो, गो । छिबछेद बाघा उपजावै गोतम कहै दुरा न पमाये हो, प्र. ॥
  - १६. तिण अर्थे छम आख्यो, हे गोतम । पूर्वे भारयो हो, गो । राह्या एकेद्रियादिक नां प्रदेश, बाधा छविछेद न तेय हो, गो. ॥

- २० गोके एक प्रदेश, नेह तणा अधिकार थी।
  यनि तेहीज विशेष, कहियै छै ते साभनो।।
- २१. \*जे नोक ना भगवंत । एक, आकार ना जुप्रदेश में।
  पद जघन्य करिकै जीव ना जुप्रदेश छैने शेष में।।
- २२ जिल्ला पद पारि एक प्रदेशे, जीव ना जुप्रदेश ही। सह जीव द्राय फुन एहनो, कुन अल्प बहु तुस्य अधिक हो?
- रडे. जिन को घोटा इक आकाश-प्रदेश में जु पिछाणिये। पद जपन्य करिके जीव नां अ, प्रदेश छीने जाणिये॥

- ११ रणसमान्यसि क्यानवसहस्याहर्यन
- १२. बनीमऽविहस्स नहस्स अन्त्यर नद्विति उपभोजना से नृष गोषमा !

या॰ — 'वनीनट्यिएम नष्ट्रम्म' नि द्रानिशः िषा
— भेरा यस्य तन्त्रना नस्य नाट्यस्य, तत्र इटामूय-भूषभगुरमनस्मर स्वरमध्यात्र हिन्नन्दिशांनि एष नामैको नाट्यविधि, एत्रणारियाभिनयनीमिन मनान्यने, एवमन्देऽयेर्गिणक्विधरो साध्यास्यान् मारनोतास्या । (पृ० प० ४२ ६)

- १३ ते पेच्छना त निष्ट्रिय अणिमियाण दिट्टीण सन्दर्भा समना समस्तितोर्णन १
- १४ हता समित्रीएति ।
- १४ नाओं व गोयमा । दिहीओं तसि निर्देशिय सन्तरों समना सन्तिपटियाओं ? हता सन्तिपटियाओं ।
- १६ प्रतिय ण गोयमा । नाओ विद्वीतो तीने निर्धाण किचि वि झाबाह या गाबाह या उप्पानिक्टिश्टिश या करेनि ? नो उणद्धे ममद्धे।
- १७ मा या निट्टिया नामि दिहीण रिनि गणारणा याबाह्या उपामिति है छिबिस्टेद या गरेड है मो इणद्ठे गमद्ठे ।
- १८ नाजो या दिहीजो अणामण्याण दिहीण् शिशः या नाजाः या वाचार वा उप्याण्ति ? छतिरक्षेत्र या नाजेति नो इषट्ठे ममट्ठे ।
- १६ में नेषद्ठेण गोवमा ! एवं वचाइ ताच (ग० ता०) अविन्धेद या गरीन । (अ० ११।११०)
- २०. मोहिन्द्रदेशधिनागरेथेयमान् (प्रति ४२३)
- २१ भोगमा प भने <sup>।</sup> गर्मामा आसामारेने जल्लामा जीवपरेनाम
- इन्द्रेशनाम् शिवारेमाण मध्यापिताः य नद्दे नद्दः तित्रो सम्मागाः ? प्राप्ता गाः ? प्राप्त वाः ? इतिः मानिमागाः ?
- क्षेत्र व्यक्तिमा क्षित्रका भारता । अवस्थान क्षेत्र क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रक

वतमः पूत्र मोटा भांत्रं तोटा

२४. पद जघन्य करिक जीव ना जु, प्रदेश थी सुविचारिय। जे लोक में सह जीव द्रव्य, असंग गुण अवघारिये।। २५ फून तेह्थी जे इक आकाश-प्रदेश में जुकहीज ही। उत्कृष्ट पद करि जीव ना जु, प्रदेश तेह विशेष ही।।

### सोरठा

२६. तिहा जधन्यपदे उम हुत, लोक अन गोला प्रते। त्रिहु दिशि ना फर्शत, निगोद ना गोला भणी।। २७. शेप दिशा जे तीन, तेह अलोके गोल ए चीन, इम थोटा ए सर्व थी।।

२८. मध्य लोक सुविशेष, जे गोला पट दिशि तणां। नाज प्रदेश, फर्शे छं इण कारणै।। २६. जत्कृष्ट पदे विचार, जीव प्रदेश कह्या विग अववार, यंउगोलका न ३०. मंपुरण जे गाल, लोक मध्य निवनैज खंड गोल दिल तील, ने तो लोकातंज गोला अर्छ निगोद ना। लोक रै माय, कह्यो वृत्ति थी न्याय, सेव भने ! सत्य वच ॥

३२. \*एकादशमा नो दशमो न्हाल, दो सी पैतीममी ढाल हो, प्र० । भिक्ख भारोमाल ऋषिराय, 'जय-जश' सूप सपति पाय हो, प्र० ॥

।।इति एकादशयने दशमोहेशकार्थः ।।११।१०।।

उक्तिमपए जीजपटेना विनेमाहिया। (मा० ११।११३)

२६,२७ तत्र नयो त्रंपन्येनस्पदयोर्जयन्यपदं सोतानी भवति 'जत्व' नि यत्र गोलके म्यर्गना निगोददेगैन्नि-मृत्येन दिशु भवति, शेषदिणामलोतेनावृतत्वान्, ना च गण्दगोन एव भवतीनि भात ।

(वृ० प० ४२६)

२८,२६ 'छहिमि' नि यप्र पुनर्गीतके पट्स्वपि दिशु निगांदरेनी गणनेना भवति नत्रोत्रुष्टपः भवति, नच्च समस्तगीलै परिपूर्णगीलके भवति, नान्यत्र, ग्रण्टगांतके न भवतीत्वर्थः (बृद्ध ५० ५०८)

२० मम्पूर्णमोलगण्य लोगमध्य एव म्यादिनि । (यु० प० ५२८)

३१. मेव भने । मेव भने । नि । (भ० ११।११४)

### ढाल: २३६

### दूहा

- १. दशमां उद्देशक विषे, कह्यो लोक विस्तार। लोक विषे हिव काल द्रव्य, कहिये ते अधिकार ॥ २ तिण काले नै तिण समय, वाणियग्राम सुजान। नामें नगर हुतो वर्णन, दूतिपलास उद्यान।।
- ३. जावत-पुढवीशिलापट, वाणिय ग्रामे जान। सेठ मुदर्शन नाम तसु, वसै अधिक ऋद्धिवान ॥
- ४. जावत गज न को सक, श्रमणोपासक नेह। जाण्या जीव अजीव नै, जावत विचरै जेह।। ५ समवसरचा स्वामी तिहा, यावन परपद आय। सेव करें त्रिहु जोग करि, निरख निरख हरपाय।।

- १ अनन्तरोद्देशके लोकयक्तव्यतोक्ता, इह तु लोकवितकाल-द्रव्यवक्तव्यतोच्यते (वृ० प० ५३२)
- २ तेण कालेण तेण समएणं वाणियग्गामे नाम नगरे होत्या--वण्णको । द्रतिपलासे चेडए--वण्णओ।
- ३ जाव पुढविमिलापट्टओ । तत्य ण वाणियग्गामे नगरे सुदसणे नाम सेट्टी परिवसइ-अड्डे
- ४. जाण बहुजणस्स अपरिभूए समणोवानए अभिगय-जीवाजीवे जावः " 'विहरइ।
- ५ मामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासङ। (ज० ११।११५)

<sup>&</sup>lt;sup>\*</sup>लय: स्वामीजी! थारा दर्शन

# \*मुणो भव्य प्राणी रे, बीर दयात प्रपाल नणी वर वाणी रे ॥ (श्रुपद)

- ६. मेठ सुदर्शण तिण गर्म रे, स्त्राम आया नी नार। कया मुणी हरम्यो पणी रे, आनंद यगो अपार ॥
- ७ रनान जाव मगल करी रे, किया सर्व अलकार। प्रयर विभूषित तनु भयो रे, निकन्यो घर थी बार ॥
- म. गोरंट वृक्ष ना पुष्प नी रे, माना महित ने छत्र। मस्तक तेह घरीजतो रे, पर्ग चालता पवित्र।।
- ६. मोटा पुरुष छै नेहनी रे, बागुरा कहिये श्रेण। तिण करि परवरियों छतो रे, चाल्या है नगर मर्भण ॥
- १०. दुतिपनास अर्छ तिहा रे, आयो प्रभू रे पाम । पचाभिगम ऋषभदत्त ज्यू रे, जाव विविध पज्याम ॥
- ११. बीर मुदर्भन मेठ ने रे, मोटी परपद माय। उभय घमें आएया तिहा रे, जाव आराधक याय ॥
- १२. सेठ मुदर्शन तिण समें रे, धर्म मुणी जिन पाम । हरप नतीप पायो घणां रे, बाह्य अस्यतर तास ॥
- १३. करी थी महावीर ने रे, देउ प्रदक्षिण तीन। जाय स्त्रति विर नामने रे, इम बांले चित लीन ॥
- १४. गाल प्रभु <sup>1</sup>मतिविध मध्यो रे ? जिन महै चडविध जाण । प्रमाण-मान गिणीजिये रे, वर्ष मतादि प्रमाण ॥

बा॰-ए अद्धारतम नो ईज विधेग जाणशं।

१५. यथायुनिवृत्ति दूसरो ने, आउमां जेण पकार। बांध्य तिमहिज भीगवै रे, नरणदि गति ना विचार ॥

बार-- म अतारापर्दत बागु वर्ग नो बहुमय विविष्ट जानयो । मर्ग ममारी त्रीत में ईब हुई गया-जिस लीवे नरफ, रिगेंच, मनुष्य, देव में। के किन प्रकार मस्थि दर्भव ने विषे आज्यों याच्यों ने आज्या हिए प्रमार गरि है हरा प्रव नं विषे पान ने प्रवास्तितंतिनात परिये।

१६. तं मरण वरिने विशिष्ट है रे, ने मरण-गान परिवाय। तथा मन्य रिज बान है है, पहिन्ने गरा है बानावाँय ॥

- ६ गए प में मूरंगपे मेट्टी रामीने बहाए महारू मनाने ६ट्टाइड
- प्राण्डय नाप (वर पार) पार्वान्प्रवे गरभावणा-विभूतिए गानी विहास परिवरणमः
- = महोरेंटम नदामेण छत्तेन धरिक्रमानीच नार्वाभार-नारेण
- ६ महवापूरिसप्रान्तपरिनिष्टते पारिप्रकार्व २५० मजनगजरीण निगरहा
- १० देपेत दुश्यितां पेटण देपे र मनपे भएव महार्थन नेणेर उपानन्छः, उपानन्छिता सरग भगर महातीर पनिरोण अभिगरेण अभिगरण, देश उनभरती (म० ६।१४४) जार निविधान परन्यासहास परल-(८० १६।४६८)
- ११ मण पा समजे भगव महाविदे सुद्रमापन सहित्स मेर्ट्स य महतिमहातियाण परिसाण धरम परिकाद लाइ भाषाम् आसरम् भवतः। (८० ११।११.)
- १२ तम म से सुद्रसमें मेट्टी समापन नगरता महातीरान अधिय धम्म मोन्या निमम्म हट्टाइडे
- १३ उद्वाप् उट्ठेट, उठवेना समय भगत मरातीर निस्य सी जार (म - पा०) नमीमला एव प्यामी ( To \$ 11 7 7 27
- १८ रितिया प भते । रावे पायने १ मुक्तमा ! पर्वादितं गालं पानी स जना-नामान-'पमापनान' नि पनीयो --पनिष्ठवी केर वर्त-बतादि नत प्रमाण संपामी का उठति प्रमानका व (do 40 853)

बार-अद्धारायम विशेषो (समादि प्रशः-(30 to 123)

१४ अत्उनिव्यन्ति । 'जहाडनिध्यितमा'र' नि यमा—देन प्रमारेनाम्यः निर्देशि -यग्रा मणा म नार - 'नांदर्श रामी प्रयासुनिर्देशिकाची-सारकास्य क्राप्टराज [7 - 7 - 7 2 3 ]

nic-se augres man enfartiffer मर्नेष्ठित मन्द्रिकेषण्य स्थापः यात् यःgamente befatelmitt gaben erhand in in gem b frankfreitenuntig mit gen aummichtert. bis ?!

والتستلك و etildundus s. Es thirty to Et Patric glave de ver balde mand denteration in main bemen fert me man på talentere The formance and be a fact that the first

<sup>&</sup>quot;गय: राजा राजी मंग भी रे

- १७ अद्धा समयादि विशेष छै रे, ने रूप काल अद्धा-काल। चद्र सूर्य नी चाल थी नीपजै रे, द्वीप अढाइ मे न्हाल।।
- १८ प्रमाण काल प्रभु ! किसो रे ? जिन कहै द्विविध न्हाल । दिवसप्रमाणज-काल छै रे, रात्रिप्रमाणज-काल ॥
- १६. च्यार पोहर नों दिन हुवै रे, च्यार पोहर नी रात।
  पोहर तणाज प्रमाण ने रे, हिव कहिये अवदात।।
- २०. उत्कृष्टी हुवै पोरसी रे, मृहूर्त्त साढा च्यार। दिवस तणी तथा रात्रि नी रे, अह निश्चि मुहूर्त्त अठार।।
- २१ जघन्य पोरसी एतली रे, तीन मुहूर्त्त नी विचार। दिवस तणी तथा रात्रि नी रे, अह निश्चि मुहूत्त वार।।
- २२ हे भगवत । हुवै यदा रे, उत्कृत्ट पोरसी माग। दिवस तणी तथा रात्रि नी रे, अह निश्चि चोथो भाग।।
- २३ तदा हुवै भाग केतला रे, मुहूर्त भागे करि हान। थाता जघन्य तीन मुहूर्त नो रे, दिवस तथा निश्चि जान।

- २४. मुहूर्त्त केतले भाग, घटावताज घटावता। तीन मुहूर्त्त नी माग, हुवै पोरसी जघन्य ए॥
- २५. <sup>1</sup>यदा जघन्य थी पोरसी रे, तीन मुहूर्त्त नी होय। विवस तणी तथा रात्रि नी रे, तेह थकी वृद्ध जोय।।
- २६ तिण काले भाग केतला रे, मुहूर्त्त भागे करि वृद्ध। पोहर साढा चिहु मुहूर्त्त नो रे, दिन तथा निशि नो प्रसिद्ध।।
- २७ श्री जिन भार्स सुदर्शणा । रे, उत्कृष्ट पोहर जिनार। विवस तणो तथा रात्रिनो रे, मुहर्स साढा च्यार॥
- २ भाग एक मुहूर्त्त तणा रे, एक सो वावीस होय। इक-इक भाग घटावता रे, जघन्य तीन मुहूर्त्त जोय।।
- २१ दिवस तणी तथा रात्रि नी रे, कही पोरसी एह। उत्कृष्ट पोहर थी इह विघे रे, जघन्य पोहर इम लेह।।
- ३०. जघन्य पोरसी ह्वं जदा रे, मुहूर्त्त तीन प्रमाण। दिवस तणी तथा रात्रि नी रे, ते दिन थी वृद्धि जाण।।
- ३१ भाग एक मुहूर्त तणा रे, एकसौ वावीस घार। इक-इक भाग वघारता रे, मुहूर्त साढ़ा च्यारा।
- \*लय: राजा राणी रंग थी रे

- १७ अद्धाकाले। (ण० ११।११६)
  'अद्धाकाले' त्ति समयादयो विशेपाम्तद्वूपः कालोऽद्धाकाल'—चन्द्रसूर्यादित्रियाविणिष्टोऽद्धंतृतीयद्वोपसमुद्रानतर्वर्त्ती समयादि । (वृ० प० ५३३)
- १८. से कि त पमाणकाले ? पमाणकाले दुविहे पण्णत्ते, त जहा—दिवमप्पमाण-काले, राडप्पमाणकाले य ।
- १६ चउपोरिसिए दिवसे चउपोरिसिया राई भवड । अथ पौरुपोमेव प्ररूपयन्नाह— (वृ० प० ५३३)
- २०. उक्कोसिया अद्वयचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवई
  'अद्वयचमुहुत्त' ति अप्टादणमुहुत्तंस्य दिवसस्य रात्रेवी चतुर्थो भागो यस्मादद्वंपञ्चममुहूर्त्ता नव घटिका इत्यर्थं ततोऽद्वंपञ्चमा मुहूर्त्ता यस्या सा तथा
- (वृ० प० ५३४)
  २१ जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्म वा राईए वा पोरिमी
  भवइ । (ण० ११।१२०)
  'तिमुहुत्त' त्ति द्वादणमुह्त्तंस्य दिवसादेश्चतुर्थो भागस्त्रिमुह्त्तों भवति अतस्त्रयो मुह्त्तां —पट् घटिका
  यस्या सा । (वृ० प० ५३४)
- २२ जदा ण भते । उक्कोसिया अद्वपचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवड
- २३,२४ तदा ण कितभागमुहुत्तभागेण परिहायमाणी-परिहायमणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवई ?
- २५,२६ जदा ण जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा ण कतिभागमुहुत्तभागेण परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपचम-मुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?
- २७ सुदसणा । जदा ण उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिव-सस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ।
- २८,२६ तदा ण वावीससयभागमुहुत्तभागेण परिहायमाणी-परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ।
- ३०-३२ जदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तदा ण वावीससयभागमुहुत्त-भागेण परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। (श०११।१२१)

३२ दिवस तणी तथा रात्रि नी रे, उत्कृष्ट पोरसी एह। जघन्य पोहर थी इह विधे रे, उत्कृष्ट पोहर इम लेह।।

वा॰—जिवारै साढा च्यार मुहूर्त्त नी पोरसी थावै ते दिवस थकी एक मुहूर्त्त नो एक सौ वावीसमो भाग दिवस-दिवस प्रतै घटावता-घटावता ज्या लगै जघन्य तीन मुहर्त्त नी पोरसी हुवै तिहा थकी प्रारभी दिवस दिवस प्रते मुहूर्त्त नो एकसी वावीसमो भाग पोहरसी माहि वधावता-बधावता ज्या नगै साढा च्यार मुहूर्त्त नी पोहरसी। पोहरसी प्रति हानि वृद्धि कही।

इहा साढा च्यार मुह्तं ने अने तीन मुह्तं ने विशेष दोढ मुह्तं ते एक मी तयासी दिने करी वर्ध तथा घटै ते दोढ मुह्तं १८३ भागपणे व्यवस्थापिय । तिहा एक मुह्तं ना १२२ भाग कीजे। तिवार दोढ मुह्तं ना १८३ भाग हुवै। इण न्याय पोहरसी मे मुह्तं नो एक सौ वावीसमो नित्य वधावणो तथा घटावणी।

३३ उत्कृष्ट पोरमी ह्वं नदा जी, मुहर्त्त साढा च्यार। दिवस तणी तथा रात्रि नी जी ? ते भाखो जगतार।

३४. जघन्य पोरसी ह्रं कदा जी, तीन मुहूर्त्त नी तान। दिवस तणी तथा रात्रि नी जो ? प्रश्न दाय अभिराम।।

३५ श्री जिन कहै सुदसणा । रे, उत्कृष्ट दिवस जिवार। अठार मुहुर्त्त नो हुवै रे, जघन्य निशा मुहूर्त्त वार॥

३६ तदा उत्कृष्ट पोहर दिन तणी रे, मुहूर्त्त साढा च्यार । जघन्य तीन मुहूर्त्त तणी रे, रात्रि पोरसी विचार ॥

३७. अथवा जदा उत्कृष्ट थी रे, निशि हुवं मुहूर्त्त अठार। जघन्य वार मुहूर्त्त तणो रे, दिवस हुवे तिण वार।।

इद्र. तदा उत्कृष्ट निशि पोरसी रे, मुहर्ते साढा च्यार। जघन्य थी तीन मुहर्त्त तणी रे, दिवस नी पोरसी घार।।

३६ प्रभु <sup>1</sup> उत्कृष्ट दिवस हुवै कदा जी, अठारै मुहूर्त प्रमाण । द्वादण मुहूर्त्त नी हुवै रे, रात्रि तदा पहिछाण ॥

४०. अथवा उत्कृष्ट थकी हुवे जी, अठारै मुहूर्त्त रात। द्वादश मुहूर्त्त नो तदा जी, दिवस जघन्य विख्यात।।

४१ श्री जिन भाखे सुदसणा । रे, आसाहि पूनम दिन्न। जिल्हाण्ट मुहूर्त अठार नो रे, बारे मुहूर्त निधि जघन्न।।

# सोरठा

- ४२. पंच वर्ष जुग तास, पचम वप अपेक्षया। आसाढि पूनम जास, दिवस अठारै मुहूर्त्त नो।।
- ४३ तेह दिवस नो जाण, साढा च्यार मुहूर्त्त तणो। पोहर तणोज प्रमाण, पिण सहु नहिं आसाढि पूर्णिमा।।
- ४४. अन्य वर्ष रै माय, जे दिन कर्क सक्राति ह्वै। तेहिज दिवस कहाय, अठ दश मुहत्तं दिन वृत्ती ॥

- वार 'वावीनमय नाग मुहत्त भागेण' ति इहा छंप ञ्चमाना त्रयाणा च मुहत्तीना विद्येष मार्छी मुहत्ती, म च व्यशीत्यधिकेन दिवसणतेन वर्षते हीयने च, स च मार्ची मुहत्तीस्थ्यणीत्यधिक णतभागतया व्यवस्थाप्यते, तत्र च मुहत्तीं हाविशस्यधिक भागशत भवस्यनोऽनिधीयने— 'वावीमे' त्यादि द्राविशस्यधिक णततमभागरपेण मुहर्त्तभागेनेत्यर्थः। (वृष्ण ५३४)
- ३३ कदा ण भते ! उक्कोनिया अद्यप्तममुहुना दिवसस्म वा राईए वा पोरिसी भवई ?
- ३४ फदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवनस्म वा रार्ट्ण वा पोरिमी भवड ?
- ३५ सुदमणा । जदा ण उनकोमए अट्ठारममृहने दिवमे भवड, जहण्मिया दुवानसमृहना राई भवट ।
- ३६ तदा ण उक्कोसिया अद्भवसमुहुना रियगस्य पोरिसी भवड, जहण्यिया तिमुहुना राईए पोरिसी भवड ।
- ३७ जदा ण उपकोसिया अट्ठारममुहत्तिया रार्ट भन्नड, जहण्णिए दुवालममुहुत्ते दिवसे भवड ।
- ३८ तदा ण उन्नोसिया अद्वयसममुहुत्ता रार्ज्ण पोरिमी भवड, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसम्स पोरिमी भवड । (ण० ११।१२२)
- ३६ कदा ण भते । उनकोसए अद्वारममुहुने दिवमे भज्द, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता रार्ड भवद्र ?
- ४० कदा वा उन्नक्तिया अट्टारममुहत्ता रार्ट भवड, जहण्णए दुवालममुहुत्ते दिवसे भवड ?
- ४१ सुदमणा ! आमाङपुण्णिमाए उत्रागिसए अट्ठारम-मुहुत्ते दिवमे भवद, जहण्णिया दुवानममुद्रुता यदं भवई ।
- ४२,४३ 'आमाडपुन्तिमाए' इत्यादि इत् 'आसाडगेण-मान्या' मिति यदुवत तत् पत्तनवत्तिरिक्तपुन राज्तिम-वर्गोपेदायाऽयसेय, यतन्तर्भवापाटपोर्णमान्यामण्टादश-मुह्तों दिवनो भवति, अद्यंपनममुह्तां च तत्यारपी भवति। (यु० प० ४२४)
- ४४ वर्षान्तरे तु यमदिवमे कार्यगानिजीयो नवीसामी भवतीति नमयमेयमिनि । (५० ५० ५३४)

- ४५ \*पोसी पूनम उत्कृष्ट थी रे, मुह्तं अठारे रात। द्वादश मुह्तं नो कहै रे, जघन्य दिवस जगनाथ।।
- ४६. छै भगवत । दिवस निशा जी, सरिखा निश्चे होय ? हता अत्थि जिन कहै रे, अछै सरीखा जोय।।
- ४७. सरिखा दिवस अने निशा जी, किण काल जगनाथ । जिन कहै चैत्र आसोज नी र, पूनम सम दिन रात ॥

- ४८ पूनम चैत्य आसोज, नय ववहार अपक्षया। न्याय दृष्टि करि सोभ, वृत्तिकार आस्यो इसो।।
- ४६ निरुचय थकी निहाल, कर्क मकर सक्राति ना। दिवस थकी इम भाल, आरभीजे आगले॥
- ५० अहो रात्रि अवलोय, साढा एकाणु विषे। दिवस रात्रि सम होय, पनर मृहन्तं दिन फुन निया।।
- ५१. मृहूर्त पूणा च्यार, दिवस तणी इक पोरसी। निश्चि नी पिण अवधार, मृहुर्त्त पूणां च्यार नी।।

वा०—ए सक्ताति न न्याय वृत्ति में लिरयु तिम कहा अने सूर्य नवच्छर इटट दिन नो हुवै। तेहना वारै भाग ते १२ माम। तिहा वारमो भाग साटा तीम दिन नो ते एक माम हुवै। सर्वाभ्यतर मडले सूर्य आवै तिवारे अठारै मुहले नो दिवम वारै मुहले नी रात्रि हुवै। तिका तिथि ए सूर्य संवच्छर नी आसाडी पूर्णिमा जाणवी। तेहशी साढा एकाण्मे अहोरात्रे सूर्य मवच्छर नी आमोजी पूर्णिमा जाणवी। तिवारे दिन रात्रि सम हुवै अने सर्व वाह्य मडले सूर्य आवै तिवारे १२ मुहले नो दिवस १८ मुहले नी रात्रि हुवै। तिका तिथि सूर्य मवच्छर नी पोसी पूर्णिमा जाणवी। तेहथी साढा एकाणुमे अहोरात्रे तिका तिथि ते सूर्य मवच्छर नी चैत्री पूर्णिमा जाणवी। तिवारे दिन रात्रि सम हुवै, ए निम्चय नय नु मत कहा ।

- ५२. \*काल-प्रमाण ए आखियों रे, पूछे सुदर्शण फेर।
  यथायुनिर्वृत्ति-काल स्यूं जी रे जिन कहै सुण चित घेर।।
  ५३. नारक तिरि मनु देवता रे, जितो बाद्यो आयु न्हाल।
  अतमुहूर्त्त आदि दे रे, यथायुनिर्वृति काल।।
- ५४ मरण-काल प्रभु ! स्यू कह्यो जी, जुदो अरीर थी जीव। तथा जीव थकी तनु ह्वं जुदो रे, मरण-काल ते कहीव।।

वा॰ --अनै मूत्र में दोय वार वा णब्द ते णरीर जीव ने विषे अविधि भाव नी इच्छा अनुसारीपणी जणायवा ने अर्थे।

५५. अद्धा-काल प्रमु !स्यू कह्यो जी, जिन कहै अनेक प्रकार । समयद्वयाए पाठ नो जी, आगल अर्थ उदार ॥

- ४४. पोसपुण्णिमाए ण उक्कोसिया अट्टारममुहत्ता राई भवर, जहण्णए दुवानसमृहत्ते दिवसे भवर ।
  - (ग० ११।१२३)
- ८६. अस्य णंभने । दिवसा य राईको यसमा चेव भवति ? हता अस्य ।
  - (ग० ११।१२४)
- ४७ कदा ण भने । दिवसा य रार्ज्यो य समा चेव भवति ? मुद्दसणा । चेत्तासोयपुण्णिमानु एत्य ण दिवसा य रार्ज्यो य समा चेव भवति ।
- ४६ नत्तागोयगुन्निमाएगु ण' मित्यादि यदुच्यते तद् व्यव-हारनयापेक्ष । (वृ० प० ५३४)
- ४६ निण्ययतस्तु कारकंमकरमकान्तिदिनादारस्य (वृ० प० ५३४)
- ५० पण्णरसमुद्वते रार्ड भवठ । चवभागमुद्दुत्तभागूणा चडमुद्धृता दिवसस्य वा रार्डए वा पोरिसी भवद । यर् द्विनवितितममहोरात्र तस्याद्धे समा दिवरात्रि-प्रमाणतेति, तत्र च पञ्चदणमुह्ते दिने रात्री वा पौरपीप्रमाण त्रयो मुहर्लास्त्रयण्च मुहर्लेचतुर्भागा भवन्ति, दिनचतुर्भागरूपत्वात्तस्याः ।

(यु० प० ५३४)

- ४२ सेत्त पमाणकाले । (ग० ११।१२५) मे किंत अहाउनिव्वत्तिकाले ?
- ५३ अहाउनिव्यत्तिकाले—जण्णं जेण नेरइएण वा तिरिक्यजोणिएण वा मणुम्सेण वा देवेण वा अहाउयं-निव्यत्तिय । सेत्त अहाउनिव्यत्तिकाले ।

(श० ११।१२६)

- ५४ में कि त मरणकाल ? मरणकाल—जीवो वा सरीराओ सरीर वा जीवाओ । मेत्त मरणकाले । (श० ११।१२७)
- वा॰—वा ग्रव्दी शरीरजीवयोरविधभावस्येच्छानुसारिता-प्रतिपादनार्याविति । (वृ० प० ५३५)
- ४५ से किंत अद्धाकाले ? अद्धाकाले अणेगविहे पण्णत्ते । (पा० टि० ७)

<sup>\*</sup>लय: राजा राणी रंग थी रे

- ५६. समय रूप जे अर्थ छैरे, तेह तणो भाव जोय। तेण करी अद्धाकाल छैरे, समय भावे करि सोय।।
- ५७. इमज आविलका भावे करी ने, मुहूर्त्त दिवस पिण एम। जाव उत्सर्पिणी भाव थी रे, अद्धाकाल कह्यों तेम।।

- प्रम. समय आदि दो काल, पूर्वे जे आख्यो अछै। तेहनोईज निहाल, स्वरूप कहियै आगलै।। प्रश. \*वे भाग छै जिहा छेदन विषे रे, अथवा छेदता दोय। वे खड शीघ्र हुवै नही रे, तेह समय अवलोय।।
- ६० वृद असखेज्ज समय नो रे, तास मेलवो पेख। तास सयोग तेणे करी रे, कहियै आवलिका एक।। ६१ सख्याती आवलिका करी रे, छठा शतक में जाण। सप्त उद्देशे जिम कहचुरे, जाव सागर इक माण।।
- ६२. हे भगवंत । पत्योपमे रे, सागरोपम करि सोय। स्यू प्रयोजन एहनो रे ? हिव जिन उत्तर जोय।। ६३. पत्योपम सागरोपमे रे, चिउ गति आयु माप। नेरिया नी किता काल नी रे, स्थिती कही प्रभु! आप?
- ६४. एव स्थितिपद चतुर्थो रे, भणवो समस्तपणेह । जावत अजघन्योत्कृष्ट स्थिति रे, तेतीस उदिघ कहेह ।।

# सोरठा

- ६४. पल्य सागर नु सोय, अति प्रचुर अद्धा करि। तेहनो क्षय अवलोय, किम सभवै तसु प्रश्न हिव?
- ६६ \*छै प्रभु ! पत्य सागर तणो रे, क्षय ते सर्वथा नाश ? अपचय ते क्षय देश थी रे, जिन कहै हता तास ॥
- ६७. किण अर्थे प्रभु । इम कह्य ते, पत्य सागर नो विणास । आगल उत्तर एहनो रे, श्री जिन देस्य प्रकाश ।। ६८. दोय सौ ने छत्तीसमी रे, आखी ढाल उदार । भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी रे, 'जय-जश' हरष अपार ।।

- ५६ समयहयाएं ,
  'समयहयाए' त्तिं समयरूपोऽर्थः समयार्थस्तद्भावस्तत्ता
  तया समयभावेनेत्यर्थं (वृ० प० ५३५)
  ५७ आविलयहयाए जाव उस्सप्पिणीट्टयाए
- ५८ अथानन्तरोक्तस्य समयादिकालस्य स्वरूपमभिधातु-माह— (वृ० प० ५३५)
- ५६ एस ण सुदसण। ! अद्धा दोहाराछेदेण छिज्जमाणी जाहे विभाग नो हन्वमागच्छइ, सेत्त समए समयट्ट-याए।

  हो हारी—भागी यत्र छेदने हिधा वा कार —करण यत्र तद् हिहार हिधाकार वा तेन (वृ० प० ५३५)
- ६० असखेज्जाण समयाण समुदयसिमइसभागमेण सा एगा आवलियत्ति पवुच्चइ।
- ६१ सखेज्जाओ आविलयाओ उस्सासो जहा मालिउदेसए (भ० ६।१३२-१३४) जाव---

(श० ११।१२८)

सालिउद्देसए त्ति पष्ठशतस्य सप्तमोद्देशके (वृ० प० ५३५)

- ६२ एएहि ण भते । पिलओवम-सागरोवमेहि कि पयोयण ?
- ६३ सुदसणा । एएहि पिलओवम-सागरोवमेहि नेरहय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवाण आउयाइ मिवज्जिति । (श० ११।१२६)

नेरइयाण भते । केवइय काल ठिई पण्णता ? ६४ एव ठिइपद निरवसेस भाणियव्व जाव अजहण्ण-मणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णता।

(श० ११।१३०)

- ६५ अथ पत्योपमसागरोपमयोरितप्रचुरकालत्वेन क्षयम-सभावयन् प्रश्नयन्नाह— (वृ० प० ५३९)
- ६६ अत्थि ण भते । एएसि पिलओवन-सागरोवमाण खएति वा अवचएति वा ? हता अत्थि।

(श० ११।१३१) 'खये' त्ति सर्वविनाश 'अवचए' त्ति देशतोऽपगम इति। (वृ० प० ५३६,५४०)

६७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थि ण एएसिं पिलओवमसागरोवमाण खएति वा अवचएति वा ?

<sup>\*</sup>लय: राजा रानी रग थी रे

### दूहा

- क्षय पत्योपम प्रमुख नों, उत्तर द्वार स्वाम।
   तेहिज सुदर्शण चरित्त करि, आखै छै अभिराम।।
   \*वीर सुदर्शन नै कहै।। (घ्रुपद)
- २ तिण काले ने तिण समय, नगर हित्थणापुर नीको जी काड । सहस्राव वन उद्यान थो, तसु वर्णन तहतीको जी काइ ॥
- तिण हित्थणापुर नगर मे, बल नामे थो राजा जी काइ। वर्णन कोणिक नी परे, राज्य लक्षण गुण ताजा जी काइ।।
- ४. तिण वल नामा राय नै, प्रभावती पटराणी जी काड। कोमल कर पग जेहना, यावत विचरै जाणी जी काइ।।
- प्र प्रभावती देवी तदा, अन्य दिवस किणवारे जी काइ। तेहवै पुन्यवत योग्य नै, एहवै वास अगारे जी काइ।।
- ६. नेह महत घर केहवो, भ्यतर चित्र सहीतो जी काइ। वाहिर घवल्यो ऊजलो, पेखत पामै प्रीतो जी काइ॥
- ७ कोमल पापाणादिके, घृष्ट घस्योज घठार्चो जी काइ।। मुहरो फेर मृदु कियो, मृष्ट सचिक्कण मठार्यो जी काइ।।
- द चित्र विचित्र चित्राम सूँ, भाग ऊपरलो आछो जी काइ। देदीप्यमान सुदीपतो, अधोभाग तल जाचो जी काइ॥
- ६ चद्रकातादिक मणि करी, कर्केतनादिक सारो जी काड। तिण रत्ने करि महिल नो, न्हास गयो अधकारो जी काड।।
- १० घणो सरीको भली परे, विहच्यो की घो सारो जी काइ। भूमिभाग मनहर अछै, अति रमणीक उदारो जी काइ॥
- ११. सरस सुगघ पच वर्ण ना, मूक्या पुष्प सुवृंदो जी काइ।
  पूजा उपचारे करी, निरखत नयनानदो जी काइ॥
- १२ कृष्णागर वर चीड नी, मेल्हक धूप नी गधो जी कांइ। मघमघत अद्भूत छै, छाण मने सुखकदो जी काइ।।
- १३. सुगध वरगधि—वास छै, सोरभ ना अतिशय कर जी काइ।
  गुटिका जे गध द्रव्य नी, तेह सरीख गधागर जी काइ।।

- १ अथ पल्योपमादिक्षय तस्यैव सुदर्शनस्य चरितेन दर्शयन्निदमाह— (वृ०प० ५४०)
- २ तेण कालेण तेण समएण हित्यणापुरे नाम नगरे होत्था—वण्णओ। सहसववणे उज्जाणे—वण्णओ।
- तत्थ ण हित्थणापुरे नगरे वले नाम राया होत्या— वण्णसो।
- ४ तस्स ण वलस्स रण्णो पभावई नाम देवी होत्था— सुकुमालपाणिपाया वण्णओ जाव ''विहरइ (॥० ११।१३२)
- ५ तए ण सा पभावई देवी अण्णया कयाइ तसितारिसगिस वासघरिस 'तिस तारिसगिस' ति तिस्मस्तादृशके—वक्तुम-शक्यस्वरूपे पुण्यवता योग्य इत्यर्थः। (वृ० प० ५४०)
- ६ ७ अव्भितरओ सिनत्तकम्मे वाहिरओ दूमिय-घटुमट्टे 'दूमियघटुमट्टे' ति दूमित—घवितत घृष्ट कोमल-पापाणादिना अत एव मृष्ट—मसृण यत्तत्तथा तस्मिन् (वृ० प० ५४०)
- विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले
   विचित्तउल्लोयचिल्लियतले' त्ति विचित्रो—विविध-चित्रयुक्तः उल्लोकः उपरिभागो यत्र 'चिल्लिय' ति दीव्यमानं तल च अधोभागो यत्र तत्तथा ((वृ० प० ५४०)
- ६ मणिरयणपणासियधयारे
- १० वहुसमसुविभत्तदेसभाए
- ११. पचवण्णसरससुरभिमुक्कपुष्फपुजोवयारकलिए पुष्प-पुञ्जलक्षणेनोपचारेण—पूजया कलित यत्तत्तथा (वृ० प० ५४०)
- १२, कालागरु-पवर-कुदुरुक्कतुरुक्क-धूव-मघमघेत गघुद्धया-भिरामे कुन्दुरुक्का—चीडा तुरुक्क—सिल्हक (वृ० प० ५४०)
- १३ सुगधवरगिधए गधविट्टभूए
  'सुगिधवरगिधए' ति सुगन्धव सद्गन्धा वरगन्धा.—
  वरवासा सन्ति यत्र तत्तथा तत्र 'गधविट्टभूए' ति
  सौरभ्यातिशयाद्गन्धद्रव्यगुटिकाकल्पे (वृ० प० ५४०)

<sup>\*</sup>लय: कुशल देश सुहामणी

- १४ एहवा महल विषे अछै, पुन्यवत सूवा जोगो जी कोइ। सेज्या महारलियामणी, सयन थकी आरोगो जी काइ।।
- १५. तेह पल्यक विषे अछै, आलिगन करी सहीतो जी काइ। तनु प्रमाण तिकया अछै, विहु पसवाड सुरीतो जी काइ।।
- १६ मस्तक ने विल पग विषे, ओसीसा सुख सीरो जी काइ। बिहु पासे ऊची अछै, विचमे नम्यो गभीरो जी काइ।।
- १७. किहाइक गडविब्बोयणे, पाठ इसो दीसतो जी काइ। रूडी पर रचिया अछै, गाल मसूरिया ततो जी काइ।।
- १८. गगा तट नी वालुका, पग मेल्या थी न्हाली जी काइ। पग नीचो जावै तदा, ए सम सेज सुहाली जी काइ।।
- १६. रूडी परि निपजावियों', अतसी वस्त्र कपासो जी काइ। तेह युगल छै इकपटो, पट आच्छादन तासो जी काइ।।
- २०. रूडी परि रचियो अछै, रजस्त्राण सुरीतो जी काइ। आच्छादन नो विशेष ए, रज रक्षाय पुनीतो जी काइ।।

- २१. भोग अवस्था नाय, ते वेला वस्त्रे करी। मेज्या ढाके ताय, आच्छादन कहियै तसु ॥
- २२ \*षट छप्पर ढाक्यो अछ, राते वस्त्रे परितो जी काइ। मशकगृह अभिघान ते, वस्त्र विशेपावरितो जी काइ॥
- २३. वस्त्र विशेषज चरम नो, तेह स्वभाव थी न्हाली जी काइ। अति कोमल होवै अछ, ते सम सेज सूहाली जी काइ।।
- २४ रू विल बूर वनस्पति, माखण नै अकतूलो जी काड। सेज सुहाली एहवी, मनहर चित अनुकूलो जी काइ।।
- २४. प्रवर सुगंघ प्रधान जे, पुष्प अने फुन चूर्णो जी काइ। तिण करिने सय्या तणी, पूजा युक्त सुपूर्णो जी काइ।।
- २६ महल सेज वर्णन तणी, वे सौ सैतीसमी ढोलो जी काइ। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी,

'जय-जश' हरष विशालो जी काइ।।

- १४. तंसि तारिसगंसि सयणिज्जसि
- १५. सालिगणवट्टिए

  'सालिगणवट्टिए' त्ति सहालिगनवर्त्या—शरीर
  प्रमाणोपधानेन यत्तत्तथा (वृ० प० ५४०)
- १६. उभमो विव्वोयणे दुहुओ उण्णए मज्झेणयगभीरे 'उभमो विव्वोयणे' उभयत —शिरोऽन्तपादान्तावा-श्रित्य विव्योयणे—उपधानके यत्र तत्तथा

(वृ० प० ५४०)

- १७ 'गडिवञ्बोयणे' ति क्विचिद् दृश्यते तत्र च सुपरिक-मितगण्डोपद्याने इत्यर्थ' । (वृ० प० ५४०)
- १८ गगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए
  गगापुलिनवालुकाया योऽवदाल —अवदलनपादादिन्या
  सेऽधोगमनिमत्यर्थं तेन सदृशकमितमृदुत्वाद्यत्तत्तथा
  (वृ० प० ५४०)
- १६ ओयवियखोमियदुगुल्लपट्टपिडच्छयणे जविययं ति परिकामत यत् क्षौमिक दुकूल कार्पासिकमतसीमय वा वस्त्र युगलापेक्षया यः पट्ट शाटक. स प्रतिच्छादन आच्छादन यस्य तत्तथा (वृ० प० ५४०)
- २० सुविरइयरयत्ताणे
  सुष्ठु विरचित—रचित रजस्त्राण आच्छादनविशेषः
  (वृ० प० ५४०)
- २१,२२ अपरिभोगावस्थाया यस्मिस्तत्तया (वृ० प० ५४०) रत्तसुयसवुए रक्ताशुकसवृते—मशकगृहाभिधानवस्त्रविशेपावृते (वृ० प० ५४०)
- २३,२४ सुरम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे आजिनक—चम्मंमयो वस्त्रविशेष स च स्वभावा- दितकोमलो भवति रूत च—कप्पीसपक्ष्म बूर च— वनस्पितिविशेषः नवनीत च— म्रक्षण तूलण्च— अर्कतूल. इति द्वन्द्वस्तत एपामिव स्पर्णो यस्य तत्त्रथा (वृ० प० ५४०)
- २५ सुगघवरकुसुम-चुण्ण-सयणोवयारकलिए सुगन्धीनि यानि वरकुसुमानि चूर्णा एतद्व्यतिरिक्त-तथाविधशयनोपचाराश्च तै कलितं यत्तत्तथा। (वृ० प० ५४०)

१ अगसुत्ताणि मे ओयविय पाठ है। वृत्ति मे उविचय पाठ लिया गया है। जोड इसी पाठ के आधार पर की गई है।

दूहा

१. एहवी सिज्या ने विपे, प्रभावती मुविधान। अर्द्ध रात्रि अद्धा समय, सुप्त जागरा जान।। २. न अति सूती नीद मे, न अति जाग्रत न्हाल।

प्रचलायमान थकी तदा, अल्प नीद कर भाल।।

३. एहवे रूपे पेखियो, मोटो स्वप्न उदार। कारक ने कल्याण नों, उपद्रव रहित विचार॥

४. कारक धन्य तणो तिको, मगलीक सिरताज। शोभा लक्ष्मी सहित ते, महा स्वप्न मृगराज।।

प्र सिघ स्वप्न देखी करी, जागी राणी आप। वर्णन स्वप्न तणो कहू, साभलज्यो चुपचाप।।

\*प्रवल अति सवल हरि अचल देख्वो स्वपन (ध्रुपदं)

६. हार मोत्या तणो रजत रूपो घणो, क्षीर समुद्र नों नीर आछो। चद्र नी किरण बिल किणया पाणी तणा,

रजत महासेल वेताढच जाचो ॥

७. एहथी ऊजलो अधिक महिमानिलो, वर्ण वर क्वेत विस्तीर्ण वारू। नेत्र देख्या ठर अधिक मन नै हरै, देखवा योग्य आरोग्य चारू॥ इ. पवर कलाइ स्थिर लब्ट मनोज्ञ छै,

वाटुली अति भली मृदु सुहाली। स्थुल अति मूल जे तीक्ष्ण दाढा करी,

विडम्बित विकृत जिम मुख निहाली।।

सखर समारिया पवर सस्कारिया, जात्य जे कमल तदवत सुहाला।
 मान उपपेत शुभ चेत सोभन मभे,

लष्ट वे ओष्ठ अति श्रेष्ठ आला ॥

१०. रक्त जे कमल ना पत्र तेहनी परै, तालुओ जीभ सुखमाल जेहनी। कोमल मध्य ए अधिक मृदु गुण करी,

ते भणी ओपम दीघ एहनी।।

११ मूस मे आवियो कनक तपावियो, आवर्त्त करत तदवत वतुल्ला। तडितवत विमल अति निमल ते सारिखा,

प्रवर शुभ नयन शोभन प्रफुल्ला ॥

#### सोरठा

१२. वाचनातरे वृत्त', रक्त कमल मृदु सारिखा। कोमल तालु उचित्त, निर्लालिताग्र-जीभ<sup>3</sup> विल।।

\*सय: कडखा री

१ वृत्ति।

२ निस्सारित अग्रजिह्ना।

१,२ अद्धरत्तकालसमर्याम सुत्तजागरा ओहोरमाणी-ओहो-रमाणी मुत्तजागर' ति नातिमुप्ता नातिजागरेति भाव. किमुग्त भवति ? 'ओहोरमाणी' ति प्रचलायमाना,

(वृ० प० ५४०)

३ अयमयास्य ओराल कल्लाण सिव

४ धण्ण मगल्ल सस्मिरीय महासुविण

५. पासिता ण पटिबुद्धा

- ६,७ हार-रयय-धीरमागर-मसककिरण-दगरय-रययम-हासेल-पंटरतरोरुरमणिज्ज-पंच्छणिज्ज पाण्डुरतर.—अतिशुक्त उरु —विस्तीणीं रमणीयो-रम्योऽत एव प्रेक्षणीयश्व—दर्णनीयो य स तया तम्, इह च रजतमहाशैलो वैताद्य इति । (वृ०प० ५४०)
- थिर-लट्ट-पउट्ठ-वट्ट-पीयर-मुिसिलट्ट-विसिट्ट-तिक्ख-वाढाविडवियमुह स्थिरी-अप्रकम्पी, लप्टी-मनाज्ञी . वृत्ता --वर्त्तुला पीवरा.-स्थूला "विडंबित मुख यस्य स तथा (वृ० प० ५४०)
- परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोभतलट्ठकोट्ठ परिकमित—कृतपरिकम्मं यज्जात्यकमल तद्दत्कोमलौ मात्रिकौ—प्रमाणोपपन्नौ शोभमानाना मध्ये लप्टौ— मनोज्ञौ ओष्ठौ—दशनच्छदौ यस्य स तथा । (वृ० प० ५४१)

१० रत्तुप्पलपत्तमज्यसुकुमालतालुजीह रक्तोत्पलपत्रवत् मृदूना मध्ये सुकुमाले तालुजिह्ने यस्य स तथा (वृ० प० ५४१)

११ मूसागयपनरकणगतावियआवत्तायत-बट्ट-तिडिविमल-सिरसनयणं मूपा—स्वर्णादितापनभाजन तद्गत यत्प्रवरकनक तापित—कृताग्नितापम् 'आवत्तायत' ति आवर्त्तं कुर्वाण तद्वद् ये वर्णत वृत्ते च तिडिदिव विमले च सदृशे च परस्परेण नयने—लोचने यस्य स तथा । (वृ० प० ५४१)

१२,१३ वाचनान्तरे तु 'रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालु-निल्लालियग्गजीह महुगुलियाभिसतिपगलच्छ' ति तत्र च रक्तोत्पलपत्रवत् सुकुमाल तालु निर्लालिताग्रा च जिह्वा यस्य स तथा त मघुगुटिकादिवत् 'भिसत'

- १३ मधु सेहत नी तेथ. गोली पीली जे हुवै। तदवत पीला नेत, वाचनातरे दृश्यते॥
- १४. \*पीवर मस कर पुष्ट अदुष्ट है, जघ अति चग सुविशाल तास। विपूल विस्तीर्ण प्रतिपूर्ण तसु खघ है,

जंघ अरु खघनो अति उजास।।

- १५. कोमल घवल अति सूक्ष्म वर पातला, लक्षण पसत्थ विस्तीर्ण वारू । एहवा खघ ना रोम ते केसरा, तास आटोप करि शोभ चारू ।।
- १६. उच्छित—अध्वींकृत अचो कियो, सुष्ठु अघोमुखीकृत सघीको । अधिक शोभनपण जात ते नीपनो, भूमि आस्फालित पुच्छ नीको ।।
- १७ सौम्य अरु सौम्य आकार लीला करत,

वगाइ' करत हरि चित्त हरतो।

तेह आकाश थी सहज ही उतरतो, निज मुख माहि परवेश करतो।।

- १८ ताम प्रभावती प्रवर उदार ए, जाव सश्रीक महास्वप्न जान । स्वप्न मे देख जागी छती हुएं अति, जावत हृदय विकसायमान ॥
- १९. मेघ नी घाराए आहण्यों फूलियें वृक्ष कदव नो फूल रूप। तिमज राणी तणा हरप नां वश थकी,

विकस्या उचा थया रोम कूप।।

- २० तेह स्वप्न प्रतै ग्रही निश्चै करी, उठ सेज्या थकी तुरत चाली। देह ने मन तणी चपलता रहित छै, विलव सभ्रांत रहित हाली।।
- २१. राजहसीव शुभ गमन करती छती, जबर वल नृपति नी सेज आवै। इष्ट मनोहारी मन प्रीतिकारी भला,

वचन मनोज्ञ करि नृप जगावै ।।

२२ अतिही मनगमता ओदार कल्याण करि,

वाणि शिव घन्य मगल सश्रीको।

कोमल मधुर मजुल वचने करी, बोलती नृपति जगाय नीको ।।

- २३. ताम वल राजाए आण दीधा छता, नाना प्रकार ना रत्न जाणी। चद्रकातादि मणी भात जे चीतरचा, एहवे भद्रासणे बैठी राणी।।
- २४ गमन थी ऊपनी श्रम जे टालियो, रालियो दूर सक्षीभ राणी। सुख वर अथवा शुभ आसन प्रति रही,

बोलती नृपति ने मिष्ट वाणी।।

त्ति दीप्यमाने पिंगले अक्षिणी यस्य स तथा । (वृ० प० ५४१)

- १४. विसालपीवरोरु पिडपुण्णिवपुलखध विशाले—विस्तीर्णे पीवरे—उपिचते ऊरू—जधे यस्य परिपूर्णो विपुलश्च स्कन्धो यस्य स तथा (वृ० प० ५४१)
- १५. मिउविसयसुहुमलक्खणपसत्यविच्छिन्नकेसरसङोव-सोभिय मृदव. 'विसद' ति स्पष्टा. सूक्ष्माः 'लक्खण-पसत्य' ति प्रशस्तलक्षणा. विस्तीर्णा. केसरसटाः स्कन्धकेश-च्छटास्ताभिष्पशोभितो य. स तथा (वृ० प० ५४१)
- १६ ऊसिय-सुनिम्मिय-सुजाय-अष्फोडियलगूल उच्छित—ऊर्ध्वीकृत सुनिमित—सुष्टु अघोमुखीकृत सुजात—शोभनतया जात आस्फोटितं च भूमावास्फा-लित लागूल येन स तथा (वृ० प० ५४१)
- १७. सोम सोमाकार लीलायत जभायत नहयलाओ ओवयमाण नियय-वयणमितवयत
- १८ सीह सुविणे पासित्ता ण पिडवुद्धा समाणी हट्टतुट्ट जाव (स॰पा॰) हियया
- १६. धाराहयकलवग पिव समूसवियरोमकूवा
- २०. त सुविण ओगिण्हद, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेता अतुरियमचवलमसभताए अविलवियाए 'अतुरियमचवल' ति देहमनश्चापल्यरहित यथा

भवत्येवम् 'असभताए' ति अनुत्सुकया

(वृ० प० ५४१)

- २१,२२ रायहससरीसीए गईए जेणेव वलस्स रण्जो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वल रायं ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि ओरालाहि कल्लाणाहि सिवाहि धन्नाहि म गल्लाहि सस्सिरीयाहि मिय-महुर-मेजुलाहि गिराहि सलवमाणी-सलवमाणी पिडवोहेइ।
- २३ वलेण रण्णा अव्भणुष्णाया समाणी नाणामणिरयण-भित्तिचित्तसि भद्दासणिस निसीयित
- २४ आसत्या वीसत्या सुहासणवरगया वल राय
  'आसत्य' ति आश्वस्ता गतिजनितश्रमाभावात्
  'वीसत्य' ति विश्वस्ता सक्षोभाभावात् अनुत्सुका वा
  'सुहासणवरगय' ति सुखेन सुख वा शुभ वा आसन-वर गता या सा तथा (वृ० प० ५४१)

<sup>\*</sup>लय: कड़खारी

१. जभाई

२४. सुपन वर्णन तणी दोय सौ ऊपर, एस अडतीसमी ढाल आखी।
पूज्य भिक्षु भारिमाल ऋपिराय थी,
'जय-जग' हरप आनन्द साखी।।

ढाल: २३६

# दूहा

- १ इप्ट जाय वच बोलती, सुदर भाग्वै रवाम। इम निश्चै करि आज हूं, देवानुप्रिय । आम।।
- २ तेह्वी सिज्या नै विषे, देह प्रमाण पल्यंक । तिमज यावत निज मुख विषे, सिंघ प्रवेश मुझक ॥ ३. पेग्वी मुगपति स्वप्न प्रति, हं जागी हे नाथ !

ते माटे देवानुप्रिय ! तुभ प्रति पूछू वात ।।

- ४ ए उदार यावत प्रभु, महास्वपन नृंपेख। कहैव फल कल्याणकर, फल वृत्ति हुस्यै विशेख?
- ५ \*तिण अवसर वल राय, विनता मुख थी वाय। आछेताल।
  सुण हिय घर हरख्यो घणो।।
- ६ पायो परम संतोष, यावत मुख नो पोष । आछेलाल । हिरदो विकस्यो नृप तणो ॥
- ७ मेघ घाराए जेम, नीप कदयं तरु तेम। आँछेलाल। सुरिभ कुसुम तेहना परै।।
- द. पुलिकत तनु थयो राय, रोमकूप विकसाय। आछेलाल। सहज स्वप्न अवग्रह करै।। १. ईहा प्रवेश करंत, आतम स्वभावे हत। आछेलाल।

आभिनिवोच प्रभाव थी।।

- १०. वृद्धि उत्पत्तिया आदि, तिण करि मुपनु लाघि । आछेलाल । फल निय्चय करे चाव थी ॥
- ११. प्रभावती ने राजन, इट्ट मनोज्ञ वचन। आछेलाल। यावत रव मगलपणें।। १२. मृदु मधुर सश्रीक, राणी प्रते तहतीक। आछेलाल। वोलतो नृप इम भणें।।

- ताहि इट्टाहि कताहि जाव ''गिराहि सलवमाणी-सलवमाणी एव वयासी—एव चनु अह देवाणुप्पिया । अज्ज
- २. तसि तारिनगमि मयणिज्जिन मालिगणवट्टए तं चेव जाव नियगवयणमटवयतं भीह मुविणे
- ३ पानित्ता ण पडिबुद्धा तण्ण देवाणुष्पिया ।
- ४ एयस्य ओरानस्य जाव महामुविणस्य के मन्ते कल्लाणे फनवित्तिविमेसे भविन्सङ ?

(ज० ११।१३३)

- ४,६ तए ण में बने राया पशावर्रए देवीए अतिय एयमद्ठं सोच्ना निमम्म हट्टनुट्ट जाव (म० पा०) हियए
- ७, म धाराहयनीवमुरभिकुमुम-चचूमाल उयतणुए कम-वियरोम कूवे त मुविण ओगिण्हड 'चचुमाल इय' ति पुलिकता तनु — शरीर यस्य स तथा, किमुक्त भवति ? 'कमवियरोम कूवे' ति उच्छि-तानि रोमाणि कूपेप — तद्र न्ध्रोपु यस्य स तथा (वृ० प० ५४१)
- ६ ईह पविमङ, पिविमित्ता अप्पणो सामानिएणं मइपुट्यएण 'मइपुट्येण' ति आभिनिवोधिकप्रभवेन
- (वृ० प० ५४१) १० बुद्धिविण्णाणेण तन्स मुविणस्म अत्योग्गहण करेड 'बुद्धिवन्नाणेण' ति मितिविशेषभूतौत्पत्तिक्यादिबुद्धि-रूपपरिच्छेदेम 'अत्योग्गहण' ति फलनिक्चयम् ।
- (वृ० प० ५४१) ११ पभावइ देवि ताहि इट्ठाहि कताहि जाव मंगल्लाहि
- १२ मिय-महुर-सिस्सरीयाहि वग्गूहि सलवमाणे सलवमाणे एव वयासी---

\*लप : आञ्चलाल

- १३ मोटो स्वप्न उदार, हे देवी तिमार । आछेलाल ।
  पेख्यो अति महिमानिलो ॥
  १४. कल्याणकारी एह, हे देवी ! गुणगेह । नीकेलाल ।
  देख्यो तुम सुपनो भलो ॥
  १४. जाव सश्रीक मुसोह, हे देवी । मन मोह । प्यारेलाल ।
  देख्यो सुपन गुणधारक ॥
  १६ आयोग्य तुष्ट अमद, दीर्घ आयु सुख कद । प्यारेलाल ।
  कल्याण मंगल कारक ॥
  १७. तुम्हे देवी तत सार, देख्यो सुपन उदार । नीकेलाल ।
  वारू अर्थ वधारतो ॥
  - बा०—इहा कल्याण शब्द अयं-प्राप्ति अने मगल शब्द अनर्थ-प्रतिघात नै अर्थे प्रयुक्त छै। १८ अर्थ लाभ अभिराम, भोग लाभ सुख धाम। प्यारेलाल।

१८ अर्थ लाभ अभिराम, भीग लाभ सुख धाम। प्यारेलाल।
पुत्र लाभ देवानुप्रिये ।
१६ राज लाभ रलियात, देवानुप्रिय । सुजात । नीकेलाल।

१६ राज लाभ रालयात, दवानु।प्रया सुजात । नाकवाल । इम निश्चै तुम्ह आखियै ॥

२० पूर्ण मास नव थात, ऊपर साढा सात । आछेलाल । रात्रि दिवस व्यतिक्रातिये ।।

२१ अम्ह कुल-केतु समान, केतु ते चिन्ह ध्वज जान । नीकेलाल । केतु अद्भूतपणा हुती ॥

२२. कुल मे दीपक जेम, उद्योतकारी एम । प्यारेलाल । प्रकाशकारी महाद्युती ॥

२३. कुल मे गिरि सम एह, पराभवी न सकेह । आछेलाल । स्थिराश्रय ना साधर्म्य थी ॥

२४. कुल अवतंसक जाण, शेखर सम गुणखाण। प्यारेलाल। उत्तमपणै शुभ कर्म थी।।

२४. कुल मे तिलक समान, भूषकपणा थी जान। नीकेलाल। तिलक कह्यो इह विघ सही।।

२६. कुल नै विषे उदार, कीर्ति तणो करणहार। आछेलाल। कीर्ति प्रसिद्ध इक दिशि मही।।

२७. कुल मे नदि करेह, समृद्धि हेतुपणेह। प्यारेलाल।। पवर सुकुल वृद्धि करण ही।। २८ विल अम्ह कुल-रै माय, यश कारक किहवाय। नीकेलाल।।

२६. कुल ने आधार पिछान, कुल मे वृक्ष समान । प्यारेलाल । छाया आश्रयवा जोग ही ॥

यश सह दिशि मे प्रसिद्ध ही।।

- १३. बोराले ण तुमे देवी । सुविणे दिट्ठे
- १४ कल्लाण ण तुमे देवी । मुविणे दिट्ठे
- १५ जाव सम्मिरीए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे
- १६ आरोग्ग-तुद्विदीहाउ-कल्लाण-मगल्लकारए ण
- १७ तुमे देवी । सुविणे दिट्ठे
- वा—इह कल्याणानि—अर्थप्राप्तयो मगलानि—अनर्थप्रति-याता (वृ० प० ५४१)
- १८ अत्यलाभो देवाण्पिए ! भोगलाभो देवाण्पिए ! पुत्तलाभो देवाण्पिए !
- १६ रज्जलाभो देवाणुष्पिए । एव खलु तुम देवाणुष्पिए ।
- २० नवण्ह मासाण वहुपिडपुण्णाण अद्वहुमाण य राइ-दियाण वीइक्कताण
- २१ अम्ह कुलकेउ 'कुलकेउ' ति केतुश्चिन्ह ध्वज इत्यनर्थान्तर केतुरिव केतुरद्भुतत्वात् कुलस्य केतु कुलकेतुस्तम् (वृ० प० ५४१)

२२. कुलदीव 'कुलदीव' ति दीप डव दीप प्रकाशकत्वात् (वृ० प० ५४१)

२३ कुलपव्वय 'कुलपव्वय' ति पर्वतोऽनभिभवनीयस्थिराश्रयता-साधम्यात् (वृ०प०५४१)

२४ कुलवडेसय 'कुलवडेसय' ति कुलावतसक कुलस्यावतसक.—शेखर-उत्तमत्वात् (वृ० प ५४१)

२५ कुलतिलग 'कुलतिलय' ति तिलको—विशेषको भूषकत्वात् (वृ० प० ५४१)

२६ कुलिकित्तिकर 'कुलिकित्तिकर' ति इह कीर्तिरेकदिग्गामिनी प्रसिद्धिः (वृ० प० ५४१)

२७. कुलनदिकरं 'कुलनदिकर' ति तत्ममृद्धिहेतुत्वात् (वृ० प० ५४१)

२८ कुलजसकर 'कुलजसकर' ति इह यश — मर्वेदिग्गामी प्रसिडि-विशेष (वृ० प० ५४१)

२६ कुलाघार, कुलपायव 'कुलपायव' ति पादपश्चा-श्रयणीयच्छायत्वात् (वृ० प० ५४१)

ग० ११, ७० ११, हाल २३६ ४३६

- ३०. कुल नों विविध प्रकार, वृद्धि तणो करणहार । आछेलाल । नास स्वभाव प्रयोग ही ।।
- ३१ कर पग तसु सुखमाल, पाचं इद्रिय विशाल। प्यारेलाल। स्वरूप थीज हीणा नथी।।
- ३२ पचेद्रिय प्रतिपून, सख्या करिने अनून। नीकेलाल। अथवा पुन्य पवित्र थी।।
- ३३ एह्वो तास गरीर, जाव शब्द मे हीर। आछेलाल। लक्षण वजन आद थी।।
- ३४. शशिवत सोम्याकार, कात मनोहर सार । आछेलाल । प्रिय दर्शण अहलाद थी ।।
- ३४. सुदर रूडो रूप, तनु प्रभा अधिक अनूप। आछेलाल। देवकुवर सम जेहनी॥
- ३६. एहवो पुत्र उदार, जन्मसी महा मुखकार। प्यारेलाल। जवर पुन्याई तेहनी।।
- ३७. ते पिण बालक जाण, वाल भाव मूकाण । नीकेलाल । विज्ञक जाण विशेपही ॥
- ३८. तेहिज परिणत मात्र, कला बोहितर पात्र। प्यारेलाल। योवन वय पाम्यो छतो।।
- ३६. दान देवण में सूर, तथा अगीकृत भूर। नीकेलाल। तेह प्रतै निर्वाहतो।।
- ४० वीर संग्रामे जेह, विकात पर भूमेह। नीकेलाल। लेणहार सुख साधि ही।।
- ४१. विच्छिण्ण' विपुल अर्थ ताय,

अतिही विपुल कहिवाय । नीकेलाल । वल वाहन गो आदि ही ।।

- ४२. राज्य नों स्वामी स्वाघीन, पोता ने वश चीन । प्यारेलाल । नृपति हुस्यै महिमानिलो ॥
- ४३ ते भणी एह उदार, देवानुप्रिय ! सार। आछेलान। देख्यो तुम स्वपनो भलो।।
- ४४ जावत मंगलकार, स्वपन देख्यो सुखकार। आछेलाल। हे देवानुप्रिय । सुदरी।।
- ४५ एम कहीने राय, प्रभावती प्रति ताय । प्यारेलाल । इष्ट जावत वचने करी ॥
- ४६. वारू वे त्रिण वार, मधुर मजुल वच सार। नीकेलाल। राणी प्रते राजा कहै।।
- ४७. वेसौ गुणचालीसमी ढाल, भिक्ख भारीमाल नृप न्हाल । आछेलाल । 'जय-जश' सुख सपति लहै ॥
- १. अगमुत्ताणि मे विच्छिण्ण के स्थान पर 'वित्थिण्ण' पाठ है।

- ३०. कुलविवद्धणकर 'कुलविवउ्ढणकर' ति विविधै. प्रकारैवेंद्वेन विवर्धन तत्करणणीलं (वृ० प० ५४१)
- ३१,३२. सुकुमालपाणिपाय अहीणपिटपुण्णपिचिदयसरीर 'अहीणपुन्नपिचिदियसरीर' ति अहीनानि—स्वरूपत पूर्णानि—मंख्यया पुण्यानि वा—पूतानि पञ्चेन्द्रियाणि यत्र तत्त्रया (वृ० प० ५४१)
- ३३. तदेवविध शरीर यस्य म तथा त यावत्करणात्— 'लक्यणवजणगुणोववेय' मित्यादि दृश्यम् (यृ० प० ५४१)
- ३४ ससिसीमाकार कतं पियदसण
- ३५ मुरूव देवकुमारसमप्पभ
- ३६ दारग पयाहिमि
- ३७,३८. से विय ण दारए उम्मुक्कवालभावे विष्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुष्पत्ते 'विन्नायपरिणयमित्ते' ति विज्ञ एव विज्ञक. स चासौ परिणतमात्रश्च कलादिष्विति गम्यते विज्ञकपरिणत-मात्र (वृ० प० ५४१,५४२)
- ३६ सूरे 'सूरे' ति दानतोऽभ्युपेतनिर्वाहणतो वा (वृ० प० ५४२)
- ४० वीरे विक्कते 'वीरे' ति सग्रामत 'विक्कते' ति विकान्त — परकीयभूमण्डलाकमणत. (वृ० प० ५४२)
- ४१ वित्थिण-विज्ञलवल-वाहणे
  'विच्छिन्नविपुलवलवाहणे' त्ति विस्तीणंविपुले—
  अतिविस्तीणें वलवाहने—सैन्यगजादिके यस्य सतथा
  (वृ० प० ५४२)
- ४२ रज्जवई राया भिवस्सह।

  'रज्जवइ' त्ति स्वतत्र इत्यर्थ (वृ० प० ५४२)
- ४३ त ओराले ण तुमे देवी । सुविणे दिट्ठे
- ४४ जाव आरोग्ग तुट्टि जाव (स॰ पा॰) मगल्लकारए ण तुमे देवी । सुविणे दिट्ठे
- ४५ त्ति कट्ट् पभावति देवि ताहि इट्ठाहि जाव वग्गूहि
- ४६ दोच्च पि तच्च पि अणुबूहति । (श० ११।१३४)

दूहा

- १. प्रभावती तिण अवसरे, वल राजा ने पास।
  एह अर्थ मुण हृदय घर, हरप सतोप हुलास।।
  २. वे कर जोडी जाव ते, सुदर वोले एम।
  इमहिज देवानुप्रिया विवानुप्रिया तेम।।
  ३ ए सत्य देवानुप्रिया विल सदेह रहीत।
  वांछ्यो विशेष वाछियो, इच्छिय-पडिच्छिय प्रीत।।
- ४ जिम तुम एह कहो अछो, तेहिज वचन ए सत्य। इम कहि ते शुभ स्वप्न प्रति, राणी अगीकृत्य।।
- ४. वल राजाङ आगन्या, दीघे छतेज जेह। नाना मणि रत्ने करी, भाते चित्रत तेह।।
- ६ एहवा भद्रासण थकी, ऊठै ऊठी तत्थ। अचपलता तन मन तणी, जाव राजहस गत्त।।
- ७. जिहा पोता नी सेज छै, त्या आवी नै आप। सिज्या ऊपर वैस नै, एम कहै स्थिर स्थाप।।
- द उत्तम वर मगलीक मुक्त, स्वप्न विलोक्यो तेह।
  अन्य पाप स्वप्ने करी, रखे हणास्ये एह।।
  बाo—उत्तम ने स्वरूप थकी, प्रधान ने अर्थ प्राप्ति रूप प्रधान फ

वा॰—उत्तम ने स्वरूप थकी, प्रधान ते अर्थ प्राप्ति रूप प्रधान फल थकी, मगल ते अनर्थ प्रतिघात रूप फल अपेक्षा करी।

- ह. एम कही गुरु देव नी, प्रशस्त मगलकार। कथा घर्ममय तिण करी, राखै स्वप्न उदार॥
- १०. स्वप्न राखवा काज ए, निद्रा भणी निवार। स्वप्न जागरणा जागती, विचरै छै नृप-नार॥
- ११. \*बल नृप कहै तिण अवसरे, सेवग पुरुष वोलायो जी, वयण मधुर इम वागरे, देवानुप्रिया जायो जी। शोध्र देवानुप्रिया थे, आज तुम्ह सुविशेप ही, वाहिरली उवठाण शाला, दीवानखाना प्रति सही। सुगध पाणी करी सीची, अशुचि प्रति दूरो हरे, एम भूमि पवित्र कीजे, वल नृप कहै तिण अवसरे।।
- १२ कचर प्रते टाली करी, छगणादिक करितामो जी, भूमि प्रति लीपी विल, शुद्ध करो अभिरामो जी। अभिरामकारी भूमि कीजै, ते दीवानखाना प्रति, सुगध प्रवर प्रधान एहवा, पुष्प पच वर्णा कृति। उपचार पूजा सिहत कीजै, अधिक हर्ष हिवडे घरी, भूमि शुद्ध पवित्र कीजै, कचर प्रति टाली करी।।
- १३. कृष्णागर प्रधान ए, चोर संला रस जाणी जी, यावत धूप निणे करी, गधवित्त पहिछाणी जी। गधवर्त्तीभूत कीजै, अन्य पास करावियै, विल सिंहासण रची नै मुफ्त, आण पाछी आवियै।

- १ तए ण सा पभावती देवी वलस्स रण्णा अतिय एय-मट्ठ सोच्चा निसम्म हट्टतुट्टा
- २ करयल जाव (स॰पा॰) एव वयासी—एवमेय देवाणुष्पिया । तहमेय देवाणुष्पिया ।
- अवितहमेय देवाणुप्पिया । असिद हमेय देवाणु प्पिया । इच्छियमेय देवाणुप्पिया । दिच्छियमेय देवाणुप्पिया ।
- ४ से जहेय तुन्भे वदह त्ति कट्टु त सुविण सम्म पडिच्छइ, पडिच्छित्ता
- प्र बलेण रण्णा अव्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरय-णभत्तिचित्ताओ
- ६ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेता अतुरियमचवल जाव (स॰ पा॰) रायहससरिसीए गईए
- ७ जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जिस निसीयति, निसीयत्ता एव वयासी—
- मा मे से उत्तमे पहाणे मगल्ले सुविणे अण्णेहि पाव-सुविणेहि पडिहम्मिस्सइ
- ६,१०. त्ति कट्टु देवगुरुजणसवद्धाहि पसत्याहि मगल्लाहि धम्मियाहि कहाहि सुविणजागरिय पिंजागरमाणी-पिंजागरमाणी विहरइ। (श०११।१३५)
- ११ तए ण से बले राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेद, सद्दा-वेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । अज्ज सविसेस वाहिरिय उवट्ठाणसाल गधोदयसित्त-सुद्दय
- १२ समज्जिओवलित्त सुगधवरपचवण्णपुष्फोवयारकलिय समाजिता कचवरापनयनेन उपलिप्ता छगणादिना या सा तथा (वृ० प० ५४२)
- १३ कालागर-पवरकुन्दुरुक्क जाव (स० पा०) गद्यवट्टि-भूय करेह य कारवेह य करेता य कारवेता य मीहासण रएह, रएता ममेतमाणत्तिय पच्चिप्पणह । (ग० ११।१३६)

<sup>\*</sup>लय : इक दिन साघूजी वंदवा गई सुभद्रा नारो जी

मेवग याचत यत्र अंगीकर, राय कहारे निम जान ए. करी करायी आण मुद्दी, उत्पादिक प्रवाद ए ॥

१४. इत अवसर मृत मनरली, दिन उमेर अभानी जी, मेज भरी जठी करी, रूट बिना सेंत्रमाना है। रित्रमात लिए पाल्पीट भी, उत्तरी के तरपती, अदुल ने त्यायामजाता, वाकिया लिख हरप भी। कता जनवाद रिय लिम, पहुलनाल भी। नीक्सी, निमार मजन परे भवन, इत जनवर नृत मनरुले अ

यात - 'त्रा प्रमादन नतेय घटणनाण केट मञ्चलपर्यः विमाणकाद ने निषे अङ्गताला न स्थायामधाला ना प्रवास के नहिमाण पर ना प्रमाद कर्मो लिए प्रपार परिने देश विण्डाति में

- १५ वाया चर्र तथी पर, प्रिवर्शण हन रचन कि. भगन घरणी नीमरी, अपने नृप निजयां है। की। आवियो नप चारती, उत्तराध्यमाला के दिला, मिहासण पूर्व दिलि साहम, मृत करी चेही निहा । आप भी देशाया की, अपने भटासण यह रचार्य मित परे हायया, यहास चट्ट तथी परे ॥
- १६. मरमय पार करी कियो, भवर्तार उपचारो ही.
  भद्रामण एहना भना, पेरन पार्थ एसरो ही।
  एयार पार्म पेराना पति, आप भी दूरो नहीं,
  हुकटो पिण नहीं अछे त्या, यर परेन रानापहीं।
  अस्यतर आरथा गटण, नाम मण्य भागे वियो,
  जवनिका सी अधिक वर्णन, सरसव पार पत्री कियो।।
- १७. नाना विविध प्रकार ना, मणि पहनान आही जी, कर्मेंनादिक रस्न भी, मंदिन नित अह्मादो जी। अह्नाद निन्ज पेराता हो, घण देखवा जोग है, महासूल्य वर पट्टण मेती, नीपनी आरोग है। सूत्रमय पट अर्छ सूक्षम, भात बत निज्ञित पना, जाण रक्षक जयनिका है, नाना विविध प्रकार ना॥
- १८. ईहामृग वृषभा बती, तुरग नर मनर पनी पेनी जी, व्यापद भुषग ने किन्तरा, राह्म मृग नो विदेशों । विदेश मृग नो तेह हार, यरभ पारागर कहा, नमर कुतर वनत्ता, वित नता पत्त तर्ण नहा। एह भाने नीतर्वा ही, जवनिका परियन भनी, अभ्यतर पासै रनावी, ईहामृग वृषभा नती।।
- १६ नाना विविध विचित्र ही, रत्न मणी ना तास्तो जी, भाने नित्रित एहवी, भद्रासण सुरनायो जी। रचाय भद्रासण आरतरक, मृदु मसूरे ढािनयो, अस्त रज अथवा निमल, मृदु मसूरे आच्छादियो।

(2, 14113 :1

रूप भग लागि एवं पाता प्रश्ताकरणणणणीय गणीयः इताबा व्याप्तितः, श्राप्तृतेया गणीया वा प्रशान पता पर्वेगतियम् विभेत वात्रणणया भिनेत एताः गण्याः वात्रणम्यः व्याप्तियम् पता पात्रवरम्यः (गुरुष्ठ) वता वाल्याया भवेत गणायाः

स्वतः --- प्राधितवर्षत्रे वृद्धान्यकारात्रात्रे स्वतः कारस्याग्रातः स्वतिवादवः राष्ट्रीतः स्वतात्राप्ति स्वतः (स. स. ५८६)

- के प्रतिक कार्रियास्य विदेशपूर्वाके प्रत्यक्षे विकेष स्वतिर्वित्रण प्रवृद्धकार्यस्य विकेष प्रतिवारण्य प्रदर्शियाः श्रीहरू क्षाण्यक्षित्रस्य स्वयंत्रियाः विद्वतिष्ठात् विद्वतिर्वत् श्रीहरू प्रवृद्धकार्यः विकेषिकार्यः अस्तु प्राकृत्रणाव्यक् वेण्यास्यः स्यास सुरुष्
- क्षेत्र, विराजनादराजनावस्य नामान्यस्य ज्ञानावस्य ज्ञानावस्य । भागमान्त्रियानुस्तरस्य र
- १७ व्यापारिकामधीतः सित्यापारिका स्वयापय वर्तुस्य स्टब्स्स्सिस्सिस्या
- १८. ईमानिय-उम्म-मुग्य-नर-गगर-विद्या-पान्य-विकास रा-नरम-पगर-पुत्र-पर्याय-गडमाप-भनिवित्र स्राधितांग्यं अपन्तियं अग्डावेट स्माना — न्यापर-भुज्याः " गरमो — मृग्विक्षेपा गरमा — आदाया महासायाः परा परामरेति पर्योताः "एतामा पत्र भनायो — विश्व समनाभित्रित्याः या गा नया । (प्र पर १४२)
- १६. नाणामनिरमणभत्तित्विनः अत्यद्य-मज्यममूरगोत्त्व मयास्यपानन्युयः चनगृरणामगः गुगडणं पभावतीण् देवीण् भद्दानणं नयावेडः

लग न भोड्डियप्रियाः जाताग्यपेश्यः य यप्रियेत्यः य मीत्रकारणे वास्त्र प्रयोगित्यं स्थापितनीतः

<sup>\*</sup>नय: इक दिन साधूजी चदवा गई सुमद्रा नारो जी

श्वेत वस्त्रे ढािकयो, तनु सुख स्पर्शे पिवत्र ही, रािण काज मृदु भद्रासण, नाना विविध विचित्र ही।। २०. नृप कहै नफर बोलाय ने, अधिक हर्प उचरगो जी, शीघ्र तुम्हे देवानुप्रिया। महा निमित्त अष्ट अंगो जी। अष्ट अग महा निमित्त परोक्ष अर्थ प्ररूपणा, करणहारा महाजास्तर सूत्र अर्थ निरूपणा। विहू धारक वली कौजल, विविध शास्त्राध्याय ने, तेडिये शुभ स्वप्न पाठक, नृप कहै नफर बोलाय ने।

#### दूहा

- २१ दिव्य उत्पातज अतिरख, भोम अग स्वर जान। लक्षण व्यजन एक-इक त्रिविघ त्रिविघ पहिछान।। २२ सूत्र थकी ने वृत्ति थी, वार्त्तिक थी फुन जोय। तीन-तीन अ भेद है, अष्ट निमित्त ना सोय।।
- २३ \*सेवग नृप वच साभली, जाव कियो अगीकारो जी, वल राजा ना ममीप थी, नीकलियो तिण वारो जी। नीकल्यो तिण वार सेवग, शीघ्र त्वरित चपला गई, चड गित विल वेगवतज, हित्थणापुर मध्य थई। स्वप्न लक्षण पाठका ना, घर तिहा आवै चली, तेह पाठका प्रनै तेड़ै, सेवग नृप वच साभली।।

# सोरठा

- २४ शीघ्र प्रमुख पद पच, एकार्थे ए आखिया। उत्सुक उत्कर्ष सच, ते प्रतिपादन तत्परा।।
- २५ \*स्वप्न लक्षण पाठक तदा, नृप नै सेवग सोयो जी।
  तेडचा हरख पाया घणा, अतर आनद होयो जी।
  अतर आनद अधिक पाया, मजन विल विलक्षमें करी।
  जाव अलक्षत अग करिनै, सरसव द्रोव शिरे घरी।
  एह मगल करी निज-निज घर थकी चाल्या मुदा।
  हित्थणापुर मध्य थई नै, स्वप्न लक्षण पाठक तदा॥
- २६. भवन महिपति नु तिहा, अवतसक मुख्यावासो जी। तिहा आवै आवी करी, मिल्या एकठा तासो जी। द्वार मूले एकठा मिल, जिहा नृप नी वारली। उपस्थानसाला जिहा वल नृपति सहु आवै चली। कर जोड बल अवनीस नै, जय विजय वर्घापै जिहां। आशीर्वच मुख उच्चरै ते, भवन महिपति नु तिहा।।
- २७ स्वप्न लक्षण पाठक प्रते, वल राजा ए वद्या जी।
  पूज्या नै सत्कारिया, सनमाने आनद्या जी।
  सनमान दीवे जूजुआ, जे पूर्वे नरपित थापिया।
  तेह भद्रासणे वैठा, हरप थी नृप आपिया।

- अथवाऽस्तरजसा—निर्मलेन मृदुमसूरकेणावस्तृतं— आच्छादित यत्तत्तथा (वृ० प० ५४२)
- २० कोडुवियपुरिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एव वयासी—
  खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । अट्ठगमहानिमित्तसुतत्यधारए विविहसत्यकुसले मुविणलक्खणपाढए
  सद्दावेह। (श० ११।१३८)
  'अट्ठगमहानिमित्तसुत्तत्यधारए' ति अप्टाग—अप्टावयव यन्महानिमित्त—परोक्षार्थप्रतिपत्तिकारणव्यु
  त्पादक महाशास्त्र तस्य यौ सूत्रार्थों तौ धारयन्ति ये
  ते तथा तान् (वृ० प० ५४२)
- २१. अट्ठ निमित्तगाइ दिव्वृत्पात तरिक्ख भोम च। अग सर लक्खण वजण च तिविह पुणेक्केक्क ॥ (वृ० प० ५४२)
- २३ तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव पिडसुणेत्ता वलस्स रण्णो अतियाओ पिडिनिक्खमित, पिडिनिक्खिमिता सिग्घ तुरिय चवल चड वेइय हित्यणपुर नगर मज्झ-मज्झेण जेणेव तेसि सुविणलक्खणपाढगाण तेणेव उवागच्छित, उवागच्छिता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दा वेति। (श० ११।१३६)
- २४ 'सिग्घ' मित्यादीन्येकार्थानि पदानि औत्सुक्योत्कर्ष-प्रतिपादनपराणि । (वृ० प० ५४२)
- २५ तए ण से सुविणलक्खणपाढगा वलस्स रण्णो कोड्वियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्टनुट्टा ण्हाया कयवलिकम्मा जाव (स॰ पा॰) सरीरा सिद्धत्यग-हरियालियाकयमगलमुद्दाणा सएहि-सएहिं गेहेहिंतो निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता हित्यणपुर नगर मण्झ-मज्झेण
- २७ तए ण ते सुविणलक्खणपाढगा वलेण रण्णा विदय-पूदय-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेय-पत्तेय पुज्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु निसीयति ।

(श० ११।१४०)

तए ण से वले राया पभावति देवि जवणियंतरिय ठावेइ, ठावेत्ता पुष्फफलपडिपुण्णहत्ये

<sup>\*</sup>लय: इक दिन साधूजी वंदवा गई सुभद्रा नारो जी

ताम नृपति प्रभागती प्रति, पुष्प पात्र प्रतिष्त हो ।
सैनाणी ने जयनिका भे, स्थान नक्षण पाठा पर्ते ॥
२८. परमोराष्ट्र निनय करी, पाठक पति पुर्दा की ।
उम निक्षे देवानुप्रिया ! प्रभानी मनिषद की ।
मतियंत देवी जाज तेत्ने, वास पर यावन भन्ने ।
निष राष्नी देव जागी, नास पर स्व युणनि स दे
दाल नेसी पानीसमी, भिद्यु भारीमान नृष भद्र में ।
सुरा सपदा पामी 'सुजय-जथ' परमी एच्ट विनय वर्ग ॥

इ. स्वम्य हैना निष्ण के अधिकान्त्रमुख्याप्य मृत्य सम्परिताल करित स्वाप्त करित स्वप्ति क्षिप्त करित स्वप्ति करित स्वप्ति क्षिप्त करित स्वप्ति करित करित स्वप्ति स्व

# द्यान : २४१

### दुस्य

- १. स्यप्न मधण पाठक नया, भूष पण भूण निर्धेष । हृदय घार हरस्या पणा, पाया अति भनोष ॥
- अवग्रहे ने स्वतन प्रति, ईत् करत दिनार।
   अय स्वप्न नी ग्रहण कर, आपम ने सावार।
- ३. तेह स्वप्त ना अयं नै, नापा निज भी नाग। प्राह्मा अर्थे जे पर भनी, संसम भी पृत्राय।।
- ४. विशेष निध्ये कर किया, अर्थ स्वस्त ना आर । इतरै जाण्या अर्थ के, स्विर सुद्धि भी स्थाप ॥
- ४. वन राजा नै आगने, स्पष्न शास्त्र प्रति गोग। उच्चारण करतो धागे, एम भागे अवलोग।।
- ६. \*नरिव मोगा, इम निव्नै गरि स्वाम,

स्यान शास्त्र अम्हारा, रतामी मोरा। तेह विषे दे, महारा नाथ।।

नरिंद मोरा, स्वान ययालीम ताम.

फल सामान्यपणा थी दे, स्वामी भीदा । इस असे दे, महारा नाव ॥

७. नरिंद मोरा, मोटा स्वान गुतीम,

तास बडो फल पामै है, स्वामी मोरा। ते भणी है, म्हारा नाव।

नरिद गोरा, सर्व मिनी ने जगीस,

स्वप्न बोहित्तर नाम रे, स्वामी मोरा।
कहै गुणी रे, म्हारा नाथ।।

- andena a erge de granner annable à tem m' le ergementalment and Antons many legam
- nammel ungem Anglin Sarthe Bilg famende nie erhebangen Ming, in nammel fing talen and the Englishmende nie erhabangen Ming, in 2 th Bulgium Angliemmagin Saftung nie niehe nie erhanne fachen giel
- ये जनसं करिनास्य स्वयुक्त स्थितहर्य ती जुलहर अवद्युष्टी केन स्वयुक्त अस्तियद्वी किन समस्यान अस्तिमाण्य किन सम्बद्धि सम्बद्धियत्वी (पुन्ताक करण)
- ४ विलिक्सिय स्थानिक
- A states anny dery; eifenenmitt Andreamer
- ६ तम् चापु देवस्युतिसाः । अस्य सुनित्तरत्तिः यापानीय सुनिताः व्यक्तिः ति सामान्ययासम् (१०५० ४८३)
- ७. तीर्ग महानुपाना—यावगरि महागुण्या हिट्टा । 'महानुपान' नि महापानगातु 'वापानि' पि पित्रती दिमानारिमास्य भीतनादिति (युरु पर ४४३)

द्र. निरद मोरा, जिन चक्री नी मांय, जिन चक्री गर्भ आया रे, स्वामी मोरा। अनुरागिये रे, म्हारा नाथ। निर्द मोरा, तीसां माहिला ताय, चवद स्वप्न महा देखी रे, स्वामी मोरा। जागिये रे, म्हारा नाथ।।

ह. निरंद मोरा, हस्ती वृषभ नै सीह, स्वष्न लक्ष्मी देवी रे, स्वामी मोरा। गुणनिलो रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, पुष्पमाल शुभ लीह,

चद सूर्य ध्वज लेवी रे, स्वामी मोरा। कुभ भलो रे, म्हारा नाथ।।

१० नरिंद मोरा, पद्म सरोवर तास,

समुद्र विमान तथा वलि रे, स्वामी मोरा।

भवन ही रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, पवर रत्न नी राश,

अग्निशिखा दीपंती रे, स्वामी मोरा। चवदही रे, म्हारा नाथ।।

# सोरठा

११. विमान ने आकार, भवन अर्छ रिलयामणो। ते मार्ट अवधार, विमान भवनज एक छै।। १२. तथा स्वर्ग सूआय, विमान देखे तसु अमा। नरक थकी जेथाय, तसु माता देखे भवन।।

१३. \*नरिंद मोरा, वसुदेव नी माय,

वासुदेव गर्भ आया रे, स्वामी मोरा। देखियै रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, चवद माहिला ताय,

अन्य सप्त मही सुपना रे, स्वामी मोरा। पेखियै रे, म्हारा नाथ।।

१४ नरिंद मोरा, वर वलदेव सुमात,

गर्भ विषे वलदेवज रे, स्वामी मोरा।

आवियै रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, चवद माहिला ताय,

अन्य च्यार महा सपना रे, स्वामी मोरा।

पावियै रे, म्हारा नाथ ॥

१५. नरिंद मोरा, नृप मंडलीक नी माय,

मडलीक गर्भ आयां रे, स्वामी मोरा।

भालिये रे, म्हारा नाथ ।

नरिंद मोरा, चवद माहिलो ताय,

अन्य एक महा सपनो रे, स्वामी मोरा। न्हालिये रे, म्हारा नाथ।।

\*लय: मुर्णीद मोरा

द तत्य णं देवाणुष्पिया । तित्यगरमायरो वा चक्क-विद्वमायरो वा तित्यगरिस वा चक्कविद्विस वा गव्भ वक्कममाणिस एएसि तीसाए महासुविणाण इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झित ।

१,१० गय उसह सीह अभिसेय दाम सिस दिणयर झय कुभ।

पउमसर सागर विमाणभवण रयणुच्चय सिहि च ।। 'अभिसेय' ति लक्ष्म्या अभिषेक 'दाम' ति पुष्पमाला (वृ० प० ५४३)

- ११. 'विमाणभवण' त्ति एकमेव, तत्र विमानाकार भवन विमानभवनम्। (वृ० प० ५४३)
- १२ अथवा देवलोकाद्योऽवतरित तन्माता विमान पश्यित यस्तु नरकात् तन्माता भवनिर्मित । (वृ० प० ५४३)
- १३ वासुदेवमायरो वासुदेविस गब्भ वक्कममाणिस एएसिं चोद्सण्ह महासुविणाण अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झित ।
- १४ वलदेवमायरो बलदेवसि गब्भ वक्कममाणसि एएसि चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता ण पडिवुज्झति ।
- १५ मडलियमायरो मडलियसि गन्भ वक्कममाणसि एएसि ण चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयर एग महासुविण पासित्ता ण पडिबुज्झति ।

१६ नरिंद मोरा, देवानुप्रिया ! जेह, एक स्वप्न महाराणी रे, स्वामी मोरा। देखीइ रे, म्हारा नाथ। नरिंद मोरा, सांभल नृप गुण गेह, मोटो स्वप्न उदारज रे, स्वामी मोरा। विशेपीइं रे, म्हारा नाथ।। १७. नरिंद मोरा, जाव आरोग्य तुष्टि जाण, दीर्घायु कल्याणक रे, स्वामी मोरा। कारको रे, म्हारा नाथ । नरिंद मोरा, मंगल हेतु पिछाण, स्वप्न प्रभावती देख्यो रे, स्वामी मोरा। गुणधारको रे, म्हारा नाथ ॥ १८. नरिंद मोरा, अर्थ लाभ अभिराम, भोग लाभ पिण भारी रे, स्वामी मोरा। पामियै रे, म्हारा नाथ। नरिंद मोरा, पुत्र लाभ पिण ताम, राज लाभ पिण होस्यै रे, स्वामी मोरा। देवानुप्रिये रे, म्हारा नाथ।। १६. नरिंद मोरा, देवानुप्रिय महाभाग, नव मासे प्रतिपूर्णे रे, स्वामी मोरा। जाव थी रे, म्हारा नाथ। नरिंद मोरा, तुम कुल केतु पताग, जावत वाल जनमसी रे, स्वामी मोरा। प्रभावती रे, म्हारा नाथ।। २०. नरिंद मोरा, वाल भाव मूकाण, जाव राज्यपति राजा रे, स्वामी मोरा। हुस्यै सही रे, म्हारा नाथ। नरिंद मोरा, अथवा सत सुजाण, मजम तप करि भावित रे, स्वामी मोरा। आतम ही रे, म्हारा नाथ।। २१. नरिंद मोरा, ते माटै ए उदार, देवीं मोटो मुपनो रे, स्वामी मोरा। देखियो रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा. जाव आरोग्य तुष्टि सार,

२२. नरिंद मोरा. तिण अवसर वलराय,

१६ इमे य ण देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए एगे महा-सुविणे दिट्ठे, त ओराले ण देवाणुष्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे

१७ जाव आरोग्ग-तुट्ठिदीहाउ-कल्लाणमगल्लकारए ण देवाणुप्पिया । पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे

१८ अत्यलाभो देवाणुष्पिया ! भोगलाभो देवाणुष्पिया ! पुत्तलाभो देवाणुष्पिया ! रज्जलाभो देवाणुष्पिया !

१६ एव खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण अद्धटुमाण य राइदियाण वीडक्कताण तुम्ह कुलकेउ जाव देवकुमारसमप्पभ दारग पयाहिति ।

२० से वि य ण दारए उम्मुक्कवालभावे जाव (स॰पा॰) रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा।

२१ त ओराले ण देवाणुष्पिया । पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोगा-तुट्घि-दीहाउ-कल्लाण-मगल्लकारए पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे। (श० ११।१४२)

२२ तए ण मे वले राया सुविणलक्षणपाढगाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ठे करयल जाव (स॰ पा॰) कट्टू ते सुविणलक्षणपाढगे एव वयासी—

नरिंद मोरा, हिये घार हरपाय, कर तल जावत करने रे, स्वामी मोरा। कहै थूणी रे, म्हारा नाथ।।

स्वप्न-लक्षण पाठक नो रे. स्वामी मोरा।

दीर्घ बाउखो जावत रे. स्वामी मोरा।

पेखियो रे. म्हारा नाथ ॥

वच सुणी रे. म्हारा नाथ।

२३. नरिंद मोरा, देवानुप्रिय ! इमहीज, जावत तुम्हे कहो छो रे, स्वामी मोरा । इम कही रे, म्हारा नाथ । नरिंद मोरा, रूड़ी रीत दै रीभ, तेह निमल सुपना नै रे, स्वामी मोरा । सम्यग ग्रही रे. म्हारा नाथ ॥

२४. नरिद मोरा, स्वप्न पाठक नै विशाल, विस्तीरण असणादिक रे, स्वामी मोरा। च्यार ही रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, पुष्प वस्त्र गघ माल, अलकार कर राजा रे, स्वामी मोरा। सतकार ही रे, म्हारा नाथ।।

२५. नरिंद मोरा, देई अधिक सनमान, विस्तीरण आजीविक रे, स्वामी मोरा। जोग ही रे, म्हारा नाथ।

निरंद मोरा, प्रीतिकारी दें दान, सीख दिये संतोषी रे, स्वामी मोरा। नृप सही रे, म्हारा नाथ।।

२६. निरद मोरा, सिहासण थी तेह, ऊठी राणी पासे रे, स्वामी मोरा। आवियो रे, म्हारा नाथ।

निरद मोरा, इष्ट जाव वचनेह, बोलतो नृप भाखे रे, स्वामी मोरा। हरषावियो रे, म्हारा नाथ।।

२७ निरद मोरा, निश्नै देवानुप्रिय । जान, स्वप्न शास्त्र रै माहे रे, स्वामी मोरा। आखिया रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, स्वप्न वयालीस मान, मोटा सुपना तीसज रे, स्वामी भोरा। भाखिया रे, म्हारा नाय।।

२८. निरद मोरा, सर्व बोहितर सपन, जिन चक्री नी माता रे, स्वामी मोरा। जाणियै रे, म्हारा नाथ।

निरिद मोरा, तिमहिज जाव वचन, अन्य एक महा सुपनो रे, । स्वामी मोरा । माणिय रे, म्हारा नाथ ॥

२६. निरंद मोरा, देवानुप्रिय । तुम ताय, महास्वप्न इक दीठो रे, स्वामी मोरा। सुदक्ष रे, म्हारा नाथ। २३. एवमेयं देवाणुप्पिया । जान (स॰ पा॰) से जहेयं तुक्भे नदह ति कट्टु त सुनिणं सम्म पडिच्छइ

२४ सुविणलक्खणपाढए विजलेणं असण-पाण-खाइम-साइम-पुष्फ-वत्य-गध-मल्लालकारेण सक्कारेइ

२५ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता, सम्माणेत्ता विउल जीवियारिह पीइदाण दलयइ, दलयित्ता पिंडविसज्जेड ।

२६ सीहासणाओ अवभुट्ठेइ, अवभुट्ठेता जेणेव पभावती देवी तेणेव जवागच्छइ, जवागच्छिता पभावति देवि ताहि इट्ठाहि जाव मियमहुरसस्सिरीयाहि वग्गूहि सलवमाण-सलवमाणे एव वयासी—

२७ एव खलु देवाणुष्पिए ! सुविणसत्यसि वायालीस सुविणा, तीस महासुविणा

२ वावत्तरि सञ्बसुविणा दिट्ठा । तत्य ण देवाणुष्पिए !
तित्यगरमायरो वा चक्कविट्टमायरो वा तित्यगरिस
वा चक्कविट्टिस वा गन्भ वक्कममाणिस एएसि
तीसाए महासुविणाण इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता
ण पिंडवुज्झित, त चेव जाव मडिलयमायरो मडलियसि गन्भ वक्कममाणिस एएसि ण चोद्दसण्ह
महासुविणाण अण्णयर एग महासुविण पासित्ता ण
पिंडवुज्झिति ।

२६ इमे य ण तुमे देवाणुप्पिए । एगे महासुविणे दिट्ठे त ओराले ण तुमे देवी । सुविणे दिट्ठे जाव रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा

श० ११, उ ११, ढाल २४१ ४४७

नरिंद मोरा, जाव हुस्यै राजपित राय, अथवा भावित आतम रे, स्वामी मोरा । मुनीवरू रे, म्हारा नाथ ॥ ३०. नरिंद मोरा, ते भणी मोटो उदार,

स्वप्न देवी ! तुम दीठो रे, स्वामी मोरा। गुणनिलो रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, जाव पूर्ववत सार,

देख्यो सुपनो वारू रे, स्वामी मोरा। अतिभलो रे, स्हारा नाथ॥

३१ नरिद मोरा, एम करीनै मार,

नेह इंप्ट बचने करि रे, रवामी मोरा। नरपती रे, म्हारा नाथ।

नरिद मोरा, जावत वे त्रिण वार

दाखे महिपति वाणी रे, स्वामी मोरा। हरप थी रे, म्हारा नाथ।।

३२. नरिद मोरा, राणी नृप नो वचनन,

साभल हिंवड़े घारी रे, स्वामी मोरा। आनद लहे रे, म्हारा नाथ।

नरिद मोरा, हरप सतीय उपनन,

कर तल जोडी यावत रे, म्वामी मोरा। इम कहे रे, म्हारा नाथ।।

३३. नरिद मोरा, देवानुप्रिया ! इमहीज,

जावत रूडी रीते रे, रवामी मोरा। स्वप्न ग्रहे रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, वल नृप आण थकीज,

भद्रासण सू ऊठी रे, स्वामी मोरा। मग वहै रे, म्हारा नाथ।।

३४ नरिद मोरा, तन मन चपल रहीत,

जाव राजहस सरिखी रे, स्वामी मोरा। गति करी रे, म्हारा नाथ।

नरिद मोरा, जिहां निज भवन पुनीत,

आवी भवने पेठी रे, स्वामी मोरा। हरप घरी रे, म्हारा नाथ।।

३५, नरिद मोरा, आखी ढाल अमद,

वेसी इकतालीमीं रे, स्वामी मोरा। अति भली रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, भिक्षु भारीमाल नृपचद,

'जय-जश' सुख वर सपित रे, स्वामी मोरा।

रगरली रे, म्हारा नाथ ॥

३० तं ओराने ण तुमे देवी ! मुविणे दिट्ठे जाव · · · · · गुविणे दिट्ठे जाव · · · · · गुविणे दिट्ठे

३१. नि कट्टु पभावित देवि ताहि उद्घाहि जाव मिय-मटुर-सिम्मरीयाहि यग्गूहि दोच्चं पि तच्च पि अणुत्रहद्द । (म॰ ११।१४३)

३२. तए ण मा पभावती देवी बलम्म रण्यो अतिय एयमट्ठ सोच्चा निमम्म हट्टुतुट्टा करयल जाव (म॰ पा॰) एव वयामी—

३३ एयमेय देवाणुष्पिया । जाव त सुविण सम्म पिउच्छद, पिउच्छिता बनेण रण्णा अव्भणुण्णाया ममाणी नाणामणिरयणभित्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अव्भुट्ठेड

३४ अतुरियमचयलमसभताए अविलवियाए रायहस-सरिसीए गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सयं भवणमणुपविद्वा । (॥० ११।१४४)

## दूहा

- प्रभावती तिण अवसरे, स्नान विलक्षमं कीघ। जाव अलकृत सर्व करि, अग विभूषित सीघ।।
   ते गर्भ प्रति अति शीत नहीं, निहं अति उष्ण असन्न। अतिही तिक्त पिण निह करैं, विल अति कटुक तजन्न।।
   न अति कसायलै करीं, अति खाटे करि नाहि। अति मीठो तजवै करीं, अधिक मने ओछाहि।।
   भोगवता ऋतु-ऋतु विषे, सुख वा शुभ करि जेह। भोजन आच्छादन विलं, गुध माल्य करि तेह।।
- प्रतेह गर्भ ने जेह हित, मित ते अधिक न उन्न। पथ्य तिको सामान्य करि, गर्भ पोष प्रतिपुन्न।।
- ६ देश उचित भूमी जिका, नेहिज देश विषेह। काले फुन अवसर विषे, आहार भोगवती जेह।।
- ७ दोप रहित फुन जेह छै, मृदु कहियै सुकुमाल। एहवा शयनासन करी, सुख विलसै सुविशाल।।
- मत ने अनुकूल कारिणी, विहार भूमि विपेह ।।
- ध भला मनोरथ ऊपजै, प्रशस्त दोहला जेह।
   विद्यतार्थ पूरण थकी, सपन्न-दोहला तेह।।
- १० सम्माणिय दोहलावली, पाम्या वाछित अर्थ। तेह तणा जे भोग थी सन्मान्याज तदर्थ॥
- ११ जेह मनोरथ ऊपनो, लेश करी पिण जेह ।। क्षण पिण नही अणपहुंचतु, अविमाणिय दोहला तेह ।।
- १२. विच्छिन्न दोहला तसु वली, तूटी वाछा तास ।। विणीय दोहला नो अरथ, दोहला रहित विमास ।।
- १३ रोग शरीर तणी तिका, पीड़ा करी रहीत। सोगमानसी पीड़ जे, तिण करि रहित वदीत।।
- १४. गयो मोह निंह मूढता, अल्प मात्र भय नाहि। अकस्मात भय सहु गयो, परित्रास निह ताहि।।

- १ तए ण सा पभावती देवी ण्हाया कयवलिकम्मा जाव सव्वालकारिवभूसिया
- २ त गव्म नातिसीतेहिं नातिउण्हेहिं नातितित्तेहिं नातिकडुएहि
- ३ नातिकसाएहिं नातिअविलेहिं नातिमहुरेहि
- ४ उउभयमाणसुहेिह भोयण-च्छायण-गध-मल्लेहिं 'उउभयमाणसुहेिहं' ति ऋतौ ऋतौ भज्यमानानि यानि सुखानि—सुखहेतव शुभानि वा तानि तथा तै. (वृ० प० ५४३)
- ५ ज तस्स गब्भस्स हिय मित पत्य गब्भपोसण 'हिय' ति तमेव गर्भमपेक्ष्य, 'मिय' ति परिमित— नाधिकमून वा 'पत्य' ति सामान्येन पथ्य (वृ० प० ५४३)
- ६ त देसे य काले य आहारमाहारेमाणी 'देसे य' ति उचितभूप्रदेशे 'काले य' ति तथाविधा-वसरे (वृ० प० ५४३)
- प्रदिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पर्दारक्कसुहाए' ति प्रतिरिक्तत्वेन तथाविधजनापेक्षया विजनत्वेन सुखा ग्रुभा वा या सा तथा तया (वृ० प० ५४३)
- ध पसत्यदोहला सपुण्णदोहला
   (पसत्यदोहला' त्ति अनिन्द्यमनोरया 'सपुन्नदोहला'
   अभिलिपतार्थपूरणात् (वृ० प ५४३)
- १० सम्माणियदोहला
  'सम्माणियदोहला' प्राप्तस्याभिलिषतार्थस्य भोगात्
  (वृ० प० ५४३)
- ११ अविमाणियदोहला
  'अविमाणियदोहल' त्ति क्षणमपि लेशेनापि च नापूर्णमनोरथेत्यर्थः। (वृ० प० ५४३)
- १२ वोच्छिण्पदोहला विणीयदोहला'वोच्छिन्नदोहल' ति त्रुटितवाञ्छेत्यर्थ
- १३,१४ ववगयरोग-सोग-मोह-भय-परित्तासा इह च मोहो-—मूढता भय भीतिमात्र परित्रास — अकस्माद्भय (वृ० प० ५४३)

- १५. वाचनातरे छै इहां, सुहमुहेण नाम । सुख थी आश्रयणीय प्रति, आश्रय करती ताम ॥ १६. सुखे सयन करती छती, ऊभी रहै सुखेह ॥ वेसै विल गय्या विषे, सुखे करी वर्त्तेह ॥
  - १७. सुखे-मुखे ते गर्भ प्रति, वाबा रहित वहेह। सवा नव मारो जनमियो, कोमल कर पग वेह।।

# ननदन जायो रे।। (भ्रुपद)

- १८. कोमल अग सुचग मनोहर, जयवतो सुत जायो। हीण नही प्रतिपूरण पूरा, पचेद्रिय तनु पायो।।
- १६ लक्षण व्यजन करी लिलते है, गुणे युक्त गुण गायो। जावत चद्र तणी पर आछो, सोम्याकार सुहायो॥
- २० कात मनोज्ञ घणो मनगमतो, दर्शण प्रिय देखायो। सुदर रूप स्वरूप अनोपम, कामदेव सम कायो॥
- २१ तिण अवसर ते प्रभावती, देवी नी दासी ताह्यो। सेवा अग तणी नित साधै, अग-प्रतिचारिका कहायो॥
- २२. प्रभावती सुत जनम्या जाणी, आवी महिपति पाह्यो । वे कर जोटी वल नृप ने, जय विजय करी सुत्रवायो ।।
- २३ नृपित वद्यावी कहै इम निश्चै, देवानुप्रिय । रायो । सवा नव माने प्रभावती सुत, जाव अनोपम जायो ।।
- २४. ते भणी देवानुप्रिय तुमने, प्रीति अर्थ कहूं वायो। प्रिय सुत जन्मज प्रगट करू छ्, पवर वघाइ देवायो।।
- २५. प्रिय कल्याण मगल तुभ थावी, तिण अवसर वल रायो । अगप्रतिचारिका दासी पासे, एह अर्थ सुण ताह्यो ॥

वा०-इहा टीकाकार कहं छै अनेरो पिण प्रिय थावो ।

- २६ हरप सतोप लह्यो हिवडे घर, जाव धारा कर ताह्यो। आहणियो जे कदव वृक्ष जिम, जाव रूम विकसायो॥
- २७. मुकुट वर्ज ने ते दासी प्रति, आभूपण अधिकायो । अवनीपित जिम पहिरचा था ने दिये वधाई माह्यो ॥

#### सोरठा

२६. मुकुट न दीवो तास, राज चिह्न छै ते भणी। फुन स्त्री ने सुविमास, मुकुट अनुचितपणा थकी।।

१७. त गव्म मुहमुहेण परिवहति ।

(ण० ११।१४५)

तए ण सा पभावती देवी नवण्ह मासाण बहुपिट-पुण्णाण अद्घट्टमाण य राउदियाण वीइक्कताण मुकुमालपाणिपाय

- १८ अहीणपिटपुण्णपिचिदियसरीर
- १६ लक्यणवजणगुणोववेय जाव (म० पा०) सिससोमा-कार
- २० कत पियदसण मुरूव दारय पयाया । (म० ११।१४६)
- २१,२२ तए ण तीमे पभावतीए देवीए अगपिडियारियाओं पभावित देवि पसूय जाणेत्ता जेणेव वले राया तेणेव उवागच्छित उवागच्छिता करयल जाव (स॰ पा॰) वल राय जएण विजएण वहावेति
- २३ वद्वावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुष्पिया । पभावती देवी नवण्ह

मासाण वहुपटिपुण्णाण जाव सुरुव दारग पयाया ।

- २४ त एयण्ण देवाणुष्पियाण पियहुयाए पिय निवेदेमो ।
  'पियहुयाए' त्ति प्रियार्थतायै—श्रीत्यर्थमित्यर्थ 'पिय
  निवेएमो' त्ति 'प्रियम्' इप्टबस्तु पुत्रजन्मलक्षण
  निवेदयामः (वृ० प० ५४३)
- २५ पिय भे भवतु । (म॰ ११।१४७) तए ण मे वले राया अगपिंडयारियाण अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म 'पिय भे भवउ' ति एतच्च प्रियनिवेदन प्रिय भवता भवतु ।
- वा०--तदन्यद्वा प्रिय भवत्विति । (वृ० प० ५४१)
- २६ हटुतुद्र जाव धाराहयनीवसुरिभकुसुमचचुमालइयतणुए कसवियरोमकूवे
- २७ तासि अगपिडयारियाण मउटवज्ज जहामालिय ओमोय दलयइ 'जहामालिय' ति यथामालित—यथाद्यारितं यथा परिहितमित्यर्थ (वृ० प० ५४३)
- २७. 'मउटवज्ज' ति मुकुटस्य राजिचह्नत्वात् स्त्रीणा चानुचितत्वात्तस्येति तद्वर्जन । (वृ० प० ५४३)

१५,१६ इह रथाने वाचनान्तरे 'मृहसुहेण आसयइ मुयड चिट्ठंड निसीयइ तुयट्टंड' त्ति दृण्यते तत्र च 'मृहंसुहेण' ति गर्भानावाधया 'आसयड' त्ति आश्रयत्याश्रयणीय वस्तु 'सुयइ' त्ति शेते 'चिट्ठंड' त्ति कद्ध्वंस्थानेन तिष्ठति 'निसीयड' त्ति उपविग्रति 'तुयट्टंड' त्ति ग्रय्याया वर्त्तत उति । (वृ० प० ५४३)

<sup>&</sup>lt;sup>4</sup>लय : मुंबर जायो रे

२६ \* इवेत रजतमय निर्मल जल सू भरचोभृगार ग्रहायो। ते दासी नो शिर घोई नै, दासी पणो मिटायो।।

# सोरठा

- ३० निश्चै स्वामी जेह, शिर घोया दासीपणो। दूर हुवै छै तेह, एह लोक व्यवहार छै।।
- ३१. \*विस्तीरण आजीविकायोग्यज, प्रीति दान दिवायो। सत्कारी सन्मानी ने तसु, सीख दियै वलरायो॥
- ३२ विल कोडिवक पुरुप प्रतै नृप, तेड कहै इम वायो। हे देवानुप्रिया । कीघ्र तुम्ह, हित्थणापुर मे जायो॥
- ३३ छोडो वदीवानज सगला, मान घान्य रस ताह्यो ॥ तेह पायली प्रमुख माप ते, रूडी रीत वघायो॥
- ३४ वलि उन्मानज तुला रूप ही, सेर पाव पुर माह्यो। ते पिण रुडी रीत वधावो, जेज करो मत कायो॥
- ३५. विल हित्थणापुर माहै वाहिर, उदक करी सीचायो। कचरो टालो लीपो जावत, करो करावो जायो।।
- ३६. जूप सहस्र ने चक्र सहस्र ए, पूजा विशेष ताह्यो। महामहिमा सतकार प्रतै ए, ओछव करि अधिकायो॥
- ३७. ओछव करि मुभ आज्ञा सूपो, कोडविक नृप वायो। अगीकार कर करी करावी, आज्ञा सूपी आयो॥
- ३८. तिण अवसर वल राजा आयो, अट्टणसाला माह्यो । तिमहिज जावत मजन घर थी, नीकलियो छै न्हायो।।
- ३६ मूक्यो दाण जगात वली कर, गाय प्रमुख नो रायो। विल करसण नो कर निह लेवे, देणो मतद्यो ताह्यो।।
- ४०. अणमाप्या अणमिणिया द्यो विल, नृप आज्ञा यी ताह्यो । पर घर विषेज राजपुरुप नो, प्रवेश करिवो नाह्यो ॥
- ४१. विल किण पास दड निहं लेणो, कुदड लेणो नाह्यो । कुदड ते अपराघ विना लै, ए विहु नृप वरजायो ॥

- २१. सेतरययामय विमलसलिलपुण्ण भिगार पींगण्हइ, पिंगण्हित्ता मत्यएं घोवइ
- ३० अगप्रतिचारिकाणा मस्तकानि क्षालयित दासत्वाप-नयनार्थं स्वामिना घौतमस्तकस्य हि दासत्वमपगच्छ-तीति लोकव्यवहार । (वृ० प० ५४३)
- ३१ विउल जीवियारिह पीइदाण दलयड, दलयिता सक्कारेड, सम्माणेइ सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पिड-विसज्जेइ। (श० ११।१४८)
- ३२ तए ण से वले राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेद, सद्दावेता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । हत्यिणा- पुरे नयरे
- ३३,३४ चारगसोहण करेह, करेत्ता माणुम्माणवड्ढण करेह 'चारगसोहण' ति वन्दिविमोचनमित्यर्थ 'माणुम्माण-वड्ढण करेह' ति इह मान—रसधान्यविपयम्, उन्मान—तुलारूपम्। (वृ० प० ५४४)
- ३५ हित्यणापुर नगर सर्विभतरवाहिरिय वासिय-समिज्जिनोविलत्त जाव गधविट्टभूय करेह य कारवेह य
- ३६ जूवसहस्स वा चक्कसहस्स वा पूपामहामहिमसंजुत्त उस्सवेह
- ३८ तए ण से वले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव जवागच्छइ, उवागच्छिता त चेव जाव मज्जणघरास्रो पडिनिक्खमङ्
- ३६ उस्सुक्क उक्कर उक्किट्ठ खरेज्ज
  'उक्कर' ति उन्मुक्तकरा, करस्तु गवादीन् प्रति प्रतिवर्षं राजदेय द्रव्य, 'उक्किट्ठ' ति उत्कृप्टा—प्रधाना
  कर्पणनिपेधाद्वा 'अदिज्ज' ति विक्रयनिपेधेनाविद्यमानदातव्या (वृ० प० ५४४)
- ४० अमेज्ज अभडप्पवेस
  'अमिज्ज' ति विक्रयप्रतिपेधादेवाविद्यमानमातव्या
  अविद्यमानमाया वा
  'अभड्प्पवेस' ति अविद्यमानो भटाना—राजाज्ञादायिना पुरुषाणा प्रवेश कुटुविगेहेषु यस्या सा तथा ता
  (वृ० प० ५४४)

४१. अदडकोदिडम

<sup>\*</sup>लय। मुंबर जायो रे

- ४२ अडाणे कोइ घार न राखे, गणिका वर जिण माह्यो । एहवा नाटक संबंधि पात्रे, सहित नगर करवायो ॥
- ४३. नानाविष जे प्रेक्षाचारी, सेवित जिका सुहायो ॥ इक क्षण मात्र मृदग वजाया विन निह रहिता ताह्यो ॥
- ४४ अणकुमलाणा पुष्प तणी जे, माल घरो पुर माह्यो। प्रमुदित जन ना योग्य थकी जे, प्रमुदिताज कहिवायो॥ ४५. प्रक्रीडित जन तणा योग्य थी, प्रक्रीडिता सुखदायो॥ जन करि सहित पवर पुर विल जे, देश लोक दीपायो॥

#### सोरठा

- ४६ वाचनातरे वाय, विजय वैजयती कहा। । अतिहि विजय सुहाय, विजय-विजय कहियै तसु ॥ ४७. तेह प्रयोजन तास, तिका विजय वैजयतिका। तेह प्रते सुविमास, कीजै ऊची नगर में ॥ ४८ रमर्यादा कुल नी जे अथवा, लोक तणी सुखदायो। सुत जन्मोत्सव दिवस दसा लग, राय करै हरपायो॥
- ४६ दस दिन सुत ना जन्म महोत्सव, करता थकाज रायो। गत द्रव्य सहस्र लक्ष द्रव्य लागै, एहवो यागे करायो॥
- ५० दाए य कहिता दान प्रते फुन, भाए य कहि ताह्यो। वाछित द्रव्य ना अश प्रते जे, दिये देवावे रायो॥
- ५१. शत द्रव्य सहस्र लक्ष द्रव्य लागै, एहवो लाभ सुहायो। आपै दिवरावै इण रीते, विचरै बल महारायो॥
- ५२ ढाल दोय सी वयालीसमी, जन्मोत्सव सुखदायो। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, जय-जश हरण सवायो।।

- ४२. अधिरम गणियावरनाटडज्जरुतियं 'अधिरम' ति अविद्यमानधारणीयद्रव्याम् ऋणमुत्कल-नात् 'गणियावरनाडइज्जरुतिय' गणिकावरै वेश्या-प्रधानैनिटकीयैः नाटकसम्बधिभि पात्रैः क्रिता या सा तथा ताम् (वृ० प० ५४४) अणेगतालाचराणुचरिय अणुद्ध्यमुद्दग
- ४३. अणेगतालाचराणुचरिय' नानाविधप्रेक्षाचारिमेविता-मित्यर्थ अणुद्धुइयमुङग त्ति अनुद्धूता — वादनार्थं वादकैरविमुक्ता मृदगा यस्या सा तथा ताम्

(वृ० प० ५४५)

- ४४,४५ अमिलायमल्लदाम पमुद्दयपक्कीलिय सपुरजण-जाणवय 'पमुद्रयपक्कीलिय' ति प्रमुदितजनयोगात्प्रमुदिता प्रक्रीडितजनयोगात्प्रक्रीडिता (वृ० प० ५४५)
- ४६,४७ वाचनान्तरे 'विजयवेजइय' ति दृश्यते तत्र चातिशयेन विजयो विजयविजयः स प्रयोजन यस्याः सा विजयुर्वेजयिकी ताम् (वृ० प० ५४५)
- ४८ दसदिवसे ठिइवडिय करेति । (श० ११।१५१)

  'ठिइवडिय' ति स्थितौ—कुलस्य लोकस्य वा

  मर्यादाया पितता—गता या पुत्रजन्ममहप्रिक्रिया सा

  स्थितिपितताऽतस्ता 'दसाहियाए' ति दशाहिकाया—

  दशदिवसप्रमाणाया (वृ० प० ५४५)
- ४६ तए ण से बले राया दमाहियाए ठिइवडियाए बट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य
- ५० दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य 'दाए य' त्ति दायाण्च दानानि 'भाए य' त्ति भागाण्च-विवक्षितद्रव्याणान् (वृ० प० ४४४)
- ५१ सइए य सयसाहस्सिए य लभे पडिच्छेमाणे य पडिच्छावेमाणे य एव यावि विहरइ।

(श० ११।१५२)

<sup>\*</sup>लय : कुंवर जायो रे

१. पूजा का एक प्रकार।

### दूहा

- १ तिण अवसर ते वाल ना, मास पिता घर खंत। जन्म महोत्सव प्रथम दिन, स्थितिपतिताज करत।।
  २ चद्र सूर्य दर्शन इसो, महोत्सव तीज दिन। छठ दिन निशि जागरण, उत्सव करत सुजन।
- ३ व्यतिक्राते ग्यारम दिने, निवृत्त जे अतिकत। अशुचि जात कर्म तेहनु, करण करिवू मत।।
- ४ पामे द्वादशमे दिवस, असणादिक चिछ आहार। रघावी जिम शिव नृपति, तिम कहिवू अधिकार॥
- प्र जावत क्षत्रिय तेडने, करी स्नान विलक्षे। यावत सत्कारी सहु, सन्मानी सुख वर्म॥
- ६ तेहिज ज्ञाती मित्र ने, जावत क्षत्रिय जाण। या सगला रे आगले, दिये नाम गुणखाण।।
- ७. दादा पड़दादा थकी, वली पिता नों जोय। पड़दादो छै तेह थी, अनुक्रम आयो सोय॥
- परपरा बहु पुरुष नी, तेहथी वाध्यो तत। वली तास कुल योग्य जे, कुल साद्श वलवंत।।
- ६ सुकुल रूप सतान जे, तेहिज तत् सार। दीर्घपणा थी दाखियो, तास वधारणहार।।
- १० एहवे रूपे नाम ए, गौण कहीजै ताय। अमुख्य थकी पिण जे हुवै, ते इहा निहं कहिनाय।।
- ११ गुण-निष्पन ए नाम दै, १ंजे कारण थी ख्यात। वल नृप सुत ए वाल अम्ह, प्रभावती अगजात॥
- १२. थावो अम्हारे ते भणी, पिता नाम अनुसार।
   ए वालक नों जाणवू, महावल नाम उदार।।
   \*प्रवल पुन्याई अति अधिकाई, जग सुखदाई जानदा।।
   महावल नामे अति अभिरामे, अवनीपति सुत आनदा। ( घ्रुपद)
- १३. तिण,अवसर ते वालक नो, काइ महावल,नाम शुभा नदा। मात पिता ए दोघो मुख,सू, वदन कमल पूनमचदा।।

- १ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेइ
- २ तइएदिवसे चदसूरदसावणिय करेड, छट्ठे दिवसे जागरिय करेड् 'चदसूरदसणिय' ति चन्द्रसूर्यदर्शनाभिधानमुत्सव 'जागरिय' ति रात्रिजागरणरूपमुत्सविविशेषम्

(वृ० प० ५४५)

- ३ एक्कारसमे दिवसे वीइक्कते निव्वत्ते असुडजायकम्म-करणे
  - 'निवृत्ते' अतिकान्ते अशुचीना जातकर्म्मणा करणम-शुचिजातकर्म्मकरण तत्र (वृ० प० ५४५)
- ४,५ सपत्ते वारसमे दिवसे विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता जहा सिवो (भ० ११।६३) जाव खत्तिए जाव (स॰पा॰) सक्कारेंति सम्मार्णेति
- ६ तस्सेव मित्तनाइ जाव (स० पा०) राईण य खत्तियाण य पुरस्रो
- ७ अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागय
- वहुपुरिसपरपरप्परूढ कुलाणुरूव कुलसरिस
- कुलसताणततुबद्धणकर
   कुलरूपो य सतान. स एव तन्तुर्दीघत्वात्तद्वर्द्धनकर
   (वृ० प० ५४५)
- १० अयमेवारूव गोणां
  'गोण' ति गौण तच्वामुख्यमप्युच्यत इत्यत आह—
  (वृ० प० ४४४)
- ११ गुणनिष्कन्न नामघेज्ज करेंति—जम्हा ण अम्ह इमे दारए वलस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए
- १२ त होउ ण अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज्ज महन्त्रले-महन्त्रले
- १३ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्ज करेंति महत्त्रले ति । (श० ११।१५३)

<sup>\*</sup>लय : चेत चतुर नर कहे तनै सतगुरु

१. जुल या लोक की मर्यादा के अनुसार पुत्र जन्मोत्सन की प्रक्रिया।

- १४. तिण अवसर ते महावल बालक, पंच घाय करि पोखदा। क्षीरघाय' मजण' ने मंटण', अंक' कीलावण' तोपंदा।।
- १५. इम जिम दड्टपडण्णा कह्यो छै, उववाइ मे वर्णदा। यावत गिरि कदर चपक तरु, सुग्ने-सुग्ने परिवृद्धंदा।।
- १६. मात-पिता.महावल वालक ने, जन्म दिवस थी क्रम कृदा। स्थितिपतिता ते, जन्म महोत्सव, रिव शिव दर्श दिखावंदा।।
- १७. छठी निजा जागरण महोत्सव, नाम घरण हिय हुलसदा।
  परगामण अर्थ वृत्ति में, भूमि विषे सर्पणनदा।।
  बा॰—इहा टीका में कछो—भूमी गर्पण अने टवा मे कछो कभी रहिवू ने
  यडी जणाय छै तथा आगणे गोडालिये हानिवू हुवै ते पिण ज्ञानी जाणे।
  १८ पग-पग करने आयो चलवो, तास महोत्सव अधिकदा।
  जीमण मीखण कवल वृद्धि फून, बोनण महोत्सव बुविदा।।
- १६. कान वीयवू वर्ष गाठ नु, चूडा घरण तदा नदा। कला ग्रहण ते भणायवा नु, करें महोत्सव राजदा।।
- २० अन्य बहु गर्भाघान जन्म फुन, आदि विषे कोतुक वृदा ।। रसडी आदि कहीजे कोतुक, करै कुवर नां हुलसदा ।।
- २१ महायल कुत्रर प्रते तिण अवसर, मात पिता चित आनदा। काइक अधिको आठ वर्ष नो, जाणी मुत नयनानदा।।
- २२. गोभनीक तिथि इम जिम सूत्रे, दृड्हपइण्णो दाखदा। जाव पर्याप्त योग समर्थज, थयो युवान शुभानदा।।

वा०—एवं जहा दढपइण्णो इति इण वचने करी जे कह्यु ते इम जाणवो—मोमणिस तिहिकरणणक्यत्त-मुहुत्तिम ण्हाय क्यविकिम्म क्यकोज्यमगल-पायिक्ठित्त सव्वालकारिवसूसिय महया इट्डिसक्कारसमुद्रएण क्लायिर्यम्स उवणयतीत्यादीति २३ महावल कुमार ने तिण अवसर, वाल भाव सूकाणदा। योग समर्थ जान म ता पित, आठ प्रासाद करावदा।।

#### सोरठा

२४ प्रासाद विषे सवाद, अवतसक जे मुकुट सम। एहवा अठ प्रासाद, माता पिता कराविया।।

- १४. तए णं में महन्त्रले दारण पत्रधाईपरिग्गहिए (त जहा—ग्रीरधाईण् 'मन्त्रणधाईण् मटणधाईण् कीलावणधाईण् अंकधाईए' इत्यादि (वृ० प० ५४४)
- १५ एव जहा दढणइण्गरम जाव निट्यायनिव्याघायमि गुहंगुहेण परिवर्टति । (ण० ११।१५४) 'निय्यायनिव्याघायगीत्यादि न वास्यमिहैव मम्बन्ध-नीय गिरिकदरमत्त्रीणेटव चपगपायवे नियायनिव्या-घायमि गुह्गुहेण परिवर्ट्ट ना । (यू० प० ५४५)
- १६ तए ण तरम महत्वत्रस्य दारगस्य अम्मापियरो अणुपुट्वेण ठिज्जिय वा चदमूरदमावणियं वा
- १७ जागन्यि वा नामकरण वा परगामण वा 'परगामणति' भूमो नर्पण (वृ० प० ५४५)
- १८ पचनामण वा पजेमामण वा पिटवहण वा पजेपावण वा 'पयचनामण' ति पादाम्या सचारणं 'जेमामण' ति भोजनकारण 'पिडवहण' नि कवलवृहिकारणं 'पज्जपावण' ति प्रजल्पनकारण । (पृ० प० ५४५)
- १६ कण्णवेहण ना सवच्छरपिउनेहण वा चोलोयणग वा उवणयण वा 'मवच्छरपिडनेहण' ति वर्षप्रस्थिकरण 'चोलोयण' चूडाधरण 'उवणयण' ति कलाग्राहण

(वृ० प० ५४५)

- २० अण्णाणि य बहूणि गव्माघाणजम्मणमादियाङ कोउयाङ करेंनि । (ण० ११।१५५) कौतुकानि —रक्षाविधानादीनि (वृ० प० ५४५)
- २१ तए ण त महब्यल कुमार अम्मापियरो मातिरेगट्ट-वामग जाणिता
- २२ मोनणिम निहि-करण-नन्यत्त-मुहृत्तिम कलायरियम्म जवर्णेति एव जहा दढप्पडण्णे जाव अलभोगममत्ये जाए याचि होत्या। (श० ११।१५६)
- याः --- 'एय जहा दढपडन्नो' इत्यनेन यत्सूचित तदेव दृश्यम् । (यृ० प० ५४५)
- २३ तए ण त महत्वल कुमार उम्मुक्कवालमाव जाव अलमोगममत्य विजाणित्ता अम्मापियरो अट्ट पासाय-वर्डेसए कारेंति

२५. \*ऊंचा इवेत वेदिका सहितज, जाण हसै उपमा नंदा ।। रायप्रश्रेणी मे जिम वर्णन, जावत ही प्रतिरूपंदा ॥

### दूहा

- २६ मणी चद्रकातादि नी, कनक रत्न नी जेह। भांत करीने चित्र वारू महल विषेह।। जे. करी प्रकम्पिता, विजय-सूचिका जाण। २७ पवने नाम वेजयती तिका, पवर पताका तेह छत्रे सहित, पताका गगन तला प्रतिलघतो, तास शिखर अवलोय।। २६ इत्यादिक अधिकार जे. रायप्रसेणी आख्यो तिम कहिवो इहा, प्रासाद वर्णक ताहि।। ३० •ते वर श्रेष्ठ अष्ट प्रासाद-वतसक विच अति सुखकदा ।। महा इक भवन करावै महिपति, स्तभ सैकडा स्थापंदा ॥ ३१ रायप्रश्रेणी मे जिम वणन, पेक्षाघर मडप नदा। तेम इहा पिण कहिवू वर्णक, जावत ही प्रतिरूपदा ।। वा०-- 'वण्णक्षो जहा रायसेणइज्जे पेच्छाघरमडवसित्ति' जिम रायप्रसेणी सूत्रे प्रेक्षा मडप, गृह-मडप नो ए विहु नो वर्णक कह्यो तिम एहनो कहिवो ते इम-लीलद्विय सालिभजियागमित्यादि ।
  - ३२. महावल कुवर प्रते माता पितु, अन्य दिवस सुविशेखदा । शोभनीक तिथि करण दिवस विल, नक्षत्र मुहूर्त पेखदा ॥
  - ३३ स्नान बलिकर्म कौतुक मंगल, प्रायश्चित प्रति कुविदा। सर्व अलकृत एहवा महावल, कुवर प्रते शोभाविदा ॥ ३४. नार मुहागण कुवर प्रते जे, मर्दन उवटन करावदा।
  - स्नान गीत वाजत्र बजावी, हरष विनोदे आनदा।।
- ३५ कुवर प्रतैज प्रसाधन कहियै, कञ्जल नयन शुभानदा। वल शिर टीको शोभित नीको, वनिता कुवर ओपाविदा ।।
- ३६. अग सुचग अष्ट स्थानक विल, वारू तिलक सुहावदा । वांधै काकण-डोर कसूवल, अविधवाए कुर्विदा।।
- ३७ मगल अक्षत दिध प्रमुख वा, गीत विशेषज गावदा। भलो बोलवो आशीर्वचने, इम करिवै हुलसावदा।।
- ३८ महावल कुवर प्रतै फुन कीघा, वर कोतुक रक्षा नदा। विल मगल सिद्धार्थ आदि वहु, ते पिण करता सुखकदा।।
- ३६ कोतुक मगल रूप अछै जे, उपचारज पूजावदा। तिण करि कीघो शाति कर्म तसु, टालण विघ्न तणा फदा ।।
- ४०. कुवर भणी परणावा तरुणी, वितहरणी आनद चदा। आपस माहि सरीखी अथवा, कुवर सरीखी ओपिदा ।।
- \*लय: चेत चतुर नर कहै तनै सतगुरु

- २५. अवभुग्गय-मूसिय-पहसिए इव वण्णको जहा रायप्पसेणइज्जे (सू० १३७) जाव पडिरूवे। 'अव्भुगगयमूसियपहसिते इव' अभ्युद्गतोन्छ्तान्---अत्युच्चान् "'पहसिते इव' ति प्रहसितानिव-श्वेतप्रभापटलप्रवलतया हसत इवेत्यर्थ ।
  - (बृ० प० ५४५)
- २६-२६ मणिकणगरयणभत्तिचित्तवाउद्ध्यविजयवेजयती-पडागाछताइच्छत्तकलिए तुगे गगणतलमभिलधमाण-सिहरे' इत्यादि । (वृ० प० ५४५)

- ३०. तेसि ण पासायवर्डेसगाण बहुमज्झदेसभागे एत्थ ण महेग भवण कारेति - अणेगखभसयसनिविट्ठ
- ३१ वण्णओ जाव रायप्पसेणइज्जे (सू० ३२) पेच्छाघर-महवसि जाव पडिरूवे। (মৃ০ ११।१५७)
- वा॰—यथा राजप्रश्नकृते प्रेक्षागृहमण्डपविषयो वर्णक उक्तस्तथाऽस्य वाच्य इत्यर्थं स च 'लीलद्वियसालि-भजियाग' मित्यादिरिति । (वृ० प० ५४६)
- ३२. तए ण त महब्बल कुमार अम्मापियरो अण्णया कयाइ सोभणसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत मुहुत्तसि
- ३३ ण्हाय कयबलिकम्म कयकोउय-मगलपायच्छित्तं सव्वालकारविभूसिय
- ३४-३६ पमक्खणग-ण्हाण-गीय-वाइय पसाहणअट्ठगति-लग-ककण-अविहवबहुउवणीय प्रमक्षणक - अभ्यञ्जन स्नानगीतवादितानि प्रतीतानि प्रसाधन-मडन अष्टस्वङ्गेषु तिलका-पुण्ड्राणि अष्टागतिलका ककण च रक्तदवरकरूप एतानि अविधववधूभि —जीवत्पतिकनारीभिरुपनीतानि यस्य स तथा त। (ৰু০ ৭০ ২४৬)
- ३७ मगलसुजपिएहि य 'मगलसुजिपएहि य' ति मगलानि दध्यक्षतादीनि गीतगानविशेषा वा तासु जिल्पतानि च आशीर्वचना-नीति । (वृ० प० ५४७)
- ३८,३६ वरको उयमगलोवयार कयसतिकम्म वराणि यानि कौतुकानि-भूतिरक्षादीनि मगलानि च सिद्धार्थकादीनि तदूपो य उपचार - पूजा तेन कृतं शान्तिकर्मा —दुरितोपशमित्रया यस्य स तथा त
- ४० सरिसियाण असरिसियाण'त्ति सदृशीना परस्परतो महावलापेक्षया (बृ० प० ५४७)

- ४१. त्वचा सरीखी वित वय सरिखी, लावण्य मनोज सरिसंदा। आकृति रूप सरीखो ओपै, यौवन युवती गुणवृदा॥
- ४२. विनयवंत मतिवत रमण ने, कीवा कोतुक सुखकदा ॥
  मगल प्रायञ्चित रमणी ने, मेटण अग्रुभ विघ्न-फंदा ॥
- ४३. सादृस महिपति कुल थी आणी, अठ नृप कन्या ओपिदा। एक दिवस ने विषे हरपघर, पाणीग्रहण कराविदा॥
- ४४ ढाल दोयसी तयालीसमी, गणपति भिक्षू गुणवृदा। भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, 'जय-जग' आनद पावदा।।

- ४१. गरित्तयाणं मिन्वयाण मिन्मनावण्य-मत्र-जोव्यण-गुणोववेयाण 'मरिसनावन्ने' त्यादि दह च नावण्य—मनोज्ञता रुपं आगृतिर्यावन—युवता गुणाः—प्रियभाषिन्वादय.
- ४२. विणीयाण कयकोडय-मगन्त्रपायन्छिताण
- ४३ मरिसएहिं रायकुनेहितो आणित्तियाण अट्टण्ह् राययरकन्नाण एगदियमेण पाणि गिण्हार्विनु । (ण० ११।१५=)

# ढाल: २४४

#### दूहा

- १ महावल नाम कुमार ने, मात पिता तिणवार ।
   प्रीतिदान दै एहवू, ते सुणज्यो अधिकार ॥
   \* जी काड प्रीति दान ए दायचो जी काड,
   उलट बरी आपत ॥ (श्रुपदं)
- २ आठ कोड रुपिया दिया जी काड, सोनैया अठ कोड। आठ मुकुट ते मुकुट में जी काड, प्रवर प्रधान मुजोड़।।
- अजोडा आठ कुंडल तणां जी काइ, कुडल युगल मे उदार। आठ हार वर हार मे जी काइ, इमज आठ अर्द्ध हार।।
- ४ आठ हार एकावली जी कांड, पवर एकावली माहि। एव अठ मुक्तावली जी काइ, इम रत्नावली ताहि॥
- प्र. जोडा आठ कड़ा तणां जी काड, कडग युगल मे प्रधान ।तुडित वाजूवय जोडला जी काइ, इमज आठ पहिछान ।।
- ६ खोम-जुगल अठ ओपता जी काइ, खोम युगल मे प्रधान। वस्त्र एह कपास ना जी काइ, अथवा अतसी जान।।
- ७. वडग जुगल पिण इहिवचे जी काइ, एह त्रिसिरया जान।पट्ट जुगल पिण इहिवचे जी काइ, रेशम मे पिहछान।।
- द. दुगुल्ल जुगल पिण इहविधे जी कांड, वृक्ष तणी ए छाल। तेह थकी ए नीपनो जी कांड, वारू वस्त्र विजाल।।

- १. तए ण तस्य महाव्वलस्य कुमारस्य श्रमापियरो अयमेयास्य पीददाण दलयति
- २ अट्टहिरण्णकोटीओ अट्टमुवण्णकोटीओ अट्टमचडे मउद्ययपरे
- इ. अट्ट कुडनजोए कुडलजोयप्पवरे अट्टहारे हारप्पवरे
   अट्टअद्धहारे अद्धहारप्पवरे
   'कुण्डलजोए' ति कुण्डलयुगानि (वृ० प० ५४७)
- अट्ट एगावलीओ एगाविलप्पवराओ एव मुत्तावलीओ एव कणगावलीओ एव रयणावलीओ
- ४. अट्ट कडगजोए कटगजोयप्पवरे एव तुटियजोए
  'कडगजोए' ति कलाविकाभरणयुगानि, 'तुडिय' ति
  बाह्माभरण (वृ० प० ५४७)
- ६ बट्ठ खोमजुयलाइ खोमजुयलप्पवराइं 'खोमे' ति कार्पासिक अतसीमय वा वस्त्र

(वृ० प० ५४७)

- ७ एव वडगजुयलाइ एव पट्टजुयलाइ 'वडग' ति त्रसरीमयं (वृ० प० ५४७)
- म् एव दुगुल्लजुयलाङ 'दुगुल्ल' ति दुकूलाभिघानवृक्षत्वग्निप्यन्नं (वृ० प० ५४७)

<sup>\*</sup>लय: म्हारी सासूजी र पाच पुत्र

१ वंगमुत्ताणि भाग २ मे मुक्तावली के वाद कनकावली है, उसके वाद रत्नावली । है।

- ह. प्रतिमा पट देवी तणी जी काइ, आठ आठ कहिवाय।
  श्री देवी नी शोभती जी काइ, प्रतिमा आठ शोभाय।।
- १० प्रतिमा ही देवी तणी जी काइ, आठज रूडे घाट। इम अठ घृति देवी तणी जी काइ, कीर्त्त देवी नी आठ॥
- ११ आठ बुद्धि देवी तणी जी काइ, अठ लक्ष्मी नी जान। रत्न जडित ए छै सहु जी काइ, पट देवी नी पिछान।।
- १२. अब्ट नदादिक आपिया जी काइ, मगल वस्तु अमोल। अन्य आचार्य इम कहै जी काइ, लोह नु आसन गोल।।
- १३. आठ भद्रासण आपिया जी काइ, प्रसिद्ध शरासन भद्र । तिकया करिनै युक्त छै जी काड, आसन एह अक्षुद्र ॥
- १४ अब्ट ताल वृक्ष आपिया जी काइ, तक्वर माहि प्रधान । रत्न जडित ए पिण त्रिहु जी काइ, महिपति दै सनमान ।।
- १५. प्रवर पोता ना घर विषे जी काई, केतु ध्वजा सुप्राय। अष्ट ध्वजा दीधी सहु जी काई, प्रवर ध्वजा रै माय।।
- १६ आठ गोकुल गाया तणा जी काइ, गोकुल माहि प्रधान। दश सहस्र गाया तणो जी काइ, एक गोकुल पहिछान।।
- १७ नाटक आठ सुआपिया जी काइ, नाटक माहि प्रधान।
- वत्तीस वद्ध नृत्य सहित छै जी काइ, इक-इक नाटक जान।। १८ अब्ट तुरग वर हय विषे जी काइ, सर्व रत्नमय दीस। रत्न माहे छै ते भणी जी काइ, एह भड़ार सरीस।।
- १६. गज अठ पवर गज ने विषे जी काइ, सर्व रत्नमय जान।
  रत्न तणा छै ते भणी जी काइ, एह भड़ार समान।।
- २० यान शकट अठ आपिया जो काइ, पवर शकट मे समृद्ध । अठ युग वर युग नै विषे जी काइ, गोल देश में प्रसिद्ध ॥
- २१ कूट आकारे सेवका' जी काइ, आच्छादित इम देख। संदमाणी जंपान छै जी काइ, पुरुप प्रमाण विशेख।।
- २२. एम गिल्लि ते गज तणी जी काइ, अंवाबाडी जाण। अष्ट थिल्लि पिण इम दिये जी काइ, अश्व तणो ए पलाण।।
- २३. वियह यान अठ आपिया जी कांइ, वियह यान में प्रधान। चाले वृषभ ने हय विना जी, विज्ञान ना वश थी जान॥ २४ अठ रथ परिजाणक दिये जी काइ, क्रीड प्रयोजन श्रिष्ट। किंड प्रमाण फलग वेदिका जी काइ, रथ सग्रामिक अष्ट॥
- १. शिविका

- श्रिप्रश्रेते ।श्रिप्रभृतय पड्देवताप्रतिमाः (वृ० प० ५४७)
- १० अट्ठ हिरीओ एव धिईओ कित्तीओ
- ११. बुद्धीओ लच्छीओ
- १२ अट्ठ नदाइ नन्दादीनि मगलवस्तूनि अन्ये त्वाहु —नन्द—वृत्त लोहासन (वृ० प० ५४७)
- १३ अट्ठ भद्दाइ भद्रं—शरासन मूढक इति यत्प्रसिद्धं (वृ० प० ५४७)
- १४. बहुतले तलप्पवरे सन्वरयणामए 'तले' त्ति तालवृक्षान् (वृ० प० ५४७)
- १५. नियगवरभवणकेळ सट्ट झए झयप्पवरे
- १६ अट्ठ वए वयप्पवरे दसगोसाहस्सिएण वएण 'वय' त्ति त्रजान्—गोकुलानि (वृ० प० ५४७)
- १७ अट्ट नाउगाइ नाडगप्पवराइ वत्तीसइवद्धेण नाडएण
- १ व अट्ठ आसे आसप्पवरे सन्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए 'सिरिघरपडिरूवए' त्ति भाण्डागारतुल्यान् रत्नमय-त्वात् (वृ० प० ५४७)
- १६ अट्ठ हत्थी हित्यप्पवरे सन्वरयणामए सिरिघरपिड-रूवए
- २० अट्ठ जाणाइ जाणप्पवराइ अट्ठ जुगाइ जुगप्पवराइ 'जाणाइ' ति शकटादीनि 'जुग्गाइ' ति गोल्लविषय-प्रसिद्धानि जम्पानानि (वृ० प० ५४७)
- ११ एव सिवियाओ एव सदमाणीओ
  'सिवियाओ' ति शिविका कूटाकाराच्छादितजम्पानरूपाः 'सदमाणियाओ' ति स्यन्दमानिकाः
  पुरुपप्रमाणाजम्पानविशेषानेव (वृ० प० १४७)
- २२ एव गिल्लीओ थिल्लीओ
  'गिल्लीओ' ति हस्तिन उपरि कोल्लराकारा.
  'थिल्लीओ' ति लाटाना यानि अट्टपल्यानानि तान्यन्यविषयेषु थिल्लीओ अभिधीयन्तेऽतस्ता.

(वृ० प० ५४७)

- २३. बट्ठ वियडजाणाइ वियडजाणप्पवराइ
- २४. बहु रहे पारिजाणिए अहु रहे सगामिए

  'पारिजाणिए' ति परियानप्रयोजना पारियानिकास्तान् 'सगामिए' ति सग्रामप्रयोजनाः
  साग्रामिकास्तान्, तेपा च कटीप्रमाणा फलकवेदिका
  भवति । (वृ० प० ५४७)

- २५. आठ तुरंगम आपिया जी काइ, तुरंग विपेज प्रधान। आठ हाथी फुन आपिया जी काइ, गज में पवर पिछान।।
- २६ अष्ट ग्राम विल आपिया जी काइ, ग्राम विपेज प्रधान ! दल सहस्र घर सहित छै जी काइ, एक ग्राम मुविधान ।।
- २७ आठ दास मुख्य दास मे जी काइ, इमिह्ज दासी अण्ट। कार्य पूछी ने करैं जी काइ, किंकर ते अठ श्रिष्ट।।
- २८ डम कचुडज पोलिया जी काइ, खोजा वरिसघर एम। कार्य अनेउर नणां जी काड, चिंतक महत्तर तेम।।
- २१. सोना ना साकल वच्या जी काइ, दीपक आठ उदार। रूपा ना साकल वच्या जी काइ, अष्ट दीपक श्रीकार॥
- ३०. सुवर्ण ने रूपा तणा जी काइ, साकल वद्ध उदार। दीपक अप्ट सुआपिया जी काइ, इम त्रिहु भेद विचार॥
- ३१. अण्ट दीपक सोना तणा जी काड, ऊर्ब दडवत देख। तीन भेद तेहना कह्या जी काड, पूर्ववत सपेख।।
- ३२. आठ दीवा सोना तणा जी काड, भोडल सहित तद्रूप। इम ए पिण त्रिण भेद थी जी काड, रूप रु सुवर्ण रूप।।
- ३३. आठ थाल सोना तणा जी काड, आठ रूपा रा थाल। आठ सोना रूपा तणा जी काड, थाल विशाल निहाल।।
- ३४. आठ परात सोना तणी जी काइ, आठ रूपा री परात। आठ सोना रूपा तणी जी काइ, पत्रर परात सुजात।।
- ३५. आठ थासक सोना तणां जी काइ, आरीसा आकार। आठ थासक रूपा तणा जी काइ, सुवण्ण रूप अठ सार।।
- ३६. आठ मल्लक सोना तणा जी काड, आठ रूपा ना सार। आठ सोना रूपा तणा जी काड, सिरावला आकार॥
- ३७ अप्ट पात्री सोना तणी जी काइ, आठ रूपा री ताम। आठ सोना रूपा तणी जी काइ, एह रकेवी दाम।।
- ३८ कुडछी चमचा मुवर्ण तणा जी काड, अप्ट सुरूड़े घाट। आठ रूपा ना जाणज्यो जी काड, सुवर्ण रूपक आठ॥
- ३६ आठ तवा सोना तणा जी काड, आठ रूपा नां उमेद। आठ सोना रूपा तणा जी काड, डमज तवी त्रिहुं भेद।।
- ४०. आठ वाजोट योना तणा जी काइ, आठ रूपा रा वाजोट। आठ सोना रूपा तणा जी काइ, मूल नही ज्यामे खोट।।
- ४१. आठ आसन सोना तणा जी काइ, आठ रूपा रा आसन्न। अप्ट सुवर्ण रूपा तणा जी काइ, दीघा होय प्रसन्न।।
- ४२. आठ सोना ना कलिया जी काड, आठ रूपा नां जेह। आठ सोना रूपा तणा जी काइ, अथवा कचीला एह।।

- २५ अट्ठ आमे आसण्पवरे, अट्ठ हत्यी हत्थिप्पवरे
- २६ अट्ठ गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएण गामेण
- २७. अट्ठ दासे दासप्पवरे एव दासीओ एव किंकरे 'किंकरे' ति प्रतिकम्मं पृच्छाकारिणः

(वृ० प० ५४६)

- २८. एव कंचुडज्जे एव वरिसधरे एव महत्तरए 'कचुडज्जे' ति प्रतीहारान् 'वरसधरे' ति वर्षधरान् विदतकमहल्लकान् 'महत्तरान्' अन्तःपुरकार्यचिन्तकान् (वृ० प० ५४७)
- २६ अट्ठ सोवण्णिए ओलवणदीवे अट्ठ रूप्पामए ओलवण-दीवे 'ओलवणदीवे' ति शृखलावद्धदीपान् (वृ० प० ५४७,५४८)
- ३०. अटुमुवण्णरुपामए ओलवणदीवे
- ३१ अट्ठ सोवण्णिए उक्कवणदीवे एव चेव तिण्णि वि 'उक्कवणदीवे' त्ति उकवनदीपान् ऊद्ध्वंदण्डवत (वृ० प० ५४८)
- ३२ अट्ठ सोवण्णिए पजरदीवे एव चेव तिण्णि वि 'पजरदीवे' ति अभ्रपटलादिपञ्जरयुक्तान् (वृ० प० ५४८)
- ३३ अह सोवण्णिए थाले अह रुपामए थाले, अह मुवण्णरुपामए थाले
- ३४ अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ
- ३५ अट्ठ सोवण्णियाइ थासगाइ 'थासगाइ' ति आदर्शकाकारान् (वृ० प० ५४८)
- ३६ बहु सोवण्णियाइ मल्लगाइ
- ३७ अट्ठ सोवण्णियाओ तिलयाओ (वृ० प० ५४८)
- ३८ अट्ठ सोवण्णियाओ कविचियाओ
- ३६ अट्ट सोवण्णिए अवएडए 'अवएडए' ति तापिकाहस्तकान् (वृ० प० ५४८)
- ४० अट्ट सोवण्णियाओ अवयक्काओ
- ४१ अट्ट सोवण्णिए पायपीढए
- ४२ अह सोवण्णियाओ भिसियाओ अह सोवण्णियाओ करोडियाओ

४३. आठ पत्यक सोना तणा जी कांड, आठ रूपा ना पत्यंक।
आठ सोना-रूपा तणा जी कांड, आप नृप शुभ अंक।।
४४, आठ प्रति सेज्या सोना तणी जी कांड, आठ रूपा नी जाण।
आठ सोना-रूपा तणी जी कांड, ढोलिया प्रमुख पिछाण।।
४५. आठ हंसासन आपिया जी कांड, हंस आकारे आसन्न।
आठकोंचासन आपिया जी कांड, ए क्रोच आकार प्रपन्न।।
४६. इम गरुडासन अठ दिया जी कांड, उन्ततासन पिण आठ।
उन्ततादिक आकार छै जी कांड, जन्द थकी शुद्ध वाट।।

४७ पनतासन दीर्घासणा जी काड, भद्रासण प्रति पेछ।
अठ पक्षासन प्रति दिये जी काड, मगरासन सुविशेख।।
४८. अठ पद्मामन प्रति दिये जी काड, दिसा सीवस्तिक जेह।
साथिया ने रूपे करी जी काड, दिसा सीवस्तिक जेह।
साथिया ने रूपे करी जी काइ, युक्त अप्ट दे तेह।।
४६ अप्ट तेल ना डावडा जी काड, रायप्रश्रेणी जेम।
जावत अठ सरमव तणा जी काइ, दिये डावडा तेम।।
५० जाव शब्द थी जाणिये जी काइ, वूर्ण द्रव्य मुगघ।
तास पुडा अठ आपिया जी काइ, आणी हरप अमद।।
५१ इम नागर वेल तणां पुडा जी कांड, चूयवास पूड़ा एम।
तगर पुडा पिण आपिया जी काइ, पुड़ा एलची रा तेम।।
५२ अठ हरीयाल तणा पुडा जी काइ, पुडा हीगलू ना पेख।
टीकी प्रमुख अथे दियो जी काइ, मणसिल पुडा विशेख।।

५३ अजन सुरमा ना पुडा जी काड, जाव शब्द थी एह। रायप्रश्रेणी थी कह्यो जी काड, अप्ट-अप्ट दे तेह।। ५४ दासी अठ दे कूयडी जी कांड, जिम उववाई माहि। जावत दासी पारसी जी काड, अप्ट-अप्ट दे ताहि॥

वा॰—'जहा उववाडए' इति इण वच करी जे कहा, ते इहा हीज देवानदा ना व्यतिकर नै विषे छै ने थकी हीज जाणवू।

४५ अप्ट छत्र विल आपिया जी काड, छत्र घरणहारीज। दासी आठ दिये वली जी काइ, चामर इमज कहीज।। ४६. अप्ट वीक्तणा आपिया जी कांइ, वीक्तणा नी सुविचार।

घरणहारी अठ दासिया जी कांइ, अठ वली करोडिकाघार ।। ५७ अप्ट क्षीर घाई दिये जी काइ, जाव अप्ट अक घाय। दासी अप्ट अग मर्दका जी काइ, अल्प मर्दन करें ताय।।

प्रन. घणु मर्दन करे ते सही जी काड, दासी आठ विचार। दिये अष्ट दासी वली जी काड, स्नान करावणहार॥

५६. दास्या आठ दिये विल जी काइ, मडन करावणहार। पवर पोसाग मुहामणी जी काइ, तेह करावण सार॥

६० अठ वण्णग पीसे तिके जी काड, चदन पीसणहार। तथा हरतालादिक भणी जी कांड, पेपण तेह विचार।।

- ४३. अट्ट सोवण्णिए पल्लके
- ४४ अट्ट मोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ
- ४५ अट्ठ हसासणाङ अट्ठ कोचासणाङ हसासनादीनि हसाद्याकारोपलक्षितानि (वृ० प० ५४८)
- ४६ एव गरुलासणाङ उन्नयासणाइ उन्नताद्याकारोपलक्षितानि च गव्दतोऽवगन्तव्यानि (वृ० प० ५४८)
- ४७ पणयासणाइ दीहासणाउ भद्दासणाड पनखासणाइ मगरासणाइं
- ४८ अट्ठ परमामणाइ, अट्ठ दिमासोवत्यियासणाइ
- ४६ अट्ठ तेल्ल-समुग्गे जहा रायपसेणइज्जे (सू० १६१) जाव (म० पा०) अट्ठ सरिसव-समुग्गे
- ५० अट्ठ कोट्ट-ममुग्गे
- ५१-५३ एव पत्त-चोयग-तगर-एल-हरियाल-हिगुलय-मणोसिल-अजण-ममुगो
- ५४ अट्ठ खुज्जाओ जहा सोववाइए (सू० ७०) जाव अट्ठ पारिसीको
- वा०—'जहा खववाइए' इत्यनेन यत्सूचित तदिहैव देवानन्दाव्यतिकरेऽस्तीति तत एव दृश्यम् (वृ० प० ५४८)
- ४४ अह छत्ते, अह छत्तधारीओ चेडीओ, अह चामराओ, अह चामरघारीओ चेडीओ
- ५६. अट्ट तालियटे, अट्ट तालियटघारीओ चेडीओ, अट्ट करोडियाओ, अट्ट करोडियाघारीओ चेडीओ
- ५७,५८ बहु धीरधाईओ जाव (स० पा०) बहु अक-धाईओ, अहु अगमिद्याओ, अहु उम्मिद्याओ, अहु ण्हावियाओ इहागमिदिकानामुन्मिदिकाना चाल्पबहुमर्दनकृतो विशेष (वृ० प० ५४८)
- ४६ अट्ट पसाहियाओ (वृ० प० ५४८)
- ६० अट्ठ वण्णगपेसीओ 'वन्नगपेसीओ' त्ति चन्दनपेपणकारिका हरितालादि-पेपिका वा (वृ० प० ५४८)

१. सू० ३०।

२. पीकदानी ।

- ६१ अप्ट चूर्ण-पेसी विल जी कांड, तवूल चूर्ण ताम। अथवा जे गध द्रव्य ने जी काड, चूर्ण किह्यै आम।।
- ६२. कीड करावे ते सही जी कांड, दास्या आठ उदार। देवे अव्ट दास्या विल जी कांड, रमण हसावणहार।।
- ६३ अठ आसन समीप वेसे तिके जी काइ, नाटक संबंध नी अण्ट। आज्ञाकारणी अठ विल जी काइ, सेवग रूपी श्रिष्ट।।
- ६४ अष्ट रसोईकारिका जी काइ, अष्ट रुखाले भंडार। शेप बोल कहिसै तिके जी काइ, रूढि कह्यो वृत्तिकार।।
- ६५ घरणहार वालक तणी जी कांड, तेह रुखाले वाल। रुखवाले घर पुष्प ना जी काड, अठ-अठ दास्यां न्हाल।।
- ६६ पाणी घर रुखवालती जी कांड, अठ विलकारक जाण। पवर सेज नी कारिका जी काइ, अठ-अठ दास्या माण।।
- ६७ अभ्यतर प्रतिचारिका जी काड, भ्यतर कार्य पिछाण। वाहिरली प्रतिचारिका जी काड, अठ-अठ दास्या जाण।।
- ६=. करणहार माला तणी जी कांड, दास्या आठ उदार।
- पीसण वाली अठ विल जी काइ, देवे हर्प अपार ॥ ६९. अपर अनेरो पिण घणु जी काइ, रूपो हिरण सुवन्न ।
- कांसी ने वस्तर विल जी कार्ड, देवे होय प्रसन्त ।।
- ७० विस्तीर्ण घन कनक नै जी काइ, यावत द्रव्य विद्यमान। आपे अति उचरंग सूं जी काइ, हाथ खरचवा जान।।
  - ७१. जाव वंश सप्तम लगे जी कांइ, अति बहु देता घन्न । अति भोगविवा वेहचवा जी कांइ, आपै द्रव्य राजन्न ।।
  - ७२ दोयसी ने चमालीसमी जी कांइ, ढाल विशाल रसाल। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी जी कांइ, 'जय-जश-मंगलमाल।।

- ६१ अट्ट चुण्णगपेमीओ 'चुन्नगपेसीओ' ति इह चूर्णः—ताम्ब्रुलचूर्णो गन्ध-द्रव्यचूर्णो वा (यृ० प० ५४८)
- ६२. अट्ठ कीटागारीओ, अट्ठ दवकारीओ 'दवकारीओ' त्ति परिहासकारिणीः

(वृ० प० ५४८)

६३ अहु उचत्याणियाओ, अट्ट नाहर्ज्जाओ अट्ट कोटुवि-णीओ 'उचत्याणियाओ' ति या आत्यानगताना समीपे वर्तन्ते 'नाटङ्ज्जाओ' ति नाटकसम्बन्धिनीः

(वृ० प० ५४८)

- ६४ अष्टु महाणिमणीओ, अट्ट भडागारिणीओ 'महाणिसणीओ' ति रमवतीकारिका. शेपपदानि रुढिगम्यानि (वृ० प० ५४६)
- ६५. अडु अवभाधारिणीओ, अडु पुष्फघरणीओ
- ६६. अटु पाणिघरणीओ, अटु विलकारीओ, अटु मेज्जा-कारीओ
- ६७ अट्ठ अञ्चितिरयाओ पडिहारीओ, अट्ठ वाहिरियाओ पडिहारीओ
- ६८. अट्ट मालाकारीओ, अट्ट पेसणकारीओ
- ६६. अण्ण वा मुबहुं हिरण्ण वा मुवण्ण वा कस वा दूसं वा
- ७०. विउलधणकणग जाव (सं० पा०) संतमारसावएज्जं
- ७१. अलाहि जाव आसत्तमाओ फुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तु पकामं परिमाएउ ।

(म० ११।१५६)

# हाल : २४५

# दूहा

- तिण अवसर महावल कुंवर, इक-इक त्रिय ने ताम।
   दिया रपया रोकडा, इक-इक कोड़ अमाम।।
   अप इक-इक कोड फुन, सोनैया सुखदाय।
   मुकुट दिया इक-इक वली, प्रवर मुकुट रै माय।।
- तए णं से महन्वले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडि दलयइ
- २. एगमेग सुव्वष्णकोडि दलयइ, एगमेगं मउडं मउडप्प-वर दलयइ

- ३ इम तिमहिज सहु जाव दै, इक-इक पेसणकार। अन्य वहुरूप सुवर्ण विल, जाव वेहचवा सार॥
- ४. तिण अवसर महावलकुवर, ऊपर वर प्रासाद। अवतसके रह्यो थको, अधिक हरप अहलाद।।
- ४ जिम जमाली नो कह्यो, पूर्वे जे अधिकार।। कहिवो तिम महावल तणो, जावत विचरै सार॥
- ६. \*तिण काले हो तिण समय सुजान,

तेरमा विमल अरिहत पिछाणियै।

तास प्रपोतो हो कहियै शिष्य सतान,

घर्मघोप नामे महामुनि जाणियै।।

बाo — जे भणी विमल, अनन्त कै वीच अन्तर ह सागर को। अनन्त धर्म के वीच अन्तर ४ सागर को। धर्म, शांति के वीच अन्तर ३ सागर। पिण निण में पूण पत्य ऊणो, एहवु तीयँकर लेखा में अन्तर कहा, छै। अने ए महावल ब्रह्म देवलोके दश सागर स्थिति भोगवी सुदर्शण थयु ते माटे विमलनाय तीर्यं ने विषे घणा सागर उलघ्या पछै महावल थयु एहवु सभव छै।

७. जातिसपन्ने हो वर्णक जिम केशी स्वाम,

जाव पच सय श्रमण मग परवरचा।

पुन्वाण्पुन्वि हो कहिये पथ सुधाम,

ग्रामानुग्राम विच्रता गुण भरचा।।

जिहा हित्यणापुर हो सहस्राव वन उद्यान,

तिहा मुनि आय आज्ञा ले शोभाविया।

सजम तप करि हो आतम भावित जान,

यावत विचरे भविक मन भाविया।।

हत्थणापुर हो नगर विपे तिणवार,

स्थान श्रृंगाटक त्रिक चउक्क चच्चरै।

यावत परपद हो पुर जन वृंद उदार,

विनय वंदन करि त्रिविध सेवा करे।।

१० तिण अवसर हो महावल नाम कुवार,

मनुष्य घणा ना शब्द सुणी करी।

जन व्यूहजनवृंद हो देखी करें विचार,

इम जमाली जेम चितवणा चित घरी।।

११. तिमज तेडावै हो पुरुप कंचुइज जाण,

कचुइज नर पोलिये विघ वरी।

कचुइज पिण हो तिमहिज भाखे वाण,

णवरं धर्मधोष आया निश्चे करी।।

१२. वे कर जोडी हो वोलै इणविघ वाय,

जाव मनुष्य वहु वदण कारणे।

एक दरवजे हो जाये छै अधिकाय,

आगल पाठ तास इम घारणे।।

- ३ एव तं चेव सब्व जाव एगमेग पेसणकारि दलयङ, अण्णं वा सुबहुं हिरण्ण वा जाव (स० पा०) परिभाएउं। (श० ११।१६०)
- ४ तए णं से महत्वले कुमारे उप्पि पासायवरगए
- प्र जहा जमाली (श॰ ६।१५६) जाव "विहरइ। (श॰ ११।१६१)
- ६. तेण कालेण तेण समएण विमलस्स अरहओ पओष्पए धम्मघोसे नाम अणगारे

- ७ जाइसपन्ने वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव पर्चिह् अणगारसएहिं सिद्धं सपिरवुडे पुन्वाणुपुन्वि चरमाणे गामाणुग्गाम दूइज्जमाणं
- जेणेव हित्यणापुरे नगरे जेणेव सहमववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिक्व ओगाहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। (ग० ११।१६२)
- ६ तए ण हित्यणापुरे नगरे सिंघाटग-तिय-चउकक चच्चर 'जाव परिसा पज्जुवासइ।

(श० ११।१६३)

- १० तए णं तस्स महव्वलस्स कुमारस्स त महयाजणसद् वा जणवूहं वा जाव जणसिन्नवाय वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा एवं जहा जमाली (श० ६।१५८) तहेव चिता
- ११ तहेव कंचुइज्ज-पुरिस सद्दाविति (स॰ पा॰) कचु-इज्जपुरिसो वि तहेव अवखाति नवर—धम्मधोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए
- १२ करयल जाव निगगच्छड।

<sup>\*</sup>सय: विचरत विचरत हो आया सोजत

१३. इम निध्ने करि हो देवानुप्रिया ! सार,
तरमा विमन तीर्थं कर नो मही।।
पवर प्रपोतो हो घमंघोप अणगार,
वेष तिमन पन सय थी आया यही।।
१४ यावत महावन हो नमानी जिम नाण,
नीकल्यो रथ प्रधान वेमी करी॥
वंदना करि हो सन्मुग वेठो नाम,
घमंकथा केमी न्याम ज्यू यागरी॥
१५. ते पिण तिमहिन हो मात पिता ने पूछंन,
इतरो विधेष धमंघोष मुनि कने।
मुड धई ने हो नेस् नरण मृतत,
मात पिता ने कहै आजा दीने महने॥
१६. उत्तर पद्तर हो जमानी जिम धार,

# सोरठा

विपुल राजकुल हो बालिका तुक नार,

१७ विषुल कुल तणी नार, जमाली ने मां काछो। उहा महाबल अधिकार, विषुल राजकुल बालिका॥

१८ \*यावत थाका हो मात पिता तिणवार, मन विण महावत कुवर प्रते नहै। एक दिवस नो हो राज करो सुप्रकार,

एह देवण री इच्छा मुक्त मन लहै।।

भेग विस्तार जमानी तणी पर ॥

१६ तिण अवसर हो महायत नामें कुमार, मात पिता नो वचन अणनंघतो। मून साधी हो बोल्यो नहि तिणवार,

नृप पद नी नहिं चाह चरणरतो।।

२०. हिव वल राजा हो सेवंग पुरुष वोलाय,
जिम शिवभद्र ने शिव नृप पद दियो।
तिम इहा कीधो हो राज्य अभिषेक ताय,
कर जोड़ कुवर ने जय विजय वधावियो॥

२१. जय विजय ववावी हो बोलै इहविध वाय,

कह नी हे पुत्र ! स्यू आपा ? स्यू वाछियै ?

शेप थाकतो हो जमाली ज्यूं कहाय,

मोटे मंडाण करै चारित्र लिये।। २२. जाव तिवारै हो महावल मुनिराय,

२२. जाव तिवार हा महावल मुनिराय, धर्मघोष अणगार समीप ही । घुर सामायक हो आदि देइ नै ताय,

चउद पूर्व प्रति ताम अहि जई।।

- १३. एवं यानु देवाण्णिया ! विभाक्तम जनस्यो प्रशेषणः धन्मधीमे नामे अनुगाने, मेन न वित्र पाय सी वि नाव । (गृत १६४ पान दिन १)
- १४ गए गा माण्याने मुमारे गरेष (घट ६११६०-१६२) सत्यस्य निगन्छनि । धरमभना उहा नेभिमामिस्म (सपट मृट ६६३) ।
- १५ मी वि उते । अस्मानियर ज्ञापुष्ट्यः, नवर्रः—धस्म-पीयस्य अनुमारस्य अतिर्ध मुद्दै भविता रागास्त्री अवगारियं परपदसम्।
- १६ मोत्र युनविव्युनिया, मतर—इमाओ य ते जापा ! पिद्रत्यसम्बुल्यमानियात्री\*\*\*\*\* से भेर । • (सल १।१६४-१३६)
- १०. जमानिचानो ति वियुत्ततुत्तवानिका स्याधीनमिह् यु वियुत्तराजगुत्तवानिका स्योत्तरध्येतस्यम् । (युव प्रव ४४६)
- १८. जाव नाते आरामाद नेव महत्वातुमार एव वयामी—न दल्हामी ने जामा । एगदिवनमि रज्जनिरि पामिसए। (८०११।१६६)
- १६ तम् पामे महस्यते पुमारे सम्मापित-वयानपुषतः-मापे सुनिषीम् गतिहृद् । (पन ११।१६७)
- २०. तए ण से बने रामा कोट्टियपुरिने नद्दाबेद एव जहां नियमदृग्म (श० ११।४६-६२) तहेन रामाभिनेओ भाणियच्यो जाग जभितिचति, करयनपरिग्गहिनं "महब्बल गुमार जएण विजएण यदावेति।
- २१ यदावेता एवं वयामी—भण जाया ! कि देमो ? कि पयच्छामो ? मेस जहा जमानिन्म तहेव (श० ६।१८०-२१४)
- २२. जाव (श० ११।१६=) तए णं में महस्त्रले अणगारे धम्मधोसस्य अणगारम्य अंतिय सामाइयमाज्याङ चोहम पुट्याङ अहिज्जइ,

<sup>&</sup>quot;लय: विचरत विचरत हो आया सोजत

२३. चउथ छठादिक हो जाव विचित्र प्रकार, तप करिवै करी आतम भावतो। बहु प्रतिपूर्ण हो द्वादश वर्ष उदार, चरण पर्याय निर्मल घ्यान घ्यावतो।।

२४. मास सलेखण हो साठ भक्त अणसण छेद, व्रत ना अतिचार आलोई पडिकमी।

समाधि पाम्यो हो महामोटो मुनि सवेद,

काल ने अवसर काल करी दमी॥

२५. ऊर्घ्व चद रिव हो जिम अम्मड आख्यात,

जाव ब्रह्मलोक नाम कल्प मही।

मुनि ऊपनो हो देवपणे सुविख्यात,

प्रवल पुन्य करने बहु ऋद्धि लही।।

२६. तिहा केइ सुर नी हो दश सागर नी आयर,

तिहा महाबल देव तणी पिण जाणियै।

दश सागर नी हो किह उत्कृष्टि स्थिति प्राय,

रूप प्रचारिका ते सुर माणियै।।

## सोरठा

थकी पिण लतके । २७ चउदश पूरवधार, जघन्य किम ऊपनो ॥ ब्रह्म सुविचार, ऊपजवो पूरव विषे । चउदश २८ उत्तर तेहनो एह, न्याय जणाय छ ॥ किचित ऊण पढेह, एहव्

२६. \*श्री जिन भाखें हो अहो सुदर्शन । ताम,
स्थिति दश सागर ब्रह्म कल्प मही।
दिव्य प्रधानज हो भोग जिके अभिराम,
भोगवते थके विचरी नै सही।।

३०. ते निश्चै करि हो देवलोक थी आम,

देव आयु क्षय करिने तिहा।

चवी अनतर हो तू ऊपनो इण ग्राम,

श्रेष्ठि तणै कुल पुत्रपणै इहा ॥

३१. तुम्हे सुदर्शन हो बाल भाव मूकाण,

कला कुशल वय योवन पावियो।

तथारूप जे हो स्थ्विर सत पै जाण,

केवलि भारूयो घर्म दिल आवियो।।

- २३. बहूरिं चउत्थ जाव (स॰पा॰) विचेत्तीहं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइ दुवालस वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ।
- २४. मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सिंहु भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा
- २५. उड्ढं चिंदम-सूरिय (स॰ पा॰) जहा अम्मडो जाव वभलोए कप्पे देवताए उववन्ने ।
- २६ तत्थ ण अत्थेगतियाण देवाण दस सागरोवमाइ ठिती पण्णता। तत्थ ण महव्वलस्स वि देवस्स दम सागरोवमाइ ठिती पण्णता।
- २७,२८ इह च किल चतुर्दशपूर्वधरस्य जघन्यतोऽपि लान्तके उपपात इष्यते, 'जावित लतगाओ चउदमपुब्यी जहन्तउववाको' त्ति वचनादेतस्य चतुर्दशपूर्वधरम्यापि यद् ब्रह्मलोके उपपात उक्तस्तत केनापि मनाग् विस्म-रणादिना प्रकारेण चतुर्दशपूर्वाणामपरिपूर्णत्वादिति सभावयन्तीति । (वृ० प० ५४६)
- २१ से ण तुम सुदसणा ! वभलोगे कप्पे दस सागरोव-माइ दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्ता।
- ३०. तभी देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिडक्खएणं अणतर चय चइत्ता इहेव वाणियग्गामे नगरे सेट्टि- कुलसि पुत्तत्ताए पच्चायाए। (॥० ११।१६६)
- ३१. तए ण तुमे सुदंसणा । उम्मुक्कवालभावेण विण्यय-परिणयमेत्तेण जोव्वणगमणुपत्तेण तहारूवाण धेराणं अतियं केवलिपण्णते धम्मे ।

<sup>\*</sup>लय: विचरत विचरत हो आया सोजत

रै. अगसुत्ताणि भाग २ श० ११।१६६ का पाद टिप्पण एव ओवाइयं स्० १४० का पादिटप्पण द्रष्टन्य है।

२. आयुष्य

# सोरठा

३२. जिण आज्ञा-रूपज घर्म, निसुण्यो ते पिण घर्म नै। वंछघो वारू मर्म, विशेष वछचो नै रुच्यो॥ ३३. \*सुष्ठु आछो हो तुम्हे सुदर्शन । ताम, हिवडां पिण तेह धर्म प्रति तू करै। तिण अर्थे कर हो अहो सुदर्शण ! आम, क्षय अपचय पत्य उदिध नो इम वरै।।

### सोरठा

३४. सर्व थकी जे नाग, क्षय किंद्ये छै तेहने। अपचय देश विणास, उभय शब्द इण कारणे॥ ३५. \*दोयसौ ने हो पैतालीसमी ढाल, भिक्षु भारोमाल नृपशशि गुणनिला। तास प्रसादे हरप विनोद विशाल, 'जय-जश' आनन्द च्यार तीर्थ भला॥

ढाल: २४६

# दूहा

१. श्रेष्ठि सुदर्शन तिण समय, महावीर ने पास। एह अर्थ प्रति सामली, हिवडे वारी तास।। २ अध्यवसाय शुभे करी, शुभ परिणामे तेह। लेश्या विशुद्धमान करि, भावे लेश्या एहु॥ ३. तदावरणी कर्म नो, क्षय उपगम करि जान। ईहा भली विचारणा, अपोह ते वर्मध्यान।। ४. मार्गणा रु गवेसणा, समर्च अधिक वारू एम विचारता, जाती-समरण ५. निज भव सजी रूप जे, पूरव जाति पिछाण। तेहनो समरण ज्ञान ते, उपनो अधिक प्रधान।। ६. जाती-समरण कर तदा, वीर कही जे वात। सम्यक प्रकारे अर्थ थी, जाण रह्यो साक्षात॥ †प्रभु घिन-घिन शासण रा घणी, वले घिन-घिन आपरो ज्ञान हो। प्रभ् धिन-धिन वाणी आपरी, वले घिन-घिन आपरो घ्यान हो ॥ (घुपद)

- ३२ निसते, सेवि यधमो इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए।
- ३३ त सुट्ठुण तुम सुदसणा । इदाणि पि करेसि । से तेणट्ठेण सुदसणा । एव वुच्चइ — अत्थिण एतेसि पिलओवमसागरोवमाण खएति वा अवचएति वा । (॥० ११।१७०)

- १ तए ण तस्स सुदसणस्स सेट्ठिस्स समणस्म भगवनो महावीरस्म अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म
- २. सुभेण अञ्झवसाणेण सुभेण परिणामेण लेसाहि विसुञ्झमाणीहि
- ३ तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहापूह-
- ४,५ मगण-गवेसण करेमाणस्स सण्णीपुढवे जातीसरणे ममुप्पन्ने 'मन्नी पुज्वजाईसरणे' त्ति सिक्तरण या पूर्वा जातिस्तस्याः स्मरण यत्तत्त्रया (वृ० प० ५४६) ६ एयमट्ठ सम्म अभिसमेति । (म० १० ११।१७१) 'अहिसमेइ' ति अधिगच्छतीत्यर्थः (वृ० प० ५४६)

\*लय : विचरत विचरत हो आया सोजत

†लय: रे जीव मोह अनुकम्पा न

- ७. सेठ मुदशण तिण समय, श्रमण भगवत श्री महावीर हो। पूरव भव सभारचो तिणे, प्रभु याद करायो हीर हो।। द. भव पाछिल याद आया थका, पूर्व काल तणी अपेक्षाय हो। श्रद्धा संवेग दुगुणो ऊपनों, हिय पाम्यो हरण अथाय हो।। १ श्रद्धा तस्व तणी रुचि अति वधी, अथवा भला अनुष्ठान हो। ते करवा तणी इच्छा घणी, कह्यो श्रद्धा नो अर्थ पिछान हो।। १०. भव श्रमण तणो भय अधिक घणो, घुर अर्थ सवेग नों एह हो। अथवा अभिलाषा मोक्ष नी, ते पिण तास वधी दुगुणेह हो।। ११ अधिक आनन्द करी तदा, अश्रपूर्ण नयन छै तास हो। घणो हरण हिया में ऊपनो, पूर्व भव याद आया विमास हो।। १२ श्रमण भगवत महावीर ने, प्रदक्षिणा दे तीन वार हो। वंदना वच स्तुति नमी करी, इम वोत्यो वचन विचार हो।।
- १३. एवमेय प्रभु । इमहीज ए, जाव ते वच एह उदार हो। तुम्हैं कहो जे सत्य छं, एम कही तिहवार हो।। १४. कूण ईशाण विषे जई, सेठ ऋषभदत्त जेम हो। जाव सर्व दुःख क्षय किया, पाम्या अविचल क्षेम हो।। १५. णवर विशेप छं एतलो, भिणयो पूरव चउदश ताय हो। घणो प्रतिपूर्ण तिण पालियो, वारे वर्ष चारित्र पर्याय हो।। १६ शेष ऋषभदत्त जिम जाणज्यो, सेव भते। सेव भते! ताम हो।। प्रभु! तुम्हे कह्यो सर्व सत्य छै, इम बोल्या गोतम स्वाम हो।। १७ एवो एकादशमा शतक नो, कह्यो एकादशमो उद्देश हो। अधिकार कह्यो महावल तणो, तिणमे वारू वरिंग विशेष हो।। १८. ढाल दोयसौ ने छ्यालीसमी. भिक्षु भारीमाल ऋषिराय हो। तास प्रसादे संपदा, 'जय-जश' अधिक सवाय हो।। एकादशशते एकादशहो ऐकादशहों।।

- ७. तए ण से सुदसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं सभारियपुन्वभवे
- दुगुणाणीयसड्ढसवेगे
- ह तत्र श्रद्धा—तत्त्वश्रद्धान सदनुष्ठानिचकीर्पा वा (वृ० प० ५४६)
- १० सवेगो—भवभय मोक्षाभिलाषो वेति । (वृ० प० ५४६)
- ११. आणदंसुपुण्णनयणे
- १२ समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—
- १३ एयमेय भते । जाव (स॰ पा॰) से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु
- १४ उत्तरपुरित्यम दिसीभाग अवक्कमइ, सेस जहा उसभदत्तस्य (भ० ६।१५१) जाव सव्वदुक्खप्पहीणे
- १५ नवर—चोद्सपुन्वाइ अहिज्जइ बहुपडिपुण्णाइ दुनालसवासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ।
- १६ सेस त चेव। (श० ११।१७२) सेव भते! सेव भते । ति। (श० ११।१७३)

ढाल: २४७

## दूहा

- उदेश मे, काल कह्यो जगनाथ। १. एकादशम पिण तेहिज हिव, भंगातरे विख्यात ॥ २ तिण काले ने तिण समय, आलिभया अभिराम। नगरी हती सख वन, चैत्य वर्णक ताम ॥ ३. तिण आलभिया नगरी विषे, इसिभद्र आद। वसै, वहु ऋद्धि अड्डा अगाध ॥ समणोपासग ४. यावत घन करिने तसु, गज सके कोय। जाण्या जीव अजीव ने, यावत जोय ॥
- १ एकादशोदेशके काल उक्तो द्वादशेऽपि स एव भग्य-न्तरेणोच्यते (वृ० प० ५५०)
- २ तेण कालेण तेण समएण आलिभया नाम नगरी होत्या—वण्णओ। सखवणे चेइए—वण्णओ।
- ३ तत्य ण आलिभयाए नगरीए वहवे इसिभद्युत्तपा-मोक्खा समणोवासया परिवसति—अब्ढा
- ४ जाव बहुजणस्स अपिरभूया अभिगयजीवाजीवा जाव अहापिरिगाहिएींह तबोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति । (श० ११।१७४)

- <sup>1</sup>श्रावक सुदरू हो गुणिजन इसिभद्र पुत्र उदार ॥(श्रुपदं)
- प्र. तिण अवसर ते एकदा हो गुणिजन ! श्रावक वह सुजाण। आय मिल्या छै एकठा हो गुणिजन ! वेठा आसन ठाण कै।।
- इ. एहवे रूपे ऊपनो हो गुणिजन! त्यारे माहोमाय। कथा तणो आलाप ने हो गुणिजन! चिन ना अध्यवसाय कै।।
- ७ हे आर्थो । सुरलोक मे हो गुणिजन ! घणा देव नी ताय। स्थिती केतला काल नी हो गुणिजन । दाखी श्री जिनराय के ॥
- द इसिभद्र सुत तिण समै हो गुणिजन! श्रावक अधिक सुजाण।
  गृह मूख करि जाणी तिणे हो गुणिजन! देव स्थिति नी छाण कै।।
- ह तेह श्रावका प्रति तदा हो गुणिजन । बोल्यो एहवी वाय। हे आयों । देवलोक मे हो गुणिजन । देव स्थित कहिवाय कै।।
- १० जघन्य वर्ष दश सहस्र नी हो गुणिजन । तिण उपरत कहाय। एक समय अधिको कही हो गुणिजन। दोय समय अधिकाय कै।।
- ११ यावत दश समये करी हो गुणिजन । अधिको स्थिती कहाय। सख समय अधिकी विल हो गुणिजन। असल समय अधिकाय कै।।
- १२ स्थिति उत्कृष्ट थकी कही हो गुणिजन । तेतीस सागर जोग। तिण उपरत विच्छेद छै हो गुणिजन । देव तथा सुर लोग कै।।
- १३. इसीभद्र सुत इम कह्यो हो गुणिजन । जाव परूपित एम। अन्य श्रावक अणसरघता हो गुणिजन । नाणै प्रतीति प्रेम कै।।
- १४ विल ए अर्थ रुचै नहीं हो गुणिजन! अणसर्वता ताय। अणप्रतीत अणरोचता हो गुणिजन! आया जिण दिशि जाय कै।।
- १५ तिण काले ने तिण समय हो गुणिजन ! भगवत श्री महावीर। प्रभुजी जाव समवसरचा हो गुणिजन ! मेरु तणी पर धीर कै।।
- १६ वीर पधारधा सामली हो गुणिजन । यावत परपद आय। सेव करें साचै मनै हो गुणिजन । त्रिह जोगे करि ताय कै।।
- १७ ते श्रावक तिण अवसरै हो गुणिजन । वीर पद्यारचा ताम। कथा एह लाधा छता हो गुणिजन । हरप सतोपज पाम।।
- १८ इम जिम बीजा बनक ना हो गुणिजन । पंचमुदेशा माय। बदन तुगिया ना गया हो गुणिजन । निम ए बदन जाय कै।।
- १९ यावत जिन नै वदने हो गुणिजन । नमस्कार विवि रीत। सेव करें साचै मनै हो गुणिजन । तन मन सू घर प्रीत।
- २० प्रभू श्रावका नै तदा हो गुणिजन ! मोटी परपद माय। वर्म कथा यावत तिके हो गुणिजन ! आण आरावक थाय कं।।
- २१ ते श्रावक तिण अवसरे हो गुणिजन । वीर प्रभू पै ताय। धर्म सुणी हिये घारने हो गुणिजन । रह्या हरप सतीप अथाय के ॥

- ५ तए ण तेसि समणोवासयाण अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाण सहियाणं सिष्णिविट्ठाण 'एगओ' ति एकत्र 'ममुवागयाण' ति समायाताना 'सहियाणं ति मिलिताना 'समुविट्ठाण' ति आसन-ग्रहणेन । (वृ० प० ५५२)
- ६. सिंणमण्णाण अयमेयास्चे मिहोकहासमुत्लाचे समुप्प-ज्जित्या —
- ७. देवलोगेमु ण अञ्जो । देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? (ग० ११।१७५)
- तए णं मे इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देविद्ठती-गिह्यट्ठे
- ह ते समणोवामए एव वयासी—देवलोएमु ण अज्जो ।
- १० देवाण जहण्णेण दसवाममहम्माङ ठिती पण्णत्ता,
   तेण पर ममयाहिया, दुममयाहिया,
- ११ जाव दमममयाहिया, मन्नेज्जममयाहिया अमन्तेज्ज-समयाहिया,
- १२ उक्कोमेण तेत्तीस मागरोवमाङ ठिती पण्णत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलीगा य ।

(য়া০ ११।१७६)

- १३ तए ण ते समणोवायया इमिभद्दपुत्तस्म समणोवाय-गस्म एवमाइक्यमाणस्म जाव एव परुवेमाणस्म एयमद्ठ नो सदृहति नो पत्तियति,
- १४ नो रोयित, एयमट्ठ अमद्हमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जामेव दिस पाउन्भूया तामेव दिस पिडग्या। (श॰ ११।१७७)
- १५. तेण कालेण तेण समएण ममणे भगव महावीरे जाव समोसढे
- १६ जाव परिमा पञ्जुवासइ।
- १७ तए ण ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठा
- १८,१६ (स॰ पा॰)एव जहा तुगियउद्देसए(भ॰ २।६७) जाव पञ्जुवासति 'तुगिउद्देसए' ति द्वितीशतस्य पञ्चमे ।(वृ०प० ५५२)
- २० तए ण समणे भगव महावीरे तेसि समणोवासगाण तीमे य महत्तिमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ जाव आणाए आराहए भवइ। (श० ११।१७८)
- २१ तए ण ते समणीवासया समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अतियं धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा

<sup>ं</sup>लयः सुण-सुण साधूजी हो मुनिवर

- २२. ऊठी नै ऊभा थई-हो गुणिजन । स्वाम प्रते सुखदाय। नमस्कार वदना करी हो गुणिजन । वोल्या इहविघ वाय कै।।
- २३. हे प्रभु । इम निश्चै करि हो गुणिजन । इसिभद्र सुत पेख। अम्ह ने कहै सामान्य थी हो गुणिजन ! जाव परूपे विशेख कै।।
- २४. हे आर्यो । सुरलोक मे हो गुणिजन । देव तणी स्थिति ताय । दश हजार वर्षा तणी हो गुणिजन । जघन्य कहै जिनराय कै ॥
- २५. समय अधिक तिण ऊपरै हो गुणिजन । जावत तिण उपरत । सुर सुरतोक विच्छेद छै हो गुणिजन! ए किम हे भगवत । कै।।
- २६ हे आर्यो । इम आमत्री हो गुणिजन । भगवत श्री महावीर। तेह श्रावका प्रति तदा हो गुणिजन । इम वोल्या गुणहीर कै।।
- २७ हे आर्थो । तुम्ह ने कहै हो गृणिजन । इसीभद्र सुत सार। स्थित सुर नी सुरलोक मे हो गुणिजन। घुर दश वर्ष हजार के।।
- २८. समय अधिक तिण ऊपरे हो गुणिजन । यावत तिण उपरत। सुर सुरलोक विच्छेद छै हो गुणिजन । सत्य अर्थ ए तत कै।।
- २६. हू पिण आर्यो । इम कहू हो गुणिजन । जाव परूपू सार। सुर नी स्थिति सुरलोक मे हो गुणिजन । घुर दश वर्ष हजार कै।।
- ३०. तिमज जाव तिण ऊपरे हो गुणिजन । सुर सुरलोक विच्छेद। अधिक स्थिति सुर नी नहीं हो गुणिजन । सत्य अर्थ ए वेद कै।।
- ३१. ते श्रावक तिण अवसरे हो गुणिजन । वीर प्रभु नै पास। एह अर्थ निसुणी करी हो गुणिजन । हिवडे घारी तास कै॥
- ३२ वीर प्रभु ने वदने हो गुणिजन । नमस्कार करि ताम। इसिभद्र सुत छ जिहा हो गुणिजन। सह आव्या तिण ठाम कै।।
- ३३ ऋषिभद्र सुत श्रावक भणी हो गुणिजन । स्नुति करै शिरनाम । ए अर्थ सम्यक विनय करी हो गुणिजन ।
  - वारूवार खमावै ताम कै॥
- ३४. ते श्रावक तिण अवसरे हो गुणिजन । पूछी प्रश्न उदार। बहु अर्थ प्रते हृदय विषे हो गुणिजन । ग्रहै ग्रही ने सार कै।।
- ३४. वीर प्रभु ने वदने हो गुणिजन । नमस्कार शिर नाम। जे दिशि थी आध्या हुता हो गुणिजन। ते दिशि गयाज ताम कै।।
- ३६. हे प्रभु । इस गोतम कही हो गुणिजन । वीर प्रभु नै ताय । वादी शिर नामी करी हो गुणिजन ! वोलै इह विघ वाय कै ॥
- ३७. हे प्रभुजी । समर्थ अछे हो गुणिजन । इसिभद्र सुत सार। देवानुप्रिया आगले हो गुणिजन । आणी हरप अपार कै।।
- ३८. मुड द्रव्य भावे करी हो गुणिजन । छाडी घर अगार। साधूपणा प्रते सही हो गुणिजन । लेवा समरथ सार कै?
- ३६. जिण कहे अर्थ समर्थ नहीं हो गुणिजन । इसिभद्र सुत न्हाल। शीलवृत बहु आचरी हो गुणिजन । पच अणुवत पाल कै।।

- २२ चट्ठाए चट्ठेंति, चट्ठेत्ता समण भगवं महावी व वदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता एवं वदासी---
- २३ एव खलु भते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्ह एवमाइनखइ जाव परूवेइ
- २४ देवलोएसु ण अज्जो । देवाण जहण्णेण दसवाससह-स्साइ ठिती पण्णता,
- २५ तेण पर समयाहिया जान तेण परं नोच्छिण्णा देना य देनलोगा य। (भ०११।१७६) से कहमेय भते । एन ?
- २६. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एव वयासी---
- २७. जण्ण अज्जो । इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुव्भ एव-माइक्खइ जाव परूवेइ—
- २८ देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया जाव तेण पर वोच्छि-ण्णा देवा य देवलोगाय—सच्चे ण एसमट्ठे,
- २६ अह पि ण अज्जो । एवमाइक्खामि जाव परूवेमि— देवलोएसु ण अज्जो । देवाण जहण्णेण दसवाससह-स्साइ ठिती पण्णता।
- ३० (स॰ पा॰)त चेव जाव तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—सच्चे ण एसमट्ठे। (श॰ ११।१८०)
- ३१ तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म
- ३२ समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता, जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छति,
- ३३ इसिभद्दपुत्त समणोवासग वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो भुज्जो खामेति
- ३४ तए ण ते समणीवासया परिणाइ पुन्छति, पुन्छिता अट्ठाइ परियादियति, परियादियित्ता
- ३५ समण भगव महावीर वदति नमसित, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया। (श० ११।१८१)
- ३६ भतेति । भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदिता नमसित्ता एव वयासी—
- ३७,३८ पभू ण भते । इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणु-प्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्यक्तए ?
- ३६ नो इणट्ठे समट्ठे गोयमा । इसिभइपुत्ते समणो-वासए वहर्हि सीलव्वय-

- ४०. गुणव्रत तीन कहीजिये हो गुणिजन । प्रवर वेरमण जाण। ए नवमो व्रत आचरी हो गुणिजन । दशमो व्रत पचयाण।।
- ४१. पोपघ उपवासे करी हों गुणिजन! जिम आदिरया तेम। तप करि आतम भावतो हो गुणिजन! स्वस्थ चित्त घर प्रेम कै।।
- ४२ पाली बहु वर्षां लगै हो गुणिजन ! श्रावक नी पर्याय। मास तणी सलेखणा हो गुणिजन ! आतम मेवी ताय कै॥
- ४३. साठ भक्त अणसण करी हो गुणिजन । छेदै छेदी मोय। एक भक्त छैदिन तणी हो गुणिजन । द्वितीय निका नी जोय कै।।
- ४४. व्रत अतिचार आलोय ने हो ग्णिजन ! पडिक्कमी मुविकाल । समाधि पामी सुदरू हो गुणिजन ! काल मास करि काल कै ॥
- ४५. सीधर्म कल्पे सही हो गुणिजन ! वर अरुणाभ विमाण । देवपणे महादीपतो हो गुणिजन ! ऊपजरये मुविहाण कै।। ४६. केडक मुर नी स्थिति तिहा हो गुणिजन !

च्यार पल्योपम जान। इसिमद्र सुत सुर स्थिति हो गुणिजन। होस्यै चिउं पल्य मान कै।।

४७ हे प्रभु ! ते सुरलोक थी हो गुणिजन ! इसिभद्र मुत देव। काल करी यावत किहा हो गुणिजन ! ऊपजस्य ततसेव के ?

- ४८ वीर कहै मुण गोयमा । हो गुणिजन । महाविदेह मभार। सखर सीभस्य जाव थी हो गुणिजन। अत करें ससार कै।।
- ४६. तुम्है कह्यो ते सत्य सहु हो गुणिजन! इम कहि गोतम स्वाम। सजम तप करि आतमा हो गुणिजन! भावित विचरै ताम के ॥
- ५० भगवत श्री महावीर जी हो गुणिजन । अन्य दिवस अवघार। कदाचित आलिभया हो गुणिजन ! नगरी थको तिवार कै॥
- ५१ शख वन जे चैत्य थी हो गुणिजन ! निकले निकली तेह। वाहिर जनपद देश में हो गुणिजन ! विहार करी विचरेह कै।।
- ५२. एकादशमा शतक नों है। गुणिजन ! वारसमो उद्देश। देश कह्यों छै तहनो हो गुणिजन ! कहिये छै हिव शेप कै।।
- ५३. वे सी सैतालीसमी हो गुणिजन । आंबी ढांल उदार। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी हो गुणिजन! 'जय-जया' सपित सार कै।।

- ४०. गुणवेरमण-पचनग्राण-
- ४१. पोसहोबवामेहि अहापरिग्गहिएहि तयोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे
- ४२. वहुड वामाड ममणीवामगपरियाम पार्रणहिति पार्रणिता मामियाण मनेहणाए अनाणं झूमेहिति झूमेता
- ४३. मिंद्र भत्ताः अणगणाए छेदेहिनि छेदेना
- ४४. बालोज्यपिटयरते ममाहितने यालमाये काल फिच्चा
- ४५. मोहम्मे कणे अध्याभे विमाणे देवताए उवविजिहिति
- ४६. तत्य ण अत्येगतियाण देवाण चनारि पनिओवमाध ठिती पण्णता । तत्य ण एमिभद्रपुत्तरम वि देवस्य चतारि पनिओवमार्ट ठिनी भविस्मति । (ग०११।१८२)
- ४७. में ण भने । इतिमहपुने देवे ताओ देवलोगाओं आउनग्रएण भवनग्रएण ठिप्तग्रएण जाय (मं०पा०) महि उयवजिजहिति ?
- ४८. गोयमा ! महाविदेहे वामै सिज्झिहित जाव (स॰पा॰) अत नाहिति (ग॰ १।११८३)
- ४६. मेव भते । मेव भते । ति भगव गोयमे जाय अप्पाण भावेमाणे विहरत । (श० ११।१८४)
- ५०. तए ण समणे भगव महावीरे अण्यया क्याइ आलिभयाओ नगरीओ
- ५१. संखनणाओ चेडयाओ पिंडनिनयमाइ पिंडनिनय-मित्ता बहिया जणनयनिहार विहरइ । (श० ११।१८५)

#### दूहा

- १ तिण काले ने तिण समय, आलिभया अभिघान। नगरी हुती वर्णन तसु, चैत्य सख वन जान।।
- २. चैत्य मख वन थी तिहां, अतिही दूर न कोय। अतिही नजीक पिण नहीं, वसै परिव्राजक सोय।।
- ३. भोगल एह्वे नाम ते, ऋग यजुर् जे वेद। यावत द्विज नय नै विपे, प्रवीण जाण्या भेद॥
- ४ छठ-छठ अतर-रहित तप, वे वाह ऊची स्थाप। रवि सन्मुख आतापना, लेतो विचरै आप॥
- ५ तिण अवसर मोगल भणी, छठ-छठ जाव आताप । लेतां भद्र प्रकृतिपणै, जिम शिव नृप ऋषि थाप ॥
- ६. यावत विभग नाम ते, अज्ञान ऊपनो तास। ते विभग नाम अज्ञान ही, उपने छते विमास।।
- ७. त्रह्मलोक कल्प नै विषे, सुर स्थिती जाणत। अविध दर्शन करिने विल, अमर स्थिती देखत।। \*सुणज्यो मोगल तापस नी वारता रे लाल।। (ध्रुपद)
- द. तिण अवसर मोगल भणी रे, एहवे रूपे घार । सुखकारी रे। अज्भत्थिए यावत वली रे लाल,

उपनो मन में विचार ॥ सुखकारी रे ॥

 ज्ञान दर्शण अतिशेष जे रे, सपूरण सुखदाय। सुखकारी रे। ते मुभने ऊपनो अछे रे लाल,

इम चितवै मन माय ।। सुखकारी रे।।

१० सुरलोके स्थिति सुर तणी रे,

जघन्य दश वर्ष हजार । सुखकारी रे। समय अधिक तिण ऊपरें रे लाल,

जाव असख समय अधिकार ॥ सुखकारी रे ॥

११ उत्कृष्ट दश सागर तणी रे,

तिण उपरंत विच्छेद । सुखकारी रे । सुर अथवा सुरलोक जे रे लाल,

अधिक स्थिति न सवेद ।। सुखकारी रे ।।

- २,३ तस्स ण सखनणस्स चेइयस्स अदूरसामते पोग्गले' नाम परिन्नायए रिउन्नेदजजुन्नेद जान नभण्णएसु परिन्नायएसु य नएसु सुपरिनिद्विए
- ४ छ्ट्ठछ्ट्ठेण अणिविखत्तेण तनोकम्मेण उड्ढ वाहाओ पिण्झिय-पिण्झिय सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरह। (॥०११।१८६)
- ५ तए ण तस्स पोग्गलस्स परिन्वायगस्स छट्ठछट्ठेण जाव (स॰ पा॰) आयावेमाणस्स पगइभद्याए (स॰ पा॰) जहा सिवस्स
- ६ जाव विव्भगे नाणे समुप्पन्ते।
- से ण तेण विन्भगेण नाणेण समुप्पन्नेण वभलीए कप्पे देवाण ठिति जाणइ-पासइ। (भा० ११।१८७)
- द तए ण तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारुवे अज्झत्थिए जाव (स॰ पा॰) समुप्पज्जित्था।
- ६ अत्थिण मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने
- १० देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता तेण पर समयाहिया दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया
- ११ उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता तेण पर बोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य

१ तेण कालेण तेण समएण आलिभया नाम नगरी होत्या वण्णओ। तत्य ण सखवणे नाम चेइए होत्या—वण्णओ!

१ यहा 'पोग्गले नाम परिन्वायए' पाठ है तथा किसी पाठान्तर का सकेत नहीं है। जयाचार्य ने अपनी जोड में 'मोगल परिन्नाजक' का उल्लेख किया है। सभव है, उनको प्राप्त आदर्श में यही पाठ हो। नाम का यह भेद लिपिदोप के कारण हुआ है अथवा अन्य किसी कारण से, खोज का विषय है। प्रस्तुत ग्रन्थ में यह दिरूपता ज्यों की त्यों सुरक्षित रखी गई है।

<sup>\*</sup>लय: धीज करें सीता सती रे लाल

१२ इ मन माहै चिंतवी रे, भूमिआतापन जेह। सुखकारी रे। तेह थकी पाछो वली रे लाल,

उपि पोता ना लेह।। सुखकारी रे।।

१३. दड कमंडल ने ग्रही रे,

जाव गेरू रग्या वस्त्र ताय। मुखकारी रे। ग्रहण करिने आवतो रे लाल,

नगरी आलभिया माय ॥ सुखकारी रे ॥

१४ परिवाजक ना मठ जिहा रे,

आव्यो तिहा चलाय । सुखकारी रे। निज भंड प्रति मूकी करी रे लाल,

आलभिया ने माय ।। सुखकारी रे।।

१५ शृंघाटक जाव पथ मे रे,

कहै जन ने माहोमांय । सुखकारी रे । क्लो रे लाल

अति जेप ज्ञान दर्शन भलो रे लाल,

मुभ ऊपनो सुखदाय ॥ सुखकारी रे ।

१६. सुरलोक स्थिति सुर तणी रे,

धुर दश वर्ष हजार । सुखकारी रे। तिमहिज जाव विच्छेद छैरे लाल,

सुर सुरलोक तिवार ।। सुखकारी रे।।

१७ नगरी आलिभया मे तदा रे,

इण आलावे करि ताय। सुखकारी रे। जिम शिव तिम यावत वदें रे लाल,

किम ए वात मनाय।। सुखकारी रे।।

वा॰ —िशव राजऋषि नै अधिकारे तो हित्यणापुर नै विषे घणा लोक माहोमाहि इम वदै, इम कह्यो अनै इहा आलिमया नगरी नै विषे वहु जन माहोमाहि वदै इम कहिवो ते माटै आलिभया नै अभिलापे सूत्रे कह्यू।

१८ एव स्वामी समवसरचा रे,

जाव परिपद गई स्थान। सुखकारी रे। वीर तणी वाणी सुणी रे लाल,

सवेग रस गलतान ॥ सुखकारी रे॥

१६ गोतम तिमहिज गोचरी रे,

भिक्षाचरी ने जाय। सुखकारी रे। तिमज बब्द बहु मनुष्य नारेलाल,

सुण चितव्यो मन माय।। सुलकारी-रे।।

२० तिम कहिवी सहु वारता रे,

पूछ्यो वीर ने आय। सुखकारी रे। वीर कहै मिथ्या अछै रेलाल,

मोगल नी जे वाय।। सुखकारी रे।।

२१. यावत हू पिण गोयमा । रे,

एम कहू छू सार। सुखकारी रे।

 एव संपेहेड सपेहेता आयावणभूमीओ पच्चोरुडह पच्चोरुहिता

- तिदड च कुंडिय च जाव धाउरत्ताओ य गेण्ट्य गेण्टिता जेणेव आलिमया नगरी
- १४. जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छित्ता भडनिक्खेव करेड, करेत्ता आलभियाए नगरीए
- १५. सिंघाडग जाव (म॰ पा॰) पहेंसु अण्णमण्णस्स एव-माइक्खंड जाव परूवेइ—अत्यि णं देवाणुप्पिया <sup>।</sup> मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने ।
- १६. देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साङ िठती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोमेण दससागरोवमाङ िठती पण्णत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य । (श० ११।१८८)

१७ तए ण (स॰ पा॰) आलिभयाए नगरीए एव एएण अभिलावेण जहां सिवस्स (भ॰ ११।७३) त चेव जाव से कहमेय मन्ने एव ?

(श० ११।१८६)

- १८ सामी समोमढे, परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया।
- १६ भगव गोयमे तहेव भिक्खायिरयाए तहेव वहुजणसह निसामेइ निसामेत्ता
- २०. तहेव सव्व भाणियव्व
- २१ जाव अह पुण गोयमा । एवमाइक्खामि एव भासामि जाव परुवेमि—देवलोएसु,ण देवाण जहण्णेण दस

सुरलोके स्थिति सुर तणी रे लाल,

घुर दश वर्ष हजार ॥ सुखकारी रे ॥

२२. समय अधिक तिण ऊपरे रे,

दोय समय अधिकाय । सुखकारी रे। जाव स्थिति उत्कृष्ट थीरे लाल,

तेतीस सागर ताय ॥ सुखकारी रे॥

२३ तिण उपरत विच्छेद छै रे,

सुर अथवा सुरलोग । सुखकारी रे।

अधिकी स्थिति निह देव नी रे लाल, तिण सूं विच्छेद प्रयोग ॥ सुखकारी रे ॥

२४. छै प्रभु । सौधर्म कल्प मे रे,

द्रव्य जे वर्ण सहीत । सुखकारी रे।

वर्ण रहित पिण द्रव्य छै रे लाल,

तिमहिज प्रश्न सुरीत ॥ सुखकारी रे ॥

२५ जाव हंता अतिथ जिन कहै रे,

इमहिज कहियै ईशान। सुखकारी रे।

इम यार्वत अच्युत कह्यो रे लाल,

इम ग्रैवेयक विमान ।।सुखकारी रे।।

२६. इमहिज अणुत्तर विमाण मे रे,

इमहिज इसिपव्भार । सुखकारी रे।

यावत जिन उत्तर दिये रे लाल,

हता अत्थि सार ॥ सुखकारी रे॥

२७. महा मोटी परपद तदा रे,

जाव गई स्व स्थान । सुखकारी रे। आलिभया नां वाजार मे रे लाल,

लोक वदे इम वान ॥ सुखकारी रे॥

२८. अवशेप जिम शिव नी परै रे,

जाव सर्व दुख क्षीण। सुखकारी रे। णवर इतरो विशेष छैरे लाल,

आगल कहियै चीन ॥ सुखकारी रे॥

२६. त्रिदंड ने विल कुडिका रे,

गेरू रंग्या वस्त्र ताहि । सुखकारी रे । ते पहिरचां विभंग पडिये छते रे लाल,

नगरी आलभिया माहि ॥ सुखकारी रे ॥

३०. आलिभया मध्य नीकली रे,

यावत कूण ईशाण । मुखकारी रे। आवी त्रिदंड ने कुडिका रे लाल,

एकांत मूकै जाण ॥ सुखकारी रे ॥

३१. जिम खधक चारित्र लियो रे,

तिमहिज चरण उदार। सुखकारी रे।

शेप सर्व शिव नी पर रे लाल,

यावत मोक्ष मभार॥ सुखकारी रे॥

# वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता

- २२. तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्ज-समयाहिया उनकोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णता।
- २३. तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य । (श॰ ११।१६०)
- २४ अत्थिण भते ! सोहम्मे कप्पे दव्वाइ—सवण्णाइ पि अवण्णाइं पि ।
- २५. तहेव (सं० पा०) हंता अस्य । एव ईसाणे वि, एव जाव अच्चुए, एव गेवेज्जविमाणेसु,
- २६ अणुत्तरिवमाणेसु वि, ईसिपव्भाराए वि जाव ? हता वित्य। (॥० ११।१६१)
- २७. तए ण सा महतिमहालिया परिसा जाव जामेव दिसि पाउन्भूया तामेव दिस पडिगया।

तए ण आलिभयाए नगरीए " """वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइनखइ (स॰ पा॰)

- २८. अवसेस जहा सिवस्स (भ० ११।८३-८८) जाव सव्वदुक्खपहीणे नवर
- २६-३१. तिदंडकुडिय जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिव-डियविव्भगे वालभिय नगरि मज्झमज्झेण निग्गच्छइ जाव उत्तरपुरित्यम दिसीभाग अवक्कमइ २ तिदड-कुडिय च जहा खदको (भ० २।५२) जाव पव्वइओ सेस जहा सिवस्स (भ० ११।६३-६८) जाव।

३२. बाघा रहित सुख भोगवै रे,

एहवा शाक्वता सिद्ध । सुखकारी रे।

सेव भते । गोतम कहै रे लाल,

तुम्ह सत्य वचन समृद्ध ॥ सुखकारी रे ॥

३३. एकादशमां शतक नो रे, द्वादशमों उद्देश । सुखकारी रे। आख्यो शतक इग्यारमो रे लाल,

अर्थ रूप सुविशेष ॥ सुखकारी रे ॥

३४. दोयसौ ने अडतालीसमीं रे,

आखी ढाल उदार। सुखकारी रे।

भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी रे लाल,

'जय-जश' सपित सार ॥ मुखकारी रे ॥ एकादशशते द्वादशोद्देशकार्थः ॥११।१२॥

# गीतक-छंद

 एकादशम जे शतक नो, व्याख्यान म्हें कीधू सही। वर न्याय निर्णय मेलिया, फुन सूत्र अनुसारे वही॥
 इह विपे जो हेतू तिको, जन सुणो घर आह्लाद ही॥
 भिक्षु ने भारीमाल फुन, नृपइदु नोज प्रसाद ही॥ ३२. अन्वावाहं सोवखं अणुभवंति सामय सिद्धा । सेव भंते । सेवं भते ! त्ति । (ग० ११।१६६)

१,२ एकादशशतमेव, व्याख्यातमबुद्धिनापि यन्मयका । हेतुस्तत्राग्रहिता, श्रीवाग्देवीप्रसादो वा ॥ (वृ० प० ५५२)